सूचना

[illegible]

मगनलाल हिराचंद शेठ,

सोजत (मारवाड) वाला.

मैनेजर–जैन ग्रन्थोद्धार कार्यालय,

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के वय वृद्ध श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज !

इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचीन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समयश्पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेसेही मै इस कार्य को पूर्ण कर सका इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्धारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के अभारी होंगे

गुरुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय मे अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया. और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तल दबे हुवे हम आप के बडे अभारी हैं.

संघकी तर्फ से.

४ चौथा स्थिति पद.

५ पांचवा पर्याय पद.

६ छट्ठा विरह पद.

१२ द्वादश शरीर पद.

१३ त्रयोदश—परिणाम पद.

१४ चतुर्दश—कषाय पद.

१५ पंचदश—इन्द्रिय पद. (प्रथमोद्देशा)

इन्द्रिय पदका-दूसरा उद्देशा.

२१ एकविंशतितम शरीर पद

२२ द्वाविंशतितम क्रिया पद

२५ कायठिइए २६ वेयरालमंभए २७ वेदवेयए ॥ ३ ॥ २८ आहार, २९ उवओगे । ३० पासणया ३१ सण्णि, ३२ संजमेचेव ॥ ३३ ओही, ३४ परियारण । ३५ वेदणाय ३६ समुग्धाए ॥४॥१॥ (गद्य) सेकिं तंपण्णवणा ? पण्णवणा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-जीवपण्णवणा, अजीवपण्णवणा ॥ सेकिं तं अजीव

२१ सरीर पद में ७ संस्थानों का कथन है, २२ क्रिया पद में क्रिया का कथन है, २३ कर्म बन्ध पद में कर्मों का बंध किस तरह होता है उसका अधिकार है, २४ कर्म बंध वेदना पद में कर्म बंध वेदने का अधिकार है, २५ कर्म वेदनापद में कर्म बंधन का अधिकार है, २६ कर्म वेद का बंधपद में कितनी वेदन की प्रकृतियों का बंध करे यह कथन है, २७ कर्मवेदका वेदनापद में कितनी प्रकृति का बंध कर वेदने का अधिकार है, २८ आहारपद में जीवों किस प्रकार आहार करते हैं उसका अधिकार है, २९ उपयोगपद में उपयोग का अधिकार है, ३० पासणया पद में पासणया (देखने) का अधिकार है, ३१ संज्ञी पद में संज्ञी असंज्ञी का अधिकार है, ३२ संयमपद में पांच संयम का अधिकार है, ३३ अवधि पद में अवधिज्ञान का अधिकार है, ३४ परियारणा पद में परिचारणा का अधिकार है, ३५ वेदना पद में साता असाता रूप वेदना का अधिकार है और ३६ समुद्घात पद में सात समुद्घातका अधिकार है. उक्त छत्तीस पद इस पन्नवणा सूत्र में कहे हुवे हैं ॥ १ ॥ अब इन में से प्रथम पन्नवणाका अधिकार कहता हूं. अहो भगवन् ! प्रज्ञापना के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! प्रज्ञापना दो प्रकार की कही है. १ जीव प्रज्ञापना और २ अजीव प्रज्ञापना

…अजीवपण्णवणा ? रूविअजीवपण्णवणा चउव्विहा पण्णत्ता। तंजहा-खंधा, खंधदेसा खंधप्पदेसा, परमाणुपोग्गला ॥ तेसमासओ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा-वण्णपरिणया, गंधपरिणया, रसपरिणया, फासपरिणया, संठाणपरिणया॥५॥ जेवण्णपरिणया ते समासओ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा- कालवण्णपरिणया, नीलवण्णपरिणया, लोहियवण्ण परिणया, हालिद्दवण्णपरिणया सुक्किल्लवण्णपरिणया ॥ जेगंधपरिणया तेदुविहा पण्णत्ता तंजहा-सुब्भिगंधपरिणयाय दुब्भिगंधपरिणयाय जेरसपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता तंजहा-तित्तरस परिणया, कडुयरस परिणया, कसायरस परिणया, अंबिलरस परिणया, महुररस परिणया॥ जेफास परिणया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, तंजहा-कक्खडफास परिणया,

अर्थ

अब रूपी अजीव प्रज्ञापना के भेद कहते हैं प्रश्न-रूपी अजीव प्रज्ञापना के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-रूपी अजीव प्रज्ञापना के चार भेद कहे हैं-१ स्कंध २ स्कंध देश ३ स्कंध प्रदेश और ४ परमाणु पुद्गल. इन के संक्षेप से पांच भेद कहे हैं- वर्ण परिणत गंध परिणत रस परिणत. स्पर्श परिणत और संस्थान परिणत ॥५॥ वर्ण परिणत के पांच भेद कहे हैं- १ कृष्ण वर्ण परिणत २ नील (हरा) वर्ण परिणत ३ रक्त वर्ण परिणत ४ पीत वर्ण परिणत और ५ शुक्ल वर्ण परिणत. गंध परिणत के दो भेद कहे हैं- सुरभिगंध परिणत व दुरभिगंध परिणत. रस परिणत के पांच भेद-तिक्त, कटुक, कषाय, अम्बट और मधुर रस परि-

परिमंडलसंठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, चउरंससंठाण परिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि ॥ जेवण्णओ नीलवण्ण परिणया गंधओ सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि. रसओ तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस परिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि, फासओ-कक्खडफासपरिणयावि, मउयफासपरिणयावि, गरुयफासपरिणयावि, लहुयफासपरिणयावि, सीयफासपरिणयावि, उसिणफासपरिणयावि, णिद्धफासपरिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ-परिमंडलसंठाणपरिणयावि, वट्टसंठाणपरिणयावि, तंससंठाण परिणयावि चउरससंठाणपरिणयावि, आयतसंठाणपरिणयावि, ॥ जे वण्णओ लोहिय वण्णपरिणया ते गंधओ-सुब्भिगंधपरिणयावि, दुब्भिगंधपरिणयावि ॥ रसओ तित्तरसपरि

परिणत पुद्गल है वह गंध से-सुरभिगंध, दुरभिगंध, रस से-तिक्त, कटुक, कषाय, अम्बट, मधुर, स्पर्श से-कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, संस्थान से परिमंडल, वृत्त, त्र्यंस, चउरंस व आयत यों, २० बोल से परिणत है. जो रक्त वर्ण परिणत है वह गंध से-सुरभिगंध, दुरभिगंध, रस से-तिक्त, कटुक, कषाय, अम्बट व मधुर, स्पर्श से कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष स्पर्श और संस्थान से परिमंडल वृत्त, त्र्यंस चौरंस

सूत्र

पयावि, कडुयरसपरिणयावि, कसायरसपरिणयावि, अंबिलरसपरिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ-कक्खडफास परिणयावि, मउयफासपरिणयावि, गरुयफासपरि-णयावि, लहुयफासपरिणयावि, सीयफासपरिणयावि उसिणफासपरिणयावि, निद्ध-फासपरिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ परिमंडल संठाण परिणयावि, वट्टसंठाणपरिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरंससंठाणपरिणयावि, आयतसंठाणप-रिणयावि, ॥ जे वण्णओ हालिद्दवण्णपरिणया तेगंधओ-सुब्भिगंधपरिणयावि, दुब्भिगं-धपरिणयावि, ॥ रसओ-तित्तरसपरिणयावि, कडुयरसपरिणयावि, कसायरसपरिणयावि, अंबिलरसपरिणयावि, महुररसपरिणयावि, ॥ फासओ-कक्खडफासपरिणयावि, मउय-फासपरिणयावि, गरुयफासपरिणयावि, लहुयफास परिणयावि, सीयफासपरिणया-वि, उसिणफासपरिणयावि णिद्धफासपरिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ

अर्थ

व आयत संस्थान यों २० बोल से परिणत हैं. जो पीतावर्ण परिणत है, उस में भी दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श व पांच संस्थान यों २० बोल पाते हैं. ऐसे ही शुक्ल वर्ण के पुद्गलों में भी दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श व पांच संस्थान यों २० बोल पाते हैं. यों पांचों वर्ण में सब १०० बोल पाते हैं ॥ अब गंध आश्री प्रश्न करते हैं. जो सुरभिगंध परिणत पुद्गल हैं

परिमंडल संठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंसमंठाण परिणयावि, चउरंस संठाण परिणयावि, आयत संठाण परिणयावि ॥ जेवण्णओ सुक्किल वण्णपरिणया. तेगंधओ सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ रसओ तित्तरसपरिणयावि, कडुअरस परिणयावि कसायरस परिणयावि अंबिलरस परिणयावि महुररस परिणयावि ॥ फासओ—कक्खडफास परिणयावि, मउअफासपरिणयावि, गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि, सीअफास परिणयावि, उसिणफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ परिमंडल संठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरंस संठाण परिणयावि, आयतसंठाणपरिणयावि ॥ जे गंधओ सुब्भिगंधपरिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्णपरिणयावि ॥ रसओ-तित्तरस परिणयावि, कडुअरस

वे वर्ण से काले, नीले, लाल पीले व श्वेतवर्ण परिणत हैं, रस से तिक्त, कटुक, कषाय, अम्बट, व मधुर रस परिणत हैं, स्पर्श से कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष स्पर्श परिणत हैं और संस्थान से परिमंडल, वृत्त, त्र्यंस चौरंस व आयत संस्थान परिणत हैं. पौद्गल जैसे सुरभिगंधपने रहे हुवे हैं वैसे ही

सूत्र

परिणयावि, सीअफास परिणयावि, उसिणफासपरिणयावि, णिद्धफासपरिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ-परिमंडल संठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तससंठाण परिणयावि, चउरंससंठाण परिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि ॥ से रसओ तित्तरस परिणया ते वण्णओ-कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किल्लवण्ण परिणयावि, ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ फासओ-कक्खडफास परिणयावि, मउअफास परिणयावि, गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि, सीअफास परिणयावि, उसिणफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि,॥ संठाणओ-परिमंडलसंठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरं

अर्थ

हुए. जो तिक्त रस के २० भेद हुए वैसे ही कटुक, कषाय, अम्ल व मधुर के भी बीस २ भेद कहना. सब मीलाकर पांच वर्ण के १०० भेद हुए. अब स्पर्श आश्री कहते हैं. जो कर्कश स्पर्श वाले हैं वे वर्ण में काला, नीला, लाल, पीला व शुक्ल वर्ण वाले हैं, गंध में सुरभिगंध व दुरभिगंध वाले हैं, रस से तिक्त कटुक कषाय, अम्ल व मधुर रस वाले हैं, स्पर्श में गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष और संस्थान

संठाणपरिणयावि, आयतसंठाणपरिणयावि ॥ जेरसओ कडुअरसपरिणया, ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि, फासओ कक्खडफास परिणयावि, मउअफास परिणयावि, गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि, सीअफास परिणयावि, उसिणफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ-परिमंडलसंठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरंस संठाण परिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि ॥ जे रसओ कसाय रस परिणया तेवण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि, ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ फासओ—कक्खडफास परिणयावि, मउअफास परिणयावि, गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि, सीअफास परिणयावि, उसिणफास

परिमंडल, वृत्त, त्र्यंस चौरंस व आयात संस्थान वाले हैं, यों कर्कश स्पर्श के २३ बोल हुए. ऐसे ही मृदु

मुन

थं

परिणयात्ति, णिद्धफास परिणयात्ति, लुक्खफास परिणयात्ति, संठाणओ-परिमं डलसंठाण परिणयात्ति, वट्टसंठाण परिणयात्ति, तंससंठाण परिणयात्ति, चउरंस संठाण परिणयात्ति, आयत संठाण परिणयात्ति, ॥ जे रसओ अंबिलरस परिणया ते वण्ण-ओ कालवण्ण परिणयात्ति, नीलवण्ण परिणयात्ति, लोहिअवण्ण परिणयात्ति हालिद्दवण्ण परिणयात्ति, सुक्किलवण्ण परिणयात्ति ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयात्ति दुब्भिगंध परिणयात्ति फासओ-कक्खडफास परिणयात्ति, मउअफास परिणयात्ति, गरुअफास परिणयात्ति, लहुअफास परिणयात्ति, सीअफास परिणयात्ति, उसिणफासपरिणयात्ति, णिद्धफास परिणयात्ति, लुक्खफास परिणयात्ति ॥ संठाणओ-परिमंडलसंठाण परिणयात्ति, वट्टसंठाण परिणयात्ति, तससंठाण परिणयात्ति, चउरंससंठाण परिणयात्ति, आयत संठाण परिणयात्ति ॥ जे रसओ महुररस परिणया ते वण्णओ-कालवण्ण परिणयात्ति, नीलवण्णपरिणयात्ति, लोहिअवण्ण परिणयात्ति, हालिद्दवण्णपरिणयात्ति, सुक्किलवण्णपरिणयात्ति ॥ गंधओ-सुब्भिगंधपरिणयात्ति, दुब्भिगंधपरिणयात्ति, ॥ फासओ कक्खडफास परिण-

स्पर्श में पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस छ स्पर्श व पांच संस्थान यों २३ बोल पाते हैं; गुरु में भी उक्त

कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्णपरिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि गंधओ-सुब्भिगंधपरिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ रसओ तित्तरस परिणयावि, कडुअरस परिणयावि, कसायरस परिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि, सीअफास परिणयावि, उसिणफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ परिमडल संठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंस संठाण परिणयावि, चउरंस संठाणपरिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि ॥ जे फासओ गरुअफासपरिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्णपरिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि, दुब्भिगंधपरिणयावि रसओ-तित्तरसपरिणयावि कडुयरस परिणयावि, कसायरसपरिणयावि, अंबिलरसपरिणयावि, महुररसपरिणयावि, फासओ- कक्खडफास परिणयावि, मउयफास परिणयावि, सीयफास परिणयावि,

तेवीस यों सब मीलकर आठों स्पर्श के १८४ बोल होवे हैं. अब संस्थान आश्री कहते हैं. जो परिमंडल

सुब्भिगंध परिणयावि ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयावि दुब्भिगंध परिणयावि॥ रसओ तित्तरसपरिणयावि, कडुयरसपरिणयावि, कसायरसपरिणयावि, अंबिलरसपरिणयावि, महुररसपरिणयावि, फासओ-कक्खडफासपरिणयावि, मउअफासपरिणयावि, गरुयफास परिणयावि, लहुयफासपरिणयावि, णिद्धफासपरिणयावि, लुक्खफासपरिणयावि॥ संठाणओ परिमंडल संठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंसंठाण परिणयावि चउरंस संठाण परिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि॥ जे फासओ उसिणफास परिणया ते वण्णओ-कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिय वण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किल्लवण्ण परिणयावि॥ गंधओ-सुब्भि-गंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ रसओ-तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस परिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ-कक्खडफास परिणयावि, मउयफास परिणयावि, गरुयफास परिणयावि, लहुयफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ

सुरभिगंध दुरभिगंध परिणत हैं, रस से तिक्त कटुक, कषाय, अम्ल व मधुर रस परिणत हैं और स्पर्श

परिमंडल संठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरंस संठाण परिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि॥ जे फासओ णिद्धफास परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि सुक्किल्लवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयावि दुब्भिगंध परिणयावि॥ रसओ तित्तरस परिणयावि कडुयरस परिणयावि कसायरस परिणयावि अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ-कक्खडफास परिणयावि, मउयफास परिणयावि, गरुयफास परिणयावि लहुयफास परिणयावि सीयफास परिणयावि उसिणफास परिणयावि संठाणओ परिमंडलसंठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरंससंठाण परिणयावि; आयतसंठाण परिणयावि॥ जे फासओ लुक्खफास परिणया ते वण्णओ-कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किल्लवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि, ॥ रसओ-तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस

ये कर्कश, मृदु, गुरु, लघु; शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष स्पर्श परिणत हैं यों परिमंडल संस्थान में भी

परिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि, ॥ फासओ-कक्खड फास परिणयावि, मउयफास परिणयावि, सियफास परिणयावि, उसिण फास परिणयावि, गरुअफास परिणयावि, लहुय फास परिणयावि, ॥ संठाणओ-परिमंडल संठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तससंठाण परिणयावि, चउरंस संठाण, परिणयावि आयत संठाण परिणयावि, ॥ जे संठाणओ परिमंडल संठाण परिणया तेवण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि, ॥ रसओ-तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस परिणयावि अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ- कक्खड फास परिणयावि, मउअफास परिणयावि, गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि, सीअफास परिणयावि, उसिणफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि जे संठाणओ वट्टसंठाण परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि,

अर्थ ✤ मीलकर २० बोल होते हैं. जैसे परिमंडल का कहा वैसे ही वृत्त, त्र्यंस, चौरंस व आयत के भी. शेष २

नीलवण्ण परिणयाति, लोहियवण्ण परिणयाति, हालिद्दवण्ण परिणयाति, सुकिल्लवण्णपरिणयाति ॥ गंधओ-सुब्भिगंधपरिणयाति दुब्भिगंधपरिणयाति, ॥ रसओ-तित्तरसपरिणयाति, कडुअरसपरिणयाति, कसायरसपरिणयाति, अंबिलरसपरिणयाति, महुररसपरिणयाति, ॥ फासओ-कक्खडफासपरिणयाति, मउअफासपरिणयाति, गरुअफासपरिणयाति, लहुअफासपरिणयाति, सीअफासपरिणयाति, उसिणफासपरिणयाति, णिद्धफासपरिणयाति, लुक्खफासपरिणयाति॥ जे संठाणओ तंससंठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणयाति, नीलवण्ण परिणयाति, लोहियवण्णपरिणयाति, हालिद्दवण्ण परिणयाति, सुकिल्लवण्ण परिणयाति ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयाति, दुब्भिगंध परिणयाति. ॥ रसओ-तित्तरस परिणयाति, कडुयरस परिणयाति, कसायरस परिणयाति, अंबिलरस परिणयाति, महुररस परिणयाति फासओ-कक्खडफासपरिणयाति, मउयफास परिणयाति, गरुयफास परिणयाति, लहुयफास परिणयाति, सीयफास परिणयाति, उसिणफास परिणयाति, णिद्धफास परिणयाति, लुक्खफास परिणयाति ॥ जे संठाणओ चउरंस

* बोल जानना यह पांच हर पांच संस्थान के १०० बोल हुए. यों रूपी अजीव पन्नवणा में वर्ण के ५३०

संठाण परिणया ते वण्णओ-कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ रसओ-तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस परिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि. फासओ-कक्खड-फास परिणयावि मउयफास परिणयावि, गरुयफास परिणयावि, लहुयफास परिणयावि, सीयफास परिणयावि उसिणफास परिणयावि, णिद्धफासपरिणयावि, लुक्खफासपरिणयावि, जे संठाणओ आयतसंठाण परिणया ते वण्णओ-कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ रसओ तित्तरस परिणयावि, कडुयरसपरिणयावि, कसायरसपरिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ-कक्खडफास परिणयावि, मउयफास परिणयावि, गरुयफास परिणयावि, लहुयफास परिणयावि, सीयफासपरिणयावि उसिणफास परिणयावि,

वर्ण के ५१ रस के १०० स्पर्श के १८४ और संस्थान के २०९ मीलकर ५३० भेद हुए. यों अजीव

णाकेण्ण जीवपण्णवणा ? एगिंदिय संसारसमावण्ण जीवपण्णवणा पंचविहापण्णत्ता तंजहा-पुढवीकाइयां, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइकाइया ॥ सेकिंतं पुढवीकाइया ? पुढवीकाइया दुविहापण्णत्ता तंजहा- सुहुमपुढविकाइया, बायर पुढविकाइया ॥ सेकिंतं सुहुमपुढवीकाइया ? सुहुमपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाय, अपज्जत्त सुहुमपुढविकाइयाय ॥ सेत्तं सुहुमपुढविकाइया ॥ सेकिंतं बायरपुढविकाइया ? बायरपुढवि काइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-सण्हबायरपुढविकाइयाय, खरबायरपुढविकाइयाय

किसे कहते हैं ? एकेन्द्रिय संसार समापन्न जीव प्रज्ञापना के पांच भेद कहे हैं. पृथ्वीकाया, अप्काया, तेउकाया, वाउकाया व वनस्पतिकाया पृथ्वीकाया किसे कहते हैं ? पृथ्वीकाया के दो भेद कहे हैं— सूक्ष्म पृथ्वीकाया व बादर पृथ्वीकाया सूक्ष्म पृथ्वीकाया के दो भेद—आहार, शरीर, इन्द्रिय व श्वासो श्वास इन चार पर्याय का पूर्ण बंध किया होवे, सो पर्याप्त और उक्त चार क्रियाओं का पूर्ण बंध नहीं होवे सो अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाया. बादर पृथ्वीकाया के दो भेद कहे हैं कोमल बादर पृथ्वीकाया व कठोर बादर पृथ्वीकाया. इस में कोमल बादर पृथ्वीकाया के सात भेद कहे हैं—कृष्ण, नील, रक्त, पीत,

सूत्र

सेकिंतं सण्हबायरपुढविकाइया ? सण्हबायरपुढविकाइया सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा-किण्हमट्टिया, नीलमट्टिया, लोहिअमट्टिया, हालिद्दमट्टिया, सुक्किल्लमट्टिया, पंडुमट्टिया, पणगमट्टिया ॥ सेतं सण्हबायर पुढविकाइया ॥ से किंतं खरबायर पुढविकाइया? खरबायर पुढविकाइया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा-(गाहा)-पुढवीय सक्करा वालुआय, उवलेसिलाय लोणूसे ॥ अय तंब तउअ सीसे, रुप्प सुवण्णेय वइरेय ॥ १ ॥ हरिआले हिंगुलुए, मणोसिला सीसगं जणपवाले ॥ अब्भपडलब्भवालुय, बायर काए मणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमेज्जएअरुअए, अंकेफलिहेअ लोहियक्खेय ॥

अर्थ

शुक्ल, पंडुर रंगवाली व पानीवाली मीट्टी. अब कठोर बादर पृथ्वीकाया के अनेक भेद कहे हैं. पृथ्वी, कंकर, वालु, पत्थर, शीला, लवण, लोहा, तरूआ, तांबा, सीसा, रूपा, सुवर्ण, वज्र, हरताल, हिंगुलक, मनःशीला, अंजन, अभ्रक-भोडल, और वालु. यह बादर पृथ्वीकाया के भेद कहे हैं. अब मणि के भेद कहते हैं—१. गोमेद मणि, २. रुचक मणि, ३. अंक मणि, ४ स्फटिक मणि, ५. लोहिताक्ष मणि, ६ मरकत मणि, ७ मसारगल्ल, ८ भुजमोचक रत्न, ९. इन्द्रनील रत्न, १०. चंदन रत्न, ११. गौरिक रत्न, १२ हंसगर्भ रत्न, १३ पुलक रत्न, १४ सौगंधिक रत्न, १५ चंद्रप्रभ रत्न, १६ वैडूर्य

सूत्र

मरगय मसारगल्ल, भुअमोअग इंदनीलय ॥ ३ ॥ चंदण गेरुअहंस पुलए सोगंधिए यबोधव्वे ॥ चंदप्पह वेरुलिए, जलकंते सूरकंते॥४॥ जेयावण्णेय तहप्पगारा, तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय- अपज्जत्तगाय ॥ तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता;तत्थणं जेते पज्जत्तगा एतेसिं वण्णादेसेणं, गंधादेसेणं, रसादेसेणं, फासादेसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखेज्जाइं जोणिप्पमुह सयसहस्साइं ॥ पज्जत्तगाणिस्साए अपज्ज-त्तगावक्कमंति, जत्थ एगोतत्थ णिअमा असंखेज्जा॥ सेत्तं खरबायर पुढविकाइया ॥ सेत्त बायरपुढविकाइया ॥ सेत्तंपुढविकाइया ॥१॥ सेकिंतं आउकाइया? आउकाइया

अर्थ

रत्न, १७ जलकान्त और १८ सूर्यकान्तरत्न यों रत्न की अठारह जाति कही. ऐसे जो जीवों हैं उन के दो भेद कहे हैं. पर्याप्त व अपर्याप्त, उन में जो अपर्याप्त है उन की वर्णादि से पहचानना नहीं हो सकती है और जो पर्याप्त है वे वर्णादेश, गंधादेश, रसादेश, व स्पर्शादेश से सहस्त्रशः भेद होने से संख्यात लाख(सात लाख) योनि कही, पर्याप्त आश्री अपर्याप्त असंख्यात उत्पन्न होवे. जहां एक जीव पर्याप्त उत्पन्न होवे वहां असंख्यात जीव अपर्याप्त निश्चय ही उत्पन्न होवे. यह कठोर बादर पृथ्वी काया का वर्णन किया. यह बादर पृथ्वीकाया हुई, यों यह पृथ्वीकाया का वर्णन हुआ ॥ १ ॥

सूत्र

काइया, से किंतं सुहुमवाउकाइया ? सुहुमवाउकाइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्ज-त्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ सेत्तं सुहुमवाउकाइया ॥ से किंतं वायरवाउकाइया ? बायर वाउकाइया अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-पाईणवाए, पदीणवाए, दाहिणवाए, उदि-णवाए, उड्डवाए, अहोवाए, तिरिअवाए, विदिसिवाए, वाउब्भामेभामो, उक्कलिया वायमंडलिया. उक्कलिआवाए, मंडलिआवाए, गुंजावाए, झंझावाए, संवट्टगवाए, घणवाए, तणुवाए, सुद्धवाए, जेआवण्णे तहप्पगारा ॥ ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय, अपज्जत्तगाय ॥ तत्थणं जे ते पज्जत्तगा एतेसिणं वण्णादेसेणं, गंधा

अर्थ

वायुकाया के दो भेद कहे हैं. पर्याप्त व अपर्याप्त यह सूक्ष्म वायुकाया हुइ. बादर वायुकाय किसे कहते हैं ? बादर वायुकाया के अनेक भेद कहे हैं १ पूर्व का वायु २ पश्चिम का वायु ३ दक्षिण का वायु ४ उत्तर का वायु ५ ऊर्ध्व वायु ६ अधो वायु ७ तिर्यक् वायु विदिशि का वायु ८ उत्कल वायु समुद्र का ९ मंडलि का वायु गोल, १० वालु उडावे वैसा वायु ११ मंडलावर्त वायु १२ गुंजार व थांभता हुवा अकुल अनिष्ट वायु, संवर्त वायु, घनवात वायु, तनुवात वायु, शुद्ध वायु और ऐसे अन्य वायु के पर्याप्त व अपर्याप्त यों दो भेद किये हैं. इन में जो अपर्याप्त हैं वे वर्णादिक से अप्राप्त हैं और जो पर्याप्त हैं वे वर्ण गंध रस व स्पर्श से सहस्र योनि के भेद से संख्यात लक्ष योनि में होवे. पर्याप्त की निश्राय से अपर्याप्त

सूत्र

कंतुयरिकुंत्थुभ वोधव्वा देवदालिय ॥ २ ॥ तिलएलओ रुच्छत्तो, हसिरीसे सत्तवण्ण दहिवण्णे, लोद्धधवच चंदणज्जुण णीविकुडए कयंबेय ॥ ३ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा एएसिणं मूलावि असंखेज्जजीविया, कंदावि खंदावि, तयावि सालावि पवालावि, पत्ता पत्तेअ जीविया पुप्फायअणेग जीविया फलायबहुवीया ॥ सेतंबहुवीअगाय सेत्तंरुक्खा ॥ से किंतं गुच्छा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा) वाइंगिणि अल्लइय.थुणुईय तह कच्छंरी अ जासुमणा॥रूवी आढइनीली,तुलसी तह माउलिंगाय॥ १॥कुंत्थुभरिपिप्पलिआ, अयसी विल्ली अकाय माईय ॥ चुण्णपडोलाकंदली वाउव्वत्थुले वदरे॥ २ ॥पत्तउरसीअउरए

अर्थ

इम्बली, फणस. दाडिम, पिपल, गुलर. न्यग्रोध, नन्दी वृक्ष, इली पिपर, सभी, पीलवृक्ष कतुम्बरी कच्छुम्बरी, देवदली, तिलक, लकुच, छत्री,सरसडी, सप्तपर्ण. दधिपर्ण, लोध्र, चंदन, अर्जुन, नीम, कुटज, कदम्ब, और भी इस प्रकार के बहुत बीज वाले वृक्ष जानना. इन के मूल, स्कंध, त्वचा प्रवाले में असंख्यात जीव हैं पत्ते में प्रत्येक जीव हैं, पुष्प में संख्यात असंख्यात व अनंत जीव हैं फल में अनेक जीव पके बाद जीतने बीज उतने जीव यह बहुत बीज वाले वृक्ष के भेद कहे. यह वृक्ष के भेद संपूर्ण हुवे अब गुच्छ के भेद कहते हैं, गुच्छा किसे कहते हैं ? गुच्छा के अनेक भेद कहे हैं. वैगन, सल्लकी,

सूत्र

कंतुवरिकुंत्थुभ बोधव्वा देवदालिय ॥ २ ॥ तिलएलओगुच्छवो, हासिरीसे सत्तवण्ण दहिवण्णे, लोद्धधवच चंदण्णज्जुण णीवेकुडए कयंबेय ॥ ३ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा एएसिणं मूलावि असंखेज्जजीविया, कंदावि खंदावि, तयावि सालावि पवालावि, पत्ता पत्तेअ जीविया पुप्फापअणेग जीविया फलायहुबीया ॥ सेत्तंबहुबीअगाप सेत्तंरुक्खा ॥ से किंतं गुच्छा२? अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा)वाइंगिणि अल्लइय.तुंडुईय तह कच्छुंरी अजासुमणा॥रूवी आढइनीली,तुलसी तह माउलिंगाय॥१॥कुंत्थुभंरिपिप्पलिआ, अयसी विल्ली अकाय माईय ॥ चुणगपडोलाकंदली वाउव्वत्थुले वदरे॥ २ ॥पत्तउरसीअउरए

अर्थ

इमली, फणस. दाडिम, पिपल, गुलर. न्यग्रोध, नन्दी वृक्ष, हस्ती पिंपर, सभी, पीलक्षु कबुम्बरी कष्टउम्बरी, देवदली, तिलक, लकुच, छत्री, सरमही, सप्तपर्ण. दधिपर्ण, लोध्र, चंदन. अर्जुन, नीव, कुटज, कदम्ब, और भी इस प्रकार के बहुत बीज वाले वृक्ष जानना. इन के मूल, स्कंध, त्वचा व प्रवाले में असंख्यात जीव हैं पत्ते में प्रत्येक जीव हैं, पुष्प में संख्यात असंख्यात व अनंत जीव हैं फल में अनेक जीव पके बाद जीतने बीज उतने जीव. यह बहुत बीज वाले वृक्ष के भेद कहे. यह वृक्ष के भेद संपूर्ण हुवे अब गुच्छ के भेद कहते हैं, गुच्छा किसे कहते हैं? गुच्छा के अनेक भेद कहे हैं. वेगन, सल्लकी,

सूत्र

कंतुयरिकुंत्थुभ वोयव्वा देवदालिय ॥ २ ॥ तिलएलओ पिच्छचो, हसिरीसे सत्तवण्ण दहिवण्णे, लोद्धधवच चंदणज्जुण्ण णीवेकुडए कयंवेय ॥ ३ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा एएसिणं मूलावि असंखेज्जजीविया, कंदावि खंदावि, तयावि सालावि पवालावि, पत्ता पत्तेअ जीविया पुप्फायअणेग जीविया फलायहुवीया ॥ सेतंयहुवीअगाय सेत्तंरुक्खा ॥ से किंतं गुच्छा २? अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा) वाइंगिणि अल्लइय.पुणुईय तह कच्छुंरी अजासुमणा॥रूवी आढइनीली,तुलसी तह माउलिंगाय॥ १॥कुंत्थुभरिपिप्पलिआ, अयसी विल्ली अकाय माईय ॥ चुणगपडोलाकंदली वाउव्वत्थुले वदरे॥ २ ॥पत्तउरसीअउरए

अर्थ

इम्बली, फणस. दाडिम, पिपल, गुलर. न्यग्राध, नन्दी वृक्ष, हस्ती पिंपर, सभी, पीलक्षु कतुम्बरी कच्छुम्बरी, देवदली, तिलक, लकुच, छत्री,सरसडी, सप्तपर्ण. दधिपर्ण, लोध्र, चंदन, अर्जुन, नीव, कुटज, कदम्ब, और भी इस प्रकार के बहुत बीज वाले वृक्ष जानना. इन के मूल, स्कंध, त्वचा व प्रवाले में असंख्यात जीव हैं पत्ते में प्रत्येक जीव हैं, पुष्प में संख्यात असंख्यात व अनंत जीव हैं फल में अनेक जीव पके बाद जीतने बीज उतने जीव यह बहुत बीज वाले वृक्ष के भेद कहे. यह वृक्ष के भेद संपूर्ण हुवे अब गुच्छ के भेद कहते हैं, गुच्छा किसे कहते हैं? गुच्छा के अनेक भेद कहे हैं. वेंगन, सल्ल की,

सूत्र

कंतुयरिकुंत्थुभ वोधव्वा देवदालिय ॥ २ ॥ तिलएलओ गुच्छत्तो, हसिरीसे सत्तवण्ण दहिवण्णे, लोद्धधव्व चंदणज्जुण णीवेकुडए कयंवेय ॥ ३ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा एएसिणं मूलावि असंखेज्जजीविया, कंदावि खंदावि, तयावि सालावि पवालावि, पत्ता पत्तेअ जीविया पुप्फायअणेग जीविया फलायबहुवीया ॥ सेतंबहुवीअगाय सेत्तंरुक्खा ॥ से किंतं गुच्छा २? अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा) वाइंगिणि अल्ल णुईय तह कच्छंरी अजासुमणा॥रूवी आढइनीली,तुलसी तह माउलिंगाय॥ १॥ लिआ, अयसी विल्ली अकाय माईय ॥ चुणगपडोलाकंदली वाउव्वरथुले ीअउरए

अर्थ

इम्बली, फणस. दाडिम, पिपल, गुल्लर. न्यग्रोध, नन्दी वृ तुम्बरी कष्णउम्बरी, देवदली, तिलक, लतुक, छत्री, सरसडी, सप्तप म, कदम्ब, और भी इस प्रकार के बहुत बीज वाले वृक्ष ख्यात जीव हैं पत्ते में प्रत्येक जीव हैं, पुष्प में सं फके बाद जीतने बीज उतने जीव. यह बहुत अब गुच्छ के भेद कहते हैं, गुच्छा किते

सूत्र

हवइ तह जवासए बोधव्वे ॥ निग्गुंडि अक्कतूवरी, आढई चेव तलऊडा ॥ ३ ॥ सणवाणकासमद्दग, अग्घाडग सामसिंदुवारेय ॥ करमद्द अद्दरूसग, करीरएरावण महत्थे ॥ ४ ॥ जाउल तमाल पिल्ली, गयमारिणि कुच्चकारियाभंडि ॥ जावइ केयइ तहगं जपाऊलारासि अंकोल्ले ॥ ५ ॥ जंआवण्णं तहप्पगारा सेत्तं गुच्छा ॥ से किंतं गुम्मा? अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा) सेरिअएणोमालिय, कोरिंटय बन्धुजीव गमणोजे ॥ पीईय पाण कणइर, कुज्जय तहसिंदुवारेय ॥ १ ॥ जाई मोग्गर तह जूहिआय, तहमल्लिआयवासंती ॥ वत्थुल कच्छुल सेयाल गंठिमगदंतिआ चेव ॥२॥ चपग जाईणवणी इआयंकुर तहा महाजाई ॥ एवमणेगागारा, हवंति

अर्थ

वांदिक, कछूरी, जासुमन, रुई, आढी, नीलगुली तुलसी, मातुलिंगी, कोथमीर, पिपलीय, अलसी, गाडी काइया, माइया, चंपुवा, पथेल, कहलिका, पानस, वधुआ, पदपर, वचदंती पन्नीउरजन, उरवी, सनामा, निगुंडी, अनतुम्बरी, आढी, तउडा, सण, पान, कासमुद्रक, अघोडा, नील संभीवा, निगोडी, कचनरी, गर्द्दकी, तलउडा, सनपानी, कामसुक, श्याम, सिंदुवारी, करमदे, अड्डूसी, केरडा, रावण, महिच्छ, आउल, तमाल, पत्ली गजमारली, कुयुका, भंडी, जावइ, केतकी गजपाउल, अंकोली और भी इन प्रकार की अन्य वनस्पति गुच्छ कहाती हैं. यह गुच्छ के भेद हुए. अहो भगवन्! गुल्म के कितने

सूत्र

कंतुयरिकुंत्पुग घोधव्वा देवदालिय ॥ २ ॥ तिलएलओ गुच्छत्तो, हतिरीसे सत्तवण्ण दहिवण्णे, लोद्धधवस्स चंदण्णऽज्जुण्ण णीवेकुडए कयंबेय ॥ ३ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा एएतिणं मूलावि असंखेज्जजीविया, कंदावि खंदावि, तयावि सालावि पवालावि, पत्ता पत्तेअ जीविया पुप्फापअणेग जीविया फलाबहुबीआ ॥ सेतंबहुबीअगाय सेत्तंरुक्खा ॥ से किंतं गुच्छा २? अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा)वाइंगिणि अल्लइय.थुणुईय तह कच्छुरी अजासुमणा॥रूवी आढइनीली,तुलसी तह माउलिंगाय॥ १॥कुंत्थुभंरिपिप्पलिआ, अयसी विल्ली अकाय माईय ॥ चुण्णपडोलाकंदली वाउव्वत्थुले वदरे॥ २ ॥पत्तउरसीअउरए

अर्थ

हरडी, फणस, दाड़िम, पिपल, गुलर, न्यग्रोध, नन्दी वृक्ष, हस्ती पिपर, सभी, पीलक्षु कतुम्बरी कण्डमरी, देवदारी, तिलक, लकुच, छत्री,सरसड़ी, सप्तपर्ण, दधिपर्ण, लोध्र, चंदन, अर्जुन, नीव, कुटज, कदम्ब, और भी इस प्रकार के बहुत बीज वाले वृक्ष जानना. इन के मूल, स्कंध, त्वचा प्रवाले में असंख्यात जीव हैं पत्ते में प्रत्येक जीव हैं, पुष्प में संख्यात असंख्यात व अनंत जीव हैं फल में अनेक जीव एक हाड़ जीसमें बीज उसमें जीव. यह बहुत बीज वाले वृक्ष के भेद कहे. यह वृक्ष के भेद संपूर्ण हुवे अब गुच्छ के भेद कहते हैं. गुच्छा किसे कहते हैं ? गुच्छा के अनेक भेद कहे हैं. वेंगन, सल्ल की,

सूत्र

छत्रइ तह जवासए वोधव्वे ॥ निग्गुंडि अक्कतूवरी, आढई चेव तलऊडा ॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्दग, अग्घाडग सामसिदुवारेय ॥ करमद्द अद्दरूसग, करीरएरावण महत्थे ॥ ४ ॥ जाउल तमाल विरिली, गयमारिणि कुच्चकारियाभेंडि ॥ जावइ केयइ तहगं जपाडलादासि अंकोल्ले ॥ ५ ॥ जंआवण्णे तहप्पगारा सेत्तं गुच्छा ॥ से किंतं गुम्मा? गुम्मा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा) सेरिअएणोमालिय, कोरिंटग बंधुजीव गमणोज्जं ॥ पीइंय पाण कणइर, कुज्जय तहसिंदुवारेय ॥ १ ॥ जाई मोग्गर तह जुहिआय, तहमल्लिआयवासंती ॥ वत्थुल कच्छुल सेवाल गंठिमगदंतिआ चेव ॥२॥ चपग जाईणवणी इआयकुंदे तहा महाजाई ॥ एवमणेगागारा, हवंति

अर्थ

वांदिक, कच्छुरी, जासुमन, रूई, आटो, नीलगुली तुलसी, मातुलिंगी, कोथमीर, पिंपलीय, अलसी, वल्ली, काइया, माइया, चंचुवइ, पवेल, कदलिका, पानक, वथुआ, पदपर, वत्रदंती पत्रोउरजन, उरयी, मनाला, निगुंदी, अक्कतुम्बरी, आढी, लउडा, सण, पान, कासमुद्रक, अघोडा, जीव संजीवा, निगोडी, करवरी, मर्दकी, तलउडा, सनपानी, कासमुक, श्याम, सिंदुवीरी, करमदे, अडूसी, केरडा, रायण, महिल्लक, आडल, तमाल, परली गजमारली, कुचुका, भेंडी, जावइ, केतकी गजपाडल, अंकोली और भी इन प्रकार की अन्य वनस्पति गुच्छ कहाती है. यह गुच्छ के भेद हुए. अहो भगवन्! गुल्म के कितने

सूत्र

गुम्मा मुणअन्वा ॥ ३ ॥ सेत्तंगुम्मा ॥ से किंतं लयाओ ? लयाओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा - (गाहा) पउमलया नागलया, असोग चंपगलयाय चूतलया ॥ वणलया, वासंतिलया अइमुत्तयकुंदसामलया ॥ १ ॥ जे आवण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्तं लयाओ ॥ से किंतं वल्लीओ ? वल्लीओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा - (गाहा) पूसफली कालिंगी, तुंबीतपुसीएलवालुंकी ॥ घोसालई पडोला पंचगुलिआयणालीय ॥ १ ॥ कंगूलआ कदुइया कंकोडइ कारिअल्लइ सुभगा ॥ कुयवायवाग लीवा, वावल्लि तह देवदालीय ॥ २ ॥ अप्फोआ अइमुत्तय, णागलया कण्णसूरवल्लीय ॥ संघट्ट सुमिणसावि जायसुमण कुवि

अर्थ

भेद कहे हैं ? गुल्म के अनेक भेद कहे हैं. सेरिका, नवमालिका, कोरंट, बंधुजीव, पणोरिया, मनोज्ञा, प्रीतिकरा, प्राणकरा कुब्जकी, सिंदुवार, जाइ, मोगरा, जुइ, कीमती, मालती, वत्थुल, कच्छुल, सेवाल, गंठिया, दंतिका, चंपक, जाइ, नवनीतक, कुंदा महाजाइ वगैरह इस प्रकार की अन्य भी गुल्म वनस्पति हैं. लता वनस्पति किसे कहते है ? लता वनस्पति के अनेक भेद कहे हैं:-पद्म लता, नाग लता, अशोक लता, चंपक लता, आम्रलता, वनलता, वासंतिलता अतिमुक्त लता, कुंदलता, श्यामलता और अन्य इस प्रकार की सब वनस्पति लता कहाती है वल्ली किसे कहते हैं ? वेल्ली के अनेक भेद कहे हैं पूसफली, कालिंगरी,

सूत्र

द वल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दिअ अंबावल्ली, वीरविराली जिअंति गोवली ॥ पाणा सामावल्ली, गुंजावल्लीपवत्थाणी ॥ ४ ॥ ससाविंदु गोत्तफुसिया, गिरकण्णइ मालुसामावल्ली... याय अंजणइ ॥ दहफुल्लयकोगलिमागलीय तह अंघावोदीया ॥ ५ ॥ जेआवण्ण तहप्पगारा ॥ सेत्तंवल्लीओ ॥ सेकिं तं पव्वगा ? पव्वगा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-
(गाहा) इक्खुयाइक्खूवडये, वीरुणातहइक्कडेअ मासेय ॥ सुंठसेरअवत्ते, तिमिरे सयपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलुकणए कंकावंसेअ ववंसेय ॥ उदएकुडए विमए कंडावेलुअकाल्लाणे ॥ २ ॥ जेआवण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्तं पव्वगा ॥ सेकिंतं तणा ? तणा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-सेडिअ गंतिअहोत्तिय, दब्भकुसेपव्वए ॥

अर्थ

तुंबी, तंतुमिक, पल्ची चीमडी, घोमातकी, पटोल, पंचगुलिका, नालिका कंगुकी, कडवी वेल, कंकोडी, करेली, सुभगा, कुवधा, वागालिका, पीयती, देव दारु का आफोक, अतिमुक्त, नगरवल्ली, कृष्ण सूरण, संगत, सुपनम, वेद, जाम्रपर्ण, कविदवल्ली, द्राक्ष, भमरवेल, वीर वीटली, जीवा, गोवाली, पानी मासावल्ली, चनोटी, वत्थानी, शशबिन्दु गोत्र फुगसिका, गिरकर्णी, मालुका, अंजनकी, दह फाल्की, कांगनी, मांगली, अंकोवदी और अन्य भी इस प्रकार की वेली की जाती जानना. पर्व वृक्ष किसे कहते हैं ? पर्व वृक्ष के अनेक भेद कहे हैं. इक्षु, बडा इक्षु, वीरणा, आकडा, मांस, सुंब, मरंड कडा, चिंब, तिमिर, शतपत्र, नड,

सूत्र

पोंडइला अज्जुण असाढए रोहिअ तिसुत्रेय खीरभुसे ॥ २ ॥ एरंडे कुरुविंदे, करकरमुंठे तहाविभंगूअ ॥ महुरतणछुरयसिप्पिय, बोधव्वे सुंकालि तणेय ॥ ३ ॥ जेआवण्णे तहप्पगारा सेत्तंतणा ॥ सेकिंतं वलया ? वलया अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा- (गाहा) तालतमालेतक्कलि, तेअली सालि सारकाल्लाणे ॥ सरले जावइ केयइ, कदली तहचउम्मरुक्खेय ॥ १ ॥ भुयरुक्खे हिंगूरुक्खे, लवंगरुक्खे होइ बोधव्वे ॥ पूअफलीखज्जूरी, बोधव्वानालीएरीय ॥ २ ॥ जेआवण्णे तहप्प- गारा ॥ सेत्तंवलया ॥ सेकिंतं हरिआ ? हरिआ अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा) अज्झोरुहवोडाणो, हरितगतह तंदुलेज्जगतणेय वत्थुलवोरगमज्जारपोइवल्लीअ पाल

अर्थ

बांस वेणु, कनक, कंकवंश, चापवंसा, उदक, कुडज, विपत्र, कडा वेण, कुलवान और भी इस प्रकार के अन्य वृक्ष भी गांठवाले जानना. अब तृण वनस्पति के अनेक भेद कहते हैं. १ सेडिक, भक्तिक, हीतिक, डाभ, कुश, पर्वक, पोडल अर्जुन, असाढ, रोहिक, शिवुरेद, क्षीण भुस, एरंड, करविंद, काकच, विभंगु, मधुर तृण, छुरक, सीपक, संकल तृण, और भी इस प्रकार के अनेक तृण की जाति कही. वलय, के कितने भेद कहे हैं ? वलय के अनेक भेद कहे हैं ताल, तमाल, तक्कली, तेतली शालिका, कल्लाण, सरल, जाई, केतकी केळी, चर्मवृक्ष भूर्ज वृक्ष, भगर, वृक्ष, लवंग वृक्ष, हिंगवृक्ष, पुंगीफल वृक्ष, पर और भी

सूत्र

ला ॥ १ ॥ दगपिप्पलीअदव्वी सोत्थिअसाए तहेव मंडुक्की ॥ मूलगसरिसव अंबिल साए याजिअंतए चेव ॥ २ ॥ तुलसी कण्हउराले, फणिज्जुए अज्जए अभुअणए ॥ चोरग दमणगमरुअग, सयपुप्फिंदीवरेअतहा ॥ ३ ॥ जेआवण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्तं हरिआ ॥ सेकिंतं ओसहीओ? ओसहीओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा- (गाहा) सालिवीहिगोधुम, जवाकलमसूर तिलमुग्गा मासणिप्फाव कुलत्थ अलिसंद सईणपलिंथा ॥ १ ॥ अयसी कुसुंभ कोद्दव, कंगूरालग वरट्टकोदूसा ॥ सणसरि सव मूलगबीअ माइआदेसभेएणं ॥ २ ॥ जेआवण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्तं ओसहीओ । सेकिंतं

अर्थ

इस प्रकार के अन्य वृक्ष वलय कहाते हैं. हरी किसे कहते हैं? हरी के अनेक भेद कहे हैं अध्यारूह, वोडाण हरितकाल, तृण, वत्थुल, पोतक, मार्जार, पाई, बील, पालक, जलपीपरी, दवि, सोत्थिक, मंडुकी, मूला, सरसव, अंबिला, सावेत, जियेत, तुलसी, उराल, फणिज, अंजोवारी, भुयक, चोरक दमणी, मरुआ, सुतपुष्पी इंदीवर और भी इस प्रकार की अन्य अनेक हरिकाय जानना. औषधि किसे कहते हैं? औषधि के अनेक भेद कहे हैं. शाली, व्रीही, गोधूम, जवजव, जवार, मग, कलममूर, तिल, मंग, मास उडद, वाल, कुलथ, अलसी, मीटे, पलिमंथ, अलसी कुसुम कोद्रव कांग, रालक, वरट,

सूत्र

जलरुहा ? जलरुहा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-उदए, अवए, पणए, सेवाले कलंवुआ हढे कसेरुआकच्छभाणी, उप्पले, पउमे, कुमुदे, नलिणे, सुभए, सोगंधिए, पोंडरीए, महा-पोंडरीए, सयपत्ते, सहस्सपत्ते, कल्हार, कोकणदे, अरविंदे, तामरसे, भिमे भिस मुणालो पोक्खलं, पोक्खलच्छिलए ॥ जेआवण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्तं जलरुहा ॥ से किंतं कुहणा २ अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा) आए काए कुहणं; कुणक्कदव्व हलियाअफाए ॥ सज्झाए छत्तीए, वंसीणहिआ, कुरए ॥ १ ॥ जेआवण्णेतहप्पगारा सेत्त कुहणा ॥ १३ ॥ णाणाविहसंठाणा, रुक्खाणएगजीविआ पत्ता, खंधो-

अर्थ

कोद्रव, शण सरसव, मूलक वगैरह औषधि धान्य की जाति हैं. जलवृक्ष के कितने भेद कहे हैं-जलवृक्ष के अनेक भेद कहे हैं, उदक, अवक, पनक, सेवाल, कलंबुका, हद, कसेरी, कच्छ, भणी, उत्पल, पद्म, कुमुद, नलिन, सुभग, सौगंधिक, पुंडरिक, महापुंडरिक, शतपत्र, सहस्रपत्र, कल्हार, कोकनद अरविंद, तामरस, भ्रम, मृणाल, पुष्कल, पुष्कलास्तिक और अन्य भी इस प्रकार के जलरुह वृक्ष के भेद कहे हैं कुहान किसे कहते हैं ? कुहान के अनेक भेद कहे हैं. आय, काय, कुहान, कुणक, द्रव्य हालिका, सभझ, सत्ताक, छत्रिक, वंसीणहित, कुहरक और भी इस प्रकार के अन्य भी कुहान कहाते हैं. यह बारह प्रकार की वनस्पति के भेद कहे ॥ १३ ॥ विविध प्रकार के संस्थानवाले वृक्षादिक के सब पत्रादि

सूत्र

एगस्स जीवो, तालसरल नालिएरीणं ॥ १ ॥ जह सगल सरिसवाणं, सिलेस-मिस्साणं वट्टिआवट्टा ॥ पत्तेअसरीराणं तहहोंतिसरीरसंघाया ॥ २ ॥ जहवा तिल पप्पडिया बहुएहिं तिलेहिं संहतासंति ॥ पत्तेअसरीराणं, तहहोंति सरीरसंघाया ॥३॥ सेत्त पत्तेअसरीरबायर वणस्सइ काइया ॥ १४ ॥ से किंतं साहारण सरीर बायर वणस्सइकाइया ? साहारण सरीरबायर वणस्सइकाइया अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा (गाहा) अवए पणए सेवाले, लोहिणीणिहूत्थिभगाय ॥ असकण्णी सिहकण्णी, सिउंढानतंमुसंढीय ॥ १ ॥ रुरुकुण्हरिआजारु, छीरविरालि तहेव

अर्थ

एक जीववाले हैं. ताल, खजुरी व नालियेर के स्कंध में एक जीव है शेष सब स्कंध अनेक शरीरवाले हैं. इन में किसी को ऐसा संदेह होवे कि यदि प्रत्येक शरीरवाला होवे तो एक दण्ड के आकार में दृष्टिगोचर कैसा होता है ? जैसे सरसव के दाने किसी चिकासवाले की साथ मीश्रण करने एक दीखता है वैसे ही प्रत्येक शरीर का शरीर संघात दीखता है जैसे तिल की तिलपापडी के बहुत तीलों एक होकर रहते हैं वैसे ही प्रत्येक शरीरवाले का शरीर संघात होता है. यह प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के भेद हुए ॥ १४ ॥ साधारण शरीरी बादर वनस्पतिकाया किसे कहते हैं ? साधारण शरीरी बादर वन.

सूत्र

कंदमूले वंसिमूलेत्ति आवरे ॥ संखेज्जमसंखेज्जा, बोद्धव्वाणंत जीवाय ॥ ८ ॥ सिंघा-डगस्सगुच्छो अणेगजीवोउहोतिनायव्वो ॥ पत्तापत्तेयजिया, दोण्णियजीवाओफले भणिया ॥ ९ ॥ जस्समूलस्सभग्गस्स, समोभंगोपदीसइ ॥ अणंतजीवेउसेमूले जेआव ण्णे तहाविहा ॥ १० ॥ जस्सकंदस्सभग्गस्स, समोभंगोपदीसइ ॥ अणंतजीवेउसे कंदे जे आवण्णे तहाविहा ॥ ११ ॥ जस्सखंधस्सभग्गस्स, समभंगोपदीसइ ॥ अणं तजीवेउसेखंधे, जेआवण्णे तहाविहा ॥ १२ ॥ जीसे तयाएभग्गाए, समोभंगोपदीस इ ॥ अणंतजीवातयासाओ, जेआवण्णा तहाविहा ॥ १३ ॥ जस्ससालस्स भग्गस्स,

अर्थ

कंदमूल व वंशमूल इन में किसी स्थान संख्यात, किसी स्थान असंख्यात व किसी स्थान अनंत जीव हैं. सिंघाडे के गुच्छे में अनेक जीव कहे हैं, पत्र में प्रत्येक जीव और फल में दो जीव कहे हैं. अब साधारण व प्रत्येक शरीर का वर्णन करते हैं. जिस वनस्पति का मूल तोडकर टुकडा करने से चक्राकार समवि-भाग होवे उस में जिस वर्णवाला मूल होवे उन ही वर्णका शरीर धारन करनेवाले अनंत जीवों उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही जिस स्कंध को तोडते चक्राकार समविभाग होवे, उस स्कंध में उन ही वर्णवाले अनंत जीव आकर उत्पन्न होवे. जिस त्वचा तोडते बराबर समविभाग होवे उस त्वचा में भी उन ही वर्ण

सूत्र

समोभंगोपदीसइ ॥ अणंतजीवेउसेसाले जेआवण्णे तहाविहा ॥ १४ ॥ जस्सपवालस्स भग्गस्स । समोभंगोपदीसइ ॥ अणंतजीवेपवालेसे, जेआवण्णे तहाविहा ॥ १५ ॥ जस्सपत्तस्सभग्गस्स, समोभंगोपदीसइ ॥ अणंतजीवेउसेपत्ते, जेआवण्णे तहाविहा ॥ १६ ॥ जस्सपुप्फस्सभग्गस्स, समोभंगोपदीसइ अणंतजीवेउसेपुप्फे जेआवण्णे तहाविहा ॥ १७ ॥ जस्सफलस्स भग्गस्स समोभंगोपदीसइ ॥ अणंतजीवफलसउ जेआवण्णे तहाविहा ॥ १८ ॥ जस्सबीयस्स भग्गस्स समोभगोपदीसइ अणंतजीवेउसेबीए जेयावण्णे तहा विहा ॥१९॥ १५ ॥ जस्समूलस्स भग्गस्स हीरा भगो पदीसइ ॥ परित्तजीवेउसेमूले, जेआवण्णे तहाविहा ॥ २० ॥

अर्थ

वाले अनेक जीवों उत्पन्न होते हैं. जो शाखा तुटने से समविभाग होवे उस में उस ही वर्ण वाले अनंत जीवों जानना. जो प्रवाल तुटने से समविभाग में तुटे. उस में अनंत जीवों जानना. जिस पत्ते के टुकडे करने से समविभाग होवे उस में अनंत जीवों होवे, जिस पुष्प को तोडते समविभाग होवे उस में अनंत जीवों होवे, जिस फल को तोडते समविभाग होवे उस में अनंत जीवों होवे. जिस बीज को तोडते समविभाग होवे उस में अनंत जीवों होवे ॥ १९ ॥ अब परित्त जीवों का कथन करते हैं. जिस मूल को तोडते विषम भाग होवे उस मूल में प्रत्येक जीवों उत्पन्न होवे. वैसे ही तथा प्रकार के

जस्सकंदस्स भग्गस्स हीरो भंगोपदीसइ ॥ परित्तजीवेउसेकंदे, जेआवण्णे तहा विहा ॥ २१ ॥ जस्सखंधस्स भग्गस्स, हीरो भंगो पदीसइ ॥ परित्तजीवेउ सेखंधे ॥ जेआवण्णे तहाविहा ॥ २२ ॥ जीसे तयाए भग्गाए, हीरो भंगो पदीसइ, परित्त जीवा तयासाओ, जेआवण्णा तहाविहा ॥ २३ ॥ जस्स सालस्स भग्गस्स, हीरो भंगोपदीसइ ॥ परित्तजीवेउ सेसाले, जेआवण्णे तहाविहा ॥ २४ ॥ जस्स पवालस्स भग्गस्स हीरो भंगोपदीसइ ॥ परित्तजीवे पवालेहु, जेआवण्णे तहाविहा ॥ २५ ॥ जस्सपत्तस्स भग्गस्स हीरो भंगोपदीसइ॥परित्तजीवेउसेपत्ते,जेआवण्णे तहाविहा॥२६॥ जस्सपुप्फस्स भग्गस्स, हीरोभंगोपदीसइ ॥ परित्तजीवेउसेपुप्फे, जेआवण्णे तहाविहा ॥ २७ ॥ जस्सफलस्सभग्गस्स हीरोभंगोपदीसइ ॥ परित्तजीवे फलेसेउ, जेआवण्णे

प्रत्त का भी जानना. जिस कंद को तोडते विषम तूटे उस में परत जीवों होवे. जिस स्कंध को तोडते विषम तूटे उस में परत्त जीवों होवे. जिस की त्वचा (छाल) तोडते विषम तूटे उस में परत्त जीवों होवे जिस शाखा तोडते विषम तूटे उस में परत्त जीवों होवे, जिस प्रवाल तोडते विषम तूटे उस में परत्त जीवों होवे. जिस पुष्प तोडते विषम तूटे उस में परत्त जीवों

सूत्र

तहाविहा ॥ २८ ॥ जस्सबीअस्सभग्गस्स, हीरोभंगो पदीसइ, परित्तजीवे उसेबीए । जेआवण्णे तहाविहा ॥ २९ ॥ १६ ॥ जस्समूलस्स कट्ठाओ छल्ली बहलतरीभवे ॥ अणतजीवाओ साछल्ली, जाआवण्णा तहाविहा ॥३०॥ जस्सकंदस्स कट्ठाओ, छल्ली बहलतरीभवे ॥ अणतजीवाउसाछल्ली, जाआवण्णा तहाविहा ॥ ३१ ॥ जस्सखंधस्सकट्ठाओ छल्लीबहलतरीभवे ॥ अणंतजीवाओसाछल्ली, जाआवण्णा तहाविहा ॥३२॥ जस्ससालाइकट्ठाओ, छल्लीबहलतरीभवे ॥ अणंतजीवाउसाछल्ली, जाआवण्णा तहाविहा ॥ ३३ ॥ जस्समूलस्स कट्ठाओ, छल्लीतणुयरीभवे ॥ परित्तजीवाउसाछल्ली, जाआवण्णातहाविहा ॥३४॥ जस्सकंदस्सकट्ठाओ, छल्लीतणुतरीभवे ॥ परित्तजीवाओसाछल्ली, जाआवण्णा तहाविहा ॥३५॥ जस्सखंधस्स कट्ठाओ, छल्लीतणुतरीभवे ॥ परित्तजीवा

अर्थ

होवे जिस फल तोडने विषम तूटे उस में परत जीवों होवे. जिस बीज तोडते विषम तूटे उस में परत जीवों होवे वैसे ही इस प्रकार के अन्य का जानना ॥ २९ ॥ जिस मूल का काष्ठ-गर्भदल अल्प और ऊपर की छाल जाडा होवे तो उस छाल में अनंत जीवों होवे. वैसे ही इस प्रकार के अन्य वस्तुओं में भी जानना. जैसे मूल का कहा वैसे ही कंद, स्कंध व शाखा का कहना जिस मूल का काष्ठ जाडा व छाल पतली होवे [illegible] छाल में परित्त जीवों होवे. वैसे ही इस

सूत्र

तणुय उसाछल्ली, जायावण्णा तहाविहा ॥ ३६ ॥ जीसेसालाइ कट्ठाओ, परित्तजीवाओ साछल्ली, जायावण्णा तहाविहा ॥ ३७ ॥ १७ ॥ चक्कागं भज्जमाणस्स, गंठी चुण्णघणोभवे ॥ पुढवीसरिसएणभेएणं, अणंतजीवंवियाणाहि ॥ १ ॥ गूढसिरागं पत्तं, सच्छीरं जंचहोइणिच्छीरं ॥ जंपिअ पणट्ठसंधिं, अणंतजीवं विआणाहि ॥ २ ॥ पुष्फाजलया थलया, विंटबद्धायनालिबद्धाय ॥ संखेज्ज मसंखेज्जा, वेघव्वाणंत जीवाय ॥ ३ ॥ जंकेइनालियाबद्धा, पुप्फासंखेज्ज जीविआ ॥ णिहुया अणंतजीवा,

अर्थ

प्रकार के भन्य में कहना. जैसे मूल का कहा वैसे ही कंद, स्कंध व शाखा का जानना. अर्थात् जिस में पतली होवे उसमें परित्त जीवों जानना॥१७॥जिस वनस्पतिका पिण्ड तोडते चक्राकार होवे,कंद स्थानक मूल कंदादि होवे जो गांठ तोडते चूर्ण हो जावे और पृथ्वी जैसे पांच वर्णवाला रंग होवे तो उस पिण्ड में अनंत जीवों जानना ॥१॥ जिस वनस्पति की नसों अथवा गांठों गुप्त होवे,जिस की नसों तोडते उस में दूध नीकलता होवे,यदि दुध नीकलता होवे नहीं तो उस की संधी गुप्त होवे,देखने में आवे नहीं, इस में अनंत जीवों जानना ॥२॥ अब पुष्प फल संख्या का वर्णन करते हैं. पुष्प के चार भेद-जलमपानीमें उत्पन्न हुवे कमलादि,थलज पृथ्वीपर उत्पन्न हुवे चंपकादि,ये दो भेद इन के भी वींट वाले और नालीबद्ध यों चार भेद हए,इनमें संख्यात,असंख्यात व अनंत जीवों होते हैं.॥३॥जो जाइ जुइ आदि नालबद्ध पुष्प हैं उसमें संख्यात

सूत्र

जेयावण्णे तहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलिणीकंदे, अंतरकंदे तहेव जीझीए ॥ एए अणंतजीवा, एगो जीवोभिसमुणाले ॥५॥ पलंडूल्हसणकंदेय, कंदलीय कुडुंवए ॥ एएपरित्त जीवा, जेआवण्णे तहाविहा ॥ ६ ॥ पउमुप्पलणलिणाणं, सुभगसोगंधिआणं ॥ अरविंद कुंकणाणं, सयपत्त सहस्स पत्ताणं ॥ ७ ॥ विंट बाहिर पत्ताए, कण्णियाचेव एगजीवस्स ॥ अब्भितरगापत्ता पत्तेअंकेसरामिंजा ॥ ८ ॥ वेणुणल्लइक्खुवाडिय, समासइक्खूअ इक्कडेरंडे ॥ करकरसुंठीविहंगू तणाण तह पव्वगा-

अर्थ

जीवों जानना और छिन्न पुष्प में अनंत जीवों जानना. इस लक्षणवाली अन्य वनस्पति में इस प्रकार ही जानना. ॥४॥ पद्मनीकंद, उत्पलकंद, अंतरकंद और झझरा इन सब में अनंत जीव जानना. इस की मृणाल में एक जीव जानना ॥ ५ ॥ पउलोकंद लहसनकंद [वनस्पति विशेष] कुंदरु वनस्पति इन सब में प्रत्येक जीव जानना. इस प्रकार की अन्य वनस्पति में भी वैसे ही जानना॥६॥पद्म, उत्पल, नलिन, सुभग, सोगंधिक,पौंडरिक, अरविंद,कोकनद,शतपत्र व सहस्रपत्र यह सब कमल की जाति है. इन के बींट में नीचे की कर्णिका में पत्र के आधार भूत एक जीव और अंदर की पांखडीयों में केसर की बीच की मिंजीयों में इन में प्रत्येक जीव जानना॥७-८॥वांस,इक्षुसमइ वनस्पति.एरंड सेलडी करक सुंठी विहंगु यह तृण आदि इन की भंगि(गांठ)पर्व(गंडी)और पत्तोपर ऊपर का वेष्टन पत्ताकार इन तीनों एक जीव जानना. पत्र में

सूत्र पंच ॥ ९ ॥ अच्छिन्नवं पलिमोउओय, एगस्सहोंति जीवस्स ॥ पत्तेयं पत्ताइं, पुप्फाइं अणेगजीवाइं ॥ १० ॥ पुस्सफलं कालिंगं, तुंवतउसंलु वालुकं ॥ घोसाडयं पडोलं तिंदुयंचेवतिंदूसं ॥ ११ ॥ विंटमंसकडाहं, एयाइहवंति एगजीवस्स ॥ पत्तेयं पत्ताइंस, केसर मकेसरंमिंजा ॥१२॥ सप्फाए सज्झाए, उव्वेहलिआयकुहण कुंदुक्के ॥ एए अणंताजीवा, कुंदुक्केहोति भयणाओ ॥ १३ ॥ जोणिब्भूएबीए, जीवोवक्कमइ सोव अन्नोवा ॥ जोवियमूलेजीवो, सोविहुपत्ते पढमयाए ॥ १४ ॥ सव्वोवि

अर्थ प्रत्येक जीव, पुष्पमें अनेक जीव जानना॥९॥ पुष्प फल, (कांकड्या) कालिंगदा, (तरबुज) तुम्बा, त्रुसदे, नीमडे, (खरबुज) घासडे, (तोरू) पटोल, तिंदुक-टिंबरु, टींबरु इनका विंट गिर, व उपर ककडा इनमें तीनोंका जीव कहा है. इनके पान केसर येते ही केसरा विना पित इन में प्रत्येक जीव जानना ॥ १०-१२ ॥ संफाडाका, उव्वेहलिका, कुहण-भूमीफोडा व कंदुक इन में अनंत जीव होवे परंतु कंदुक में भजना भी होती है अर्थात् किसी देश विशेष में अनंत जीवों भी होवे और असंख्यात जीवों भी होवे ॥ १३ ॥ वनस्पति में प्रथम ऊगते हुवे जो बीजका जीव होता है, वह मूल का जीव होता है सो कहते हैं. बीज योनिभूत जीव परिणत शाक्तिवंत होकर वहां मूलपने उस बीज का जीव उत्पन्न होता है और मूल में जीव उत्पन्न हुवा हो वह जीव प्रथम पत्रपने परिणमता है, अर्थात् मूल और पहिले का पत्र यह दोनों एक जीववाले होते हैं ॥ १४ ॥

किसलओखलु, उग्गममाणो अणंतओ भणिओ ॥ सो चेव विवड्ढंतो, होइ परित्तो अणंतोवा ॥ १५ ॥ समयं वक्कंताण, समयंतेसिं सरीरनिव्वत्ती ॥ समयं आणग्गहणं, समयं उस्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एकस्स उजंगहणं, बहूणं साहारणाण तंचेव ॥ जपहुआण गहण, समासओतंपिएगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारो, साहारणं आणपाणगहणंच, साहारणजीवाण, साहारणलक्खणं एयं ॥ १८ ॥ जह अयगोलोधंतो, जाओ तत्त तवणिज्जसकासो ॥ सव्वो अगणिपरिणओ, निगोअजीवे तहा जाण

नवांकिसलय (अंकुर) उगते हुए निश्चय ही अनंत काय होते हैं. वे ही वृद्धि पाते अंतर्मुहूर्त पीछे यदि प्रत्येक वनस्पति के होवे तो परित्त जीववाले होवे और साधारण होवे तो अनंत जीववाले होवे ॥१५॥ समकाल में उत्पन्न होनेवाले साधारण जीवोंकी शरीर निर्वृत्ति समकालमें होती है, समकालमें श्वासोश्वास होता है॥१६॥ साधारण एक जीव जो ओज आहार ग्रहण करता है वैसा ही ओज आहार सब साधारण जीव करते हैं. और सब साधारण जीव जो आहार करते हैं वह आहार एक साधारण जीव करता है ॥ १७ ॥ अब साधारण का लक्षण कहते हैं—सब जीव में आहार साधारण होता है. श्वासोश्वास साधारण होता है यही साधारण जीवों का साधारण लक्षण है ॥१८॥ जैसे तपाया हुवा सुवर्ण समान तपाया हुवा लोहे का गोला सब अग्नि से परिणत होवे वैसे ही अहो शिष्य ! निगोद के जीवों का जानना. अर्थात्

सूत्र

॥ १९ ॥ एगस्स दोण्हतिण्हव, संखेज्जाणंवपासउं सक्का ॥ दीसंति सरीराइं, णिगोअजीवाणणंताणं ॥ २० ॥ लोगागासपएसे, निओय जीवं ठवेहिएक्कं ॥ एवं ठवेज्जमाणा, हवंतिलोगाअणंताओ! ॥ २१ ॥ लोगागास पएसे, परित्तजीवं ठवेहिएक्कक्कं ॥ एवं ठवेज्जमाणा, हवंतिलोया असंखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेया पज्जत्ता, पयरस्स असंखभागमित्ताओ॥ लोगाअसंखाअपज्जत्तयाणं, साहारण मणंता ॥ २३ ॥

अर्थ

नर्थ स्थान निगोद के जीवों होवे × ॥ १९ ॥ बादर निगोद के भी एक, दो, तीन संख्यात व असंख्यात जीवों के शरीर नहीं देख सकते हैं परंतु अनंत जीवों के शरीर देख सकते हैं ॥ २० ॥ एक २ लोका-काश के प्रदेश में एक २ निगोद के जीवकी स्थापना करते अनंत लोक भरा जावे इतने निगोदिये जीवों हैं॥२१॥ एकेक लोकाकाश के प्रदेश में एकेक प्रत्येक वनस्पति के जीव रखने असंख्यात लोकाकाश भरा जावे इतने प्रत्येक नीवों हैं ॥२२॥ घनी कृत लोक की प्रतर के असंख्यातवें भाग जितने आकाश प्रदेश हैं, उतने प्रत्येक वन-स्पतिकाया के पर्याप्त जीवों हैं, असंख्यात लोक के आकाश प्रदेश प्रमाण अपर्याप्त प्रत्येक वनस्पतिकाया के जीवों हैं और साधारण के पर्याप्त व अपर्याप्त जीवों अनंत लोकाकाश प्रमाण हैं ॥ २३ ॥ इन अनंत

× निगोद के जीवों के परमाणुओं का स्वरूप बताते हैं.-चौदह राजु प्रमाण यह लोक है. असंख्यात योजन का

मूल

एएहिं सरीरेहिं पच्चक्खंते परूविआ जीवा ॥ सुहुमाअणागिज्झा चक्खुफासं न ते इति ॥ २४ ॥ (गद्य) जेआवण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा- पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता तत्थणं जेते पज्जत्तगा तेसिणं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइ, संखेज्जाइ जोणिप्पमुह सयसहस्साइं पज्जत्तगाणिस्साए अपज्जत्तगावक्कमंति ॥ जत्थ एगो तत्थ सियसंखेज्जासिय असंखेज्जा सिय अणंता ॥ १८ ॥ एएसिणं इमाओ

अर्थ

शरीर से प्रत्यक्ष जीवों कहे हैं. और जो सूक्ष्म हैं वे अग्राह्य होने से चक्षु से देखने में नहीं आते हैं ॥२४॥ इस प्रकार के अन्य भी जो होवे उन सब को पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कीये हैं. इन में जो अपर्याप्त हैं वे असमाप्त हैं और जो पर्याप्त हैं वे वर्णादेश से, गंधादेश से, रसादेश से व स्पर्शादेश से सहस्र गमों के भेदवाले हैं. संख्यात लाख (२४ लाख) योनि का समूह कहा है. पर्याप्त शरीर के नेश्राय से अपर्याप्त की उत्पत्ति होती है जहां एक वनस्पतिकाया का जीव है वहां संख्यात, असंख्यात अथवा अनंत जीवों

एकेक प्रदेश पर निगोद के असंख्यात गोलक है. एकेक गोलक में असंख्यात निगोद के जीवों के शरीर हैं. एकेक शरीर में अनंत जीव है एकेक जीव का तेजस व कार्माण ऐसे दो शरीर पृथक् २ हैं. एकेक शरीर अनंत २ ज्ञानावरणीय आदि अनंत २ अष्ट कर्म की वर्गणा का संयुक्त है एकेक वर्गणा अनंत सूक्ष्म परमाणु मय है अर्थात् अग्राह्य है. ऐसे अनंत परमाणुक स्कंध होता है, तब ग्राह्य होता है सो स्कंध अनंत परमाणु मय होता है.

सूत्र

गाहाओ अणुगंतव्वाओ तंजहा—कंदाय कंदमूलाय, रुक्खमूलाइआवरे ॥ गुच्छाय गुम्मवल्लीअ, वेलुआणि, तणाणय ॥१॥ पउमुप्पल सिंघाडे, हढेयं सेवाले किण्हए पणए ॥ अवएय कच्छभाणी, कंदुक्के कूणवीसइमे ॥ २ ॥ तयछल्लिपवालेसुय, पत्त-पुप्फफलेसुय॥मूलग्गमज्झबीएसु,जोणीकस्सइ केत्तिया॥३॥ सेतं साहारण सरीर बादरव-णस्सइ काइया सेत्तं बायरवणस्सइ काइया॥सेत्तं वणस्सइकाइया॥सेत्तं एगिंदिय संसारस-मावण्ण जीवपण्णवणा॥१९॥ किंतं बेइंदिअ संसारसमावण्ण जीवपण्णवणा ? बेइंदिय सं-सारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-पूलाकिमिया, कुच्छिकिमिया,

भावार्थ

होते हैं ॥ १८ ॥ साधारण व प्रत्येक वनस्पति का प्रतिपादन करने के लिये तीन गाथाओं कही हैं. कंद, कंद का मूल, वृक्ष मूल, गुच्छ, गुल्म, वेली, वेणु का वंश, तृण, पद्म, उत्पल, शृंगाटक, हढ, सेवाल, कृष्णक, पणक, अवय, कच्छभाणी, व कंदुक इन उन्नीस में किसी की त्वचा, किसी की छाल, किसी के अंकूर, पत्र, पुष्प, फल, व बीज इन की पृथक् २ योनि हैं इसलिये किसी में संख्याते, किसी में असंख्याते और किसी में अनंत जीवों रहते हैं. यह बादर वनस्पतिकाया के भेद हुए. यों एकेन्द्रिय संसार समापन्न जीव प्रज्ञापना का स्वरूप हुवा. ॥ १९ ॥ बेइन्द्रिय संसार समापन्न जीव प्रज्ञापना किसे कहते हैं ? बेइन्द्रि

सूत्र

गंडूयल,गोलोमा णेउरा,सोमंगलगा,वंसीमुहा,सुईमुहा,गोजलोया,जलोया,जलजूया,संखा संखणगा घुल्ला, खुल्ला, खंधा, वराडा, सोत्तिया, मोत्तिया, कल्लुआ वासा, एगओ वत्ता, दुहओवत्ता, णंदिआवत्ता, संवुका, माइवाहा, सिप्पि संपुडा, चंदणा, समुद्दलिक्खा जेआवण्णे तहप्पगारों, सव्वेते संमुच्छिमा नपुंसगा ॥ तेससासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ एएसिणं एवमाइआणं वेइंदिआणंपज्जत्ता पज्जत्ताणं सत्तजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतित्ति मक्खाय ॥ सेत्त वेइंदिअ संसारसमावण्ण जीवपण्णवणा ॥ २० ॥ सेकिंतं तेइंदिअ संसारसमावण्ण जीवपण्ण

अर्थ

संसार समापन्न जीव के अनेक भेद कहे हैं, अपायु प्रदेशोत्पन्न कीडे, कुक्षि प्रदेशोत्पन्न कीडे, गंडूग गोलोमा, निउरा सोमंगल, वंशीमुख, सूचीमुख, गोजलोका, जलोका, जलजू, शंख, शंखनक, (छोटे शंखलिये) घुल्ला, खुल्ल, खंधा, वरडा, सौक्तिक, मौक्तिक, कलुयावासा, एगोवयुक्त द्विधोवयुक्त, नंदावर्त, शंबुक,मातृवाह,सीप,संपुट चंदना,समुद्रशंख और भी इस प्रकार के अन्य वे सब संमुर्च्छिम नपुंसक होते हैं इसके दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त.इस तरह सब बेइन्द्रिय जीवके पर्याप्त व अपर्याप्तकी सातलक्ष कुल क्रोड कही. यह बेइन्द्रिय संसार समापन्न जीव कहे ॥ २० ॥ तेइन्द्रिय संसार समापन्न जीव किसे

सूत्र

दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय, अपज्जत्तगाय॥ एएसिणं एवमाइआण तेइंदिआणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं अट्ठजाइ कुलकोडिजोणिप्पमुह सयसहस्सा भवंति तिमक्खायं॥ सेत्तं तेइंदिअ संसारसमावण्ण जीवपण्णवणा॥२१॥ सेकिंतं चाउरिंदिय संसारसमावण्ण जीवपण्णवणा? चाउरिंदिय संसारसमावण्ण जीव पण्णवणा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-अंधिय, पोत्तिय, मच्छिय, मगसिरा, कीडे तहा पयंगेय पट्टगोया ढंकण, कुकुड, कुक्कुहे, णंदावत्ते, सिंगिरिडे, किण्हपत्ता, नीलपत्ता, लोहिअपत्ता, हलिद्दपत्ता, सुक्किलपत्ताः चित्तपक्खा, विचित्तपक्खा. ओहंजलिया, जलचारिया, गभीरा, णीणिया, तंतवा, अच्छिरोडा, अच्छिवेहा, सारंगा, णेउरा, दोला, भमरा, भमरीओ, भरीली, जरुला, तोडा, विच्छुया,

अर्थ

पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद किये हैं इन पर्याप्त अपर्याप्त तेइन्द्रिय की आठ लाख कुल कोड होवे. यह तेइन्द्रिय संसार संप्राप्त के भेद हुए. ॥ २१ ॥ अब चतुरेन्द्रिय संसार संप्राप्त जीव के कितने भेद कहे हैं ? चतुरेन्द्रिय संसार संप्राप्त क अनेक भेद कहे हैं. जिन के नाम—अंधिका, पोतिका, मक्षिका, मगसिरा, कीडा, पतंगिया, पट्टगोप, ढंकण, कुकुड, कुक्कुह, नंदावर्त, सिंगीरडा, कृष्णपांखवाला, हरी पांखवाला, लाल पांखवाला, पीली पांखवाली, शुक्ल पांखवाला, चित्रित पांखवाला, विचित्र पांखवाला, उपेजलिक, जलचारी गंभीर, णिणन, तंतव, अच्छिरोड, सारंग, नेउर, दोल, भ्रमर, भ्रमरी,

सूत्र

पत्तविच्छुआ, छाणविच्छुआ, जलविच्छुआ, पियंगाला, कणगा गोमयकीडगा, जेआ-
वण्णे तहप्पगारा, सव्वे ते संमुच्छिमा, णपुंसगा। ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा-
पज्जत्तगाय, अपज्जत्तगाय ॥ एएसिणं एवमाइआणं चउरिंदिआणं पज्जत्तापज्जत्ताणं,
णव जाइकुलकोडिजोणिप्पमुह सयसहस्सा भवंति सेत्तं चउरिंदिय संसारस-
मावण्ण जीवपण्णवणा ॥ २२ ॥ सेकिंतं पंचिंदिय संसारसमावण्ण जीवपण्णवणा ?
पंचिंदिय संसारसमावण्ण जीवपण्णवणा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा-नेरइअ पंचिंदिय
संसारसमावण्ण जीवपण्णवणा, तिरिक्खजोणिय पंचिंदिय संसारसमावण्ण जीवपण्णवणा
मणुस्स पंचिंदिय संसारसमावण्ण जीवपण्णवणा. देवपंचिंदिय संसारसमावण्ण जीवप-

अर्थ

भमरिल्ली, जलकडा, तोडा, बिच्छु, पत्रबिच्छु, गोबर बिच्छु, जलबिच्छु, पियंगल, कणग, गोबर कीडे वगैरह इस प्रकार के अन्य सब चतुरेन्द्रिय संमूर्छिम नपुंसक कहाते हैं. इन के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद हैं नव लाख कुल कोडी है. यों चतुरेन्द्रिय के भेद हुए ॥ २२ ॥ पंचेन्द्रिय संसार समापन्न जीव किसे कहते हैं ? पंचेन्द्रिय संसार समापन्न जीव के चार भेद कहे हैं—१ नारकी पंचेन्द्रिय संसार समापन्न जीव, २ तिर्यंच पंचेन्द्रिय संसार समापन्न जीव, ३ मनुष्य पंचेन्द्रिय संसार समापन्न जीव और ४ देव पंचेन्द्रिय

सूत्र

पण्णवणा ॥ २३ ॥ सेकिंत नेरइया ? नेरइया सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा-रयणप्पभा पुढविनेरइआ, सक्करप्पभापुढविनेरइया, वालुअप्पभापुढविनेरइया, पंकप्पभापुढविनेरइया, धूमप्पभापुढविनेरइया, तमप्पभापुढविनेरइया, तमतमप्पभापुढविनेरइया ॥ तसमासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय, अपज्जत्तगाय ॥ सेत्तं नेरइया ॥२४॥ सेकिंत पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया? पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा-जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, थलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, खहयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत जलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? जलयरपंचिंदिय

अर्थ

प्रकार समावेश और ॥ २३ ॥ नारकी किसे कहते हैं ? नारकी के सात भेद कहे हैं—रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी, शर्करप्रभा पृथ्वी के नारकी, वालुप्रभा पृथ्वी के नारकी, पंकप्रभा पृथ्वी के नारकी, धूम्रप्रभा पृथ्वी के नारकी, तमप्रभा पृथ्वी के नारकी व तमतमप्रभा पृथ्वी के नारकी इन सात के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो २ भेद होते हैं यह नारकी के चौदह भेद हुए. ॥ २४ ॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंच किसे कहते हैं ? पंचेन्द्रिय तिर्यंच के तीन भेद कहे हैं जलचर पंचेन्द्रिय, स्थलचर पंचेन्द्रिय व खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच. इस में जलचर पंचेन्द्रिय किसे कहते हैं ? जलचर पंचेन्द्रिय के पांच भेद कहे हैं १ मच्छ २ कच्छ ३ ग्राह ४ मगर

गाहा ॥ से किंतं मगरा? मगरा दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सोंडमगरा, मच्छमगराय; सेत्तं मगरा ॥ से किंतं सुंसुमारा ? सुंसुमारा एगागारा पण्णत्ता, सेत्तं सुंसुमारा, जेयावण्णे तहप्पगारा॥ ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा-संमुच्छिमाय, गब्भवक्कंतियाय ॥ तत्थणं जेते संमुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा ॥ तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिया तेतिविहा पण्णत्ता तंजहा-इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ॥ एएसिणं एवमाइयाणं जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं, पज्जत्तापज्जत्ताणं अद्धतेरसजाइ कुलकोडि जोणिप्पमुह सयसहस्सा भवतित्ति मक्खायं ॥ सेत्तं जलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २५ ॥ से किंत थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया

२ वर्तुलाकार, ३ गुढ, पुष्पाकार, व सीमागारा. यह गाहा के भेद हुए. प्रश्न-मगर किसे कहते हैं? उत्तर-मगर के दो भेद कहे हैं-१ सोंड मगर और मच्छ मगर. प्रश्न-सुंसुमार किसे कहते हैं? उत्तर-सुंसुमार का एक ही भेद होता है. इस प्रकार के अन्य भी जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय हैं. इन सब के संक्षेप से दो भेद होते हैं-संमूर्च्छिम और गर्भ में उत्पन्न होनेवाले. जो संमूर्च्छिम होते हैं उन में एक नपुंसक वेद पाता है. और गर्भ में उत्पन्न होनेवाले में स्त्री, पुरुष और नपुंसक यह तीनों वेद पाते हैं. इन जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की १२॥ लाख कुल कोड़ हैं. यह जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का अधिकार हुआ॥२५॥ प्रश्न-स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय किसे कहते हैं?

सूत्र

दुविहा पण्णत्ता तंजहा-चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाय, परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाय ॥ से किंतं चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख-जोणिया ? चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा-एगखुरा, दुखुरा, गंडीपया, सणप्फया ॥ से किंतं एगखुरा ? एगखुरा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-अस्सा, अस्सतरा, घोडगा, गद्दभा, गोरक्खरा, कंदलगा, सिरिकंदलगा, आवत्ता, जेआवण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्तं एगखुरा ॥ से किंतं दुखुरा ? दुखुरा अणेग विहा पण्णत्ता तंजहा-उट्टा, गोणा, गवया, रोज्झा, ससया, महिसा, संवरा, वराहा,

अर्थ

उत्तर-स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं—१ चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय. प्रश्न-चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय किसे कहते हैं ? उत्तर-चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं—एक खुरवाले जिन के पांव के खुर बीच में फटे न होवे सो २ दो खुरवाले जिन के पांव के खुर का दो विभाग बना होवे गण्डीपद सो गोल पांववाले और, नखीपद सो नखवाले प्रश्न-एक खुरा के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-एक खुरा के अनेक भेद कहे हैं-घोडे, अश्वतर, घोटक, गर्दभ, गोक्खुर, कन्दलग, श्रीकंदल, आवर्त और भी इस प्रकार के अन्य सब एक खुरवाले कहाते हैं. प्रश्न दो खुरवाले किसे कहते हैं? उत्तर-दो खुरवाले के अनेक भेद कहे हैं—

सूत्र

अया, एलया, रुरु सरभ, चमर, कुरंग, गोकण्णमाई ॥ सेत्तं दुखुरा ॥ से किंतं गंडीपया ? गंडीपया अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-हत्थी, हत्थीयणा (पूअणगा) मंकुणहत्थी, खग्गा, गंडा, जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्तं गंडीपया ॥ सेकिंतं सणप्फया? सणप्फया अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-सीहा, वग्घा, दीविया, अच्छा, तरच्छा परस्सरा, सियाला, सुणगा, कोलसुणगा, कोकांतिया, ससगा, चित्तगा, चिल्लगा, जयावण्णेतहप्पगारा सेत्तं सणप्फया ॥ तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा-संमुच्छिमाय, गब्भवक्कंतियाय, तत्थणं जे ते समुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिआ ते तिविहा

अर्थ

ऊंट, बैल, गाय, रोझ, नवक, महिष, सामर, वराह, अज, मेंढा, मृग, अष्टापद, चमरीगाय, कुरंग, गोकर्ण और इस प्रकार के अन्य भी दो खुरवाले कहाते हैं. प्रश्न-गण्डीपद किसे कहते हैं? उत्तर-गण्डीपद के अनेक भेद कहे हैं-हाथी, पुत्तक, मकुना हाथी, खड्डी, गेंडा और भी इस प्रकार के अन्य गंडीपद जानना. यह गण्डीपद के भेद हुए. प्रश्न-सणपद के कितने भेद कहे हैं ? सणपद के अनेक भेद कहे हैं. सिंह, व्याघ्र, दीपड़ी, अच्छ, तरछ, परसर, सिआल, श्वान, कोल शुकन, कोकतिक, सुसला, चित्ता, चिल्लक, और भी इस प्रकार के जो अन्य हैं वेभी सणपद कहाते हैं. यह सणपद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भेद हुए. स्थलचर पंचेन्द्रिय के संक्षेप में दो भेद कहे हैं-स्त्री पुरुष के संयोग बिना उत्पन्न होवे सो संमूर्च्छिम और

सूत्र

पण्णत्ता तंजहा—इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ॥ एएसिणं एवमाइआणं चउप्पयथलयर पंचिदिए तिरिक्ख जोणिआणं पज्जत्तापज्जत्ताणं दसजाइ कुलकोडि जोणिप्पमुह सय सहस्सा भवंति त्तिमक्खायं ॥ सेत्तं चउप्पयथलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ॥२८॥ सेकिंतं परिसप्प थलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ? परिसप्प थलयर पंचिदिए तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-उरपरिसप्प थलयर पंचिदिय तिरिक्ख जोणिया, भुयपरिसप्पथलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाय ॥ सेकिंतं उरपरिसप्प थलयर पंचिदिए तिरिक्खजोणिया ? उरपरिसप्प थलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया

अर्थ

स्त्री पुरुष के संयोग से गर्भमें उत्पन्न होवे सो गर्भज. इनमें से संमूर्च्छिम नपुंसक होते हैं. और गर्भज में तीन वेद स्त्री.पुरुष व नपुंसक.इन स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच के पर्याप्त व अपर्याप्तकी दश लाख कुल क्रोड हैं यह चतुष्पद स्थलचर तिर्यच पंचेन्द्रिय का कथन हुआ ॥ २८ ॥ प्रश्न-परिसर्प स्थलचर तिर्यच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर परिसर्प स्थलचर तिर्यच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं-उर परिसर्प और भुजपरिसर्प प्रश्न-स्थलचर तिर्यच पंचेन्द्रिय उर परिसर्प किसे कहते हैं ? उत्तर - उर परिसर्प स्थलचर तिर्यच पंचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं—१ अहि, २ अजगर, ३ असालिया, और ४ महोरग. प्रश्न-अहि किसे कहते हैं?उत्तर अहि के दो भेद-१ फन करे सो दर्वी कर और फन करे नहीं सो मुकुलणा

चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा अही, अयगरा, आसालिया, महोरगा ॥ सेकिंतं अही ? अही दुविहा पण्णत्ता तंजहा—दव्वीकराय, मउलिणोय ॥ सेकिंतं दव्वीकरा ? दव्वीकरा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा आसीविसा, दिट्ठीविसा, उग्गविसा, भोगविसा तयाविसा, लालाविसा, उस्सासविसा, णिस्सासविसा, कण्हसप्पा, सेअसप्पा, काउदरा, दब्भपुप्फा, कोलाहा मेलीमिंदा सेसिंदा जेयावण्णेतहप्पगारा ॥ सेत्तं दव्वीकरा ॥ से किंतं मउलिणो ? मउलिणो अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-दिव्वागा, गोणसा, कसाहिया, वउला, चित्तलिणो, मंडलिणो, अहि, अहिसिलागा, वायडागा, जेयावण्णे

अर्थ

इस में दर्वी करके अनेक भेद कहे हैं-दाढ में विषवाले, दृष्टि में विषवाले, उग्र विषवाले, भोग विषवाले, त्वचा विष, लाला विष, उश्वास विष, निश्वास विष, कृष्ण सर्प, श्वेत सर्प, कादुम्बरा, दर्भपुष्प, कोलाह, मेलिपद शेसिन्द और इस प्रकार के अन्य सब दर्वी कर कहाते हैं और दीव्यक, गोणक, साहारक, वइउल, चित्रली, मंडली, मांडलिक, मालिन, अहि, अहिसलाक, पडाग और इस प्रकार के अन्य मुकुली फण करनेवाले सर्प जानना. यह मुकुली सर्प के भेद हुवे. प्रश्न-अजगरके कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-अजगरका एक ही भेद है. प्रश्न-असालिक के कितने भेद कहे हैं? उत्तर-असालिक का एक ही भेद कहा है. अहो भगवन् ! आसा-

सेवुखा, संनिवेसनिवेसेसुवा, आगरनिवेसेसुवा, आसमनिवेसेसुवा, संबाहनिवेसेसुवा, रायहाणिनिवेसेसुवा एएसिणंचेवविणासेसुवा, एत्थणं आसालिआ समुच्छति, जहण्णेणं अंगुस्स असंखेज्जइ भागमित्तीए ओगाहणाए, उक्कोसेणं बारसजोयणाइं तदाणुरूवंचणं विक्खंभ बाहल्लेणं भूमिंदालइत्ताणं समुट्ठेति, असण्णी मिछदिट्ठी अण्णाणी, अंतोमुहुत्तद्धाआचेव कालंकरेति ॥ सेत्त आसालिया ॥ सेकिंतं महोरगा? महोरगा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा अत्थेगइआ अंगुलंपि, अंगुलपुहत्तिआवि, विहत्थिवि, विहत्थिपुहत्तिआवि, रयणिंपि, रयणिपुहत्तिआवि, कुच्छिंवि

नगर में इन सब के अकस्मात विनाशकाल में आशालिक उत्पन्न होता है उस की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट बारह योजन है. इतनी ही लंबी व चौडी भूमि तोडकर वह बाहिर नीकल आता है वह असंज्ञी मिथ्यादृष्टि व अज्ञानी होता है. अंतर्मुहूर्त में काल करजाता है. यह आशालिक का वर्णन हुवा प्रश्न-महोरग किसे कहते हैं? उत्तर-महोरग के अनेक भेद कहे हैं, कितनेक अंगुल की अवगाहनावाले, कितनेक प्रत्येक अंगुल की अवगाहनावाले, कितनेक वेंत की, प्रत्येक वेंत की अवगाहनावाले, कितनेक हाथ, प्रत्येक हाथ की अवगाहनावाले, कितनेक दो

१. आशालिका गर्भज नहीं है परंतु समूर्च्छिम होता है, इस से 'समुच्छति' ऐसा पाठ लीया है, इस से वह एक नपुंसक होता है.

सूत्र

कुच्छिपुहत्तियावि, धणुंपि, धणुपुहत्तियावि, गाउयंपि, गाउयपुहत्तियावि, जोयणंपि, जोयणपु-हत्तियावि, जोयणसयंपि, जोयणसयपुहत्तियावि, उक्कोसेणं जोयणं सहस्संपि॥ तेणं थले जा-याजलेवि चरंति, थलेवि चरंति, तेणं णत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति ॥ जेआ-वण्णतहप्पगारा ॥ सेत्तं महोरगा ॥ तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा-संमुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय॥तत्थणं जे ते संमुच्छिमा ते सव्वेणपुंसगा, तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिआ तेणं तिविहा पण्णत्ता तंजहा-इत्थी पुरिसा णपुंसगा॥ एएसिणं एवमाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं

अर्थ

हाथ प्रत्येक दो हाथ की अवगाहनावाले, कितनेक धनुष्य प्रत्येक धनुष्य की अवगाहनावाले, कितनेक गाउ प्रत्येक गाउ की अवगाहनावाले, कितनेक योजन प्रत्येक योजन की अवगाहनावाले, कितनेक शत योजन प्रत्येक शत योजनकी अवगाहनावाले, और कितनेक उत्कृष्ट सहस्र योजनकी अवगाहनावाले होते हैं. वे स्थल में उत्पन्न हुए स्थल में विचरते हैं और स्थल में उत्पन्न हुए जल में भी विचरते हैं. ये अढाइ द्वीप में उत्पन्न नहीं होते हैं किन्तु अढाइ द्वीप की बाहिर द्वीप समुद्रों में होते हैं. इस प्रकार के जो होवे सो महोरग है. उर परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय के संक्षेप में दो भेद कहे हैं संमूर्च्छिम और गर्भमें उत्पन्न होने वाले. इनमें जो संमूर्च्छिम हैं वे सब नपुंसक हैं और गर्भ में उत्पन्न होनेवालेमें स्त्री, पुरुष व नपुंसक तीनों वेद

सूत्र

उरपरिसप्पाणं दस जाइकुलकोडि जोणिप्पमुह सयसहस्सा हवंति मिक्खायं ॥ सेत्तं उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिअ तिरिक्खजोणिया ॥ २१ ॥ सेकिंतं भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिआ ? भुअपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा णउला, सेहा सरडा, सल्ला सरंठा सारा, खारा घराइला विस्संभरा, मूसा, मंगुसा, पयलाइया, छीरविरालिया, जाहा, चउप्पाइया जेआव-ण्णेतहप्पगारा ॥ ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा-संमुच्छिमाय, गब्भवक्कंतियाय तत्थणं जेते संमुच्छिमा तेसव्वे नपुंसगा तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा पण्णत्ता तंजहा-इत्थी पुरिसा णपुंसगा ॥ एएसिणं एवमाइआणं पज्जत्ता पज्जत्तगाणं भुयपरिसप्पाणं णवजाइकुलकोडि जोणिप्पमुह सयसहस्साइ भवंति त्तिम-

अर्थ

है इन वर्णन अवर्णन उरपरिसर्प की दश लाख कुल कोडी है. यों उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भेद कहे ॥ २१ ॥ प्रश्न-भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय किसे कहते हैं ? उत्तर-भुज परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच के अनेक भेद कहे हैं. नकुल-के [illegible], सरडा, सल्ला, सरंठा, सारा, खारा, घोइला, विसं-भरा, मूषा, मुंगसा, पयलाइया, खीरविरालिया, जाहा, चउपद [illegible] इन प्रकार के सब भुज परिसर्प के संक्षेप से संमूर्च्छिम और गर्भज ऐसे दो भेद कहे हैं. संमूर्च्छिम नपुंसक होते हैं और गर्भज स्त्री पुरुष नपुंसक

सूत्र

क्खायं ॥ सेत्तं भुयपरिप्पस थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्तं परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥२८॥ सेकिंतं खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया? खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा-चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुग्गपक्खी, विततपक्खी, ॥ सेकिंतं चम्मपक्खी ? चम्मपक्खी अणेगाविहा पण्णत्ता तंजहा-वग्गुली, जलोया, अडिल्ला भारंडपक्खी, जीवंजीवा, समुद्दवायसा, कण्णतिआ पक्खिवेराली जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्तं चम्मपक्खी॥सेकिंतं लोमपक्खी? लोमपक्खी अणेगाविहा पण्णत्ता तंजहा-ढंका, कंका, कुरला, वायसा, चक्कागा, हंसा, कलहंसा, पायहंसा.

अर्थ

ऐसे तीनों होते हैं. इन भुजपरिसर्प के पर्याप्त अपर्याप्त ऐसे सब की नव लक्ष कुल क्रोड जाती कही ॥२८॥ खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय किसे कहते हैं ? खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं-१ चर्मपक्षी, २ रोमपक्षी, ३ समुद्र पक्षी और ४ विततपक्षी. इसमें चर्मपक्षी किसे कहते हैं ? चर्म पक्षी के अनेक भेद कहे हैं-वागुल, जलोक आडिल, भारंड पक्षी, जीवजीवा, समुद्रवायस, कर्णनीक पक्षी, निराली और इस प्रकार के अन्य सब चर्म पक्षी में गिनेजाते हैं. प्रश्न-रोम पक्षी किसे कहते हैं ? उत्तर-रोम पक्षी के अनेक भेद कहे हैं—ढंक, कंक कुरल, वायस, चक्रवाक, हंस, कलहंस, पादहंस, राजहंस, अडातेडो, बक, बलाका, पारिपाक, क्रौंच, सारस, मसर, मयूर, शतवच्छ, गहर, पौंटरीक, काक, कामजुग, विज्जुल्क, तीतर, बटेर,

सूत्र

रायहंसा, अडा सोत्थिया, बलागा, पारिप्लावा, कोंचा, सारसा, मेसरा, मसूरा, मऊरा, सतवच्छा, गहरा, पोंडरीआ, कागा, कामिपुगा, वंजुलगा, चिंचिरा, वट्टगा, लावया, कवोया, कपिंजला, पारिवाय, चिडगा, चासा, कुक्कुडा, सुगा, वरहिणा, मदनसला, कोकिला, सेण्हा, वरिल्लगमाइ, जेआवण्णे तहप्पगारा, सेत्तं लोमपक्खी ॥ से किंत समुग्गपक्खी? समुग्गपक्खी एगागारा पण्णत्ता, तेणं णत्थि इहं, बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति, सेत्त समुग्गपक्खी ॥ से किंतं वितइपक्खी ? विततपक्खी एगागारा पण्णत्ता, तेणं णत्थि इह, बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति ॥ सेत्तं विततपक्खी ॥ ते समासओ

अर्थ

बक, कपोत, हंस, कपिंजल, पारेवा, चिडिया, चील, मुर्गे, शुक, वाहिण, मदनशाला, कोकिल, सेण, वंजल इत्यादि सब रोम पक्षी हैं. प्रश्न-समुद्र पक्षी किसे कहते हैं? उत्तर-समुद्र पक्षी का एकाकार है. वे यहां नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु अढाइद्वीप के बाहिर के द्वीप समुद्र में होते हैं. यह समुद्र पक्षी का अधिकार हुवा. प्रश्न-विततपक्षी किसे कहते हैं? उत्तर-विततपक्षी भी एकाकार हैं वे भी यहां नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु बाहिर के द्वीप समुद्र में होते हैं. यह विततपक्षी हुवा. इन सब के दो भेद कहे हैं संमूर्छिम व गर्भज. इन में जो संमूर्छिम होते हैं वे नपुंसक होते हैं और जो गर्भज होते हैं इन में स्त्री पुरुष व नपुंसक ऐसे तीनों वेद होते हैं. इन खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दोनों को बारह लाख कुल कोड हैं.

दुविहा पण्णत्ता तंजहा-संमुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय, तत्थणं जे ते संमुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा ॥ तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा पण्णत्ता तंजहा-इत्थी पुरिसा णपुंसगा ॥ एएसिणं एवमाइयाणं खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पज्जत्ताऽपज्जत्ताणं बारस जाईकुलकोडी जोणिप्पमुह सयसहस्सा भवंतित्तिमक्खायं ॥ गाहा ॥ सत्तट्ठजाइ कुलकोडि, हुंतिनव अद्धतेरसाइंच ॥ दसदसयहोंतिणवगा, तहबारस चेव बोधव्वा ॥ १ ॥ सेत्तं खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्तं पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥ सेत्तं तिरिक्ख जोणिया ॥ २९ ॥ सेकिंतं मणुस्सा ? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता तंजहा-संमुच्छिममणुस्साय, गब्भवक्कंतियमणुस्साय ॥ सेकिंतं समुच्छिम मणुस्सा ? कहिणं भंते ! संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति ? गोयमा! अंतोमणुस्सखेत्ते

सात लाख कुल कोड बेइन्द्रिय की, आठ लाख तेइन्द्रिय की, नवलाख चतुरेन्द्रिय की, साढे बारह लाख जलचर पंचेन्द्रिय की, दश लाख स्थलचर पंचेन्द्रिय की, दश लाख उरपर सर्प पंचेन्द्रिय की, नव लाख भुजपरि सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय की, और बारह लाख खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचकी. यह खेचरका अधिकार हुआ और पंचेन्द्रिय तिर्यंच का, तथा सब तिर्यंच का वर्णन हुआ ॥२९॥ अब मनुष्य का वर्णन करते हैं प्रश्न- मनुष्य किसे कहते हैं ? उत्तर-मनुष्य के दो भेद कहे हैं-संमूर्च्छिम और गर्भज प्रश्न-संमूर्च्छिम मनुष्य किसे कहते हैं ? संमूर्च्छिम मनुष्य कहां उत्पन्न होते हैं ? उत्तर-मनुष्य क्षेत्र पैंतालीस लक्षयोजन

सूत्र

पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु, तीसाए अकम्मभूमीसु, छप्पण्णाए अंतरदीवएसु, गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चेव उच्चारेसुवा, पासवणेसुवा, खेलेसुवा, सिंघाणएसुवा, वंतेसुवा, पित्तेसुवा, पूएसुवा, सोणिएसु, सुक्केसुवा, सुक्कपोग्गलपरिसाडेसुवा, विगतजीवकलेवरेसुवा, इत्थीपुरिस संजोएसुवा, नगर-निद्धमणेसुवा, सव्वेसुचेव असुइट्ठाणेसु, एत्थणं संमुच्छिम मणुस्सा संमुच्छंति, अंगुलस्स असंखेज्जइ भागमित्ताए ओगाहणाए असण्णी, मिच्छादिट्ठी अण्णाणी सव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा, अंतोमुहुत्ताउया चेव कालंकरेंति ॥ सेत्तं संमुच्छिम मणुस्सा ॥ १० ॥ सेकिंत गब्भवक्कंतिय मणुस्सा ? गब्भवक्कंतिय मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता

अर्थ

प्रमाण अढाइ द्वीप समुद्र में पन्नरह कर्मभूमि, तीस अकर्मभूमि व छप्पन अंतरद्वीप के गर्भ में उत्पन्न होने वाले मनुष्य की-१ बडीनीत, २ लघुनीत, ३ श्लेष्म श्लेष्म, ४ नाकका मेल, ५ वमन ६ पित्त, ७ राध-पीप ८ रुधिर ९ शुक्र, १० पीछा शुक्र के पुद्गल ११ जीवरहित कलेवर १२ स्त्री पुरुष के संयोग, १३ नगरकी मोरी और १४ सब लोक के अशुचिका स्थान इन १४ में संमूर्छिम मनुष्य उत्पन्न होते हैं. इनकी अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग की है, यह असंज्ञी, मिथ्यादृष्टि, अज्ञानी और सब पर्यायसे अपर्याप्त हैं अंतर्मुहूर्त में वे जीवों कालकर जाते हैं॥ १० ॥ प्रश्न-गर्भमें उत्पन्न होनेवाले मनुष्य किसे कहते हैं? उत्तर-गर्भ में उत्पन्न होने वाले मनुष्य के तीन

मूल

पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु, तीसाए अकम्मभूमीसु, छप्पण्णाए अंतरदीवएसु, गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चेव उच्चारेसुवा, पासवणेसुवा, खेलेसुवा, सिंघाणएसुवा, वंतेसुवा, पित्तेसुवा, पूएसुवा, सोणिएसु, सुक्केसुवा, सुक्कपोग्गलपरिसाडेसुवा, विगतजीवकलेवरेसुवा, इत्थीपुरिस संजोएसुवा, नगर-निद्धमणेसुवा, सव्वेसुचेव असुइट्ठाणेसु, एत्थणं संमुच्छिम मणुस्सा संमुच्छंति, अंगुलस्स असंखेज्जइ भागमित्ताए ओगाहणा; असण्णी, मिच्छादिट्ठी अण्णाणी सव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा, अंतोमुहुत्ताउया चेव कालकरंति ॥ सेत्तं संमूच्छिम मणुस्सा ॥ २० ॥ सेकिंतं गब्भवक्कंतिय मणुस्सा ? गब्भवक्कंतिय मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता

अर्थ

समाण अढाइ द्वीप समुद्र में पन्नरह कर्मभूमि, तीस अकर्मभूमि व छप्पन अंतरद्वीप के गर्भ में उत्पन्न होने वाले मनुष्य की-१ बडीनीत, २ लघुनीत, ३ खेल-श्लेष्म, ४ नाकका मैल, ५ वमन ६ पित्त, ७ राध-पीप ८ रुधिर ९ शुक्र, १० भोगवे शुष्क के पुद्गल ११ जीवरहित कलेवर १२ स्त्री पुरुष के संयोग, १३ नगरकीमोरी, और १४ सब लोक के अशुचिका स्थान इन १४ में संमूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते हैं. इनकी अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भागकी है, यह असंज्ञी, मिथ्यादृष्टि, अज्ञानी और सब पर्याप्ति से अपर्याप्त हैं अंतर्मुहूर्त में वे जीवों कालकर जाते हैं ॥ २० ॥ प्रश्न-गर्भमें उत्पन्न होनेवाले मनुष्य किसे कहते हैं? उत्तर-गर्भ में उत्पन्न होने वाले मनुष्य के तीन

तंजहा-कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा, अंतरदीवगा, ॥ सेकिंतं अंतरदीवगा ? अंतरदीवगा अट्ठावीसविहा पण्णत्ता, तंजहा-१ एगोरुया आहासिया, वेसाणिया, णंगोलि, २ हयकण्णा, गयकण्णा, गोकण्णा, सक्कुलिकण्णा, ३ आयंसमुहा, मेंढमुहा, अयमुहा, गोमुहा, ४ आसमुहा हत्थिमुहा, सिंहमुहा, वग्घमुहा, ५ आसकण्णा, सीहकण्णा, अकन्ना, कण्णपाउरणा, ६ उक्कामुहा, मेहमुहा, विज्जुमुहा, विज्जुदंता, ७ घणदंता, लट्ठदंता, गूढदंता, सुद्धदंता, सेत्तं अंतरदीवगा ॥ ३१ ॥ सेकिंतं अकम्मभूमगा? अकम्मभूमगा तीसइविहा पण्णत्ता तंजहा-पंचहिं हेमवएहिं, पंच-

भेद कहे हैं? जहां असि(शस्त्र) मसि-वाणिज्य और कृषि इन तीन कर्म से मनुष्यों उपजीविका करते हैं वह कर्म भूमि, उक्त तीनों कर्म बिना मात्र कल्पवृक्षों से जहां इच्छितफल होते हैं वह अकर्म भूमि और समुद्र के अंदर जो द्वीप हैं उस में जो मनुष्य होते हैं सो अंतरद्वीप. प्रश्न-इन में अंतर द्वीप के कितने भेद कहे हैं? उत्तर-अंतरद्वीप के अठाइस भेद कहे हैं १ एकोरुक २ आभासिक ३ वैशाणिक ४ नंगोलिक यह प्रथम चौक, ५ हयकर्ण ६ गजकर्ण ७ गोकर्ण ८ शष्कुलीकर्ण, यह दूसरा चौक. ९ आदर्श मुख १० मेषमुख ११ अजामुख १२ गोमुख यह तीसरा चौक. १३ अश्वमुख १४ हस्तिमुख १५ सिंहमुख १६ व्याघ्रमुख यह चौथा चौक १७ अश्वकर्ण १८ सिंहकर्ण १९ अकर्ण २० कर्णप्रावर्ण यह पांचवा चौक. २१ उल्कामुख २२ मेघमुख २३ विद्युन्मुख २४ विद्युद्दंत, यह छट्ठा चौक. २५ घनदंत २६ लष्टदंत २७ गूढदंत २८ शुद्धदंत यह सातवा चौक. यह २८ अंतर द्वीप का वर्णन हुवा ॥ ३१ ॥ प्रश्न-अकर्म भूमि के मनुष्य के कितने भेद कहे हैं? उत्तर अकर्म भूमि के

लियाए उवओगद्धाए कयरे२हिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा चक्खिदियस्स जह-ण्णिया उवओगद्धा सोइंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया,घाणिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया,फासिंदि-यस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहियाए, उक्कोसियाए उवओगद्धाए-सव्वत्थोवा चक्खिदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा,सोइंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया घाणिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिंदियस्स उक्कोसिया उव-ओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया ॥ जहण्णु-क्कोसियाए उवओगद्धा-सव्वत्थोवा चक्खिदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा, सोइंदियस्स

कौन किन से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है? अहो गौतम! १ सब से थोडा चक्षुइन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल २ उस से श्रोत्रेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल विशेषाधिक ३ इस से घ्राणेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल विशेषाधिक ४ उस से जिव्हेन्द्रिय का जघन्य उपयोगका काल विशेषाधिक और ५ इस से स्पर्शेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल विशेषाधिक. अब उत्कृष्ट उपयोगका कहते हैं. १सब से थोडा चक्षुइन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल, २ श्रोत्रेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक ३ इस से घ्राणेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक ४ इस से जिव्हेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक और इस से स्पर्शेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक अब जघन्य उत्कृष्ट उपयोग आश्री कहते हैं. १ सब

दिया-अतीता ? गोयमा ! अणता, केवइया पुरेक्खडा ? अट्ठ, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अट्ठ ॥ १२ ॥ णेरइयाणं भंते ! केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा, केवइया पुरेक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता ॥ एवं जाव गेवेज्जग देवाणं णवरं मणुस्साणं बद्धेल्लगा सिय संखेज्ज, सिय असंखेज्जा ॥ विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! अतीता अणता, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! असंखेज्जा,

नहीं जाते हैं अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध के देवता को कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में हुई ? अहो गौतम ! अनंत वर्तमान में कितनी है ? अहो गौतम ! आठ, और अनागत में कितनी होगी ? अहो गौतम! आठ क्यों की फक्त एक मनुष्य का ही भव करके मोक्ष जाते हैं ॥१२॥ अब अहो भगवन् बहुत नारकी को कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में की ? अहो गौतम ! अनंत की बहुत जीवों आश्रिय कहते हैं वर्तमान में कितनी करते हैं ? अहो गौतम! असंख्यात करते हैं. क्यों की असंख्यात नारकी हैं. और अनागत में कितनी करेंगे? अहो गौतम! अनंत करेंगे ऐसे ही ग्रैवेयक देव तक कहना. परंतु मनुष्य में वर्तमान काल आश्रिय द्रव्य इन्द्रियों स्यात् संख्यात व स्यात् असंख्यात कहना, क्यों की गर्भज मनुष्य [illegible]

सूत्र

सोइंदिय उग्गहे, जाव फासिंदिय उग्गहे, एवं-णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं; णवरं जस्स जइ इंदिया अत्थि ॥ ८ ॥ कइविहेणं भंते ! इंदिय अवाए पण्णत्ते गोयमा ! पंचविहे इंदिय अवाए पण्णत्ते तंजहा सोइंदिय अवाए जाव फासिंदिय अवाए ॥ एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं जस्स जतिया इंदिया अत्थि ॥ ९ ॥ कइविहाणं भंते ! ईहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा ईहा पण्णत्ता तंजहा सोइंदियईहा जाव

अर्थ

है ? अहो गौतम ! पांच प्रकार के अवग्रह कहे हैं श्रोत्रेन्द्रिय का अवग्रह यावत् स्पर्शेन्द्रिय का अवग्रह यों नारकी से वैमानिक पर्यंत कहना. परंतु इतना विशेष कि जिस स्थान जितनी इन्द्रियों होवे उतनी ग्रहण करना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ? कितने प्रकार का इन्द्रिय का अवाय कहा ? अहो गौतम ! पांच प्रकार का इन्द्रिय अवाय कहा-१ श्रोत्रेन्द्रिय अवाय यावत् स्पर्शेन्द्रिय अवाय. यों नारकी से लगाकर वैमानिक पर्यंत चौवीसही दंडक में जिन को जितनी इन्द्रियों होवे उतनी इन्द्रियों कहना. ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की इन्द्रियों की ईहा कही ? अहो गौतम ! पांच प्रकार की

१ जैसे कोई निद्रस्थ मनुष्य है उस को किसीने पुकारा उस का शब्द यह सामान्य पना से ग्रहण करे कि मुझे कोई पुकारता है यह अवग्रह, कौन मुझे पुकारता है ऐसा विचार करे यह ईहा, अमुक मुझे पुकारता है ऐसा निश्चय करना सो अवाय, और बहुत काल पर्यन्त हुए पीछे याद रखना कि अमुकने मुझे पुकारा था यह धारना. यहां चौथा भेद नहीं आया है.

गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेकडा पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा; एव जाव थणियकुमारावि ॥ एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स पुढविकाइयत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेकडा? गोयमा ! कस्सइअत्थि कस्सइणत्थि जस्सअत्थि, एगोवा दोवा तिण्णिवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणतावा ॥ एवं जाव वणप्फइकाइयावि॥एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स

आठ, सोलह, चौबीस, संख्यात, असंख्यात व अनंत करेगा. अहो भगवन् ! एक २ नारकीने असुर कुमारपने अतीत काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! अनंत की. बद्धेलक नहीं है. और पुराकृत कोई करेगा कोई नहीं करेगा. यदि करेगा तो आठ, सोलह, चौबीस संख्यात असंख्यात व अनंत करेगा. ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यन्त कहना. अहो भगवन् ! एक २ नारकीने अतीत काल आश्रिय कितनी द्रव्य इन्द्रियों पृथ्वीकाया में की ? अहो गौतम ! अनंती की. बद्धेलक नहीं है और पुराकृत कोई करेगा कोई नहीं भी करेगा. यदि करेगा तो एक, दो, तीन, संख्यात, असंख्यात व अनंत करेगा. ऐसे ही वनस्पतिकाया पर्यंत जानना. अहो भगवन् ! एक २ नारकीने पंचेंद्रियपने अतीत

वेइंदियत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा पण्णत्ता? गोयमा! कस्सइअत्थि कस्सइ-णत्थि, जस्सअत्थि दोवा चत्तारिवा छवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा, एवं तेइंदियत्ताणवि, णवरं पुरेक्खडा चत्तारिवा, अट्ठवा, बारसवा, संखेज्जावा, असं-खेज्जावा अणंतावा ॥ एवं चउरिंदियत्ताणवि णवरं पुरेक्खडा छवा बारसवा अट्ठारसवा, संखेज्जावा असंखेज्जावा, अणंतावा. पंचिंदिय तिरिक्खजोणियत्ताणवि जहा असुरकुमार त्ताए, मणुस्सत्ताणवि एवंचेव णवरं केवइया पुरेक्खडा ? अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा

काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! अनंत द्रव्य इन्द्रियों की. बद्धेलग नहीं है और पुरस्कृत किसी को है और किसी को नहीं है. जिस को है उन को दो, चार, छ, संख्यात, असंख्यात व अनंत होवे. ऐसे ही त्रीन्द्रिय का जानना. परंतु पुरस्कृत चार, आठ, बारह, संख्यात, असंख्यात व अनंत जानना. चतुरिन्द्रिय का भी ऐसे ही जानना परंतु पुरस्कृत छ, बारह, अठारह, संख्यात असं-ख्यात व अनंत जानना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय का असुर कुमार जैसे कहना. मनुष्य का भी वैसे ही कहना परंतु इसमें पुरस्कृत आठ, सोलह, चौवीस संख्यात, असंख्यात व अनंत करना ऐसा कहना. मनुष्य वर्जकर सब दंडकों के जीवों का मनुष्यपने कोई करेगा कोई नहीं करेगा वैसा नहीं कहना. वाणव्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्म

उग्गाहे ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा अत्थोवग्गहे, वंजणोवग्गहे एवं असुरकुमाराणं जाव थणिय कुमाराणं ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! कइविहे उग्गहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उग्गहे पण्णत्ते तंजहा-अत्थोग्गहेय वंजणोग्गहेय ॥ पुढवि काइयाण भंते! कइविहे वंजणोग्गहे पण्णत्ते? गोयमा! एगे फासिंदिय वंजणोग्गहे पण्णत्ते॥ पुढवि काइयाणं भंते! कइविहे अत्थोग्गहे पण्णत्ते ? गोयमा! एगे फासिंदिय अत्थोग्गहे पण्णत्ते ॥ एवं जाव वणस्सइ कायाणं ॥ एवं बेंदियाणवि, णवरं बेइंदियाणं वंजणो-

अर्थावग्रह २ चक्षुइन्द्रिय का अर्थावग्रह, ३ घ्राणेन्द्रिय का अर्थावग्रह ४ जिव्हेन्द्रिय का अर्थावग्रह ५ स्पर्शेन्द्रिय का अर्थावग्रह और ६ नो इन्द्रिय मन का अर्थावग्रह. अहो भगवन् ! नारकी को कितना अवग्रह कहा है ? अहो गौतम ! नारकी को दो अवग्रह कहा है. १ अर्थावग्रह और २ व्यंजनावग्रह. ऐसे ही असुर कुमार यावत् स्थनित कुमार पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! पृथ्वी काया को कितने अवग्रह ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया को एक स्पर्शेन्द्रिय का व्यंजनावग्रह कहा. अहो भगवन् ! पृथ्वी काया को कितने अर्थावग्रह कहे ? अहो गौतम ! एक स्पर्शेन्द्रिय अर्थावग्रह कहा. ऐसे ही वनस्पति काया पर्यंत जानना. ऐसे ही बेइन्द्रिय का कहना. परंतु अर्थावग्रह व व्यंजनावग्रह

सूत्र

संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा, सव्वेसिं मणुस्सवज्जाणं पुरेकडा, मणुस्सत्ताए कस्सइ अत्थि कस्सइणत्थि एव नवुच्चइ ॥ वाणमंतर जोइसिया सोहम्मग जाव गेवेज्जगा देवत्ताए अतीता अणंता, बद्धेल्लगाणत्थि, पुरकडा कस्सइअत्थि, कस्सइणत्थि, जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा, संखेज्जावा, असंखेज्जावा, अणंतावा ॥ एग मेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेकडा पण्णत्ता ? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा ॥ सव्वट्ठग सिद्धग देवत्ताए अतीता णत्थि, बद्धेल्लगा

अर्थ

यावत् ग्रैवेयक पने में अतीत काल में अनंत द्रव्य इन्द्रियों की, बद्धेलक नहीं है और पुराकृत किसी को नहीं है और किसी को है जिस को है वह आठ, सोलह, चौवीस, संख्यात, असंख्यात व अनंत करेगा. अहो भगवन् ! एक २ नारकीने विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित में कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में की? अहो गौतम ! नहीं की, बद्धेलक नहीं है, और पुराकृत किसीको है किसी को नहीं है. यदि किसी को है तो वह आठ तथा सोलह करेगा. क्यों की चार अनुत्तर विमान के दो भव करते हैं. सर्वार्थसिद्ध के देवतापने अतीत काल में नहीं की बद्धेलक भी नहीं है और पुराकृत

भंते ! कइ दव्विंदिया पण्णत्ता? गोयमा! एगे फासिंदिए पण्णत्ते, एवं जाव वणस्सइ काईयाण ॥ बेइंदियाणं भंते ! कइदव्विंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दो दव्विंदिया पण्णत्ता तंजहा-फासिंदिएय, जिब्भिंदिएय, तेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! चत्तारि दव्विंदिया पण्णत्ता तंजहा दोघाणा, जिहा, फासे ॥ चउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! छ दव्विंदिया पण्णत्ता तंजहा-दोणेत्ता, दोघाणा, जिहा फासे ॥ सेसाणं जहा णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ १२ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अट्ठ, केवइया

ऐसेही असुरकुमार यावत् स्थनितकुमार पर्यंत कहना. अहो भगवन्! पृथ्वीकायाको कितनी इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया को एक स्पर्शेन्द्रिय है. ऐसे ही वनस्पति काया पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को कितनी द्रव्य इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! दो द्रव्य इन्द्रियों कही— १ जिव्हा और २ स्पर्श तेइन्द्रिय को चार, दो घ्राण, ३ एक जिव्हा और एक स्पर्श. चतुरेन्द्रिय को छ-दो नेत्र, दो घ्राण एक जिव्हा और एक स्पर्श. शेष सब वैमानिक पर्यन्त नारकी जैसे कहना ॥१२॥ अहो भगवन् ! एक २ नारकीने द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में कितनी की ? अहो गौतम ! एक २ नारकीने गत काल में अनंत द्रव्य इन्द्रियों की; क्यों कि नेरिये के जीवने गत काल में अनंत संसार परि-

सूत्र

गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ, केवइया पुरेकडा पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा ॥ वाणमंतरा जोइसिया जाव गेवेज्जग देवत्ताए, जहा णेरइयत्ताए ॥ एगमेगस्सणं भंते ! मणुस्सस्स विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठवा सोलसवा, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेकडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठस्सवा सोलसवा ॥ एगमेगस्सणं भंते ! मणूस्स सव्वट्ठ सिद्धगदेवत्ताए केवतिता-दव्विंदिया

अर्थ

जिनने पुराकृत होवे उनको उतनी कहना अहो भगवन् ! एक २ मनुष्यने मनुष्यपने कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत कालमें की? अहो गौतम! अनंत, बद्धेलक आठ, पुराकृत किसी को है, किसी को नहीं है, जिसको है उस को आठ, सोलह चौबीस, संख्यात, असंख्यात व अनंत हैं. वाणव्यंतर, ज्योतिषी, यावत् ग्रैवेयक तक में नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् एक २ मनुष्यने अतीत काल में विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! किसीने की और किसीने नहीं भी की. जिनने की उसने आठ व सोलह की. बद्धेलक नहीं हैं. पुराकृत किसी को है और किसी को नहीं है. यदि है

गं फासिंदिए दव्विंदिए ॥ एवं तेउकाइय वाउकाइयस्सवि णवरं पुरक्खडा, णवा दसवा एवं बेइंदियाणवि, णवरं बद्धेल्लगा पुच्छा ?गोयमा! दोण्णि, एवं तेइंदियस्सवि णवरं बद्धेल्लगा चत्तारि, एवं चउरिंदियस्सवि, णवरं बद्धेल्लगा ?गोयमा!छ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय मणुस्सा वाणमंतरा जोतिसिया सोहम्मीसाणग देवस्स जहा असुर-कुमारस्स, णवरं मणुसस्स पुरक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइणत्थि, जस्सअत्थि अट्ठवा

अर्थ कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में की ? अहो गौतम ! अनंत द्रव्य इन्द्रियों की. वर्तमान काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों का बंध कर बैठे हैं ? अहो गौतम ! आठ द्रव्य इन्द्रियों का बंध कर बैठे हैं. अनागत काल में कितनी करेंगे ? अहो गौतम ! आठ, नव, संख्यात, असंख्यात व अनंत द्रव्यइंद्रियों का बंध करेंगे. असुरकुमार का जीव पृथ्वी काया में रहता हुवा मनुष्य होकर मोक्ष में जावे उस आ-श्रिय नव. ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यंत कहना. ऐसे ही पृथ्वीकाया, अप्काया व वनस्पतिकाया का कहना. परंतु इन में वर्तमान काल आश्रिय एक स्पर्शेन्द्रिय का बंध करते हैं. ऐसे ही तेउकाया व वायुकाया का कहना, परंतु पुरस्कृत नव तथा दश कहना; क्योंकि तेउ, वायु का निकला मनुष्य नहीं होता है. तिर्यंच ही होता है, इसलिये एक भव पृथ्वीकाया का करके मनुष्य में जाकर मोक्ष में जावे. ऐसे ही बेइंद्रिय का जानना. परंतु इस में वर्तमान काल आश्रिय दो इंद्रियों का बंध करते हैं. तेइंद्रिय का भी वैसे ही कहना.

गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ, केवइया पुरेकडा पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा ॥ वाणमंतरा जोइसिया जाव गेवेज्जग देवत्ताए, जहा णेरइयत्ताए ॥ एगमेगस्सणं भंते ! मणुस्सस्स विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठवा सोलस्सवा, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि केवइया पुरेकडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठस्सवा सोलसवा ॥ एगमेगस्सणं भंते ! मणुस्स सव्वट्ठ सिद्धगदेवत्ताए केवतिता दव्विंदिया

अर्थ

जितने पुराकृत होवे उनको उतनी कहना. अहो भगवन् ! एक २ मनुष्यने मनुष्यपने कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत कालमें की? अहो गौतम! अनंत, बद्धेलक आठ, पुराकृत किसी को है. किसी को नहीं है, जिस को है उस को आठ, सोलह चौवीस, संख्यात, असंख्यात व अनंत है. वाणव्यंतर, ज्योतिषी, यावत् ग्रैवेयक तक में नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् एक २ मनुष्यने अतीत काल में विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! किसीने की और किसीने नहीं भी की. जिसने की उसने आठ व सोलह की. बद्धेलक नहीं है. पुराकृत किसी को है और किसी को नहीं है. यदि है

मूल हेमवत पर्वत पर, २८ अन्तरद्वीपों के नामादि.

	पूर्व के अन्तरद्वीप	दक्षिण के अन्तरद्वीप	पश्चिम के अन्तरद्वीप	उत्तर के अन्तरद्वीप	जगतीसे दूर अन्तर	समुद्र में अन्तर	द्वीप मान	परिधि
१	एकारुक	आभाषीय	वैषाणिय	नंगोलिक	३००	३००	३००	९४९
२	हयकर्ण	गयकर्ण	गोकर्ण	सकुलीकर्ण	१०००	४००	४००	१२६५
३	अयममुख	मेढमुख	अजामुख	गोमुख	१९००	५००	५००	१५८१
४	अश्वमुख	हस्तिमुख	सिंहमुख	व्याघ्रमुख	३०००	६००	६००	१८९७
५	अश्वकर्ण	सिंहकर्ण	अकर्ण	कर्णप्रावर्ण	४३००	७००	७००	२२१३
६	उल्कामुख	मेघमुख	विद्युमुख	विद्युद्दंत	५८००	८००	८००	२५२९
७	घणदंत	लष्टदंत	गूढदंत	सुद्धदंत	७५००	९००	९००	२८४५

हिं हेरण्णवएहिं, पंचहिं हरिवासेहिं, पंचहिं रम्मगवासेहिं, पंचहिं देवकुरुएहिं, पंचहिंउत्तर-

र्थ ● तीस भेद कहे हैं पांच हेमवय, पांच एरणवय, पांच हरिवर्ष पांच रम्यकवर्ष, पांच देवकुरु व पांच उत्तरकुरु

सूत्र

अतीता पण्णत्ता ? गोयमा! कस्सइ अत्थि, कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि अट्ठ ॥ वाणमंतरा जोइसिया जहा णेरइया, सोहम्मग देवेवि जहा णेरइते, णवर सोहम्मग देवस्स ॥ विजय वेजयंत जयंत अपराजियदेवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठवा, सोलसवा केवइया बद्धेल्लगा? गोयमा! णत्थि, केवइया पुरेकडा? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि अट्ठवा सोलसवा, सव्वट्ठसिद्धग देवत्ताए जहा नेरइयस्स, एवं जाव गेवेज्जगदेवस्सवि सव्वट्ठसिद्धग देवत्ताए ताव णेयव्वं ॥ एगमे-

अर्थ

तो आठ व सोलह हैं एक २ मनुष्यने सर्वार्थ सिद्धपने अतीतकाल आश्रिय कितनी द्रव्य इन्द्रियों की? अहो गौतम ! किसीने की और किसीने नहीं की. यदि की तो आठ की, क्यों की सर्वार्थ सिद्ध का पर्याय मात्र करते हैं. बद्धेलक नहीं हैं. पुराकृत किसी को है, किसी को नहीं है, यदि होवे तो आठ हैं. वाणव्यंतर ज्योतिषी का नारकी जैसे कहना. सौधर्म देवलोक का भी नरक जैसे कहना. परंतु सौधर्म देवलोक के किसी देवताने अतीत काल में विजय वैजयंत, जयंत व अपराजित देवपने द्रव्य इन्द्रियों की है और किसीने नहीं भी की है. जब की है तब आठ की है. बद्धेलग नहीं है, और पुराकृत

गोयमा ! असंखेज्जा, केवतिया पुरेक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता ॥ णेरइयाणं भंते ! असुरकुमारत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केवतिया पुरक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, एवं जाव गेवेज्जदेवत्ते ॥ णेरइयाणं भंते ! विजयवेजयंतजयंत अपराजिय देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवतिया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा णत्थि, केवइया पुरक्खडा ? गोयमा ! असंखेज्जा, एवं सव्वट्ठ-सिद्धगदेवत्ते वि ॥ एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं सव्वट्ठदेवत्ते भाणियव्वं, णवरं

बद्धेलक है ? अहो गौतम ! असंख्यात अहो भगवन् ! कितने पुरस्कृत करेंगे ? अहो गौतम ! अनंत. अहो भगवन् ! बहुत नारकी की को असुर कुमार पने अतीत कालमें कितनी द्रव्य इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! अनंत, बद्धेलक नहीं है, और पुरस्कृत अनंत. ऐसे ही ग्रैवेयक देवता पने तक जानना. अहो भगवन् ! नारकी को विजयादि चार अनत्तर विमान पने अतीत काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! नहीं है बद्धेलक नहीं है, और पुरस्कृत असंख्यात. ऐसे ही सर्वार्थ सिद्ध का जानना. जैसे नारकी का कहा वैसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्यंत सर्वार्थ सिद्ध पने का जानना. जिस में इतनी विशेषता कि वनस्पति काया

गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ, केवइया पुरेकडा पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणतावा ॥ वाणमंतरा जोइसिया जाव गेवेज्जग देवत्ताए, जहा णेरइयत्ताए ॥ एगमेगस्सणं भंते ! मणुस्सस्स विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठवा सोलसवा, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि. केवइया पुरेकडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठस्सवा सोलसवा ॥ एगमेगस्सणं भंते ! मणुस्स सव्वट्ठ सिद्धगदेवत्ताए केवतिता दव्विंदिया

जिनने पुरस्कृत होवे उनको उतनी कहना. अहो भगवन् ! एक २ मनुष्यने मनुष्यपने कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में की ? अहो गौतम ! अनंत. बद्धेलक आठ, पुरस्कृत किसी को है. किसी को नहीं है, जिसको है उस को आठ, सोलह चौबीस, संख्यात, असंख्यात व अनंत है. वाणव्यंतर, ज्योतिषी, यावत् ग्रैवेयक तक में नारकी जैसे कहना अहो भगवन् एक २ मनुष्यने अतीत काल में विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! किसीने की और किसीने नहीं भी की. जिसने की उसने आठ व सोलह की. बद्धेलक नहीं है. पुरस्कृत किसी को है और किसी को नहीं है. यदि है

मूल

वणस्सइकाइयाणं विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवत्ते सव्वट्ठसिद्धदेवत्ते पुरेकडा अणंता सव्वेसिं मणुस्ससव्वट्ठसिद्धगा वज्जाणं सट्ठाणे बद्धेल्लगा असंखेज्जा, परट्ठाणे बद्धेल्लगा णत्थि, वणस्सई काइयाणं सट्ठाणे बद्धेल्लगा अणंता, मणुस्साणं णेरइयत्ते अतीता अणंता, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेकडा अणंता ॥ एवं जाव गेवेज्जग देवत्ते णवरं सट्ठाणे अतीता अणंता, बद्धेल्लगा सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा, पुरेकडा अणंता ॥ मणुस्साणं भंते ! विजय विजयंत जयंत अपराजिय देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! संखेज्जा, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा !

अर्थ

का विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित व सर्वार्थ सिद्ध देवपने अतीत अनंत लेना. मनुष्य व सर्वार्थ सिद्ध वर्जकर शेष सब में बद्धेलक स्वस्थान आश्रिय असंख्यात पर स्थान आश्रिय नहीं है. वनस्पति काया आश्रिय बद्धेलक स्वस्थान आश्रिय अनंत लेना. मनुष्य नारकी पने अतीत अनंत, बद्धेलक नहीं है पुराकृत अनंत. ऐसे ही ग्रैवेयक देव पर्यंत कहना. परंतु अतीत अनंत, बद्धेलक स्यात् संख्यात स्यात् असंख्यात और पुराकृत अनंत. मनुष्य का विजयादि चार अनुत्तर विमानपने अतीत द्रव्य इन्द्रिय संख्यात, बद्धेलक नहीं है. और पुराकृत स्यात् संख्यात व

सूत्र

अतीता पण्णत्ता ? गोयमा! कस्सइ अत्थि, कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ ॥ वाणमंतरा जोइसिया जहा णेरइया, सोहम्मग देवेवि जहा णेरइते. णवर सोहम्मग देवस्स ॥ विजय वेजयंत जयंत अपराजियदेवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठवा, सोलसवा केवइया बद्धेल्लगा? गोयमा! णत्थि, केवइया पुरेकडा? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि अट्ठवा सोलसवा, सव्वट्ठसिद्धग देवत्ताए जहा नेरइयस्स, एवं जाव गेवेज्जगदेवस्सवि सव्वट्ठसिद्धय देवत्ताए ताव णेयव्वं ॥ एगमे-

अर्थ

तो आठ व सोलह हैं एक २ मनुष्यने सर्वार्थ सिद्धपने अतीतकाल आश्रिय कितनी द्रव्य इन्द्रियों की? अहो गौतम ! किसीने की और किसीने नहीं की. यदि की तो आठ की, क्यों की सर्वार्थ सिद्ध का एकही भव करते हैं बद्धलक नहीं हैं. पुरस्कृत किसी को हैं, किसी को नहीं है, यदि होवे तो आठ हैं. वाणव्यंतर ज्योतिषी का नारकी जैसे कहना. सौधर्म देवलोक का भी नरक जैसे कहना. परंतु सौधर्म देवलोक के किसी देवताने अतीत काल में विजय वैजयंत, जयंत व अपराजित देवपने द्रव्य इन्द्रियों की है और किसीने नहीं भी की है. जब की है तब अष्ट की हैं. बद्धेलग नहीं है, और पुरस्कृत किसीको है [illegible]

गोयमा ! अणंता, केवइया बंद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ, केवइया पुरेकडा पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा ॥ वाणमंतरा जोइसिया जाव गेवेज्जग देवत्ताए, जहा णेरइयत्ताए ॥ एगमेगस्सणं भंते ! मणुस्सस्स विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवत्ताए केवइया दविंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठवा सोलसवा, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेकडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठसवा सोलसवा ॥ एगमेगस्सणं भंते ! मणूस्स सव्वट्ठ सिद्धगदेवत्ताए केवतिता दविंदिया

अर्थ

जितने पुराकृत होवे उनको उतनी कहना. अहो भगवन् ! एक २ मनुष्यने मनुष्यपने कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत कालमें की? अहो गौतम! अनंत, बद्धेलक आठ, पुराकृत किसी को है. किसी को नहीं है, जिसको है उस को आठ, सोलह चौवीस, संख्यात, असंख्यात व अनंत है. वाणव्यंतर, ज्योतिषी, यावत् ग्रैवेयक तक में नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् एक २ मनुष्यने अतीत काल में विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! किसीने की और किसीने नहीं भी की. जिसने की उसने आठ व सोलह की. बद्धेलक नहीं हैं. पुराकृत किसी को है और किसी को नहीं है. यदि है

वि ..... देवत्ते, सट्ठाणे अतीता असंखेज्जा, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! असंखेज्जा, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! असंखेज्जा, सव्वट्ठसिद्धग देवत्ते, अतीता णत्थि, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेक्खडा असंखेज्जा, सव्वट्ठ सिद्धग देवाणं भंते ! णेरइयत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि, एवं मणुस्स- वज्जं, जाव गेवेज्जग देवत्ते, मणुस्सत्ते अतीता अणंता बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेक्खडा संखेज्जा, विजय विजयंत जयंत अपराजित देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता

अर्थ

देव में अतीत काल में नहीं है, बद्धेलक नहीं है व पुराकृत असंख्यात है. अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध देव को नारकी में अतीत काल आश्रिय कितनी द्रव्य इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! अनंत, बद्धेलक नहीं है, पुराकृत नहीं है. ऐसे ही मनुष्य वर्जकर ग्रैवेयक देव पर्यन्त कहना. मनुष्य में अतीत काल आश्रिय अनंत, बद्धेलक नहीं है व पुराकृत संख्यात. विजय विजयंत जयंत अपराजित में द्रव्येन्द्रिय अतीत काल में संख्यात है, बद्धेलक नहीं और पुराकृत नहीं. अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध देव को सिद्ध देवपने अतीत काल में कितनी द्रव्येन्द्रियों ...

गस्सणं भंते! विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवस्स नेरइयत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा? णत्थि, केवइया पुरेकडा ? णत्थि. एव जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियत्ते. मणुस्सत्ते अणंता अतीता बद्धेलगा णत्थि, पुरक्खडा अट्ठवा सोलसवा चउवीसंवा संखेज्जावा ॥ वाणमंतर जोइसियत्ते जहा णेरइयत्ते, सोहम्मग देवत्ते अतीता अणंता, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेकडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्स अत्थि अट्ठवा सोलसवा चोवीसवा संखेज्जावा. एवं जाव गेवेज्जग देवत्तेवि, विजय वेजयंत जयंत अपराजितत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि अट्ठ, केवतिया बद्धेल्लगा? अट्ठ, केयतिया पुरक्खडा?

को नहीं है, पुर है सब आठ व सोलह है. सर्वार्थसिद्ध देवता में नारकी जैसे कहना. जैसे सौधर्म देवलोक का कहा वैसे ही ग्रैवेयक पर्यंत सब देवताओं का जानना. सर्वार्थसिद्धि में वैसे ही इन्द्रियों का कहना. अहो भगवन् ! एक २ विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित देवोंने अतीत कालमें नारकी में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम! अनंत द्रव्य इन्द्रियों की. बद्धेलक नहीं है. और पुराकृत भी नहीं है. ऐसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्यंत कहना. मनुष्य में अतीत अनंत, बद्धेलक नहीं है और पुराकृत आठ, सोलह संख्यात है. वाणव्यंतर ज्योतिषी का नारकी जैसे कहना. सौधर्म देवपने अतीत काल में अनंत, बद्धेलक नहीं है

केस्सइ अत्थि केस्सइ णत्थि जस्स अत्थि अट्ठ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! विजय विजयंत जयंत अपराजिय देवस्स सव्वट्ठसिद्ध देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेकडा पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि अट्ठ, एगमेगस्सणं भंते ! सव्वट्ठसिद्धग देवस्स णेरइयत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवतिया बद्धेल्लगा, पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेकडा गोयमा ! णत्थि ॥ एवं माणुस्सवज्जं जाव गेवेज्जग देवत्ते ॥ णवरं मणुस्सत्ते अतीता अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केवतिया पुरेकडा ? गोयमा !

अर्थ और पुराकृत किसी को है किस को नहीं है, जिस को है उस को आठ, सोलह, चौबीस व संख्यात है, ऐसे ही ग्रैवेयक देव पर्यंत कहना. विजय वैजयंत जयंत व अपराजित में अतीत किसी को है और किसी को नहीं है जिस को है उन को आठ, बद्धेलक आठ है, पुराकृत किसी को है किसी को नहीं है, जिस को है उन को आठ है एक २ विजय वैजयंत, जयंत व अपराजित को सर्वार्थ सिद्धपने अतीत काल में द्रव्य इन्द्रियों नहीं है, बद्धेलक नहीं है और पुराकृत किसी को है, किसी को नहीं है. जिस को है उसको आठ है अहो भगवन् ! एक २ सर्वार्थ सिद्ध देवने नारकीपने कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में

सूत्र

सस्सणं भंते! विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवस्स नेरइयत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा? णत्थि, केवइया पुरेकडा ? णत्थि. एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियत्ते. मणुस्सत्ते अणंता अतीता बद्धेल्लगा णत्थि, पुरक्खडा अट्ठवा सोलसवा चउवीसंवा संखेज्जावा ॥ वाणमंतर जोइसियत्ते जहा णेरइयत्ते, सोहम्मग देवत्ते अतीता अणंता, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेकडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्स अत्थि अट्ठवा सोलसवा चोवीसवा संखेज्जावा. एवं जाव गेवेज्जग देवत्तेवि, विजय वेजयंत जयंत अपराजितत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि अट्ठ, केवतिया बद्धेल्लगा? अट्ठ, केवतिया पुरक्खडा?

अर्थ

को नहीं है, भव है सब आठ व सोलह है. सर्वार्थसिद्ध देवता में नारकी जैसे कहना. जैसे सौधर्म देवलोक का कहा वैसे ही ग्रैवेयक पर्यंत सब देवताओं का जानना. सर्वार्थसिद्धि में वैसे ही इन्द्रियों का कहना. अहो भगवन् ! एक २ विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित देवोंने अतीत कालमें नारकी में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम! अनंत द्रव्य इन्द्रियों की. बद्धेलक नहीं है. और पुराकृत भी नहीं है. ऐसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्यंत कहना, मनुष्य में अतीत अनंत, बद्धेलक नहीं है और पुराकृत आठ, सोलह संख्यात है. वाणव्यंतर ज्योतिषी का नारकी जैसे कहना. सौधर्म देवपने अतीत काल में अनंत; बद्धेलक नहीं है

न्द्रिय अंत नवग्रैवेयक देव पर्यंत कहना. अहो भगवन् !. बहुत सर्वार्थ सिद्ध देवोंने सर्वार्थ स्थान पें कितनी भावेन्द्रिय की? अहो गौतम! नहीं की, बद्धेलक संख्यात है और पुरस्कृत पद भगवती पन्नवणा का पन्नरहवा इन्द्रिय पद संपूर्ण हुवा. ॥ १५ ॥

सूत्र

※ पोडश प्रयोग पदम्. ※

कतिविहेणं भंते ! पओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! पण्णरसविहे पण्णत्ते तंजहा-सच्चमण-प्पओगे, मोसमणप्पओगे, सच्चामोस मणप्पओगे, असच्चामोस मणप्पओगेवि, एवं वइप्पओगे चउहा ॥ ओरालियसरीरकायप्पओगे, ओरालियमीसगसरीरकायप्पयोगे,

अर्थ

अब सोलहा प्रयोग पद कहते हैं. जिस कर अन्य के साथ सम्बन्ध होवे उसे प्रयोग कहते हैं. -अहो भगवन् ! प्रयोग कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्द्रे प्रकार के प्रयोग कहे हैं वे जिस प्रकार हैं उस प्रकार कहते हैं— १ सत्य मन प्रयोग होवे पदार्थ का स्वभाव उसे यथावस्थित वस्तु के स्वरूप की चितवना करे वह सत्य मन प्रयोग, २ असत्य मन प्रयोग सत्य से विपरीत जानना, ३ सत्य मृषा [मिश्र] मन प्रयोग. उक्त दोनों प्रकार को अलगर कर चितवे और ४ असत्य मृषा (व्यवहार) मन प्रयोग जो सत्य भी नहीं तैसे असत्य भी नहीं ऐसा चितवे जैसे जलता तेल व बत्ती है और चितवे की दीवा जलता है. इत्यादि व्यवहार मन प्रयोग, ऐसेही चार वचन के प्रयोग जानना यथा ५ सत्य वचन प्रयोग, ६ असत्य वचन प्रयोग, ७ मिश्र वचन प्रयोग, ८ व्यवहार वचन प्रयोग; सात काया के ९ औदारिक शरीरकाया का प्रयोग वह पर्याप्त मनुष्य तथा तिर्यच का शरीर जानना, १० औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग वह उत्पन्न होते तो कार्मन के साथ मिश्र जानना. और वैक्रय लब्धि धारक मनुष्य तथा तिर्यच

अणिड्डीपत्तारीआय. ॥ सेकिंतं इड्डिपत्तारिया? इड्डिपत्तारिया छव्विहा पण्णत्ता तंजहा अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा, चारणा, विज्जाहरा ॥ सेत्तं इड्डिपत्तारिया ॥ सेकिंतं अणिड्डि पत्तारिया ? अणिड्डि पत्तारिया णवविहा पण्णत्ता तंजहा-खेत्तारिया, जाइ आरिया, कुलारिया, कम्मारिया, सिप्पारिया, भासारिया, णाणारिया, दंसणारिया, चारित्तारिया ॥ सेकिंतं खेत्तारिया ? खेत्तारिया अद्धछव्वीसइविहा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा) रायगिह-मगह, चंपा-अंगा मह तामलित्तिवगाय ॥ कंचनपुरं

आर्य मनुष्य. प्रश्न-ऋद्धिवाले आर्य मनुष्य के कितने भेद कहे हैं? उत्तर-ऋद्धिवाले आर्य मनुष्य के छ भेद कहे हैं-१ अरिहंत २ चक्रवर्ती ३ बलदेव ४ वासुदेव ५ चारण और ६ विद्याधर. ये छ ऋद्धिवाले आर्य कहाते हैं. प्रश्न-ऋद्धि विना के आर्य किसे कहते हैं? उत्तर-ऋद्धि विना के आर्य के ९ भेद कहे हैं—१ क्षेत्र आर्य २ जाति आर्य ३ कुल आर्य ४ कर्म आर्य ५ शिल्पआर्य ६ भाषा आर्य ७ ज्ञान आर्य ८ दर्शन आर्य और ९ चारित्र आर्य. प्रश्न-क्षेत्र आर्य के कितने भेद कहे हैं? उत्तर-क्षेत्र आर्य के साढे पचीस भेद कहे हैं जिन के नाम—१ मगध देश-राजगृही नगरी २ अंगदेश-चंपा नगरी ३ बंगदेश-तामलिप्ता नगरी ४ कलिंग देश-कंचनपुर नगर ५ काशीदेश-वाणारसी नगरी ६ कोशल देश-साकेतपुर नगर (अयोध्या के

सूत्र

वेउव्वियसरीरकायप्पओगे, वेउव्विय मीसग सरीर कायप्पओगे, आहारग सरीर कायप्पओगे आहारगमीसग सरीर कायप्पओगे कम्मासरीर कायप्पओगे ॥ १ ॥ जीवाणं भंते ! कतिविहेप्पओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! पण्णरसविहेप्पओगे पण्णत्ते

अर्थ

पंचेन्द्रिय और वायुकाय वैक्रय शरीर करे तथा पीछा समावे तब, केवल समुद्घात के चौथे पांचवे समय मे औदारिक वैक्रय की मिश्रता जानना. ११ वैक्रय शरीरकाया प्रयोग-पर्याप्त देवता नारकीका शरीर तथा लब्धिवंत मनुष्य तिर्यंच वैक्रय किया शरीर १२ वैक्रय मिश्र शरीर काया प्रयोग वह देवता नारकी के अपर्याप्त अवस्था मे देव उत्तर वैक्रय करे तब वैक्रय का मिश्र होवे, तथा मनुष्य तिर्यंच वायु वैक्रय करे तब भी वैक्रय औदारिक के साथ मिश्र होवे, १३ आहारक शरीर प्रयोग—चौदहपूर्वधर मुनि संशय की निवृत्ति के लिये आहरक शरीर पूतला बनावे वह, १४ आहारक मिश्रकाय प्रयोग-आहारक शरीर करते तथा समावते औदारिक के साथ आहारक की मिश्रता रहे. और १५ कार्माण शरीर काया प्रयोग बंध-यह विग्रहगति (रास्ते चलते अर्थात् एक शरीर छोड अन्य शरीर में जाते) गमन करता तथा केवल समुद्घात के चौथे पांचवे समय में पाता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव के कितने प्रकार के प्रयोग कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्दरे ही प्रकार के प्रयोग कहे हैं. तद्यथा—१ सत्य मन प्रयोग बंध, यावत् १५ कार्माण शरीर काया प्रयोग बंध. अहो भगवन् ! नेरिये के कितने

* षोडश प्रयोग पदम्. *

कतिविहेणं भंते ! पओगे पण्णत्ते- ? गोयमा ! पण्णरसविहे पण्णत्ते तंजहा-सच्चमण-प्पओगे, मोसमणप्पओगे, सच्चामोस मणप्पओगे, असच्चामोस मणप्पओगेवि, एवं वइप्पओगे चउहा ॥ ओरालियसरीरकायप्पओगे, ओरालियमीसगसरीरकायप्पयोगे,

अब सोलहवा प्रयोग पद कहते हैं. जिस कर अन्य के साथ सम्बन्ध होवे उसे प्रयोग कहते हैं. -अहो भगवन् ! प्रयोग कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्द्रे प्रकार के प्रयोग कहे हैं वे जिस प्रकार हैं उस प्रकार कहते हैं— १ सत्य मन प्रयोग होवे पदार्थ का स्वभाव उसे यथावस्थित वस्तु के स्वरूप की चिंतवना करे वह सत्य मन प्रयोग, २ असत्य मन प्रयोग सत्य से विपरीत जानना, ३ सत्य मृषा [मिश्र] मन प्रयोग. उक्त दोनों प्रकार को अलग२ कर चिंतवे और ४ असत्य मृषा (व्यवहार) मन प्रयोग जो सत्य भी नहीं तैसे असत्य भी नहीं ऐसा चिंतवे जैसे जलता तेल व बत्ती है और चितवे की दीवा जलता है. इत्यादि व्यवहार मन प्रयोग, ऐसेही चार वचन के प्रयोग जानना यथा ५ सत्य वचन प्रयोग, ६ असत्य वचन प्रयोग, ७ मिश्र वचन प्रयोग, ८ व्यवहार वचन प्रयोग; सात काया के ९ औदारिक शरीरकाया का प्रयोग वह पर्याप्त मनुष्य तथा तिर्यंच का शरीर जानना, १० औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग वह उत्पन्न होते तो कार्मन के साथ मिश्र जानना. और वैक्रय लब्धि धारक मनुष्य तथा -तिर्यंच

मूल

ओगीवि, कम्मा सरीर कायप्पओगीवि, एवं जाव वणप्फइकाइयाणं, णवरं वाउकाइया वेउव्विय सरीर कायप्पओगीवि, वेउव्विय मिस सरीर कायप्पओगीवि बेइंदियाणं भंते ! किं ओरालिय सरीर कायप्पओगी जाव कम्मासरीरकायप्प ओगी ? गोयमा ! बेइंदिया सव्वेवि ताव होज्जा, असच्चामोसवइप्पओगीवि,

अर्थ

काया प्रयोग. यहां छ्वाइयाने से पांच योगवाले हैं अहो भगवन्! बेइन्द्रिय औदारिक शरीरकाया प्रयोगी है, औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोगी है यावत् कार्मण शरीरकाया प्रयोगी है ? अहो गौतम ! बेइन्द्रिय भी सब पूर्वोक्त प्रकार ही हैं अर्थात् असत्य मृषा (व्यवहार) वचन प्रयोगी भी हैं, औदारिक शरीर काया प्रयोगी भी हैं, औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोगी भी हैं, और कार्मण शरीर काया प्रयोगी भी हैं, यह चारों में तीन योगवाले सदैव बहुत मिलते हैं. यद्यपि बेइन्द्रिय के उत्पन्न होने का अन्तर मुहूर्त का विरह है तथापि वह अन्तर मुहूर्त छोटा है और औदारिक का मिश्र का अन्तर मुहूर्त बडा है, इसलिये सदैव पाते हैं और कार्मन योगी कदाचित् पाते हैं, कदाचित् नहीं भी पाते हैं. जब पाते हैं तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट असंख्यात पाते हैं इसलिये इन में भी दो भांगे पाते हैं. औदारिक वाले बहुत कार्मन वाला एक, २ औदारिक वाले भी बहुत और कार्मन वाले भी बहुत ऐसे हो।

* षोडश प्रयोग पदम्. *

सूत्र

कतिविहेणं भंते ! पओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! पण्णरसविहे पण्णत्ते तंजहा-सच्चमणप्पओगे, मोसमणप्पओगे, सच्चामोस मणप्पओगे, असच्चामोस मणप्पओगेवि, एवं वइप्पओगे चउहा ॥ ओरालियसरीरकायप्पओगे, ओरालियमीसगसरीरकायप्पयोगे,

अर्थ

अब सोलवा प्रयोग पद कहते हैं. जिस कर अन्य के साथ सम्बन्ध होवे उसे प्रयोग कहते हैं. अहो भगवन् ! प्रयोग कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्द्रे प्रकार के प्रयोग कहे हैं वे जिस प्रकार हैं उस प्रकार कहते हैं— १ सत्य मन प्रयोग होवे पदार्थ का स्वभाव उसे यथावस्थित वस्तु के स्वरूप की चितवना करे वह सत्य मन प्रयोग, २ असत्य मन प्रयोग सत्य से विपरीत जानना, ३ सत्य मृषा [मिश्र] मन प्रयोग. उक्त दोनों प्रकार को अलग२ कर चिंतवे और ४ असत्य मृषा (व्यवहार) मन प्रयोग जो सत्य भी नहीं तैसे असत्य भी नहीं ऐसा चिंतवे जैसे जलता तैल व बत्ती है और चिंतवे की दीवा जलता है. इत्यादि व्यवहार मन प्रयोग, ऐसेही चार वचन के प्रयोग जानना यथा ५ सत्य वचन प्रयोग, ६ असत्य वचन प्रयोग, ७ मिश्र वचन प्रयोग, ८ व्यवहार वचन प्रयोग; सात काया के ९ औदारिक शरीरकाया का प्रयोग वह पर्याप्त मनुष्य तथा तिर्यंच का शरीर जानना, १० औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग वह उत्पन्न होते तो कार्मन के साथ मिश्र जानना. और वैक्रय लब्धि धारक मनुष्य तथा तिर्यंच

तंजहा-सच्चमणप्पओगे जाव कम्मासरीरकायप्पओगे ॥ णेरइयाणं भंते ! कतिविहे पओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! एक्कारसविहेप्पओगे पण्णत्ते तंजहा-सच्चमणप्पओगे जाव असच्चामोसवइप्पओगे, वेउव्विय सरीर कायप्पओगे, वेउव्वियमीससरीर कायप्पओगे, कम्मासरीरकायप्पओगे ॥ एवं असुरकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणं ॥ पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! तिविहेपओगे पण्णत्ते ? तंजहा ओरालिय सरीर कायप्पओगे, ओरालिय मीससरीर कायप्पओगे, कम्मा सरीर

अर्थ

प्रकार का प्रयोग बंध होता है ? अहो गौतम ! इग्यारे प्रकार के प्रयोग कहे हैं तद्यथा-१ सत्य मन प्रयोग, २ असत्य मन प्रयोग, ३ मिश्र मन प्रयोग, ४ व्यवहार मन प्रयोग, ५ सत्य वचन, ६ असत्य वचन, ७ मिश्र वचन, ८ व्यवहार वचन, ९ वैक्रेय शरीर काया प्रयोग, १० वैक्रेय मिश्र काया प्रयोग और ११ कार्माण शरीर प्रयोग बंध. जिस प्रकार नरक के इग्यारे प्रयोग कहे उस ही प्रकार असुरकुमारादि दशों ही भवनपति देव के भी इग्यारे ही प्रकार के प्रयोग कहना. पृथ्वीकाया का प्रश्न ? अहो गौतम ! तीन प्रकार के प्रयोग कहे हैं तद्यथा—१ औदारिक शरीर काया प्रयोग बन्ध, २ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग बंध, और कार्माण शरीर काया प्रयोग बंध. ऐसे ही यावत् वनस्पति काया

सघमकायप्पओगीवि, जाव ओरालिय सरीर कायप्पओगीवि, वेउव्विय सरीर कायप्पओगीवि, वेउव्विय मीस सरीर कायप्पओगीवि, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय उरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगे आहारग सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगे आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगि-

प्रकारकी काया. अर्थात् मनुष्यमें ४ मनके ४ वचनके यो ८ और ९ औदारिक, १० वैक्रेय और ११ वैक्रेय का मिश्र यह ११ योग तो शाश्वत हैं. क्यों कि विद्याधर तथा चक्रवर्ती आदि ऋद्धि धारक वैक्रय शरीर करते हैं उन आश्रित वैक्रेय, वैक्रेय के मिश्रवाले भी सदैव विशेष पाते हैं, अब औदारिक का मिश्र कदाचित मिलता है और कदाचित् नहीं भी मिलता है क्यों कि इन में बारह मुहूर्त का विरह उत्पत्ति का है. इसलिये औदारिक मिश्र आहारक मिश्र और कार्मन यह कदाचित मिलने से और कदाचित नहीं मिलने से इस में ८० भांगे पाते हैं वे कहते हैं, जिस में एक संयोगी भांगे ८ होते हैं, तथा १ औदारिक शरीर काया प्रयोगी एक, २ औदारिक शरीर काया प्रयोगी बहुत, ३ आहारक शरीर प्रयोगी एक ४ आहारक शरीर काया प्रयोगी बहुत ५ आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी

सूत्र

तेरसविहे प्पओगे पण्णत्ते तंजहा-सच्चमणप्पओगे, मोसमणप्पओगे, सच्चामोसमणप्पओगे असच्चामोसमणप्पओगे, एवं वइप्पओगेवि, ओरालिय सरीरकायप्पओगे, ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगे, वेउव्वियसरीर कायप्पओगे, वेउव्विय मीस सरीर कायप्पओगे, कम्मा सरीर कायप्पओगे ॥ मणुसाणं पुच्छा ? गोयमा ! पन्नरसविहे पण्णत्ते तंजहा-सच्चा मणप्पओगे जाव कम्मासरीर कायप्पओगे ॥ वाणमंतर जोईसिय वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ २ ॥ जीवाणं भंते ! किं सच्चमणप्पओगी, जाव किं कम्मासरीर

अर्थ

८ व्यवहार वचन, ९ औदारिक शरीर प्रयोग, १० औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग, ११ वैक्रेय शरीर काया प्रयोग, १२ वैक्रेय मिश्र शरीर काया प्रयोग और १३ कार्माण शरीर काया प्रयोग. मनुष्य का प्रश्न ? अहो गौतम ! पन्द्रह ही प्रकार के प्रयोग कहे हैं तद्यथा—१ सत्य मन प्रयोग, २ असत्य मन प्रयोग, ३ मिश्र मन प्रयोग, ४ व्यवहार मन प्रयोग, ५ सत्य वचन, ६ असत्य वचन, ७ मिश्र वचन, ८ व्यवहार वचन, ९ औदारिक शरीर प्रयोग, १० औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग, ११ वैक्रेय शरीर प्रयोग, १२ वैक्रेय मिश्र काया प्रयोग, १३ आहारक शरीर प्रयोग, १४ आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोग और १५ कार्माण शरीर काया प्रयोग. वाणव्यंतर ज्योतिषी और वैमानिक के जैसे नेरीया का कहा वैसा कहना: सब में इग्यारे प्रयोग हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! सब जीवों क्या सत्य मन

औदारिक मिश्र आहारक मिश्र व ४ भांग

औ० मि०	आ० मि०
१	१
१	३
३	१
३	३

उदारिक मिश्र कार्मण की साथ ४ भांग

उ० मि०	का०
१	१
१	३
३	१
३	३

अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय, चत्तारि भंगा ॥ अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, कम्मासरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, कम्मा

मिश्र बहुत, ३ औदारिक मिश्र बहुत आहारक मिश्र एक, और ४ औदारिक मिश्र भी बहुत आहारक मिश्र भी बहुत यह दूसरी चौभंगी हुई अब औदारिक मिश्र और कार्माण के साथ चार भांग कहते हैं— १ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोगी एक, कार्माण शरीर काया प्रयोगी एक, २ औदारिक मिश्र शरीर

एक संयोगी ८ भांग

१ औदारिक	मिश्र एक
२ औदारिक	मिश्र बहुत
३ आहारक	एक
४ आहारक	बहुत
५ आहारक	मिश्र एक
६ आहारक	मिश्र बहुत
७ कार्माण	एक
८ कार्माण	बहुत

कायप्पओगिणोय, अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगे आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय, एए जीवाणं अट्ठ भंगा ॥३॥ णेरइयाणं भंते ! किं सच्चमणप्पओगी जाव किं कम्मा सरीर कायप्पयोगी? गोयमा! णेरइया सव्वेवि ताव होज्जा, सच्चमणप्पओगीवि जाव वेउव्विय मीससा सरीर कायप्पओगीवि, अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगय कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय ॥ एवं असुर

संयोगी ४. आहारक शरीरवाला एक, २ आहारक शरीरवाले बहुत, ३ आहारक मिश्रवाला एक, और ४ आहारक मिश्रवाले बहुत. द्विसंयोगी भी ४भांग-१ आहारक एक, आहारक मिश्र एक, २ आहारक एक आहारक मिश्र बहुत, ३ आहारक बहुत, आहारक मिश्र एक, और ४ आहारक शरीर काया प्रयोगी भी बहुत और आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी भी बहुत. यों सब आहारक शरीरके आठ भांगे हुवे ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नेरीये क्या सत्य मन प्रयोगी हैं कि यावत् क्या कार्माण मन प्रयोगी हैं ? अहो गौतम ! नेरीये सब वैसे ही हैं. अर्थात् नरक में कार्माण छोडकर दश योग सदैव पाते हैं.

सूत्र

उदारिक मिश्र आहारक मिश्र के ४ भांगे

उ० मि०	आ० मि०
१	१
१	३
३	१
३	३

उदारिक मिश्र कार्माण की साथ ४ भांगे.

उ० मि०	का०
१	१
१	३
३	१
३	३

अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय, चत्तारि भंगा ॥ अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, कम्मासरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, कम्मा

अर्थ

मिश्र बहुत, ३ औदारिक मिश्र बहुत आहारक मिश्र एक, और ४ औदारिक मिश्र भी बहुत आहारक मिश्र भी बहुत यह दूसरी चौभंगी हुई. अब औदारिक मिश्र और कार्माण के साथ चार भांगे कहते हैं— १ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोगी एक, कार्माण शरीर काया प्रयोगी एक, २ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोगी एक कार्माण शरीर काया प्रयोगी बहुत, ३ औदारिक मिश्र काया प्रयोगी बहुत, कार्माण शरीर काया प्रयोग एक और ४ औदारिक मिश्र [illegible]

सूत्र

अणिड्ढिपत्तारिआय, ॥ सेकिंतं इड्ढिपत्तारिया? इड्ढिपत्तारिया छव्विहा पण्णत्ता तंजहा अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा, चारणा, विज्जाहरा ॥ सेत्तं इड्ढिपत्तारिया ॥ सेकिंतं अणिड्ढि पत्तारिया ? अणिड्ढि पत्तारिया णवविहा पण्णत्ता तंजहा-खेत्तारिया, जाइ आरिया, कुलारिया, कम्मारिया, सिप्पारिया, भासारिया, णाणारिया, दंसणारिया, चारित्तारिया ॥ सेकिंतं खेत्तारिया ? खेत्तारिया अद्धछव्वीसइविहा पण्णत्ता तंजहा-(गाहा) रायगिह-मगह, चंपा-अंगा तह तामलित्तिवंगाय ॥ कंचनपुरं

अर्थ

आर्य मनुष्य. प्रश्न-ऋद्धिवाले आर्य मनुष्य के कितने भेद कहे हैं? उत्तर-ऋद्धिवाले आर्य मनुष्य के छ भेद कहे हैं-१ अरिहंत २ चक्रवर्ती ३ बलदेव ४ वासुदेव ५ चारण और ६ विद्याधर. ये छ ऋद्धिवाले आर्य कहाते हैं. प्रश्न-ऋद्धि बिना के आर्य किसे कहते हैं? उत्तर-ऋद्धि बिना के आर्य के ९ भेद कहे हैं-१ क्षेत्र आर्य २ जाति आर्य ३ कुल आर्य ४ कर्म आर्य ५ शिल्पआर्य ६ भाषा आर्य ७ ज्ञान आर्य ८ दर्शन आर्य और ९ चारित्र आर्य. प्रश्न-क्षेत्र आर्य के कितने भेद कहे हैं? उत्तर-क्षेत्र आर्य के साढे पच्चीस भेद कहे हैं जिन के नाम—१ मगध देश-राजगृही नगरी २ अंगदेश-चंपा नगरी ३ बंगदेश-तामलिप्ता नगरी ४ कलिंग देश-कंचनपुर नगर ५ काशीदेश-वाणारसी नगरी ६ कोशल देश-साकेतपुर नगर (अयोध्या के

मूल

कलिंगा,वाणारसी चेव कासीया॥१॥ साएय,कोसलागय, कोरंच, गयपुरंच कुरु, सोरिअं, कुसट्टाय॥ कंपिल्ल पंचाला, अहिछत्ता जंगलाचेव॥२॥दारवई यसूरट्ठा,मिहिल विदेहाय. वच्छकोसंबी, णांदपुरसंडिल्ला,भद्दिलपुरमवमलयाय ॥३॥ वइराड वच्छा वरणाअच्छा, तहामित्ति आवइदसण्णा सातियनईया चंदी, वीइभयासिंधु, सोवीरा, ॥ ४ ॥ महुराय सुरसेणा पावा, भंगीय मास पुरिवट्टा, सावत्थीयकुणाला, कोडिवरिसचलाढाय, सेयवियानियणयरी, कयइ अद्दच आरिय भणिय ॥ एत्थुप्पत्तिजिणाणं, चक्कीणराम

अर्थ

नाम से प्रसिद्ध है। ७ कुरुदेश में गजपुरनगर ८ कुशावर्त देश-सोरीपुर नगर ९ पंचालदेश-कंपिलपुर नगर १० जंगल देश-अहिछत्ता नगरी ११ सोरठदेश द्वारिका नगरी १२ विदेह देश-मिथिला नगरी १३ वच्छ देश-कोसंबी नगरी १४ संडिल्ल देश-नंदीपुर नगर १५ मलय देश भद्दिलपुर नगर १६ वराडदेश बहुलपुर नगर १७ वरणदेश अछित्ता नगर १८ दशार्णदेश मृत्तिकावती नगरी १९ चेदि देश सोक्तिकावती नगरी २० सिन्धु देश-वितभयपाटन २१ सोवीरदेश मथुरा नगरी २२ सुरसेन देश पावा नगरी २३ भंग देश मासपुर नगर २४ कुणालदेश श्रावस्ती नगरी २५ लाटदेश कोटीवर्ष नगरी और अर्धकेकै देश उस में श्वेताम्बिका नगरी. यह आर्य देश कहे हैं. इन में तीर्थंकर चक्रवर्ती, बलदेव वासुदेव उत्पन्न होते हैं यह

औदारिक आहारिक व आहारक मीश्रके ८ भांग.

औ० मी	आ०	आ० मी
१	१	१
१	१	३
१	३	१
१	३	३
३	१	१
३	१	३
३	३	१
३	३	३

चउवीस भंगा ॥ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पयोगीय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मिसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पयोगिणोय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओ-

कार्मण बहुत, ६ आहारक मिश्र बहुत. कार्माण एक. और ४ आहारक मिश्र भी बहुत कार्माण भी बहुत. यह ७ चौभंगी से द्विसंयोगी २८ भांगे हुवे. अब त्रिसंयोगी ३२ भांगे कहते हैं. जिस में औदारिक मिश्र, आहारक और आहारक मिश्र इन तीनों के संयोग के ८ भांग—यथा—१ औदारिक मिश्र एक आहारक एक, आहारक मिश्र एक. २ औदारिक मिश्र एक आहारक एक आहारक मिश्र बहुत.

स ४ भांग		कार्माणके ४ भांग	
आ०मि०	का०	आ०मि०	का०
१	१	१	१
१	३	१	३
३	१	३	१
३	३	३	३

अहवेगेय आहारग सरीरकायप्पओगिणोय कम्मासरीर कायप्पओगिणोय चउरोभंगा अहवेगेय आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय अहवेगेय आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मासरीर कायप्पओगीय अहवेगेय आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय चत्तारिभंगा ॥ एवं

रक शरीर भी बहुत आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी भी बहुत. यह चौथी चौभंगी. अब आहारक और कार्माण के साथ चार भांगे कहते हैं—१ आहारक शरीर काया प्रयोगी एक कार्माण शरीर काया प्रयोगी एक, २ आहारक शरीर काया प्रयोगी एक कार्माण शरीर काया प्रयोगी बहुत, ३ आहारक शरीर काया प्रयोगी बहुत और कार्माण शरीर काया प्रयोगी एक, और ४ आहारक शरीर काया प्रयोगी भी बहुत और कार्माण शरीर काया प्रयोगी भी बहुत. यह पांचवी चौभंगी. अब आहारक मिश्र और कार्माण के साथ छठी चौभंगी कहते हैं—१ आहारक मिश्र एक कार्माण एक, २ आहारक मिश्र एक

ओगगती जाव कम्मग सरीर कायप्पओगगती ? गोयमा ! जीवा सव्वेवि ताव होज्जा, सच्चमणप्पओगगतीवि एवं तंचेव पुव्वभणियं भणितव्वं, भंगा तहेव जाव वेमाणियाणं॥ सेतं पओगगती ॥ १० ॥ सेकिंत ततगती? ततगति ! जेणं जं गामं वा जाव संणिवेसंवा संपट्ठिते असपत्ते अतराहेव वट्टंति सेतं ततगति ॥ ११ ॥ सेकिंतं बंधण छेदनगति ? जीवोवा सरीराओ सरीरंवा जीवाओ, सेतं बंधण छेदणगती ॥ १२ ॥ सेकिंत उववायगति ? उववायगति ! तिविहा पण्णत्ता तंजहा—खेत्तोववायगती भवोववायगती, णोभवोववायगती, सेकिंतं खेत्तोववायगति ?

अर्थ

कार्माण शरीर प्रयोग गति होवे ? अहो गौतम ! समुच्चय जीवे में तैसे ही होता है सत्यमन प्रयोग. गति वगैरह पहिले कहा वैसा कहना और भांगे भी पूर्वोक्त प्रकार कहना. यावत् वैमानिक पर्यंत यह प्रयोगगति के भेद कहे॥१०॥अहो भगवन् ! ततगति के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! ततगति के जो जिसग्रामको यावत् सन्निवेशको जानेके लिये मार्ग में गमनकरे उस ग्रामादिको प्राप्त नहोवे अन्तरके मार्गमें वर्तरहा है उसे ततगति प्रयोग कहना॥११॥अहो भगवन्! बंधनछेदनगति के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम बंधछेदनगति सो जीव प्रथम के शरीरको छोडे और शरीर जीव को छोडे वह बंध छेदन गति॥१२॥उपपातगति के कितने भेद कहे हैं ? उपपातगति के तीन भेद तद्यथा-१. क्षेत्रोत्पातगति,२भवोत्पातगति और ३ नो भवोत्पात गति. क्षेत्रोत्पातगतिके कितने भेद?

गमा। भंते णरइय खेत्तोववायगती [illegible] तिरिक्ख जोणिय खेत्तोववायगती पंचविहा पण्णत्ता तंजहा एगिंदिय तिरिक्ख जोणिय खेत्तोववायगती जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिय खेत्तोववायगती। सेत्तं

क्षेत्रोपपात गति के पांच भेद कहे हैं यथा—१ नैरयिक के क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति, २ तिर्यंच के क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति, ३ मनुष्य के क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति, ४ देवता के क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति और ५ सिद्धक्षेत्र में उत्पन्न होने की गति नैरयिक क्षेत्रोपपातगति के कितने भेद कहे हैं? [illegible] भेद कहे यथा—रत्नप्रभा पृथ्वी में नैरयिक पने उत्पन्न होने की क्षेत्रोपपातगति यावत् [illegible] पृथ्वी में नैरयिक पने उत्पन्न होने की क्षेत्रोपपातगति यह नरक क्षेत्रोपपातगति के भेद कहे। तिर्यंच क्षेत्रोपपातगति के कितने भेद कहे हैं? तिर्यंच योनिक क्षेत्रोपपातगति के पांच भेद हैं यथा—एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक क्षेत्र में उत्पन्न

गिणीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसगसरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय ओरालिय मीसगसरीर कायप्पओगिणोय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, एते अट्ठ भंगा ॥ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, कम्मासरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारय सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय,

३ औदारिक मिश्र एक, आहारक बहुत, आहारक मिश्र एक, ४ औदारिक मिश्र एक, आहारक बहुत, आहारक मिश्र भी बहुत ५ औदारिक मिश्र बहुत, ६ आहारक एक, आहारक मिश्र भी एक, ६ औदारिक मिश्र बहुत, आहारक एक आहारक मिश्र बहुत, ७ औदारिक मिश्र बहुत आहारक बहुत, आहारक मिश्र एक और ८ औदारिक मिश्र बहुत, आहारक बहुत और आहारक मिश्र भी बहुत. यह प्रथम

सूत्र

ओगगती जाव कम्मग सरीर कायप्पओगगती ? गोयमा ! जीवा सव्वेवि ताव होज्जा, सच्चमणप्पओगगतीवि एवं तंचेव पुव्वभाणियं भणितव्वं, भंगा तहेव जाव वेमाणियाणं॥ सेतं पओगगती ॥ १० ॥ सेकिंत ततगती? ततगति ! जेणं जं गामं वा जाव सण्णिवेसं वा संपट्ठिते असंपत्ते अंतराहेव वट्टंति सेतं ततगति ॥ ११ ॥ सेकिंतं बंधण छेदनगति ? जीवोवा सरीराओ सरीरंवा जीवाओ, सेतं बंधण छेदणगती ॥ १२ ॥ सेकिंत उववायगति ? उववायगति ! तिविहा पण्णत्ता तंजहा—खेत्तोववायगती भवोववायगती, णोभवोववायगती, सेकिंतं खेत्तोववायगति ?

अर्थ

कार्माण शरीर प्रयोग गति होवे ? अहो गौतम ! समुच्चय जीवे में तैसे ही होता है सत्यमन प्रयोग गति वगैरह पहिले कहा तैसा कहना. और भांगे भी पूर्वोक्त प्रकार कहना. यावत् वैमानिक पर्यंत यह प्रयोगगति के भेद कहे॥१०॥अहो भगवन् ! ततगति के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! ततगति के जो जिसग्रामको यावत् सन्निवेश को जाने के लिये मार्ग में गमनकरे उस ग्रामादिको प्राप्त नहोवे अन्तरके मार्गमें चलरहा है उसे ततगति प्रयोग कहना॥११॥अहो भगवन्! बंधनछेदनगति के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम बंधछेदनगति सो जीव प्रथम के शरीरको छोडे और शरीर जीव को छोडे वह बंध छेदन गति॥१२॥उपपातगति के कितने भेद कहे हैं ? उपपातगति के तीन भेद तद्यथा-१. क्षेत्रोत्पातगति,२भवोत्पातगति और ३ नो भवोत्पात गति. क्षेत्रोत्पातगतिके कितने भेद?

उदारिक मीश्र के आहारिक कार्माण की तीन संयोगी साथ आठ भांग

उ० मि	आ०	का०
१	१	१
१	१	३
१	३	१
१	३	३
३	१	१
३	१	३
३	३	१
३	३	३

अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणीय, अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणीय, आहारग सरीर कायप्पओगिणीय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणीय, आहारग सरीर कायप्पओगिणीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणीय, । अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणीय, अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग

अष्टभंगी. अब औदारिक मिश्र आहारक और कार्माण के साथ ८ भांगे कहते हैं—१ उदारिक मिश्र एक, आहारक एक, कार्माण एक, २ उदारिक मिश्र एक, आहारक एक, कार्माण बहुत, ३ उदारिक मिश्र एक आहारक बहुत, कार्माण एक, ४ उदारिक मिश्र एक, आहारक बहुत, कार्माण बहुत, ५ उ-

उदारिक मिश्र के आहारिक मीश्र व कार्मांण की साथ आठ भांग

उ० मि	आ० मा	क०
१	१	१
१	१	३
१	३	१
१	३	३
३	१	१
३	१	३
३	३	१
३	३	३

मीस सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्प ओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय । अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगीय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय,

अर्थ दारिक मिश्र बहुत, आहारक एक, कार्मांण एक, ६ औदारिक मिश्र बहुत, आहारक एक, कार्मांण बहुत ७ औदारिक मिश्र बहुत, आहारक बहुत कार्मांण बहुत, और ८ औदारिक मिश्र बहुत आहारक बहुत और कार्मांण भी बहुत. यह दूसरी चौभंगी हुई. अब तीसरी औदारिक मिश्र और कार्मांण साथ आठ

जोतिय खेत्तोववायगति ॥ सेकिंतं मणुस्स खेत्तोववायगती ? मणुस्स खेत्तोववायगती दुविहा पण्णत्ता तंजहा समुच्छिमणुस्स खेत्तोववायगती, गब्भवक्कंतिय मणुस्स खेत्तोववायगती सेतं मणुस्स खेत्तोववायगती ॥ सेकिंतं देवखेत्तोववायगति ? देवखेत्तोववायगति चउविहा पण्णत्ता तंजहा भवणवइ खेत्तोववायगति जाव वेमाणिय खेत्तोववायगति, सेतं देवखेत्तोववायगती ॥ सेकिंतं सिद्ध खेत्तोववायगती ? सिद्ध खेत्तोववायगती अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा जंबूद्दीवे दीवे भरहेरवय वासस्स सपक्खं सपडिदिसिं सिद्ध खेत्तोववायगती जंबुद्दीवेद्दीवे चुल्लहिमवंत सिहरीवासहर पव्वय सपक्खि सपडिदिसि सिद्ध खेत्तोववायगति, जंबुद्दीवेदीवे हेमवय एरण्णवयवासं सपक्खि

यह तिर्यंच गति की क्षेत्रोत्पात गति कही. मनुष्य क्षेत्रोत्पात गति के कितने भेद कहे हैं ? मनुष्य क्षेत्रोत्पात गति के दो भेद कहे हैं. यथा—१ संमूर्छिम मनुष्य के स्थान में उत्पन्न होने की गति और गर्भज मनुष्य क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति. यह मनुष्य क्षेत्रमें उत्पन्न होने की गति का कहा. देव क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति के कितने भेद हैं ? देव क्षेत्रोत्पात गति के चार भेद कहे हैं यथा—१ भवनवासी देवता क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति यावत् वैमानिक देवता के क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति. यह देव गति में उत्पन्न होने के क्षेत्रोत्पात गति के भेद हुवे. सिद्ध क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति के कितने भेद कहे हैं ? सिद्ध क्षेत्र में उत्पन्न होने की क्षेत्रोत्पात गति के अनेक भेद कहे हैं यथा—

कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय ४ अहवेगे ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय ५ अहवाय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, ६ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय ७ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय ८ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पयोगीय, आहारग सरीर कायप्पयोगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पयोगिणोय, कम्मग सरीर कायप्पओगिणोय, ९ अहवेगेय ओरालिय मीसगसरीर कायप्प-

बहुत, कार्माण बहुत, १३ औदारिक बहुत, आहारक बहुत आहारक मिश्र एक, कार्माण एक १४ औदारिक बहुत, आहारक बहुत आहारक मिश्र एक, कार्माण बहुत, १५ औदारिक मिश्र बहुत आहारक बहुत, आहारक

जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स सपक्खि सपडिदिसं सिद्धखेत्तोववायगती. लवणसमुद्दस्स सपक्खि सपडिदिसं सिद्धखेत्तोववायगती, धायतिखंडदीवे पुरत्थिम पच्छिमद्ध जाव मंदर पव्वयस्स सपक्खि सपडिदिसं सिद्धखेत्तोववायगती, कालायसमुद्दं सपक्खि सपडिदिसं सिद्ध खेत्तोववायगती, पुक्खरवरदीवड्ढ पुरच्छिमद्ध भरहेरवय वास सपक्खि सपडिदिसं सिद्ध खेत्तोववायगती, एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढ पच्छिमद्धं पुरिमद्ध मंदरपव्वय सपक्खि सपडिदिसं सिद्धखेत्तोववायगती, सेत्त सिद्धखेत्तोववायगती ॥ सेत्त खेत्तोववायगइ ॥ सेकिंत भवोववायगती ? भवोववायगती चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा-णेरइय जाव

निषध और नीलवंत पर्वत पर से, जम्बूद्वीप के पूर्व महा विदेह और पश्चिम महा विदेह क्षेत्र से जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर समश्रेणि यावत् सिद्ध का उपपात क्षेत्र है. ऐसे ही लवण समुद्र में से समश्रेणि यावत् सिद्ध का उपपात क्षेत्र, धातकी खण्डद्वीप के पूर्व पश्चिम के विभाग से जम्बूद्वीप के जैसे ही क्षेत्र पर्वतों से यावत् दोनों मेरु पर्वत से समश्रेणि यावत् सिद्ध का उपपात क्षेत्र है, कालोदधि समुद्र से समश्रेणि यावत् सिद्ध का उपपात क्षेत्र है, पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व पश्चिम के विभाग से जम्बूद्वीप के जैसे ही क्षेत्र पर्वत से यावत् दोनों मेरु पर्वत से समश्रेणि दिशा विदिशा में बराबर सिद्ध का उपपात क्षेत्र है, वहां से जो सिद्ध होवे वह सिद्ध क्षेत्रोपपात गति. यह सिद्ध के उपपात क्षेत्र की गति कही. भवोत्पात गति के कितने भेद कहे हैं ? भवोत्पात गति के

सूत्र

चरिमंतं एगसमएणं गच्छइ, एवं उत्तरिल्लाओ दाहिणिल्लं, उवरिल्लाओ हेट्ठिल्लं, हेट्ठिल्लाओ उवरिल्लं, सेतं पोग्गल णो भवोववायगती ॥ सेकिंतं सिद्ध णो भवोववायगती? सिद्ध णो भवोववायगति दुविहा पण्णत्ता तंजहा अणंतरसिद्ध णो भवोववायगतीय, परंपर सिद्धणोभवोववायगती ॥ सेकिंतं अणंतर सिद्ध णो भवोववायगती? अणंतर सिद्ध णो भवोववायगती पण्णरसविहा पण्णत्ता तंजहा-तित्थ सिद्ध अणंतर णो भवोववायगतीय जाव अणेगसिद्ध णो भवोववायगती ? सेकिंतं परंपर सिद्ध णो भवोववायगती ? परंपर सिद्ध णो भवोववायगती अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा अपढम समय सिद्ध णो भवोववायगती दुसमय सिद्ध णो भवोववायगती जाव

अर्थ

में जावे वैसे ही दक्षिण के चरमान्त से उत्तर के चरमान्त तक और उत्तर के चरमान्त से दक्षिण के चरमान्त तक एक समय में जावे ऐसे ही ऊपर के चरमान्त से नीचे के चरमान्त तक और नीचे के चरमान्त से ऊपर के चरमान्त तक एक समय में जावे यह पुद्गलोत्पातगति. यह पुद्गलोत्पातगति के भेद हुवे. सिद्ध की भवोत्पातगति के कितने भेद कहे हैं? सिद्ध की नो भव उत्पातगति के दो भेद कहे हैं. तद्यथा-१ अनंतर सिद्ध की भव उत्पातगति, और २ परम्परा सिद्ध की भव उत्पातगति. अनंतर सिद्ध की भव उत्पातगति के कितने भेद कहे हैं? अनंतर सिद्ध की भवोत्पातगति के पन्द्रह भेद कहे हैं? तद्यथा—तीर्थ सिद्धा अनंतर सिद्ध की भवोत्पातगति. यावत् अनेक सिद्ध की भवोत्पातगति परम्पर सिद्ध की भवोत्पातगति के कितने भेद कहे हैं? परम्पर सिद्ध की नो भवोत्पातगति के अनेक भेद कहे हैं, तद्यथा—अप्रथम समय सिद्ध [जिन

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वेसमवेदणा ? गोयमा! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सण्णिभूताय असण्णिभूताय ॥ तत्थणं जे ते सण्णिभूताय तेणं महा-वेदणतरागा, तत्थणं जे ते असण्णिभूताय तेणं अप्पवेयणतरागा॥से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति णेरइया णो सव्वे समवेयणा ॥ ५ ॥ णेरइयाणं भंते ! सव्वेसमकिरिया?

सब नेरिये सरीखी वेदनावाले हैं ? अहो गौतम ! नेरिये दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा-१ संज्ञीभूत और २ असंज्ञीभूत इन में जो संज्ञीभूत हैं वे महा वेदना भोगवते हैं और असंज्ञीभूत हैं वे अल्प वेदना वेदते हैं, क्यों कि असंज्ञी तिर्यंच मर कर प्रथम नरक में ही जाते हैं वे पल्योपम के असंख्यातवे भाग की आयुष्य पाते हैं इस से वे अल्प वेदनावाले हैं और संज्ञी सातवी नरक तक जाते हैं वे तेतीस सागरोपम तक का आयुष्य पाते हैं, इस से वे महा वेदनावाले हैं. तथा असंज्ञीभूत अपर्याप्त नेरिये को कहते हैं वे अल्प वेदनावाले हैं और संज्ञीभूत पर्याप्त नेरिये को कहते हैं वे महा वेदनावाले हैं. तथा असंज्ञीभूत अचेत अवस्थावाला है व ज्ञान का आवरण होने से पूरी वेदना वेद सकते नहीं हैं और संज्ञीभूत सचेत अवस्था में वेदना का पूरा अनुभवी होने से अधिक वेदना वेदते हैं. तथा असंज्ञीभूत मिथ्यात्वी नेरिये को कहते हैं वे कर्म फल का अज्ञात हो अल्प वेदना वेदते हैं और संज्ञीभूत सम्यक् दृष्टी को कहते हैं वे कर्म फल के ज्ञाता हो पश्चात्तापयुक्त महा वेदना वेदते हैं. इस कारन अहो गौतम ! ऐसा कहा कि सब नेरियों सरीखी वेदना नहीं वेदते हैं॥५॥अहो भगवन् ! सब नेरीये सरीखी क्रियावाले हैं क्या?

वंकगती, १६ पंकगती, १७ बंधण विमोयणगती ॥ सेकिंतं फसमाणगई ? फूसमाणगइ जण्णं परमाणु पोग्गले दुप्पएसिए जाव अणंतपएसियाणं खंधाणं अण्णमण्णं फुसित्ताणं गती पवित्तइ सेतं फूसमाणगती, ॥ सेकिंतं अफूसमाणगती ! जंणं एते सिचेव अफुसित्ताणगतीए पवित्तइ सेतं अफुसमाणगई ॥ सेकिंतं उवसंपज्जमाणगती ? उवसंपज्जमाणगती जण्णं रायंवा जुवरायंवा ईसरंवा तलवरंवा माडंबितंवा कोडुंबियंवा इब्भवा सेट्ठिवा सेणावइवा, सत्थवाहंवा, उवसंपज्जित्ताणं गच्छइ; सेतं उवसंपज्ज

है ? स्पर्शमानगति ! जो प्रमानु पुद्गल, द्विप्रदेशिक स्कन्ध यावत् अनंत प्रदेशिक स्कन्ध परस्पर एकेक को एकेक स्पर्शकर छीकर चले वह स्पर्शमानगति, २ अस्पर्शमानगति किसको कहते हैं? अस्पर्शमानगति जो प्रमाणु पुद्गल ... स्पर्शमान गति है, उपसंपमान गति किस

समोववण्णगाया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा! णेरइया चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा- अत्थेगतिया समाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववण्णगा ॥ से एएणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति णेरइया णोसव्वे समाउया णो सव्वेसमोववण्णगा ॥ ७ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! सव्वेसमाहारा सोचेव पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, जहा णेरइया ॥ असुरकुमाराणं भंते ! सव्वे

अर्थ

यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन सब नेरिये सरीखे आयुष्य वाले नहीं हैं ? अहो गौतम ! नेरिये चार प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ कितनेक सम आयुष्यी और समोत्पन्न हैं, २ कितनेक सम आयुष्यी और विषमोत्पन्न है, अर्थात् आयुष्यतो बराबर है परन्तु उत्पन्न आगे पीछे हुवे हैं, ३ कितनेक विषम आयुष्यी और समोत्पन्न है अर्थात् आयुष्यतो ज्यादा कमी है परंतु उत्पन्न साथमें हुवे हैं और कितनेक विषम आयुष्यी और विषमोत्पन्न हैं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि सब नेरिये सम आयुष्यी और समोत्पन्न नहीं हैं. यह नवद्वार नरकाश्रिय संपूर्ण हुवे ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देवता सब सरीखे आहार वाले हैं इत्यादि सब प्रश्न नरकवत् जानना ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ

आयरियंवा उवज्झायंवा थेरंवा पवित्तिवा गणिवा गणहरंवा गणावच्छेदवा उद्दि-सियं २ गच्छति सेतं उद्दिसिय पविभत्तगती ॥ सेकिंतं चउपुरिस पविभत्तगती ? चउपुरिसपविभत्तगति सेजहा णामए चत्तारि पुरिसा समगं पज्जवट्ठिया समगं पट्ठिता समग पज्जवट्ठिया, विसमं पट्ठिया विसम पज्जवट्ठिया समगं पट्ठिया विसमं पज्जवट्ठिया विसमं पट्ठिया सेतं चत्तारि पुरिसा पविभत्तगती ॥ सेकिंतं वंकगती ? वंकगती ! चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा घट्टणया, थंभणया, लेसणया, पवडणया सेतं वंकगती ॥

गणावच्छेदक गच्छमें वस्त्र पात्रादिके विभाग के करने वाले, इन जेष्ठ पुरुषोंमेंसे किसी को भी अमुक प्रदेश में प्रवर्ते वह उद्देशिक प्रविभक्तगति ॥ चार पुरुष प्रविभक्तगति कौनसी कही है ? चार पुरुष प्रविभक्तगति यथा दृष्टान्त—१ चार पुरुष साथ ही जाते हुवे आगे के ग्राम को साथ ही प्राप्त हुवे, २ चारों साथ ही रस्ते में गमन किया, और चारों आगे पीछे ग्राम को प्राप्त हुवे, ३ चारों आगे पीछे चले और साथ ही ग्राम को प्राप्त हुवे, और चारों ही आगे पीछे चले और आगे पीछे ही ग्राम को प्राप्त हुवे. यह चार पुरुष की प्रविभक्त गति कहना. वक्रगति किसी को कहते हैं ? वक्रगति के चार भेद— १ लंगडाता हुवा चले, २ घुटने से चले, ३ कुब्ज के जैसा बांका चले, और ४ पडता २ चले. उसे वक्रगति कहना. पंकगति किसे कहते हैं ? पंक गति यथादृष्टान्त कोई पुरुष तालाब में, कर्दम में पानी में पांवादि

सूत्र

ते पच्छोववण्णगा तेणं विसुद्ध वण्णतरागा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति असुर कुमारा णो सव्वे समवण्णा, एवं लेस्साए, वेदणाए, जहा णेरइया, अवसेसं जहा णेरइयाण, एवं जाव थणियकुमारा ॥ ८ ॥ पुढविकाइया आहार कम्म वण्ण लेस्साहिं जहा णेरइया ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! सव्वे समवेदणा ? हंता गोयमा ! सव्वे समवेदणा ॥ से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ? गोयमा !

अर्थ

जिन में वे थोडे काल में आयुष्य पूर्णकर पृथव्यादि गति में उत्पन्न होने वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे वे अल्प अशुभ कर्मी हैं, अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा कि सब असुर कुमार सरीखे कर्म वाले नहीं हैं इस प्रकार ही वर्ण का प्रश्नोत्तर कहना, अर्थात् जो पूर्वोत्पन्न हैं वे अविशुद्धवर्ण वाले हैं और पश्चात उत्पन्न हुवे हैं विशुद्धवर्ण वाले हैं, अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा कि सब असुर कुमार देवता सरीखे वर्ण वाले नहीं हैं. इस प्रकार ही लेश्या का, वेदना आदि सब बोलों का जैसा नेरिये का कहा तैसा कहना. और जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही यावत् स्तनित कुमार पर्यन्त कहना ॥८॥ पृथ्वीकायका भी आहार कर्म वर्ण लेश्या जिसप्रकार नेरइये के कहे उसही प्रकार कहना. अहो भगवन्! क्या पृथ्वीकाया सब सरीखी वेदनावाले हैं? हां गौतम! सब पृथ्वीकाया सरीखी वेदनावाले हैं. अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया सब असंज्ञी हैं असंज्ञीभूत हैं

सूत्र

पुढविकाइया सव्वे असण्णी असण्णीभूंते, अणिदायवेदणं वेदंति? से
एवं वुच्चइ पुढविकाइया सव्वेसमवेदणा ॥ पुढविकाइयाणं भंते !
हंता गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे समकिरिया॥से केणट्ठेणं भंते ! एवं
पुढविकाइया सव्वमाई मिच्छादिट्ठी, तेसिणियताओ पंचकिरियाओ कज्ज
मिया परिग्गाहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादंसणवत्तिय
गिंदिया ॥ ९ ॥ पंचिंदिया तिरिक्खजोणिया जहा णेरइया णवरं किरि

अर्थ

अव्यक्त वेदना वेदते हैं, इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि पृथ्वीकाया
अहो भगवन् ! क्या पृथ्वीकाया सब सरीखी क्रियावाले हैं ? हां गौतम ! पृथ्वी
क्रियावाले हैं. अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा ? अहो गौतम ! पृथ्वीका
मिथ्यादृष्टी हैं इस लिये उन को सदैव नियमा पांचों प्रकार की क्रिया लगती है १ ता
२ परिग्रहीकी, ३ माया प्रत्यर्या, ४ अप्रत्याख्यानी, और ५ मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी.
कहा तैसाही पांचों स्थावर तीनों विकलेंद्रिय का कहना, (विकलेंद्रिय अपर्याप्त अप
प्रतिपाती सम्यक्त्वी रहते हैं परन्तु वह यहां ग्रहण नहीं किया) ॥ ९ ॥ पंचेंद्रिय तिर्यंच
नेरीये का कहा तैसे ही कहना परंतु उस में इतना विशेष कि उस में

॥ सप्तदश-लेश्या पदम् ॥

सूत्र

आहार, समसरीरा, उस्सासे, कम्म, वण्ण, लेस्सासु, समवेदन, समकिरिया, समा, उववण्णे य बोधव्वा ॥ १ ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा, सव्वे समुस्सासनिस्सासा, ? गोयमा! णोइणट्ठे समट्ठे ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समाहारा जाव णो सव्वे समुस्सासानिस्सासा ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-महासरीराय अप्पसरीराय, तत्थणं जे ते महासरीरा तेणं

अर्थ

अब सतरवा लेश्या पद कहते हैं—कर्म पुद्गलों के परमाणुओं जिन २ कृष्णादि रङ्गमय आत्म प्रदेश के श्लिष्टरूप परिणमन है उस लेश्या कहते हैं. इस लेश्या पद के छ उद्देशे हैं जिस में से यहां प्रथमोद्देश कहते हैं प्रथम द्देश के ९ द्वारों के नाम—१ आहार द्वार, २ समशरीर द्वार, श्वासोश्वास द्वार, ४ कर्म द्वार, ५ वर्णद्वार, ६ लेश्या भेद द्वार, ७ समवेदना द्वार, ८ समक्रियाद्वार, और ९ समायुष्यद्वार जानना ॥१॥ प्रथम आहार शरीर और श्वासोश्वास ये तीनों द्वार सामिल कहते हैं अहो भगवन् ! नारकी के सब जीवों क्या सरीखे आहार वाले हैं, सब सरीखे शरीर वाले हैं. क्या सब सरीखे श्वासोसास वाले हैं. ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अहो भगवन्! ऐसा किस कारन कहा कि नेरीये सब सरीखे आहार वाले

ते पच्छोववण्णगा तेणं विसुद्ध वण्णतरागा, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति असुर कुमारा णो सव्वे समवण्णा, एवं लेस्साए, वेदणाए, जहा णेरइया, अवसेसं जहा णेरइयाण, एवं जाव थणियकुमारा ॥ ८ ॥ पुढविकाइया आहार कम्म वण्ण लेस्साहिं जहा णेरइया ॥ पुढविकाइयाणं भंते! सव्वे समवेदणा? हंता गोयमा! सव्वे समवेदणा ॥ से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ पुढविकाइया सव्वे समवेदणा? गोयमा!

जिस से वे थोडे काल में आयुष्य पूर्णकर पृथ्व्यादि गति में उत्पन्न होने वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे वे अल्प अशुभ कर्मी हैं, अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा कि सब असुर कुमार सरीखे कर्म वाले नहीं हैं. इस प्रकार ही वर्ण का प्रश्नोत्तर कहना, अर्थात् जो पूर्वोत्पन्न हैं वे अविशुद्धवर्ण वाले हैं और पश्चात उत्पन्न हुवे हैं विशुद्धवर्ण वाले हैं, अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा कि सब असुर कुमार देवता सरीखे वर्ण वाले नहीं हैं. इस प्रकार ही लेश्या का, वेदना आदि सब बोलों का जैसा नेरिये का कहा तैसा कहना, और जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही यावत् स्तनित कुमार पर्यन्त कहना॥८॥पृथ्वीकायका भी आहार कर्म वर्ण लेश्या जिसप्रकार नेरइये के कहे उसही प्रकार कहना. अहो भगवन्! क्या पृथ्वीकाया सब सरीखी वेदनावाले हैं? हां गौतम! सब पृथ्वीकाया सरीखी वेदनावाले हैं. अहो भगवन! किस कारन [illegible] ...काया सब असंज्ञी हैं: असंज्ञीभूत हैं

अव्यक्त वेदना वेदते हैं, इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि पृथ्वीक
अहो भगवन् ! क्या पृथ्वीकाया सब सरीखी क्रियावाले हैं ? हां गौतम !
क्रियावाले हैं. अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा ? अहो गौतम ! पृ
मिथ्यादृष्टी हैं इस लिये उन को सदैव नियमा पांचों प्रकार की क्रिया लागती
२ परिग्रहीकी, ३ माया प्रत्यया, ४ अप्रत्याख्यानी, और ५ मिथ्यात्व दर्शन प्र
कहा तैसाही पांचों स्थावर तीनों विकलेंद्रिय का कहना, (विकलेंद्रिय अपर्या
प्रतिपाती सम्यक्त्वी रहते हैं परंतु वह यहां ग्रहण नहीं किया) ॥ ९ ॥ पंचेंद्रिय
नेरीये का कहा तैसे ही कहना परंतु . उस में-इतना विशेष कि इन में सम्यक

...या. दासापुरिसा, खरोट्ठी, पुक्खरसारिया, भोगवइया,
रिया, अक्खरपुट्ठिया, वेणइया, णिण्हइया, अंकलिवी, गणि-
आयासलिवी माहेसरी, दोमिली, पुलिंदी सेत्तंभासारिया
ारिया ? णाणारिया पंचविहा, पण्णत्ता तंजहा-आभिणि
ाणारिया, ओहिणाणारिया, मणपज्जव णाणारिया, केवलणा-
या ॥ ४० ॥ सेकिंतं दंसणारिया ? दंसणारिया दुविहा
णारिया, वीअरागदंसणारियाय, सेकिंतं सरागदंसणारिया ?

... ६ भोगवती ७ पहारिका ८ अंतरिश का ९ अक्षरपाठिका १० वेण-
१३ गणित लिपि १४ गंधर्वलिपि १५ आदर्श लिपि १६ माहेश्वरी
पुलिन्दी लिपि. यह भाषा आर्य के भेद ...
ांच भेद कहे हैं

सूत्र

से किंतं सिप्पारिया ? सिप्पारिया अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-तुणागा, तंतुवाया, पट्टगारा, देयडा, वसडा, कट्टपाउयारा, मुंजपाउयारा, छत्तारा, वभारा, पच्छारा, पोत्थारा, लेप्पारा, चित्तारा, सखारा, दन्तारा, भंडारा, जिब्भगारा, सेल्लारा, कोडिगारा, पट्टागारा, देप्पडा जयावण्णा तहप्पगारा ॥ सेत्तं सिप्पारिया ॥ ३८ ॥ से किंतं भासारिया ? भासारिया अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-जेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ जत्थवियणंबंभीलिवी पवत्तइ ॥ बंभीएण लिवीए अट्ठारस विहे लेक्खविहाणे

अर्थ

प्रश्न-शिल्प आर्य के कितने भेद कहे हैं? उत्तर शिल्प आर्य के अनेक भेद कहे हैं—१ कपडा तुननेवाले २ कपडा बुननेवाले ३ पटकूल बनानेवाले ४ देडा ५ वसण पीठिका ६ बांसादि काटनेवाले ७ पादुका के काष्ट करनेवाले ८ मजपादुका कारक ९ छत्र कारक १० चमर ११ लखक १२ लेपकारक १३ चित्रकारक १४ संख्याकारक १५ दंतकारक १६ भंडकारक १७ तिर्भीकारक १८ सिल्लावट १९ कांष्ठिकारक माट्टी और दांत वगैरह शिल्प आर्य हैं. यह शिल्प आर्य के भेद हुए ॥ ३८ ॥ अब भाषा आर्य किसे कहते हैं ? भाषा आर्य के अनेक भेद कहे हैं—जो अर्ध मागधि भाषा बोले, जहां ब्राह्मी लीपि बोली जावे, ब्राह्मी लीपि के अठारह भेद कहे हैं जिन के नाम—१ ब्राह्मी लीपि २ यावनी लीपि ३ दोष

किरियाहिं मणूसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा-सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी; तत्थणं जेते सम्मदिट्ठी ते तिविहा पण्णत्ता तंजहा संजया, असंजया, संजयासंजया, तत्थणं जेते संजता ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सराग संजयाय, वीयराग संजयाय. तत्थणं जेते वीयराग संजता तेणं अकिरिया, तत्थणं जेते सरागसंजया ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पमत्त संजयाय अप्पमत्त संजयाय, तत्थणं जेते अपमत्त संजया तेसिं एगा मायावत्तिया किरिया कज्जति, तत्थणं जेते पमत्त संजया तेसिं दो किरियाओ कज्जति तंजहा-आरंभिया मायापत्तिया तत्थण जेते संजयासंजया तेसिं तिण्णि किरिया

श्वास लेते हैं, वारम्वार आहार करते हैं. वारम्वार श्वासोश्वास लेते हैं. इस लिये अहो गौतम! ऐसा कहा मनुष्य सब सरिखे आहारवाले नहीं है, शेष कथन नेरीये जैसे कहना, जिस में इतना विशेष कि मनुष्य तीन प्रकार के कहे हैं, तद्यथा—सम्यक् दृष्टी, मिथ्यादृष्टी, व समिमिथ्यादृष्टी. इस में जो सम्यक् दृष्टी हैं वे तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ संयति, २ असंयति और ३ संयतासंयति, इस में जो संयति हैं वे दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा-सराग संयति छठे गुणस्थानसे दशवे गुणस्थान तकके और वीतराग संयति ऊपर के गुणस्थान के. इस में जो वीतराग संयति हैं वे तो अक्रिय हैं और जो सराग संयति हैं वे दो प्रकार के हैं तद्यथा—प्रमत्त संयति छठे गुण स्थान के और अप्रमत्त संयति [illegible]

तेउलेस्साणं भंते ! असुरकुमाराणं ताओचेव पुच्छा ? गोयमा ! जहेव ओहिया तहेव णवरं वेदणाए जहा जोइसिया ॥ पुढविआउवणस्सइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा जहा ओहिया, तहेव भाणियव्वा, णवरं मणुस्सा किरियाहिं, जेसंजया ते पमत्ताय अपमत्ताय भाणियव्वा, सरागा वीतरागा णत्थि ॥ वाणमंतरा तेउलेस्साए जहा असुरकुमारा, एवं जोइसिया वेमाणियावि, सेसं तंचेव ॥ एवं पम्हलेसावि भाणियव्वा, णवरं जेसिं अत्थि सुक्कलेस्सावि तहेव जेसिं अत्थि सव्वं तहेव जहा

अर्थ

कहना जिस में इतना विशेष कापुत लेशी नेरइया में जैसा औधिक का कहा तैसे ही कहना. अहो भगवन् ! तेजोलेश्या असुरकुमार की उक्त प्रकार की ही पृच्छा ? अहो गौतम ! जैसा औधिक का कहा तैसा ही कहना परन्तु इतना विशेष वेदना आश्रिय जैसा ज्योतिषी का कहा तैसा कहना अर्थात् सज्ञी ही कहना परन्तु असज्ञी नहीं कहना पृथ्वी, पानी, वनस्पति, पंचेंद्रिय तिर्यंच व मनुष्यका जैसा औधिक का कहा तैसा कहना, जिस में इतना विशेष मनुष्य का क्रिया के अधिकार में संयति के कथन प्रमत्त अप्रमत्त कहना परन्तु सरागी वीतरागी नहीं कहना, क्यों कि वीतरागी में तेजो लेश्या नहीं है. वाणव्यन्तर का तेजोलेश्या का जैसा असुर कुमार का कहा तैसा कहना. ऐसे ही ज्योतिषी का भी कहना वैमानिक का भी कहना, शेष तैसा ही जानना. ऐसे ही पद्मलेश्या का भी कहना जिस में तेजो

तेउलेस्साणं भंते ! असुरकुमाराणं ताओचेव पुच्छा ? गोयमा ! जहेव ओहिया तहेव णवरं वेदणाए जहा जोइसिया ॥ पुढविआउवणस्सइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा जहा ओहिया, तहेव भाणियव्वा, णवरं मणुस्सा किरियाहिं, जेसंजया ते पमत्ताय अपमत्ताय भाणियव्वा, सरागा वीतरागा णत्थि ॥ वाणमंतरा तेउलेस्साए जहा असुरकुमारा, एवं जोइसिया वेमाणियावि, सेसं तंचेव ॥ एवं पम्हलेसावि भाणियव्वा, णवरं जेसिं अत्थि सुक्कलेस्सावि तहेव जेसिं अत्थि सव्वं तहेव जहा

अर्थ

कहना जिस में इतना विशेष कापुत लेशी नेरइया में जैसा औधिक का कहा तैसे ही कहना. अहो भगवन् ! तेजोलेश्या असुरकुमार की उक्त प्रकार की ही पृच्छा ? अहो गौतम ! जैसा औधिक का कहा तैसा ही कहना परन्तु इतना विशेष वेदना आश्रिय जैसा ज्योतिषी का कहा तैसा कहना अर्थात् सन्नी ही कहना परन्तु असन्नी नहीं कहना पृथ्वी, पानी, वनस्पति, पंचेंद्रिय तिर्यंच व मनुष्यका जैसा औधिक का कहा तैसा कहना, जिस में इतना विशेष मनुष्य की क्रिया के अधिकार में संयति के कथन प्रमत्त अप्रमत्त कहना परन्तु सरागी वीतरागी नहीं कहना, क्यों कि वीतरागी में तेजो लेश्या नहीं है. वाणव्यन्तर की तेजोलेश्या का जैसा असुर कुमार का कहा तैसा कहना. ऐसे ही ज्योतिषी का भी कहना वैमानिक का भी कहना, शेष तैसा ही जानना. ऐसे ही पद्मलेश्या का भी कहना जिस में. तेजो

तेउलेस्साणं भंते ! असुरकुमाराणं ताओचेव पुच्छा ? गोयमा ! जहेव ओहिया तहेव णवरं वेदणाए जहा जोइसिया ॥ पुढविआउवणस्सइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा जहा ओहिया, तहेव भाणियव्वा, णवरं मणुस्सा किरियाहिं, जेसंजया ते पमत्ताय अपमत्ताय भाणियव्वा, सरागा वीतरागा णत्थि ॥ वाणमंतरा तेउलेस्साए जहा असुरकुमारा, एवं जोइसिया वेमाणियावि, सेसं तंचेव ॥ एवं पम्हलेसावि भाणियव्वा, णवरं जेसिं अत्थि, सुक्कलेस्सावि तहेव जेसिं अत्थि सव्वं तहेव जहा

अर्थ

कहना जिस में इतना विशेष कापुत लेशी नेरइया में जैसा औधिक का कहा तैसे ही कहना. अहो भगवन् ! तेजोलेश्या असुरकुमार की उक्त प्रकार की ही पृच्छा ? अहो गौतम ! जैसा औधिक का कहा तैसा ही कहना परन्तु इतना विशेष वेदना आश्रिय जैसा ज्योतिषी का कहा तैसा कहना अर्थात् सन्नी ही कहना परन्तु असन्नी नहीं कहना पृथ्वी, पानी, वनस्पति, पंचेंद्रिय तिर्यंच व मनुष्य का जैसा औधिक का कहा तैसा कहना, जिस में इतना विशेष मनुष्य की क्रिया के अधिकार में संयति के कथन प्रमत्त अप्रमत्त कहना परन्तु सरागी वीतरागी नहीं कहना, क्यों कि वीतरागी में तेजो लेश्या नहीं है. वाणव्यन्तर की तेजोलेश्या का जैसा असुर कुमार का कहा वैसा कहना. ऐसे ही ज्योतिषी का भी कहना वैमानिक का भी कहना, शेष तैसा ही जानना. ऐसे ही पद्मलेश्या का भी कहना जिस में तेजो

सूत्र

सरागदसणारिया दसविहा पण्णत्ता तंजहा (गाहा) निसग्गुवएसरुई; आणारुइ सुत्तबीयरुइचेव ॥ अभिगमंवित्थाररूई, किरिआ संखेवधम्मरूई ॥ १ ॥ भूअत्थे-णाहिगया, जीवा जीवाय पुण्णपावंच ॥ सहस्समइयासव संवरोय वेयइयेसणिसग्गो ॥ २ ॥ जोजिणदिट्ठभावे, चउव्विहंसद्दहइसयमेव ॥ एमेवणण्णहत्तिय, सणिसग्ग-रुइत्तिणायव्वो ॥ ३ ॥ एएचेवउभावे, उवदिट्ठे जो परेणसद्दहइ ॥ छउमत्थेण जिणणवा, उवएस रुइत्तिणायव्वो ॥ ४ ॥ जो हेउमयाणंतो, आणाएरोअए पवय-

अर्थ

भेद कहे हैं १ निसर्गरुचि २ उपदेशरुचि ३ आज्ञारुचि ४ सूत्ररुचि ५ बीजरुचि ६ अभिगमरुचि ७ विस्ताररुचि ८ क्रियारुचि ९ संक्षेपरुचि और १० धर्मरुचि भूतार्थत्वपना से अन्य किसी के उपदेश बिना जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष का स्वरूप, जाना जाता है और फीर अनुसरता है इसे निसर्गरुचि जानना ॥२॥ द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव, अथवा नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव इन चार भेद से जिन भगवंतने प्ररूपे हुए भावों को जो स्वय मेव श्रद्धता है और कहता है कि यह ही सत्य है सो निसर्गरुचि जानना. ॥३॥ छद्मस्थ अथवा वीतराग के उपदेश से उक्त जीवादि तत्वों का श्रद्धे उसे उपदेशरुचि कहना ॥ ४ ॥ ज्ञानावरणीयकर्म के उदय से जीवादि पदार्थों को जान

लेस्सा समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया असंखेज्जगुणा, न
कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥ ६ ॥ एतेसिणं भंते ! संमुच्छिम

अर्थ

संख्यातगुने, उस से तेजो लेश्या वाले संख्यातगुने, उस से कापोत लेश्या वा
लेश्या वाले, विशेषाधिक, उस से कृष्ण लेश्यावाले संख्यातगुने ॥ ५ ॥ अहो
तिर्यंच योनिक और तिर्यंचनी इन में कृष्ण लेश्या वाले यावत् शुक्ल लेश्या वा
है ? अहो गौतम ! जैसी पंचमा अल्पा बहुत्व कही तैसी छटी भी कहना ॥
तिर्यंच पंचेन्द्रिय और तिर्यंचनी इन में कृष्ण लेश्या वाले यावत शुक्ल लेश्या व
विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे शुक्ल लेश्या वाले गर्भज तिर्यंच पंचे
वाली तिर्यंचनी संख्यात गुनी, ३ उस से पद्म लेश्या वाले गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रि
पद्म लेश्या वाली तिर्यंचनी संख्यातगुनी, ५ उस से तेजो लेश्या वाले तिर्यंच

सूत्र

स्साओ संखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ; काउलेस्सा समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥ ९ ॥ एतेसिणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं तिरिक्ख जोणिणीणय कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया सुक्कलेस्सा, सुक्कलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, पम्हलेस्सा संखेज्जगुणा, पम्हलेस्साओ संखेज्जगुणाओ तेउलेस्सा संखेज्जगुणा तेउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, काउलेस्सा संखेज्जगुणा णीललेस्सा विसेसाहिया कण्हलेस्सा विसेसाहिया काउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ विसे-

अर्थ

तिर्यचनी विशेषाधिक १३ उस से कापोत लेश्यावाले समूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय असंख्यातगुने, १४ उस से नील लेश्यावाले समूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय विशेषाधिक, १५ उस से कृष्ण लेश्या वाले समूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय विशेषाधिक ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक और तिर्यंचनी कृष्ण लेश्या वाले शुक्ल लेश्या वाले इन में कौन किसी ज्यादा हैं? अहो गौतम! सब से थोडे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक शुक्ललेश्या वाले, २ शुक्ललेश्यावाली तिर्यचनी संख्यातगुनी, ३ पद्मलेश्यावाले तिर्यंच संख्यातगुने, ४ पद्मलेश्या वाली तिर्यचनी संख्यातगुनी, ५ तेजो लेश्यावाले तिर्यंच संख्यातगुने, ६ तेजोलेश्यावाली तिर्यचनी संख्यात-

...णुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्साओ वाणमंतरीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ वि [illegible] देवीओ [illegible] जोइसिय देवा [illegible] [illegible] तेउलेस्साओ जोइसिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ १ ॥ एतेसिणं भंते ! जीवाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पड्डियावा महिड्डियावा ? गोयमा ! कण्हलेसेहिंतो नीललेस्सा महिड्डिया, णीललेस्सेहिंतो काउलेस्सा महिड्डिया, एवं काउलेस्सेहिंतो तेउलेस्सा महिड्डिया, तेउलेस्सेहिंतो पम्हलेस्सा महिड्डिया, पम्हलेस्सेहिंतो सुक्कलेस्सा

कापुत लेशी वाणव्यन्तर देव [illegible], १६ नील लेशी [illegible] व्यन्तर देव विशेषाधिक, १७ कृष्णलेशी वाण[illegible] विशेषाधिक, [illegible] कापुत लेश्या वाली व्यन्तर की देवी संख्यातगुनी, १९ उन से नील लेशी व्यन्तर देवी [illegible] २०, [illegible] कृष्ण लेशी व्यन्तरेवी विशेषाधिक, २१ उन से तेजो लेशी ज्योतिषी दे[illegible] [illegible], और २३ उन से तेजो लेश्या वाली ज्योतिषी की देवी संख्यातगुनी, ॥ १ ॥ अब छ [illegible] अल्पाबहुत्व ऋद्धि आश्रित कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! इन जीवों में कृष्ण लेश्या वाले में यावत् शुक्ल लेश्या वाले में कौन किससे अल्पऋद्धि वाले व ज्यादा ऋद्धि वाले हैं ? अहो गौतम ! कृष्ण लेशी वाले से नील लेश्या वाला महाऋद्धिक है, नील लेश्या वाले से कापुत लेशी [illegible]

सूत्र

कयरे २ हिंतो अप्पाया ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, तेउलेस्सा संखेज्जगुणा ॥ २ ॥ एतेसिणं

अर्थ

देवता की अल्पा बहुत्व कहते हैं अहो भगवन् ! देवता में कृष्णलेश्या वाले यावत् शुक्ललेश्या वाले में कौन २ कमी ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! सब में थोडे देवता शुक्ल लेश्यावाले हैं क्यों कि छठे देवलोक के ऊपर के देवों में ही पाती है, २ उन से पद्मलेश्या वाले देवता असंख्यातगुने क्यों कि सनत्कुमार महेन्द्र और ब्रह्म देवलोक में पाती है ३ उन से कापोत लेश्यावाले देवता असंख्यातगुने, क्यों कि भवनपति वाणव्यन्तर देव में यह पाती है ४ उन से नील लेश्या वाले देव विशेषाधिक, भवनपति वाणव्यन्तर देव में ही अशुभ परिणाम वाले अधिक हैं, ५ उन से कृष्ण लेशी देवता विशेषाधिक उक्त, और उन से तेजो लेशी देव संख्यातगुने हैं. क्यों कि भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी और सौधर्म ईशान देवलोक में पाती है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! देवी में कृष्ण लेश्यावाली यावत् तेजो लेश्यावाली में कौन २ कमी ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडी देवी कापोत लेश्यावाली है क्यों कि भवनपति व्यन्तर की देवी में ही कापोत लेश्या पाती है, २ उस से नील लेश्या वाली विशेषाधिक है क्यों कि अशुभ परिणाम वाली विशेष है,

सूत्र

एएसिणं भंते ! एगिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं कण्हलेस्साण जाव तेउलेस्साणय कयरे २ [illegible] अप्पिड्ढियावा महिड्ढियावा ? गोयमा ! कण्हलेस्सेहिंतो एगिंदिय तिरि[illegible] [illegible] नीललेस्सा महिड्ढिया, णीललेस्से हिंतो काऊलेस्सा महिड्ढिया, काऊलेस्से[illegible] तेऊलेस्सा महिड्ढिया ॥ सव्व अप्पिड्ढिया एगिंदिया तिरिक्खजोणिया कण्हलेस्सा,सव्वमहिड्ढिया एगिंदिया तेऊलेस्सा॥एवं पुढविकाइयाणवि॥ एव एतेण अभिलावेणं जहेव लेस्साओ भावियाओ तहेव णेयव्वं, जाव चउरिंदिया ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं, तिरिक्ख जोणिणीणं समुच्छिमाणं गब्भवक्कंतियाणय

अर्थ

प्रकार समुच्चय जीव का कहा उस ही प्रकार तिर्यंच का कहना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनि कृष्ण लेशी यावत् तेजो लेशी में कौन २ कमी ज्यादा ऋद्धि वाले हैं ? अहो गौतम ! कृष्ण लेशी एकेन्द्रिय से नील लेशी एकेन्द्रिय महाऋद्धिक हैं, नील लेशी से कापुत लेशी महाऋद्धिक हैं और कापुत लेशी से तेजो लेशी महाऋद्धिक हैं, सब अल्पऋद्धि वाले कृष्ण लेशी एकेन्द्रिय और सब से महाऋद्धिक तेजो लेशी एकेन्द्रिय, इस प्रकार ही पांच, स्थावर तीन विकलेन्द्रिय,तिर्यंच पंचेन्द्रिय, तिर्यंचनी, संमूर्छिम

अणेरइए णेरइएहिंतो उववट्टंति णो णेरइए णेरइएहिंतो उव्वट्टंति॥एवं जाव वेमाणिए, णवरं जाइसिय वेमाणिएसु चयंति अभिलावो कायव्वो ॥ २ ॥ से णूणं भंते ! कण्हलेस्से णेरइए कण्हलेस्सेसु णेरइएसु [illegible] कण्हलेस्सेसु [illegible] जल्लेसे उववज्जंति तल्लेसे उववट्टंति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से णेरइए कण्हलेस्सेसु णेरइएसु उववज्जंति कण्हलेस्सेसु उववट्टंति, जल्लेस्से उववज्जंति तल्लेस्से उववट्टंति, ॥ एवं णीललेस्सेवि एवं काउलेस्सेवि, एवं असुरकुमाराणवि जाव थणियकुमारा, णवरं तेउलेस्सा

अर्थ

कि अनरयिक नरक से निकलते हैं ? अहो गौतम ! जो नेरिया नहीं है वही नरक से निकलता है परंतु जो नेरिया है वह नरक से नहीं निकलता है अर्थात नरकायु पूरा भोगवकर क्षय किया है वही नरक से [illegible] मनुष्य तिर्यंच में आकर उत्पन्न होता है ॥ इस प्रकार ही यावत् वैमानिक पर्यंत [illegible] ज्योतिषी और वैमानिक का चवना कहना, क्योंकि वे ऊपर लोक से आयुष्य [illegible] उत्पन्न होते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेशिक नेरिये कृष्ण [illegible] नेरिये में उत्पन्न होता है, वैसे ही [illegible] कृष्ण लेश्या से उत्पन्न हुआ नेरिया पुनः कृष्ण लेश्या में [illegible] मरता है क्या ? हां गौतम ! कृष्ण लेशी नेरिये कृष्ण लेशी नेरिये [illegible]

सूत्र

लेस्सा, जोइसिणीओ देवीओ तेउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ ॥ ८ ॥ एतेसिणं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं तेउलेस्साणं पम्हलेस्साणं सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा४? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणिया सुक्कलेस्सा पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्सा देवा असंखेज्जगुणा॥९॥एतेसिणं भंते! वेमाणियाणं देवाणं देवीणय तेउलेस्साण पम्हलेस्साणं सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणियादेवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ देवीओ

अर्थ

ज्योतिषी की देवियों तेजो लेश्या वाली संख्यात गुनी [illegible] वत्तिस गुनी होती है ॥८॥ अब वैमानिक की अल्प बहुत्व कहते हैं अहो भगवन् ! वैमानिक देवता में तेजो लेश्या वाले यावत् शुक्ल लेश्या वाले में कौन २ कमी ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे वैमानिक देवता शुक्ल लेश्या वाले, उन से पद्म लेश्या असंख्यातगुने, उन से तेजो लेश्या असंख्यातगुने ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! इन वैमानिक देवता देवी में तेजो लेश्या वाले पद्म लेश्या वाले शुक्ल लेश्या वाले में कौन कमी ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे वैमानिक देवता शुक्लेश्या, पद्म लेश्या असंख्यातगुने, तेजो लेशी देव असंख्यातगुने, तेजो लेश्या वाली वैमानिकदेवी असंख्यातगुनी॥ अब चारों प्रकार के देव की लेश्या की अपेक्षा समुच्चय अल्पाबहुत्व कहते हैं. अहो भगवन् ! भवनपतिदेव, वाणव्यन्तरदेव, ज्योतिषीदेव, और वैमानिकदेव इन में कृष्णलेश्या वाले

खेत्तं पासति णो दूरं खेत्तं जाणति णो दूरंखेत्तं पासति, इत्तिरिय
इत्तिरिय मेव खेत्तं पासइ ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति कण्ह
नंचेव जाव इत्तरिय मेवखेत्त पासति? गोयमा! से जहा णामए केइपुरिसे
भूमिभागंसिठिच्चा सव्वओ समंता समभिलोएज्जा तएणं से पुरिसे
पुरिमं पडिहाए सव्वओ समंता समभिलोएमाणे २ णो बहुयं खेत्त

हुवा कितना जानता है कितना देखता है ? अहो गौतम ! बहुत क्षेत्र जानता नहीं
भी नहीं है. वैसे ही बहुत दूर क्षेत्र जानता नहीं है बहुत दूर देखता नहीं है. थोडा
क्षेत्र देखता है. यहां विशुद्ध लेश्या की अपेक्षा से अविशुद्ध वाला थोडा क्षेत्र जानता
लेश्यावाले की अपेक्षा विशुद्ध लेश्यावाला किंचित अधिक क्षेत्र देखता है परंतु ज्यादा दूर
। सातवी नरक वाले जघन्य आधा कोस उत्कृष्ट एक कोस, छठी वाले जघन्य एक
कोस. पांचवी वाले जघन्य डेढ कोस उत्कृष्ट दो कोस, चौथी वाले जघन्य दो

सूत्र

जाव इतरियमेव खेत्तं पासइ सेएणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति कण्हलेसेणं णेरइए जाव इत्तरिय मेव खेत्तं पासइ ॥ णीललेस्सेणं भंते ! णेरइए कण्हलेस णेरइयं पणिहाय ओहिणा सव्वतो समंता समभिलोएमाणे २ केवतियं खेत्तं जाणइ केवतियं खेत्तं पासइ? गोयमा ! बहुतरागं खेत्तं जाणति बहुतरागं खेत्तं पासइ, दुरतरागं खेत्तं जाणति, दुरतरागं खेत्त पासति वितिमिरतरागं खेत्तं जाणति वितिमितरागं खेत्तं पासति, विसुद्धतरागं खेत्तं जाणइ विसुद्धतरागं खेत्तं पासति। सेकेणट्ठेणं भंते ! एववुच्चइ नील लेसेणं नेरइए कण्हलेसं नेरइयं पणिहाय जाव विसुद्ध तरागं खेत्तं पासइ ? गोयमा ! से जहा णामए केइ पुरिसे बहुसमरमणिज्जाओ

अर्थ

भगवन् ! किस कारन कृष्णलेश्या वाले नेरीये थोडा क्षेत्र जानते देखते हैं? अहो गौतम ! यथा दृष्टान्त कोइपुरुष बहुत समभूमि के भाग में खडा रहकर अपने निर्मल प्रधान नेत्रोंकर चारोंतरफ अवलोकन करता वह पुरुष नीची भूमिका में खडा रह कर देखे उन दोनों पुरुषों में से जो समभूमि भाग में खडा रहा उस पुरुष की अपेक्षा नीची भूमि में खडा रहा वह पुरुष निर्मल नेत्र होने पर भी चारों तरफ देखता हुवा ज्यादा क्षेत्र नहीं देख सकता है तथा दो पुरुषों की आंखों में से एक की आंखों निर्मल है और एक की आंखों धूंधली है. इन दोनों में से निर्मल आंखोंवाले से धूंधली आंखोंवाला थोडा क्षेत्र देख सकता है ऐसा ही अवधिज्ञान में फरक जानना पांचवी छठी और सातवी नरक में लेश्या तो एक कृष्ण ही है परंतु कमी ज्यादा क्षेत्र देखते है. अहो भगवन् ! नील लेश्यावाला नेरीया कृष्ण लेश्यावाले नेरीये की

सूत्र

एतेसिणं भंते ! एगिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं कण्हलेस्साण जाव तेउलेस्साणय कयरं २ हिंतो अप्पिड्डियावा महिड्डियावा ? गोयमा ! कण्हलेस्सेहिंतो एगिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो णीललेस्सा महिड्डिया, णीललेस्से हिंतो काऊलेस्सा महिड्डिया, काऊलेस्सेहिंतो तेऊलेस्सा महिड्डिया ॥ सव्व अप्पिड्डिया एगिंदिया तिरिक्खजोणिया कण्हलेस्सा, सव्वमहिड्डिया एगिंदिया तेऊलेस्सा॥एवं पुढविकाइयाणवि॥ एवं एतेणं अभिलावेणं जहेव लेस्साओ भाणियव्वाओ तहेव णेयव्वं, जाव चउरिंदिया ॥ पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं, तिरिक्ख जोणिणीण समुच्छिमाणं गब्भवक्कंतियाणय

अर्थ

प्रकार समुच्चय जीव का कहा उस ही प्रकार तिर्यंच का कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनि कृष्ण लेशी यावत् तेजो लेशी में कौन २ किसी ज्यादा ऋद्धि वाले हैं ? अहो गौतम ! कृष्ण लेशी एकेन्द्रिय से नील लेशी एकेन्द्रिय महा ऋद्धिक हैं, नील लेशी से कापुत लेशी महाऋद्धिक हैं और कापुत लेशी से तेजो लेशी महाऋद्धिक हैं, सब अल्पऋद्धि वाले कृष्ण लेशी एकेन्द्रिय और सब में महाऋद्धिक तेजो लेश्या एकेन्द्रिय, इस प्रकार ही पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय, तिर्यंचनी, संमूर्छिम गर्भज सब का कहना विशेषमें जितने जितनी लेश्या हो उसकी अल्पाबहुत्व करनी. प्रथम लेश्यावाला अल्प

एवं गोयमा ! तेउलेसे पुढविकाइए तेउलेस्सेसु पुढवि काइएसु उववज्जंति, सिय कण्हलेस्सेसु उव्वट्टति, सिय नीललेस्सेसु उव्वट्टंति सिय काउलेस्सेसु उव्वट्टंति णो तेउलेस्सेसु उव्वट्टंति. ॥ एवं आउकाइय वणस्सईकाइयावि, तेउवाउवि, एवं चेव, णवरं एएसिं तेउलेस्सा णत्थि; बि-तिय- चउरिंदिया एवं चेव, तिसुलेस्सासु पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया मणुस्सा जहा पुढविकाइया, आदिल्लियासु तिसुलेसासु भाणिया, नहा छप्पि लेस्सासु भाणियव्व ।, णवरं छप्पिलेस्साओ उच्चारेयव्वाओ, वाणमंतरा

कापोत लेश्यी होकर भी निकलती है अर्थात् कदाचित् तो जिस लेश्यापने उत्पन्न होती है उस ही लेश्यापने निकलती है और कदाचित् अन्य नील कापोत लेश्या होकर भी निकलती है. अहो भगवन् ! निश्चय पृथ्वीकाया तेजो लेश्या में उत्पन्न हो पुनः तेजो लेश्यापने ही निकलते हैं क्या ? अहो गौतम ! तेजोलेश्या पृथ्वीकाया तेजो लेश्यापने उत्पन्न होवे कदाचित् कृष्ण लेश्यापने निकलती है कदाचित् नील लेश्यापने निकलती है एवं कापोत लेश्यापने भी निकलती है परंतु तेजो लेश्यापने पीछी नहीं निकलती है क्यों कि पृथ्वीकाया की अपर्याप्त अवस्था में ही थोड़े काल ही तेजोलेश्या पाती है. इस प्रकार ही अप्काया वनस्पतिकाया का कहना तैसे ही तेउकाया वायुकाया का भी कहना परंतु इतना विशेष कि यहां तेजोलेश्या नहीं कहना. ऐसे ही बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय के भी तीनों लेश्या कहना. तिर्यंच

सूत्र

सेणूणं भंते! कण्हलेस्से जाव तेउलेस्से असुरकुमारे कण्हलेस्से जाव तेउलेस्सेसु असुर कुमारेसु उववज्जंति, ? एवं जहेव णेरइए तहा असुरकुमारेवि जाव थणिय कुमारेवि ॥ सेणूणं भंते! कण्हलेस्से जाव तेउलेस्से पुढविकाइए कण्हलेसेसु जाव तेउलेस्सेसु पुढवि काइएसु उववज्जंति, एवं पुच्छा जहा असुरकुमाराणं ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव तेउलेस्से पुढविकाइए कण्हलेसेसु जाव तेउलेस्सेसु पुढवीकाइएसु उववज्जंति, सिय कण्हलेस्से उववट्टति सिय णीललेस्से उववट्टंति, सिय काउलेस्से उववट्टति, सिय जल्लेसे उववज्जति तल्लेस्सेसु उववट्टति तेउलेस्से उववज्जंति नो चेवणं तेउलेस्से उववट्टंति ।

अर्थ

कृष्णलेशी नीललेशी कापोत लेशी नारकी जिस लेश्यापने उत्पन्न होते हैं उस ही लेश्यापने निकलते हैं. अहो भगवन् ! निश्चय कृष्ण लेशी यावत् तेजोलेशी असुर कुमार कृष्ण लेश्यापने यावत् तेजोलेश्यावाले असुर कुमारपने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा नेरियों का कहा तैसा ही असुर कुमार का भी कहना. यावत् स्थनितकुमारतक इसही प्रकार कहना. अहो भगवन् ! निश्चय कृष्णलेशी यावत् तेजोलेशी पृथ्वीकाया कृष्णलेशी यावत् तेजोलेशी पृथ्वीकायापने उत्पन्न होते हैं. इत्यादि प्रश्न ! जैसा असुर कुमार का कहा तैसाही कहना अहो गौतम ! कृष्ण लेशी यावत् तेजोलेशी पृथ्वीकायापने उत्पन्न होते हैं. उत्पन्न होकर स्यात् कृष्ण लेश्यापने निकलते हैं स्यात् नील लेश्यापने निकलते हैं स्यात् कापोत लेश्यापने निकलते हैं

भुज्जो २ परिणमति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति-किण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प-
ताए रूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति, एवं एएणं अभिलावेणं नीललेस्साणं काउलेस्सं पप्प,
काउलेस्सा तेउलेस्सं पप्प, तेउलेस्सा पम्हलेस्सं पप्प, पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सं पप्प जाव भुज्जो २
परिणमति ॥ १ ॥ सेणूणं भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं काउलेस्सं तेउलेस्सं पम्ह-
लेस्सं सुक्कलेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए
भुज्जो २ परिणमति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प जाव सुक्कलेस्सं

है, कर्कशादि स्पर्शपने भी परिणमता है, तैसे ही मनुष्य और तिर्यंच के लेश्या के परिणाम पलटते हैं. इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्या के रूपपने वर्णपने यावत् स्पर्शपने वारंवार परिणमते हैं यों इस ही आलापक के दृष्टान्त कर नील लेश्या के द्रव्य कापोत लेश्यापने परि-णमते हैं, कापोत लेश्या के द्रव्य तेजो लेश्यापने परिणमते हैं, तेजो लेश्या के द्रव्य पद्म लेश्यापने परि-णमते हैं, पद्म लेश्या के द्रव्य शुक्ल लेश्यापने परिणमते हैं. यह एकेक लेश्या के परिणमने का कहा ॥ २ ॥ अब सब लेश्या परिणमने का कहते हैं अहो भगवन् ! निश्चय से कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्या-कापोत लेश्या तेजो लेश्या पद्म लेश्या और शुक्ल लेश्या रूप प्राप्त द्रव्य उस रूपपने उस वर्णपने उस गंधपने उस रसपने उस स्पर्शपने वारंवार परिणमते हैं क्या ? हां गौतम ! कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्या को प्राप्त हो

कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति ॥ से

यावत् शुक्लेश्या को प्राप्त होने द्रव्य उस रूपपने उस वर्णपने उस गंधपने उस रसपने उस स्पर्श पने

पणमते हैं. किस कारन अहो भगवन्! एसा कहा कृष्ण लेश्या के द्रव्य नीललेश्या यावत् शु

हो यावत् वारम्वार परिणमते हैं ? अहो गौतम ! जिस प्रकार वहूर्य मणि (कांच) के मनें

का डोराडालने से वह कृष्ण वर्ण देखाता है, हरारंगका डोराडालने से वह हरा देखता है

डोराडालने से लाल देखाता है, पीलेरंग के डोरेसे पीला देखाता है और श्वेतरंग के डोरे से

है, जिस रंगकी वस्तु में उसे स्थापन करते हैं उस ही रंगमय वह बन जाता है, उस वस्तु

वह अपने रंग में आजाता है जैसाही वैसा बन जाता है, इस ही प्रकार अहो गौतम ! ए

कृष्ण लेश्या के नील लेश्या के यावत् शुक्ल लेश्या के प्राप्त द्रव्य उस रूपपने वर्ण गंध

सूत्र

जोणिए कण्हलेसेसु जाव सुक्कलेसेसु पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जइ पुच्छा ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से पंचिंदियतिरिक्खजोणिए कण्हलेसेसु जाव सुक्कलेसेसु पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जंति सिय कण्हलेस्से उववट्टंति जाव सिय सुक्कलेस्से उववट्टंति सिय जल्लेस्से उववज्जंति तल्लेस्से उववट्टंति॥एवं मणुस्सेवि ॥ वाणमंतरे जहा असुरकुमार, जोइसिय वेमाणिएवि एवं चेव णवरं जस्स जल्लेस्सा । दोण्हवि चयंति भाणियव्वं ॥ ४ ॥ कण्हलेस्सेणं भंते ! णेरइए कण्हलेस्सं णेरइयं पणिहाय ओहिणा सव्वओ समंता समभिलोयमाणे २ केवतियं

अर्थ

शुक्ल लेशी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिकपने उत्पन्न होवे इत्यादि पृच्छा ? अहो गौतम ! कृष्ण लेशी यावत् शुक्ल लेशी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक कृष्ण लेशी यावत् शुक्ल लेशी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिकपने उत्पन्न होकर स्यात् कृष्ण लेशी हो निकले स्यात् नील लेशी हो निकले यावत् स्यात् शुक्ल लेशी हो निकले, स्यात् जिस लेश्या में उत्पन्न होवे उस ही लेश्यापने निकले. ऐसे ही मनुष्य का भी कहना. वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक का जैसा असुरकुमार का कहा वैसा ही कहना. परंतु इतना विशेष जिसमें जो लेश्या हो वह कहना और चवने का आलापक कहना ॥ ४ ॥ अब अवधि ज्ञान की लेश्या (विषय) कहते हैं-अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या वाला नेरीया कृष्ण लेश्या वाले नेरीये को प्रमाण अवधिज्ञानकर सर्व चारों तरफ सम्यक् प्रकार देखता

सूत्र

नीललेस्सा किण्हलेस्सं जाव सुक्कलेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमंति ? हंता गोयमा ! एवं चेव ॥ एवं काउलेस्सा, किण्हलेस्सं नील तेउ पम्ह सुक्कलेस्सं एवं तेउलेस्सा किण्हलेस्सा नील काउ पम्ह सुक्कलेस्सं, एवं पम्हलेस्सा कण्ह नील काउ तेउ-पम्ह सुक्कलेस्सं पप्प जाव भुज्जो २ परिणमइ ? हंता गोयमा ! तंचेव ॥ सेणूणं भंते ! सुक्कलेस्सा किण्ह नील काउ तेउ पम्हलेस्स पप्प जाव भुज्जो २ परिणमंति ? हंता गोयमा ! तचेव ॥ ३ ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! वण्णेणं केरिसिया पण्णत्ता ?

अर्थ

बारम्बार परिणमते हैं ॥ अहो भगवन् ! नीललेश्या के कृष्ण लेश्या पने यावत् कापूत लेश्या पने यावत् शुक्ललेश्या प्राप्त द्रव्य पने उस रूपपने यावत् स्पर्श पने बारम्बार परिणमते हैं क्या ? अहो गौतम ! परिणमते हैं. उस प्रकार ही परिणमते हैं ॥ ऐसे ही कापूत लेश्या के भी कृष्ण नीललेश्यापने तेजोलेश्यापने यावत् शुक्ललेश्या पने परिणम ते हैं, ऐसे ही तेजो लेश्या भी कृष्ण, नील, कापूत, पद्म, शुक्लपने परिणमे, ऐसे ही पद्म लेश्या भी कृष्ण नील कापूत तेजो शुक्ल पने परिणमे अहो भगवन् ! शुक्ल लेश्या के द्रव्य कृष्ण लेश्यापने, नीललेश्यापने, कापोतलेश्यापने, तेजो लेश्यापने, पद्म लेश्यापने बारम्बार परिणमते हैं क्या ? हां गौतम ! उस प्रकार ही कहना. ॥ ३ ॥ अब दूसरा वर्ण द्वार कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या का वर्ण किस प्रकार का है ? अहो गौतम ! जैसा प्रानीका भरामय, अंजन, खंजन,

सूत्र

जो किरिया भावरुइसो, खलु किरिया, रुई नामा ॥ १० ॥ अणभिग्गहिय कुदिट्ठी संखेवरुइत्ति होइनायव्वो ॥ अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओयसेसेसु ॥ ११ ॥ जो अत्थिकायधम्मं, सुयधम्मय खलु चारित्त धम्मंच ॥ सद्दहइ जिणाभिहियं सोधम्मरुइत्ति नायव्वो ॥ १२ ॥ परमत्थ संथवोवा, सुदिट्ठपरमत्थ सेवणावावि, वावण्ण कुदसण वज्जणाय, सम्मत्त सद्दहणा॥१३॥निसंकिय निकंखिय,निव्वितिगिच्छा

अर्थ

गुप्ति वगैरह क्रियाओं आराधने में जिस की रुचि होवे सो क्रिया रुचि जानना॥१०॥ जो स्वमति से तत्त्वार्थ को भी यथातथ्य समझ नहीं सके और कुदृष्टि-अन्यमत भी ग्रहण करे नहीं उसे संक्षेप रुचि जानना॥११॥ जो पंचास्तिकाया का धर्म तथा श्रुत धर्म चारित्र धर्म व जिन भाषित भावोंको श्रद्धे सो धर्म रुचि ॥१२॥ १ जो परमार्थ-तत्त्वार्थ के ज्ञान होते हैं उनका समकिती जीव परिचय करे, २ जिनोंने परमार्थ पंथ अच्छी तरह देखा है ऐसे तीर्थंकर तथा साधु महा पुरुषों की सेवा करे, ३ सम्यक्त्व धर्म अंगीकार कर वमन किया होवे ऐसे पुरुषों की संगति वर्जे. और ४ कुदर्शनी मिथ्यात्वीयों की भी संगति वर्जे. इस तरह समकिती जीव की श्रद्धा जानना ॥ १३ ॥ १ श्री जिनेश्वर भगवंत भाषित ज्ञान के रहस्य में किसी प्रकारकी शंका नहीं लावे, २ अन्य का मिथ्या पाखंड देखकर उन की वांछा करे नहीं. ३ तप संयमादिक के फल प्राप्ति में संदेह लावे नहीं. ४ अन्य मतावलम्बियों की रिद्धादि चमत्कार देखकर मूढ बने नहीं, ५ उपाधान युक्त—विवेक पूर्वक धर्म करनी करे, ६ धर्म से पतित परिणाम वाले के परिणाम

चासेतिवा, चासपिच्छेतिवा, सुएतिवा, सुयपीच्छेतिवा, सामातिवा, वणराईतिवा, उच्चंतगतिवा, पारेवयगीवातिवा, मोरगीवातिवा, हलहरवसणेतिवा, अयसिकुसुमेतिवा, बाणकुसुमेतिवा, अञ्जनकेसिया कुसुमेतिवा, णीलुप्पलेतिवा, णीलासोएतिवा णीलकणवीरएतिवा, णीलबंधुजीवए भवेतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो जाव अमणामतरियाचेव वण्णेणं पण्णत्ता ॥ काउलेस्साणं भंते ! केरिसया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! सेजहा णामए खइरेतिवा, खइरसारएतिवा, धइरएतिवा, कइरसारएतिवा, धमाससारएतिवा तंबेतिवा तंबकरोडेतिवा, तंबच्छिवा

भरावी पुष्प, बाणवृक्ष के फूल, अंजन केशीकावृक्ष के फूल, नीलोत्पल कमल, नीलाशोक, नीली कणेर, नीलाबन्धु जीव, इस प्रकार का वर्ण है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं. इस से भी अधिक अनिष्टकारी यावत् अमणाप वर्ण कहा है अहो भगवन् ! कापोत लेश्या का किस प्रकार का वर्ण कहा है ? अहो गौतम ! यथादृष्टान्त-१ खैर, खैरसार, कैर, कैरसार, धूंसासार [बैंगनीरंग का रेशमी वस्त्र] तांबा, तांबे का बरतन, बैंगन के फूल, कोकिला का नेत्र, जवासा के फूल, बकुल के फूल. इस प्रकार वर्ण है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं. कापोत लेश्या का वर्ण इस से भी अधिक अनिष्ट यावत्

तओ सीतलुक्खातो, तओ निद्धउण्हातो ॥ तओ दुग्गइगामियातो, तओ सुगइगामियातो ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! कतिविहे परिणामे परिणमति ? गोयमा ! तिविहंवा, नवविहंवा, सत्तावीसतिविहंवा, एक्कासीतिविहंवा, बेयातालीसातिविहंवा बहुंवा बहुविहंवा परिणामं परिणमति ॥ एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ २ ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! कतिपदेसिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंतपदेसिया पण्णत्ता ॥ एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ ७ ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! कतिपदेसोगाढा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्ज पएसोगाढा

करने से ९ होते हैं. जघन्य का जघन्य, जघन्य का मध्यम, जघन्य का उत्कृष्ट. ऐसे ही मध्यम के तीन भेद, ऐसे ही उत्कृष्ट के तीन भेद. यों ९ भेद हुवे, ऐसे ही नव को तीनगुने करने से सत्तावीस भेद होते हैं. सत्तावीस को तीनगुने करने से एक्यासी होते हैं. और एक्यासी को तीनगुने करने से दो सो त्रियालीस भेद होते हैं. इस ही प्रकार बहुत तरह के परिणाम कहे हैं. जैसे कृष्ण लेश्या के परिणाम तीन प्रकार के कहे उस ही प्रकार नील के कापोत के तेजो के पद्म के यावत् शुक्ल लेश्या के परिणाम जानना ॥ ६ ॥ प्रदेश द्वार-अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या कितने प्रदेशवाली कही है ? अहो गौतम ! अनंत प्रदेशवाली कही है कृष्ण लेश्या का अनंत प्रदेशिक स्कन्ध होता है. ऐसे ही यावत् शुक्ल लेश्या का भी अनंत प्रदेशिक स्कन्ध होता है ॥ ७ ॥ अवगाह द्वार-अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या

सूत्र

जहण्णगा णीललेस्सा पदेसट्टयाए असंखेज्जगुणा, एवं जाव सुक्कलेस्सा ठाणा ॥ ११ ॥ एतेसिणं भंते ! कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ठाणाणंय उक्कोसगाणं दव्वट्टयाए पदेसट्टयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा उक्कोसगा काउलेस्सा ठाणा दव्वट्टयाए, उक्कोसगा णीललेस्सा ठाणा दव्वट्टयाए असंखेज्जगुणा, एवं जहेव जहण्णगा तहेव उक्कोसगावि णवर उक्कोसत्ति अभिलावो ॥ १२ ॥ एतेसिणं भंते ! कण्हलेस्सा ठाणाणं जाव सुक्कलेस्सा ठाणाणंय जहण्णउक्कोसगाणं दव्वट्टयाए पदेसट्टयाए

अर्थ

स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुन, १० जघन्य तेजो लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ११ जघन्य पद्म लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने और १२ जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने॥११॥ अहो भगवन् ! इन कृष्ण लेश्या के व शुक्ल लेश्या के उत्कृष्ट स्थान द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ, द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ में कौन कमी ज्यादा तुल्य विशेष है ? अहो गौतम ! सब से थोडे कापोत लेश्या के उत्कृष्ट स्थान द्रव्यार्थ, उत्कृष्ट नील लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, यों जिस प्रकार जघन्य की अल्पाबहुत्व कही वैसे ही उत्कृष्ट की भी कहना विशेष इतना ही की सर्व स्थान उत्कृष्ट आलापक कहना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या के [illegible] ए द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ कौन २ से थोडे

सूत्र

पुण्णियानिवा, मिरिएतिवा, मिरीय चुण्णियातिवा, सिंगबेरेतिवा, सिंगबेरचुण्णियातिवा, भवेतारूवे ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, णीललेस्साणं एत्तो अणिट्ठ तरियाचेव जाव अमणाम तरियाचेव आसाएणं पण्णत्ता ॥ काउलेस्साए पुच्छा ? गोयमा ! से जहा णामए अंबाणवा, अबाडगाणवा, माउलिंगाणवा, बिल्लाणवा कविट्ठाणवा, भट्ठाणवा, फणसाणवा, दाडिमाणवा पारेवताणवा, अक्खोडयाणवा बोराणवा, पाराणवा, तिंदुयाणवा अपक्काणं अपरियागाणं वण्णेणं अणुववेताणं, गंधेणं अणुववेताणं, फासेणं अणुववेताणं, भवेतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे जाव एत्तो अमणामतरियाचेव काउलेस्सा आसाएणं पण्णत्ता ॥ तेउलेस्साए पुच्छा ? गोयमा ! से

अर्थ

यह अर्थ योग्य नहीं है इनसे भी अधिक अनिष्ट यावत् अमनोज्ञ रस कहा है॥ कापोत लेश्या के रस की पृच्छा ! अहो गौतम ! यथा दृष्टान्त कच्चाआम्र, कच्चाअम्बाडा, कच्चाबिजोरा, कच्चाबीलफल, कच्चाकवीट, कच्चा द्राक्ष, कच्चा फणस, कच्चा दाडिम, पारेवा फल, कच्चा अखोट फल, कच्चा बोर, कच्चा पीलु, कच्चा तिंदुक, यह सब अपक्क जिन के रस नहीं परिणामा हो वर्ण कर विशिष्ट, गंध कर विशिष्ट, स्पर्श कर विशिष्ट इस प्रकार रस है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है इस से भी अधिक अनिष्ट यावत् अमनोज्ञ कापोत लेश्या का रस कहा है॥ तेजो लेश्या के रस की पृच्छा ? अहो गौतम ! यथा दृष्टान्त पके

सूत्र

पदेसट्टयाए, जहण्णगा णीललेसठाणा पदेसट्टयाए असंखेज्जगुणा, एवं जेहेव दव्वट्ठयाए तहेव पदेसट्टयाएवि भाणियव्वं, णवरं पदेसट्टयाएत्ति अभिलावो विसेसो ॥ दव्वट्ठपदेसट्टयाए-सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेसट्ठाणा, दव्वट्ठयाए जहण्णगा णीललेसट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एव कण्ह तेऊ पम्ह जहण्णगा सुक्कलेसठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णएहिंतो सुक्कलेसाठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए हिंतो उक्कोसगा काउलेस ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसा नीललेस

अर्थ

ख्यातगुने. प्रदेशार्थ-पन से थोडे जघन्य कापोत लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ, २ जघन्य नील लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ३ जघन्य कृष्ण लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ४ जघन्य तेजो लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ५ जघन्य पद्म लेश्या के स्थाने प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ६ जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ से, उत्कृष्ट कापोत लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट नील लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट कृष्ण लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट तेजो लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ११ उत्कृष्ट पद्म लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, १२ उत्कृष्ट शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असं-

...पुण्णियातिवा, मिरिएतिवा, मिरीय चुण्णियाति, सिंगबेरेतिवा, सिंगबेरचुण्णियातिवा, भवेतारूवे ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, णीललेस्साणं एत्तो अणिट्ठ तरियाचेव जाव अमणाम तरियाचेव आसाएणं पण्णत्ता ॥ काउलेस्साए पुच्छा ? गोयमा ! से जहा णामए अंबाणवा, अंबाडगाणवा, माउलिंगाणवा, बील्लाणवा कविट्ठाणवा, भट्ठाणवा, फणसाणवा, दालिमाणवा पारेवताणवा, अक्खोडयाणवा चाराणवा, पाराणवा, तेंदुयाणवा अपिक्काण अपरियागाण वण्णेणं अणुववेताणं, गंधेणं अणुववेताणं, फासेण अणुववेताण, भवेतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे जाव एतो अमणा-मतरियाचेव काउलेस्सा आसाएणं पण्णत्ता ॥ तेउलेस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! से

यह अर्थ योग्य नहीं है इनसे भी अधिक अनिष्ट यावत् अमनोज्ञ रस कहा है ॥ कापुत लेश्या के रस की पृच्छा ? अहो गौतम ! यथा दृष्टान्त कच्चा आम्र, कच्चा अम्बाडा, कच्चा बिजोरा, कच्चा बीलफल, कच्चा कबीट, कच्चा द्राक्ष, कच्चा फणस, कच्चा दाडिम, पारेवा फल, कच्चा अखोट फल, कच्चा बोर, कच्चा पोरक, कच्चा तिंदुक, यह सब अपक जिस में रस नहीं परिणामा हो वर्ण कर विशिष्ट, गंध कर विशिष्ट, स्पर्श कर विशिष्ट इस प्रकार रस है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है इस से भी अधिक अनिष्ट यावत् अमनोज्ञ कापोत लेश्या का रस कहा है. तेजो लेश्या के रस की पृच्छा ? अहो गौतम ! यथादृष्टान्त कोई

सूत्र

पदेसट्ठयाए उक्कोसा काउलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा उक्कोसा णीललेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा एवं कण्ह तेउ पम्ह उक्कोसा सुक्कलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥ लेस्सा पदस्सचउत्थो उद्देसो ॥ १७ ॥ ॥ ४ ॥

कतिण भंते लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छलेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा-कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ १ ॥ से णूणं भंते ! कण्ह लेस्सा नीललेसे पप्प तारूवत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमति २ त्ता इच्चो आढ

अर्थ

के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ से उत्कृष्ट कापोत लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट नील लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट कृष्ण लेश्याके स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट तेजो लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट पद्म लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, और उत्कृष्ट शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने. इति लेश्या पद का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १७ ॥ ४ ॥

अहो भगवान् ! कितने प्रकार की लेश्या कही है? गौतम ! छ प्रकार की लेश्या कही है तद्यथा-कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! निश्चयपने कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्या के द्रव्य को प्राप्त हो रूप पने गंधपने स्पर्शपने बारम्बार परिणमते हैं [illegible] यहां से प्रारंभकर जैसे चौथे

मूत्र

पीयणिज्जा, विहणिज्जा दीवणिज्जा, दप्पणिज्जा मदणिज्जा, सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जा भवेतारूवे ? गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, पम्हलेस्साणं एत्तो इट्ठतरिया चेव जाव मणामयरिया चेव, आसाएणं पण्णत्ता ॥ सुक्कलेस्साणं भंते ! केरिसिया आसाएणं पण्णत्ता? गोयमा! सेजहाणामए गुलेतिवा खंडेतिवा सक्करातिवा मच्छंडियाइवा पप्फड-मोदएतिवा, भिसकंदएतिवा, पुप्फोतरातिवा, पउमुत्तरातिवा, अदंसियातिवा, सिद्ध-त्थियातिवा, आगसफालि उवमातिवा अणोवमातिवा भवेतारूवे ? णो तिणट्ठे समट्ठे, सुक्कलेस्साणं एत्तो इट्ठतरिया चेव कंततरिया चेव मणामयरिया चेव आस्साएणं

अर्थ

गात्र को अल्हादकी करने वाली, इस प्रकार का रस है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. इस सेभी इष्टकारी यावत् मनोज्ञ पद्म लेश्या का रस कहा है ॥ अहो भगवन् ! शुक्ल लेश्या का किस प्रकार का आस्वाद कहा है ? अहो गौतम ! यथा दृष्टान्त गुड, शक्कर, बूरा, मिश्री, मोदक की पापडी, भिसकंद पुष्पशाक, पद्मोत्तर मिष्टान्न, आदेस मिठाइ, सिद्धार्थ मिठाइ, आकाश के समान उज्वल वर्ण वाली जिस के स्वाद की अन्य ओपमा नहीं ऐसी अनुपम इस प्रकार शुक्ल लेश्या के द्रव्य का स्वाद है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है; इस से भी अधिक इष्टकारी, कांतकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ मणाम

खलु सा नीललेस्सा तत्थ गयाउस्सक्कति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति कण्हलेस्सा नीललेसं पप्प नो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमंति ॥ ॥ सेणूणं भंते ! नीललेस्सा काउलेस्सं पप्प नो तावरूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमंति ? हंता गोयमा ! नीललेस्सा काउलेस्सं पप्प नो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमंति ? से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ नीललेस्सा काउलेस्सं पप्प नो तारूवत्ताए जाव भुज्जो

वह स्थान पलित भाग (आकार) मात्र है परंतु कृष्ण लेश्यापने परिणमे नहीं वह नील लेश्या वहां जाकर प्रकंपे नहीं अर्थात् जिस प्रकार कांच में मनुष्यका प्रतिबिम्ब देखता है, उस का आकार भाव मात्र उस में देखाता है. वह सत्य है यद्यपि वह प्रतिबिम्ब पलित भाग मात्र है तथापि आकार भाव से भिन्न नहीं है इस प्रकार ही द्रव्य कृष्ण लेश्या ही पलित भाग मात्र [illegible] होती है परंतु वह आकारभाव मात्र ही आरीसे के प्रति बिम्ब मात्र जानना. इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कृष्ण लेश्या नील लेश्या के द्रव्य को प्राप्त हो उस रूपपने वर्णपने यावत् स्पर्शपने वारम्वार परिणमती नहीं है अहो भगवन् ! नील लेश्या कापोत लेश्या के द्रव्य को प्राप्त हो उस रूपपने यावत् वारम्वार परिणमती है क्या ? अहो गौतम ! नीललेश्या कापोतलेश्या के द्रव्य को

सूत्र

उवसंत कसाय वीयराग दंसणारिया ॥ सेकिंतं खीणकसाय वीअराग दंसणारिया ? खीणकसाय वीयराग दंसणारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—छउमत्थ खीणकसाय वीयराग दंसणारियाय, केवली खीणकसाय वीयराग दंसणारियाय ॥ सेकिंतं छउमत्थखीण कसाय वीयराग दंसणारिया ? छउमत्थखीण कसायवीयराग दंसणारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा--सयंबुद्ध छउमत्थखीणकसायवीअराग दंसणारियाय, बुद्धबोहिय छउमत्थखीणकसायवीयराग दंसणारियाय ॥ सेकिंतं सयंबुद्धखीण कसाय वीयरागदंसणारिया ? सयंबुद्ध छउमत्थखीण कसायवीयरागदंसणारिया दुविहा

अर्थ

कषायी वीतराग दर्शन आर्य और २ जिस को कषाय उपशमाते एकसे अधिक समय हुवे सो अप्रथम समय उपशांत कषायी वीतराग दर्शन आर्य; अथवा जिसको कषाय उपशांतका अंतिम एकही समय रहा हुवा होवे सो चरिम समय उपशांत कषाय वीतराग दर्शन आर्य और जिस को एक समय से अधिक समय कषाय का उपशम करते रहे हुवे सो अचरिम समय उपशांत कषायी वीतराग दर्शन आर्य. यह उपशांत कषायी वीतराग दर्शन आर्य हुवा. प्रश्न-क्षीणकषाय वीतराग दर्शन आर्य किसे कहते हैं? उत्तर क्षीणकषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद कहे हैं—१ छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शन आर्य और केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शन आर्य. प्रश्न-छद्मस्थक्षीणकषाय वीतराग दर्शन आर्य किसेकहते हैं? उत्तर-छद्मस्थक्षीणकषाय वीतराग दर्शन आर्य के

सुरदाण, कायठिती होइ णायव्वा ॥ २ ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! जीवत्ति कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! सव्वद्धं ॥ णेरइएणं भंते ! णेरइएति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ तिरिक्खजोणिएणं भंते ! तिरिक्खजोणिएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतकालं, अणंताओ उसप्पिणीओओसप्पिणीओ खेत्तओ अणंतालोगा असंखेज्जा पोग्गल परियट्टा, तेणं पोग्गल परियट्टा आवलियाए

दर्शन, ३ अनंत सुख और ४ अनंत शक्ति इस प्रकार जीव आश्रिय प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! जीव जीव ही अवस्था में बना रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! सर्व काल अर्थात् जीव गत अनादि काल में जीव ही है वर्तमान काल में जीव ही है और आते अनंत काल तक जीव ही रहेगा जीव का अजीव कदापि नहीं होगा ॥ १ ॥ दूसरा गति द्वार-अहो भगवन् ! नेरिये का नेरियेपने रहे तो काल से कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेतीस सागर. अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक तिर्यंचपने रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अनंत अवसर्पिनी उत्सर्पिनी, यह काल से क्षेत्र से अनंत लोकाकाश प्रमाण अर्थात् अनंत लोक के जितने प्रदेश हैं उन का प्रत्येक समय में एकेक प्रदेश का हरन करते अनंत उत्सर्पिनी ...

अपज्जत्तए ॥ णेरइएणं भंते! णेरइय अपज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ एवं जाव देवी अपज्जत्तिया ॥ णेरइएणं भंते! णेरइयपज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं दस वास सहस्साइं, अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं तिरिक्ख जोणिय पज्जत्तएणं भंते! तिरिक्खजोणिय पज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।

अहो भगवन्! देवता को देवता पने रहता काल में कितने कालतक रहे? अहो गौतम! जिसप्रकार नेरीयेका कहा उस प्रकार ही देवता का कहना अर्थात् दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम. अहो भगवन्! देवी को देवीपने रहे तो काल में कितना काल रहे? अहो गौतम! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट पचपन पल्योपम यह दूसरे देवलोक की अपरिग्रही देवी की अपेक्षा से जानना. अहो भगवन्! सिद्ध को सिद्ध पने रहे तो कितना काल तक रहे! अहो गौतम! सादि अपर्यवसित अर्थात् सिद्ध की आदि तो है किन्तु अन्त नहीं है अब इन चारों गति की पर्याप्त अपर्याप्त अवस्था की कायास्थिति कहते हैं अहो भगवन्! नेरिये अपर्याप्त ... गौतम! जघन्य भी उत्कृष्ट भी ... देवांतक अपर्याप्त रहते हैं.

एवं मणुस्सीणवि ॥ अकम्मभूमिय मणुस्साणं पुच्छा

पण्णत्ताओ तंजहा - कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ॥ एवं अकम्मभूमियमणुस्सीण

कर्मभूमि मनुष्य में कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! छही लेश्या कही है तद्यथा—कृष्ण
इस प्रकार ही कर्मभूमि की मनुष्यनी के भी छ ही लेश्या जानना. भरत ऐरावत के मनुष्यों
लेश्या कही है ? अहो गौतम ! छ लेश्या कही है. तद्यथा-कृष्ण यावत् शुक्ल. इस प्रकार
मनुष्यनी के भी छ ही लेश्या जानना. पूर्व महा विदेह पश्चिम महा विदेह मनुष्य के कित
कही है ? अहो गौतम ! छ लेश्या कही है. ऐसे ही पूर्वापर महा विदेह की मनुष्यनी के
लेश्या जानना. अकर्म भूमी मनुष्य के कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! चार लेश्
तद्यथा—कृष्ण लेश्या यावत् तेजो लेश्या. यों अकर्मभूमी की मनुष्यनी के भी चार ही लेश्या ज

रे२ अतरदीवगमणस्साणं, मणुस्सीणवि ॥ हेमवयएरण्णवय अकम्मभूमिय मणुस्साणं मणुस्सीणय कइ लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा - कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा हरिवास रम्मयवास अकम्मभूमिय मणुस्साणं मणुस्सीणय पुच्छा ? गोयमा ! चत्तारि लेस्सा पण्णत्ता तंजहा कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिग मणुस्साणं एवं चेव ॥ एतेसिंचेव मणुस्सीणं एवंचेव ॥ धायइसंडे पुरत्थिमद्धे, एवं चेव पच्चत्थिमद्धेवि, एवं पुक्खरदीवे भाणियव्वं ॥ कण्हलेस्सेणं भंते ! मणुस्से कण्हलेस्सं गब्भं जाणेज्जा ? हंता गोयमा ! जाणेज्जा

भार द्वीप के मनुष्य मनुष्यनी के भी यही चारों लेश्या जानना. हेमवय एरणवय क्षेत्र के मनुष्य के कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! चार लेश्या कही. तद्यथा-कृष्ण लेश्या यावत् तेजो लेश्या. ऐसे ही मनुष्यनी के भी चार लेश्या. ऐसे ही हरिवास रम्यकवास की मनुष्य मनुष्यनी और देव कुरु उत्तर कुरु क्षेत्र की मनुष्य मनुष्यनी के भी चार ही लेश्या जानना. जिस प्रकार यह जम्बूद्वीप के कर्म-भूमी के और ३ अकर्मभूमी के क्षेत्र के मनुष्य की लेश्या कही. ऐसे ही धातकी खंड के पूर्व विभाग में रहे ७ क्षेत्रों में और पश्चिम विभाग में रहे ७ क्षेत्रों में तथा पुष्करार्ध के पूर्व और पश्चिम विभाग के नव २ स्थानों में लेश्या का कथन करना अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्यावाला मनुष्य कृष्ण लेश्यावाले

केवचिर ।

वणप्फइकालो ॥ बेइंदिएणं भंते ! बेइंदिएत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्त उक्कोसेणं संखेज्जं कालं ॥ एवं तेइंदिय ॥ एवं चउरिंदिएवि ॥ पंचिदिए कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं सागरोवमसहस्स सातिरेगं. अणिंदिएणं पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ सइंदिय अपज्जत्तएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, एवं जाव पंचिंदिय अपज्जत्तएवि ॥ सइंदिए पज्जत्तएणं

अहो भगवन्! एकेन्द्रिय एकेन्द्रियपने काल से कितने काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति के काल जितना जानना अहो भगवन् ! बेइंद्रिय का बेइंद्रिय रहे सो काल से कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात काल, ऐसे ही तेइंद्रियका भी, और ऐसे ही चौरिंद्रियका भी जानना * अहो भगवन्! पंचेंद्रिय पंचेंद्रियपने रहे तो काल से कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट एक हजार सागरोपम कुछ अधिक इतने काल तक चारों गति में पंचेंद्रियपने उत्पन्न होवे परंतु चतुरिंद्रिय आदि स्थान में उत्पन्न नहीं होवे. अनिंद्रिय का प्रश्न ? अहो गौतम ! अनिंद्रिय (सिद्ध) सादि अनंत हैं

एव अंतरदीवगमणुस्साणं, मणुस्सीणवि ॥ हेमवयएरण्णवय अकम्मभूमिय मणुस्साणं मणुस्सीणय कइ लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा - कण्हलेस्सा जाव तेऊलेस्सा हरिवास रम्मयवास अकम्मभूमिय मणुस्साणं मणुस्सीणय पुच्छा ? गोयमा ! चत्तारि लेस्सा पण्णत्ता तंजहा कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिग मणुस्साणं एवं चेव ॥ एतेसिंचेव मणुस्सीणं एवंचेव ॥ धायतिसंडे पुरत्थिमद्धे, एवं चेव पच्चत्थिमद्धेवि, एवं पुक्खवरदीवे भाणियव्वं ॥ कण्हलेस्सेण भंते ! मणूस्से कण्हलेस्सं गब्भं जाणेज्जा ? हंता गोयमा ! जाणेज्जा

अर्थ

अंतर द्वीप के मनुष्य मनुष्यनी के भी यही चारों लेश्या जानना. हेमवय एरणवय क्षेत्र के मनुष्य के कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! चार लेश्या कही. तद्यथा-कृष्ण लेश्या यावत् तेजो लेश्या. ऐसे ही मनुष्यनी के भी चार लेश्या, ऐसे ही हरिवास रम्यकवास की मनुष्य मनुष्यनी और देव कुरु उत्तर कुरु क्षेत्र की मनुष्य मनुष्यनी के भी चार ही लेश्या जानना. जिस प्रकार यह जम्बूद्वीप के कर्म-भूमी के और छ अकर्मभूमी के क्षेत्र के मनुष्य की लेश्या कही. ऐसे ही धातकी खंड के पूर्व विभाग में रहे ९ क्षेत्रों में और पश्चिम विभाग में रहे ९ क्षेत्रों में तथा पुष्करार्ध के पूर्व और पश्चिम विभाग के नव २ क्षेत्रों में लेश्या का कथन करना. अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्यावाला मनुष्य कृष्ण लेश्यावाले

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जामासा ॥ पंचिंदिय पज्जत्तएणं भंते ! पंचिंदिए पज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं ॥ ३ ॥ सकाइएणं भंते ! सकाइएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! सकाइए दुविहे पण्णत्ते तंजहा-अणादिए अपज्जवसिए, अणादिए सपज्जवसिए ॥ पुढविकाइएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

की ही स्थिती है. तेन्द्रिय पर्याप्त की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात रात्रिदिन क्यों कि तेइन्द्रिय की उत्कृष्ट ४९ दिन की ही स्थिति है. चौरिन्द्रिय की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात महीने. क्यों कि चौरिन्द्रिय की छ महीने की ही स्थिति है. पंचेन्द्रिय पर्याप्त की पृच्छा ! अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सो सागरोपम पृथक्त्व ॥ ३ ॥ चौथा कायाद्वार-अहो भगवन् ! सकाया सकायपने काल से कितने काल रहे? अहो गौतम! सकाइये दो प्रकार के कहे हैं. तद्यथा- अनादि अनंत यह अभव्य आश्रिय तेजस कार्मान शरीर सदैव काल होता है. इस अपेक्षा और अनादि सान्त भव्य आश्रिय मोक्ष जावे तब अकायी होवे. पृथ्वीकाय आश्रिय पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल असंख्यात सर्पनी उत्सर्पनी यह काल से

इत्थियाए कण्हलेस्सं गब्भं जाणेज्जा? एवं एतेवि छत्तीसं आलावगा ॥ अकम्मभूमिग कण्हलेस्सेणं भंते ! मणुस्से अकम्मभूमिग कण्हलेस्साए इत्थियाए अकम्मभूमिय कण्हलेस्सं गब्भं जाणेज्जा ? हंता गोयमा ! जाणेज्जा, णवरं चउसुलेसासु सोलस आलावगा ॥ एवं अंतरदीवगावि॥ लेस्सापए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥१७॥६॥ पण्णवणाए भगवतीए लेस्सा पदं सतरसमं सम्मत्तं ॥ १७ ॥

पुरुष के ३६ आलापक कहे वैसे स्त्री के भी ३६ आलापक कहना. ऐसे ही कृष्ण लेश्यावाले मनुष्य कृष्ण लेश्यावाली स्त्री के गर्भ को जानने के ३६ आलापक कहना. कर्मभूमी के मनुष्य कृष्ण लेश्यावाली स्त्री के गर्भ को जानने के ३६ आलापक कहना. ऐसे ही कृष्ण लेश्यावाले अकर्मभूमी मनुष्य कृष्ण लेश्यावाली स्त्री के गर्भ को जानते हैं जिस के चार लेश्या के १६ आलापक कहना, ऐसे ही अंतरद्वीप के भी १६ आलापक कहना इति छठा उद्देशा संपूर्ण हुवा. इति पन्नवणा भगवती का सतरहवा लेश्या पद समाप्त हुवा ॥१७॥

सूत्र

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जामासा ॥ पंचिंदिय पज्जत्तएणं भंते ! पंचिंदिए पज्जत्तएति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं ॥ ३ ॥ सकाइएणं भंते ! सकाइएति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! सकाइए दुविहे पण्णत्ते तंजहा-अणादिए अपज्जवसिए, अणादिए सपज्जवसिए ॥ पुढविकाइएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

अर्थ

की ही स्थिती है. तेन्द्रिय पर्याप्त की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहुर्त उत्कृष्ट संख्यात रात्रिदिन क्यों कि तेइन्द्रिय की उत्कृष्ट ४९ दिन की ही स्थिति है. चौरिन्द्रिय की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात महीने. क्यों कि चौरिन्द्रिय की छ महीने की ही स्थिति है. पंचेन्द्रिय पर्याप्त की पृच्छा ! अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सो सागरोपम पृथक्त्व ॥ ३ ॥ चौथा कायाद्वार-अहो भगवन् ! सकाया सकायपने काल से कितने काल रहे? अहो गौतम! सकाइये दो प्रकार के कहे हैं. तद्यथा-अनादि अनंत यह अभव्य आश्रिय तेजस कार्मान शरीर सदैव काल होता है. इस अपेक्षा और अनादि सान्त भव्य आश्रिय मोक्ष जावे तब अकायी होवे. पृथ्वीकाय आश्रिय पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल असंख्यात सर्पनी उत्सर्पनी यह काल से और क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश के जितने प्रदेश [illegible]

...अपढम समय बुद्धबोहिय छउमत्थखीण कसाय वीयराग दंसणारियाय ॥ सेत्तं बुद्धबोहिय छउमत्थखीण कसाय वीयराग दंसणारियाय॥ सेत्तं छउमत्थखिण कसाय वियराग दंसणारिया॥ सेकिंतं केवली खीणकसायवीयराग दंसणारिया ? केवली खीणकसाय वीयराग दंसणारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सजोगी केवली खीणकसाय वीयराग दंसणारियाय, अजोगी केवली खीणकसाय वीयराग दंसणारियाय ॥ सेकिंतं सजोगीकेवली खीणकसाय वीयराग दंसणारिया ? सजोगी केवली खीणकसाय वीयराग

छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शन आर्य किसे कहते हैं ? उत्तर-बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद कहे हैं १-प्रथम समय बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और २ अप्रथम समय बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य. अथवा चरिम समय बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और अचरम समय बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य. यह बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य हुवा. और यह छद्मस्थ कषाय वीतराग दर्शन आर्य हुवा. प्रश्न-केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य किसे कहते हैं ? उत्तर-केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद कहे हैं...

अपज्जत्तएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, एवं जाव तस काइय अपज्जत्तए ॥ सकाइय पज्जत्तए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण सागरोवम सतपुहुत्तं सातिरेग ॥ पुढविकाइय पज्जत्तए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं संखेज्जाइं वास सहस्साइं, एवं आउवि ॥ तेउकाइय पज्जत्तएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं संखेज्जाइं राइंदियाइं, वाउकाइय पज्जत्तएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं ॥ वणप्फतिकाइय पज्जत्तएणं पुच्छा ? गोयमा !

हो रहते हैं सकायिक पर्याप्त रहे तो कितने काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक सागरोपम इतने काल तक अपर्याप्त अवस्था में मृत्यु नहीं पावे. पर्याप्त होकर ही मरे पृथ्वीकायिक पर्याप्त कितने काल तक रहे ? अहो गौतम! उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष क्योंकि बावीस हजार वर्षायु है. ऐसे ही अप्कायिकका भी कहना, क्योंकि सात हजार वर्षायु है, तेजस्काया पर्याप्त अवस्थामें रहे तो? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात रात्रिदिन क्योंकि तीन अहोरात्रिका आयु है. वायुकाया पर्याप्त की पृच्छा? अहो गौतम! संख्यात हजार वर्ष क्योंकि तीन हजार वर्ष का आयुष्य है. वनस्पतिकाय पर्याप्त की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष. क्यों कि दश हजार वर्ष की स्थिति है. त्रसकाया पर्याप्त की पृच्छा ? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक सौ सागरो

कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! सकसाई तिविहे पण्णत्ते तंजहा-अणादिएवा अपज्जवसिए, अणादिएवा सपज्जवसिए, सादिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थणं जेसे सादिएवा सपज्जवसिएवा से जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अणंतंकालं जाव अवड्ढं पुग्गल परियट्टं देसूण ॥ कोहकसाईणं भंते ! पुच्छा ? जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं एव जाव माण माया कसाईणं. लोभकसाईणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगसमयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ अकसाईणं भंते ! अकसाइति कालओ केवचिरं

सान्त और ३ सादि सान्त इस में जो सादी सान्त है वह जघन्य एक समय उपशम श्रेणिगत पडवाइ आश्रिय, उत्कृष्ट अनंत काल की यावत् आधा पुद्गल परावर्तन कुछ कम. अहो भगवन् ! क्रोध कपायी क्रोध कपायी पने रहे तो कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त. ऐसे ही मानकषाइ माया कपायीकी भी जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त की स्थिति है. लोभ कषाइ की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त, क्योंकी जब कोइ जीव उपशम श्रेणी प्रतिपन्न होता है तब पीछा पड कर एक समय लोभ कपायका स्पर्श न कर आयुष्य पूर्ण कर देवलोकमें जाने वहां क्रोध मान माया कपाय का उदय होवे इस आश्रिय एक समय जानना. क्रोधादिक की एक समय की स्थिति न कही इस का कारण यह है कि तीनों कपाय से पडा हुआ जीव पुनःतन्ही कपाय में आकर उत्पन्न होता है. और

भंते ! णीललेसेणि पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं पलिओवमा संखेज्जति भाग मब्भहियाइं ॥ काउलेसेणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं पलिओवमा संखेज्जइ भाग मब्भहियाइं ॥ तेउलेसेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण दो सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भाग मब्भहियाइं ॥ पम्हलेसेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तं मब्भहियाइं ॥ सुक्कलेस्सेणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

अर्थ

मुहूर्त उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम सातवी नरककी अपेक्षा, अन्तरमुहूर्त अधिक मनुष्य तिर्यच के भवकी अपेक्षा. नीललेश्या की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम चौथी नरक की अपेक्षा. पल्योपमका असंख्यातवा भाग अधिक, पांचवी नरक आश्रिय. कापोत लेश्या की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट तीन सागरोपम दुसरी नरक की अपेक्षा पल्योपम का असंख्यातवा भाग तीसरी नरक के प्रथम पाथडे आश्रिय तेजोलेश्याकी पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट दो सागरोपम दुसरे देवलोक आश्रिय,पल्योपमका असंख्यातवा भाग अधिक. पांचवे देवलोक आश्रिय पद्मलेश्या आश्रिय पृच्छा!अहो गौतम!जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम अन्तरमुहूर्त अधिक मनुष्य तिर्यच के भव

सूत्र

अपज्जत्तगा तहेवि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ बादर पज्जत्तएणं भंते! बायर पज्जत्तए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवम सत पुहुत्तं सातिरेग ॥ बादर पुढविकाइय पज्जत्तएणं भंते ! बादर पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं ॥ एवं आऊ काइयवि ॥ तेउकाइय पज्जत्तएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइं राइंदियाइं ॥ वाउकाइय वणस्सइ काइय, पत्तेय सरीर बादर वणस्सइ काइए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं संखेज्जाइं वास सहस्साइं

अर्थ

बादर निगोदपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट सित्तर क्रोडाक्रोड सागरोपम. अहो भगवन् ! बादर त्रसकाया बादर त्रसकायापने रहे तो कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट दो हजार सागरोपम संख्यात वर्ष अधिक. इन के अपर्याप्त सब ही जघन्य तथा उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त बादर पर्याप्त कितने काल रहे? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक सो सागरोपम बादर पृथ्वीकाया पर्याप्त कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष, ऐसे ही अप्काया का भी कहना, बादर तेउकाया पर्याप्त की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात अहोरात्रि, वायुकाया, वनस्पतिकाया और प्रत्येक शरीर बादर वन-

मूल

सपज्जवसिए । तत्थण जे से सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं.. अणतकाल अणताओ उसप्पिणी उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण ॥ सम्मामिच्छ दिट्ठीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्त ॥ १ ॥ णाणीणं भंते ! णाणीत्ति कालतो केवचिरं होइ? गोयमा ! णाणी दुविहे पण्णत्ते तजहा- सादिएवा अपज्जवसिए, सादिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थणं जेसे सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छवट्ठि सागरोवमाइं साइरेगाइं

अर्थ

कहे हैं तद्यथा—१ अनादी अनंत, अभव्य आश्रित, २ अनादी सान्त, भव्य आश्रित, और ३ सादी सान्त पडवाइ आश्रित इस में सादी सान्त मिथ्यात्व की स्थिति जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अनंत सर्पनी उत्सर्पनी यह काल से और क्षेत्र से कुछ कम आधा पुद्गल परावर्तन. समामिथ्यात्व(मिश्र)दृष्टि की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त की स्थिति है ॥ १ ॥ दशवा ज्ञान द्वार—अहो भगवन् ! ज्ञानी ज्ञानीपन रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! ज्ञानी दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ सादी अनन्त क्षायिकसम्यक्त्वी व केवल ज्ञानी की अपेक्षा, और २ सादी सान्त पडवाइ आश्रित इस में सादी सान्त की स्थिति जघन्य अन्तरमुहूर्त की उत्कृष्ट छासठ सागरोपम कुछ अधिक

सूत्र

मणजोगीणं भंते ! मणजोगीति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ एवं वयजोगीवि ॥ कायजोगीणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो ॥ अजोगीणं भंते ! अजोगीति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! सादिए अपज्जवसिए॥५॥सवेदएणं भंते! सवेद-एत्ति कालओ केवचिर होइ? गोयमा! सवेदए तिविहे पण्णत्ते तंजहा-अणादिएवा अपज्जव-सिए, अणादिए वा सपज्जवसिए, सादिए वा सपज्जवसिए ॥ तत्थणं जेते सादिए सपज्जवसिए

अर्थ

पलटा होवे जिस प्रकार मनयोगकी काया स्थिति कही तैसे वचन जोगकी भी काया स्थिति जानना. अहो भगवन ! काया जोगी का काया जोगी पने रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त संज्ञी आश्रिय मनयोग वचन योग में परिणमे फिर काया योग में परिणमे फिर अन्तर मुहूर्त रह कर पीछा काया जोग में परिणमे, उत्कृष्ट वनस्पति का काल अहो भगवन् ! अजोगी अजोगी पने (सिद्धपने) रहे तो कितने काल रहे ? अहो गौतम ! सादी अपर्यवसित ॥ ५ ॥ छठा वेद द्वार-अहो भगवन् ! सवेदी सवेदीपने रहे तो कालसे कितने काल तक रहे? अहो गौतम ! सवेदी तीन प्रकार कहे हैं, तद्यथा-१ अनादी अनंत, २ अनादी सान्त और ३ सादी सान्त इसमें जो सादी सान्त है वे सवेदी जघन्य अन्तर मुहूर्त रहे क्यों कि उपशमश्रेणि प्रतिपन्न अवेद गुणस्थानमें [illegible] कर सवेदी होवे सवेदी पने अन्तरमुहूर्त रहकर पुनः

आदेसेणं जहण्णेणं एगसमयं, उक्कोसेणं चउदस पलिओवमाइं, पुव्वकोडिपुहुत्त मब्भहियाइं ॥ एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं पलिओवमसतं पुव्वकोडिपुहुत्त मब्भहियं ॥ एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं पलिओवम पुहुत्तं पुव्वकोडी पुहुत्त मब्भहियं ॥ पुरिसवेएणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवम सतपुहुत्तं सातिरेगं ॥ णपुसगवेदेणं

की भोगव कर ६ भव मनुष्यनी के लगाकर पुनः दूसरे देवलोक में परिग्रही देवी में ९ पल्योपम की स्थिती पने उत्पन्न हो आयुष्य पूर्ण कर वेद का पलटा करे, इस अपेक्षा. (तीसरे आदेश कर) जघन्य एक समय की उत्कृष्ट चवदह पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक, क्यों की प्रथम देवलोक में परिग्रही देवी का सात पल्योपम का आयुष्य भोगव छ भव कर्मभूमि मनुष्यनी के कर पुनःप्रथम देवलोक में उत्कृष्ट सात पल्योपम के आयुष्य वाली परिग्रही देवी होवे इस अपेक्षा (चौथे आदेश कर) जघन्य एक समय उत्कृष्ट सो पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक. पहिले देवलोक में अपरिग्रही देवी का पचास पल्योपम का आयुष्य भोगव छ भव मनुष्य के कोटि पूर्व के आयुष्य के कर पुन-पहिले देवलोक में अपरिग्रही देवी पचास पल्योपम के आयुष्य वाली होवे. इस अपेक्षा (और पांचवे आदेश कर) जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम पृथक्त्व और पूर्वकोटी पृथक्त्व. यह तिर्यचनी के तथा मनुष्यनी के पूर्वकोटी आयुष्य के सात

सूत्र

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं अणंताओ उस्सप्पिणी ओसप्पिणीओ कालोतो, खेत्तातोअवड्ढ पोग्गल परियट्टं देसूणं । विभंगणाणीणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समयं उक्कोसेणं तेतीसं सागरोवमाइं देसूणाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ॥ १० ॥ चक्खुदसणीणं भंते ! पुच्छा गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसहस्सं सातिरेग ॥ अचक्खुदंसणीणं भंते ! अचक्खुदसणीति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! अचक्खुदंसणी दुविहे पण्णत्ते तंजहा- अणादि

अर्थ

आश्रिय और सादी सान्त पइवाइ आश्रिय, इस में जो सादी सान्त है वे जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अनन्त सर्पनी उत्सर्पिनी काल से क्षेत्र से कुछ कम आधा पुद्गल परावर्तन. विभग ज्ञानी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम कुछ कम पूर्व कोडी अधिक सातवी नरक और मनुष्य तिर्यंच के भव आश्रिय ॥ १० ॥ इग्यारह॥ दर्शनद्वार-अहो भगवन् ! चक्षु दर्शनी चक्षु दर्शनीपने रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त चौरिंद्रियादि में अन्तरमुहूर्त आयुष्य भोग मृत्यु पावे. उत्कृष्ट एक हजार सागरोपम कुछ अधिक इतने काल तक चौरिंद्रिय पंचेन्द्रिय के ही भव करे. अचक्षु दर्शनी की पृच्छा ? अहो गौतम ! अचक्षु दर्शनी दो प्रकार के कहे हैं,

सूत्र

दंसणारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पढम समय सजोगी केवली खीणकसाय वीय-राग दंसणारियाय, अपढम समय सजोगी केवली खीणकसायवीयराग दंसणारियाय, अहवा अचरम समयसजोगी केवली खीणकसाय वीयराग दंसणारिआय ॥ सेत्तं सजोगी केवली खीणकसाय वीयराग दंसणारिया ॥ सेकिंतं अजोगी केवली खीण कसाय वीयराग दंसणारिया ? अजोगी केवली खीण कसाय वीयराग दंसणारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पढम समय अजोगी केवली खीण कसाय वीअराग दंसणा-रिया, अपढम समय अजोगी केवली खीणकसाअ वीअराग दंसणारिया ॥ अहवा

अर्थ

कषाय वीतराग दर्शन आर्य और अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य. प्रश्न-सजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य किसे कहते हैं? उत्तर-सजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद कहे हैं—प्रथम समय सजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और अप्रथम समय सजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य अथवा चरिम समय सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और अचरिम समय सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य यह सयोगी केवली वीतराग दर्शन आर्य हुवा. प्रश्न-अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य किसे कहते हैं? उत्तर-अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद कहे हैं-प्रथम समय अयोगी केवली क्षीण

अपज्जवसिए अणादिएवा सपज्जवसिए, सादिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थणं जे से सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं अणंताओ उस्सप्पिणी२ओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ संजतासंजतेणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडी, णोसंजएणोअसंजए नो सजयासजएण पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ १२ ॥ सागारोवउत्तेणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ अणागारोवउत्तेणं वि एव चेव ॥ १३ ॥ आहारएणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! आहारे दुविहे पण्णत्ते

अर्थ

पर्य आश्रिय, और सादी सान्त, इस में जो सादी सान्त है वे जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अनंत सर्पनी उत्सर्पिनी काल से और क्षेत्र से कुछ कम आधा पुद्गल परावर्तन. संयतासंयति की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम क्रोड पूर्व, नो संयति नो असंयति नो संयतासंयतिकी पृच्छा! अहो गौतम! सादी अपर्यवसित है॥१२॥चवदहवा उपयोग द्वार-साकार उपयोगी अणाकार उपयोगी रहे तो जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त, इतनी अनगार बहुत की भी जानना. यह चारों ज्ञान आश्रिय जानना, केवली का उपयोग एक समय का होता है ॥ १३ ॥ पन्द्रहवा आहारक अनाहारक द्वार—अहो भगवन् !

॥ एकोनविंशतितमम् दृष्टि पदम् ॥

जीवाणं भंते! किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी? गोयमा! जीवा सम्मादिट्ठीवि, मिच्छादिट्ठीवि, सम्मामिच्छदिट्ठीवि ॥ एवं णेरइयावि, असुरकुमारावि एवं चेव जाव थणियकुमारा । पुढवि काइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुढविकाइया णो सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी, एवं जाव वणप्फइ काइया॥ बेंदिया सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि, नो सम्मामिच्छदिट्ठी॥एवं जाव चउरिंदिया ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, मणुस्सो, वाणमंतर, जोइसिय वेमाणिया सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि. सम्मामिच्छदिट्ठीवि ॥

दृष्टिपद कहते हैं—अहो भगवन् ! जीव सम्यक् दृष्टी है कि मिथ्या दृष्टी है कि सममिथ्या दृष्टी है ? अहो गौतम ! समुचय जीव समदृष्टी भी हैं मिथ्यात्व दृष्टी भी हैं और सममिथ्या दृष्टी भी हैं. अब चौवीस दंडक का कहते हैं सब प्रश्नोत्तर जानना. नरक में और दशो भवनपति में तीनों ही दृष्टि पाती है. समदृष्टी मिथ्या दृष्टी मिश्र दृष्टी. पृथव्यादि पांचों स्थावर समदृष्टी नहीं है, तैसे ही मिश्र दृष्टीभी नहीं है फक्त एक मिथ्यात्व दृष्टी हैं. तीनों विकलेन्द्रियमें समदृष्टी भी हैं अपर्याप्त अवस्था आश्रिय मिथ्यात्व दृष्टी भी हैं परन्तु सममिथ्या दृष्टी नहीं है. तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानीक देव १२ देवलोक तक समदृष्टी भी है मिथ्यात्व दृष्टी भी है और सममिथ्या दृष्टी भी है. नवग्रीवेग में समदृष्टी

अपज्जवसिए अणादिएवा सपज्जवसिए, सादिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थणं जे से सादिए सपज्जवसिए ते जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं अणंताओ उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ संजतासंजतेणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडीं, णोसंजएणोअसंजए नो संजयासंजएण पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ १२ ॥ सागारोवउत्तेणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ अणागारोवउत्तेणं वि एव चेव ॥ १३ ॥ आहारएणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! आहारे दुविहे पण्णत्ते

अर्थ

भव्य आश्रिय, और सादी सान्त, इस में जो सादी सान्त है वे जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अनंत सर्पिनी उत्सर्पिनी काल से और क्षेत्र से कुछ कम आधा पुद्गल परावर्तन. संयतासंयति की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम क्रोड पूर्व, नो संयति नो असंयति नो संयतासंयति की पृच्छा? अहो गौतम! सादी अपर्यवसित है॥१२॥चउदहवा उपयोग द्वार-साकार उपयोगी साकार उपयोगी रहे तो जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त, इतनी अनगार बहुत की भी जानना. यह चारों ज्ञान आश्रिय सतता कैवली का उपयोग एक समय का होता है ॥ १३ ॥ पन्द्रहवा आहारक अनाहारक द्वार—अहो [illegible]

* विंशतितम क्रिया पदम् *

णेरइय अंतकिरिया अणंतरं एगसमय उव्वट्टा ॥ तित्थगरे चक्की बलदेव, वासुदेव मंडलिय रयणाय ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! अंतकिरिया करेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए णो करेज्जा ॥ एवं णेरइए जाव वेमाणिए ॥ णेरइएणं भंते ! णेरइएसु अंतकिरियं करेज्जा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥ णेरइएणं भंते ! असुरकुमारेसु अंतकिरियं करेज्जा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवं जाव वेमाणिएसु णवरं मणूसेसु अंतकिरियं करेज्जति पुच्छा ? गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा अत्थेगइए णो करेज्जा ॥ एवं असुर कुमारे जाव वेमाणिए ॥ एवं मेते चउवीसं दंडका भवंति ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं

अर्थ

अब बीसवा अन्तक्रिया नामक पद कहते हैं. द्वार के नाम—१ चौवीस दंडक की अंत क्रिया का. २ अनन्तर परम्परा अंतक्रिया का, ३ एक समयमें कितने अंतक्रिया करे, ४ तिर्थंकर होने का, ५. चक्रवर्ती होने का, ६ बलदेव होने का, ७ वासुदेव होने का, ८ मंडलिक राजा का, ९ और चक्रवर्ती के १४ रत्न का ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जीव अन्तक्रिया करते हैं क्या ? हां गौतम ! कितनेक जीव अंतक्रिया ... ही नरक से लगाकर यावत् चौवीस दंडक तक का

तंजहा- छउमत्थ अणाहारए केवली अणाहारए ॥ छउमत्थ अणाहारएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं दो समया, केवलि अणाहारएणं भंते ! केवलिअणाहारएत्ति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! केवलि अणाहारएय दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सिद्धकेवलि अणाहारएय, भवत्थ केवलि अणाहारएय ॥ सिद्धकेवलि अणाहारएण पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए, भवत्थकेवलि अणाहारएणं

अनाहारक कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो समय. अहो भगवन् ! केवली अनाहारक कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! केवली अनाहारक के दो भेद कहे हैं. तद्यथा-१ सिद्ध केवली अनाहारक और भवस्थ केवली अनाहारक. सिद्ध केवली अनाहारक की पृच्छा ? अहो गौतम ! सादि अनन्त है. भवस्थ केवली अनाहारक की पृच्छा ? अहो गौतम ! भवस्थ केवली अनाहारक दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ सजोगी भवस्थ केवली अनाहारक और २ अजोगी भवस्थ केवली अनाहारक सजोगी भवस्थ केवली अनाहारक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अजघन्य उत्कृष्ट तीन समय

*१ इस में चार समय अनाहारक रहते हैं जिस में का प्रथम अन्तिम समय यहां ग्रहन नहीं किया है, क्यों कि प्रथम आहार छोडने का और अंतिम आहार ग्रहण करने का समय है इस अपेक्षा शास्त्र में दो समय है। अनाहारक प्रश्न किये है.

ताऽवि अंतकिरियं करेंति परंपरगयाऽवि अंतकिरियं करेंति ॥ तेऊ वाऊ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय णो अणंतरागया अंतकिरिया पकरेंति. परंपरागया अंतकिरियं पकरेंति ॥ सेसा अणंतरागयाऽवि अंतकिरियं करेंति,परंपरागयाऽवि अंतकिरियं पकरेंति ॥ २ ॥ अणंतरागयाणं भंते ! णेरइया एगसमएणं केवतिया अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एगोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं दस ॥ रयणप्पभा पुढवि-

धूम्रप्रभा के नेरिये अनन्तर मनुष्य में उत्पन्न होकर अन्तक्रिया नहीं करते हैं परंतु परम्परा से उत्पन्न हुवे कितनेक अंतक्रिया करते हैं. इस ही प्रकार नीचे सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना. असुर कुमार यावत् स्तनित कुमार, पृथ्वी, पानी, वनस्पति काया, अनन्तर मनुष्य में उत्पन्न होकर भी अन्तक्रिया करते हैं और परम्परा उत्पन्न होकर भी अन्तक्रिया करते हैं. तेउ, वायु बेइंद्रिय तेइंद्रिय चौरिंद्रिय यह अन्तर मनुष्य में उत्पन्न हुवे अन्तक्रिया नहीं करते हैं परंतु परम्परागत अन्तक्रिया करते हैं. इन सिवाय और सब दंडक के जीव अन्तरगत और परम्परागत मनुष्य में उत्पन्न हो अन्तक्रिया कर सकते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी से अनंतर उत्पन्न हुवे मनुष्य में एक समय में कितने जीव अन्तक्रिया करते हैं (मोक्ष जाते हैं) अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश जीव अन्तक्रिया करते हैं. ऐसे ही दश जीव एक समय में रत्नप्रभा के निकले मोक्ष जाते हैं. यावत् तीसरी वालुक प्रभा तक इस ही प्रकार कहना. पंक

सूत्र

जे से सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणप्फति कालो॥ १५॥परित्तेणं भंते ! पुच्छा? गोयमा! परित्ते दुविहे पण्णत्ते तंजहा-काय परित्तेय, संसार परित्तेय ॥ काय परित्तेणं भंते! पुच्छा ? गोयमा ! पुढवि कालो असंखेज्जा उसप्पिणि ओसप्पिणीओ, संसार परित्तेणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गल परियट्टं देसूणं ॥ अपरित्तेणं पुच्छा ? गोयमा ! अपरित्ते दुविहे पण्णत्ते तंजहा-काय अपरित्तेय संसार अपरित्तेय ॥ काय अपरित्तेणं पुच्छा ?

अर्थ

है तद्यथा—१ सादि अनन्त, (सिद्ध) और सादी सान्त, इस में जो आदि सहित और अन्तसहित है वे जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल ॥ १५ ॥ सोलवा परित द्वार-अहो भगवन् ! परित का परित कितने काल रहे ? अहो गौतम ! परित दो प्रकार के कहे हैं, तद्यथा—काया परित-शरीर आश्रिय और २ संसार परित सम्यक्त्व प्राप्त आश्रिय. कायपरित की पृच्छा ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया का काल असंख्यात अवसर्पनी उत्सर्पनी. संसार परित की पृच्छा ? जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् कुछ कम आधा पुद्गल परावर्तन. अपरित की पृच्छा ? अहो गौतम ! अपरित दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ काया अपरित अनंत काया के जीव और संसार अपरित सम्यक्त्वी हो भी संसार परित नहीं किया. काया अपरित की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट

ताति अंतकिरियं करेंति परंपरगयावि अंतकिरियं करेंति ॥ तेऊ वाऊ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय णो अणंतरागया अंतकिरिया पकरेंति. परंपरागया अंतकिरियं पकरेंति ॥ सेसा अणंतरागयावि अंतकिरियं करेंति, परंपरागयावि अंतकिरियं पकरेंति ॥ २ ॥ अणंतरागयाणं भंते ! णेरइया एगसमएणं केवतिया अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एगोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं दस ॥ रयणप्पभा पुढवि-

अर्थ

धूम्रप्रभा के नेरिये अनन्तर मनुष्य में उत्पन्न होकर अन्तक्रिया नहीं करते हैं परंतु परम्परा से उत्पन्न हुवे कितनेक अंतक्रिया करते हैं इस ही प्रकार नीचे सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना. असुर कुमार यावत् स्तनित कुमार, पृथ्वी, पानी, वनस्पति काया, अनन्तर मनुष्य में उत्पन्न होकर भी अन्तक्रिया करते हैं और परम्परा उत्पन्न होकर भी अन्तक्रिया करते हैं. तेउ, वायु बेइंद्रिय तेइंद्रिय चौरिंद्रिय यह अन्तर मनुष्य में उत्पन्न हुवे अन्तक्रिया नहीं करते हैं परंतु परम्परागत अन्तक्रिया करते हैं. इन सिवाय और सब दंडक के जीव अन्तरगत और परम्परागत मनुष्य में उत्पन्न हो अन्तक्रिया कर सकते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी से अनंतर उत्पन्न हुवे मनुष्य में एक समय में कितने जीव अन्तक्रिया करते हैं (मोक्ष जाते हैं) अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश जीव अन्तक्रिया करते हैं. ऐसे ही दश जीव एक समय में रत्नप्रभा के निकले मोक्ष जाते हैं. यावत तीसरी वालुक प्रभा तक इस ही प्रकार कहना. पंक

गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ णोपज्जत्त णोअपज्जत्तएणं पु
गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥१७॥ सुहुमेणं भंते ! सुहुमेति पुच्छा ? गो
जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुढवि कालो ॥ बादरेणं पुच्छा ? गोयमा! ज

वनस्पति का काल. संसार अपरित की पृच्छा ? अहो गौतम ! संसार अपरित दो प्रकार
तद्यथा-१ अनादि अनंत अभव्य, अनादि सान्त भव्य, नो परित नो अपरित नो परितापरित व
अहो गौतम ! सादी अपर्यवसित ॥ १६ ॥ सतरहवा पर्याप्त द्वार-अहो भगवन् ! पर्याप्त क
तो कितने काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो(१००)कुछ अधि
इतने काल तक अपर्याप्त अवस्था में मरे नहीं. अपर्याप्त की पृच्छा ? अहो गौतम ! अ
अन्तरमुहूर्त. नो पर्याप्त नो अपर्याप्त की पृच्छा ? सादि अनन्त है ॥ १७ ॥ सूक्ष्म की पृ
गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट पृथ्वीकाया जितना काल, बादर की पृच्छा ? जघन्य

सूत्र

अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जति भागं ॥ णो सुहुमे णो बादरेणं पुच्छा ? सादिए अपज्जवसिए ॥ १८ ॥ सण्णीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवम सतपुहुत्तं सातिरेगं ॥ असण्णीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइ कालो ॥ णोसण्णी णोअसण्णीणं पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ १९ ॥ भवसिद्धिएणं पुच्छा? गोयमा ! अणादिए सपज्जवसिए ॥ अभवसिद्धिएणं पुच्छा ? गोयमा ! अणादिए अपज्जवसिए ॥ णोभवसिद्धियणोअभवसिद्धिएणं पुच्छा ? गोयमा ! सादिए

भावार्थ

उत्कृष्ट असंख्यात काल, क्षेत्र से अंगुल के असंख्यातवे भाग क्षेत्र में आकाश प्रदेश जितना काल. नो सूक्ष्म नो बादर की पृच्छा ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित है ॥ १८ ॥ संज्ञीकी पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागर. असंज्ञी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति का काल, नो संज्ञी नो असंज्ञी की पृच्छा ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित है ॥ १९ ॥ सोलवा भव्य द्वार-भव्य सिद्धिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनादि सान्त है क्यों कि मुक्ति जावेगा. अभव्य की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनादि अनन्त है. नो भव्य सिद्धिक नो अभव्य सिद्धिक की

ताणि अंतकिरियं करेंति परंपरगयावि अंतकिरियं करेंति ॥ तेऊ वाऊ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय णो अणंतरागया अंतकिरिया पकरेंति. परंपरागया अंतकिरियं पकरेंति ॥ सेसा अणंतरागयावि अंतकिरियं करेंति,परंपरागयावि अंतकिरियं पकरेंति ॥ २ ॥ अणंतरागयाणं भंते ! णेरइया एगसमएणं केवतिया अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एगोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं दस ॥ रयणप्पभा पुढवि

अर्थ

धूम्रप्रभा के नेरिये अनन्तर मनुष्य में उत्पन्न होकर अन्तक्रिया नहीं करते हैं परंतु परम्परा से उत्पन्न हुवे कितनेक अंतक्रिया करते हैं. इस ही प्रकार नीचे सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना. असुर कुमार यावत् स्तानित कुमार, पृथ्वी, पानी, वनस्पति काया, अनन्तर मनुष्य में उत्पन्न होकर भी अन्तक्रिया करते हैं और परम्परा उत्पन्न होकर भी अन्तक्रिया करते हैं. तेउ, वायु बेइंद्रिय तेइंद्रिय चौरिंद्रिय यह अन्तर मनुष्य में उत्पन्न हुए अन्तक्रिया नहीं करते हैं परंतु परम्परागत अन्तक्रिया करते हैं. इन सिवाय और सब दंडक के जीव अन्तरगत और परम्परागत मनुष्य में उत्पन्न हो अन्तक्रिया कर सकते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी से अनंतर उत्पन्न हुवे मनुष्य में एक समय में कितने जीव अन्तक्रिया करते हैं (मोक्ष जाते हैं) अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश जीव अन्तक्रिया करते हैं. ऐसे ही दश जीव एक समय में रत्नप्रभा के निकले मोक्ष जाते हैं. यावत सीमरी वालुक प्रभा तक इस ही प्रकार कहना. पंक

मूल

कसाओ खीण कसाय वीयराग चरित्तारियाय ॥ से किंतं छउमत्थ खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया ? छउमत्थ खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सयंबुद्ध छउमत्थ खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय, बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय ॥ से किंतं सयंबुद्ध छउमत्थ खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया ? सयंबुद्ध छउमत्थ खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पढमसमय सयंबुद्ध छउमत्थ खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय, अपढम समय सयंबुद्ध छउमत्थ खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय ॥ अहवा-चरिम समय

अर्थ

उत्तर-छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद कहे हैं—स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य और बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य. प्रश्न-स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य किसे कहते हैं ? उत्तर-स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद कहे हैं—प्रथम प्रथम समय स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य और अप्रथम समय स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य, अथवा चरिम समय छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य और अचरिम समय छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य. यह स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य हुवा. प्रश्न-बुद्ध बोधित छद्मस्थ

... अंतकिरियं पकरेंति? गोयमा ! जहण्णेणं एक्का वा दो
वा उक्कोसेणं दस॥ अणंतरागयाओणं भंते ! असुरकुमारीओ एगसमएणं के
अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेण
एवं जहा असुरकुमारा सदेविया तहा जाव थणियकुमारावि ॥ अणंतरागया
पुढविकाइयाणं एगसमएणं केवइयं अंतकिरियं पकरेंति? गोयमा ! जहण्णे

समा की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट चार अन्तक्रिया करते
की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश. असुरकुमारिका देवी ज
तीन उत्कृष्ट पांच अन्तक्रिया करे, ऐसे ही यावत् स्थनित कुमार पर्यंत कहना. अहो भगवन्
पृथ्वी काया एक समय में कितने अन्तक्रिया करे ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन
ऐसे ही अपकाय के भी चार, वनस्पति काय के निकले छ सिद्ध होवे, पंचेन्द्रिय तिर्यच

मूल

वाओ निगमाओ उव्वहिता चत्तारि ॥ एवं आउकाइयाणि चत्तारि, वणप्फतिकाइ या पंचिदिय तिरिक्ख जोणियादस, तिरिक्ख जोणिणीओदस, मणुस्सादस, मणुस्सीओ वीस, वाणमन्तरा दस, वाणमतरीओ पंच, जोइसियादस, जोतिसिणीओ वीसं, वेमाणिया अट्ठसय, वेमाणिणीओ वीस ॥ २ ॥ णेरइयाणं भंते ! णेरइएहिंतो

भावार्थ

सिद्ध होवे, तिर्यचनी के निकले भी दश सिद्ध होवे, मनुष्य मर पीछा मनुष्य हो अन्तक्रिया करेतो एक समयमें दश जीव अंतक्रिया करे, वाणव्यन्तरके निकले दश जीव अन्तक्रिया करे, वाणव्यन्तर देवीके निकले पांच जीव अन्तक्रिया करे, ज्योतिषी के निकले दश सीझे, ज्योतिषी की देवी के निकले वीस सिद्ध होवे, वैमानिक देव के निकले एक सौ आठ सिद्ध होवे, और वैमानिक की देवी के निकले वीस जीव सिद्ध होवे ॥ ३ ॥ सिद्ध स्वरूपका अच्छा प्रकार खुलासा करने के लिये अर्थकार विस्तारसे वर्णन करते हैं—जिनोंने अपना अर्थ सिद्ध किया, अथवा जिनोंने सर्व कार्यों का समक्रिया उने सिद्ध कहते हैं, उन का स्वरूप मुख्य आठ द्वार द्वारा करते हैं १ प्रथम द्वार उस पद की मरूपना का सिद्ध है परंतु आकाश कुसुमवत सिद्धकी नास्ति नहीं है २ आठद्रव्य प्रमानद्वार एक समय में कितने सिद्ध होवे, ३ क्षेत्र द्वार-किस २ क्षेत्र के सिद्ध होवे ४ स्पर्श द्वार-सिद्धने कितना क्षेत्र स्पर्शा है, ५ निरंतर द्वार-कितने निरंतर सिद्ध होवे, ६ अन्तर द्वार-सिद्ध होने का कितना अन्तर पडे, ७ भव द्वार—१ उदय, २ उपशम, ३ क्षायिक, ४ क्षयोपशम ५ पारिणामिक

निरंतर सिद्ध होवे, १० अवगाहना द्वार-उत्कृष्ट अवगाहना कें दो समय तक सिद्ध होवे, मध्यम अवगाहना के आठ समय तक सिद्ध होवे, जघन्य अवगाहना के दो समय तक सिद्ध होवे, ११ उत्कृष्ट द्वार-सम्यक्त्व के अपडवाइ दो समय तक सिद्ध होवे, संख्यात काल के पडे चार समय तक सिद्ध होवे, असंख्यात काल के पडे भी चार समय लग सिद्ध होवे, अनंत काल पडे आठ समय तक सिद्ध होवे, आगे के अन्तरादि चार द्वारों का समव नहीं है. इति पांचवा द्वार. ६ छटे सिद्धी गमन अन्तर द्वार पर १६ द्वार—१ क्षेत्र द्वार—समुच्चय अढाइ द्वीप आश्रिय विरह काल जघन्य एक समय उत्कृष्ट ६ महिने, समुचय जंबुद्वीप धातकी खण्ड में जंबुद्वीप की महाविदेह में सिद्ध गति गमन का उत्कृष्ट विरह पृथक्त्व वर्ष का, पुष्करार्ध द्वीप में पुष्करार्ध के महाविदेह क्षेत्र में एक वर्ष झाझेरा का विरह, ५ भरत क्षेत्र में जन्म आश्रिय १८ कोटी सागर में कुछकम का [उत्सर्पनी का चौथा आरा दो कोटा कोट सागर कूछकम, पांचवा कोटा कोट सगार का, छठा चार कोटा कोट सागर का, यह ९ कोटा कोट सागर हुअे और सर्पनी का चार कोटा कोट सागर, दुसरा तीन कोटा कोट सागर, तीसरा दो कोटा कोट सागर में कुछकम तीर्थंकर हो मुक्ती मार्ग चलाते हैं यों १८कोटा कोट सागरमें कुछ कम का अन्तर होताहै] साहरन आश्रिय जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात सहश्र वर्ष का अन्तर २ गति द्वार—नरक गति के आये सिद्ध होने का विरह पडे तो उत्कृष्ट पृथक्त्व सहश्र वर्ष का, तिर्यंच के आये का पृथक्त्व सो वर्ष का, तिर्यंचनी का ईशान देवलोक के देवता छोड बाकी देवता, मनुष्यका, मनुष्यनीका उत्कृष्ट एकवर्ष झाझेरोका. स्वयं [illegible]

चौथे और में तो एक चरम तीर्थंकर मोक्ष जाते है) ३ गति द्वार—सिद्ध तो फक्त एक मनुष्य गति में से ही होवे हैं परन्तु प्रथमसे चौथा नरक तक के पृथवी पानी वनस्पति तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य और चारों जाति के देवताके जीवों मनुष्य होकर सिद्ध होवेहै परन्तु अन्य स्थानके नहीं ४ वेद द्वार-वर्तमान कालकी अपेक्षासे अपगतवेदी वेदका क्षय करने वाला सिद्ध होवे, और अनुभव आश्रिय तीनों वेद वाले सिद्ध होवे. ५ तीर्थ द्वार-तीर्थंकर होते तीर्थ प्रवर्तते और तीर्थंकर मोक्ष गये तीर्थव्यवच्छेद हुए दोनों वक्त सिद्ध होते हैं। ६ लिंग द्वार—द्रव्य से तो स्वलिंगी अन्यलिंगी गृहलिंगी तीनों लिंग में सिद्ध होते हैं. और भाव से तो एक स्वलिंग (जिन लिंग) में ही सिद्ध होते हैं ७ चारित्र द्वार—वर्तमान में तो एक क्षायिक यथाख्यात चारित्रसे सिद्ध होवे अनुभव आश्रिय कोइ सामायिक सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन तीन चारित्र को स्पर्श मोक्ष, कोइ सामायिक छेदोपस्थापनीय सूक्ष्मसम्पराय, इन चार चारित्र को स्पर्श कर सिद्ध होवे तथा कोइ सामायिक परिहारविशुद्ध सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यात इन चार चारित्र को स्पर्श कर सिद्ध होवे और कोइ सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहारविशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात पांचों चारित्र को स्पर्शकर सिद्ध होवे ८ बुद्ध द्वार—स्वय बुद्ध प्रत्येक बुद्ध और बुद्ध बोधित तीनों सिद्ध होवे. ९ ज्ञान द्वार—वर्तमान में एक केवल ज्ञान में सिद्ध होते हैं और पूर्वानुभव आश्रिय-कोइ मति श्रुति और केवल इन तीन ज्ञान को स्पर्शकर मोक्ष, कोइ मति श्रुति अवधि केवल ज्ञान कर सिद्ध होवे, कोइ मति श्रुति मनः पर्यव केवल ज्ञान स्पर्श कर सिद्ध होवे और कोइ मति श्रुति अवधि मनःपर्यव केवल इन पांचों ही ज्ञान स्पर्श कर सिद्ध

द्वार—मति श्रुति ज्ञान से केवली हो सिद्ध होवे उन का उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवे भाग का, मति श्रुति अवधि ज्ञानी केवली हो सिद्ध होवे उन का १ वर्ष कुछ अधिक का, शेष मति श्रुति मनःपर्यव केवली हो सिद्ध होवे तथा मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यव ज्ञानी केवलज्ञानी हो सिद्ध होवे उन का संख्याते हजार वर्ष का, जघन्य सब का एक समय का ९. अवगाहना द्वार—उत्कृष्ट जघन्य मध्यम तीनो अवगाहना का उत्कृष्ट अन्तर चउदह राजुप्रमाण लोक के घनाकार में सात राजू होते हैं उसमें एक प्रदेश की श्रेणी सात राजु की लम्बी होती है उस श्रेणि के असंख्यातवे भाग जितने आकाश प्रदेश होवे उस में से एकेक प्रदेश समय २ अपहरते जितना काल लगे उतना इन तीनों का अन्तर पडे मध्यम अवगाहना १ वर्ष का झाझेरा अन्तर पडे. ११ उत्कृष्ट द्वार—सम्यक्त्व से अपडवाइ का अन्तर उत्कृष्ट सागरोपम के असंख्यातवे भाग कर शेष संख्यात काल का पडे तथा असंख्यात काल के पडे का दोनोका संख्याते हजार वर्ष का अनन्त काल के पडवाइका एक वर्ष झाझेरा. १२ अन्तर द्वार-निरन्तर अन्तर सिद्ध हो सो जानना. १२ अणुः समय द्वार—दो समय से आठ समय तक निरन्तर सिद्ध होवे १३ संख्यात द्वार-एक हीसिद्ध १४ अन्तरद्वार-इन का उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष का, जघन्य एक समय का, इति छठा द्वार. सातवा भाव द्वार ऊपर १६ द्वार कहते हैं—सब द्वार में सिद्ध क्षेत्र जानेवाले के १५ द्वार ही में एक क्षायिक भाव ही जानना, इति सातवा द्वार आठवा अल्पाबहुत्व द्वार पर क्षेत्रादि सोलह द्वार बतारते हैं. ऊर्ध्व लोकादिक में

चौथे आरे में तो एक चरम तीर्थंकर मोक्ष जाते है) ३ गति द्वार—सिद्ध तो फक्त एक मनुष्य गति में से ही होवे हैं परन्तु प्रथम से चौथी नरक तक के पृथवी पानी वनस्पति तिर्यच पंचेन्द्रिय मनुष्य और चारों जाति के देवता के जीवों मनुष्य होकर सिद्ध होते हैं परन्तु अन्य स्थानके नहीं ४ वेद द्वार-वर्तमान कालकी अपेक्षा तो अपगतवेदी वेदका क्षय करने वाला सिद्ध होवे, और अनुभव आश्रिय तीनों वेद वाले सिद्ध होवे. ५ तीर्थ द्वार-तीर्थंकर होते तीर्थ प्रवर्तते और तीर्थंकर मोक्ष गये तीर्थव्यवच्छेद हुवे दोनों वक्त सिद्ध होते हैं। ६ लिंग द्वार—द्रव्य से तो स्वलिंगी अन्यलिंगी गृहलिंगी तीनों लिंग में सिद्ध होते हैं. और भाव से तो एक स्वलिंग (जिन लिंग) में ही सिद्ध होते हैं ७ चारित्र द्वार—वर्तमान में तो एक क्षायिक यथाख्यात चारित्रसे सिद्ध होवे अनुभव आश्रिय कोइ सामायिक सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन तीन चारित्र को स्पर्श सीझे, कोइ सामायिक छेदोपस्थापनीय सूक्ष्मसम्पराय, इन चार चारित्र को स्पर्श कर सिद्ध होवे तथा कोइ सामायिक परिहारविशुद्ध सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यात इन चार चारित्र को स्पर्श कर सिद्ध होवे और कोइ सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहारविशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात पांचों चारित्र को स्पर्शकर सिद्ध होवे. ८ बुद्ध द्वार—स्वयं बुद्ध प्रत्येक बुद्ध और बुद्ध बोधित तीनों सिद्ध होवे. ९ ज्ञान द्वार—वर्तमान में एक केवल ज्ञान में सिद्ध होते हैं और पूर्वानुभव आश्रिय-कोइ मति श्रुति और केवल इन तीन ज्ञान को स्पर्शकर सीझे, कोइ मति श्रुति अवधि केवल ज्ञान कर सिद्ध होवे, कोइ मति श्रुति मनः पर्यव केवल ज्ञान स्पर्श कर सिद्ध होवे और कोइ मति श्रुति अवधि मनःपर्यव केवल इन पांचों ही ज्ञान स्पर्श कर सिद्ध

क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने. अब धातकी खण्ड के क्षेत्र का विभाग करते हैं-सब से थोडे चुल हेमवंत शिखरी पर्वत पर हुवे सिद्ध, उस से महा हेमवंत रूपी पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से निषध नीलवंत पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से हेमवय एरणवय के हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से देव कुरु उत्तर कुरु क्षेत्र में हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से हरीवास रम्यकवास क्षेत्र में हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से भरत ऐरावत क्षेत्र के हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से महा विदेह क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने. अब पुष्करार्ध क्षेत्र का कहते हैं—सब से थोडे हेमवंत शिखरी पर्वत पर हुवे सिद्ध, उस से महा हेमवंत रूपी पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से नीषध नीलवंत पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से हेमवय एरणवय क्षेत्र में हुवे सिद्ध असंख्यातगुने, उस से देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से हरीवास रम्यकवास क्षेत्र में हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से भरत ऐरावत क्षेत्र के हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से महा विदेह क्षेत्र के हुवे संख्यातगुने, (उक्त सर्व स्थानों में भरतैरावत और महाविदेह क्षेत्र छोड कर बाकी के सर्व स्थानों में साहरन आश्रिय सिद्ध होना समझना) अब तीन क्षेत्र के समुच्चय और सब क्षेत्र पर्वत मिलाकर अल्पाबहुत्व कहते हैं—१ सब से थोडे जबुद्वीप के चुल्लहिमवंत शिखरी पर्वत के सिद्ध, २ उस से हेमवय एरणवय क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, ३ उस से महाहिमवंत रूपी पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यात गुने, ४ उस से देवकुरु उत्तर कुरु के हुवे सिद्ध संख्यात गुने, ५ उस से हरीवास रम्यकवास के हुवे सिद्ध

आदिय) अर्थात् हायमान काल के पहिले आरे में १० दूसरे आरे में १० छठे आरे में १०, वर्द्धमान काल के पहिले आरे में १०, दूसरे में १०, पांचवे में १०, और छठेमें १०. ३ गति द्वार-रत्नप्रभा शर्कर प्रभा बालुकप्रभा के निकले १० सिद्ध होवे. पंकप्रभा के निकले ४ सिद्ध होवे, समुचय तिर्यंच गति के निकले १० सिद्ध होवे. पंचेन्द्रिय के निकले १० सिद्ध होवे. तिर्यंचनी के भी १० सिद्ध होवे, पृथ्वी पानी के निकले चार २ सिद्ध होवे. वनस्पति के निकले ६ सिद्ध होवे, मनुष्य के मनुष्य हो २० सिद्ध होवें, पुरुष के आये १० सिद्ध होवे, स्त्री के आये २० सिद्ध होवे, समुचय देवगति के आये १०८ सिद्ध होवे. भवनपति के आये १० सिद्ध होवे, भवनपति के देवी के ५ सिद्ध होवे, व्यन्तर के आये १० सिद्ध होवे, व्यन्तरनी के ५ सिद्ध होवे, ज्योतिषी के १० सिद्ध होवे, ज्योतिषीनी के २०, वैमानिक के १०८, वैमानिक की देवी के २० ॥ ४ वेदद्वार—एक समय में स्त्री के २० सिद्ध होवे, पुरुष १०८ सिद्ध होवे, नपुंसक १० सिद्ध होवे ५ तीर्थ द्वार-तीर्थंकर एक समयमें ४ सिद्ध होवे, स्त्री तीर्थंकर एक समय में २ सिद्ध होवे, स्वयंबुद्धी ४ सिद्ध, बुद्ध बोधित १०८ सिद्ध होवे, अतीर्थंकर १०८ सिद्ध होवे. ६ लिंगद्वार—गृहलिंग ४ सिद्ध होवे. अन्यलिंगी १० सिद्ध होवे, स्वलिंगी १० सिद्ध होवे, ७ चारित्रद्वार—सामायिक सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन तीन चारित्र को स्पर्शनेवाले १० सिद्ध होवे, सामायिक, परिहार विशुद्ध, सूक्ष्म सम्पराय व यथाख्यात इन चार चारित्र के स्पर्शक १० सिद्ध होवे, सामायिक छेदोप स्थापनीय परिहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय और यथाख्यात इन पांचों चारित्र को स्पर्शने वाले भी १० सिद्ध होवे. ८ बुद्ध द्वार—बुद्ध बोधित

सुखमादुःखम आरे के सिद्ध असंख्यातगुने, ४ उस से सुखम आरे के सिद्ध विशेषाधिक, ५ उस से सुखमासुखम आरे के सिद्ध विशेषाधिक (विशेष कालकी अपेक्षा) ६ दुःखमासुखम आरे के सिद्ध संख्यातगुने, अब उत्सर्पिणी काल आश्रिय-सब से थोडे दुःखमादुःखम आरे के, उस से दुःखम आरे के संख्यातगुने, उस से सुखमादुःखम आरे के संख्यातगुने, उस से सुखम आरे के विशेषाधिक, उस से सुखमासुखम आरे के विशेषाधिक, उस से दुःखमासुखम आरे के संख्यातगुने. अब दोनोंकी मिलाकर अल्पाबहुत्व कहते हैं-१ सब से थोडे दुःखमादुःखम दोनों काल के परस्पर तुल्य, २ उस से वर्धमान काल के दूसरे आरा दुःखम के विशेषाधिक, ३ उस से हायमान काल के दुःखम पांचवे आरे के संख्यातगुने, ४ उस से दोनों काल सुखम दुःखम आरे के परस्पर तुल्य असंख्यातगुने, ५ उस से दोनों सुखम आरे के सिद्ध परस्पर तुल्य विशेषाधिक, ६ उस से दोनों सुखमासुखम आरे के परस्पर तुल्य विशेषाधिक, ७ दोनों दुःखम सुखम आरे के परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ८ उस से हायमान काल के सिद्ध संख्यातगुने, क्योंकि इस के तीनों आरे में सिद्ध होने की अधिकता है ॥ २ ॥ तीसरा गति द्वार-सब से थोडे मनुष्यनी के निकले सिद्ध, २ उस से मनुष्य के निकले पुरुष नपुंसक से सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३ उस से नरक के सिद्ध संख्यातगुने, ४ उस से तिर्यचनी के निकले सिद्ध संख्यातगुने, ५ तिर्यंच पुरुष के नपुंसक के सिद्ध संख्यातगुने, ६ समुच्चय देवी के सिद्ध संख्यातगुने, ७ उस से देवता के सिद्ध संख्यातगुने, १ सब से थोडे एकेन्द्रिय के निकले

समय तक सिद्ध होवे चौथे समय अन्तर पडे, ९७ से १०२ पर्यन्त दो समय तक सिद्ध होवे फिर तीसरे समय अन्तर पडे, और १०३ से १०८ तक एक समय में सिद्ध होवे फिर दूसरे समय में अन्तर पडे यहां यह अनुसमय और अन्तर द्वार सामिल ही कहे हैं. संख्या द्वार—पूर्वोक्त प्रकार, अल्पाबहुत्व आगे कहेंगे. इति दूसरा प्रमाण द्वार समाप्त हुवा ॥ २ ॥ तीसरे क्षेत्र द्वार पर क्षेत्रादि १६ द्वार उतारते हैं—१ क्षेत्र द्वार—१५ कर्मभूमी के ३० अकर्म भूमी ५६ अन्तरद्वीप इन अढाइ द्वीप के १०१ क्षेत्र में तथा दो समुद्र में से मोक्ष जाते हैं अन्य स्थान से नहीं जाते हैं. इस पर एक ही द्वार लागू होता है. बाकी द्वार लागु नहीं होते हैं. इति तीसरा द्वार समाप्त हुवा ॥ ३ ॥ चौथा स्पर्शन द्वार पर १६ द्वार—जो अनन्त सिद्ध आगे हुवे हैं वे सब जीव के प्रदेश कर स्पर्शे हैं वे असंख्यातगुने. एक सिद्ध की अवगाहना में अनन्त सिद्ध स्पर्श कर रहे हैं और द्वार इस में नहीं लगते हैं ॥ ४ ॥ पांचवा काल द्वार कहते हैं—उस पर क्षेत्रादि १६ द्वार उतारते हैं—क्षेत्र द्वार—१५ कर्मभूमी के क्षेत्र में उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होवे तहां आठ समय तक निरन्तर सिद्ध होवे, हरिवासादि क्षेत्र में अधोलोक में चार समय तक निरन्तर सिद्ध होवे, वागादि, ऊर्ध्व लोक में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, सूषमसूसम और सूसम आरे में चार समय तक निरन्तर सिद्ध होवे सुसमदुसम और दुसम में दुसम सुसम में आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, दुसमादुसम आरे में चार समय तक सिद्ध होवे, उत्सर्पिणी के वर्धमान काल में दुसमादुसम में और दुसम में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, ऐसे ही दुसम में भी

सिद्ध अनंत गुनहीन, यों पचास के आगे अनंत गुनहीन कहना. तथा जिस २ स्थान बीस २ सिद्ध होवे वहां ऐसा कहना—सब से ज्यादा एकेक समय में एकेक सिद्ध, उस से दो २ सिद्ध संख्यातगुने, तीन २ सिद्ध संख्यातगुने कमी, चार २ सिद्ध संख्यातगुने कमी, पांच २ सिद्ध संख्यातगुने कमी, उस से छ २ सिद्ध असंख्यातगुने कमी, सात २ असंख्यातगुने कमी, आठ २ असंख्यातगुने कमी, नव २ असंख्यातगुन कमी, दश २ असंख्यातगुने कमी, इग्यारे २ अनंतगुन हीन, यावत् वीस २ सिद्ध से अनंतगुन हीन. ऐसे ही अधो लोकादिक के भी कहना क्योंकि वहां भी वीस२सिद्ध होवेहैं. यों सर्व स्थान प्रथम चौथे भाग में संख्यातगुन हीन, दूसरे चौथे भाग में असंख्यातगुन हीन, और तीसरे चौथे भाग में अनंतगुन हीन कहना और भी जहां दश २ सिद्ध होवे वहां एकेक सिद्ध हुवे सब से ज्यादा, उस से दो २ सिद्ध संख्यातगुने कम, उस से तीन २ सिद्ध संख्यातगुने कमी, उस से चार २ सिद्ध असंख्यातगुन कमी, उस से पांच २ सिद्ध असंख्यातगुन हीन. उस से छ २ अनंतगुन हीन, यावत् दश २ सिद्ध अनंतगुनहीन ऊर्ध्व लोक में चार ही सिद्ध होते हैं वहां एकेक सिद्ध सब से ज्यादा, दो २ सिद्ध असंख्यातगुन कमी, तीन २ और चार २ सिद्ध अनंतगुन हीन, यहां संख्यातगुन हीन नहीं कहना. समुद्र में एक समय में दो ही सिद्ध होवे हैं उस में सब से ज्यादा एकेक सिद्ध, उस से दो २ सिद्ध अनंतगुने कमी. जहां दो यावत् आठ तक सिद्ध होते हैं वहां ऐसा कहना—सब से ज्यादा एकेक सिद्ध, उस से दो २ संख्यातगुने कमी, उस से तीन २ सिद्ध संख्यातगुन हीन, चार२ सिद्ध असंख्यातगुन हीन, उस से पांच २ सिद्ध

सूत्र

छउमत्थ खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय ॥ सेत्तं बुद्धबोहिअ छउमत्थ खीण कसाय वीयराग चरित्तारिया ॥ सेत्तं छउमत्थ खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया ॥ सेकिंतं केवली खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया ? केवली खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—सजोगी केवली खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय, अजोगी केवली खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय ॥ सेकिंतं सजोगी केवली खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया ? सजोगी केवलि खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पढमसमय सजोगी केवलि खीणकसाय

अर्थ

उत्तर-केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद कहे हैं—सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य और अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य. प्रश्न—सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद कहे हैं—प्रथम समय सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य और अप्रथम समय सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य अथवा चरिम समय सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य और अचरिम समय सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य. अब सयोगी

... णिरंतरं जाव चउरिंदिएसु पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ असुरकुमारेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे
इएणं भंते ! णेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता पंचिंदिए तिरिक्खजोणिएसु उवव-
ज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा ॥ जेणं भंते ! णेर-
रइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु उववज्जेज्जा सेणं भंते !
वलि पण्णत्तं धम्म लभेज्जा सवणयाए? गोयमा! अत्थेगइया लभेज्जा अत्थेगइया णो

से छे ६ सिद्ध अनंतगुनहीन, उस से सात २ सिद्ध अनंतगु हीन, और उस से आठ २ सिद्ध
मे हुवे अनंतगुनेहीन-कमी जानना. यह सिद्ध भगवंत का स्वरूप विस्तृत अर्थ पाछी पन्नवना
प आगे पर्याय पलटकर कहां २ उत्पन्न होते हैं उस का चौथा द्वार सूत्र से कहते हैं ॥ + ॥
! नेरीये नारकी से निरंतर निकलकर पुनःनरक में उत्पन्न होते हैं ...
धि नहीं अर्थात् उत्पन्न नहीं होवे हैं. अहो ...
उत्पन्न होते हैं क्या ? ...

गोयमा ! ...

उववज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उववज्जा अत्थेगतिए णो

अर्थ

हो गौतम ! करते हैं. अहो भगवन् ! जो मति श्रुति ज्ञान युक्त होते हैं वे पांच अ
शिक्षा व्रत, पाप से निवृत्ति रूप प्रत्याख्यान करके पौषधोपवासादि अंगीकार करने
अहो गौतम ! कितनेक समर्थ होते हैं कितनेक समर्थ नहीं भी होते हैं, अहो भग
पौषधोपवास करने समर्थ होते हैं वे अवधिज्ञान को प्राप्त करसकते हैं क्या ? अह
करसकते हैं कितनेक नहीं भी प्राप्त करसकते हैं. अहो भगवन् ! जो अवधिज्ञान
गृहस्थावास छोड साधुपना धारन करने को समर्थ होते हैं क्या ? अहो गौतम !
अर्थात् साधुपना नहीं ले सकते हैं. अहो भगवन् ! नरक में से निरंतर निकल क

णो ! उवयज्जा सेणं भंते ! केवली पण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए? गोयमा ! अहा पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु जाव जेणं भंते ! ओहिणाणं उप्पाडेज्जा सेणं संचाएज्जा मुंड भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? गोयमा ! अत्थेगतिए संचाएज्जा अत्थेगतिए णो संचाएज्जा ॥ जेणं भंते ! संचाएज्जा अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए सेणं भंते ! मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उप्पाडेज्जा अत्थेगतिए णो उप्पाडेज्जा ॥ जेणं भंते ! मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा सेणं भंते ! केवलणाणं उप्पाडेज्जा

या ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होते हैं कितनेक नहीं भी होते हैं. अहो भगवन् ! जो मनुष्य में उत्पन्न होते हैं वे केवली भाषित धर्म को श्रवण कर अंगीकार करते हैं क्या ? अहो गौतम ! जिस प्रकार तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कहा वैसा यहां भी सब कहना यावत् अवधिज्ञान प्राप्त करते हैं वहां तक अहो भगवन् ! जो अवधि मनुष्य हो अवधी ज्ञान प्राप्त करते हैं वे मुंडित हो गृहस्थावास को छोड साधु बनने को समर्थ होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक समर्थ होते हैं कितनेक नहीं भी होते हैं अहो भगवन् ! जो मुंडित होते साधु बनने समर्थ होते हैं वे मनःपर्यव ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक [illegible]

...तावणियाकिरियाए पुट्ठे, पाणाइवायकिरियाए पुट्ठे ? गोयमा ! अत्थेगति जीवे एगतियाओ जीवाओ जंसमयं काइयाए अधिगरणियाए पाओसियाए किरियाए पुट्ठे तं समयं परितावणियाए किरियाए, पुट्ठे पाणाइवायाए पुट्ठे ॥१॥ अत्थे गतिए जीवे एगतियाओ जीवाओ जंसमयं काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए किरियाए पुट्ठे तंसमयं परितावणियाए पुट्ठे, पाणाइवायकिरियाए अपुट्ठे ॥ २ ॥ अत्थेगतिए जीवे एगतियाओ जीवाओ जंसमयं काइयाए अधिगरणियाए पाउसियाए पुट्ठे तंसमयं परितावणियाए अपुट्ठे, पाणाइवायाए अपुट्ठे ॥ ३ ॥ अत्थेगइए

क्रिया को स्पर्शता है उस समय परितापनीकी और प्राणातिपातकी क्रिया से भी स्पर्शता है क्या ? अहो गौतम ! कितनेक जीव तो एक जीव की अपेक्षा जिस समय में कायिकी अधिकरण की इसकी क्रिया से स्पर्शते हैं उस ही समय परितापकी और प्राणातिपात की क्रिया से स्पर्शते हैं २ और कितनेक जीव एक जीव की अपेक्षा जिस समय कायिकी अधिकरणीय प्रद्वेषी की क्रिया को स्पर्शते हैं उस समय में परितापनी की क्रियासे स्पर्शते हैं और प्राणातिपातकी क्रिया नहीं स्पर्शते हैं ...
... जीव से जिस समय कायिकी अधिकरणी ...

इणट्ठे समट्ठे ॥ ४ ॥ ... असुरकुमारेण भंते ! ...
गोयमा ! णो इणट्ठेसमट्ठे ॥

अर्थ

अहो गौतम ! कितनेक प्राप्त करते हैं कितनेक नहीं भी करते हैं. अहो भगवन् ! जो
करते हैं वे सिद्ध बुद्ध मुक्त हो सब दुःख का अन्तः करते हैं क्या ? अहो गौतम ! वे
सब दुःख का अन्त करते हैं. अहो भगवन् ! नेरीये से निरंतर निकल कर
वैमानिक देव में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अर्थात्
में उत्पन्न नहीं होते हैं. इति नरक के दंडक पर चौवीस ही दंडक की फलवक्तव्य
असुरकुमार देव की कहते हैं—अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता निरंतर निकल क
हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् उत्पन्न नहीं होते हैं. अहो
देवता निरंतर असुरकुमार से निकलकर पुनः असुरकुमार में उत्पन्न होते हैं क्या ?

सुमट्ठे॥एवं जाव थणियकुमारेसु॥ असुरकुमारेणं भंते! असुर कुमारेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता पुढविकाइएसु उववज्जेज्जा? हंता गोयमा! अत्थेगतिए उववज्जेज्जा अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा॥ जेणं भंते! उववज्जेज्जा सेणं भंते! केवलि पण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥ एवं आउ वणस्सतिकाइएसुवि असुरकुमारेणं भंते! असुरकुमारेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता तेउवाउ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिएसु उववज्जेज्जा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे अवसेसेसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियाइसु

समर्थ नहीं ऐसे ही यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त कहना. अहो भगवन्! असुरकुमार देवता निरंतर निकल कर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं क्या? अहो गौतम! कितनेक उत्पन्न होते हैं कितनेक नहीं भी उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! जो असुरकुमार पृथ्वी कायमें उत्पन्न होते हैं वे केवली प्रणित धर्म श्रवणकर प्रतिबोध पा सकते हैं क्या? अहो गौतम यह अर्थ समर्थ नहीं, ऐसे ही अप्कायका भी कहना और वनस्पति काय का भी कहना. अहो भगवन्! असुरकुमार देवता निरंतर निकलकर तेउकाय, वायुकाय, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय में उत्पन्न होता है क्या? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं. अवशेष तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक का जैसा नरक का कहा वैसा असुरकुमार का भी कहना और जिस

तस्स परिग्गहिया किरिया सिय कज्जइ सिय णो कज्जइ, जस्स पुण परिग्गहि[illegible]
कज्जइ तस्स आरंभिया किरिया णियमा कज्जति॥जस्सणं भंते! जीवस्स आरंभिय[illegible]
कज्जति तस्स मायवत्तिया किरियाकज्जति पुच्छा ? गोयमा ! जस्सणं
आरंभिया किरिया कज्जति तस्सणं मायावत्तिया किरिया णियमा

अर्थात् चौवीस ही दंडक में पांचों क्रिया लगती हैं. अब परस्पर यह पांच क्रिया कहते [illegible]
वन् ! जिस को आरंभिका क्रिया लगती है उस को परिग्रह की भी क्रिया लगती है क्या[illegible]
परिग्रह की क्रिया लगती है उस को आरंभ की क्रिया लगती है क्या ? अहो गौतम !
आरंभ की क्रिया लगती है उस जीव को परिग्रह की क्रिया स्यात् लगती है स्यात् नहीं
क्योंकि प्रमत्त संयति को अशनादिकी अनुमोदना से आरंभ की क्रिया तो लगती है परंतु प[illegible]
लगती है. और जिस को परिग्रही क्रिया लगती है उसको आरंभिका क्रिया [illegible]

रयणप्पभा पुढवि णेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता तित्थगरत्तं णो लभेज्जा से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति अत्थेगतिए लभेज्जा अत्थेगतिए णो लभेज्जा ॥ एवं जाव वालुयप्पभा पुढवि णेरइएहिंतो तित्थगरत्तं लभेज्जा ॥ पंकप्पभा पुढवि णेरइएणं भंते ! पंकप्पभा पुढवि णेरइए हिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता तित्थगरं तं लभेज्जा? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे अंतकिरियं पुण करेज्जा ॥ धूमप्पभा पुढवि णेरइएणं पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे विरतिपुण लभेज्जा ॥ तमाए भंते ! पुच्छा ? गोयमा !

है जैसा रत्नप्रभा का कहा वैसा ही शर्करप्रभा और बालुकप्रभा का भी कहना. अहो भगवन् ! पंकप्रभा पृथ्वी के नरीये पंकप्रभा पृथ्वी मे निरंतर निकल कर तीर्थंकरपना प्राप्त कर सकते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं परंतु केवल ज्ञान प्राप्त कर अन्तक्रिया (मोक्ष) प्राप्त कर सकते हैं. धूम्रप्रभा नरक की पृच्छा ? अहो गौतम ! तीर्थंकरपना और केवल ज्ञान तो प्राप्त नहीं कर सकते हैं. परंतु सर्व विराति (साधु) पना प्राप्त कर सकते हैं तमप्रभा नरक की पृच्छा ? अहो गौतम ! तीर्थंकर पद केवलज्ञान और साधु पना तो प्राप्त नहीं कर सकते हैं परंतु विरताविरति; [श्रावक] पना प्राप्त कर सकते हैं. नीचे सातवी नरक की पृच्छा ? अहो गौतम ! तीर्थंकर पद केवलज्ञान साधुपना और श्रावक पना तो नहीं प्राप्त कर

मूल

णो इणट्ठे समट्ठे, तित्थयरत्तं पुण लभेज्जा ॥ अहे सत्तमाए पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सम्मत्तं पुण लभेज्जा ॥ असुरकुमाराणं पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, अंतकिरियं पुण करेज्जा ॥ एवं णिरंतरं जाव आउकाइए ॥ तेउकाइएणं भंते ! तेउकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मणुस्सेसु उववज्जेज्जा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, एवं वाउकाइएवि ॥ वणस्सतिकाइएणं पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, अंतकिरियं पुण करेज्जा ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, मणपज्जव णाणं जाव उप्पाडेज्जा, पंचिंदिय

अर्थ

सकते हैं परंतु सम्यक्त्वही हो सकते हैं. असुरकुमार की पृच्छा ? तीर्थंकर पना तो प्राप्त नहीं कर सकते हैं परंतु केवली हो अन्तक्रिया कर सकते हैं. ऐसे ही दशों ही भवनपति का जानना. और ऐसे ही पृथ्वीकाय, अप्काय वनस्पतिकाय का जानना, अहो भगवन् ! तेजस्काय तेजस्काय से निरन्तर निकल कर मनुष्य में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् नहीं होते हैं परंतु तिर्यंच होकर केवली भाषित धर्म श्रवण करना प्राप्त कर सकते हैं. ऐसे ही वायुकाय का भी कहना. बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिन्द्रिय की पृच्छा ? अहो गौतम ! तीर्थंकरपना तो प्राप्त नहीं कर सकते हैं परंतु मनःपर्यव ज्ञान तक प्राप्त कर सकते हैं, पंचेन्द्रिय तिर्यंच मनुष्य वाणव्यन्तर ज्योतिषी की पृच्छा ? अहो गौतम ! तीर्थंकर पद

...दंसणवत्तिया किरिया कज्जति तस्स एता चत्तारि णियमा कज्जति ॥ एवं जाव थणियकुमारस्स ॥ पुढविकाइयस्स जाव चउरिंदियस्स पंचवि परोप्परं नियमा कज्जति, पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स आदिल्लायाओ तिण्णिवि परोप्परं नियमा कज्जति, जस्स एयाओ कज्जति तस्स उवरिल्लातो दोइ भज्जति, जस्स उवरिल्लाओ दोण्णि कज्जति तस्स एताओ तिण्णिवि नियमा कज्जति ॥ जस्स अपच्चक्खाण किरिया तस्स मिच्छादंसण वत्तिया किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति, जस्सपुण मिच्छादंसणवत्तिया

अर्थ

लगती है उस को चारों क्रिया निश्चय मे लगती है, जैसे यह क्रिया का विधान कहा इस ही प्रकार एक नरक का दंडक और दश भुवनपति के दश दंडक यों दंडक कहना. पृथ्वीकाया से यावत् चौरिंद्रिय तक पांचों ही क्रिया नियमा मे लगती है, तिर्यंच पंचेंद्रिय के पहिले की तीनों क्रिया तो परस्पर नियमा मे लगती है और जो इन तीन क्रिया का करता है उस के ऊपर की दो क्रिया की भजना. किसी को लगे किसी को नहीं भी लगे. और जिस के ऊपर की दो क्रिया लगती है उस के नीचे की तीन क्रिया निश्चय मे लगती है. जिस के अप्रत्याख्यानी क्रिया लगती है उस के मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी क्रिया स्यात् लगती है स्यात् नहीं लगती है, और जिस को मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी क्रिया लगती है...

सूत्र

वीयराग चरित्तारियाय, अपढम समय सजोगी केवलि खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय अहवा चरिम समय सजोगी केवलि खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय, अचरिम समय सजोगी केवली खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय ॥ सेत्तं सजोगी केवलि खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया ॥ सेकिंतं अजोगी केवलि खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया ? अजोगी केवली खीणकसाय वीयराग चरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पढमसमय अजोगी केवलि खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय, अपढम समय अजोगी केवलि खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय ॥ अहवा चरिम समय अजोगी केवलि खीणकसाय वीयराग चरित्तारियाय अचरिम समय अजोगी

अर्थ

केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य हुवा. प्रश्न-अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य किसे कहते हैं ? उत्तर-अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद कहे हैं-प्रथम समय अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य और अप्रथम समय अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य. अथवा चरिम समय अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य और अचरिम समय अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य. यह अयोगी केवली क्षीण कषाय

किरिया कज्जति, तस्स अपच्चक्खाण किरिया नियमा कज्जति ॥ मणुस्सस्स जहा जीवस्स ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियस्स जहा नेरइयस्स ॥ २९ ॥ जं समयंणं भंते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तं समयं परिग्गहिया किरिया कज्जति, एवं एते जस्स जं समयं जं देसं जं पएसं चत्तारि दंडगा णेयव्वा ॥ जहा नेरइयाणं तहा सव्वदेवाणं णेयव्वं, जाव वेमाणियाणं ॥ ३० ॥ अत्थिणं भंते ! जीवाणं पाणाइवाय वेरमणे कज्जति? हंता गोयमा! अत्थि ॥ कम्हाणं भंते! जीवाणं पाणातिवाय वेरमणे कज्जति ?

अप्रत्याख्यानी क्रिया नियमा से लगती है. मनुष्य का कथन जिस प्रकार समुच्चय जीव का कहा तैसा कहना. वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक का कथन जैसा नारकी का कहा तैसा कहना ॥ २९ ॥ अब काल आश्रित कहते हैं—अहो भगवन् ! जिस समय जीव आरंभिया क्रिया करता है उस समय में परिग्रही क्रिया करता है और जिस समय परिग्रही क्रिया करता है उस समय आरंभिया क्रिया करता है क्या? अहो गौतम! यों ही चार प्रकार १ समुच्चय, २ जिस समय, ३ जिस देश, और ४ जिस प्रदेश यों चारों ही दंडक. जिस प्रकार नारकी का कहा उस ही प्रकार सब देवता का भी कहना यावत् वैमानिक पर्यंत ॥ ३० ॥ अब निवृत्ति अधिकार कहते हैं—अहो भगवन् ! जीव को प्राणातिपात की निवृत्ति होती है क्या ? अहो गौतम ! होती है. अहो भगवन् ! किस प्रकार प्राणातिपात की निवृत्ति होती है ? अहो गौतम !

..., पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेणंऊणयं, उक्कोसेणं ... जहण्णेणं सागरो-
ति, अंतराइयस्सणं भंते! पुच्छा? गोयमा! जहा णाणावरणिज्जस्स तंचेव पडिपुण्णं
पडिपुण्णंबंधति ॥ १९ ॥ बेइंदियाणं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स जाव उक्कोसेणं
बंधति? गोयमा! जहण्णेणं सागरोवम पण्णवीसाए तिण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स

...क्कृष्ट एक भाग पूर्ण. अन्तराय कर्म का ज्ञानावरणीय कर्म जैसा ही कहना यावत् उत्कृष्ट पूरी
...कर. एकेन्द्रिय के १४८ प्रकृति में से १ सम्यक्त्व मोहनीय, २ मिश्र मोहनीय, ३ नरकायु, ४ देवायु,
...देवगति, ७ वैक्रेय शरीर, ८ वैक्रेय अंगोपांग, ९ वैक्रेय बंधन, १० आहारक शरीर, ११ आहारक अंगो-
...बंधन. १४ आहारक संघातन, १५ नरकानुपूर्वी, १६ देवाणुपूर्वी, और १७ तीर्थंकरनाम
... का बंध एकेन्द्रिय के नहीं होता है, बाकी १३१ प्रकृति का बंध होता है ॥ १९ ॥ अहो
... के जीव के ज्ञानावरणीय कर्मकी कितनी प्रकृति का कितना स्थिति बंध होता है ?

सागरोवमस्स सत्त भागेणय अभिहियंबधति, एवं मणुस्साउयस्सवि, तिरिक्खजोणियगतिनामाए जहा नपुंसगवेदस्स, मणुयगतिनामाए जहा सातावेदणिज्जस्स, एगिंदियजातिनामाए पंचिंदियजातिनामाएय, जहा नपुंसगवेदस्स, बेइंदिय तेइंदिय जातिनामाए जहण्णेणं सागरोवमस्स, णवपणतिसातिभागे पलिओवमस्स, असंखेज्जतिभागेणं ऊणगे उक्कोसेणं तंचेव पडिपुण्णेबंधति चउरिंदियनामाएवि जहण्णेणं सागरोवमस्स णवपण्णतीसातिभागे पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेणंऊणगता उक्कोसेणं तंचेव पडिपुण्णेबंधति, एवं जत्थ

जैसा साता वेदनीय का कहा. एकेन्द्रिय पंचेन्द्रिय जाति नामका नपुंसक वेद जैसा कहना. बेन्द्रिय तेन्द्रिय जाति नाम का जघन्य एक सागरोपम के पैंतीस वें नव भाग पल्योपम का असंख्यातवां भाग कम, उत्कृष्ट नव भाग प्रतिपूर्ण. चौरिन्द्रिय नाम का जघन्य एक सागरोपम के पैंतीस भाग में के नव भाग पंचेन्द्रिय का असंख्यातवा भाग कम. उत्कृष्ट नव भाग पूर्ण. इस प्रकार ही जहां जघन्य साती दो भाग तीन भाग चार भाग, अठावीसवे सात भाग होवे वहां जघन्य तो उतनी ही पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम करना और उत्कृष्ट प्रति पूर्ण करना (पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम नहीं कहना] जहां सातीया एक भाग देढ भाग वहां वैसा ही कहना (पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम कहना) उत्कृष्ट प्रति पूर्ण करना. यशोकीर्ति ...

किरिया कज्जति, तस्स अपच्चक्खाण किरिया नियमा कज्जति ॥ मणुस्सस्स जहा जीवस्स ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियस्स जहा नेरइयस्स ॥ २९ ॥ जं समयंणं भंते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तंसमयं परिग्गहिया किरिया कज्जति, एवं एते जस्स जंसमय जंदेसं जंपदेसेणय चत्तारि दंडगा णेयव्वा॥ जहा नेरइयाणं तहा सव्वदेवाणं णेयव्वं, जाव वेमाणियाणं ॥ ३० ॥ अत्थिणं भंते ! जीवाणं पाणाइवाय वेरमणे कज्जति? हंता गोयमा! अत्थि ॥ कम्हाणं भंते! जीवाणं पाणातिवाय वेरमणे कज्जति ?

अप्रत्याख्यानी क्रिया नियमा से लगती है. मनुष्य का कथन जिस प्रकार समुच्चय जीव का कहा तैसा कहना. वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक का कथन जैसा नेरीये का कहा तैसा कहना ॥ २९ ॥ अब काल आश्रिय कहते हैं—अहो भगवन् ! जिस समय जीव आरंभिया क्रिया करता है उस समय में परिग्रही क्रिया करता है और जिस समय परिग्रही क्रिया करता है उस समय आरंभिया क्रिया करता है क्या? अहो गौतम! यों इस प्रकार १ समुच्चय, २ जिस समय, ३ जिस देश, और ४ जिस प्रदेश यों चारों ही दंडक. जिस प्रकार नेरीये का कहा उस ही प्रकार सब देवता का भी कहना यावत् वैमानिक पर्यंत ॥ ३० ॥ अब निवृत्ति अधिकार कहते हैं—अहो भगवन् ! जीव को प्राणातिपात की निवृत्ति होती है क्या ? अहो गौतम ! होती है. अहो भगवन् ! किस प्रकार प्राणातिपात की निवृत्ति होती है ? अहो गौतम !

वंधति,अंतराइयस्सणं भंते! पुच्छा? गोयमा! जहा णाणावरणिज्जस्स जाव उ
तंचेव पडिपुण्णंबंधति ॥ १९ ॥ बेइंदियाणं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स
किं बंधति? गोयमा! जहण्णेणं सागरोवम पण्णवीसाए तिण्णिसत्तभागा पलिओ

भाग कम, उत्कृष्ट एक भाग पूर्ण. अन्तराय कर्म का ज्ञानावरणीय कर्म जैसा ही कहना याव
प्रतिपूर्ण बंध करे. एकेन्द्रिय के १४८ प्रकृति में से १ सम्यक्त्व मोहनीय,२ मिश्र मोहनीय, ३ नरक
५ नरकगति,६ देवगति,७ वैक्रिय शरीर,८ वैक्रिय अंगोपांग, ९ वैक्रिय बंधन, १० आहारक शरीर, ११ आ
१२ आहारक बंधन. १४ आहारक संघातन, १५ नरकानुपूर्वी, १६ देवाणुपूर्वी, और १७
इन १७ प्रकृति का बंध एकेन्द्रिय के नहीं होता है, बाकी १३१ प्रकृति का बंध होता है ॥
भगवन्! बेइन्द्रिय के जीव के ज्ञानावरणीय कर्मकी कितनी प्रकृति का कितना स्थिति

सप	एक	बंध
३	३	०
३	३	१
३	३	३
३	३	बंधक
३	३	अ०
३	३	१
३	३	३

सात	एक	आठ	छ
३	३	१	१
३	३	१	३
३	३	३	१
३	३	३	३

...१ बंधगाय, एगविह बंधगाय, अबंधगाय ॥ अहवा १ सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगेय छव्विह बंधएय, २ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविहबंधगाय अट्ठविहे बंधगेय, छव्विह बंधगाय, ३ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय छव्विह बंधगेय, ४ अहवा सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय

दूसरा न होवे. इस आश्रिय एक संयोगी ६ भांगे कहते हैं. १ सात के बंधक भी बहुत. एक के बंधक भी बहुत २ अथवा सात के बंधक बहुत, एक के बंधक भी बहुत, और आठ का बंधक एक, ३ अथवा सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ के बंधक भी बहुत, ४ अथवा सात के बंधक भी बहुत, आठ के बंधक बहुत, छ के बंधक भी बहुत. ६ अथवा सात के बंधक भी बहुत, एक के बंधक भी बहुत, अबंधक एक, ७ सात के बंधक भी बहुत, आठ के बंधक भी बहुत और अबंधक भी बहुत. ८ इ असंयोगी कहे और एक भांगा सात का बंधक बहुत एक का बंधक बहुत व अबंधक बहुत का सब सात भांगे हुवे. अब द्विकसंयोगी के १२ भांगे कहते हैं. १ सात कर्म के बंधक बहुत. एक कर्म के

३

सात	एक	आठ	अबंध
३	३	१	१
३	३	१	३
३	३	३	१
३	३	३	३

४

सात	एक	छ	अबंध
३	३	१	१
३	३	१	३
३	३	३	१
३	३	३	३

अट्ठविहबंधगाय,छव्विह बंधगाय,अहवा १ सत्तविहबंधगाय एग विह बधगायअट्ठविह बधगाय अबंधएय २ अहवा सत्तविह बंधगाय,एगविह बधगाय,अट्ठविह बंधएय अबधगाय, ३ अहवा सत्त विह बंधगाय एगविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय, अबंधएय, ४ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय,अट्ठविह बंधगाय अबंधगाय ॥१ अहवा सत्तविह बंधगाय,एगविह बंधगाय छव्विह बंधगेय; अबंधएय, २ अहवा सत्तविह बंधगाय; एगविह बंधगाय, छव्विह बंधएय; अबंधगाय, ३ अहवा सत्तविह

बंधक बहुत. आठ कर्म का बंधक एक. छ कर्म का बंधक एक, २ सात कर्म के बंधक बहुत, एक कर्म के बंधक बहुत, आठ कर्म के बंधक एक, छ कर्म के बंधक बहुत, ३ सात कर्म के बंधक बहुत, एक कर्म के बंधक बहुत, आठ कर्म के बंधक बहुत. छ कर्म का बंधक एक, ४ सात के भी बहुत, एक के भी बहुत, आठ के भी बहुत, और छ कर्म के बंधक भी बहुत, यह सात, एक,आठ और छ कर्म के बंधक के चार भांगे कहे. अब सात, एक, आठ कर्म के बंधक और अबंधक के चार भांगे कहते हैं—१ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत आठ के बंधक एक और अबंधक एक, २ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ का बंधक एक,

बंधगाय, ३ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय अट्ठविह बंधगेय छव्विह बंधगाय, अबंधएय, ४ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय; अट्ठविह बंधएय, छव्विह बंधएय अबंधगाय, ५ अहवा सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय छव्विह बंधएय, अबंधएय, ६ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय, छव्विह बंधएय अबंधगाय, ७ अहवा सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय छव्विह बंधगाय अबंधएय, ८ अहवा सत्तविह बंधगाय; एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय, छव्विह बंधगाय, अबंधगाय ॥ एवं एते अट्ठभंगा सव्वेवि

आठ का बंधक एक, छके बंधक बहुत अबंधक एक, ४ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठके बंधक एक, छके बंधक बहुत, अबंधक बहुत ५ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत, छका बंधक एक अबंधक एक, ६ सात के बंधक बहुत, एक के बहुत, आठ के बंधक बहुत, एक, अबंधक बहुत ७ सात के बंधक बहुत, एकके बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत, छके बंधक एक और ८ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत, छके बंधक अबंधक भी बहुत, यह आठ भांगे त्रिसंयोगी. यों सब मिलकर २७ भांगे हुवे ... २७ भांगे कहना. जिस प्रकार यह ...

...॥ तिरिक्खजोणियाउयस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सोलसेहिं राइंदिएहिं रातिंदियातिभागेणय अहियंबंधंति ॥ एवं मणुस्साउयस्सवि सेसं जहा बेतिंदियाणं जाव अंतराइयस्स ॥ २१ ॥ चउरिंदियाणं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स तिण्णिसत्त भागा, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेणं ऊणते, उक्कोसेणं तंचेव पडिपुण्णे बंधति ॥ एवं जस्स जति भागो ते तस्स सागरोवमसतेणं भाणियव्वो ॥

का बंध कितना होता है ? अहो गौतम ! जघन्य पचास सागरोपम में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पचास सागरोपम पूर्ण. तिर्यंच योनिक आयुष्य का जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व कोटी, सोले रात्रदिन एक रात्रि का तीसरा भाग अधिक. ऐसे मनुष्यायु भी कहना. शेष जैसा बेइंद्रिय का कहा वैसा कहना यों यावत् अन्तराय कर्म पर्यन्त कहना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! चौरिन्द्रिय के ज्ञानावरणीय कर्म का कितना बंध होता है ? अहो गौतम ! जघन्य ...
...स में के तीन भाग उस में ...

...हुत्ताय, एवचव सत्तावीसं भंगा भा॥

...पाणाइवायस्स जाव मायामोसविरयस्सय, जीवस्सय मणुस्सस्सय ॥ ... ४ मिच्छादंसणसल्ल विरएणं भंते ! जीवे कतिकम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविह बंधएवा, अट्ठविह बंधएवा, छव्विह बंधएवा, एगविह बंधएवा, अबंधएवा; मिच्छादंसणसल्लविरएणं भंते ! णेरइए कतिकम्मप्पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविह बंधएवा, अट्ठविह बंधएवा, जाव पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए मणुस्से जहा

कथन कहा इस ही प्रकार मृषावाद के पाप का भी कहना, यावत् सतरवा पाप मायामृषाका त्यागका भी इस ही प्रकार कहना. ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! मिथ्यात्व दर्शन शल्य की निवृति वाले जीव के कितनी कर्म प्रकृति का बंध होता है ? अहो गौतम ! सात प्रकृतिका भी बंध होता है, आठ का भी बंध होता है, छ प्रकृति का भी बंध होता है, एक प्रकृतिका भी बंध होता है, और अबंधक भी होता है, ॥ अहो भगवन् ! मिथ्या दर्शन शल्य की निवृति करने वाले नेरिये कितनी कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक सात कर्म प्रकृति का बंध करते हैं और कितनेक आठ कर्म प्रकृति का बंध करते हैं. इस प्रकार ही दशों भवनपति, पांचों स्थावर तीनों विकलेन्द्रिय और तिर्यच पंचेन्द्रिय तक कहना. मनुष्य का जैसे समुच्चय जीव का कहा तैसा कहना और वाणव्यन्तर

सूत्र

उक्कोसेणं चत्तालीसं सागरोवम कोडाकोडीओ चत्तालीसंवास सयाइं अबाहा जाव निसेगो॥ कोह माण माया लोभ संजलणाए दोमासा मासो अद्धमासो अंतोमुहुत्तो, एवं जहण्णगं उक्कोसग पुण जहा कसायवारसगस्स ॥ चउण्हंवि आउयाणं जाइ ओहिया ठिती भणिया तं बंधति ॥ आहारगसरीरस्स तित्थगरणामाए य जहण्णेण अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ उक्कोसेणंवि अंतोसागरोवम कोडाकोडी बंधति ॥ पुरिसवेदस्स जहण्णेणं अट्ठ संवच्छराति, उक्कोसेणं दससागरोवम कोडाकोडीतो दसवाससयाणि अबाहा, जसोकित्ति णामाए उच्चागोतस्स एवं चेव, णवरं जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ता ॥ अंतराइयस्स

अर्थ

अबाधाकाल. संज्वल के क्रोध की दो महीने की मान की एकम हीने की माया की पनरे दिन की लोभ की अंतर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट जैसी बारे कषाय की कहे तैसी. चारों प्रकार के आयुष्य की जैसी औघिक की कही तैसी, आहारक शरीर और तीर्थंकर नाम की जघन्य उत्कृष्ट अन्तः क्रोडाक्रोडी सागरोपम की, पुरु[illegible] जघन्य आठ वर्ष की उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोडी सागरोपम की, एक हजार वर्ष का अबाधा. [illegible] नाम की उच्च गोत्र की इतनी ही कहना जिस में इतना विशेष जघन्य आठ मुहूर्त की. [illegible] जैसी ज्ञानावरणिय की, शेष सर्व संघयन संस्थान पांच वर्ण दो गंध की जघन्य

सूत्र

सामाइय चरित्तारियाय, आवकहिय सामाइय चरित्तारियाय ॥ सेत्तं सामाइय चारित्तारिया ॥ सेकिंतं छओवट्ठावणीय चरित्तारिया? छओवट्ठावणीय चरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-साइयारा छओवट्ठावणीय चरित्तारियाय, निरइयारछओवठावणीय चरित्तारियाय ॥ सेत्तं सेओवठावणीय चरित्तारिया ॥ सेकिंतं परिहार विसुद्धिय चरित्तारिया? परिहार विसुद्धि चरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा निव्विस्समाण परिहार विसुद्धिय चरित्तारियां, निव्विट्ठकाइय परिहार विसुद्धिय चरित्तारियाय॥ सेत्तं परिहार विसुद्धिय चरित्तारिया ॥ सेकिंतं सुहुमसंपराय चरित्तारिया? सुहुमसंपराय

अर्थ

के भेद हुए. प्रश्न-छेदोपस्थापनीय चारित्र किसे कहते हैं? उत्तर-छेदोपस्थापनीय चारित्र के दो भेद कहे हैं-१ किसी प्रकार का अतिचार से दोष लगने से दीक्षा का छेद कर पुनः छेदोपस्थापनीय चारित्र का आरोप किया जावे वह सअतिचार और २ प्रथम अंतिम तीर्थंकर के शासन में सामायिक चारित्र अंगीकार कीये पीछे जघन्य सात दिन मध्यम चार मास व उत्कृष्ट छ मास में छेदोपस्थापनीय का आरोप कीया जावे अथवा तेवीसवे तीर्थंकर के संतानीये चौवीसवे तीर्थंकर के शासन में आवे जब छेदोपस्थापनीय का आरोप किया जावे सो निरातिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र आर्य. यह छेदोपस्थापनीय चारित्र आर्य के भेद हुए. प्रश्न-परिहार विशुद्ध चारित्र आर्य किसे कहते हैं? उत्तर-परिहार विशुद्ध चारित्र आर्य

सूत्र

चारित्तारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा–संकिलिस्समाण सुहुमसंपराय चरित्तारिया, विसु-ज्झमाण सुहुम संपराय चरित्तारियाय ॥ सेतं सुहुम संपराय चरित्तारिया ॥ सेकिंतं अहक्खाय चरित्तारिया ? अहक्खाय चरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-छउमत्थ अहक्खाय चरित्तारियाय, केवलि अहक्खाय चरित्तारियाय ॥ सेत्तं अहक्खाय चरि-

अर्थ

के दो भेद कहे हैं-१ निर्विश मानक सो तप करनेवाले और निर्विष्टकायक सो सेवा करनेवाले+यह परिहार विशुद्ध चारित्र आर्य हुवा. प्रश्न-सूक्ष्म संपराय चारित्र आर्य किसे कहते हैं ? उत्तर-सूक्ष्म संपराय चारित्र आर्य के दो भेद कहे हैं. १ उपशम श्रेणि से अग्यारहवे गुणस्थान पर्यंत जाकर जो पीछा पडता हुवा दशवे गुणस्थान पर आता है यह संक्लिश्यमान सूक्ष्म संपराय और २ क्षपक श्रेणि में ऊपर चढते दशवे गुणस्थान का स्पर्श करे सो विशुद्ध मान सूक्ष्म संपराय चारित्र. यह सूक्ष्म संपराय चारित्र हुवा. प्रश्न-यथा

+ नव २ वर्ष की वयवाले नव पुरुष दीक्षा लेवे और नव पूर्व तथा दशवे पूर्व की तीसरी आचारवस्तु पर्यंत ज्ञानाभ्यास करे. फीर तीर्थंकर अथवा जिनोने परिहार विशुद्ध चारित्र पाला हो उन की पास आकर नव ही साधु परिहार विशुद्ध चारित्र अंगीकार करे. उन में से चार उष्ण काल में जघन्य चोथ भक्त, मध्यम छठ भक्त व उत्कृष्ट अष्टम भक्त, शीत काल में जघन्य छठ भक्त मध्यम अष्टम भक्त और उत्कृष्ट दशम भक्त व चतुर्मास में जघन्य अष्टम भक्त मध्यम दशम भक्त व उत्कृष्ट द्वादश भक्त की तपश्चर्या करे, एक व्याख्यान वाचे और चार उन की वैयावृत्य करे.

अतासागरोवम कोडाकोडीओ उक्कोसेणं जाव जस्स ओहियाठिती भणिता तं बंधति, णवरं इमं णाणत्तं अबाहा अबाहूणिता ण वुच्चति, एवं अणुपुव्वीए सव्वेसिं जाव अंतराइयस्स ताव भाणियव्वं ॥ २४ ॥ णाणावरणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स जहण्णठिति बंधए के ? गोयमा ! अण्णयरेसुहुमसंपराए उवसामएवा खवगएवा, एसणं गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स जहण्णठिति

अर्थ

अन्तः कोटाकोटी सागरोपम की उत्कृष्ट जितनी औधिक में कही उतनी कहना, इतना विशेष अबाधाकाल नहीं कहना. यों अनुक्रम से सब की यावत् अन्तराय कर्मतक कहना ॥२४॥ अब बंध कौन २ करते हैं वह कहते हैं. अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म का जघन्य स्थिति बंध किस के होता है ? अहो गौतम ! अन्य कोई सूक्ष्म सम्पराय उपशम श्रेणिगत क्षपक श्रेणिगत इन के, अहो गौतम ! ज्ञाना-वरणीय कर्म का जघन्य स्थिति बंध करते हैं. उन के अतिरिक्त अन्य गुणस्थान में ऊपर के तीन [illegible] मध्यम स्थिति बन्ध होता है. इस ही आलापक से मोहनीय कर्म और आयुष्य कर्म छोड [illegible] शेष ६ कर्म ज्ञानावरणीय के जैसा ही जानना. अहो भगवन् ! मोहनीय कर्म का जघन्य स्थिति बंध कौन करता है ? अहो गौतम ! अन्य कोई नव में बादर सम्पराय गुणस्थान में उपशम श्रेणिगत वह उपशम

गाय ५, अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय, छव्विह बंधगाय, ६ अहवा
सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय छव्विह बंधगाय ७, अहवा सत्तविह बंधगाय,
अट्ठविह बंधगाय, छव्विह बंधगाय, ८ अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय,
छव्विह बंधगाय एवं एते नव भंगा, सेसा वाणमंतराइया जाव वेमाणिया जहा

…ते हुवे कितने कर्म का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! सब भी होवे ही आयुविना सात कर्म के
…हुत कितने हैं २ अथवा सात के बंधनेवाला एक है आठका बंधने वाला एक है, ३ अथवा सातके बंधने
…हुत आठ के बंधनेवाले बहुत ४ अथवा सात के बंधनेवाले भी बहुत हैं, छका बंधनेवाला एक है. ५ अथवा
बंधनेवाले भी बहुत हैं और छके बंधनेवाले भी बहुत हैं, ६ अथवा सातके बंधने वाले बहुत हैं. आठके
…ला एक है. छका बंधने वाला एक है, ७ अथवा सातके बंधनेवाले बहुत हैं, आठका बंधनेवाला एक है,
…[illegible] हैं ८ अथवा सातके बंधनेवाले बहुत आठके बंधनेवाले बहुत छके बंधनेवाला एक ९ सातके

णरइया, सत्तविहादि बंधगा भाणिया तहा भाणियव्वा ॥ ४ ॥ एवं जाव णाणावरणं बंधमाणा जहिं भणिया दंसणा वरणंपि बंधमाणा ताहिं जीवादीया एगत्तपोहत्तेहिं भाणियव्वा ॥ ५ ॥ वेयणिज्ज बंधमाणे जीवे कतिकम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविह बंधएवा अट्ठविह बंधएवा छव्विह बंधएवा, एगविह बंधएवा ॥ एवं मणूसेवि सेसा नारगादिया सत्तविह बंधगा अट्ठविह बंधगा, जाव वेमाणिए ॥ जीवाणं भंते !

व्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक इन का जैसा नेरिये का कहा वैसा कहना ॥ ४ ॥ यों जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म बंध के भांगे कहे तैसे ही दर्शनावरणीय कर्म बंध के भी एक जीव की अपेक्षा भी कहना और बहुत जीव की आश्रिय भी कहना ॥ ५ ॥ अब वेदनीय कर्म के कहते हैं—अहो भगवन् ! जीव वेदनीय कर्म का बंध करता हुवा कितनी कर्म प्रकृति का बंध करता है ? अहो गौतम ! सात कर्म का भी बंध करता है आठ का भी बंध करता है, छ का भी बंध करता है, और एक का भी बंध करता है. यह जैसे मनुष्य जीव का कहा तैसे मनुष्य का भी कहना. शेष नरकादि जीव के सात का, कर्म और आठ कर्म का बंध कहना. यावत् वैमानिक पर्यन्त. बहुत जीव आश्रिय—अहो भगवन् ! बहुत

...उक्कोसाउं...याचयंति देवाँ घंधति ? गोयमा! नेरइआवि बंधति जाव देवावि

सूत्र

अर्थ

एवं सब ८६ प्रकृति नाम कर्म की और. और गोत्र कर्म की एक यों ८७ प्रकृति तेरवे गुणस्थान के अंतिम समय में क्षय करे. असाता साता दोनों प्रकार की वेदनी का चरम समय क्षय होवे. १ मनुष्य की गति २ पंचेन्द्रिय की जाति, ३ मनुष्यायु, ४ मनुष्यानुपूर्वी, ५ त्रसपना, ६ बादरपना, ७ पर्याप्त पना, ८ शुभग ९ आदेय, १० यशोकीर्ति. और ११ तीर्थंकर नाम १२ असातावेदनी तथा सातावेदनी दोनों में की एक १३ ऊंचगोत्र यह १४ चवदवे गुनस्थान के अंतिम समय क्षयकर, समुच्चय ७ प्रकृति आठवे गुनस्थान में क्षय करे, ३६ प्रकृति नव वे गुणस्थान में क्षय करे, ११ प्रकृति दशवे गुणस्थान में क्षय करे. १६ प्रकृति १२ वे गुणस्थान में क्षय करे, ४७ तेरवे गुणस्थान में क्षय करे, और १३ प्रकृति चौदवे गुणस्थान में क्षय करे, यों १४० प्रकृति का क्षयकर फिर मोक्ष जावे उस क्षय की श्रेणि कहना. इस प्रकार अहो गौतम ! मोहनीय कर्म की जघन्य स्थितिबन्ध नववे गुणस्थान वाले क्षपक श्रेणि के धारक को जानना. दशवे गुनस्थान में प्रदेश बंध मात्र उस से जघन्य सात गुनस्थान में उत्कृष्ट स्थिति बिना जघन्य-२-३-५-६-७-८ गुनस्थान में मध्यम स्थिति बंध करे. अहो भगवन् ! आयुष्य कर्म का जघन्य स्थिति बंध कौन करता है ! अहो गौतम ! जो जीव असंक्षेप काल में प्रवेशकिया वह यहांपर असंक्षेप काल तीसरे भागादि के प्रकार के काल को संक्षेप कर न सके वह काल में सर्व आयुष्य भोगवे थोडा काल का जघन्य आयुष्य बंध शेष बहुत काल बाकी रहे सर्व काल सर्व प्रकार उत्कृष्ट २ बडा आ-

णं भंते ! तहा सजोगी सिज्झति जाव अंतंकरेति? गोयमा ! णो इणट्ठे

उग्गतो , ... उसे सिज्झति वुज्झति,तेणं तत्थ सिद्धा भवंति, असरीरा जीवघणा

दंसणणाणोवउत्ता णिट्ठियट्ठा णीरया णिरेयणा निम्मला वितिमिरा

विसुद्धा सासयमणागयद्ध कालं चिट्ठंति ॥ २६ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति

जितने आत्म प्रदेश अवगाहे उतने आकाश प्रदेश स्पर्शता हुवा सीधी श्रेणिसे जावे किन्तु इधर उधर न मुडे इसलिये अस्पर्शमानगति कही है, जिस समय इन चारों कर्मोंका नाश हुवा उसही समय एकही समय में वक्रगति रहित सिद्ध क्षेत्र को प्राप्त कर उतनेही आकाश प्रदेश सिद्ध क्षेत्र के अवगाह कर सिद्ध स्थान में रहे, साकार ज्ञान उपयोग सहित ॥ किन्तु प्रदेश उपयोग उस वक्त नहोवे क्योंकि एक समय में दो उपयोग नहीं होते हैं। इस प्रकार वहां लोकाग्र में सिद्ध होवे उदारिकादि पांचों शरीर रहित आत्मा के सघन प्रदेश सहित केवल ज्ञान, केवल दर्शन के उपयोग युक्त सर्व प्रकार के कार्य शोध सर्व प्रयोजन पूर्ण हुवे कर्म रहित आगामिक काल में भी कर्म का बन्ध नहीं करते प्रदेशों के हलन चलन रहित

वैक्रय षट्क (२ नरकद्विक, २ वैक्रयद्विक, २ देवद्विक) का जघन्य स्थिति बंध असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्याप्त करे, सब ६१ हुई. आयुष्य की ४ प्रकृति जघन्य स्थिति बंध संज्ञी असंज्ञी दोनों के होवे सर्व ६५ हुई, ५ निद्रा, १ असाता वेदनी १२ कषाय १ हास्य, १ रति १ अरति १ भय, १ शोक, १ दुर्गंछा, १ स्त्री वेद, १ पुरुष वेद, १ नपुंसक वेद, १ मिथ्यात्व मोहनीय यों २१ मोहनीय की प्रकृति का सर्व ९३ प्रकृति २ नीच गोत्र, एवं २८ और ५२ प्रकृति तीर्थंकर नाम कर्म की यों ८० प्रकृति का जघन्य स्थिति बंध बादर एकेन्द्रिय का पर्याप्त करे, सर्व १२० हुई, १८ प्रकृति भी इनी में मिलाइ है, जघन्य स्थिति बंध. उस उपरांत मध्यम स्थिति बंध करे. अब उत्कृष्ट स्थिति बंध की पृच्छा करते हैं, अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म का उत्कृष्ट स्थिति बन्ध नेरिये करते हैं कि तिर्यंच करते हैं कि तिर्यंचणी करती है, कि मनुष्य करते हैं, कि मनुष्यनी करती है कि देवता करते हैं कि देवी करती है ? अहो गौतम ! उक्त सब ही करते हैं अहो भगवन् ! नेरिये ज्ञानावरणीय कर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध किसका करते हैं? अहो गौतम ! सब संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त से प्राप्त हुवा ज्ञान के उपयोग युक्त जाग्रत तथा द्रव्य निद्राकर सुता हुवा तथा अज्ञान मुत्रामिथ्यात्वी. ज्ञान के उपयोगवंत मिथ्यात्व दृष्टी कृष्ण लेशी उत्कृष्ट संक्लिष्ट परिणामी तथा ईषत् मध्यम परिणामी इस प्रकार का, अहो गौतम ! नेरिया उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय की स्थिति का बन्ध करता है. अहो भगवन् ! किस प्रकार का तिर्यंच योनिक ज्ञानावरणीय कर्म का उत्कृष्ट स्थिति बन्ध करता है ?

सूत्र

कुमारा, विज्जुकुमारा, अग्गीकुमारा, दीवकुमारा, उदहिकुमारा, दिसाकुमारा, वाउकुमारा, थणियकुमार ॥ तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगाय, अपज्जत्तगाय॥ सेत्तं भवणवासी ॥ ४८ ॥ सेकिंतं वाणमंतरा? वाणमंतरा अट्ठविहा पण्णत्ता तंजहा किण्णरा, किंपुरिसा, महोरगा, गंधव्वा, जक्खा, रक्खसा, भूया, पिसाया, ॥ ते समासओ, दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ सेत्तं वाणमंतरा॥४८॥ सेकिंत जोइसिया ? जोइसिया पंचविहा पण्णत्ता तंजहा-चंदा, सूरा, गहा, णक्खत्ता

अर्थ

१ सुवर्ण कुमार, ४ विद्युत कुमार, ५ अग्नि कुमार, ६ द्वीप कुमार, ७ उदधि कुमार, ८ दिशा कुमार, ९ वायु कुमार, और १० स्थनित कुमार. इन दश के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो २ भेद होते हैं. यों भवनपति देव का अधिकार हुवा ॥४८॥ प्रश्न-वाणव्यंतर देव किसे कहते हैं ? उत्तर-वाणव्यंतर देव के आठ भेद कहे हैं—१ किन्नर, २ किंपुरुष, ३ महोरग, ४ गंधर्व ५ यक्ष, ६ राक्षस, ७ भूत और ८ पिशाच. इन के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो २ भेद होते हैं. ये वाणव्यंतर देव के भेद हुए × ॥ ४८ ॥ ज्योतिषी किसे कहते हैं ? ज्योतिषी के पांच भेद कहे हैं—चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारे. इन के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहे हैं. उक्त नामवाले अढाइ द्वीप मनुष्य क्षेत्र में चलते हैं.

× १ इसीवाय, २ भूईवाय, ३ आणपन्नी, ४ पाणपन्नी, ५ कंदीय, ६ महा कंदीय, ७ कोहंडग, और पयंगदेव यों आठ जाति के यह भी वाणव्यंतर देव हैं परंतु उक्त देवों से अल्प ऋद्धिवाले होने से यहां ग्रहण किये नहीं हैं.

॥ चतुर्विंशतितम कर्मस्थितिपदम्. ॥

सूत्र

कतिणं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठकम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ तंजहा णाणावरणिज्जं जाव अंतरायं एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कतिकम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविह वा होज्जा सत्तविह बंधएवा अट्ठविहबंधएवा छव्विह बंधएवा ॥ २ ॥ णेरइएणं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कतिकम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा !

अर्थ

अब चौवीसवे पद में कर्मों की स्थिति कहते हैं. अहो भगवन् ! कितनी कर्म प्रकृति कही है ? अहो गौतम ! कर्म की प्रकृति आठ कही है. उन के नाम—१ ज्ञानावरणीय कर्म यावत् अन्तराय कर्म. इस प्रकार आठों कर्म यावत् वैमानिक पर्यन्त पाते हैं ॥ १ ॥ अब एक जीव आश्रिय प्रश्न अहो भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करता हुवा कितनी कर्म प्रकृति का बंध करता है ? अहो गौतम ! सब ही आयुष्य कर्म छोड सातों कर्म की प्रकृति का बंध निरंतर करता है. आयुष्य कर्म बान्धते वक्त आठ कर्म का बंध करते हैं. कितने आयुष्य और मोहनीय कर्म छोडकर छ कर्म का भी बंध करते हैं, दसवे गुणस्थानवाले, कितने एक वेदनीय कर्म का बंध करते हैं वीतरागी ॥ २ ॥ अब चौवीस दंडक आश्रिय कहते हैं. अहो भगवन् ! नेरीये ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करते हुवे कितनी

मूल

तंजहा-हिट्ठिम हिट्ठिम गेविज्जगा, हिट्ठिम मज्झिम गेविज्जगा, हेट्ठिम उवरिम गेविज्जगा, मज्झिम हिट्ठिम गेविज्जगा, मज्झिम मज्झिमगेविज्जगा, मज्झिम उवरिम गेविज्जगा, उवरिम हिट्ठिम गेविज्जगा, उवरिम मज्झिमगेविज्जगा उवरिम उवरिम गेविज्जगा ॥ ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ सेत्तं गेविज्जगा॥ सेकिंतं अणुत्तरोववाइया ? अणुत्तरोववाइया पंचविहा पण्णत्ता तंजहा-विजया,वेजयंता जयंता अपराइया, सव्वट्ठसिद्धा ॥ ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्त-गाय ॥ सेत्तं अणुत्तरोववाइया ॥ सेत्तं कप्पाईया ॥ सेत्तं विमाणिया॥सेत्तं देवा ॥५०॥

अर्थ

की नीचे की ग्रैवेक २ प्रथम त्रिक की मध्यम ग्रैवेयक, ३ प्रथम त्रिक की ऊपर की ग्रैवेयक, ४ मध्यम दूसरी त्रिक की नीचे की ग्रैवेयक, ५ दूसरी त्रिककी मध्यमकी ग्रैवेयक, ६ दूसरी त्रिककी उपर की ग्रैवेयक, ७ उपर तीसरी त्रिक की नीचे की ग्रैवेयक, ८ तीसरी त्रिक की मध्यम ग्रैवेयक और ९ तीसरी त्रिक की उपर की ग्रैवेयक इन के दो भेद पर्याप्त व अपर्याप्त. यों ग्रैवेयक के भेद हुए. प्रश्न-अनुत्तरोपपातिक किसे कहते हैं? उत्तर-अनुत्तरोपपातिक के पांच भेद कहे हैं. १ विजय २ वैजयंत ३ जयंत ४ अपराजित और ५ सर्वार्थ सिद्ध. इन के पर्याप्त अपर्याप्त ऐसे दो भेद जानना. यह अनुत्तरोपपातिक देवता का अधिकार

सूत्र

तंजहा-हिट्ठिम हिट्ठिम गेविज्जगा, हिट्ठिम मज्झिम गेविज्जगा,हेट्ठिम उवरिम गेविज्जगा, मज्झिम हिट्ठिम गेविज्जगा, मज्झिम मज्झिमगेविज्जगा, मज्झिम उवरिम गेविज्जगा, उवरिम हिट्ठिम गेविज्जगा, उवरिम मज्झिमगेविज्जगा उवरिम उवरिम गेविज्जगा ॥ ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ सेत्तं गेविज्जगा॥ सेकिंतं अणुत्तरोववाइया ? अणुत्तरोववाइया पंचविहा पण्णत्ता तंजहा-विजया,वेजयंता जयंता अपराइया. सव्वट्ठसिद्धा ॥ ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्त-गाय ॥ सेत्तं अणुत्तरोववाइया ॥ सेत्तं कप्पाईया ॥ सेत्तं विमाणिया॥सेत्तं देवा ॥५०॥

अर्थ

की नीचे की ग्रैवेयक २ प्रथम त्रिक की मध्यम ग्रैवेयक, ३ प्रथम त्रिक की ऊपर की ग्रैवेयक, ४ मध्यम दूसरी त्रिक की नीचे की ग्रैवेयक, ५ दूसरी त्रिककी मध्यमकी ग्रैवेयक, ६ दूसरी त्रिककी उपर की ग्रैवेयक, ७ उपर तीसरी त्रिक की नीचे की ग्रैवेयक, ८ तीसरी त्रिक की मध्यम ग्रैवेयक और ९ तीसरी त्रिक की उपर की ग्रैवेयक. इन के दो भेद पर्याप्त व अपर्याप्त. यों ग्रैवेयक के भेद हुए. प्रश्न-अनुत्तरोपपातिक किसे कहते हैं! उत्तर-अनुत्तरोपपातिक के पांच भेद कहे हैं. १ विजय २ वैजयंत ३ जयंत ४ अपराजित और ५ सर्वार्थ सिद्ध. इन के पर्याप्त अपर्याप्त ऐसे दो भेद जानना. यह अनुत्तरोपपातिक देवता का अधिकार

॥ सेत्तं अणड्ढि पत्तारिया ॥ सेत्तं आरिया ॥ सेत्तं
ंतिया ॥ सेत्तं मणुस्सा ॥ ४५ ॥ सेकिंतं देवा ? देवा
रयणवइ वाणमंतरा जोइस्सिया वेमाणिया ॥४६॥ सेकिंतं
वेहा पण्णत्ता तंजहा—असुरकुमारा, नागकुमारा, सुवण्ण

·यथाख्यात चारित्र के दो भेद कहे हैं. १ अग्यारहवे व बारहवे गुण-
आर्य और तेरहवे चौदहवे गुणस्थानवर्ती केवली यथाख्यात चारित्र
र. यों बिना ऋद्धिवाले आर्य के भेद हुए. यों आर्य के भेद संपूर्ण
... संपूर्ण हुए ॥ ४० ॥ प्रश्न-देव किसे

॥ द्वितीय स्थान पदम् ॥

सूत्र

कहिणं भंते! बायर पुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणंठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु तंजहा रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, पंकप्पभाए, धूमप्पभाए, तमप्पभाए, तमतमप्पभाए, अहेसत्तमाए, ईसिपब्भाराए ॥ अहो लोए पायालेसु, भवणेसु भवणपत्थडेसु, णिरएसु, णिरयावलियासु, णिरयपत्थडेसु, उड्ढलोए कप्पेसु, विमाणेसु विमाणावलियासु, विमाणपत्थडेसु, तिरियलोए-टंकेसु, कुडेसु, सेलेसु, सिहरीसु;

अर्थ

प्रश्न- अहो भगवन् ! पर्याप्त बादर पृथ्वीकाया के स्थानक कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! स्वस्थान आश्री रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकप्रभा, पंकप्रभा, धूम्रप्रभा, तमप्रभा, तमतमप्रभा, व ईषत्प्राग्भार पृथ्वी. यों आठ पृथ्वियों में, अधोलोक में, पाताल कलश में, भवनपति देवों के भवन में, भवनों के प्रस्तर में, नरक में, नरक की आवलि का (नरकावासा की पंक्ति) में, नरक के प्रस्तर में, ऊर्ध्वलोक में, देवलोक में, विमानों में, विमानों की पंक्ति में और तीर्च्छलोक में-टंक, कूट, पर्वत, शिखरवंत पर्वतों में, प्राग्भार-विषमकूटों में महाविदेह क्षेत्र की विजयों में, विजय की मर्यादाकरनेवाले वक्षस्कारों में, भरतादिवर्ष क्षेत्र में, निषधादिवर्षधर पर्वतों में, समुद्र की वेलआके उस भूमि में, वेदिका में, द्वार में, तोरण में, द्वीप में,

सुहुम पुढवि काइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुम पुढविकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता, सव्वलोए परियावण्णगा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३ ॥ कहिणं भंते ! बायर आउ-काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदधिसु, सत्तसु घणोदहिवलएसु, अहे लोए पायालेसु, भवणेसु, भवणपत्थडेसु, उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु, विमाणपत्थडेसु, तिरिअलोए-अगडेसु, तला-

थाने हैं ॥ २ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! सूक्ष्म पृथ्वीकाया के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थानक कहां हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! सूक्ष्म पृथ्वीकाया के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान सब एक ही प्रकार के हैं. स्थानादि से भेद नहीं होने से विशेषता रहित हैं. किसी प्रकार का भेद नहीं है. उपपात व समुद्घात आश्री सब लोक में व्यापक हैं. अहो आयुष्मन् श्रमणों ! यह पृथ्वीकाया के स्थान कहे. ॥ ३ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! पर्याप्त बादर, अप्काया के स्थान कहां कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! स्वस्थान से निचे रही हुई सात घनोदधि में, सात घनोदधि के वलय में-अधोलोक में-पाताल कलशों में, भवनपति के भवनों में, भवन प्रस्तर में-ऊर्ध्वलोक में, देवलोक में, विमानों में, विमानों की पंक्तियों में, विमान प्रस्तर में, और

सूत्र

पण्णत्ता; उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सठाणेणं लोअस्स असंखेज्जइ भागे ॥ ५ ॥ कहिणं भंते ! सुहुम आउकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुम आउकाइया जेय पज्जत्तगा जेय अपज्जत्तगा, ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोए परियावण्णगा पण्णत्ता, समणाउसो ! ॥ ६ ॥ कहिणं भंते ! बादर तेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा !

अर्थ

आश्रिय सब लोकमें और स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यात वे भाग में है. ॥ ५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन्! सूक्ष्म अपकाय के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थानक कहां कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! सूक्ष्म अपकाया के पर्याप्त अपर्याप्त सब एक ही प्रकार के हैं. इस में किसी प्रकार का भेद नहीं है. विशेषता रहित है. अहो आयुष्मन् श्रमणों ! ये सब संपूर्ण लोकमें व्याप्त है. ॥ ६ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! बादर तेउकाया पर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! मनुष्य क्षेत्र के अढाइ द्वीप में निर्व्याघात आश्री ÷ पन्नरह कर्म

÷ जब भरत एरवत क्षेत्र में सुखमासुखम, सुखम व कुच्छभाग सुखम आरे प्रवर्तते हैं तब भूमि के स्निग्ध पना से बादर तेउकाया प्रगट नहीं होती है, इस लिये यहां नहीं पाती है. इन की निवृत्ति हुए पीछे कुच्छ सुखम दुःखम आरे में, दुःखम सुखम आरे में, व दुःखम आरे में बादर अग्निकाया की उत्पत्ति होती है दुःखमा दुःखम आरे में भूमि पर्यंत रूक्ष होने से बादर तेउकाया का अभाव होता है. महाविदेह क्षेत्र में सदैव दुःखम सुखम आरा होने से वहां सदैव बादर तेउकाया पाती है.

सूत्र

सेसं पंचिंदिया ॥ सेत्तं संसार समावण्ण जीवपण्णवण्णा ॥ सेत्तं जीव पण्णवणा ॥ सेत्तं पण्णवणा ॥ इति पण्णवणाए भगवईए पढमं पण्णवणापयंसम्मत्तं ॥ १ ॥

अर्थ

हुवा. यह कल्पातीत देव का वर्णन हुवा. यह वैमानिक देव का अधिकार हुवा, यह देवों का वर्णन हुवा. यह पंचेंद्रिय संसार समापन्न जीव प्रज्ञापना. यह संसार समापन्न जीव प्रज्ञापना. यह जीव प्रज्ञापना के भेद हुए. और यह प्रज्ञापना हुवा. यों श्री भगवती पन्नवणा का प्रथम प्रज्ञापना पद संपूर्ण हुवा. ॥१॥

देस उड्ढकवाडेसु तिरियलोए तट्टेय, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असं-खेज्जइ भागे ॥ कहिणं भंते ! सुहुम तेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुम तेउकाइयाणं जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वे लोए परियावण्णगा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ८ ॥ कहिणं भंते ! बायर वाउकाइयाण पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु

योजन जाडपना मे स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत सर्वत्र सम एक राजु पृथु तिर्यक लोक रूप. इन दोनों कपाटों में तेउकाय के जीवों उत्पन्न होते हैं ✦ समुद्धात आश्रिय सब लोक में स्वस्थल आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में हैं प्रश्न-अहो भगवन् ! किस स्थान सूक्ष्म तेउकाया पर्याप्त अपर्याप्त के स्थानक कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! सूक्ष्म तेउकाया पर्याप्त अपर्याप्त सब एक ही प्रकार के विशेषता रहित भेद रहित सब लोक में व्यापक है ॥ ८ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! बादर पर्याप्त वायुकाया के स्थानक कहाँ

✦ यहां पर बादर तेउकाया अपर्याप्त के तीन भेद कहे हैं जैसे १ एक भवि २ बद्धायु और ३ अभिमुख. इन में जो एक विराधित भव में अनन्तर बादर अपर्याप्त तेउकायापने उत्पन्न हुवा उसे एक भवी कहना. २ जो पूर्व भव विमानादि बादर अपर्याप्त तेउकायापने आयुष्यबंध कीया है उसे बन्धायुष्य कहना. और जो पूर्व भव का त्याग करके बादर अपर्याप्त तेउकाय का आयुष्य नाम गोत्र आदि प्राप्त करता है उसे अभिमुख कहना. इन में एक

मूत्र

सेत्तं पंचिंदिया ॥ सेत्तं संसार समावण्ण जीवपण्णवण्णा ॥ सेत्तं जीव पण्णवणा ॥ सेत्तं पण्णवणा ॥ इति पण्णवणाए भगवईए पढमं पण्णवणापयंसम्मत्तं ॥ १ ॥

अर्थ

हुवा. यह कल्पातीत देव का वर्णन हुवा. यह वैमानिक देव का अधिकार हुवा, यह देवों का वर्णन हुवा. यह पंचेंद्रिय संसार समापन्न जीव प्रज्ञापना. यह संसार समापन्न जीव प्रज्ञापना. यह जीव प्रज्ञापना के भेद हुए. और यह प्रज्ञापना हुवा. यों श्री भगवती पन्नवणा का प्रथम प्रज्ञापना पद संपूर्ण हुवा. ॥१॥

सूत्र

काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु, समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जेभागेसु, सट्ठाणेणं लोएस्स असंखेज्जेसुभागेसु ॥ कहिणं भंते ! अपज्जत्त बादर वाउकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जरचेव बायर वाउकाइयाणं पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव बायर वाउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएण सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोगस्सअसंखेज्जेसु भागेसु ॥ कहिणं भंते ! सुहुम वाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुम वाउकाइया जेय पज्जत्तगा जेय अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता

अर्थ

लोकाकाश के छिद्रों में व लोकाकाश के कूणे में पर्याप्त बादर वायुकाया के स्थान कहे हैं. उपपात आश्रिय लोक के असंख्यात भाग में, समुद्घात आश्रिय लोक के असंख्यात भाग में, और स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यात भाग में ही स्थान कहे हैं प्रश्न-अहो भगवन् ! अपर्याप्त बादर वायुकाया के स्थान कहां कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! जहां पर्याप्त बादर वायुकाया के स्थान कहे हैं वहां ही अपर्याप्त बादर वायुकाया के स्थान हैं. उपपात आश्रिय सब लोक में, समुद्घात आश्रिय सब लोक में व स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यात भाग में. प्रश्न-अहो भगवन् ! सूक्ष्म वायुकाया के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! सूक्ष्म वायुकाया के जो पर्याप्त व अपर्याप्त हैं वे सब

सूत्र

पडमारेसु, विजएसु, वक्खारेसु, वासेसु, वासहर पव्वएसु, वेलासु, वेइयासु, दारेसु, तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु, एत्थणं बायर पुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे ॥ कहिणं भंते ! बायर पुढवि काइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बायर पुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता तत्थेव बायर पुढविकाइयाण अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे ॥ २ ॥ कहिणं भंते !

अर्थ

व समुद्र में, इन में पर्याप्त बादर पृथ्वीकाया के स्थानक कहे. उपपात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में, समुद्घात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में, स्वस्थानक आश्री लोक के असंख्यातवे भाग में है ॥ १ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! बादर पृथ्वीकाया के अपर्याप्त किस स्थान में हैं ? अहो गौतम ! जहां बादर पृथ्वीकाया के पर्याप्त हैं वहां ही बादर पृथ्वीकाया के अपर्याप्त हैं अर्थात्, पर्याप्त शरीर आश्रित अपर्याप्त जीवों उत्पन्न होते हैं. उपपात आश्रिय सब लोक में पाते हैं क्योंकी नारकी सिवा अन्य सब स्थानों पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं, इस से एक स्थान से अन्यस्थान जाते सब लोक में पाते हैं. मारणांतिक समुद्घात आश्रिय सब लोक में पाते हैं परंतु स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में

सूत्र

काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइ भागे ॥ कहिणं भंते ! बायर वणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बायर वणस्सइ काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा, तत्थेव बायर वणस्सइ काइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएण सव्वलोए, समुग्घाएण सव्वलोए, सट्ठाणेण--लोअस्स - असंखेज्जइ—भागे ॥ कहिणं भंते ! सुहुम वणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुम वणस्सइ काइया जेय पज्जत्तगा जेय अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा

अर्थ

आश्रिय सब लोक में, समुद्धात आश्रिय भी सब लोक में, स्वस्थान में लोक के असंख्यात भाग में, प्रश्न-अहो भगवन् ! बादर वनस्पतिकाया अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! जहां पर्याप्त बादर वनस्पतिकाया के स्थान कहे हैं वहां ही अपर्याप्त बादर वनस्पतिकाया के स्थान कहे हैं, उपपात आश्रिय सब लोक में, समुद्धात आश्रिय सब लोक में और स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यात भाग में. प्रश्न-अहो भगवन् ! पर्याप्त अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकाया के स्थान कहां कहे हैं ? अहो गौतम ? सूक्ष्म वनस्पतिकाया में जो पर्याप्त अपर्याप्त हैं वे सब एक प्रकार के विशेष व भेद रहित हैं. अहो आयुष्मन्

काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइ भागे ॥ कहिणं भंते ! बायर वणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बायर वणस्सइ काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा, तत्थेव बायर वणस्सइ काइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं–लोअस्स–असंखेज्जइ–भागे ॥ कहिणं भंते ! सुहुम वणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुम वणस्सइ काइया जेय पज्जत्तगा जेय अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा

अर्थ

आश्रिय सब लोक में, समुद्घात आश्रिय भी सब लोक में, स्वस्थान में लोक के असंख्यात भाग में, प्रश्न-अहो भगवन् ! बादर वनस्पतिकाया अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! जहां पर्याप्त बादर वनस्पतिकाया के स्थान कहे हैं वहां ही अपर्याप्त बादर वनस्पतिकाया के स्थान कहे हैं, उपपात आश्रिय सब लोक में, समुद्घात आश्रिय सब लोक में और स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यात भाग में. प्रश्न-अहो भगवन् ! पर्याप्त अपर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकाया के स्थान कहां कहे हैं ! अहो गौतम ! सूक्ष्म वनस्पतिकाया में जो पर्याप्त अपर्याप्त हैं वे सब एक प्रकार के बिना भेद रहित हैं. अहो आयुष्मन्

सूत्र

एसु, नईसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरणीसु, दीहियासु गुंजालियासुं, सरेसु, सरपंतियासु, सरसरपंतिआसु बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, विप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु, एत्थणं बायर आउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता. उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, समुग्घाएणं लोअस्स असंखेज्जइ भागे, सट्ठाणेणं लोअस्स असंखेज्जइ भागे, ॥ ४ ॥ कहिणं भंते ! बायर आउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बायर आउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बायर आउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा

अर्थ

तीर्च्छलोक में-कुवे में, तलाव में, नदी में, द्रह में, बावडी में, पुष्करणी में, दीर्घिका-लम्बी बावडी में, गुंजालिका बावडीमें, सरोवरमें, सरोवरकी पंक्तिमें, झरणोंमें, निज्झरणामें, छिल्लर पानीके स्थानमें, पल्लल (आखात)में, क्यारोंमें, जम्बुद्वि द्वीपोंमें, लवणसमुद्रादि समुद्रमें बादर अपूकायाके पर्याप्त के स्थान कहे हैं. उपपात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भागमें, समुद्घात आश्रिय लोकके, असंख्यातवे भागमें, और स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में हैं. ॥ ४ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! बादर अपकाया के अपर्याप्त के स्थानक कहां कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! जहां बादर अपकाया के पर्याप्त के स्थानक कहे हैं वहां ही बादर अपकाया के अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. उपपात आश्रिय पृथ्वीकाया जैसे सब लोक में कहे हैं, समुद्घात

यम्म असंखिज्जइ भागे, सट्ठाणे लोयस्स असंखेज्जइ भागे ॥ १३ ॥ कहिणं भंते ! पंचिंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभागे, अहो लोए तदेकदेसभागे, तिरियलोए-अगडेसु तलाएसु नईसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुंजालियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसरपंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु, वप्पिणेसु, समुद्देसु, दीवेसु, सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु, एत्थण पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएण लोयस्स असंखिज्जइ भागे, समुग्घाएणं लोअस्स असंखेज्जइ भागे, सट्ठाणेणं

स्थान आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में हैं ॥ १३ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! पर्याप्त अपर्याप्त पंचेन्द्रिय के स्थान कहां कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! ऊर्ध्व लोक के एक देश विभाग में वावडियों में जलचरादि व देवलोक में देवता अधो लोक के एक देश विभाग में. अधो गामिनी विजय में मनुष्य जलचरादि तिर्यंच व नारकी नरीये और तीर्च्छे लोक में, कूवे में, तलाव में, नदी में, द्रह में, बावडी में, पुष्करणी में, दीर्घ ववडी में, गुंजालिका में, सरोवर में, सरोवर की पंक्तियों में, बिलों में, बिलों की पंक्तियों में, झरणे में, निज्झरने में, छिछरे पानी में, अलात में. क्यारों में, द्विपों में, समुद्र में, और सब जलाशय—जल स्थानों में पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. उपपात आश्रि, लोक के असंख्यातवे भाग में,

सूत्र घणवाएसु सत्तसु घणवायवलएसु सत्तसु तणुवाएसु, सत्तसु तणुवायवलएसु अहो लोए-पायालेसु, भवणेसु, भवणपत्थडेसु, भवणछिद्देसु, भवणणिक्खुडेसु, णिरएसु, णिरयाव-लियासु णिरयपत्थडेसु, णिरयच्छिद्देसु णिरयनिक्खुडेसु, उड्ढलोए-कप्पेसु, विमाणेसु, विमाण वलियासु, विमाणपत्थडेसु, विमाणछिद्देसु, विमाणनिक्खुडेसु, तिरिअलोए पाईण-पडीण दाहिण उदीण सव्वेसुचेव लोगागास छिद्देसु लोगनिक्खुडेसुय एत्थणं बायर वाउ-

अर्थ कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! स्वस्थान आश्री सात घनवात में, सात घनवात के वलय में, सात तनु-वात में, सात तनुवात के वलय में अधो लोक में-पाताल कलशों में, भवनपति के भवनों में भवनपति के प्रस्तरों में, भवन के छिद्रों में, भवन के कूने में, नरक में, नारकी आवलिका में, नरक के प्रस्तर में और नरकावास के छिद्रों में, ऊर्ध्व लोक में, देवलोक में, विमानों में, विमानों की आवलिका में, विमान प्रस्तर में, विमानों के छिद्र में, वि मानों के कूने में, तीर्च्छे लोक में, पूर्व पश्चिम, दक्षिण व उत्तर यों सब

यही और कथायुष्य द्रव्य से बादर अपर्याप्त तेउकाय है परंतु भाव से नहीं है इस लिये उन्हें यहां ग्रहण नहीं किये हैं, परंतु अभिमुख अपना पूर्व भव का आयुष्य छोडकर अपर्याप्त तेउकाया में आवे वे पूर्वोक्त ऊर्ध्व कपाट में तथा तिर्यक् लोक में आवे सो तेउकायापने कहना, इनोंने पूर्व भव का आयुष्य छोडा है परंतु यहांलग दोनों ऊर्ध्व कपाट व तिर्यक् लोक में प्रवेश नहीं किया है वहां लग उन को पूर्व भवपना ही कहना.

सूत्र

णिराणु लेवणतला, असुईवीसा, परमदुब्भिगंधा, काऊयगणि वण्णाभा, कक्खडफासा दुरहियासा, असुभ णरगा, असुभाओ णरगेसु वेअणाओ, एत्थणं नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखिज्जइ भागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, सट्ठाणेणं लोअस्स असंखिज्जइ भागे, एत्थणं बहवे नेरइया परिवसंति, काला कालाभासा गंभीर लोमहरिसा, भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ तेणं तत्थ णिच्चंभीया णिच्चंतत्था णिच्चंतसिया, णिच्चा

अर्थ

अशुचिमय, अत्यंत दुर्गंधमय, अग्नि की भट्टी समान वर्ण वाले, अति ही दुःसह कर्कश स्पर्शवाले व अशुभ नरक हैं नरक में वेदनाओं भी अशुभ हैं. यहां पर पर्याप्त अपर्याप्त नारकी के स्थानक कहे हैं. उपपात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में, समुद्घात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में, व स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में नारकी के स्थान कहे हैं. यहां पर बहुत नारकी रहते हैं. वे वर्ण से काले हैं, इन के शरीर की प्रभा भी काली है, बडे भयंकर श्याम वर्णवाले हैं. भय से उन के रोम सदैव खडे होते हैं, उन का शरीर भयंकर दीखता है, अन्य को त्रास उत्पन्न करनेवाले हैं, परम उत्कृष्ट कृष्ण वर्णवाले हैं, वे नेरिये वहां सदैव त्रास से त्रासित हैं, सदैव उद्वेगवाले हैं, सदैव परम दुःख वेदनेवाले हैं.

सूत्र

सव्वलोए अपरियावण्णगा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ १ ॥ कहिणं भंते ! बायर वणस्सइ काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणो-दहीसु, सत्तसु घणोदहीवलएसु, अहे लोए पायालेसु भवणेसु, भवणपत्थडेसु, उड्ढ-लोए कप्पेसु, विमाणेसु, विमाणावलियासु, विमाणपत्थडेसु, तिरियलोए-अगडेसु तलाएसु, नईसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु दीहियासु, गुंजालियासु, सरेसु, सरपंति-यासु, सरसरपंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सव्वसुचेव जलासएसु जलट्ठाणेसु, एत्थणं बायर वणस्सइ

अर्थ

प्रकार की विशेषता व भेद रहित हैं. अहो आयुष्मन् श्रमणों ! सब लोक में व्याप्त कहे हैं ॥ १ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! पर्याप्त बादर वनस्पतिकाया के स्थान कहां कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! स्वस्थान से सात घनोदधि, सात घनोदधि वलय में, अधो लोक में, पाताल कलशों में, भवनपति के भवनों में, भवन प्रस्तर में. ऊर्ध्व लोक में-देवलोक में, विमानों में, विमानों की पंक्तियों में, विमान प्रस्तर में और तीर्च्छे लोक में-कूवे में, तलाव में, नदी में, द्रह में, बावडी में, पुष्करणी में, दीर्घिका में, गुंजालिका में, सरोवर में, सरोवर की पंक्तियों में, बिल में, बिल पंक्ति में, उज्झर में, निज्झर में, छिल्लर पानी में, खाबोचिये में, क्यारे में, द्वीपों में, समुद्रों में, यों सब जलाशयों व जलस्थान में बादर वनस्पतिकाया पर्याप्त के स्थान हैं. उपपात

मूल

अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा, अहे खुरप्प संठाण संठिया, णिच्चंधयारतमसा, ववगयगह चंदसूर णक्खत्त जोइसप्पभा, मेदवसा पूअपडल रुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणु लेवणतला, असुईवीसा परमदुब्भिगंधा, काउ अगणिवण्णाभा, कक्खडफासा दुरहि-आसा, असुभाणरगा, असुभाओ णरगेसु वेयणाओ, एत्थणं रयणप्पभा पुढवि नेरइ-याण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखिज्जइ भागे, समु-ग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, तत्थणं बहवे

अर्थ

नाम—१ सीमंतक, २ रोरुक, ३ उद्भ्रांत, ४ संभ्रांत, ५ असंभ्रांत, ६ विभ्रांत, ७ शीत, ८ वक्रान्त, ९ वुक्रांत, १० विकल, ११ रोरुक १२ रोरुकवर्त और १३ घनरोरुकवर्त. इन मे रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास कहे है वे नरकावास अंदर से गोलाकार, बाहिर से चोकूने, नीचेकी जमीन छरपले (उस्तर) जैसी तीक्ष्ण है. वहां सदैव सदा अंधकार रहता है. चंद्र, सूर्य ग्रहगण, नक्षत्र व ताराओं की प्रभा नहीं है, मेद, विष्ठा, वसा, राध, पटल, रुधिर व मांस के कर्दम मयतला है, अत्यंत दुर्गंधिमय, भट्ठी की अग्नि समान प्रज्वलित, अत्यंत कर्कश स्पर्श धारन करनेवाले. अति दुःसह अशुभ नरक व नारकी की अशुभ वेदनावाले है. यहां पर रत्नप्रभा पृथ्वी के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे है. उपपात आश्रिय लोक के असंख्यातवे

सूत्र

ओवलेसा अणाणत्ता सव्वलोए परियावण्णगा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ १० ॥
कहिणं भंते ! बेइंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए
तदेकदेसभागे, अहे लोए तदेकदेसभागे, तिरिय लोए-अगडेसु तलाएसु नईसु
दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुंजालियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसर
पंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु चिल्ललेसु, पल्ललेसु, विप्पिणेसु,
दीवेसु, समुद्देसु, सव्वेसुचेव जलासएसु जलट्ठाणेसु एत्थणं बेइंदियाणंपज्जत्ता पज्जत्तगाणं

अर्थ

श्रमणों ! सब लोक में व्याप्त है. ॥ १० ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! पर्याप्त अपर्याप्त बेइंद्रिय के स्थान कहां हैं ?
उत्तर-अहो गौतम ! ऊर्ध्वलोक के एक विभाग में होते हैं अर्थात् मेरु पर्वत की उपर की वावडीयों में
होते हैं. परंतु उपर के देवलोक की वावडीयों में द्वीइन्द्रियादि उत्पन्न नहीं होते हैं. वैसे ही अधोलोक में
भी एक देश विभाग में उत्पन्न होते हैं अर्थात् अधोगामिनी विजय व समुद्र तल में बेइन्द्रिय जीवों उत्पन्न
होते हैं इस से नीचे इन जीवों की उत्पत्ति नहीं है. तीर्छा लोक में-कूवे में, तलाव में, नदी में, द्रह में,
बावडी में, पुष्करणी में, दीर्घ वावडी में, गुंजालिका में, सरोवर में, सरोवर की पंक्ति में, बहुत सरोवर
की पंक्तियों में, बिलों में, बिलों की पंक्तियों में, झरने में, निज्झरणे में, छिलरे पानी में, अलाव में,
कयारे में, द्वीप में, समुद्र में सब जलाशयों व जलस्थान में बेइन्द्रिय जीवों पर्याप्त, अपर्याप्त के स्थान

घाएणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे; ॥ १२ ॥ कहिणं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभागे, अहो लोए तदेकदेसभाए, तिरियलोए-अगडेसु, तलाएसु, नईसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुंजालियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसर पंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु, एत्थणं चउरिंदियाणं पज्जत्ता-पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता; उववाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे; समुग्घाएणं लो-

अर्थ

के असंख्यातवे भाग में और स्वस्थान आश्री लोक के असंख्यातवे भाग में, ॥ १२ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! चौरिन्द्रिय के पर्याप्त के रहने के कौन से स्थान कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! ऊर्ध्वलोक के एक देश विभाग में, अधोलोक के एक देश विभाग में और तीर्च्छालोक में कूए में, तलाव में, नदी में, द्रह में, बावडी में, पुष्करणी में, दीर्घिका में, गुंजालिका में, सरोवर में, सरोवर की पंक्तियों में, बहुत सरोवर की पंक्तियों में, बिलों में, बिल पंक्तियों में, झरणे में, निज्झरणे में, छिल्लर पानी में, अजान में, क्यार में, द्वीप, समुद्र में और सब जलाशय जलस्थानो में चतुरिन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. उपपात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में, समुद्घात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में, स्व-

सूत्र

लोयस्स असंखेज्जइ भागे, ॥ १४ ॥ कहिणं भंते ! नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहिणं भंते ! नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, पंकप्पभाए, धूमप्पभाए, तमप्पभाए, तमतमप्पभाए, एत्थणं नेरइयाणं चुलसीइ णिरयावास सयसहस्सा भवंतित्ति मक्खायं, तेणं नरगा अंतोवट्टा, वाहिं चउरंसा, अहे खुरप्पसंठाणा संठिया, णिच्चंधयार तमसा ववगय-गहचंदसूरणक्खत्तजोइसप्पहा, मेदवसापूय पडल रुहिर मंस चिक्खल्ल

अर्थ

समुद्घात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में, और स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में हैं ॥ १४ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! पर्याप्त अपर्याप्त नारकी के स्थान कहां कहे हैं ? और नारकी कहां रहते हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! स्वस्थान आश्रिय सात नरक में रहते हैं. जिन के नाम—रत्नप्रभा, शर्कर प्रभा, वालुक प्रभा, पंक प्रभा, धूम्र प्रभा, तम प्रभा व तमतमप्रभा. यहां पर नरक के चौरासी लाख नरकावास कहे हैं. वे नरकावास अंदर से गोलाकार, बाहिर से चौरंस चौकूने नीचे जमीन का तल छरपले (उस्तरे) जैसा तीक्ष्ण, सदैव महा अंधकार युक्त, चंद्र सूर्य ग्रहगण, नक्षत्र व ताराओं इन ज्योतिषी देवों की प्रभा कर रहित, मेदवसा, विष्टा, मूत्र, पडले, मांस व रुधिर के कीचड से लिप्त, अत्यंत

सूत्र

उव्विग्गा, णिच्चं परम असुह संबद्धणरगं भयं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥ १४ ॥ कहिणं भंते रयणप्पभाए पुढवि नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, कहिणं भंते ! रयणप्पभा पुढवी नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एगं जोयण सहस्सं ओगाहित्ता, हेट्ठा चेगं जोयण सहस्सवज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयण सयसहस्से, एत्थणं रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं तीसं नरयावास सयसहस्सा भवंतित्ति मक्खायं ॥ तेणं नरया

अर्थ

इस प्रकार के नरक के दुःख अनुभवते हुवे नारकी विचरते हैं ॥ १४ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ? वे नारकी कहां रहते हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वीका जाडपना एक लाख अस्सी हजार योजनका है इस में से एक हजार ऊपर व एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष एक लाख अठहत्तर हजार योजनकी पोलार में तेरह पाथडे [प्रतरे] हैं. इस में एक २ पाथडा तीन हजार योजन का जाडा है, जिस में भी एक हजार योजन ऊपर व एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष एक हजार योजन की पोलार है यहां नरकावास कहे हैं. * उन तेरह पाथडों के

* उन तेरह पाथडों के बारह अंतर हैं एक २ अंतर ११५८३ योजन और एक योजन का तीसरा भाग होता है. इन में से तीन के दस अंतरों में दस जाति के भवनपति देव रहते हैं.

सूत्र

रयणप्पभा पुढवि नेरइया परिवसंति, काला कालोभासा गंभीर, लोमहरिसा, भीमा, उत्तासणगा, परमकिण्हा, वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो ! तेणं तत्थणिच्चं भीआ, णिच्चंतत्था, णिच्चंतसिया, णिच्चउव्विग्गा णिच्चंपरम मसुहं संबद्धणरग भयं पच्चणुब्भ- वमाणा विहरंति ॥ १६ ॥ कहिणं भंते ! सक्करप्पभा पुढवि नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिण भंते ! सक्करप्पभा पुढवि नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सक्करप्पभा पुढवीए बत्तीसुत्तरं जोयण सयसहस्सं बाहल्लाए उवरिएगं जोयण

अर्थ

भाग में, समुद्घात आश्रि लोक के असंख्यातवे भाग में और स्वस्थान आश्रि लोक के असंख्यातवे भाग में इन में बहुत रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी रहते हैं कि जो काले, काले वर्णवाले, गंभीर, रोम खडे होवे वैसे भयकर, भय को त्रास देनेवाले, सदैव उद्वेगवाले, परम कृष्ण वर्णवाले अहो आयुष्मन् श्रमणों ! वगैरह नारकी वहां सदैव भयभीत रहते हैं, परम उत्कृष्ट दुःख का संबंध नरक के दुःख का सतपना अनुभवते हुवे विचरते हैं ॥ १६ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी नारकी के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ? और शर्कर प्रभा पृथ्वी के नारकी कहां रहते हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी से असंख्यात कोडाकोड योजन नीचे शर्कर प्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस ...

शर्करप्रभा.

पाथडे	इन्द्रक	इन्द्रक का प्रमाण	मुहूर्त
१	थाणय	३३	२७
२	थणक	३२१६६६६	२९
३	मनक	३१२५०००	३१
४	वर्णाकिन	३०३३३३३	३३
५	वट्ट	२९४१६६६	३५
६	संघट्ट	२८५००००	३७
७	जिप	२७५८३३३	३९
८	अवजिप	२६६६६६६	४१
९	लोल	२५७५०००	४३
१०	लोलावृत	२४८३३३३	४५
११	घनलोलुक	२३९१६६६	४७

तत्थ णिच्चंभीया णिच्चं तत्था णिच्चंतासिया, णिच्चं उ-
व्विग्गा, णिच्च परम मसुह संबंद्ध नरगभयं पच्चणुब्भ-
वमाणा विहरंति ॥१७॥ कहिणं भंते ! वालुयप्पभा-
पुढवि नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ?
कहिण भंते ! वालुअप्पभा पुढवि नेरइया परिवसंति?
गोयमा ! वालुप्पभाए पुढवीए -अट्ठावीसुत्तर- जोयण

व वर्णसे परम कृष्णवर्णवाले हैं. वे वहां सदैव भयभीत बनहुए, त्रास पाए हुए, उद्वेगवाले सदैव परम अशुभ संबंध व नरक का भय अनुभवते हुवे विचरते हैं. ॥ १७ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! वालुप प्रभा के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी के स्थानक कहां कहे हैं ? और वालुय प्रभा के नारकी कहां रहते हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! शर्कर प्रभा से असंख्यात योजन छोडाछोड नीचे वालुय प्रभा नामक पृथ्वी है. उस का जाडपना एक लाख अट्ठावीस हजार योजनका है. जिस में एक हजार योजन उपर व एक हजार योजन नीचे छोडकर एक लाख छब्बीस हजार योजनकी पोलार है उसमें नरपाथडे हैं. एकेक पाथडा

अर्थ

मूल

सूत्र

सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एगं जोयण सहस्सं उग्गाहित्ता, हेट्ठावेगं जोयण सहस्सं वज्जित्ता मज्झे छव्वीसुत्तरे जोयण सयसहस्से एत्थणं वालुयप्पभा पुढवि नेरइयाणं पण्णरस णिरया वास सयसहस्सा भवंतित्ति मक्खायं, तेणं णरगा अंतोवट्टा बाहिं चउरंसा, अहे खुरप्प संठाण संठिया, णिच्चंधयार तमसा ववगय गहचंदसूर णक्खत्त जोइस पहा, मेदवसा पूयपडल रुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुईवीसा परमदुब्भिगंधा, काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा, दुरहिआसा असुभाणरगा असुभाओ णरएसु वेअणाओ, एत्थणं वालुअप्पभा पुढवि नेरइयाणं, पज्जत्ता पज्जत्ताणं,

अर्थ

हजार योजन का जाडा है जिस में एक हजार ऊपर व एक हजार नीचे छोडकर एक लाख छवीस हजार योजन की पोलार है इस में नरकावास रहे हैं. नरपाथडे के सात अंतर हैं, एक अंतर है एक अंतर १२३७५ योजन के हैं. नरपाथडे के नाम. १ तप्त २ तपित ३ तपन ४ तापना ५ निदाघ ६ प्रज्वलित ७ उज्ज्वलित ८ संज्वलित और ९ संप्रज्वलित इन पाथडों में पन्नरह लाख नरकावासे हैं. वे नरकावासे अंदर से गोल, बाहिर से चौकुने, नीचे क्षुरप्र की धार समान तीक्ष्णधारवाले, सदैव महा अंधकार, चंद्र, सूर्य, ग्रहगण नक्षत्र व ताराओं रहित हैं. मेद, चरबी, राध, पडल, रुधिर, व मांस कीचड से लिपाये हैं... अशुचिमय परम दुरभि-

सूत्र

सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एगं जोयण सहस्सं उग्गाहित्ता, हेट्ठावेगं जोयण सहस्सं वज्जित्ता मज्झे छव्वीसुत्तरे जोयण सयसहस्से एत्थणं वालुयप्पभा पुढवि नेरइयाणं पण्णरस णिरया वास सयसहस्सा भवंतित्ति मक्खायं, तेणं नरगा अंतोवट्टा बाहिं चउरंसा, अहे खुरप्प संठाण संठिया, णिच्चंधयार तमसा ववगय गहचंदसूर णक्खत्त जोइ-सप्पहा, मेदवसा पूयपडल रुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुईवीसा परमदुब्भिगंधा, काउअगणिवण्णाभा कक्खडफासा, दुरहिआसा असुभाणरगा असु-भाओ णरएसु वेअणाओ, एत्थणं वालुअप्पभा पुढवि नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं.

अर्थ

हजार योजन का जाडा है जिस में एक हजार उपर व एक हजार नीचे छोडके एक हजार योजन की पोलार है. इस में नरकावास रहे हैं. नरपाथडे के सात अंतर हैं, एक अंतर है एक अंतर १२३७५ योजन में हैं. नरपाथडे के नाम. १ तप्त २ तपित ३ तपन ४ तापना ५ निदिष्ट ६ प्रज्वलित ७ उज्वलित ८ संज्वालित और ९ संजालित. इन पाथडो में पन्नरह लाख नरकावासे हैं. वे नरकावासे अंदरसे गोल, बाहिर से चौकुने, नीचे क्षुरप की धार समान तीक्ष्णधारवाले, सदैव महा अंधकार, चंद्र, सूर्य, ग्रहगन नक्षत्र व ताराओं रहित हैं. मेदा, चर्बी, राध, पडल, रुधिर व मांस कीचड से लिपाये हैं.. अशुचिमय परम दुरभि-

वक प्रभा.

[illegible]	इन्द्रक नाम	इन्द्रक प्रमाण	[illegible]
१	आर	[illegible]	[illegible]
२	तार	११८३३३[illegible]	[illegible]
३	मार	[illegible]	[illegible]
४	वर्चस्क	[illegible]	[illegible]
५	तमक	[illegible]	[illegible]
६	खाडख	१०७६६६६	[illegible]
७	खडखड	[illegible]	[illegible]

सूर पाकल्त्त ओझुमब्हा, मेदवसापूयपडल मस दहिर चिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा, परम दुब्भिगंधा, काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभाणरगा, असुभाओ णरगेसुवेअणाओ, एत्थणं पंकप्पभा पुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहव पंकप्पभा पुढविनेरइया परिवसंति, काला

कसाक ५ तमक ६ खाडख और ७ खडखड इन में पंकप्रभा नारकी के दश लाख नरकावास कहे हैं. वे नरकावास अंदर से गोलाकार बाहिर चतुष्कोन व नीचे क्षुरप्र (उस्तरा) की धार समान तीक्ष्ण, सदैव महा अंधकार मय. उद्योत रहित ग्रह सूर्यग्रहगण नक्षत्र व तारा की प्रभा रहित हैं. उन के तले मेद, चर्बी, राध, पड़ल मांस व रुधिर के कीचड़ से लिप्त हैं अशुचिमय हैं. परम दुर्गंधवाले कुंभार की भट्टी की अग्नि समान वर्णवाले, दुःसह कर्कश स्पर्शवाले, अशुभ नरक व नरक की अशुभ वेदनावाले हैं. यहां पर पंकप्रभा नारकी के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. उपपात आश्रित लोक के असंख्यातवे भाग में, समुद्घात आश्रित

सूत्र

सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एगं जोयण सहस्सं उग्गाहित्ता, हेट्ठावेगं जोयण सहस्सं वज्जित्ता मज्झे छव्वीसुत्तरे जोयण सयसहस्से एत्थणं वालुयप्पभा पुढवि नेरइयाणं पण्णरस णिरया वास सयसहस्सा भवंतित्ति मक्खायं, तेणं नरगा अंतोवट्टा बाहिं चउरंसा, अहे खुरप्प संठाण सठिया, णिच्चंधयार तमसा ववगय गहचंदसूर णक्खत्त जोइ-सप्पहा, मेदवसा पूयपडल रुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुईवीसा परमदुब्भिगंधा, काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा, दुरहिआसा असुभाणरगा असु-भाओ णरएसु वेअणाओ, एत्थणं वालुअप्पभा पुढवि नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं

अर्थ

हजार योजन का जाडा है जिस में एक हजार उपर व एक हजार नीचे छोडके एक हजार योजन की पोलार है इस में नरकावास रहे हैं. नरपाथडे के सात अंतर हैं, एक अंतर हैं एक अंतर १२३७५ योजन में हैं. नरपाथडे के नाम. १ तत्र २ तवित ३ तपन ४ तापना ५ निदिष्ट ६ प्रज्वलित ७ उज्वलित ८ सिद्धालित और ९ संज्वालित. इन पाथडों में पन्नरहा लाख नरकावासे हैं. वे नरकावासे अंदरसे गोल, बाहिर से चौकून, नीचे क्षुरप्र की धार समान तीक्ष्णधारवाले, सदैव महाअंधकार, चंद्र, सूर्य, ग्रहगन नक्षत्र व ताराओं रहित हैं. मेदा, वसा, राध, पडल, रुधिर, व मांस कीचड से लिपाये हैं. अशुचिमय परम दुर्गं

पंक प्रभा.

पाथडे	इन्द्रक नरका	इन्द्रक प्रमाण	[illegible]
१	आर	१६७०० [illegible]	.७
२	मार	११८३३३.	.२
३	घार	१२०१६	१
४	कस्तक	१२५०००	५३
५	तमक	११०८३३३	५२
६	व्हाटर	१०११६६६	५७
७	प्रप	१५५०००	४१

सुर णक्खत्त जोइसप्पहा, मेदवसापूयपडल मस दहिर चिक्खल्लिलित्ताणुलेवणतला असुईवीसा, परम दुब्भिगंधा, काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभाणरगा, असुभाओ णरगेसुवेयणाओ, एत्थणं पंकप्पभा पुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे पंकप्पभा पुढविनेरइया परिवसंति, काला

अर्थ

कसाक ५ तमक ६ व्हाटर और ७ प्रप इन पें पंकप्रभा नारकी के दश लाख नरकावास कहे हैं. वे नरकावास अंदर से गोलाकार बाहिर चतुष्कोन व नीचे क्षुरप्र (उस्तरा) की धार समान तीक्ष्ण, सदैव महा अंधकार मय उद्योत रहित ग्रह सूर्य चंद्र नक्षत्र व तारा की प्रभा रहित हैं. उन के तले मेद, वसा, राध, रक्त मांस व रुधिर के कीचड से लिप्त हैं अशुचिमय हैं. परम दुर्गंधवाले कुंभार की भट्ठी की अग्नि समान वर्णवाले, दुःसह कर्कश स्पर्शवाले, अशुभ नरक व नरक की अशुभ वेदना वाले हैं. यहां पर पंकप्रभा नारकी के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. उपपात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में, समुद्घात आश्रिय

तम प्रभा.

पाथड़ा	इन्द्रक	इन्द्रक मान	मु गंध
१	हिम	३५५०००	९१
२	वर्द्दल	२८३३३३३	९३
३	लल्लक	१११६६६	९५

पविसंति ? गोयमा? तमप्पभाए पुढविए सोलसुत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए, उवरिं एगंजोयण सहस्स ओगाहित्ता,हेट्ठावेग जोयण सहस्सवज्जित्ता, मज्झेचउदसुत्तरे जोयण सयसहस्से एत्थणं तम पभा पुढवि नेरइयाणं एगेपंचुणे नरयावास सयसहस्से हवंति त्तिमक्खायं, तेणं णरगा अंतोवट्टा, बाहिंचउरंसा, अहेखुरप्प संठाण संठीया, णिच्चंधयार तमसा ववगय गहचंदसुर नक्खत्त

उन का जाड़पना एक लाख सोलह हजार योजन का है जिसमें एक हजार योजन ऊपर व एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष एक लाख चौदह हजार योजन की पोलार हैं इस में तीन पाथडे हैं जिन के नाम १ हिम,२ वर्धमान और ३ लल्लक ये तीन हजार योजन के जाडे हैं ऊपर एक हजार व नीचे एक हजार योजन छोडकर शेष एक हजार योजन की पोलार है. इस में तमप्रभा पृथ्वी के पांच कम एक लाख नरका वासे हैं उक्त ना पाथडों को दो आंतर हैं एक २ आंतरा सावीं बावन हजार योजन के हैं. उक्त नरका वासे अंदर से वर्तुलाकार बाहिर से चौकून उस्तरे की धार जैसे, सदैव अंधकार युक्त, चंद्र, सूर्य ग्रहगण, नक्षत्र व ताराओं की प्रभा रहित हैं उस का तला, मेदा, चरबी, रुधिर, पहल, रुधिर व मांस के कीचड से लिप्त

तम प्रभा.

पाथडा	इन्द्रक	इन्द्रक मान	सू ग्रंथ
१	हिम	३७५०००	९१
२	वर्द्दल	२०८३३३३	९३
३	लल्लक	११६६६६	९६

पच्चिसंति ? गोयमा? तमप्पभाए पुढविए सोलसुत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए, उवरिं एगंजोयण सहस्स ओगाहित्ता,हेट्ठाविंग जोयण सहस्सवज्जित्ता, मज्झेचउद्दसुत्तरे जोयण सयसहस्से एत्थणं तम पभा पुढवि नेरइयाणं एगेपंचूणे नरयावास सयसहस्से हवंति तिमक्खायं, तेणं णरगा अंतोवट्टा, वाहिंचउरंसा, अहेखुरप्प संठाण संठीया, णिच्चंधयारतमसा ववगय गहचंदसुर नक्खत्त

उन का जाडपना एकलाख सोलह हजार योजन का है जिसमें एकहजार योजन ऊपर व एकहजार योजन नीचे छोडकर शेष एक लाख चौदह हजार योजन की पोलार है इस में तीन पाथडे हैं जिन के नाम १ हिम,२ वर्धवान और ३लालक ये तीन हजार योजन के जाडे हैं ऊपर एक हजार व नीचे एकहजार योजन छोडकर शेष एक हजार योजन की पोलार है. इस में तमप्रभा पृथ्वी के पांच कम एक लाख नरकावासे हैं उक्त तीन पाथडों को दो आंतर हैं एक २ आंतरा सावन हजार योजन के हैं. उक्त नरकावासे अंदर से वर्तुलाकार बाहिर से चौकून उस्तरे की धार जैसे, सदैव अंधकार युक्त, चंद्र, सूर्य ग्रहगण, नक्षत्र व ताराओं की प्रभा रहित हैं उन का तला, मेद, चरबी, रुधिर, पहल, रुधिर व मांस के कीचड से लिप्त

परिवसंति ? गोयमा ! तमप्पभाए पुढविए सोलसुत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए, उवरिं एगंजोयण सहस्स ओगाहित्ता, हेट्ठावि एगं जोयण सहस्सं वज्जित्ता, मज्झेचउदसुत्तरे जोयण सयसहस्से एत्थणं तमप्पभा पुढवी नेरइयाणं एगेपंचूणे नरयावास सयसहस्से हवंति त्तिमक्खायं, तेणं णरगा अंतोवट्टा,

सूत्र

तम प्रभा.

पाथडा	इन्द्रक	इन्द्रक मान	पृ गेथ
१	हिम	१......	९१
२	वर्द्दल	५८३३३३३	९३
३	लल्लक	१०१६६६	९५

बाहिंचउरंसा, अहेखुरप्पसंठाणसंठिया, णिच्चंधयारतमसा ववगय गहचंदसूर नक्खत्त

अर्थ

तम का पाथडा एक लाख सोलह हजार योजन का है जिसमें एक हजार योजन ऊपर व एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष एक लाख चौदह हजार योजन की पोलार है इस में तीन पाथडे हैं जिन के नाम १ हिम, २ वर्दल और ३ लल्लक ये तीन हजार योजन के जाडे हैं ऊपर एक हजार व नीचे एक हजार योजन छोडकर शेष एक हजार योजन की पोलार है. इस में तमप्रभा पृथ्वी के पांच कम एक लाख नरका वास है उक्त तीन पाथडों को दो आंतरे हैं एक २ आंतरा साढे बावन हजार योजन के हैं. उक्त नरका वासे अंदर से वर्तुलाकार बाहिर से चौकून उतारे की धार जैसे, सदैव अंधकार युक्त, चंद्र, सूर्य ग्रहगण, नक्षत्र व ताराओं की प्रभा रहित हैं उन का तला, मेद, चरबी, राधिर, पस्म, रुधिर व मांस के कीचड से लिप्त

सूत्र

णरय भयं पच्चणुब्भवमाणाविहरंति ॥ २१ ॥ कहिणं भंते ! तमतमप्पभा पुढवि नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! तमतमप्पभाए पुढवि नेरइया परिवसंति? गोयमा! तमतमप्पभा पुढवीए अट्ठुत्तर-जोयण सयसहस्सं बाहल्लाए, उवरि अद्धतेवण्ण जोयण सहस्साइं उगाहित्ता, हेट्ठावि अद्धतेवण्ण जोयण सहस्साइं वज्जित्ता, मज्झ तिसुवि जोयणसहस्सेसु एत्थणं तमतमप्पभा पुढवि नेरइयाणं पंचदिसिं पंचअणुत्तरा महइमहालया महा नरया

अर्थ

हुवे विचरते हैं. । यह उनका स्वरूप देखो ॥ २१ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! तमतमा पृथ्वी नारकीके पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ! और तमतमा पृथ्वी के नारकी कहां रहते हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! तमतमप्रभा पृथ्वी ग [illegible] असंख्यात कोडा क्रोड योजन तमतमाप्रभा पृथ्वी है उस का जाडपना एक लाख आठ हजार योजन का है, जिस में साडीबावन हजार [illegible]

मूल

मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुईवीसा परमदुब्भिगंधा, कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा, असुभाणरगेसुवेअणाओ, एत्थणं तमप्पभा पुढवि नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभाए. समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे संट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे तमप्पभा पुढवि नेरइया परिवसंति, काला कालोभासा गंभीर लोमहरिसा भीमा, उत्तासणगा परमकिण्हावण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो! तेणं तत्थणिच्चंभीया, णिच्चंतत्था, णिच्चंतसिया, णिच्चंउव्विग्गा, णिच्चपरम असुहं संबद्ध-

अर्थ

है. प्रकाश से रहित है. परम दुर्गंध वाले, दुःसह कर्कश स्पर्श वाले अशुभ नरक वाले व नरक की अशुभ वेदना वाले हैं. यहांपर तम प्रभा पृथ्वी के नारकी के पर्याप्त अपर्याप्त स्थानक कहे हैं. उपपात आश्रिय लोक के असंख्यात वे भाग में, समुद्घात आश्रिय लोक के असंख्यात वे भाग में, और स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होते हैं. यहां पर बहुत तमप्रभा पृथ्वी के नारकी रहते हैं, वे काले, काली प्रभा वाले, गंभीर, रोमांच खडे होवे वैसे, भयंकर, रौद्र, परम कृष्ण वर्ण हैं. वे यहां सदैव डरे हुवे, त्रास पाये हुवे, उद्वेग पाये हुवे परम अशुभ संबंध वाला नरक का भय अनुभवते

सूत्र

जोइरूत्रहा मेद वसा पूअरुडल रुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला, असुईविसा परमदुब्भिगंधा, कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा, असुभाणरएसुवेअणाओ, एत्थणं तमप्पभा पुढवि नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभाए, समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे संट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे तमप्पभा पुढवि नेरइया परिवसंति, काला कालोभासा गंभीर लोमहरिसा भीमा, उत्तासणगा परमकिण्हावण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो ! तेणं तत्थणिच्चंभिया, णिच्चंतत्था, णिच्चंतसिया, णिच्चंउव्विग्गा, णिच्चपरम मसुह संबद्ध-

अर्थ

है. अशुचि से परिपूर्ण है. परम दुरभिगंध वाले, दुःसह कर्कश स्पर्श वाले अशुभ नरक वाले व नरक की अशुभ वेदना वाले हैं. यहांपर तम प्रभा पृथ्वी के नारकी के पर्याप्त अपर्याप्त स्थानक कहे हैं. उपपात आश्रित लोक के असंख्यात वे भाग में, हैं, समुद्घात आश्रित लोक के असंख्यात वे भाग में, और स्वस्थान आश्रित लोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होते हैं. यहां पर बहुत तमप्रभा पृथ्वी के नारकी रहते हैं, वे काले, काली भास वाले, गंभीर, देखते रोम खडे होवे वैसे, भयंकर, रौद्र, परम कृष्ण कहे हैं. वे वहां सदैव डरे हुवे, त्रास पाये हुवे, उद्वेग पाये हुवे परम अशुभ संबंध वाला नरक का भय अनुभवते

सूत्र

भवंति विमाणवासीणं॥ तेसिं भवणा बाहिं वट्टा, अंतो समचउरंसा, अहेपुक्खरकण्णियासंठाण संठिया, उक्किण्णतर विउलगंभीरखात फलिहा पागारट्टालयकवाड तोरण पडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घि मुसंढि परिवारिया, अउज्झासदाजया, सयाअजेया, सयागुत्ता अडयाल कोट्ठरइया, अडयालकयवणमाला, खेमा सिवा, किंकरा मरदंडोवरक्खिया, लाउल्लोइयमहिया, गोसीससरसरत्तचंदण दद्दरदिण्ण पंचंगुलितला, उवचियवंदणकलसा वंदणघडसुकय तोरणपडिदुवारदेसभागा, आसत्तोसत्त विउलवट्ट वग्घारियमल्लदामकलावा, पंचवण्णसरससुरहिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया,

अर्थ

स्फटिकमय प्राकार, अट्टालक, (गोखडे) कपाट, तोरण व प्रतिद्वार रहे हुए, यंत्र सायगी शतध्नी (तोप) मूसल वगैरह शस्त्रों से वे भवनों परिवेष्टित हैं, इस से अन्य कोई भी युद्ध नहीं कर सकते हैं, सदैव विजयवंत, अजय, व गुप्त हैं अडतालीस प्रकार के कोठे हैं, अडतालीस प्रकार के वनमालाओं हैं, क्षेम व कल्याण के करनेवाले हैं, किंकरभूत देवों उन की रक्षा करते हैं, गोमय व चूने से भवनों लिपकर पूजित हुवे हैं, श्रेष्ट रक्त गोशीर्ष चंदन के पांच अंगुलियों के छापे दीये हैं, यहां पर मांगल्यकार्य निमित्त चंदन के कलश स्थापन कीये हैं, चंदन के घडे से प्रतिद्वार के तोरण बनाये हैं, नीचे भूमि का स्पर्श कर रहे वैसी विस्तीर्ण गोलाकार लटकती हुई पुष्पों की मालाओं का समूह रहा

सूत्र

भवणवासी देवा पन्नत्ता तंजहा-(गाहा) असुरा नागसुवण्णा, विज्जु अग्गीय दीव उदहीय॥दिसिपवण थणियनामा,दस होएए भवणवासी ॥ १ ॥चुडामणिमउडरयण भूसणणागफणि गरुलवइर पुण्णकलसंकिउप्फेसा सीह मगर मयंकअसवर वद्धमाण निजुत्ताचित्तचिंधगया ॥ २ ॥ सुरूवा महिड्डिया, महज्जुइया, महायसा महाबला, महाणुभावा, महासोक्खा हारविराइयवत्था, कडग तुडिय थंभिय भुया, अंगय कुंडल मट्ठगंडतल कण्ण पीढधारी, विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमाला मउली मउलि, कल्ला-

अर्थ

अनन्तवाने भाग में है यहांपर बहुत भवनवासी देव रहते हैं जिन के नाम १ असुर कुमार २ नागकुमार ३ सुवर्ण कुमार ४ विद्युत्कुमार ५ अग्निकुमार ६ द्वीपकुमार ७ उदधि कुमार ८ दिशाकुमार ९ पवन कुमार और १० स्तनित कुमार यों दश प्रकार की जाति वाले देव रहते हैं ॥ १ ॥ असुर कुमार के मुकुट में चूडामनि का चिन्ह है २ नागकुमार के मुकुट में नागफनी का चिन्ह है ३ सुवर्ण कुमार के मुकुट में गरुड का चिन्ह है ४ विद्युत्कुमार के मुकुट में वज्र का चिन्ह है ५ अग्निकुमार के मुकुट में पूर्ण कलश का चिन्ह है ६ द्वीपकुमार के सिंहका चिन्ह है ७ उदधि कुमार को वाहिका चिन्ह है ८ दिशा कुमार को हस्ती का चिन्ह है ९ पवन कुमार को मगर का चिन्ह है और १० स्तनित कुमार के मुकुट में मानवाले संपुट का चिन्ह है ॥ २ ॥ उक्त देवों अपने २ चिन्हों से युक्त सुरूप, महर्द्धिक, महाद्युति वाला

साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं, साणं २ आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहुणं भवणवासीणं देवाणय देविणय, आहेवच्चं, पोरेवच्चं, सामित्तं, भट्टित्तं, महत्तरगत्तं, आणाईसर सेणावच्चं, कारेमाणा, पालेमाणा; महयाहय नट्टगीय वाइय तंतीतलताल तुडिय घणमुइंग पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ॥ २६ ॥ कहिणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असी उत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिएगं जोयण सहस्सं उग्गाहित्ता, हेट्ठावेगं

सामानिक, त्रायस्त्रिंशक, लोकपाल, अग्रमहिषियों, परिषदा, अनिक, अनिकाधिपति, आत्मरक्षक देव व अन्य बहुत भवनवासी देवता व देवियों का अधिपतिपना, पुरोगामीपना, स्वामीपना, पोषकपना, रक्षणा करते व आज्ञा पालते अन्य को पालन करते हुवे २ नृत्य, गीत, वादित्र, तंत्री, ताल, तुटित व मृदंग के बडे २ शब्दों से दिव्य भोग उपभोग भोगवते हुवे विचरते हैं ॥ २६ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! असुरकुमार देवों के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ? और असुरकुमार देव कहां रहते हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिण्ड है, जिस में एक हजार योजन ऊपर का व एक हजार योजन नीचेका छोडकर शेष एक लाख अठत्तर हजार योजन की पोलार में असुर कुमार के

सूत्र

पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोअस्स असंखेज्जइ भागे, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्टाणेणं लोअस्स असंखेज्जइ भागे॥२५॥कहिणं भंते ! भवणवासीणं देवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहिणं भंते! भवणवासी देवा परिवसंति ? गोयमा! इमीसे रय- णप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगा- हित्ता,हेट्ठावेगं जोयण सहस्स वज्जित्ता,मज्झे अट्ठहुत्तरी जोयण सय सहस्से एत्थणं भवण- वासी देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्तभवण कोडीओ बावत्तरिंच भवणवास सयसहस्सा

अर्थ

असंख्यातवे भाग में, समुद्घात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में व स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में हैं ॥ २५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पर्याप्त अपर्याप्त भवनवासी देव के स्थान कहां है ? और भवनवासी देव कहां रहते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है जिस में एक हजार योजन ऊपर व एक हजार योजन नीचे छोडकर बीच में एक लाख अठत्तर हजार योजन की पोलार है यहां पर भवनपति देवों के सात क्रोड बहत्तर लाख भवन कहे हैं. वे भवनों बाहिर से वर्तुलाकार, अंदर से चौकून हैं. नीचे का तल कमल की कर्णिका के संस्थानवाला है. अर्थात् सूक्ष्म स्पर्शवाला है, उस को ऊंची विस्तारवाली गंभीर खाइ है,

सूत्र

साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं, साणं २ आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहुणं भवणवासीणं देवाणय देविणय, आहेवच्चं, पोरवच्च, सामित्तं, भट्टित्तं, महत्तरगत्तं, आणाईसर सेणावच्चं, कारेमाणा, पालेमाणा; महयाहय नट्टगीय वाइय तंतीतलताल तुडिय घणमुइंग पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ॥ २६ ॥ कहिणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असी उत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिएगं जोयण सहस्सं उग्गाहित्ता, हेट्ठावेगं

अर्थ

त्रायत्रिंशक, लोकपाल, अग्रमहिषियों, परिषदा, अनिक, अनिकाधिपति, आत्मरक्षक देव व अन्य बहुत भवनवासी देवता व देवियों का अधिपतिपना, पुरोगामीपना, स्वामीपना, पोषकपना, बडपना करते व आज्ञा पालते अन्य को प्रधान करते बडे २ नृत्य, गीत, वादित्र, तंत्री, ताल, त्रुटित व मृदंग के बडे २ शब्दों से दिव्य भोग उपभोग भोगवते हुवे विचरते हैं ॥ २६ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! असुरकुमार देवों के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ? और असुरकुमार देव कहां रहते हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिण्ड है, जिन में एक हजार योजन ऊपर का व एक हजार योजन नीचे का छोडकर शेष एक लाख अठत्तर हजार योजन की पोलार में असुर कुमार के

सूत्र

कालागुरु पवर कुंदुरुक्क तुरुक्क धूव मघमघंत गंधुद्धुयाभिरामा, सुगंधवरगंधगंधिया गंधवट्टीभूया, अच्छरगण संघसंविकिण्णा, दिव्वतुडियसद्द संपणदित्ता, सव्वरयणमया, अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया, सप्पभा, सस्सिरिया, सउज्जोया, पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ एत्थणं भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणंठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइ भागे, सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे

अर्थ

हुवा है. पांच वर्ण के श्रेष्ठ सुगंधित पुष्पों का पुंज रहा हुवा है, कृष्णागर, कुंदरुक्क, चीड धूप, सेल्हारस इत्यादि धूपों से मघमघाय मान होने से सुंदर बने हुवे हैं, श्रेष्ठ सुगंधियों से सुवासित बने हुवे हैं, सुगंधी पदार्थ की गोली समान बबके हैं, अप्सराओं के समुह से संकीर्ण है, दीव्य त्रुटित वादित्रों के शब्दों से सुनने योग्य, सब रत्नमय, आकाश समान निर्मल है, सुकमाल है, घुटे जैसे निर्मल सुकुमाल, पाषाण जैसे घसारे मठारे हैं, रज रहित, मैल रहित, पंक रहित, आवरण-पडल रहित, शोभा सहित, प्रभा सहित, सश्रिक शोभायमान कीरणों सहित, उद्योत सहित, मन को नमस्कारी, देखने योग्य, अत्यंत सूक्ष्म व देखते प्रतिबिम्बित हैं. यहांपर भुवनपति देवों के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे हैं, उत्पात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में, समुद्घात आश्रिय लोक के असंख्यातवे [illegible]

सूत्र

णागवर वत्थपरिहिया, कल्लाणग पवर मल्लाणुलेवणधरा, भासुरबोंदी पलंब वणमाल-धरा, दिव्वेण वण्णेणं, दिव्वेणं गंधेणं, दिव्वेण फासेणं, दिव्वेणं संघयणेणं, दिव्वेणं संठाणेणं, दिव्वाए इड्ढीए, दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अच्चीए, दिव्वेणं, तेएणं, दिव्वाए लेसाए, दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा, तेणं तत्थ साणं २ भवणावास सयसहस्साणं, साणं २ सामाणिय साहस्सीणं, साणं २ तायत्तीसाण, साणं २ लोगपालाणं, साणं २ अग्गमहिसीणं, साणं २ परिसाणं,

अर्थ

महायश वाले, महानुभाग, महासुख के भोक्ता हैं. इन का वक्षःस्थल हारों से विराजित है, भुजाओं कड़े व भुजबंधों से स्तंभित हैं, अंगद, कानों के कुंडल व गंडस्थल को घिस कर कर्णाभरण विशेष शोभित किये हुवे हैं. हाथ में विचित्र आभरण रहे हुवे हैं, मस्तक में विचित्र मालाओं रही हुई हैं, कल्याणकारी श्रेष्ठ वस्त्र पहिने हुए हैं. कल्याणकारी श्रेष्ठ विलेपन कीये हुवे हैं, देदीप्यमान शरीर पर लम्बी माला धारन की है. दीव्य वर्ण, दीव्य गंध, दीव्यरस, दीव्य स्पर्श, दीव्य संघयण, दीव्य संठाण, दीव्य ऋद्धि, दीव्य द्युति, दीव्य प्रभा, दीव्य कान्ति, दीव्य [illegible] दीव्य लेश्या से दशोदिशि में प्रकाश करते हुवे [illegible]

सूत्र

जोयण सहस्सं वज्जित्ता, मज्झे अट्ठहत्तरि जोयणसहस्से एत्थणं असुर कुमाराणं देवाणं चउसट्ठी भवणावाससयसहस्साहवंति त्तिमक्खायं, तेणं भवणा बाहिंवट्टा, अंतोचउरंसा, अहेपुक्खर कण्णिया संठाण संठिया, उक्किण्णंतरविउल-गंभीर खायफलिहा पागारट्टालय कवाड तोरण पडिदुवारदेसभागा, जंतसयग्घि मुसल मुसंढि परिवारिया, अउज्झासया जया सदागुत्ता, अडयाल कोट्ठगरइया, अडयाल कयवण-माला खेमा सिवा, किंकरामरदंड ओवरक्खिया, लाउल्लोइय महिया गोसीस सरसरत्तचंदण दद्द-

अर्थ

[illegible] भवन कहे हैं, वे भवनों बाहिर से वर्तुलाकार, अंदर से चौकूने हैं, नीचे का तला कमल की कर्णिका के संस्थानवाला है, उन को चारों विस्तारवाली गंभीर खाई है, स्फटिक रत्नमय प्रकार, अट्टालक, [illegible] कपाट, तोरण व प्रतिद्वार हैं, यंत्र नाशक शतघ्नी (तोप) मूशल वगैरह शस्त्रों से वे भवनों परिवेष्टित हैं, इन में अन्य कोई भी युद्ध नहीं कर सकते हैं सदैव जितवंत [illegible] से गुप्त हैं, अडतालीस प्रकार के कोट हैं, अडतालीस प्रकार की वनमालाओं हैं, वे क्षेम व कल्याण करनेवाले हैं, किंकर [illegible] उन की रक्षा करते हैं, गोमय व चूने से लीपकर पूजित हुए हैं, श्रेष्ठ रक्त गोशीर्ष चंदन से [illegible] के थापे दिये हैं, वहां पर मंगल कार्य निमित्त चंदन के कलश स्थापन

सू. एत्थणं असुर कुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइ-भागे, तत्थणं बहवे असुर कुमारदेवा परिवसंति, काला लोहिअक्खबिंबोट्ठा, धवल-पुप्फदंतणा, असियकेसा, वामेगकुंडलधरा, अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता, ईसि-सिलिंध पुप्फपगासाइं; असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवर परिहिया वयंचपढमस-मइक्कंता बिइयंच असंपत्ता भद्देजोव्वणे वट्टमाणा, तलभंगय तुडिय पवर भूसणनि-

अर्थ—अत्यंत सूक्ष्म देखते प्रतिबिम्ब पड़े वैसे हैं. यहांपर असुर कुमार देवों के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. उपपात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में, समुद्घात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में हैं. यहांपर बहुत असुर कुमारदेव रहते हैं. रक्त नेत्र वाले, बिम्ब फल समान ओष्ठ वाले, श्वेत पुष्प समान दांत, व काले केशवाले हैं, एक डावे कर्ण में कुंडल धारण करते हैं, आर्द्र गोशीर्ष चंदन से गात्रों को लेपन कीया है, किंचित्मात्र रक्त शिलेन्द्र के पुष्प समान सुखकार [illegible] बाल्यवय को त्यजकर यौवना वस्था को प्राप्त नहीं हुवे है अर्थात् [illegible] मणि रत्नों से भूषा मंडित हैं, इनों

सूत्र

दसदिसाओ उज्जोवेमाणा, पभासेमाणा, तेणं तत्थ साणं २ भवणावास सयसहस्साणं साणं २ सामाणिय साहस्सीणं, साणं २ तायत्तीसगाणं, साणं २ लोगपालाणं, साणं २ अग्गमहिसीणं, साणं २ परिसाणं, साणं २ अणिआणं, साणं २ अणिआहिवइणं, साणं २ आयरक्खदेव-साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय, आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्त भट्टित्त महत्तरगं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महया हय णट्टगीय वाइय तंतीतलतालतुडिय घणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं, दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंज-माणा विहरंति ॥ २७ ॥ चमरबलिणो इत्थदुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमाररायाणो परिवसंति,

अर्थ

दिशी में प्रकाश करते हुवे उद्योत करते हुवे अपने २ लाखों भवनों, हजारों सामानिक, त्रायस्त्रिंशक लोकपाल, अग्रमहिषियों, परिषद अनिक, अनिकाधिपति, आत्मरक्षकदेव व और भी बहुत भवनवासी देव व देवियों का अधिपतिपना, पुरोगामीपना, स्वामीपना, पोषकपना, बडापना करते हुए कराते हुए, आज्ञा [illegible] अन्य से पलाते हुए बडे नृत्य गीत, वादित्र, तंत्री, ताल, त्रुटित व मृदंग के बडे २ शब्दों [illegible] हुए विचरते हैं ॥ २७ ॥ यहांपर चमर व बली यों दो [illegible] रहते हैं, वे काले वर्ण वाले काली प्रभा वाले

सूत्र

दसदिसाओ उज्जोवेमाणा,पभासेमाणा,तेणं तत्थ साणं २ भवणावास सयसहस्साणं...
सामाणिय साहस्सीणं,साणं २ तायत्तीसगाणं, साणं २ लोगपालाणं, साणं २ अग्गमहिसीणं,
साणं २ परिसाणं, साणं २ अणिआणं, साणं २ अणिआहिवईणं, साणं २ आयरक्खदेव-
साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय, आहेवच्चं पोरेवच्चं
सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महया हय णट्टगी-
यवाइयतंतीतलतालतुडिय घणमुइंगपडुप्पवाइअरवेणं, दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंज-
माणा विहरंति॥२७॥चमरस्स णं इत्थ दुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमाररायाणो परिवसंति,

अर्थ

दिशी में प्रकाश करते हुवे उद्योत करते हुए अपने २ लाखों भवनों, हजारों सामानिक, त्रायत्रिंशक
लोकपाल, अग्रमहिषियों, परिषद् अनिक, अनिकाधिपति, आत्मरक्षक देव व और भी बहुत भवनवासी देव
व देवियों का अधिपतिपना, पुरोगामीपना, स्वामीपना, पोषकपना, महत्तरपना करते हुए कराते हुए, आज्ञा
पालते हुए अन्य से पलाते हुए बडे नृत्य, गीत, वादित्र, तंत्री, ताल, त्रुटित व मृदंग के बडे २ शब्दों
से दीव्य भोग उपभोग भोगवते हुए विचरते हैं ॥ २७ ॥ यहांपर चमर व बली यों दो
— — इन्द्र व असुर कुमार के राजा रहते हैं. वे काले वर्ण वाले काली प्रभा वाले

सूत्र

परिवसंति, महिड्डिया, सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरंति ॥ ३१ ॥ कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! दाहिणिल्ला नागकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर—जोयण सयसहस्स, बाहल्लाए, उवरिएगं जोयण सहस्सं उग्गाहित्ता, हेट्ठावेगंजोअणसहस्सवज्जेत्ता, मज्झे अट्ठहत्तरि जोयण सयसहस्से, एत्थणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं चोयालीसं भवणावास सयसहस्सा भवंतितिमक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा ॥ एत्थणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि-

अर्थ

देव रहते हैं वे महर्द्धिक वगैरह औधिक जैसे सब कथन करना यावत् विचरते हैं. ॥ ३१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! दक्षिण के पर्याप्त अपर्याप्त नागकुमार देव के स्थान कहां कहे हैं ? और अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के नागकुमार देव कहां रहते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में इस रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन जाडपना कहा जिस में एक हजार योजन उपर का व एक हजार योजन नीचे का छोडते शेष एकलाख अठहत्तर योजन की पोलार में दक्षिण दिशा के नागकुमार देव के चम्मालीस लाख भवन कहे हैं. वे भवनों बाहिर से गोल अंदर से चौकून यावत् प्रति रूप हैं. यहां पर दक्षिण दिशा के नागकुमार देव के

सूत्र

दसदिसाओ उज्जोवेमाणा, पभासेमाणा, तेणं तत्थ साणं २ भवणावास सयसहस्साणं साणं २ सामाणिय साहस्सीणं, साणं २ तायत्तीसगाणं, साणं २ लोगपालाणं, साणं २ अग्गमहिसीणं, साणं २ परिसाणं, साणं २ अणिआणं, साणं २ अणिआहिवइणं, साणं २ आयरक्खदेव-साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय, आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्त भट्टित्तं महत्तरगं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महया हय णट्टगी-यवाइयतंतीतलतालतुडिय घणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं, दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंज-माणा विहरंति॥ २७॥ चमरेय इत्थ दुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमाररायाणो परिवसंति,

अर्थ

दिशी में प्रकाश करते हुवे वर्णन करते हुए अपने २ लाखों भवनों, हजारों सामानिक, त्रायत्रिंशक लोकपाल, अग्रमहिषियों, परिषद अनिक, अनिकाधिपति, आत्मरक्षकदेव व और भी बहुत भवनवासी देव व देवियों का अधिपतिपना, पुरोगामीपना, स्वामीपना, पालकपना, बडापना करते हुए कराते हुए, आज्ञा पालते हुए अन्य से पलाते हुए बडे नृत्य, गीत, वादित्र, तंत्री, ताल, त्रुटित व मृदंग के बडे २ शब्दों से दीव्य भोग उपभोग भोगवते हुए विचरते हैं ॥ २७ ॥ यहांपर चमर व बली यों दो असुर कुमार के इन्द्र व असुर कुमार के राजा रहते हैं. वे काले वर्ण वाले काली प्रभा वाले

रत्नमणिरयण मंडियभुया, दसमुद्दामंडियग्गहत्था, चूडामणिविचित्तचिंधगया, सुरूवा महिड्डीया, महज्जुइया, महायसा, महब्बला, महाणुभागा, महासोक्खा, हारविराइय वत्था, कडगतुडियथंभियभुया, अंगदकुंडल मट्ठगंडतल कण्णपीढधारी, विचित्त हत्थाभरणा, विचित्तमालामउलिमउडा, कल्लाणगपवर वत्थपरिहिया, कल्लाणगपवर मल्लाणुलेवणधरा, भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा, दिव्वेणं वण्णेणं, दिव्वेणं गंधेणं, दिव्वेणं फासेणं, दिव्वेणं संघयणेणं, दिव्वेणं संठाणेणं, दिव्वाए इड्डीए, दिव्वाए जुईए, दिव्वाए आभाए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अच्चीए, दिव्वेणं तेएणं, दिव्वाए

अर्थ — श्रेष्ठ भूषणों व मणिरत्नों से भुजा मंडित हुइ है. हाथों की दशों अंगुलियों में मुद्रिका धारन की है, चूडा मणि का चिन्ह रहा हुवा है. ऐसे सुरूप, महर्द्धिक महाद्युतिवंत, महायश वाले, महाबल वाले, महानुभाग वाले, महासुखवाले, वक्षःस्थलपर हार धारन करने वाले, कडे, त्रुटित से भुजा स्थंभित करने वाले, अंगद कुंडल व गंडस्थल को स्पर्श कर रहा हुवा कर्णाभरण विशेषको धारण करने वाले, विचित्र हस्त का आभरण वाले, विचित्र प्रकार की माला व मुकुट धारन करने वाले, कल्याणकारी व श्रेष्ठ वस्त्र पहिनने वाले, कल्याणकारी श्रेष्ठ माल्य व लेपन धारन करने वाले, देदिप्यमान शरीर पर लम्बी लटकती हुइ माला

सूत्र

कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं असुरकुमारदेवा परिवसंति? गोयमा! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए असिउत्तरजोयण सयसहस्स बाहल्लाए, उवरिंएगंजोयण सहस्सं ओगाहित्ता, हेट्ठा चेगंजोयण सहस्सं वज्जेत्ता, मज्झे अट्ठहत्तर जोयण सयसहस्से, एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवीणय चउत्तीसं भवणावास सयसहस्सा भवंति त्तिमक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा, अंतो-चउरंसा, सोचेव वण्णओ जाव पडिरूवा; एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणंठाणा पण्णत्ता, तिसुविलोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे दाहिणिल्ला

अर्थ

गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में इस रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का जाडपना कहा. जिस में एक हजार योजन ऊपर व एक हजार योजन नीचे छोडते शेष एक लाख अठहत्तर हजार योजन की पोलार में दक्षिण दिशा के असुर कुमार देवता व देवियों के चौतीस लाख भुवन कहे हैं. वे बाहिर से गोल व अंदर से चौरस यावत् प्रतिरूप हैं. यहां पर पर्याप्त अपर्याप्त दक्षिण दिशा के असुर कुमार देव के स्थानक कहे हैं. उपपात आश्रित लोक के असंख्यातवे भाग में हैं, समुद्घात आश्रित लोक के असंख्यातवे भाग में हैं, व स्वस्थान आश्रित लोक के असंख्यातवे भाग में हैं, वहां दक्षिण दिशा के असुर कुमार के बहुत देव व देवियों रहते हैं. वे वर्ण से काले; रक्त नेत्रवाले यावत् भोग-

सूत्र

कुमाराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरइ ॥ ३२ ॥ कहिणं भंते ! उत्तरिल्लाण नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! उत्तारिल्ला नागकुमारदेवा परिवसंति? गोयमा ! जंबुद्दीव २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, असीउत्तर-जोयण सयसहस्स बाहल्लाए, उवरिएग जोयण सहस्सं उग्गाहित्ता, हेट्ठावेगं जोयण सहस्सं वज्जित्ता, मज्झे अट्ठहत्तरि जोयण सयसहस्से एत्थणं उत्तरिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं चत्तालीसं भवणावास सयसहस्सा भवंति त्तिमक्खायं ॥ तेणं भवणा बाहिंवट्टा सेसं जहा

अर्थ

कुमार जाति के देव देवियों का अधिपति पना पुरोगामी पना यावत् विचरते हैं. ॥ ३२ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् उत्तर दिशा के पर्याप्त अपर्याप्त नागकुमार जाति के देव के स्थान कहां कहे हैं? और उत्तरदिशा के नाग कुमार देव कहां रहते हैं? उत्तर-अहो गौतम! जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत की उत्तर में रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का जाडपना है उस में एक हजार योजन नीचे छोडना एक हजार योजन ऊपर छोडना, मध्य में एक लाख अठत्तर हजार योजन की पोलार में उत्तर दिशा के नागकुमार जाति के देव के चालीस लाख भुवन कहे हैं. वे भवनों बाहिर से वर्तुलाकार वगैरह जैसे दक्षिण दिशा का कहा वैसे यहां भी कहना यावत् विचरते हैं. यहांपर

सुवण्णकुमारिंदे सुवण्णकुमारराया परिवसइ. महिड्डिए. सेसं जहा नागकुमाराणं एवं जहा सुवण्ण कुमाराणं वत्तव्वया भणिया तहा सेसाणवि चउदसण्हं इंदाणं भाणियव्वा णवरं भवणणाणत्तं इंदाणणाणत्तं, वण्णेणणाणत्तं, परिहाणणाणत्तंच, इमाहिं गाहाहि अणुगंतव्वं ॥ चउसट्ठी असुराणं चुलसीइंचेव होइणागाणं ॥ बावत्तरिसुवण्णाणं, वाउकुमाराणं छण्णउत्ति ॥ १ ॥ दीव दिसाउदहीणं, विज्जुकुमारिंद थणियमग्गीणं छण्हंपिजुयलयाणं छावत्तरिमोसय सहस्सा ॥ २ ॥ चोत्तीसा चायाला अट्ठत्तीसंचहोइ सयसहस्साइं ॥ पण्णाचत्तालीसादाहिणओ होंतिभवणाइं ॥ ३ ॥ तीसा चत्तालीसा

अर्थ

के इन्द्र राजा है वे महर्द्धिक यावत् शेष सब अधिकार नाग कुमार जैसे कहना. जैसे सुवर्ण कुमारकी वक्तव्यता कही वैसे ही शेष चवदह इन्द्रोंकी वक्तव्यता जानना. परंतु भवन, इन्द्रके नाम, शरीरका वर्ण व पहिनने के वस्त्र के वर्ण में भिन्नता जानना. १ असुर कुमार के चौसठ लाख भुवन, २ नाग कुमार के चोरासी लाख भुवन, ३ सुवर्ण कुमार के बहत्तर लाख भुवन, ४ वायु कुमार के छन्नु लाख भुवन, ५ द्वीप कुमार, ६ दिशा कुमार, ७ उदधि कुमार, ८ विद्युत कुमार, ९ स्थनित कुमार, १० अग्नि कुमार. इन के छ के प्रत्येक के छहत्तर लाख भवन कहे हैं. अब दक्षिण दिशा के भवनपतियों के भुवन कहते हैं. १ असुर कुमार के चोतीस लाख २ नाग कुमार के चम्मालीस लाख ३ सुवर्ण कुमार के अडतीस लाख,

सूत्र लोगस्स असंखिज्जइ भागे. एत्थणं बहवे दाहिणिल्ला नागकुमारादेवा परिवसंति, महिड्डिया जाव विहरंति॥ धरणेइत्थ नागकुमारिंदे णागकुमारराया परिवसइ, महिड्डिए जाव पभासेमाणे, सेणंतत्थ चोयालीसाए भवणावास सयसहस्साणं, छण्हं सामाणिय साहस्सीणं ताव-त्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, छण्हं अग्गमहिस्सीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउ-वीसाए आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूण दाहिणिल्लाणं णाग,

अर्थ पर्याप्त अपर्याप्त के स्थानक कहे हैं उपपात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होवे, समुद्घात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होवे और स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होवे यहां पर बहुत नागकुमार देव देवी रहते हैं, वे महर्द्धिक यावत् विचरते हैं. इनका धरण नामक नाग कुमारेन्द्र नागकुमार का राजा है वे महर्द्धिक यावत् प्रकाश करते हुवे चम्मालीस लाख भवन, छ हजार सामानिक, तेत्तीस त्रायस्त्रिंशक, चार लोकपाल, परिवार सहित छ अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक सात अनिक के अधिपति, चौबीस हजार आत्म रक्षक देव और भी अन्य बहुत दक्षिण दिशा के नाग

१ एक २ अग्रमहिषियों को छ २ हजार का परिवार है और एक २ छ २ हजार का वैक्रेय बनाती है.

सूत्र

लोगस्स असंखिज्जइ भागे, एत्थणं बहवे दाहिणिल्ला नागकुमारादेवा परिवसंति, महिड्डिया जाव विहरंति॥ धरणेएत्थ नागकुमारिंद णागकुमारराया परिवसइ, महिड्डिए जाव पभासेमाणे, सेणंतत्थ चोयालीसाए भवणावास सयसहस्साणं, छण्हं सामाणिय साहस्सीणं ताव-त्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, छण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाण, सत्तण्हं अणियाण, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउ-व्वीसाए आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं दाहिणिल्लाणं णाग,

अर्थ

पर्याप्त अपर्याप्त के स्थानक कहे हैं. उपपात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होवे, समुद्घात आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होवे और स्वस्थान आश्रिय लोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होवे. यहांपर बहुत नागकुमारदेव देवी रहते हैं, वे महर्द्धिक यावत् विचरते हैं. इनका धरण नामक नाग कुमारेन्द्र नागकुमार का राजा है. वे महर्द्धिक यावत् प्रकाश करते हुवे चम्मालीस लाख भवन, छ हजार सामानिक, तेत्तीस त्रायत्रिंशक, चार लोकपाल, परिवार सहित छे अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक सात अनिक के अधिपति, चोवीस हजार आत्म रक्षक देव और भी अन्य बहुत दक्षिण दिशा के नाग

१ एक २ अग्रमहिषियों को छ २ हजार का परिवार है और एक २ छ २ हजार का वैक्रिय बनाती हैं.

थिरहु।जलप्पह,अमियवाहणं पभजणय तह महाघोसे ॥७॥उत्तरिल्लाणं जाव विहरंति॥ काला असुरकुमारा,नागा उदहीय पंडुरा दोवि॥ वरकणगणिहसगोरा ॥ होंति सुवण्णा दिसा थणिया ॥ ८ ॥ उत्तत्तकणगवण्णा विज्जुअग्गीय होंतिदीवाय॥ णीला (सामा) पियंगुवण्णा, वाउकुमारा मुणेअव्वा ॥ ९ ॥ असुरेसु होंति रत्ता, सिलिंध पुप्फभाय णाउदही ॥ आसासयवसणधरा, होंति सुवण्णादिसाथणिया ॥ १० ॥ निलाणुराग-

चौगुने आत्म रक्षक देव हैं. ॥ दक्षिण दिशा के भुवनपति के दश इन्द्रों के नाम—१ चमरेन्द्र २ धरणेन्द्र ३ वेणुदेव ४ हरिकांत ५ अग्नि शिख ६ पूर्ण ७ जलकांत ८ अमित ९ वेलंब और १० घोष. उत्तर दिशा के दश इन्द्रों के नाम—१ बलेन्द्र २ भूतानेन्द्र, ३ वेणुदाल ४ हरिसिंह ५ अग्निमानव ६ विशिष्ट ७ जलप्रभ ८ अमित वाहन ९ प्रभंजन और १० महाघोष ॥ अब वर्ण कहते हैं, असुरकुमार के शरीर का वर्ण काला, नाग कुमार व उदधि कुमार का वर्ण पांडुर (श्वेत) सुवर्ण कुमार, दिशा कुमार व स्थनित कुमार का वर्ण कसौटी पर घिसा हुवा सुवर्ण समान पीला, विद्युत कुमार अग्नि कुमार व द्वीप कुमार का वर्ण तपाया हुवा सुवर्ण समान लाल और वायु कुमार का वर्ण प्रियंगु के पुष्प समान. ॥ अब वस्त्र का वर्ण कहते हैं. असुर कुमार का वस्त्र लाल वर्ण का, नाग कुमार व उदधिकुमार का शिलेन्द्र के

सूत्र

खायफलिहा, णाणाविहअट्टालय कवाड तोरण पडिदुवार देसभागा, जंतसयग्घिमुसल मुसंढि परिवारिया, अउज्झा सदाजया सदागुत्ता, अडयालकोट्ठगरइया, अडयाल कयवणमाला, खेमा सिवा, किंकरामरदंडोवरक्खिया, लाउल्लोइयमहिया गोसीस सरसरत्त चंदण दद्दरदिन्न पंचंगुलितला, उवचिय चंदणकलसा, चंदणघड सुकय तोरण पडिदुवारदेसभागा, आसत्तोसत्त विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा, पंचवण्ण सरससुरहि मुक्कपुप्फपुंजोवयार कलिया, कालागुरु पवर कुंदुरुक्क तुरुक्कधूव मघमघंत गंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टीभूया अच्छरगणसंघविकिण्णा दिव्वतुडिय सद्दसंपणादिया, पडाग मालाउलाभिरामा सव्व-

अर्थ

खाइ वन को घीरकर रही हुई है, कोट, अट्टालक (मालें) कपाट, तोरण व प्रतिद्वार उनको रहे हुवे हैं, व नगरी शत्रुविनाशक शतघ्नी (तोप) मुशल व मुसंडी आदि शस्त्रों से परिवेष्टित है, इस से इस की साथ कोई भी युद्ध नहीं कर सकने से अयोध्य है, सदा जय पानेवाले हैं, सदैव गुप्त हैं, अडतालिस प्रकोष्ठकारी रचनों व अडतालीस पुष्पमालाओंवाले हैं क्षेम व कल्याणकारी हैं, किंकर भूत देवों से रक्षाये हुवे हैं, गोमय व चूने से लिप कर पूजित हुए हैं, श्रेष्ठ रक्त गोशीर्ष चंदन से पांचों अंगुलियों के थापे दिये हैं, वहां पर मंगल कार्य निमित्त चंदन के कलश स्थापन कीये हैं, चंदन के घडे से प्रतिद्वार के तोरण बनाये हैं, नीचे भूमि को स्पर्श कर रहे ऐसी विस्तीर्ण वर्तुलाकार लटकती हुई पुष्पों की मालाओं का समूह

णिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुविलोगस्स असंखेज्जइभागे,एत्थणं बहवे दाहिणिल्ला सुवण्णकुमारादेवा परिवसंति जाव विहरंति ॥ वेणुदेवे इत्थ सुवण्णिंदे सुवण्णकुमाररायो परिवसंति, सेसं जहा नागकुमाराणं ॥३५॥ कहिणं भंते ! उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहिणं भंते ! उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थणं उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं चउत्तीसं भवणावास सयसहस्स भवंति त्तिमक्खायं ॥ तेणं भवणा जाव एत्थणं बहवे उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारदेवा परिवसंति, महिड्डिया जाव विहरंति,वेणुदालि इत्थ-

देव के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. तीनों लोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होते हैं. यहां पर बहुत दक्षिण दिशा के सुवर्णकुमार देव रहते हैं. वेणुदेव नाम का सुवर्ण कुमार के इन्द्र व राजा है और सब अधिकार नागकुमार जैसे कहना. ॥ ३५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! उत्तर दिशा के पर्याप्त अपर्याप्त सुवर्ण कुमार देव के स्थान कहां कहे हैं? और उत्तर दिशाके सुवर्ण कुमार देव कहां रहते हैं? उत्तर-अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की उत्तर में इस रत्नप्रभा पृथ्वी यावत् उत्तर दिशा के सुवर्ण कुमार के चौंतीस लाख भवन कहे हैं. वे भवनों बाहिर से वर्तुलाकार यावत् यहां पर बहुत उत्तर दिशा के सुवर्ण कुमार देव रहते हैं. वे महर्द्धिक यावत् विचरते हैं. इन के वेणुदालि नामक सुवर्ण कुमार

सिणं तत्थ साणं भोमेज्जाणगरा वाससयसहस्साणं असंखेज्जाणं, साणं २ सामाणिय साहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं, साणं २ सपरिसाणं, साणं २ अणियाणं, साणं २ अणिआहिवईणं, साणं २ आयरक्ख देवसाहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा, महयाहयणट्ट गीयवाइय तंति तल ताल तुडिय घणमुइंग पडुप्पवाइय रवेणं दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंजमाणा विहरंति ॥ २७ ॥ कहिणं भंते! पिसाय देवाणं

अर्थ

घेरे विलेपन किया हुवा है. देदीप्यमान शरीर पर लम्बी लटकती हुई माला धारन की है, दीव्य वर्ण, दीव्य गंध, दीव्य रस, दीव्य स्पर्श, दीव्य संघयन दिव्य संस्थान, ऋद्धि, द्युति, प्रभा, छाया, अर्ची, तेज, व लेश्यासे दशों दिशामें उद्योत करते हुवे प्रकाश करते हुवे अपने भूमिगृह नगर आवास लाखों नगरोंमें अपने २ हजारों सामानिक देवों, अग्रमहिषियों, परिषदा, अनिक, अनिकाधिपति, आत्म रक्षक देव व अन्य अनेक वाणव्यंतर देवता व देवियों का अधिपति पना, पुरोगामी पना, स्वामी पना, बडा पना, करते कराते आज्ञा पालते पलाते, बडे नृत्य गीत, वाजिंत्र, तंती, ताल, तमाल, त्रुटित, घन, मृदंग के शब्दों से दीव्य भोगोपभोग भोगते हुवे विचरते हैं ॥ १७ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! वर्णाने भरणांत पिशाच देव के स्थान

महिड्डिया जाव विहरंति॥ काल महाकाल इत्थ दुवेपिसाया इंदा पिसायरायाणो परिवसंति, महिड्डिया जाव विहरंति॥३८॥ कहिण भंते! दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहिण भंते! दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति? गोयमा ! जंबूद्दीवे २ मंदरस्सपव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयण सहस्स बाहल्लस्स उवरि एगं जोयण सयंओग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयण सयं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयण सएसु एत्थणं दाहिणिल्लाणं, पिसायाणं देवाणं तिरिय मसंखेज्जा भोमिज्जाणगरावास सयसहस्सा भवंति तिमक्खायं. तेणं

द्रिक यावत् विचरते हैं ॥ ३८ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के पर्याप्त अपर्याप्त पिशाच देवों के स्थान कहां कहे हैं ? और पिशाच देवों कहां रहते हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में इस रत्नप्रभा पृथ्वी का रत्नमय काण्ड का एक हजार योजन का जाडपना कहा है. जिस में एक सो योजन ऊपर व एक सो योजन नीचे छोडकर शेष आठ सो योजन की पोलार में दक्षिण दिशा के पिशाच देव के असंख्यात लाख भूमिगृहनगर कहे हैं, वे बाहिर से वर्तुलाकार वगैरह सब अधिकार औधिक जैसे जानना यावत् मनोहर हैं यहां पर दक्षिण दिशा के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. तीनों में लोक के

सूत्र

पुच्छा ? गोयमा ! जहेवदाहिणिल्लाणं वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणंपि णवरं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं महाकाले इत्थपिसायइंदे पिसायराया परिवसइ, एवं जहा पिसायाणं तहा भूयाणंपि जाव गंधव्वाण णवरं इंदेसुणाणत्तं भाणियव्वं, इमेणंविहिणा, भूयाणं सुरूव पडिरूवा, जक्खाणं-पुण्णभद्द माणिभद्द, रक्खसाणं-भीम महाभीमा, किण्णराणं किण्णर किंपुरिसा, किंपुरिसाणं-सप्पुरिसा महापुरिसा, महोरगाणं अइकाय महाकाया, गंधव्वाणं गीयरई, गीयजसा, जाव विहरंति (गाहा) कालेयमहाकाले, सुरूव पडिरूवे

अर्थ

पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं? और उत्तर दिशाके पिशाच देव कहां रहते हैं ! उत्तर-अहो गौतम ! जैसे दक्षिण दिशाके पिशाच देव की वक्तव्यता कही वैसे ही उत्तर दिशाके पिशाच देवकी वक्तव्यता जानना. परंतु मेरुपर्वत की उत्तर में महाकाल नामक पिशाचेन्द्र रहते हैं. जैसे पिशाचका कहा वैसे ही भूतोंकाभी जानना. यावत् गंधर्व पर्यंत वैसेही कहना. परंतु इन्द्रोंमें भिन्नता जानना. यह इसप्रकार भूतोंके-सुरूप व प्रतिरूप, यक्षको पूर्णभद्र व माणिभद्र, राक्षसके भीम व महाभीम, किन्नरके किन्नर व किंपुरुष किंपुरुषके सतपुरुष महापुरुष, महोरग के अतिकाय व महाकाया गंधर्व के गीत रति व गीतयश. यावत् विचरते हैं. इन इन्द्रों के सब नामएकसाथ बताते हैं- १ काल, २ महाकाल, ३ सुरूप, ४ प्रतिरूप, ५ पूर्णभद्र, ६ माणिभद्र, ७ भीम, ८

सूत्र

वसणा, विज्जुअग्गीयहोंति दीवाय ॥ संझाणुरागवसणा, वाउकुमारा मुणेयव्वा ॥३६॥ कहिणं भंते ! वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! वाणमंतरादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयण सहस्स बाहल्लस्स उवरिं एगंजोयणसयं उग्गाहित्ता, हेट्ठावेगं जोयणसय वज्जित्ता, मज्झे अट्ठसुजोयणसएसु ॥ एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जाओ भोमेज्जनगरावास सयसहस्सा भवंति त्तिमक्खायं ॥ तेणं भोमेज्जाणगरा बाहिंवट्टा अंतोचउरंसा अहे पुक्खर कणिया संठाण संठीया, उक्किण्णतर विउलगंभीर

अर्थ

कुमार, दिशा कुमार व स्तनित कुमार के अश्व के फेन समान श्वेत, विद्युत कुमार, अग्नि कुमार व द्वीप कुमार के वस्त्र हरे रंग के और वायु कुमार के संध्या के रंग समान हैं ॥ ३६ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! पर्याप्त अपर्याप्त वाणव्यंतर देव के स्थान कहां कहे हैं ? और अहो भगवन् ! वाणव्यंतर देव कहां रहते हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वीका उपरका रत्नमय काण्ड एक हजार योजन का है. उस में से एकसो योजन उपर व एकसो योजन नीचे छोडकर बीचके आठसो योजनकी पोलार है उसमें वाणव्यंतर देवोंके तीच्छे असंख्यात भूमिगृह समान नगरों कहे हैं. वे भूमिगृह समान नगरों बाहिर से वर्तुलाकार अंदर से चौकोन (चौरस) हैं. उन का नीचे का भाग पुष्कर कर्णिका के संस्थानवाला है, विस्तीर्ण विपुल ऊंडी

ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे ! तत्थणं बहवे अणवण्णिया देवा परिवसंति, महिड्डिया जहा पिसाया जाव विहरंति सन्निहिय सामाणा इत्थ दुवे अणवण्णिदा अणवण्णियरायाणो परिवसंति,महिड्डिया जहा काल महाकाला, एवं जहा काल महाकालाणं दोण्हवि दाहिणिल्लाणं उत्तरिल्लाणय भणिया तहा सन्निहिय सामाणाणंपि भाणियव्वा, संगहणीगाहा-अणवण्णिय पणवण्णिय, इसिवाइअ भूयवाइएचेव ॥ कंदीय महाकंदीय, कोहंडय पयंगदेवाय ॥ १ ॥ इमे इंदा सन्निहिया सामाणा, धाइविहाए इसीपइसिवाले ॥ ईसरमहेस्सरेविय, हवइसुवत्थ विसालेय ॥ २ ॥ हासेहासरइविय,

अर्थ

उत्पन्न होवे. वहां बहुत अणापन्नी देव रहते हैं वे महर्द्धिक वगैरह पिशाच जैसा सब कहना यावत् विचरते हैं इन के सन्निहित व सामानिक ऐसे दो इन्द्रों हैं वे महर्द्धिक वगैरे काल महाकाल जैसे जानना. ऐसे ही जैसे उत्तर दक्षिण के काल महा काल का कहा वैसे ही सन्निहित व सामानिक का जानना. ॥ १ आणपन्नी २ पाणपन्नी ३ इसीवाय ४ भूइवाय ५ कंदीय ६ महा कंदीय ७ कोहंड और ८ पतंग देव इन के इन्द्र के नाम १ सन्निहित २ सामानिक ३ धाता ४ विधाता ५ ऋषि ६ ऋषि पाल ७ ईश्वर ८ महेश्वर ९ सुवत्स १० विशाल ११ हास्य १२ हास्यरति १३ [illegible]

सूत्र

रत्नामया, अच्छा सण्हा लट्ठा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका, निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादिया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा ॥ एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखिज्जइभागे, तत्थणं बहवे वाणमंतरा देवा परिवसंति, तंजहा पिसाया, भूया, जक्खा, रक्खसा, किण्णरा, किंपुरिसा, भुयग वतिणोय महाकाया, गंधव्वगणाय, निउणगंधव्वगीयरइणो, अणवण्णिया, पणवण्णिया, इसिवाइया, भूयवाइया, कंदिया, महाकंदिया, कोहंडा, पयंगदेवा ॥ चंचल चवलचित्त कीलणदवप्पिया, गहिरहसियपिया गीय-

अर्थ

रहा हुआ है, कृष्णागर, कुंदरुक धूप सेल्हारस इत्यादि धूपों से मघमघायमान होने से सुंदर बने हैं, श्रेष्ठ सुगंधियों से सुवासित बने हुवे हैं, सुगंधि पदार्थों की गोली समान हैं, अप्सराओं के समूह से संकीर्ण हैं, दिव्य त्रुटित वादित्रों के शब्दों से सुनने योग्य हैं सब रत्नमय हैं, आकाश समान निर्मल हैं. सुकुमाल हैं, घृष्ट जैसे सुकुमाल हैं, पाषाण जैसे मठार हैं, मठार हैं, रज रहित, मैल रहित, पंक रहित, आवरण व कलंक रहित, शोभा सहित, प्रभा सहित, सश्रीक शोभायमान किरणों सहित, उद्योत सहित, मन को प्रमोदकारी देखने योग्य अभिरूप व प्रतिरूप हैं. यहांपर वाणव्यंतर देवके पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. ऊर्ध्व लोक के असंख्यातवे भाग में, अधो लोक के असंख्यातवे भाग में, और

सूत्र

पाभास सयसहस्साण चउण्हं सामाणिय साहस्सीणं चउण्हं अग्गमाहिस्सीणं सपरिवाराणं, तिण्णहपरिसाण, सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवइण, सोलसण्ह आयरक्खदेव साहस्सीण, अण्णेसि बहूण जोइसियाण देवाण देवीणय आहेवचं जाव विहरंति ॥ ४२ ॥ कहिणं भंते ! वेमाणियाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! वेमाणियादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरम णिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढंचंदिम सूरियगहगण णक्खत्ततरा रूवाण बहुइं जोयण सयाइं

अर्थ

विचर यावत् महर्द्धिक यावत् प्रकाश करते हुवे विचरते हैं. वे अपने २ लाखों विमानों, अपने २ हजारों सामानिक परिवार सहित, अग्रमहिषियों, परिषदा अनिक, अनिकाधिपति, आत्म रक्षक देव व अन्य बहुत ज्योतिषी देव व देवियों का अधिपति पना यावत् विचरते हैं. यहां पर चंद्र व सूर्य ऐसे दो ज्योतिषी के इन्द्र व राजा हैं वे महर्द्धिक यावत् प्रकाश करते अपने २ लाखों ज्योतिषियों, चार हजार सामानिक, परिवार सहित चार अग्रमहिषियों, तीन परिषद्, सात अनिक, सात अनिकाधिपति, सोलह हजार आत्म रक्षक देव व अन्य बहुत ज्योतिषी देव व देवियों का अधिपति पना यावत् विचरते हैं ॥ ४२ ॥ प्रश्न— अहो भगवन् ! पर्याप्त अपर्याप्त वैमानिक देवों के स्थान कहां कहे हैं ? और वैमानिक देवों कहां रहते हैं? उत्तर—अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत सम रमणीय भूमि भाग से ऊंचे चंद्र, सूर्य, ग्रह,

भवणा जहा ओहिओ भवणवण्णओ तहेव भाणियव्वो, जाव पडिरूवा ॥ एत्थणं दाहि-
णिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखि-
ज्जइभागे तत्थणं बहवे दाहिणिल्ला पिसायदेवा परिवसंति. महिड्ढिया जहा ओहिया जाव
विहरंति ॥ काले इत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसइ महिड्ढिए जाव पभासेमाणे, सेणं तत्थ
तिरिय मसंखेज्जाणं भोमेज्जणगरावास सयसहस्साणं चउण्हं सामाणिय साहस्सीणं
चउण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराणं तिण्हंपरिसाणं सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणिया
हिवईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं दाहिणिल्लाणं वाणमंत-
राणं देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरइ ॥ ३१ ॥ उत्तरिल्लाणं

असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होवे. यहांपर बहुत दक्षिण दिशा के पिशाच देव रहते हैं; वे महर्द्धिक
यावत् विचरते हैं. यहांपर काल नामक पिशाच का इन्द्र व राजा है वह महर्द्धिक यावत् प्रकाश करते हुए
तीर्छे असंख्यात लाख भूमिगृह नगर, चार हजार सामानिक, परिवार सहित चार अग्रमहिषीयों
(प्रत्येक को चार २ हजार का परिवार व एकेक चार २ हजार वैक्रय करे) तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिकाधिपति,
सोलह हजार आत्म रक्षक देव व अन्य बहुत दक्षिण दिशा के वाणव्यंतर देव व देवियों का अधिपति-
पना, पंचाधिपतिपना करते यावत् विचरते हैं. ॥ ३१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! उत्तर दिशाके पिशाचदेव के

पुण्णभद्देय ॥ अमरवइ माणिभद्दे, भीमेय तहा महाभीमे ॥१॥ किन्नर किंपुरिसेखलु, सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे ॥ अइकाए महाकाए, गीयरईचेव गीयजसे॥२॥४०॥ कहिणं भंते ! अणवण्णियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! अणवण्णिया देवा परिवसंति? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयण सहस्स बाहल्लस्स उवरि हिट्ठाय एगं जोयणसयं वजिता मज्झेणं अट्ठसु जोयण सएसु एत्थणं अणिवाणियाणं देवाणं तिरिय असंखेज्जा भोमेज्जणगरावास सयसहस्सा भवंति त्तिमक्खायं, तेणं जाव पडिरूवा॥एत्थणं अणवण्णियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं

महा भीम ९. किन्नर १० किं पुरुष ११ सत्पुरुष १२ महापुरुष १३ अतिकाय १४ महा काय १५ गीत-रति व १६ गीत यश ॥ ४० ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! आणवन्नीक देव के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ? और आणवन्नीदेव कहां रहते हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का रत्नमय काण्ड एक सो योजन का है जिस में दश योजन उपर व दश योजन नीचे छोडकर शेष अस्सी योजन की पोलर में आणवन्नी देव के तीर्च्छे असंख्यात लाख भूमिगृह नगरों रहे हुवे हैं वे यावत् प्रतिरूप हैं. यहांपर आणवन्नी देव के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. तीनों में लोक के असंख्यातवे भाग में

नोट-मूलपाठ में आठ सो योजन की पोलार में आणपन्निकदेव के स्थान कहे हैं परन्तु इस में छोडकर शेष होवे ऐसा दिखता है.

सूत्र

रूवा ॥ एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताऽपज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता तिसुविलोगस्स असंखिज्जइभागे तत्थणं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति तंजहा-सोहम्मीसाण सणंकुमार माहिंद बंभलोय लंतगमहासुक्कसहस्साराणय पाणय आरणच्चुयगेविज्जगाणुत्तरोववाइया ॥ तेणदेवा-मिय-महिस-वराह,-सीह,-छगळ,- दद्दुर,- हय,- गयवइ,- भुयग, खग्गि, उसभं, कविडिम पागडिय चिंधमउडा, पसढिलवरमउडतिरीड धारिणो ॥ वरकुंडलुज्जोइयाणणा, मउडदित्तसिरयारत्ताभा, पउमपम्हगोरा भासेया सुह वण्णगंधफासा उत्तमवउव्विणो पवरवत्थगंधमल्लाणु लेवणधरा, महिड्डिया महज्जुइया महायसा

अर्थ

१२ अच्युत ये बारह देव लोक नवग्रैवयक और पांच अनुत्तर विमान इन देवताओं यह देवताओं के रहने के स्थान है इनके मुकुटमें चिन्ह रहते हैं सो कहते हैं-१ सौधर्म देवलोकवासी देवताओं के मुकुटमें मृगका चिन्ह २ ईशानदेव के महिषका ३ सनत्कुमारको वराहका ४ महेन्द्र को सिंहका ५ ब्रह्मको बकरेका ६ लांतक को दर्दरका ७ महाशुक्र को घोडे का ८ सहस्रार को हाथी का ९ आणत को सर्प का १० प्राणत को गेंडे का आरण को वृषभ का और १२ अच्युतको विडिम का ऐसे स्वाभाविक चिन्हके धारन करनेवाले हैं, श्रेष्ठ आभरण मुकुट में धारन करनेवाले हैं श्रेष्ठ कुंडल से जिन का मुख उद्योतित हुवा है, मुकुट से उन के मस्तक दीप्त हो रहे हैं. सौधर्म ईशान देवलोक के देवताओं का शरीर का वर्ण रक्त है, सनत्कुमार व माहेन्द्र का पीत वर्ण है, और

सूत्र

लोगपालाणं, साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, साणं २ परिसाण, साणं २ अणियाण, साण २ अणिआहिवईणं, साणं २ आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं वेमाणियाण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसर सेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महया हयनट्टगीय वाइय तंतीतलताल तुडिय घणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं, दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरंति ॥ ४३ ॥ कहिणं भंते ! सोहम्मग देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! सोहम्मग देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयण-

अर्थ

दशों दिशाओं में उद्योत करते हुवे व प्रकाश करते अपने २ लाखों विमानों, हजारों सामानिक, त्रायस्त्रिंशक लोकपाल, परिवार सहित अग्रमहिषियों, परिषदा, अनिक अनिकाधिपति, आत्मरक्षक देव व अन्य बहुत वैमानिक देव व देवियों का अधिपति पना, पुरोगामीपना, स्वामिपना, बडपना, आज्ञा में ईश्वरपना व सेनापति पना करते व पालते बडे २ नृत्य, गीत, वादिंत्र, ताल, त्रुटित, घनमृदंग के अवाज से दीव्य भोगोपभोग भोगते हुवे विचरते हैं. ॥ ४३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्! सौधर्म देव के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ? और सौधर्मेन्द्र कहां रहते हैं ? उत्तर अहो गौतम ! जंबूद्वीप के मेरुपर्वत की दक्षिण दिशा में इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत [illegible]

[illegible] राओं की

सूत्र

सयक्कऊ सहस्सक्खे मघवं पागसासणे, दाहिणड्ढलोगाहिवई, बत्तीस विमाणावास सयसहस्साहिवई, एरावण वाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमालमउडे नव हेमचारु चित्त चंचल कुंडलविलिहिज्जमाणगंडे महिड्ढीए जाव पभासेमाणे, सेणं तत्थ बत्तीसाए विमाणावास सयसहस्साणं, चउरासीए सामाणिय साहस्सीणं, तत्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं सोहम्म कप्प वासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरइ ॥ ४४ ॥ कहिणं भंते ! ईसाणग देवाणं पज्जत्ता-

अर्थ

लाख विमानों का अधिपति, ऐरावण हस्तीपर बैठनेवाले, रजरहित वस्त्र धारन करने वाले, माला आभरण के धारक,मनोहर नित्य ही विचित्र,आश्चर्य कारि चंचल चपल कुंडल सहित,महाऋद्धिवंत यावत प्रकाश करते हुवे बत्तीस लाख विमान, चौरासी हजार सामानिक, तेत्तीस त्रायत्रिंशक, चार लोकपाल, परिवार सहित आठ अग्रमहिषियों(एकेक को सोलहहजार देवियों का परिवार)तीन परिषदा,सात अनिकाधिपति,तीन लाख छत्तीस हजार आत्म रक्षक देव और भी अन्य वैमानिकदेव व देवियोंका अधिपतिपना पुरोगामीपना करते यावत विचरते हैं॥४४॥अहो भगवन्!पर्याप्त अपर्याप्त ईशान देवलोक के देवता के स्थान कहां कहे हैं ?

सूत्र

सयसाऊ सहस्सक्खे मघवंपागसासणे, दाहिणड्ढलोगाहिवई, बत्तीस विमाणावास सयसहस्साहिवई, एरावण वाहणे सुरिंदे अरयंवरवत्थधरे आलइयमालमउडे णव हेमचारु चित्ते चंचल कुंडलविलिहिज्जमाणगंडे महिड्ढिए जाव पभासेमाणे, सेणं तत्थ बत्तीसाए विमाणवास सयसहस्साणं, चउरासीए सामाणिय साहस्सीणं, तत्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं संपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं सोहम्म कप्प वासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरइ ॥ ४४ ॥ कहिणं भंते ! ईसाणग देवाणं पज्जत्ताप-

अर्थ

लाख विमानों का अधिपति, एरावण हस्तीपर बैठनेवाले, रजरहित वस्त्र धारन करने वाले, माला आभरण के धारक, मनोहर चित्र से चित्रित, आश्चर्य कारि चंचल चपल कुंडल सहित, महाऋद्धिवंत यावत् प्रकाश करते हुवे बत्तीस लाख विमान, चौरासी हजार सामानिक, तेतीस त्रायस्त्रिंशक, चार लोकपाल, परिवार सहित आठ अग्रमहिषियों(एकेक को सोलह२हजार देवियों का परिवार)तीन परिषदा, सात अनिकाधिपति, तीन लाख छत्तीस हजार आत्म रक्षक देव और भी अन्य वैमानिकदेव व देवियोंका अधिपतिपना पुरोगामीपना करते यावत विचरते हैं॥४४॥प्रश्न-अहो भगवन्! पर्याप्त अपर्याप्त ईशान देवलोक के देवता के स्थान कहां कहे हैं ?

वाससयसहस्सा भवंति त्तिमक्खायं ॥ तेणं विमाणा सव्व रयणामया जाव पडिरूवा॥ तेसिणं विमाणाणंबहु मज्झदेसभागे पंचवडेंसगा पण्णत्ता तंजहा-असो गवडेंसए, सत्तव ण्णवडेंसए, चंपगवडेंसए, चूयवडेंसए, मज्झे एत्थणं सणंकुमारवडेंसए, तेणं वडेंसगा सव्व रयणामया जाव पडिरूवा ॥ एत्थणं सणंकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुविलोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे सणंकुमारादेवा परिवसंति महिड्डिया जाव पभासेमाणा जाव विहरंति, णवरं अग्गमहिसीओ णत्थि, सणंकुमारे एत्थदेविंदे देवराया परिवसइ, अरयंवरवत्थधरे, सेसं जहा सक्कस्स, सेणं तत्थवारसण्हं विमाणवास सयसहस्साणं, बावत्तरीए सामाणिय साहस्सीणं, तेत्ती-

अर्थ

प यव प्रतिरूप हैं. उन विमानों की बीच में पांच अवतंसक विमान कहे हैं जिन के नाम १ अशोकावतंसक २ सप्तपर्णावतंसक ३ चंपकावतंसक ४ चूतावतंसक और ५ बीच में सनत्कुमारावतंसक हैं. वे अवतंसक सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं. यहां पर पर्याप्त अपर्याप्त सनत्कुमार देव के स्थानक कहे हैं. तीनों लोक के असंख्यातवे भाग में हैं. यहां पर बहुत सनत्कुमार देव रहते हैं. वे महर्द्धिक, यावत् प्रकाश करते हुए विचरते हैं, विशेष में यहां पर अग्रमहिषियों नहीं हैं क्यों कि देवियों मात्र ईशानदेवलोक पर्यंतही उत्पन्न होती हैं. यहां पर सनत्कुमार देवेन्द्र राजा है वे अंबरादि निर्मल वस्त्र धारन करनेवाले हैं. शेष शक्रेन्द्र जैसे सब अधिकार कहना. वह वहां बारह

लांतक देवलोक की सात अनिका के सात गच्छ.

नाम.	पायक	तुरंग.	हस्ति.	वृषभ.	रथ.	नाटक.	गधर्व.
प्रथम गच्छ	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००	५००००
दूसरा गच्छ	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००	१०००००
तीसरा गच्छ	२०००००	२०००००	२०००००	२०००००	२०००००	२०००००	२०००००
चौथा गच्छ	४०००००	४०००००	४०००००	४०००००	४०००००	४०००००	४०००००
पांचवा गच्छ	८०००००	८०००००	८०००००	८०००००	८०००००	८०००००	८०००००
छठा गच्छ	१६००००	१६००००	१६००००	१६००००	१६००००	१६००००	१६००००
सातवा गच्छ	३२००००	३२००००	३२००००	३२००००	३२००००	३२००००	३२००००
सर्व	६३५००००	६३५००००	६३५००००	६३५००००	६३५००००	६३५००००	६३५००००

मूत्र

पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! बंभलोय देवा परिवसति ? गोयमा ! सणंकुमार माहिंदाणं कप्पाणं उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं, बहूइं जोयणाइं, जाव उप्पइत्ता, एत्थणं बंभलोए णामं कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायए उदीण दाहिण विच्छिण्णे, पडिपुन्नचंद संठाण संठिए अच्चिमाली भास रासिप्पभे अवसेसं जहा सणंकुमाराणं णवरं चत्तारि विमाणावास सयसहस्सा, वडंसगा जहा सोहम्मस्स वडंसगा, णवरं मज्झ इत्थ बंभलोय वडंसए, एत्थणं बंभलोयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, सेसं तहेव जाव विहरंति, बंभेइत्थ देविंदे देवराया परिवसइ

अर्थ

कहे हैं ? और ब्रह्मलोक देव कहां रहते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! सनत्कुमार व महिन्द्र देवलोक की उपर बराबर प्रतिदिशि में बहुत योजन यावत् ऊंचे जावे तब वहां पर पांचवा ब्रह्मलोक नामक देव लोक कहा हुवा है. यह पूर्व पश्चिम लम्बा व उत्तर दक्षिण चौडा है. प्रतिपूर्ण चंद्र के संस्थान वाला है, सूर्य के किरणों की प्रभा समान वगैरह शेष सब सनत्कुमार जैसे जानना परंतु इस में चार लाख विमान कहे हैं सौधर्म में जैसे अशोका वतंसक, २ सप्तवर्णावतंसक, ३ चंपकावतंसक और ४ चूतावतंसक कहे, ऐसे चार व बीच में ब्रह्मलोकावतंसक ऐसे पांच अवतंसक कहे हैं. यहां पर ब्रह्मलोक विमान के देवता के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. शेष पूर्वोक्त जैसे कहना यावत् विचरते हैं. यहां पर ब्रह्मनामक देवेन्द्र

उप्पइत्ता, एत्थणं आरणच्चुयाणामं दुवे कप्पा पण्णत्ता, पाईणपडीणायया उदीण दाहिण विच्छिण्णा अद्धचंदसठाण संठिया अचिमालि भासरासिवण्णाभा, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेण, असंखेज्जाओ जोयण कोडाकोडीओ परिक्खवेण, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा निरया निम्मला निप्पंका निक्कंकड छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एत्थणं आरणच्चुयाणं देवाणं तिण्णिविमाणावाससया भवंति त्तिमक्खायं, तेण विमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झ देसभाए पचवडेंसगा पण्णत्ता तंजहा—अंकवडेंसए, फलिह वडेंसए,

यहां आरण अच्युत नाम के दो देवलोक कहे हैं. ये पूर्व पश्चिम लम्बे व उत्तर दक्षिण चौडे हैं अर्ध चन्द्र के आकार वाले हैं असंख्यात कोडा कोड योजन की परिधि है, सब रत्नमय, स्वच्छ, सूक्ष्म निर्मल, घसार, मठारे, मैल रहित, शोभा सहित, प्रभा सहित, उद्योत सहित व दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप हैं. यहां आरण अच्युत के तीनसो विमान कहे हैं. वे विमानों सर्वत्र रत्नमय, अच्छे यावत् प्रतिरूप हैं. उक्त विमानों की बीच में पांच अवतंसक कहे हैं जिन के नाम-अंकावतंसक, स्फटिकावतंसक, रत्नावतंसक, जातरूपक यावत् अच्युतावतंसक, ये अवतंसक सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं. यहांपर

सूत्र

अच्चुए इत्थदेविंदे देवराया परिवसइ जहा पाणए, णवरं तिण्णिविमाण। वाससयाणं दसण्हं सामाणिय साहस्सीणं, चत्तालीसाए आयरक्ख देवसाहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं जाव विहरइ ॥ ५३ ॥ संगहणी—गाहा-बत्तीसअट्ठावीसा, बारस अट्ठचउरोसयस-हस्सा॥पण्णाचत्तालीसा छच्चसहस्सा सहस्सारे ॥१॥ आणय पाणय कप्पे, चउसया आरण च्चुएतिन्नि॥तिण्णिसयाइं तेवीसा,गेविज्जाणूत्तरे पंचसुभवे ॥२॥ सामाणिय-संगहणीः गाहा

अर्थ

राजा रहते हैं वगैरह प्राणतेन्द्र जैसे कहना. तीनसो विमान, दश हजार सामानिक व चालीस हजार आत्म रक्षकदेव व अन्य बहुत देवताओं का अधिपतिपना यावत करते विचरते हैं. ॥ ५३ ॥ सौधर्म देवलोक में १ बत्तीस लाख विमान, २ ईशान देवलोक में अठावीस लाख विमान, ३ सनत्कुमार में बारह लाख विमान, ४ माहेन्द्र में आठ लाख विमान, ५ ब्रह्मदेवलोक में चार लाख विमान, ६ लांतक देव लोक में पचास हजार विमान, ७ महाशुक्र में चालीस हजार, ८ सहस्रार में छ हजार विमान ९-१० आणत पाणत दोनों में चार सो ११-१२ आरण अच्युत में तीनसो विमानों हैं. प्रथम ग्रैवेयक में १११, दूसरी में १०७, तीसरी ग्रैवेयक में १००विमान और पांच अनुत्तर विमान के पांच, यों सब मीलकर ८४९७०२३ विमान हैं॥ सामा-निक देवों का कथन करते हैं-१ सौधर्मेन्द्र को चौरासी हजार सामानिक, २ ईशानेन्द्र को अस्सी हजार,

१२ त्रिकोन विमान	४०४	४०४	३५६	३५६	२८४	२००	१३६	११६		९२		७२
१३ चतुष्कोन विमान	४८६	४८६	३४८	३४८	२७६	१०२	१३२	१०८		८८		६८
१४ श्रेणिबन्ध विमान	१७०७	१२१८	१२२६	८७४	८३४	५८५	३९६	३२८		२६८		४
१५ पुष्पप्रकीर्ण विमान	३१०८ (२०.३)	(२७०८ ७८२)	(११९८ ७७४)	(७१९ १२६)	(३१९ १६६)	४१४१५	३१६०४	५६७२		१३२		९६
१६ संख्यात योजन वि.	(२४० ०००)	(५६० ०००)	(२४० ०००)	(१६०० ००)	८००००	१००००	८०००	१२००		१४०		१४०
१७ असंख्यात यो० वि.	२५६० (०००)	(२२४० ०००)	(९६० ०००)	(६४० ०००)	(३२० ०००)	४००००	१२०००	४८००		२६०		१६०
१८ विमानों की ऊंचाई	५००	५००	६००	६००	७००	७००	८००	८००	९००	९००	९००	९००
१९ विमानकापृथ्वीपिंड	२७००	२७००	२६००	२६००	२५००	२५००	२४००	२४००	२३००	२३००	२३००	२३००
२० पुरविस्तारमान	(८४० ००)	८००००	७२०००	(७०० ००)	६००००	६००००	४००००	३००००	२००००	२००००	२००००	२००००
२१ विमानकीध्वजावर्ण	५	५	४ कृष्णनहीं	४ कृष्णनहीं	३ हरा नहीं	३ हरा नहीं	२ रक्त नहीं	२ रक्त नहीं	१ पितनहीं	१ पितनहीं	१ पितनहीं	१ पितनहीं
२२ देवलोकका आधार	घनोदधी	घनोदधी	घनवात	घनवात	घनोदधी घनवात	घनोदधी घनवात	आकाश	आकाश	आकाश	आकाश	आकाश	आकाश

सूत्र

सए हवंति त्तिमक्खायं,तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा ॥ एत्थणं हेट्ठिम-गेविज्जगाणं देवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थण बहवे हिट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति,सव्वेसम महिड्डिया सव्वे समज्जुइया,सव्वे समजसा, सव्वे समबला,सव्वे समाणुभावा,महासोक्खा,अणिंदा अप्पेस्सा, अपुरोहिया, अहमिंदाणाम ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५५ ॥ कहिणं भंते ! मज्झिम गेविज्जगाणं देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! मज्झिमगेविज्ज गदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेट्ठिम गेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खि सपडिदिसं जाव

अर्थ

लोक जैसे यावत् प्रतिरूप हैं. यहां पर नीचे की ग्रैवेयक के एक सो अग्यारह विमान कहे हैं. वे वि-नों सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं. यहां पर नीचे की ग्रैवेयक के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे हैं. तीनों में लोक के असंख्यातवे भाग में होवे. वहां पर बहुत नीचे की ग्रैवेयक के देव रहते हैं वे सब समान द्युति वाले, समान यश वाले, समान बल वाले, समान अनुभाग वाले, महासुख वाले हैं. वे सब इन्द्र रहित, चाकर रहित पुरोहित रहित अर्थात् अहमिन्द्र की पद्वी के धारक देवों हैं. ॥ ५५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्! बीच की ग्रैवेयक के देवों के पर्याप्त अपर्याप्त स्थान कहां कहे हैं ? और अहो भगवन् ! वे देवो कहां रहते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! नीचे की ग्रैवेयक से ऊपर बराबर माते बीच की ग्रैवेयक के तीन विमान

सूत्र

पाइण पडीणायया सेसं जहा हेट्ठिम गेविज्जगाणं, णवरं एगेविमाणावाससएभवं त्तिमक्खाय,सेसं तहेव भाणियव्वं जाव अहमिंदाणामं तेदेवगणा पण्णत्ता समणाउसो! ॥ ५७ ॥ गाहा-एक्कारसुत्तरे हिट्ठिमएसु, सत्तुत्तरंच मज्झिमए ॥ सयमेगं उवरिमए, पंचेव अणुत्तर विमाणा ॥ १ ॥ ५८ ॥ कहिणं भंते ! अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ, उड्ढं चंदिमसूरियगहगण णक्खत्त तारारूवाणं बहूइंजोयणाइं जाव बहूइ जोयण कोडाको-

अर्थ

की ग्रैवेयक के तीन विमान प्रस्तर कहे हैं. पूर्व पश्चिम लम्बे व उत्तर दक्षिण चौडे हैं, शेष सब नीचे की ग्रैवेयक जैसे कहना,विशेष में यहांपर एकसो विमान जानना.शेष सब पूर्वोक्त जैसे यावत् अहमेन्द्र हैं.॥५७॥ नीचे की ग्रैवेयक में १११ बीच की ग्रैवेयक में १०७ उपर.की ग्रैवेयक में १०० और अनुत्तर विमानके पांच विमान हैं. ॥ ५८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पर्याप्त अपर्याप्त अनुत्तरोपपातिक के स्थान कहां कहे हैं ? और वे देवों कहां रहते हैं ? उत्तर-अहो गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमिभाग से ऊर्ध्व चंद्र,सूर्य,ग्रहगण, नक्षत्र व ताराओं से ऊपर सौधर्म,ईशान,सनत्कुमार,माहेन्द्र, ब्रह्मलोक,लांतक,महाशुक्र

चउरासीइं असीइ बावत्तरि सत्तरिय सट्ठीए॥ पण्णाचत्तालीसा तीसाचीसा दससहस्सा ॥३॥ एएसामाणिय, आयरक्खा चउगुणिया ॥५४॥ कहिणं भंते! हेट्ठिम गेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहिणं भंते हेट्ठिम गेविज्जगा देवा परिवसंति? गोयमा! आरणअच्चुयाणं कप्पाणं उप्पिं जाव उड्ढंदूरं उप्पइत्ता, एत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं तिन्निगेविज्ज विमाणा पत्थडा पण्णत्ता, ॥ पाईणपडिणायता उदीण दाहिण विच्छिण्णा पडिपुण्ण चंदसंठाण संठिया, अच्चिमालि भासरासिवण्णाभा, सेसं जहा बंभलोए जाव पडिरूवा, तत्थणं हेट्ठिम गेविज्जगाणं देवाणं एगूणारुत्तरे विमाणावास

१ सनत्कुमारेन्द्र को बहत्तर हजार, ४ माहेन्द्र को सीत्तर हजार, ५ ब्रह्म इन्द्र को साठ हजार ६ लांतक इन्द्र को पचास हजार ७ महाशुक्र इन्द्र को चालीस हजार ८ सहस्त्रारेन्द्र को तीस हजार, ९ प्राणत इन्द्र को बीस हजार और १० अच्युत इन्द्र को दश हजार सामानिक देवता कहे हैं. सामानिक देवता से आत्म रक्षक देवता चौगुने होते हैं. ॥ ५४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नीचे की ग्रैवेयक के पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहां कहे हैं ? और नीचे की ग्रैवेयक के देव कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! आरण व अच्युत देवलोक से ऊपर यावत् जाने वहां नीचेकी ग्रैवेयक के तीन विमान के पाथडे कहे हैं. वे पूर्व पश्चिम लम्बे व उत्तर दक्षिण चौडे हैं. पूर्ण चन्द्रमा के आकार वाले हैं, सूर्य के किरणों व अग्नि समान प्रभा वाले हैं. शेष सब ब्रह्म

मूत्र

डिओ उद्धंदूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण सणंकुमार माहिंद बंभलोयलंतग महासुक्क सहस्साराणय पाणय आरणच्चुय कप्पा तिण्णिय अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणा वास सए विइवइत्ता, तेणपरं दूरंगता णीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा पंचदिसिं पंच- अणुत्तरा महतिमहालया महाविमाणा पण्णत्ता, तंजहा—विजए वेजयंते जयंते अपरा- जिए सव्वट्ठसिद्धे ॥तेणं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लट्ठा मट्ठा घट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा ॥ एत्थणं अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०॥तिसु-

अर्थ

सहस्रार, आणत, प्राणत, आरण व अच्युत देवलोक की उपर नव ग्रैवेयक के ३१८ विमान से ऊंचे बहुत दूर जावे वहां रज रहित, निर्मल, अंधकार रहित, शुद्ध १पूर्व में विजय२दक्षिण में वैजयंत३पश्चिममें जयंत४ उत्तरमें अपराजित और बीचमें ५सर्वार्थ सिद्ध नाम के यों पांचों विमानों हैं. ये विमान सब रत्नमय,अच्छे, सुकोमल,घट्ठ, मट्ठे, रजरहित, निर्मल, कीचड रहित, कांतिसहित,प्रभासहित, श्री सहित, उद्योत सहित, प्रसन्नकारी, दर्शनीय व अभिरूप हैं. यहांपर अनुत्तरोपपातिक देवोंके पर्याप्त अपर्याप्तके स्थान कहे हैं.तीनोंमें लोक के असंख्यात वे भाग में जानना. यहांपर बहुत अनुत्तरोपपातिक देव रहते हैं.

मूल

भणिया ॥ ५ ॥ सत्तागियरयणीओ, रयणि तिभागूणियाय वोधव्वा ॥ एसा खलु-सिद्धाणं, मज्झिम ओगाहणा भणिया ॥ ६ ॥ एगाय होइरयणी, अट्ठेवयं अंगुलाइं साहीयाईया ॥ एसाखलुसिद्धाणं, जहण्ण ओगाहणा भणिया ॥७॥ ओगाहणाएसिद्धा भवंति भागेणहोइ परिहीणा ॥ संठाण मणित्थंत्थ, जरमरणविप्पमुक्काणं ॥ ८ ॥ जत्थयएगोसिद्धो, तत्थणंता भवक्खयविमुक्का ॥ अण्णोण्ण समोगाढा, पुट्ठासव्वेवि-लोगंते ॥ ९ ॥ फुसइ अणंते सिद्धे, सव्वपएसेहिं नियम सो सिद्धा तेवि असंखे-ज्जगुणा, देसपएसेहिंजपुट्ठा ॥ १० ॥ असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणेयणाणेय ॥

अर्थ

और सोलह अंगुल की सिद्ध भगवंत की मध्यम अवगाहना जाना है. ॥ ६ ॥ एक हाथ व आठ अंगुल की सिद्ध की जघन्य अवगाहना जानना. ॥ ७ ॥ जन्म जरा मरण से रहित सिद्ध भगवंतकी अवगाहना पूर्व भव से तीसरे भाग कम की होती है परंतु संस्थान जो चरिम समय में होता है वैसा ही रहता है॥८॥ जहां एक सिद्ध हैं वहां अनंत सिद्ध भव भ्रमण रूप विनाश से रहित हैं.और वे परस्पर मीले हुवे हैं तथा वे सबसिद्ध लोक के अंतको स्पर्श कर रहे हैं॥९॥सबने सर्व आत्माके प्रदेशसे एकसिद्ध अनंत सिद्धके आत्मा को स्पर्श कर रहे हैं. एकेक सिद्ध को असंख्यात आत्मा प्रदेश हैं वे सब देश कर व प्रदेश कर स्पर्श रहे हैं ॥ १० ॥ उदारिकादिक पांचों शरीर रहित सिद्ध भगवंत हैं, छिद्रों रहित होने से सब प्रदेशों

सूत्र

विपाणतो ॥ मवणइ परिकहेओ,ओवमाएतहिं असंतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणंसोक्खं, अणोवमं नात्थितस्स ओवम्मं ॥ किंचिविसेसेणितो, सारिक्खमिणं सुणहवोत्थं॥१७॥ जहसव्व कामगुणियं, पुरिसो भोत्तूणभोयणंकोइ ॥ तण्हा छुहाविमुक्को, अत्थिज्ज जहा अमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयसव्व कालतित्ता, अतुलंनिव्वाण मुवगया सिद्धा ॥ सासयमव्वाबाह, चिट्ठंति सुहीसुहंपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धात्तिय बुद्धात्तिय, पारगतत्तिय परंपरगतात्तिय ॥ उमुक्कंकम्मकवया, अजराअमरा असंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्न

अर्थ

की पास नगर के गुणों का वर्णन करे परंतु पूर्ण उपमा से नगर के गुणों बतासके नहीं वैसे ही सिद्ध के सुख की उपमा इस मनुष्य लोक में नहीं हैं. तथापि बाल जीवों को समझाने को किंचित् कहते हैं सो ॥ १६ ॥ १७ ॥ जैसे कोई मनुष्य सब गुणों संपन्न उत्तमोत्तम भोजन भोगवकर क्षुधा शांत तृप्ति पाया हुवा आनंद मानता है इस ही प्रकार सिद्ध भगवंत तीनों काल में अतुल्य अनोपम निर्वाण मुक्ति के सुख बाधा पीडा रहित भोगते हुवे सुख में ही तृप्त रहते हैं. ॥ १८ ॥ १९ ॥ सब कार्यों की सिद्धि से सिद्ध हुवे, सब पदार्थों जानने देखने से बुद्ध हुए, संसार से पार होने से पारंगत हुए, एक सिद्ध की अपेक्षा से अनंत सिद्ध होनेसे परंपरा गत हुए; कर्मरूप रज रहित अमर अपर सब गतागति से रहित हुए ॥ २० ॥ शारीरिक व मानसिक सब दुःख का क्षय हुवा, जन्म जरा मृत्यु के बंधनसे

मूल

विपाणंतो ॥ नयएइ परिकहेउं,उवमाएतहिं असंतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणंसोक्खं, अणोवमं नत्थितस्स ओवम्मं ॥ किंचिविसेसेणितो, सारिक्खमिणं सुणहवोच्छं॥१७॥ जहसव्व कामगुणियं, पुरिसो भोत्तूणभोयणंकोइ ॥ तण्हा छुहाविमुक्को, अच्छिज्ज जहा अमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयसव्व कालतित्ता, अतुलंनिव्वाण मुवगया सिद्धा ॥ सासयमव्वाबाहं, चिट्ठंति सुहीसुहंपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धात्तिय बुद्धात्तिय, पारगतत्तिय परंपरगतात्तिय ॥ उमुक्ककम्मकवया, अजराअमरा असंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्न

अर्थ

की पास नगर के गुणों का वर्णन करे परन्तु पूर्ण उपमा से नगर के गुणों बतासके नहीं वैसे ही सिद्ध के सुख की उपमा इस मनुष्य लोक में नहीं है तथापि बाल जीवों को समझाने को किंचित् कहते हैं सो ॥ १६ ॥ १७ ॥ जैसे कोई मनुष्य सब गुणों संपन्न उत्तमोत्तम भोजन भोगवकर क्षुधा शांत तृप्ति पाया हुवा आनंद मानता है इस ही प्रकार सिद्ध भगवंत तीनों काल में अतुल्य अनोपम निर्वाण मुक्ति के सुख बाधा पीडा रहित भोगते हुवे सुख में ही तृप्त रहते हैं. ॥ १८ ॥ १९ ॥ सब कार्यों की सिद्धि से सिद्ध हुवे, सब पदार्थों जानने देखने से बुद्ध हुए. संसार से पार होने से पारंगत हुए, एक सिद्ध की अपेक्षा से अनंत सिद्ध होनेसे परंपरागत हुए; कर्मरूप रज रहित अजर अमर सब संगादि से रहित हुए ॥ २० ॥ शारीरिक व मानसिक सब दुःख का क्षय हुवा, जन्म जरा मृत्यु के बंधनसे

सूत्र — सागारमणागारं, लक्खणमेयंतु सिद्धाणं ॥ ११ ॥ केवलणाणुवउत्ता, जाणंती सव्वभाव गुणभावे ॥ पासंतिसव्वओखलु, केवल दिट्ठीहिणंताहिं ॥ १२ ॥ नवि अत्थिमाणुसाणं,तं सोक्खंनविसव्व देवाणं ॥ जंसिद्धाणं सोक्खं,अव्वाबाहं उवगयाणं ॥ १३ ॥ सुरगण सुहसमत्तं, सव्वद्धा पिंडियं अणंतगुणं॥ णविपावइ मुत्तिसुहं,णंताहिं-वग्गवग्गूहिंमांहि ॥ १४ ॥ सिद्धस्स सुहोरासी, सव्वद्धापिंडिए जइहवेजा ॥ सोणंत-वग्गभइओ, सव्वागासेणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहणामकोइमिच्छो, णयरगुण बहु

अर्थ — घनीभूत होगये हैं,केवल ज्ञान व केवल दर्शन, साकार व अनाकार उपयोग सहित हैं, ऐसे सिद्ध के लक्षण कहे हैं ॥ ११ ॥ केवल ज्ञान के उपयोग से सब द्रव्य पदार्थों के द्रव्य गुन को जानते हैं और केवल दर्शन से सब भाव को देखते हैं. ॥ १२ ॥ सिद्ध भगवंत को निराबाध सुख प्राप्त हुवा है वैसा सुख ,मनुष्य को नहीं है.और देवों को भी नहीं है. ॥ १३ ॥ सब देवताओं के समुदाय के तीनों कालके सुख एकत्रित करे तथापि मुक्ति के सुख के अनंत भाग में नहीं आसकते हैं. ॥ १४ ॥ तिनों काल के जितने समय हैं उन के वर्ग मूल से अनंत गुने करे तो भी सिद्ध के सुख की राशि उस तुल्य नहीं आसके नहीं. ॥ १५ ॥ जैसे कोई नगर निवासी म्लेच्छ नगर के गुणों से अज्ञात म्लेच्छ

मूल

विपाणसो ॥ सबण्ह पविस्सईओ, ओवमाएनहि असंतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणंसोक्खं, अणोवमं नत्थितस्स ओवम्मं ॥ किंचिविसेसेणितो, सारिक्खमिणं सुणहवोच्छं॥१७॥ जहसव्व कामगुणियं पुरिसो भोत्तूणभोयणंकोइ ॥ तण्हा छुहाविमुक्को, अत्थिज्ज जहा अमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयसव्व कालतित्ता, अतुलनिव्वाण मुवगया सिद्धा ॥ सासयमव्वाबाह, चिट्ठंति सुहीसुहंपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धत्तिय बुद्धत्तिय, पारगतत्तिय परंपरगतत्तिय ॥ उम्मुक्क कम्मकवया, अजराअमरा असंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्न

अर्थ

की पास नगर के गुणों का वर्णन करे परन्तु पूर्व उपमा से नगर के गुणों बताकके नहीं वैसे ही सिद्ध के सुख की उपमा इस मनुष्य लोक में नहीं है तथापि बाल जीवों को समझाने को किंचित् कहते हैं सो ॥ १६ ॥ १७ ॥ जैसे कोई मनुष्य सब गुणों संपन्न उत्तमोत्तम भोजन भोगवकर क्षुधा तृषा रहित होकर आनंद पाता है इस ही प्रकार सिद्ध भगवंत तीनों काल में अतुल्य अनोपम निर्वाण सुख के सुख द्वारा पीड़ा रहित भोगते हुवे सुख में ही तृप्त रहते हैं. ॥ १८ ॥ १९ ॥ सब कार्यों की सिद्धि से सिद्ध हुवे. सब पदार्थों जानने देखने से बुद्ध हुए. संसार से पार होने से पारंगत हुए, एक सिद्ध की अपेक्षा से अनन्त सिद्ध होनेसे परंपरागत हुए; कर्मरूप रज रहित अजर अमर संग रहित हुए ॥ २० ॥ शारीरिक व मानसिक सब दुःख का क्षय हुवा, जन्म जरा मृत्यु के बंधनसे

सूत्र

सव्वदुक्खा, जाइजरामरण बंधणविमुक्का ॥ अव्वाबाहंसोक्खं, अणुहोंति सासयंसिद्धा ॥ २२ ॥ अतुल सुहसागरगया ॥ अव्वाबाहेयणोवमंपत्ता, सव्वमणागयद्ध चिट्ठंति-सुहीसुहंपत्ता ॥ २३ ॥ इतिबिईयंठाणपयं सम्मत्तं ॥ २ ॥

अर्थ

मुक्त हुए. ऐसे सिद्ध सदैव परम सुख का अनुभव करते हैं ॥ २१ ॥ अतुल्य सुख सागर निराबाध, अनुपम सुख को प्राप्त अपर्यवसित अनंतकालतक सुखही सुख में रहते हैं. ॥२२॥ यह भगवती पन्नवणा का द्वितीय स्थानपद समाप्त हुवा. ॥ २ ॥

॥ तृतीय बहुवक्तव्य पदम्. ॥

दिसिगइ इंदिय काए, जोए वेए कसाय लेसाय ॥ सम्मत्तणाण दंसण, संजय उवओग आहार ॥ १ ॥ भासग परित्त पज्जत्त, सुहुमसन्नी भवत्थिमे चरिमे॥जीवय खित्तबंध, पुग्गल महादंडए चेव ॥ २ ॥ १ ॥ दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा जीवा

अब तीसरे पद में सब जीवों का २७ द्वार से अल्प बहुत्व कहते हैं. इन २७ द्वारों के नाम-१ दिशाद्वार २ गतिद्वार, ३ इन्द्रिय द्वार, ४ कायाद्वार, ५ योगद्वार, ६ वेदद्वार, ७ कषायद्वार ८ लेश्याद्वार ९ सम्यक्त्व द्वार, १० ज्ञानद्वार, ११ दर्शनद्वार, १२ संयतिद्वार, १३ उपयोगद्वार, १४ आहारद्वार, १५ भाषक द्वार, १६ परित्तद्वार १७ पर्याप्त द्वार १८ सूक्ष्म द्वार १९ संज्ञीद्वार २० भवसिद्धिक २१ अस्तिद्वार २२ चरिमद्वार २३ जीव द्वार २४ क्षेत्र द्वार २५ बंध द्वार २६ पुद्गल द्वार और २७ महादंडक द्वार जानना. ॥ १ ॥ अब प्रथम दिशा द्वार कहते हैं सब से थोडे जीव पश्चिम दिशा में, इस से पूर्व में विशेषाधिक, इस से

१ [illegible] इस [illegible] की अपेक्षा से यहां पानी होता है वहां वनस्पति की अधिकता होती है. पानी समुद्र में [illegible] [illegible] समुद्र में [illegible] भी अधिक होते हैं, परंतु पूर्व पश्चिम के समुद्रों में [illegible] [illegible] [illegible] है इस से यहां पानी [illegible] [illegible] [illegible] पांडे है और पश्चिम में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दिशा में [illegible] [illegible] है.

॥ तृतीय बहुवक्तव्य पदम्. ॥

दिसिगइ इंदिय काए, जोए वेए कसाय लेसाय ॥ सम्मत्तणाण दंसण, संजय उवओग आहार ॥ १ ॥ भासग परित्त पज्जत्त, सुहुमसन्नीय भवत्थिसे चरिमे॥जीवय खेत्तबंध, पुग्गल महदंडए चेव ॥ २ ॥ १ ॥ दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा जीवा

अब तीसरे पद में सब जीवों की २७ द्वार मे अल्पा बहुत्व कहते हैं. इन२७ द्वारो के नाम-१ दिशाद्वार २ गतिद्वार, ३ इन्द्रिय द्वार, ४ कायाद्वार, ५ योगद्वार, ६ वेदद्वार, ७ कषायद्वार ८ लेश्याद्वार ९ सम्यक्त्व द्वार, १० ज्ञानद्वार, ११ दर्शनद्वार, १२ संयतिद्वार, १३ उपयोगद्वार, १४ आहारद्वार, १५ भाषक द्वार, १६ परीतद्वार १७ पर्याप्त द्वार १८ सूक्ष्म द्वार १९ संज्ञीद्वार२० भवसिद्धिक २१ अस्तिद्वार २२ चरिमद्वार २३ जीव द्वार २४ क्षेत्र द्वार २५ बंध द्वार २६ पुद्गल द्वार और २७ महादंडक द्वार जानना. ॥ १ ॥ अब प्रथम दिशा द्वार कहते हैं. सब से थोडे जीव पश्चिम दिशा में, इस से पूर्व में विशेषाधिक, इस से

१ 'जत्थ जलं तत्थ वणस्सइ' इस वचन की अपेक्षा से जहां पानी होता है वहां वनस्पती भी अवश्यमेव होती है, पानी समुद्रों में विशेष होता है इसलिये समुद्र में जीवों भी अधिक होते हैं, परन्तु पूर्व पश्चिम के समुद्रों में चन्द्र-सूर्य के द्वीप विशेष है इस से वहां पानी थोडा होने से वनस्पती भी थोडी है और पश्चिम में गौतम द्वीप अधिक होने से सब [illegible] दिशा से पश्चिम में [illegible] सब से थोडे है.

सूत्र

सव्वदुक्खा, जाइजरामरण बंधणविमुक्का ॥ अव्वाबाहंसोक्खं, अणुहोंति सासयंसिद्धा ॥ २२ ॥ अतुल सुहसागरगया ॥ अव्वाबाहेयणोवमंपत्ता, सव्वमणागयद्ध चिट्ठंति- सुहीसुहंपत्ता ॥ २३ ॥ इतिबिईयंठाणपयं सम्मत्तं ॥ २ ॥

अर्थ

मुक्त हुए. पुनः सिद्ध सदैव परम सुख का अनुभव करते हैं ॥ २१ ॥ अतुल्य सुख सागर निराबाध, अनुपम सुख को प्राप्त अपर्यवसित अनंतकालतक सुखी सुख में रहते हैं. ॥२२॥ यह भगवती पन्नवणा का द्वितीय स्थानपद समाप्त हुवा. ॥ २ ॥

मूल

असंखेज्जगुणा ॥ दिसाणुवाएणं सव्वथोवा वालुयप्पभा पुढवि नेरइया पुरत्थिमपच्च-त्थिम उत्तरेणं दाहिणेण असंखेज्जगुणा॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंकप्पभा पुढविनेरइया पुरत्थिमपच्चत्थिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा धूमप्पभा पुढवि नेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तमप्पभा पुढवी नेरइया पुरत्थिमपच्चत्थिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्ज-गुणा ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा अहेसत्तमा पुढवि नेरइया पुरत्थिमणंपच्चत्थिम, उत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा ॥ ११ ॥ दाहिणेहिंतो अहे सत्तमा पुढवि नेरइएहिंतो

अर्थ

के नेरिये सब से थोडे पूर्व पश्चिम उत्तर में, उस से दक्षिण में असंख्यात गुने. ऐसे ही वालु प्रभा के नेरिये सब से थोडे पूर्व पश्चिम व उत्तर दिशा में उस से दक्षिण दिशा में असंख्यात गुने. ऐसे ही पंकप्रभा पृथ्वी के नारकी सब से थोडे पूर्व पश्चिम व उत्तर में इस से दक्षिण में असंख्यात गुने. ऐसे ही धूम्रप्रभा पृथ्वी के नार की सब से थोडे पूर्व पश्चिम व उत्तर में इस से दक्षिण में असंख्यात गुने. सब से थोडे तम प्रभा पृथ्वी के नार की पूर्व पश्चिम व उत्तर में इस से दक्षिण में असंख्यात गुने. सब से थोडे तमतमा पृथ्वी के नार की पूर्व पश्चिम व उत्तर में इस से दक्षिण में असंख्यात गुने. ॥ ११ ॥ सातवी तमतमा

सूत्र

साहिया ॥ ८ ॥ दिसाणुवाएणं, सव्वत्थोवा तेइंदिया पच्चत्थिमेणं पुरत्थिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥ ९ ॥ दिसाणुवाएणं-सव्वत्थोवा चउरिंदिया पच्चत्थिमेणं, पुरत्थिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥ १० ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा णेरइया पुरत्थिमपच्चत्थिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा रयणप्पभा पुढविनेरइया पुरत्थिमपच्चत्थिम उत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सक्करप्पभा पुढविनेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं दाहिणेणं

अर्थ

क्योंकी चंद्र सूर्यके द्वीपों नहीं होने से और इस से ४ उत्तरमें विशेषाधिक मान सरोवर होनेसे ॥ ८ ॥ सबसे थोडे तेइन्द्रिय जीव पश्चिम दिशा में, २ इस से पूर्व में विशेषाधिक, ३ इस से दक्षिण में विशेषाधिक और ४ इस से उत्तर में विशेषाधिक॥९॥ सब से थोडे चतुरेन्द्रिय पश्चिम में इस से पूर्वमें विशेषाधिक, इस से दक्षिण में विशेषाधिक और इससे उत्तरमें विशेषाधिक॥१०॥ दिशा आश्रिय सबसे थोडे नारकी पूर्वपश्चिम व उत्तर दिशा में क्यों की पुष्पावकर्ण नरका वासे थोडे हैं इस से दक्षिण दिशा के असंख्यात गुन क्यों की नरका वासे भी बहुत हैं और कृष्णपक्षी जीवों भी बहुत उत्पन्न होते हैं. दिशा आश्रिय रत्नप्रभा पृथ्वी के नेरीये सब से थोडे पूर्व पश्चिम व उत्तरदिशा में उससे दक्षिण दिशा में असंख्यात गुने. ऐसेही शर्करप्रभा पृथ्वी

सूत्र

विसेसाहिया ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवादेवा सणंकुमारे कप्पे पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सणंकुमारे कप्पे पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा माहिंद कप्पे पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेण विसेसाहिया ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा बंभलोए कप्पे पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेण, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥ दिसाणु वाएणं सव्वत्थोवादेवा लंतएकप्पे पुरत्थिमपच्चत्थिम उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा

अर्थ

उत्पन्न होते हैं दिशानुपात से सब से थोडे वे ईशान देवलोक में देव पूर्व पश्चिम में, इस से उत्तर में असंख्यात गुने इस से दक्षिण में विशेषाधिक दिशानुपात से सब से थोडे देव सनत्कुमार में पूर्व पश्चिम में इस से उत्तर में असंख्यात गुने इस से दक्षिण में विशेषाधिक, दिशानुपात से माहेन्द्र देवलोक में सबसे थोडे देव पूर्व पश्चिम में इस से उत्तर में असंख्यात गुने इस से दक्षिण में विशेषाधिक. दिशानुपात से सब से थोडे ब्रह्म लोक देवलोक में पूर्व पश्चिम व उत्तर में इससे दक्षिण में असंख्यात गुने. दिशानुपात से सब से थोडे लांतक देवलोक में पूर्व पश्चिम व उत्तर में इस से दक्षिण में असंख्यात गुने, दिशानुपात से महाशुक्र देवलोक में सब से थोडे पूर्व पश्चिम व उत्तर में, दक्षिण में असंख्यात गुने. दिशानुपात से सहस्रारदेव

सूत्र

छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥ दाहिणिल्लेहिंतो तमप्पभापुढवि नेरइए हिंतो पंचमाए, धूमप्पभाए पुढवीए नेरइए पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥ दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पभापुढविनेरइएहिंतो चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥ दाहिणिल्लेहिंतो पंकप्पभा पुढवि नेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, ॥ दाहिणिल्लेहिंतो

अर्थ

पृथ्वी के दक्षिण दिशा के नारकी से छठी तमा पृथ्वी के पूर्व, पश्चिम व उत्तर के नारकी असंख्यात गुने इस से दक्षिण दिशा के नारकी असंख्यात गुने. तमा पृथ्वी के दक्षिण के नारकी से पांचवी धूम्रप्रभा के नारकी पूर्व पश्चिम व उत्तर में असंख्यात गुने इस से दक्षिण के असंख्यात गुने धूम्रप्रभा के दक्षिण के नारकी से चौथी पंक प्रभा पृथ्वी के पूर्व पश्चिम व उत्तर के नारकी असंख्यात गुने इस से दक्षिण के नारकी असंख्यात गुने. पंकप्रभा पृथ्वी के दक्षिण के नारकी के तीसरी वालुप्रभा के नारकी पूर्व पश्चिम व उत्तर के असंख्यात गुने इस से दक्षिण दिशा के असंख्यात गुने वालुप्रभा के दक्षिण के नारकी से दूसरी शर्करप्रभा के पूर्व पश्चिम व उत्तर के नारकी असंख्यात गुने इस से दक्षिण दिशा के

सूत्र

विसेसाहिया ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवादेवा सणंकुमारे कप्पे पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सणंकुमारे कप्पे पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा माहिंदे कप्पे पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं विसेसाहिया ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा बंभलोए कप्पे पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥ दिसाणु वाएणं सव्वत्थोवादेवा लंतएकप्पे पुरत्थिमपच्चत्थिम उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा

अर्थ

उत्पन्न होते हैं दिशानुपात से सब से थोडे वे ईशान देवलोक में देव पूर्व पश्चिम में, इस से उत्तर में असंख्यात गुने इस से दक्षिण में विशेषाधिक दिशानुपात से सबसे थोडे देव सनत्कुमार में पूर्व पश्चिम में इस से उत्तर में असंख्यात गुने इससे दक्षिण में विशेषाधिक, दिशानुपात से माहेन्द्र देवलोक में सबसे थोडे देव पूर्व पश्चिम में इस से उत्तर में असंख्यात गुने इस से दक्षिण में विशेषाधिक. दिशानुपात से सब से थोडे ब्रह्म लोक देवलोक में पूर्व पश्चिम व उत्तर में इससे दक्षिण में असंख्यात गुने. दिशानुपात से सब से थोडे लंतक देवलोक में पूर्व पश्चिम व उत्तर में इस से दक्षिण में असंख्यात गुने, दिशानुपात से महाशुक्र देवलोक में सब से थोडे पूर्व पश्चिम व उत्तर में, दक्षिण में असंख्यात गुने. दिशानुपात से [illegible]

सूत्र

दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा पुरत्थिमेणं,पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥१५॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वाणमंतरादेवा पुरत्थिमेणं, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया; उत्तरेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया ॥ १६ ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसियादेवा, पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥ १७ ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सोहम्मेकप्पे पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया ॥ दिसाणुवाएणं सव्व-त्थोवा देवा ईसाणेकप्पे पुरत्थिम पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं

अर्थ

थोडे भवन वासी देव पूर्व पश्चिम में इस से उत्तर में असंख्यात गुने क्यों की यहां तीन क्रोड छासठ लाख भवन हैं, इस से दक्षिण में असंख्यात गुने क्यों की यहां चार क्रोड छ लाख भवन हैं. ॥१५॥ दिशाओं की अपेक्षा सबसे थोडे वाणव्यंतर देव पूर्व में, पश्चिम में विशेषाधिक. उत्तर में विशेषाधिक व दक्षिण में विशेषाधिक ॥१६॥ दिशानुपात आश्रित सब से थोडे ज्योतिषी देव पूर्व व पश्चिम में, दक्षिण में विशेषाधिक उस से उत्तर में विशेषाधिक ॥ १७ ॥ दिशानुपात से सौधर्म देवलोक में सब से थोडे पूर्व पश्चिम के देवों क्यों की यहांपर आवलिका बंध है परंतु पुष्पावकीर्ण नहीं है. इस से उत्तर में असंख्यात गुने क्यों की पुष्पावकीर्ण विमानों हैं, इस से दक्षिण में विशेषाधिक, क्यों की कृष्ण पक्षी जीवों विशेष आकर

मूल

सिद्धाअणंतगुणा,तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥ एएसिणं भंते ! नेरइयाणं तिरिक्खजोणि-याणं तिरिक्खजोणिणीण,मणुस्साणं,मणुस्सीणं,देवाणं,देवीणं,सिद्धाणय, अट्ठगइ समासेणं कयरे२हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सीओ, मणुस्सा असंखेज्जगुणा, नेरइया असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ देवा असंखेज्जगुणा, देवीओ संखेज्जगुणाओ, सिद्धाअणंतगुणा, तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥ १९ ॥ २ ॥ एएसिणं भंते ! सइंदियाणं, एगिंदियाणं, बेइंदियाणं,

अर्थ

आकाश प्रदेश हैं उतने नेरीये हैं उस से देवता असंख्यात गुने क्यों की प्रतर के असंख्यात वे भागवर्ती श्रेणिगत आकाश प्रदेश समान हैं, उस से सिद्ध अनंतगुने, और इस से तिर्यंच अनंतगुने वनस्पतिकाया आश्रिय. अहो भगवन्! नारकी, तिर्यंच तिर्यंचणी, मनुष्य, मनुष्यणी, देव, देवी व सिद्ध इन आठ में से गति आश्रिय कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडी मनुष्यणी, इस से मनुष्य असंख्यातगुने, इस से नारकी असंख्यातगुने, इस से तीर्यंचनी असंख्यातगुनी, इस से देवता असंख्यात गुने, इस से देवी संख्यात गुनी, इस से सिद्ध अनंत गुने, और इस से तिर्यंच अनंत गुने ॥१९॥२॥ इति द्वितीयद्वार. अब इन्द्रिय द्वार-अहो भगवन्! सइन्द्रिय, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरेन्द्रिय पंचेन्द्रिय व अनेन्द्रिय में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम! सब से थोडे पंचेन्द्रिय क्यों की संख्यात क्रोड योजन

सूत्र

देवा महासुक्के कप्पे पुरत्थिमपच्चत्थिम उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा॥ दिसाणुवाएणं सव्व
त्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरत्थिमपच्चत्थिम उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा॥ तेणपरं बहुस
मोववन्नगा समणाउसो ! दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणं पुरत्थिमेणं
संखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया ॥२८॥१॥ एएसिणं भंते ! नेरइयाणं तिरिक्ख
जोणियाणं मणुस्साणं देवाणं सिद्धाणय पंचगइ समासेणं कयरे२हिंतो अप्पावा बहुयावा
तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा, नेरइया असंखेज्जगुणा, देवासंखेज्जगुणा

भावार्थ

लोक में सब से थोडे पूर्व पश्चिम व उत्तर में इन से दक्षिण में असंख्यात गुने. इस से आगे सर्वार्थ सिद्ध
पर्यंत सब समान उत्पन्न होनेवाले हैं, क्यों की वहां केवल मनुष्य ही उत्पन्न होते हैं. दिशानुपात से सब से
थोडे सिद्ध दक्षिण व उत्तर में क्यों की भरत ऐरवत क्षेत्र में से सिद्ध थोडे होते हैं, इन से पूर्व में संख्यात
गुने महाविदेह क्षेत्र के सिद्ध विशेष होते हैं, इनसे पश्चिम के विशेषाधिक अधोगामनी विजय आश्रित॥२८॥
इति अष्टद्वार॥१॥ अब गतिद्वार कहते हैं अहो भगवन् ! नारकी, तिर्यंच मनुष्य देव व सिद्ध इन पांचों में से गति
आश्रित कौन, किनसे अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम! सब से थोडे मनुष्य क्योंकी गुणतीस
अंक की है, इनसे नारकी असंख्यातगुने क्योंकी अंगुलमात्र क्षेत्र प्रदेश राशि संबंधी प्रथमवर्ग मूल दूसरे
वर्ग मूल से गुणाकार करते जो प्रदेशराशि होवे उस प्रमाण घनीकृत लोक की एक प्रदेश श्रेणि में जितने

सूत्र

विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ॥ एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा, पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया ॥ एएसिणं भंते ! सइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सइंदिया

अर्थ

असंख्यात वे भागमात्र खण्ड प्रमाण है. इस से तेइन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक क्यों की प्रतर अंगुल के असंख्यातवे भागमात्र खण्ड प्रमाण हैं. इस से बेइन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक इस से भी अधिक प्रतर के असंख्यात वे भागखण्ड प्रमाण है, इस से एकेन्द्रिय के अपर्याप्त अनंतगुना, और इस से सइन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक. अहो भगवन् ! इन सइन्द्रिय, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय के पर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे चतुरेन्द्रिय के पर्याप्त, उस से पंचेन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से बेइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक इस से तेइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक इस के एकेन्द्रिय के पर्याप्त अनंतगुने, और इस से सइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक. अहो

सूत्र

देवा महासुक्के कप्पे पुरत्थिमपच्चत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा॥ दिसाणुवाएणं सव्व थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरत्थिमपच्चत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा॥ तेणपरं बहुस मोववन्नगा समणाउसो ! दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणं पुरत्थिमेणं संखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया ॥१८॥३॥ एएसिणं भंते ! नेरइयाणं तिरिक्ख जोणियाणं मणुस्साणं देवाणं सिद्धाणय पंचगइ समासेणं कयरे२हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा, नेरइया असंखेज्जगुणा, देवा संखेज्जगुणा

अर्थ

लोक में सब से थोडे पूर्व पश्चिम व उत्तर में इस से दक्षिण में असंख्यात गुने. इस से आगे सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत सब समान उत्पन्न होनेवाले हैं, क्यों की वहां केवल मनुष्य ही उत्पन्न होते हैं. दिशानुपात से सब से थोडे सिद्ध दक्षिण व उत्तर में क्यों की भरत ऐरवत क्षेत्र में से सिद्ध थोडे होते हैं, इस से पूर्व में संख्यात गुने महाविदेह क्षेत्र के सिद्ध विशेष होते हैं, इससे पश्चिम के विशेषाधिक अधोगामनी विजय आश्रिय॥१८॥ इति प्रथमद्वार॥१॥अब गतिद्वार कहते हैं अहो भगवन् ! नारकी, तिर्यंच मनुष्य देव व सिद्ध इन पांचों में से गति आश्रिय कौन, किससे अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम! सबसे थोडे मनुष्य क्योंकी गुनतीस अंक की ही है, इससे नारकी असंख्यातगुने क्योंकी अंगुलमात्र क्षेत्र प्रदेश राशि संबंधी प्रथमवर्ग मूल दूसरे वर्ग से गुनाकार करते जो प्रदेशराशि होवे उस प्रमाण घनीकृत लोक की एक प्रदेश श्रेणि में, जितने

सूत्र

असंखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे२हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा, चउरिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे२हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्तगा पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे२

अर्थ

अपर्याप्त एक प्रतरगत अंगुल के असंख्यातवे भाग मात्र खण्ड प्रमाण हैं. अहो भगवन् ! तेइन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे तेइन्द्रिय के पर्याप्त इस से अपर्याप्त असंख्यातगुने. अहो भगवन् ! इन चतुरेन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे चतुरेन्द्रिय के पर्याप्त इन से अपर्याप्त असंख्यातगुने. अहो भगवन् ! इन पंचेन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे पंचेन्द्रिय के पर्याप्त, इन से अपर्याप्त असंख्यातगुने. अहो भगवन् ! इन सइन्द्रिय, एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय,

सूत्र

तेइंदियाणं, चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं, अणिंदिआणय कयरे २ हिंतो अप्पाश्रा बहुआत्रा तुल्लात्रा विसेसाहियात्रा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, वेइंदिया विसेसाहिया, अणिंदिया अणंतगुणा, एगिंदिया अणंतगुणा, सइंदिया विसेसाहिया ॥ एएसिणं भंते ! सइंदियाणं, एगिंदियाणं, वेइंदियाणं, तेइंदियाणं, चउरिंदियाणं, पंचिंदियाणं, अपज्जत्तगाणं कयरं २ हिंतो अप्पात्रा बहुयात्रा तुल्लात्रा विसेसाहियात्रा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा, पंचिंदिया अपज्जत्तगा, चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा

अर्थ

प्रमाण विष्कंभ सुचि प्रमित प्रतर के असंख्येय भागवर्ती असंख्यात श्रेणीगत आकाश प्रदेश की राशि प्रमाण है. इस से चतुरेन्द्रिय विशेषाधिक प्रभूत संख्यात कोडी योजन प्रमाण विष्कंभ सुचि प्रमित है, इस से तेइन्द्रिय विशेषाधिक, इस से वेइन्द्रिय विशेषाधिक, इस से अनेन्द्रिय अनंत गुने सिद्ध आश्रिय, इस से एकेन्द्रिय अनंत गुने वनस्पति आश्रिय और इससे सइन्द्रिय वाले विशेषाधिक. अहो भगवन् ! इन सइन्द्रिय, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, तेइन्द्रिय चतुरेन्द्रिय पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प, बहुत, तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सबसे थोडे पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त क्योंकी प्रतरमें जितने अंगुल के असंख्यातवे [illegible] से चतुरेन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक क्योंकी अंगुल के

स्सइ काइयाणं, तसकाइयाणं, अकाइयाणं कयरे२हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया, तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया, अकाइया अणंतगुणा, वणस्सइकाइया अणंतगुणा, सकाइया विसेसाहिया ॥ एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं, आउकाइयाणं, तेउकाइयाणं, वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं, अपज्जत्तगाणं कयरे२हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा, विसेसाहिया. ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा

काया, अपकाया तेऊकाया वायुकाया, वनस्पति काया व त्रसकाया में से कौन किस से अल्प, बहुत, तुल्य, व विशेषाधिक है ! अहो गौतम ! सब से थोडे त्रसकायिक, इस से तेउकायिक असंख्यात गुने, इस से पृथ्वीकायिक विशेषाधिक इस से अपकायिक विशेषाधिक इस से वायुकायिक विशेषाधिक इस से अकाया अनन्तगुन, इस से वनस्पति काया अनंतगुनी, इस से सकाया विशेषाधिक अहो भगवन् ! इन सकायिक, पृथ्वीकायिक, अपकायिक, तेजसयिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक व त्रसकायिक के अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत, तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे त्रसकाया के अपर्याप्त, इस से तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने, इस से पृथ्वीकाया के अपर्याप्त विशे-

सूत्र

अपज्जत्तगा, सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! एगिंदियाणं पज्जत्ता-
पज्जत्तगाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा !
सव्वत्थोवा एगिंदिय पज्जत्तगा, एगिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥ एएसिणं
भंते ! बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसा-
हियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तगा, बेइंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा॥
एएसिणं भंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा
तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा, तेइंदिया अपज्जत्तगा

अर्थ

अहो भगवन् ! इन सइन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ! अहो
गौतम ! सब से थोडे सइन्द्रिय के अपर्याप्त इस से सइन्द्रिय के पर्याप्त संख्यातगुने. अहो भगवन् ! इन
एकेन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम !
सब से थोडे एकेन्द्रिय के पर्याप्त, इस से एकेन्द्रिय के अपर्याप्त असंख्यातगुने, क्यों कि सूक्ष्म में अपर्याप्त
अधिक होते हैं. अहो भगवन् ! इन बेइन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य
व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे बेइन्द्रिय के पर्याप्त, उस से बेइन्द्रिय के अपर्याप्त असं-
ख्यातगुने, क्यों कि पर्याप्त एक प्रतरगत अंगुल के संख्यातगुने भाग मात्र खण्ड प्रमाण हैं और

सूत्र

गुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया ॥ एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे२हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिण भंते ! पुढविकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! आउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा

अर्थ

के पर्याप्त अनंत गुने और ७ इन से सकाया के पर्याप्त विशेषाधिक. अहो भगवन् इन सकाया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किन से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? अहो गौतम ! सब से थोडे सकायिक अपर्याप्त इन से सकायिक पर्याप्त संख्यात गुने. अहो भगवन् ! इन पृथ्वीकायिक पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे पृथ्वीकाया के अपर्याप्त इस से पृथ्वीकाया के पर्याप्त संख्यात गुने. अहो भगवन् ! अप्काया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे अप्काया

सूत्र

हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा, पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइंदिया विसेसाहिया॥ २० ॥ ३ ॥ एएसिणं भंते! सकाइयाणं, पुढविकाइयाणं, आउकाइयाणं, तेउकाइयाणं, वाउकाइयाणं,

अर्थ

व पंचेन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किन से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १. सब से थोडे चतुरेन्द्रिय के पर्याप्त, २ इन से पंचेन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक, ३ इन से बेइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक ४ इन से तेइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक, ५ इस से पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त असंख्यात गुने ६ इन से चतुरेन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक, ७ इन से तेइन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक ८ इन से बेइन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक ९ इससे एकेन्द्रिय के अपर्याप्त अनंत गुने, १० इनसे सइन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक ११ इन से एकेन्द्रिय के पर्याप्त संख्यात गुने १२ इन से सइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक इन सइन्द्रिय विशेषाधिक ॥ २० ॥ इति तीसराद्वार॥३॥ अब कायाद्वार-अहो भगवन् ! इन सकाया, पृथ्वी

सूत्र

णं भंते ! तसकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं, तसकाइयाणय पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंता अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढवी. काइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्ज-

अर्थ

तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे त्रसकाया के पर्याप्त इन से अपर्याप्त असंख्यात गुने. अहो भगवन् ! इन सकायिक पृथ्वी कायिक अपूकायिक तेउकायिक वायुकायिक, वनस्पति कायिक व त्रसकायिक जीवों के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे त्रसकाया पर्याप्त, २ इन से त्रसकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने, ३ उस से तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने ४ उस से पृथ्वी काया के अपर्याप्त विशेषाधिक, ५ उस से अपकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक, ६ इस से वायुकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक, ७ इस से तेउकाया के

सूत्र

असंखेज्जगुणा,पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया,आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा,सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया,॥एएसिणं भंते ! सकाइयाणं, पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउ काइयाणं, वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं पज्जत्तगाणं कयरं २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया. वणस्सइकाइया पज्जत्तगा

अर्थ

धिक, इस से अपकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से वायुकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से वनस्पतिकाया के अपर्याप्त अनंत गुने, और इस से सकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक. अहो भगवन् ! इन सकाया पृथ्वीकाया, अपकाया, तेउकाया, वाउकाया, वनस्पतिकाया व त्रसकाया के पर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे त्रसकाया के पर्याप्त, २ इस से तेउकाया के पर्याप्त असंख्यात गुने, ३ इस से पृथ्वीकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, ४ इस से अपकाया के पर्याप्त विशेषाधिक ५ इस से वायुकाया के पर्याप्त विशेषाधिक ६ इस से वनस्पतिकाया

सूत्र

सुहुम पुढविकाइया विसेसाहिया, सुहुम आउकाइया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुम निगोदा असंखेज्जगुणा सुहुमवणस्सइकाइया अणंतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया,॥एएसिणं भंते!सुहुम अपज्जत्तगाणं सुहुम पुढविकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगाणं,सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगाणं, सुहुम वाउकाइया अपज्जत्तगाणं, सुहुमवणस्सइया अपज्जत्तगाणं,सुहुम निगोया अपज्जत्तगाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुम पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया,सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया

अर्थ

तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे सूक्ष्म तेउकाया, २ उस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया विशेषाधिक, ३ उससे सूक्ष्म अप्काया विशेषाधिक, ४ उस से सूक्ष्म वायुकाया विशेषाधिक, ५ उस से सूक्ष्म निगोद असंख्यात गुने ६ उस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया अनंत गुनी और ७ उस से सूक्ष्म विशेषाधिक. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म, सूक्ष्म पृथ्वीकाया, सूक्ष्म अप्काया, सूक्ष्म तेउकाया, सूक्ष्म वायुकाया, सूक्ष्म वनस्पतिकाया व सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे सूक्ष्म तेउकाया के अपर्याप्त २ उस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया के

सूत्र

संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! तेउकाइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते! वाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, ॥ एएसिणं भंते ! वणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

अर्थ

के अपर्याप्त उस से अपकाया के पर्याप्त संख्यात गुने. अहो भगवन् ! तेउकाया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे तेउकाया के अपर्याप्त इस से तेउकाया के पर्याप्त संख्यात गुने. अहो भगवन् ! वायुकाया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेष हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे वायुकाय के अपर्याप्त वायुकाय के पर्याप्त संख्यात गुने. अहो भगवन् ! वनस्पति काया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ! अहो गौतम ! सब से थोडे वनस्पति काय के अपर्याप्त, इस से वनस्पति काया के पर्याप्त संख्यात गुने. अहो भगवन् ! अपकायों के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत

सूत्र

सुहुम वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया,सुहुम णिगोया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा,सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया॥३॥एएसिणं भंते! सुहुमाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्तगा, सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा॥ एएसिणं भंते ! सुहुम पुढविकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुम पुढविकाइया अपज्जत्तगा, सुहुम पुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा,॥ एएसिणं भंते ! सुहुम आउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे२हिंतो

अर्थ

४ उस से सूक्ष्म वायुकाया के पर्याप्त विशेषाधिक. ५ उस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने. ६ उस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के पर्याप्त अनंतगुने, उस से सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म के पर्याप्त उस से सूक्ष्म के अपर्याप्त संख्यातगुने. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म पृथ्वीकाया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म पृथ्वीकाया के अपर्याप्त उस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया के पर्याप्त संख्यातगुने. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म

सूत्र

त्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अनंतगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया विसेसाहिया, ॥२१॥ एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुम पुढविकाइयाणं, सुहुम आउकाइयाणं सुहुम तेउकाइयाणं, सुहुमवाउकाइयाणं, सुहुमवणस्सइकाइयाणं, सुहुमणिगोयाणय, कयरे२हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया,

अर्थ

पर्याप्त संख्यात गुने ८ उस से पृथ्वीकाया के पर्याप्त विशेषाधिक ९ उस से अप्काया के पर्याप्त विशेषाधिक १० उस से वायुकाया के पर्याप्त विशेषाधिक ११ उस से वनस्पति काया के अपर्याप्त अनंत गुने १२ उस से सकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक १३ उस से वनस्पति काया के पर्याप्त असंख्यात गुने १४ उस से सकाया के पर्याप्त विशेषाधिक १५ उस से समुच्चय सकाया विशेषाधिक ॥ २१ ॥ अब सूक्ष्म आश्रित अल्प बहुत्व कहते हैं-अहो भगवन्! इन सूक्ष्म, सूक्ष्म पृथ्वीकाया, सूक्ष्म अप्काया, सूक्ष्म तेउकाया, सूक्ष्म वायुकाया, सूक्ष्म वनस्पतिकाया व सूक्ष्म निगोद इन में से कौन किस से अल्प बहुत,

सूत्र

. सुहुमकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम निगोयाणं पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुम निगोदा अपज्जत्तगा, सुहुम निगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिण भंते ! सुहुमाण, सुहुम पुढविकाइयाणं, सुहुम आउकाइयाण, सुहुम तेउकाइयाण, सुहुम वाउकाइयाणं, सुहुम वणस्सइकाइयाणं, सुहुम निगो-

अर्थ

पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म वनस्पतिकाया के अपर्याप्त उन से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के पर्याप्त संख्यातगुने. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त उन से पर्याप्त संख्यातगुने. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म, सूक्ष्म पृथ्वीकाया, सूक्ष्म अप्काया, सूक्ष्म तेउकाया, सूक्ष्म वायुकाया, सूक्ष्म वनस्पतिकाया व सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से

सू०

सुहुम वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम पज्जत्तगाणं, सुहुम पुढविकाइया पज्जत्तगाणं, सुहुम, आउकाइया पज्जत्तगाणं, सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगाणं, सुहुम वाउकाइया पज्जत्तगाणं, सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तगाणं, सुहुम निगोया पज्जत्तगाणय, कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा, सुहुम पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया,

अर्थ

अपर्याप्त विशेषाधिक, ३ उस से सूक्ष्म अप्काया के अपर्याप्त विशेषाधिक, ४ उस से सूक्ष्म वायुकायाके अपर्याप्त विशेषाधिक, ५ उससे सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने, ६ उस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के अपर्याप्त अनंतगुने, ७ उस से सूक्ष्म के अपर्याप्त विशेषाधिक. अहो भगवन् ! सूक्ष्म, सूक्ष्म पृथ्वीकाया, सूक्ष्म अप्काया, सूक्ष्म तेउकाया, सूक्ष्म वायुकाया, सूक्ष्म वनस्पतिकाया व सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे सूक्ष्म तेउकाया के पर्याप्त २ उस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, ३ उस से सूक्ष्म अप्कायाके पर्याप्त विशेषाधिक,

मूल

वणस्सइकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम णिगोयाणं पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुम निगोदा अपज्जत्तगा, सुहुम निगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! सुहुमाण, सुहुम पुढविकाइयाणं, सुहुम आउकाइयाण, सुहुम तेउकाइयाण, सुहुम वाउकाइयाण, सुहुम वणस्सइकाइयाणं, सुहुम निगो-

अर्थ

पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म वनस्पतिकाया के अपर्याप्त उस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के पर्याप्त संख्यातगुने. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त उस से पर्याप्त संख्यातगुने. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म, सूक्ष्म पृथ्वीकाया, सूक्ष्म अपकाया, सूक्ष्म तेउकाया, सूक्ष्म वायुकाया, सूक्ष्म वनस्पतिकाया व सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से

मूत्र

अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुम आउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम तेउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगाणं संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम वाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुया तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुम वाउकाया अपज्जत्तगा, सुहुम वाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम

अर्थ

अपकाया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म अपकाया के अपर्याप्त उस से सूक्ष्म अपकाया के पर्याप्त संख्यातगुने. अहो भगवन् ! सूक्ष्म तेउकाया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म तेउकाया के अपर्याप्त उस से पर्याप्त संख्यातगुने. अहो भगवन् ! सूक्ष्म वायुकाया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म वायुकाया के अपर्याप्त उस से पर्याप्त संख्यात गुने. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म वनस्पतिकाया के

सूत्र

निसेसाहिया ॥ २२ ॥ एएसिणं भंते ! बायराणं, बायर पुढविकाइयाणं, बायर आउकाइयाण, बायर तेउकाइयाणं, बायर वाउकाइयाणं, बायर वणस्सइकाइयाणं, पत्तेय सरीरी बायर वणस्सइकाइयाणं, बायर निगोयाण, बायर तसकाइयाणं, कयरे२ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा बायर तसकाइया, बायर तेउकाइया असंखेज्जगुणा, बायर निगोया असंखेज्जगुणा, बायर पुढवीकाइया असंखेज्जगुणा, बायर आउकाइया असंखेज्जगुणा, बायर वाउकाइया असंखेज्जगुणा, बायर वणस्सइकाइया अणंतगुणा, बायरा विसेसाहिया ॥ एएसिणं भंते! बायर अप-

अर्थ

वनस्पति के पर्याप्त असंख्यात गुने, उस से सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक और उस से सूक्ष्म विशेषाधिक ॥२२॥ अहो भगवन्! इन बादर, बादर पृथ्वी काया, बादर अप्काया, बादर तेउकाया, बादर वायुकाया, बादर वनस्पति काया, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया, बादर निगोद व बादर त्रसकाया, में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे बादर त्रसकाया, २ इन से बादर तेउकाया असंख्यात गुना, ३ इन से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया असंख्यात गुना, ४ इन से बादर निगोद असंख्यात गुना ५ बादर पृथ्वी काया असंख्यात गुना, ६ बादर अप्काया

सूत्र

गाणय पज्जत्तापज्जत्ताण कयर २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा॰ गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुम पुढवीकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम निगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुम पज्जत्तगा विसेसाहिया,सुहुमा

अर्थ

थोडे सूक्ष्म तेउकाया के अपर्याप्त. २ उस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक. ३ उस से सूक्ष्म अपकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक. ४ उस से सूक्ष्म वायुकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक ५ उस से सूक्ष्म तेउकाया के पर्याप्त संख्यातगुने. ६ उस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया के पर्याप्त विशेषाधिक ७ उस से सूक्ष्म अप-काया के पर्याप्त विशेषाधिक. ८ उस से सूक्ष्म वायुकाया के पर्याप्त विशेषाधिक ९ उस से सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने. १० उस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त संख्यातगुने. ११ उस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के अपर्याप्त अनंतगुने, उस से सूक्ष्म के अपर्याप्त विशेषाधिक उस से सूक्ष्म

काइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर आउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बायर अपज्जत्तगा विसेसाहिया॥ एएसिणं भंते ! बायर पज्जत्तगाणं, बायर पुढविकाइया पज्जत्तगाणं, बायर आउकाइया पज्जत्तगाणं, बायर तेउकाइया पज्जत्तगाणं, बायर वाउकाइया पज्जत्तगाणं, बायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगाणं, पत्तेयसरीरबायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगाणं, बायर निगोद पज्जत्तगाणं, बायर तसकाइया पज्जत्तगाणय, कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया पज्जत्तगा, बायर तसकाइया

अपर्याप्त अनंत गुने, और उस से बादर के अपर्याप्त विशेषाधिक. अहो भगवन् ! इन बादर व बादर पृथ्वी काया, बादर अपकाया, बादर तेउकाया, बादर वायुकाया, बादर वनस्पति काया, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया, बादर निगोद व बादर त्रसकाया के पर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे बादर तेउकाया के पर्याप्त, २ उस से बादर त्रसकाया के पर्याप्त असंख्यात गुने, ३ प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया के पर्याप्त असंख्यात गुने, ४ बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यात गुने, ५ बादर पृथ्वी काया के पर्याप्त असंख्यात गुने ६ बादर अपकाया के पर्याप्त असंख्यात गुने, ७ बादर वायुकाया के पर्याप्त असंख्यात गुने

सूत्र

ज्जत्तगाणं, बायर पुढविकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर आउकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर तेउकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर बाउकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर वणस्सइ काइया अपज्जत्तगाणं, पत्तेय सरीर बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर निगोय अपज्जत्तगाण, बायर तसकाइया अपज्जत्तगाणय, कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा बायर तसकाइया अपज्जत्तगा, बायर तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर निगोदा अपज्जत्तगाय संखेज्जगुणा, बायर पुढवि

अर्थ

से बादर विशेषाधिक अहो भगवन्! इन बादर, बादर पृथ्वी काया, बादर अप्काया, बादर तेउकाया, बादर वायुकाया, बादर वनस्पति काया प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया बादर निगोद व बादर त्रसकाया के अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? अहो गौतम! १ सब से थोडे बादर त्रसकाया के अपर्याप्त, २ उस से बादर तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने ३ उस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, ४ उनसे बादर निगोद के अपर्याप्त संख्यातगुने, ५ उस से बादर पृथ्वी काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने ६ उस से बादर अप्काया के अपर्याप्त असंख्यात गुने, ७ बादर वायुकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, ८ उस से बादर वनस्पति काया के

सूत्र

ज्जत्तगाणं, बायर पुढविकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर आउकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर तेउकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर वाउकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर वणस्सइ काइया अपज्जत्तगाणं, पत्तेय सरीर बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर निगोय अपज्जत्तगाणं, बायर तसकाइया अपज्जत्तगाणय, कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा बायर तसकाइया अपज्जत्तगा, बायर तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर निगोदा अपज्जत्तगाय संखेज्जगुणा, बायर पुढवि

अर्थ

से बादर विशेषाधिक अहो भगवन्! इन बादर, बादर पृथ्वी काया, बादर अप्काया, बादर तेउकाया, बादर वायुकाया, बादर वनस्पति काया प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया बादर निगोद व बादर त्रस काया के अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है? अहो गौतम! १ सब से थोडे बादर त्रसकाया के अपर्याप्त, २ उस से बादर तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने ३ उस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, ४ उस से बादर निगोद के अपर्याप्त संख्यातगुने, ५ उस से बादर पृथ्वी काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने ६ उस से बादर अप्काया के अपर्याप्त असंख्यात गुने, ७ बादर वायुकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, ८ उस से बादर वनस्पति काया के

सूत्र

अप्पावा बहुयावा, तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा, बायर निगोदा पज्जत्तगा, बायर निगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! बायर तसकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायर तसकाइया पज्जत्तगा, बायर तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ॥ एएसिणं भंते ! बायराणं, बायर पुढविकाइयाणं, बायर आउकाइयाणं, बायर तेउकाइयाणं, बायर वाउकाइयाणं, बायर वणस्सइकाइयाणं, पत्तेय सरीर बायर वणस्सइकाइयाण बायर तसकाइयाणय, पज्जत्तापज्जत्ता कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया

अर्थ

बादर वायुकाया, बादर वनस्पतिकाया, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया, बादर निगोद व बादर त्रसकाया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किन से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे बादर तेउकाया के पर्याप्त, २ उस से बादर त्रसकाया के पर्याप्त असंख्यात गुने, ३ उस से बादर त्रसकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने, ४ उस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के पर्याप्त असंख्यात गुने, ५ उस से बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यात गुने, ६ उस से बादर पृथ्वीकाया के पर्याप्त

सूत्र

हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा बायर वाउकाइया पज्जत्तगा, बायर वाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा॥ एएसिणं भंते! बायर वणस्सइकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा बायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा, बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, एएसिणं भंते! पत्तेय सरीर बायर वणस्सइ काइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा पत्तेय सरीर बायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा, पत्तेय सरीर बायर वणस्सइ काइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा॥ एएसिणं भंते! बायर निगोयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो

अर्थ

गुने. अहो भगवन्! बादर निगोद के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडे बादर निगोद के पर्याप्त उस से बादर निगोद के अपर्याप्त असंख्यात गुने. अहो भगवन्! इन बादर त्रसकाया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडे बादर त्रसकाया के पर्याप्त उस से बादर त्रसकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने. अहो भगवन्! इन बादर, बादर पृथ्वीकाया, बादर अप्काया, बादर तेउकाया

अपज्जत्तगाणं, सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगाणं, सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगाणं, सुहुम वाउकाइया अपज्जत्तगाणं, सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्ताणं, सुहुम निगोया अपज्जत्ताणं, बायरा अपज्जत्तगाणं, बायर पुढविकाइया अपज्जत्तगाण, बायर आउकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर तेउकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर वाउकाइया अपज्जत्तगाणं, बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं. पत्तेयं सरीर बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं बायर निगोया अपज्जत्तगाणं, बायर तसकाइया अपज्जत्तगाणय,कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायर तसकाइया

अर्थ

सूक्ष्म तेउकाया, सूक्ष्म वायुकाया, सूक्ष्म वनस्पतिकाया, सूक्ष्म निगोद, बादर, बादर पृथ्वीकाया, बादर अपकाया, बादर तेउकाया, बादर वायुकाया, बादर वनस्पतिकाया, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया, बादर निगोद व बादर त्रसकाया, इन सोलह के अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे बादर त्रसकाया के अपर्याप्त २ उस से बादर तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने ३ उस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने ४ उस से बादर निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने ५ उस से बादर पृथ्वीकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने ६ उस से

* प्रकाशक-राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी *

सूत्र

पज्जत्तगा, बायर तसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर तेसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बादर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादर निगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादर पुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर आउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर वाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायर तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर निगोया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादर पुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर आउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर वाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर

अर्थ

असंख्यात गुने, ७ उस से बादर अपकाया के पर्याप्त असंख्यात गुने, ८ उस से बादर वायुकायाके पर्याप्त असंख्यात गुने, ९ उस से बादर तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने, १० उस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने, ११ उस से बादर निगोद के अपर्याप्त असंख्यात गुने, १२ उस से बादर पृथ्वीकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, १३ उस से बादर अपकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने, १४ उस से बादर वायुकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, १५ उस से बादर वनस्पतिकाया के पर्याप्त अनंतगुने, १६ उस से बादर के पर्याप्त विशेषाधिक, १७ उस से बादर वनस्पतिकाया के अपर्याप्त

मूल

बायरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम वणस्सइ काइया अपज्जत्तगा, असंखेज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा, विसेसाहिया ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम पज्जत्तयाणं सुहुम पुढविकाइया पज्जत्तगाणं सुहुम आउकाइया पज्जत्तयाणं सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगाणं सुहुम वाउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं, सुहुम निगोद पज्जत्तगाण, बायर पज्जत्तगाणं बायर पुढवीकाइय पज्जत्तगाणं, बायर आउकाइय पज्जत्तगाणं, बायर तेउकाइय अपज्जत्तगाणं, बायर वाउकाइय पज्जत्तगाणं बायर वणस्सइकाइय पज्जत्तगाण, पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइय पज्जत्तगाण, बायर निगोय पज्जत्तगाणं,

अर्थ

सूक्ष्मनिगोद, बादर, बादरपृथ्वीकाया, बादर अप्काया, बादर तेउकाया, बादर वायुकाया, बादर वनस्पतिकाया, प्रत्येक शरीरी [illegible] काया, बादर निगोद व बादर त्रसकाया इन सोलह के पर्याप्त में कौन किस से [illegible] विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे बादर [illegible] बादर त्रसकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ३ उस से प्रत्येक शरीरी बादर [illegible] असंख्यातगुने ४ उस से बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने ५ उस से बादर [illegible] उस से बादर अप्काया के पर्याप्त असंख्यातगुने ७ उस से बादर [illegible]

... ... विसेसाहिया, सुहुम वणस्सइ काइया अपज्जत्तगा, असंखेज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा, विसेसाहिया ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम पज्जत्तयाणं सुहुम पुढविकाइया पज्जत्तगाणं सुहुम आउकाइया पज्जत्तयाणं सुहुम तेउकाया पज्जत्तगाणं सुहुम वाउकाइया पज्जत्तयाणं सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं, सुहुम निगोद पज्जत्तगाणं, बायर पज्जत्तगाणं बायर पुढवीकाइय पज्जत्तगाणं, बायर आउकाइय पज्जत्तगाणं, बायर तेउकाइय अपज्जत्तगाणं, बायर वाउकाइय पज्जत्तगाणं बायर वणस्सइकाइय पज्जत्तगाणं, पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइय पज्जत्तगाणं, बायर निगोय पज्जत्तगाणं,

सूक्ष्मनिगोद, बादर, बादरपृथ्वीकाया, बादरअप्काया, बादर तेउकाया, बादर वायुकाया, बादर वनस्पतिकाया, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया, बादर निगोद व बादर त्रसकाया इन सोलह के पर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे बादर तेउकाया के पर्याप्त २ उस से बादर त्रसकाया के पर्याप्त असंख्यातगुन ३ उस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के पर्याप्त असंख्यातगुन ४ उस से बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने ५ उस से बादर पृथ्वीकाया के पर्याप्त असंख्यातगुन ६ उस से बादर अप्काया के पर्याप्त असंख्यातगुने ७ उस से बादर वायुकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ८ उस से सूक्ष्म तेउकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ९ उस से सूक्ष्म

अवगाहना बादर तेउकाइया अवगाहना असंखेज्जगुणा, पत्तेय सरीर बादर वणस्सइकाइया अवगाहना असंखेज्जगुणा, बादर निगोदा अवगाहना असंखेज्जगुणा, बादर पुढविकाइया अवगाहना असंखेज्जगुणा बादर आउकाइया अवगाहना असंखेज्जगुणा, बादर वाउकाइया, अवगाहना असंखेज्जगुणा, सुहुम तेउकाइया अवगाहना असंखेज्जगुणा, सुहुम पुढविकाइया अवगाहना विसेसाहिया, सुहुम आउकाइया अवगाहना विसेसाहिया, सुहुम वाउकाइया अवगाहना विसेसाहिया, सुहुम निगोया अवगाहना असंखेज्जगुणा, बादर वणस्सइकाइया अवगाहना अनंतगुणा,

बादर तेउकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, ७ उस से बादर वायुकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ८ उस से सूक्ष्म तेउकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ९ उस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया के पर्याप्त विशेषाधिक १० उस से सूक्ष्म अपकाया के पर्याप्त विशेषाधिक ११ उस से सूक्ष्म वायुकाया के पर्याप्त विशेषाधिक १२ उस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त असंख्यात गुने १३ उस से बादर वनस्पतिकाया के पर्याप्त अनन्त गुने १४ उस से बादर के पर्याप्त विशेषाधिक १५ उस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के पर्याप्त असंख्यात गुने और १६ उस से सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म पृथ्वीकाया, सूक्ष्म अपकाया, सूक्ष्म तेउकाया, सूक्ष्म

सूत्र

वायरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम वणस्सइ काइया अपज्जत्तगा, असंखेज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा, विसेसाहिया ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम पज्जत्तयाणं सुहुम पुढविकाइया पज्जत्तगाणं सुहुम आउकाइया पज्जत्तयाणं सुहुम तेउकाया पज्जत्तगाणं सुहुम वाउकाइया पज्जत्तयाणं सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं, सुहुम निगोद पज्जत्तगाणं, बायर पज्जत्तगाणं बायर पुढवीकाइय पज्जत्तगाणं, बायर आउकाइय पज्जत्तगाणं, बायर तेउकाइय अपज्जत्तगाणं, बायर वाउकाइय पज्जत्तगाणं बायर वणसइकाइय पज्जत्तगाणं, पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइय पज्जत्तगाण, बायर निगोय पज्जत्तगाणं,

अर्थ

सूक्ष्मनिगोद, बादर, बादरपृथ्वीकाया, बादर अपूकाया, बादर तेउकाया, बादर वायुकाया, बादर वनस्पतिकाया, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया, बादर निगोद व बादर त्रसकाया, इन सोलह के पर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे बादर तेउकाया के पर्याप्त १ उस से बादर त्रसकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने २ उस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ४ उस से बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने ५ उस से बादर पृथ्वीकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ६ उस से बादर अपूकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ७ उस से बादर वायुकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ८ उस से सूक्ष्म तेउकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ९ उस से सूक्ष्म

सूत्र

बायर अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम वणस्सइ काइया अपज्जत्तगा, असंखेज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा, विसेसाहिया ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम पज्जत्तयाणं सुहुम पुढविकाइया पज्जत्तगाणं सुहुम आउकाइया पज्जत्तयाणं सुहुम तेउकाया पज्जत्तगाणं सुहुम वाउकाइया पज्जत्तयाणं सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं, सुहुम निगोद पज्जत्तगाणं, बायर पज्जत्तगाणं बायर पुढविकाइय पज्जत्तगाणं, बायर आउकाइय पज्जत्तगाणं, बायर तेउकाइय अपज्जत्तगाणं, बायर वाउकाइय पज्जत्तगाणं बायर वणस्सइकाइय पज्जत्तगाणं, पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइय पज्जत्तगाणं, बायर निगोय पज्जत्तगाणं,

अर्थ

सूक्ष्मनिगोद बादर, बादरपृथ्वीकाया, बादर अप्काया, बादर तेउकाया, बादर वायुकाया, बादर वनस्पतिकाया, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया, बादर निगोद व बादर त्रसकाया. इन सोलह के पर्याप्त में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे बादर तेउकाया के पर्याप्त २ उस से बादर त्रसकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ३ उस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ४ उस से बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने ५ उस से बादर पृथ्वीकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ६ उस से बादर अप्काया के पर्याप्त असंख्यातगुने ७ उस से बादर वायुकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने ८ उस से बादर तेउकाया के पर्याप्त [illegible]

सूत्र

बायर तसकाइय पज्जत्तगाणय, कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसे-साहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया पज्जत्तगा, बायर तसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर निगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर पुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर आउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर वाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम तेउ-काइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम आउका-इया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम निगोया

अर्थ

पृथ्वीकाया के पर्याप्त विशेषाधिक १० उस से सूक्ष्म अप्काया के पर्याप्त विशेषाधिक ११ उस से सूक्ष्म वायुकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, १२ उस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने, १३ उस से बादर वनस्पतिकाया के पर्याप्त अनंतगुने १४ बादर के पर्याप्त विशेषाधिक १५ उस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, और १६ उस से सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक. अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म व बादर के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे बादर के पर्याप्त, उस से बादर के अपर्याप्त असंख्यातगुने, उस से सूक्ष्म के अपर्याप्त असंख्यातगुने और उस से सूक्ष्म के पर्याप्त संख्यातगुने. अहो भगवन् ! सूक्ष्म पृथ्वीकाया व बादर पृथ्वीकाया के

सूत्र

विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया पज्जत्तगा, बायरं तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम वाउकाइयाणं बायर वाउकाइयाणय पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायर वाउकाइया पज्जत्तगा बायर वाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सहुम वाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सहुम वाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ एएसिणं भंते ! सुहुम वणस्सइकाइयाणं, बादर वणस्सइकाइ-

अर्थ

बादर निगोद के अपर्याप्त असंख्यात गुने, उस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त असंख्यात गुने, उस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त संख्यात गुने ॥ अहो भगवन् ! १ सूक्ष्म २ सूक्ष्म पृथ्वीकाय ३ सूक्ष्म अपकाय, ४ सूक्ष्म तेउकाय, ५ सूक्ष्म वायुकाय, ६ सूक्ष्म वनस्पतिकाय, ७ सूक्ष्म निगोद, ८ बादर, ९ बादर पृथ्वी काय १० बादर अपकाय, ११ बादर तेउकाय, १२ बादर वायुकाय, १३ वनस्पतिकाय, १४ प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय १५ बादर निगोद १६ और बादर त्रसकाय इन १६ के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अ

सूत्र

तुल्ला वा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया पज्जत्तगा, बायर तसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेय सरीर बायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर निगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर पुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर आउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायर वाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर तेउकाइय अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेय सरीर बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायर निगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर पुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखे-

अर्थ

गुने, ७ बादर अपकाय के पर्याप्त असंख्यात गुने, ८ बादर वायुकाय के पर्याप्त असंख्यात गुने, १० प्रत्येक शरीर बादर वनस्पति के अपर्याप्त असंख्यात गुने, ११ बादर निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने, १२ बादर पृथ्वीकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुने, १३ बादर अपकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुने, १४ बादर वायुकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुने, १५ सूक्ष्म तेजस्काय के अपर्याप्त असंख्यात गुने, १६ सूक्ष्म पृथ्वीकाय के अपर्याप्त विशेषाधिक, १७ सूक्ष्म अपकाय के अपर्याप्त विशेषाधिक, १८ सूक्ष्म वायुकाय के अपर्याप्त विशेषाधिक, १९ सूक्ष्म तेजस्काय के अपर्याप्त असंख्यात गुने, २० सूक्ष्म पृथ्वी काया के पर्याप्त विशेषाधिक, २१ सूक्ष्म अपकाय के पर्याप्त विशेषाधिक, २२ सूक्ष्म वायुकाय के पर्याप्त

सूत्र

ज्जगुणा, बायर आउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर वाउकाइया अपज्ज-
त्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा, असंखेज्जगुणा, सुहुम पुढवि-
काइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम
वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुम
पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम वाउ-
काइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम निगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम निगोदा
पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, बायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा, बायरा पज्जत्तगा विसेसा-
हिया बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बायरा
विसेसाहिया, सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया,

अर्थ

विशेषाधिक, २३ सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त विशेषाधिक २४ सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त संख्यातगुने, २५
बादर वनस्पतिकाया के पर्याप्त अनंतगुने, २६ बादर के पर्याप्त विशेषाधिक, २७ बादर वनस्पति-
काया के पर्याप्त असंख्यातगुने २८ बादर के अपर्याप्त विशेषाधिक, २९ बादर विशेषाधिक, ३० सूक्ष्म
वनस्पतिकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, ३१ सूक्ष्म के अपर्याप्त विशेषाधिक ३२ सूक्ष्म वनस्पतिकाया
पर्याप्त संख्यातगुने, ३३ सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक, और ३४ सूक्ष्म विशेषाधिक ॥ इति चौथा

खेज्जगुणा, नोसंजया नोअसंजया नोसंजयासंजया अनंतगुणा, असंजया अनंतगुणा ॥ ३२ ॥ १२ ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं सागारोवउत्ताणं, अणागारोवउत्ताणय कयरं २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणागारोवउत्ता, सागारोवउत्ता संखेज्जगुणा ॥ ३३ ॥ १३ ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं आहारगाणं अणाहारगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणाहारगा, अहारगा असंखेज्जगुणा ॥ ३४

होते हैं. ३ उस से नोसंयती नो असंयति अनंतगुने, सिद्ध आश्रिय. और उस से असंयति अनंतगुने सर्व संसारी जीव आश्रिय ॥ इति बारवाद्वार ॥ ३२ ॥ तेरवा उपयोग द्वार अहो भगवन् ! इन साकार [ज्ञान] उपयोगी जीवों में और २ अनाकार (दर्शन) उपयोगी जीवों में कौन २ कमी ज्यादा तुल्य विशेष हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे जीव अनाकार उपयोगी हैं क्यों कि इस का काल थोडा है. उन से साकार बहुता संख्यात गुना. ॥ ३३ ॥ चौदवा आहारक द्वार-अहो भगवन् ! इन आहारक अनाहारक में कौन २ अल्प बहुत तुल्य विशेष हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे जीव अनाहारक क्यों कि रास्ते चलना केवल समुद्घात के मध्य में और अयोगीही सिद्ध यही अनाहारक हैं. उस मे आहारक असंख्यात गुना क्यों कि निगोदीये विग्रहगति समपन्न सदैव पाते हैं इसलिये यह असंख्यात गुने ही अधिक है,

सूत्र

२ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सण्णी, णोसण्णी णोअसण्णी अनंतगुणा, असण्णी अणंतगुणा ॥ ३९ ॥ १९ ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं भवसिद्धियाणय, अभवसिद्धियाणय, णोभवसिद्धिया णोअभवसिद्धियाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अभवसिद्धिया, णो भवसिद्धिया णो अभवसिद्धिया अणंतगुणा, भवसिद्धिया अणंतगुणा ॥ ४० ॥ २० ॥ एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकाय अहम्मत्थिकाय, आगा-

अर्थ

कि देवता नारकी और कितनेक तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य ही संज्ञी हैं, २ उन से नो संज्ञी नो असंज्ञी अनंत गुने सिद्ध आश्रिय, और ३ उन से असंज्ञी अनंत गुने वनस्पति आश्रिय ॥ ३९ ॥ बीसवा भव्य द्वार—अहो भगवन् ! भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक और नो भव्यसिद्धिक नो अभव्यसिद्धिक में कौन कमी ज्यादा तुल्य विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम! सब से थोडे अभव्यसिद्धिक जो कदापि मोक्ष नहीं जावे, उन से नो भव्य सिद्धिक नो अभव्य सिद्धिक अनंतगुने सिद्ध आश्रिय, और उन से भव्य सिद्धिक अनंतगुने एक निगोद के शरीर के जीवों के अनंत वे भाग सिद्ध हैं ॥ ४० ॥ इक्कीसवा अस्तिकाय द्वार—अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय

अर्थ

स्कन्ध कहे हैं. और उन में भी असंख्यात पुद्गल स्कन्ध अनंतगुने हैं. भगवती सूत्र में कहा है कि सर्व से थोडे प्रयोग प्रणित उन से मिश्र परिणत अनंतगुने और उन से विश्रसा प्रणित अनंतगुने. इस लिये जीव से पुद्गलों अनंतगुने हैं. ५ जीवास्ति से काल द्रव्य अनंतगुने क्यों कि त्रिकाल में द्रव्य तो एक रूप बना रहता है किन्तु काल का तो समय २ पलटा होता जाता है. तथा एक परमाणु का अनागत काल में यहां द्विप्रदेशिक यावत् संख्यात असंख्यात अनंत प्रदेशिक स्कन्धपने परिणमे उन के अनंत भाव के संयोग से अलग २ काल ऐसे अनंत मिलता है. यों जैसे एक परमाणु का काल अनंत होता है तैसे ही सबही का काल अनंत होता है. ऐसे ही गतकाल आश्रिय भी अनंत काल मिलता है. यों सब मनुष्य क्षेत्र के प्रवृत्ति उस के परिणाम का अनंत काल संभवता है, तथा क्षेत्र से यही परमाणु यही आकाश में इस काल में अवगाह कर रहे वह काल भी क्षेत्र से अनंत होता है, अर्थात् एकेक परमाणु एकेक आकाश प्रदेश की भावना करते ही अनंत होता है. ऐसे द्विप्रदेशिक यावत् अनंत प्रदेशिक का अलग २ अवगाहना भेद कर भिन्न २ काल करते अनंत काल का संयोग का भाव का संभव होता है. काल से इस ही परमाणु की आकाश प्रदेश में एक समय की स्थिति दो समय की स्थिति, इत्यादि अनेक स्थिति काल होता है. ऐसे ही सर्व आकाश प्रदेश आश्रिय असंख्यात भावना संयोग से होवे, इसलिये आकाश प्रदेश का परावर्तन भी काल से अनंत है. ऐसे ही भाव से भी एक परमाणु की तरह सर्व परमाणुओं को अलग २ द्विप्रदेशकादि स्कन्ध का भी काल द्रव्य अनंत होता है. तथा भाव से यही परमाणु इस ही

सूत्र

यरस दव्वट्टयाए पएसट्टयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगेअधम्मात्थिकाए दव्वट्टयाए, सोचेव पएसट्टयाए असंखिज्जगुणे॥ एतस्सणं भंते ! आगासत्थिकायस्स दव्वट्ठपएसट्टयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगेआगासात्थिकाए दव्वट्टयाए, सोचेव पएसट्टयाए अनंतगुणे ॥ एएसिणं भंते ! जीवत्थिकायस्स दव्वट्ठपएसट्टयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए दव्वट्टयाए, सोचेव पएसट्टयाए असंखेज्जगुणे, एतेसिणं भंते ! पोग्ग-

अर्थ

प्रदेशार्थपने अनंतगुने हैं. क्यों कि एक जीव के सर्व आत्मप्रदेश अनंतानंत कर्म प्रमाणुओं कर वेष्टित वेष्टितकर वेष्टित हैं ऐसे ही अनंत जीवों के प्रदेश अनंतानंत कर्म प्रमाणुओंकर वेष्टित जानना ! इस से अद्धासमय प्रदेशार्थपने अनंत गुना है. क्यों कि एकेक पुद्गलास्तिकाय के प्रदेश द्रव्य से क्षेत्र से काल से भाव से अतीत वर्तमान अनागत काल आश्रिय पूर्वोक्त प्रकार अनंत २ काल की परावर्त हो रहा है. और इस से आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थपने अनंतगुने, क्यों कि अलोक आकाश सब से अनंतगुना अधिक है ॥ अहो भगवन्! धर्मास्तिकाय द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने कौन २ से अल्प बहुत तुल्य व विशेष है ?

सूत्र

यस्स दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए कयरे२हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगेअधम्मात्थिकाए दव्वट्ठयाए,सोचेव पएसट्ठयाए असंखिज्जगुणे॥ एतस्सणं भंते ! आगासत्थिकायस्स दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहु-यावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगेआगासात्थिकाए दव्वट्ठयाए, सोचेव पएसट्ठयाए अनंतगुणे ॥ एएसिणं भंते ! जीवत्थिकायस्स दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए, सोचेव पएसट्ठयाए असंखज्जगुणे, एतेसिणं भंते ! पोग्ग-

अर्थ

प्रदेशार्थपने अनंतगुने हैं. क्यों कि एक जीव के सर्व आत्मप्रदेश अनंतानंत कर्म प्रमाणुओं कर अवेष्टित प्रवेष्टितकर वेष्टित हैं. ऐसे ही अनंत जीवों के प्रदेश अनंतानंत कर्म प्रमाणुओंकर वेष्टित जानना ! इस से अद्धासमय प्रदेशार्थपने अनंत गुना है. क्यों कि एकेक पुद्गलास्तिकाय के प्रदेश द्रव्य से क्षेत्र से काल से भाव से अतीत वर्तमान अनागत काल आश्रिय पूर्वोक्त प्रकार अनंत २ काल की परावर्त हो रहा है. और इस से आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थपने अनंतगुने, क्यों कि अलोक आकाश सब से अनंतगुना अधिक है ॥ अहो भगवन्! धर्मास्तिकाय द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने कौन२ से अल्प बहुत तुल्य व विशेष है ?

सूत्र

कय पोग्गलत्थिकाय अद्धासमयाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अहम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एएतिण्णिवितुल्ला दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए अहम्मत्थिकाएपएसट्ठयाएदोण्णवि तुल्ला पएसट्ठयाए,असंखेज्जगुणा जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे,सोचेव पएसट्ठयाए असं-

अर्थ

स्कन्ध है उन से प्रमाणुओं असंख्यात गुने हैं ॥ और काल द्रव्य आश्रिय द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ का प्रश्न नहीं करना क्योंकि काल द्रव्य है परंतु प्रदेश नहीं है. क्योंकि जैसे प्रमाणुओं मिलकर स्कन्ध बनता है. और बिछर कर प्रमाणु होजाता है तैसे काल द्रव्य के समय, गत काल के आगमिक काल के मिलते नहीं हैं, समयका मिलना असंभव है इसलिये समयका स्कन्ध नहीं होताहै इसलिये अद्धासमय(काल)के प्रदेश नहीं हैं. किन्तु पृथक् २ समय रूप द्रव्य है. अहो, भगवन् ! धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और अद्धासमय. यह छ ही द्रव्य द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने कौन २ से कमी ज्यादा तुल्य विशेष है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय यह तीनों द्रव्यार्थपने तो तुल्य हैं क्यों कि तीनों का एक ही अखण्ड द्रव्य है. और आगे तीनों द्रव्य से थोडे हैं. तथा धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय दोनों प्रदेशार्थपने तुल्य हैं. क्यों कि दोनों के प्रदेश लोक प्रमान हैं, धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय के द्रव्य से असंख्यातगुने अधिक हैं. क्यों कि

सूत्र

लत्थिकायस्स दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्ग-
लत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, अद्धासमए न पुच्छिज्जइ
पएसाभावा ॥ एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकाय अहम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थि-

अर्थ

अहो गौतम ! सर्व से थोडी एक धर्मास्तिकाय द्रव्यार्थ कर क्यों कि एक ही अखंड द्रव्य है, उस से प्रदेशार्थपने असंख्यात गुनी क्यों कि सर्व लोक व्यापक असंख्यात प्रदेशमय है ॥ अहो भगवन् ! अधर्मास्तिकाया द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने कौन २ से अल्प बहुत तुल्य विशेष है? अहो गौतम ! सब से थोडी अधर्मास्ति द्रव्यार्थ है क्योंकि एकही द्रव्य है, उससे प्रदेशार्थपने असंख्यात गुनी क्योंकि लोक व्यापी असंख्यात प्रदेश है ॥ अहो भगवन् ! आकाशास्तिकाय द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने कौन २ से कमी ज्यादा तुल्य विशेष है? अहो गौतम ! सब से थोडी आकाशास्ति द्रव्यार्थपने क्योंकि अखण्ड एकही द्रव्य है, उस प्रदेशार्थपने अनंत है क्योंकि लोकालोक व्यापक है ॥ अहो भगवन्! जीवास्तिकाय द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने कौन २ से अल्प ज्यादा तुल्य विशेष है ! अहो गौतम ! सब से थोडे जीवों द्रव्यार्थ है, क्यों कि अलग २ जीव द्रव्य अनंत है, और उस से प्रदेशार्थपने असंख्यात गुने है, क्यों कि एकेक जीव के असंख्यात २ प्रदेश है ॥ अहो भगवन् ! पुद्गलास्तिकाय द्रव्यार्थ पने प्रदेशार्थ पने कौन २ से कमी ज्यादा तुल्य विशेष है ! अहो गौतम ! सब से थोडी पुद्गलास्तिकाय द्रव्यार्थपने उस से प्रदेशार्थपने असंख्यात गुनी, क्यों कि सब से थोडे अनंत प्रदेश

मूल

चरिमा अणंतगुणा ॥ ४२ ॥२२॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं पोग्गलाणं अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं, सव्वपएसाणं, सव्वपज्जवाणय, कयरे२ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा, पोग्गला अणंतगुणा, अद्धासमया अणंतगुणा, सव्वदव्वा विसेसाहिय', सव्वपएसा अणंतगुणा, सव्वपज्जवा अणंतगुणा ॥ ४३ ॥ २३ ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा-उड्ढलोए तिरिएलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तिलुके असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखे-

अर्थ

अनंतगुने अल्प और अनंतगुन है ॥ ४२ ॥ तेवीसवा पुद्गल द्वार—अहो भगवन् ! १ जीव, २ पुद्गल, ३ अद्धासमय, ४ सर्वद्रव्य, ५ सर्व प्रदेश, और ६ सर्व पर्याय इन में कौन २ से थोडे ज्यादा तुल्य विशेष है ? अहो गौतम ! सब से थोडे जीव है, २ उस से पुद्गल अनंतगुने, ३ उस से अद्धासमय (काल) अनंतगुना, ४ उस से सर्व द्रव्य विशेषाधिक, इस में छही द्रव्य समागये, ५ उस से सर्व प्रदेश अनंतगुना आकाश आश्रिय, ६ उस से सर्व पर्याय अनंतगुना क्योंकि एकेक आकाश प्रदेशपर अनंत अगुरुलघुपर्याय है ॥ इति ॥ ४३ ॥ चौवीसवा क्षेत्रद्वार-क्षेत्र आश्रिय-समुच्चय जीव सब से थोडे ऊर्ध्वलोक में तिर्छे लोक में अर्थात् उर्द्धलोक से तिर्यक लोक में उत्पन्न होते तथा तिर्यक लोक से उर्द्धलोक में उत्पन्न होते दोनो

सूत्र

लत्थिकायस्स दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे२हिंतो अप्पावा४? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्ग-
लत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, अद्धासमए न पुच्छिज्जइ !
पएसाभावा ॥ एएसिणं भंते! धम्मत्थिकाय अहम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थि-

अर्थ

अहो गौतम ! सर्व से थोडी एक धर्मास्तिकाय द्रव्यार्थ कर क्यों कि एक ही अखंड द्रव्य है. उस से प्रदेशार्थपने असंख्यात गुनी क्यों कि सर्व लोक व्यापक असंख्यात प्रदेशमय है ॥ अहो भगवन् ! अधर्मा-स्तिकाया द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने कौन२से अल्प बहुत तुल्य विशेष है! अहो गौतम ! सब से थोडी अधर्मास्ति द्रव्यार्थ है क्योंकि एकही द्रव्य है, उससे प्रदेशार्थपने असंख्यात गुनी क्योंकि लोक व्यापी असंख्यात प्रदेश है॥ अहो भगवन ! आकाशास्तिकाय द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने कौन२से कमी ज्यादा तुल्य विशेष है? अहो गौतम ! सब से थोडी आकाशास्ति द्रव्यार्थपने क्योंकि अखण्ड एकही द्रव्य है. उस प्रदेशार्थपने अनंत है क्योंकि लोकालोक व्यापक है ॥ अहो भगवन्! जीवास्तिकाय द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने कौन२से अल्प ज्यादा तुल्य विशेष है ! अहो गौतम ! सब से थोडे जीवों द्रव्यार्थ हैं. क्यों कि अलग २ जीव द्रव्य अनंत हैं. और उस से प्रदेशार्थपने असंख्यात गुन हैं, क्यों कि एकक जीव के असंख्यात २ प्रदेश हैं ॥ अहो भगवन् ! पुद्गलास्तिकाय द्रव्यार्थ पन प्रदेशार्थ पने कौन २ से कमी ज्यादा तुल्य विशेष है ! अहो गौतम ! सब से थोडी पुद्गलास्तिकाय द्रव्यार्थपने उस से प्रदेशार्थपने असंख्यात गुनी, क्यों कि सब से थोडे अनंत प्रदेश

सूत्र

खेज्जगुणं पोग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे, सोचेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, अद्धासमए दव्वट्ठपएसट्ठयाए अणंतगुणे, आगासत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणे ॥ ४१ ॥ २१ ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं चरिमाणं अचरिमाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा,

अर्थ

यह दोनों असंख्यात प्रदेशात्मक हैं. इस से जीवास्तिकाय द्रव्यार्थपने अनंतगुने क्यों कि अनंत जीव हैं. इस से यही जीवास्तिकाय प्रदेशार्थपने असंख्यातगुने अधिक हैं. क्यों कि एकेक जीव के असंख्यात २ प्रदेश हैं, इस से पुद्गलास्तिकाय द्रव्यार्थपने अनंतगुने क्यों कि जीव के एकेक प्रदेश पर कर्मों के अनंत स्कन्ध लगे हैं. यही पुद्गलास्तिकाय इस से प्रदेशार्थ असंख्यातगुने हैं क्यों कि अनंत प्रदेशिक स्कन्ध से सब पुद्गल असंख्यातगुने हैं. इस से अद्धा समय (काल) द्रव्यार्थपने और प्रदेशार्थपने अनंतगुने हैं क्यों कि पुद्गल द्रव्यादि चारों आश्रित अतीतादि तीनों काल के प्रवर्ती समय २ हो रही है. इस से आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थपने अनंतगुने. क्यों कि आकाश के प्रदेश लोक और अनंत अलोक में व्यापक है ॥ इति इक्कीसवा द्वार ॥ ४१ ॥ बावीसवा चरमाचरम द्वार—अहो भगवन् ! जीवों चरिम में और अचरिम में कौन २ से कमी ज्यादा तुल्य व विशेष हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे अचरिम. क्यों कि अभव्य जीव और सिद्ध भगवंत मिलकर पांचवे अनंतमान हैं. उस से इतने

दूवे तिर्यंच मरकर नरक में उत्पन्न होवे उस आश्रिय, २ उस से अधोलोकतिर्यक् लोकवाले असंख्यात गुने क्योंकि तिर्यक्लोक से नरक में होने वाले बहुत हैं, ३ उस से अधोलोक में असंख्यात गुने क्योंकि नरकका स्वस्थान ही है ॥ सबके उत्पात आश्रिय तिर्यंच योनिक जीव सबसे थोडे ऊर्ध्व लोक तिर्यक् लोक उस से नीचे लोक तिर्च्छे लोक के विशेषाधिक क्यों कि नीचा लोक ज्यादा है, उस से तिर्च्छे लोक के असंख्यातगुने क्यों कि क्षेत्र अधिक है. उस से तीनों लोक के असंख्यातगुने क्यों कि अधोलोक से ऊर्ध्व लोक में विग्रहगति में उत्पन्न होने तीनों लोक स्पर्शे, उस से ऊर्ध्व लोक के असंख्यातगुने. और क्षेत्र भी असंख्यातगुना है उससे अधोलोक में विशेषाधिक हैं क्योंकि ऊर्ध्वलोकसे अधोलोक अधिक है॥ क्षेत्र में उत्पत्ति आश्रिय सब से थोडी तिर्यंचणियों ऊर्ध्व लोक में क्योंकि मेरु अंजनगिरी दधिमुख पर्वतकी बावडी में उत्पन्न होने आश्रिय. २ उससे ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक में असंख्यातगुनी क्योंकि ऊर्ध्व लोकसे तिर्च्छेलोक में उत्पन्न होवे दोनों लोक का क्षेत्र स्पर्शे ३ उस से त्रिलोक में असंख्यातगुनी ऊर्ध्वलोक से अधोलोक में उत्पन्न होवे उस से अधो लोक में असंख्यातगुनी अधोगामिनी विजय तथा समुद्र के तल आश्रिय, उस से तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुनी स्वस्थान आश्रिय. क्षेत्र में उत्पत्ति आश्रिय सब से थोडे मनुष्य तीन लोक स्पर्श-नेवाले क्योंकि ऊर्ध्व लोक से अधोगामिनी विजय में उत्पन्न होनेवाले तथा वैक्रेय समुद्घात करते, आहारक समुद्घात अथवा केवल समुद्घात करते आत्म प्रदेश कर तीनों लोक स्पर्श इस आश्रिय. उस से ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने क्यों कि वैमानिक देवादिक मनुष्य में उत्पन्न होवे, तथा चारण मु-

मूल

लोए असंखेज्जगुणाओ ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वेमाणियादेवा उड्डुलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेज्जगुणा, अहोलोय तिरियलोए संखेज्जगुणा, अहो लोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्डुलोए असंखेज्जगुणा ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ वेमाणिणाओ देवीओ उड्डुलोयतिरियलोए, तेलुक्के संखेज्जगुणाओ, अहोलोय तिरियलोए संखेज्जगुणाओ, अहोलोए संखेज्जगुणाओ, तिरियलोए संखेज्जगुणाओ, उड्डुलोए असंखेज्जगुणाओ ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा उड्डुलोयतिरियलोए,

अर्थ

उत्पन्न होते स्वस्थान स्पर्शते जाते इस आश्रिय, उससे तीनलोक में संख्यातगुने, वैक्रेय समुद्घात आश्रिय उस से अधोलोक तिर्च्छे लोक में संख्यातगुने. अधोगामिनी विजय में समवसरणादि अर्थ आते हुवे, उससे अधो लोक में संख्यातगुने अधोगामिनी विजय में ठहरने आश्रिय, उस से तिर्च्छे लोक में संख्यातगुने. समवसरन गमन आश्रिय, उससे ऊर्ध्वलोक में असंख्यातगुने स्वस्थान आश्रिय॥ क्षेत्रोपाति आश्रिय वैमानिक देवी सब से थोडी ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक में उस से तीनों लोक में संख्यात गुनी, उस से अधोलोक तिर्च्छे लोक में संख्यातगुनी, उस से अधोलोक में संख्यात गुनी, उससे तिर्च्छेलोक में संख्यातगुनी, उससे ऊर्ध्वलोक में असंख्यात गुनी, स्वस्थान आश्रिय ॥ क्षेत्रोपाति आश्रिय सब से थोडे एकेन्द्रिय ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक

सव्वत्थोवाओ देवीओ उड्ढलोए, उड्ढलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तेलुक्के संखेज्जगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, अहोलोए संखेज्जगुणाओ, तिरियलोए संखेज्जगुणाओ ॥ भवणवासीणं सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा उड्ढलोए, उड्ढलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के संखेज्जगुणा, अहोलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा तिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए असंखेज्जगुणा, ॥ भवणवासिणी-सव्वत्थोवाओ

अर्थ

तिर्च्छे लोकमें संख्यातगुनी ज्योतिषी की देवीयोंके आवागमन आश्रिय. तथा व्यन्तरीयों मेरु पर्वत पर जावे उस आश्रिय. उस से त्रिलोक में संख्यातगुनी वैक्रिय समुद्धात करने आश्रिय, उस से अधोलोक तिर्यक लोक में संख्यातगुनी व्यन्तरीयों का गमन आश्रिय, उससे अधोलोक में संख्यातगुने भवनपतिकी देवियों के स्वस्थान आश्रिय, उस से तीर्च्छे लोक में असंख्यातगुनी व्यन्तरी ज्योतिषी के स्वस्थान आश्रिय, इस आश्रिय भवनपति देवता सब से थोडे ऊर्ध्व लोक में क्यों कि तीर्थंकर के जन्माभिषेक पर मेरु पर जाने आश्रिय तथा कदाचित सौधर्म स्वर्ग तक जावे उस आश्रिय. उस से ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने क्यों कि तिर्च्छे लोक में रहे वैक्रिय समुद्धात करते ऊर्ध्व लोक का भी स्पर्शन करते हैं, तथा तिर्च्छे लोक के देवता आयुष्य पूर्ण कर ऊंचे लोक में बादर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते मेरु पर वनस्पति में उत्पन्न होवे मारणांतिक समुद्धात कर स्पर्शने आश्रिय, उस से तीनों लोक में असंख्यातगुने वैक्रिय

सूत्र

साहिया, ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, तेलुक्के

अर्थ

क्षेत्रोत्पत्ति आश्रिय भी बेइन्द्रिय सबसे थोडे उर्ध्वलोकमें मेरुपर्वतादिकी बावडीआदि में है. उर्ध्वलोक तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने, उर्ध्वलोक से तिर्च्छेलोक में उत्पन्न होते स्पर्शन आश्रिय, तीन लोक में असंख्यातगुने मरणांतिक समुद्घातकर आत्मप्रदेश से तीनोंलोक स्पर्शे, अधोलोक तिर्च्छेलोक में असंख्यातगुने समुद्रादि दोनों लोक स्पर्शे हैं उस स्थान उत्पन्न होने आश्रिय, उस से अधोलोक में संख्यातगुने अधोगामिनी विजय में उत्पन्न होवे उस आश्रिय, और उस से तिर्च्छे लोक में संख्यातगुने स्वस्थान आश्रिय ॥ क्षेत्रोत्पत्ति आश्रिय बेइन्द्रिय के अपर्याप्त सब से थोडे उर्ध्वलोक में, उर्ध्वलोक तिर्च्छे लोक में संख्यातगुने, उस से त्रिलोक में असंख्यातगुने, उस से अधोलोक तिर्च्छे लोक में असंख्यात

सूत्र

तिरियलोए संखेज्जगुणा ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा उड्ढलोए, उड्ढलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा, ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा

अर्थ

मे असंख्यातगुने, तीनों लोक में असंख्यातगुने, अधोलोक तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने, अधोलोक में संख्यात गुने और तिर्च्छेलोक में संख्यातगुने ॥ क्षेत्र से आश्रिय सब से थोडे तेइन्द्रिय के पर्याप्त ऊर्ध्व लोक में ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने, तीनलोक में असंख्यातगुने, अधोलोक तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने, अधोलोक में संख्यातगुने और तिर्च्छे लोक में संख्यातगुने, ॥ क्षेत्र से आश्रिय चौरिन्द्रिय सब से थोडे ऊर्ध्व लोक में ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने, तीनों लोक में असंख्यातगुने, अधोलोक तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने, अधोलोक में संख्यात गुने और तिर्च्छे लोक में संख्यातगुने, ॥ क्षेत्र से आश्रिय चौरिन्द्रिय के अपर्याप्त सब से थोडे ऊर्ध्व लोक में, ऊर्ध्व लोक

अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसे-

में तीनलोक से ऊर्ध्व लोक में और ऊर्ध्व लोक से तिर्च्छे लोक में उत्पन्न होने कितनेक मध्य प्रतर में पाते हैं. उस से अधोलोक तिर्च्छे लोक में विशेषाधिक क्योंकि ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक से अधोलोक तिर्यक् की प्रतर बडी है, उस से तिर्च्छे लोक में असंख्यात गुने उत्पाति के स्थान अधिक हैं इन आश्रिय उस से त्रिलोक में असंख्यात गुने क्यों कि उपर से नीचे नीचे से उपर उत्पन्न होते असंख्यात पाते हैं, उस से ऊर्ध्व लोक में असंख्यात गुने उत्पन्न होने के क्षेत्र असंख्यात हैं उस से अधोलोक में विशेषाधिक क्यों कि ऊर्ध्व लोक से अधोलोक का क्षेत्र सात राजू से अधिक है इस आश्रिय ॥ क्षेत्रोत्पत्ति आश्रिय एकेन्द्रिय के अपर्याप्त सब थोडे ऊर्ध्व लोक तिर्यक लोकमें, उस से अधोलोक तिर्यक लोक में विशेषाधिक तिर्च्छे लोकमें असंख्यातगुने, तीनोंलोकमें असंख्यातगुने, ऊर्ध्वलोकमें असंख्यातगुने अधोलोकमें विशेषाधिक क्षेत्रोत्पत्ति आश्रिय एकेन्द्रिय के पर्याप्त सबसे थोडे ऊर्ध्वलोक तिर्च्छे में, अधोलोक तिर्च्छे लोकमें विशेषाधिक. तिर्च्छेलोकमें असंख्यातगुने, तीनों लोकमें असंख्यातगुने, ऊर्ध्वलोकमें असंख्यातगुने, अधोलोक में विशेषाधिक.

सूत्र

ज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोय तिरियलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए, विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढवीकाइया अपज्जत्तगा उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसा-

अर्थ

तिर्छे लोकमें संख्यातगुने. क्षेत्रोत्पत्ति आश्रिय पंचेन्द्रियके पर्याप्त उर्ध्वलोकमें, उर्ध्वलोक तिरछे लोक में असंख्यातगुने, तीनों लोक में असंख्यातगुने, अधोलोक तिरछेलोक में संख्यातगुने, अधोलोक में संख्यातगुने, और तिरछेलोकमें असंख्यातगुने क्षेत्रोत्पत्ति आश्रिय आश्रिय-सब से थोडे पृथ्वीकाय उर्ध्वलोक तिरछेलोकमें, अधोलोक, तिरछेलोक में विशेषाधिक, तिरछेलोक में असंख्यातगुने, तीन लोक में असंख्यातगुने, उर्ध्वलोक में असंख्यातगुने, और अधोलोक में विशेषाधिक ॥ क्षेत्रोत्पति आश्रिय पृथ्वीकाया के अपर्याप्त सब से थोडे उर्ध्वलोक तिरछेलोक में, अधोलोक तिरछेलोक में विशेषाधिक, तिरछेलोक में असंख्यातगुने, - तीनों

अहोलोए विसेसाहिया ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तगा उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा,

अर्थ

[illegible] ऊर्ध्व लोक तिर्छा लोक में, अधो लोक तिर्छा लोक में विशेषाधिक, तिर्छे लोक में असंख्यातगुने, तीनों लोक में असंख्यातगुने, ऊर्ध्व लोक में असंख्यातगुने, अधोलोक में विशेषाधिक [illegible] तेउकाया के अपर्याप्त सब से थोडे ऊर्ध्व लोक व तिर्छा लोक में, अधो लोक तिर्छा लोक में विशेषाधिक, तिर्छे लोक में असंख्यातगुने, तीनों लोक में असंख्यातगुने, ऊर्ध्व लोक में असंख्यातगुने, और अधो लोक में विशेषाधिक (सूक्ष्म बादर) क्षेत्रा- [illegible] सब से थोडे ऊर्ध्व लोक तिर्छा लोक में, अधो लोक तिर्छा लोक में

पज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्ज-
गुणा, अहोलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखे-
ज्जगुणा, ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया तेलुक्के, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्ज-
गुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा;
तिरियलोए असंखेज्जगुणा, ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तगा तेलुक्के
उड्ढलोय तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोय तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखे-

तिर्च्छेलोकमें असंख्यातगुने, तीनों लोकमें असंख्यातगुने तिर्च्छेलोकमें अधोलोकमें असंख्यातगुने अधोलोक में
संख्यातगुने, और तिर्च्छे लोक में संख्यातगुने, जैसे चतुरेन्द्रिय अपर्याप्त का कहा वैसे ही पर्याप्त का जानना.
क्षेत्रानुपात आश्रिय पंचेन्द्रिय सब से थोडे तीनों लोक में क्यों कि ऊर्ध्व अधो तिर्च्छे लोक में परस्पर
उत्पन्न होते पावे तथा समुद्घात करते पावे. ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने उत्पात समय समुद्घात
समय में स्पर्शे उस आश्रिय अधोलोक तिर्च्छे लोक में संख्यातगुने क्यों कि ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक
प्रतर में अधोलोक तिर्च्छे लोककी प्रतर अधिक है ऊर्ध्व लोक में संख्यातगुने वैमानिक का स्वस्थान है, अधो
लोक में संख्यातगुने यहां नारकी भवनपति का स्वस्थान है, और उससे तिर्च्छे लोकमें असंख्यातगुने व्यन्तर ज्योतिषी
मनुष्य तिर्यंच का स्वस्थान है क्षेत्रानुपात आश्रिय पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त सब से थोडे तीन लोकमें, ऊर्ध्वलोक तिर्च्छे
लोकमें असंख्यातगुने. अधोलोक तिर्च्छेलोक में संख्यातगुने, ऊर्ध्वलोक में संख्यातगुने, अधोलोक में संख्यातगुने,

अहोलोए विसेसाहिया ॥ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तगा उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा,

थिक ऐसे ही अप्काय कायिक पर्याप्त सब से थोडे ऊर्ध्व लोक तिर्छे लोक में, अधो लोक तिर्छे लोक में विशेषाधिक, तिर्छे लोक में असंख्यातगुने, तीनों लोक में असंख्यातगुने, ऊर्ध्व लोक में असंख्यातगुने, अधोलोक में विशेषाधिक. ऐसे तेउ कायिक तेउकाय के अपर्याप्त सब से थोडे ऊर्ध्व लोक व तिर्छे लोक में, अधो लोक तिर्छे लोक में विशेषाधिक, तिर्छे लोक में असंख्यातगुने, तीनों लोक में असंख्यातगुने, ऊर्ध्व लोक में असंख्यातगुने, और अधो लोक में विशेषाधिक (सूक्ष्म कायिक) अग्नि-काय कायिक पर्याप्त के सब से थोडे ऊर्ध्व लोक तिर्छे लोक में, अधो लोक तिर्छे लोक में

हिया ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तगा उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोय तिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तगा उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा

लोक में असंख्यातगुने, ऊर्ध्वलोक में असंख्यातगुने, और अधोलोक में विशेषाधिक ॥ क्षेत्रोत्पत्ति आश्रित अप्काय के पर्याप्त ऊर्ध्वलोक तिर्यग्लोक में, अधोलोक-तिर्यग्लोक में विशेषाधिक, तिर्यग्लोक में असंख्यातगुने, तीनों लोक में असंख्यातगुने, ऊर्ध्वलोक में असंख्यातगुने, और अधोलोक में विशेषाधिक ॥ क्षेत्रोत्पत्ति आश्रित अप्काय के पर्याप्त सब से थोडे ऊर्ध्वलोक तिरछे लोक में, अधोलोक तिरछे लोक में विशेषाधिक, तिरछेलोक में असंख्यातगुने तीनों लोक में असंख्यातगुने, ऊर्ध्व लोक में असंख्यातगुने, और अधो लोक में विशेषा-

...गुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ खित्ताणुवाएणं
सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तगा, उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसे-
साहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा,
अहोलोए विसेसाहिया ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइ काइया
उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखे-
ज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा
वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया

अर्थ

क्षेत्रापेक्षा आश्रिय वायुकाय के पर्याप्त सब से थोडे, ऊर्ध्वलोक तिरछे लोक में, अधोलोक तिरछे लोक में विशेषाधिक, तिरछे लोक में असंख्यातगुने, तीनों लोक में असंख्यात गुने ऊर्ध्वलोक में असंख्यातगुने, अधोलोक में विशेषाधिक ॥ क्षेत्रापेक्षा आश्रिय वनस्पतिकाय सब से थोडी ऊर्ध्वलोक तिरछे लोक में, अधोलोक तिरछे लोक में विशेषाधिक, तिरछे लोक में असंख्यातगुनी, तीनों लोक में असंख्यातगुनी, ऊर्ध्वलोक में असंख्यातगुनी, और अधोलोक में विशेषाधिक ॥ क्षेत्रापेक्षा आश्रिय वनस्पतिकाया अपर्याप्त सब से थोडी ऊर्ध्व लोक तिरछे लोक में, अधोलोक तिरछे लोक में विशेषाधिक तिरछे लोक में...

उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तगा उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया, ॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोय तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तगा उड्ढलोय, तिरियलोए, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के

विशेषाधिक तिर्च्छे लोक में असंख्यात गुना तीनों लोक में असंख्यातगुना, ऊर्ध्व लोक में असंख्यात गुना और अधो लोक में विशेषाधिक ॥ क्षेत्रापेक्षा आश्रिय सब से थोडे वायुकाय ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक में अधो लोक तिर्च्छे लोक में असंख्यात गुनी, ऊर्ध्व लोक में असंख्यात गुनी, तीनों लोक में असंख्यातगुने, ऊर्ध्व लोक में असंख्यातगुने, और अधोलोक में विशेषाधिक (पोलार बहुत है) ॥ क्षेत्रापेक्षा आश्रिय वायुकाय के अपर्याप्त सब से थोडे ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक में, अधोलोक तिर्च्छे लोक में विशेषाधिक, तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुना तीनों लोक में असंख्यातगुना ऊर्ध्वलोक में असंख्यातगुना, और अधोलोक में विशेषाधिक ॥

गेयज्ञगुणा,अहोलोयतिरियलोए संखेज्ञगुणा,उड्ढलोए संखिज्ञगुणा अहोलोए संखेज्ञगुणा, तिरियलोए असंखेज्ञगुणा॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तेलुक्के उड्ढलोय तिरियलोए असंखेज्ञगुणा, अहोलोय तिरियलोए संखेज्ञगुणा उड्ढलोए संखेज्ञगुणा, अहोलोए संखेज्ञगुणा, तिरियलोए असंखेज्ञगुणा, ॥ ४४ ॥ एएसिणं भंते ! जीवाण आउयकम्मस्स बंधगाण अबंधगाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं, सुत्ताणं, जागराणं,

अर्थ

अपर्याप्त सब से थोडा तीनों लोक में, ऊर्ध्व लोक तीर्च्छे में असंख्यातगुना, अधोलोक तिर्च्छे लोक में संख्यातगुने, ऊर्ध्वलोक में संख्यातगुने अधोलोक में संख्यातगुने और तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने क्षेत्रोत्पत्ति आश्रिय त्रसकाया के पर्याप्त सब से थोडे लोक में, ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने, अधोलोक तीर्च्छे लोक में संख्यातगुने, ऊर्ध्वलोक में विशेषाधिक अधो लोक में संख्यातगुने तिर्च्छे लोक में असंख्यातगुने ॥ इति ॥ ४४ ॥ पच्चीसवा बंध द्वार—अहो भगवन् ! १ आयुष्य कर्म का बंधक, २ आयुष्य का अबंधक, ३ पर्याप्त, ४ अपर्याप्त, ५ सोते, ६ जागते, ७ समवहत-समुद्घातक, ८ असमवहत-समुद्घात रहित, ९ साता वेदनीय, १० असाता वेदनीय, ११ इन्द्रिय बहुल, १२ नो इन्द्रिय बहुल, १३ साकार उपयोगी और १४ अनाकार उपयोगी. इन में कौन २ थोडे ज्यादा तुल्य विशेषाधिक है ! अहो गौतम ! सब से थोडे जीव आयुष्य कर्म के बन्धक, क्यों कि आयुष्य बन्ध काल थोडा है, २ उन से अपर्याप्त असंख्यातगुने, क्यों कि आयुष्य बन्ध से अप-

सूत्र

संखेज्जगुणा, सुत्तासंखेज्जगुणा, समोहया संखेज्जगुणा, सातावेदगा संखेज्जगुणा इंदिओवउत्ता संखेज्जगुणा, अणागारोवउत्ता संखेज्जगुणा, सागारोवउत्ता संखेज्ज-

अर्थ

संख्यातगुने, क्यों कि-सर्व संख्यात वर्षायु वाले जीवों वर्तमान भव के आयुके तीसरे नववे सत्तावीसवे इक्यासी व दोसो तेंतालीस वे भाग में आयुबन्ध करते हैं इसलिये बन्ध का काल थोडा है और अबंधकाल अधिक है. तथा संसार में सब से छोटा काल २५६ आवलिका का होता है उस में एक आवलि का आयुर्बन्ध काल की और २५५ आवलिका अबंध काल की इसलिये भी बंध काल से अबंध काल अधिक है॥१॥सर्व से थोडे पर्याप्त उस से अपर्याप्त असंख्यातगुने क्यों कि सूक्ष्म जीवों वारा व्याघात के अभाव से पूरीपर्याप्त का बन्धकर बहुत मरते हैं और अपर्याप्त थोडे मरते हैं, तथा बादर में व्याघात उत्पन्न होने से अपर्याप्त बहुत मरते हैं और पर्याप्त थोडे मरते हैं इसलिये बादर से सूक्ष्म बहुत है और इस ही लिये पर्याप्त से अपर्याप्त संख्यात गुने हैं ॥ २ ॥ सब से थोडे सुप्त [सूते] उस से जाग्रत संख्यात गुने, क्यों कि अपर्याप्त तो सर्व सुप्त ही होते हैं किन्तु पर्याप्त में जाग्रत बहुत मिलते हैं ॥ ३ ॥ सब से थोडे समोह मृत्युवाले उस से असोह मृत्युवाले संख्यातगुने. क्यो कि समवहन तो वेदनादिक के अत्यन्तिकपने करके आत्म प्रदेश शरीर के बाहिर निकाले तब समुद्घात की वक्त ही पावे इसलिये यह काल थोडा और दूसरा काल बहुत ॥ ४ ॥ सब से थोडे साता वेदनीयवाले उस से असाता वेदक संख्यातगुने क्यों

णा, नोइंदिओवउत्ता विसेसाहिया,असायावेयगा विसेसाहिया,असमोहया विसेसाहिया जागराविसेसाहिया. पज्जत्तगाविसेसाहिया, आउयकम्मस्स अबंधगाविसेसाहिया॥४५॥

कि साधारण शरीरधारी बहुत असातावेदक है और साता वेदक थोडे हैं ॥ ५ ॥ सर्व से थोडे इन्द्रिय उपयोगी क्यों कि वर्तमान में इन्द्रियों का उपयोग का काल थोडा है उस से नो इन्द्रियों का उपयोग का काल थोडा है उस से नो इन्द्रिय संख्यातगुने अतीत अनागत का बहुत काल है इस लिये ॥ ६ ॥ सबसे थोडे अनाकार उपयोगी इस का काम थोडा है. उन से साकार उपयोगी संख्यातगुने. उन का काल बहुत है ॥ ७ ॥ अब इन का असत्कारपना से २ पद भाग करकर जिस की कल्पना बताते हैं. जैसे सब जीवों के २५६ ढगले, उन में आयुबंध का १ ढगला, अनायुर्बन्ध के २५५ ढगले; अपर्याप्त के २ ढगले पर्याप्त के २५४ ढगले, सुप्त के ४ ढगले, जाग्रत के २५२ ढगले, समवहत के ८ ढगले, असमवहत के २४८ ढगले, साता वेदक के १६ ढगले, असाता वेद के २४० ढगले, इन्द्रियोपयुक्त के ३२ ढगले, नो इंद्रिय उपयोग के २२४ ढगले, और अनाकार उपयोगी के ६४ ढगले, साकार उपयोगी के १८२ ढगले. ॥ आयुर्बंधक अपर्याप्त सुप्त समवहत साता वेदक इन्द्रिय उपयोगी और अनाकार उपयोगी यह एकेक से दुगुने जानना, अनाकार उपयोग से साकार उपयोगी तिगुने यह गिनकर कहना. ... असातावेदक, असमवहत जाग्रत पर्याप्त आयुर्बन्धक यह एकेक से विशेषाधिक

सूत्र

अर्थ

खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गलातेलुक्के, उड्ढलोय तिरियलोए अणंतगुणा, अहोलोय तिरिय लोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया,॥दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए, अहोदिसाए विसेसाहिया, उत्तर पुरत्थिमेणं, दाहिणपच्चत्थिमेणय दोवितुल्ला असंखेज्जगुणा, दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेणय दो वितुल्ला विसेसाहिया पुरत्थिमेय असंखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥ खेत्ताणु-

मानना ॥ ४० ॥ छवीसवा पुद्गल द्वार–क्षेत्र आश्रिय सब मे थोडे पुद्गल त्रैलोकवर्ती क्यों कि जो बहुत बडे स्कन्ध होते हैं वेही तीन लोक को स्पर्शते हैं. २ उस से ऊर्ध्व लोक तिर्छे लोक के अनंत गुने. क्यों कि अनंत संख्यात प्रदेशी, अनंत असंख्यात प्रदेशी अनंते अनंत प्रदेशी ऊर्ध्व लोक तिर्यक लोक की प्रतर को स्पर्श कर रहे हैं, उस मे अधोलोक तिर्यक् लोक के विशेषाधिक क्यों कि ऊर्ध्व लोक की प्रतर से अधोलोक के मध्य की प्रतर बडी है, उस मे तिर्छे लोक के असंख्यातगुने. क्षेत्र १८०० योजन का है, ऊर्ध्व लोक में असंख्यातगुने सातराजु कुछ कम क्षेत्र है और उस से नीचे लोक के विशेषाधिक क्यों कि सात राजू कुछ अधिक क्षेत्र है ॥ दशोदिशा में उत्तराशि आश्रिय पुद्गल सब मे थोडे ऊर्ध्व दिशा में है, २ उस से अधोदिशा में विशेषाधिक क्यों कि ऊर्ध्वदिशा से अधोदिशा अधिक है, उस से उत्तर पूर्व के बीच ईशान कोन में और दक्षिण पश्चिम के बीच नैऋत्य कोन में

ूणा, नोइंदिओवउत्ता विसेसाहिया,असायावेयगा विसेसाहिया,असमोहया विसेसाहिया जागराविसेसाहिया, पज्जत्तगाविसेसाहिया, आउयकम्मस्स अबंधगाविसेसाहिया॥४५॥

अर्थ

कि साधारण शरीरधारी बहुत असातावेदक है और साता वेदक थोडे हैं ॥ ५ ॥ सब से थोडे इन्द्रिय उपयोगी क्यों कि वर्तमान में इन्द्रियों का उपयोग का काल थोडा है उस से नो इन्द्रियों का उपयोग का काल थोडा है उस से नो इन्द्रिय संख्यातगुने अतीत अनागत का बहुत काल है इस लिये ॥ ६ ॥ सबसे थोडे अनाकार उपयोगी इस का काल थोडा है. उस से साकार उपयोगी संख्यातगुने, उस का काल बहुत है ॥ ७ ॥ अब इन का असत्कारपना से २ पद भाग कल्पकर जिस की कल्पना बताते हैं. जैसे सब जीवों के २५६ ढगले, उस में आयुबंध का १ ढगला, अनायुर्बन्ध के २५५ ढगले; अपर्याप्त के २ ढगले पर्याप्त के २५४ ढगले, सुप्त के ४ ढगले, जाग्रत के २५२ ढगले, समवहत के ८ ढगले, असमवहत के २४८ ढगले, साता वेदक के १६ ढगले, असाता वेद के २४० ढगले, इन्द्रियोपयुक्त के ३२ ढगले, नो इन्द्रिय उपयोग के २२४ ढगले, और अनाकार उपयोगी के ६४ ढगले, साकार उपयोगी के १९२ ढगले. ॥ आयुर्बंधक अपर्याप्त सुप्त समवहत साता वेदक इन्द्रिय उपयोगी और अनाकार उपयोगी यह एकेक से दुगुने जानना, अनाकार उपयोग से साकार उपयोगी तिगुने यह गिनकर कहना. उस से नो इन्द्रिय उपयोगी असातावेदक, असमवहत जाग्रत पर्याप्त आयुर्बन्धक यह एकेक से विशेषाधिक

सूत्र

खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गलातेलुक्के, उड्ढलोय तिरियलोए अणंतगुणा, अहोलोय तिरय लोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विससाहिया,॥दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए, अहोदिसाए विसेसाहिया, उत्तर पुरत्थिमेणं, दाहिणपच्चत्थिमेणय दोवितुल्ला असंखेज्जगुणा, दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेणय दो वितुल्ला विसेसाहिया पुरत्थिमेय असंखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विससाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥ खेत्ताणु-

अर्थ

मानना ॥ ४५ ॥ छब्बीसवा पुद्गल द्वार-क्षेत्र आश्रिय सब से थोडे पुद्गल त्रीलोकवर्ती क्यों कि जो बहुत बडे स्कन्ध होते हैं वेही तीन लोक को स्पर्शते हैं. २ उन से ऊर्ध्व लोक तिर्छे लोक के अनंत गुने. क्यों कि अनंत संख्यात प्रदेशी, अनंत असंख्यात प्रदेशी अनंते अनंत प्रदेशी ऊर्ध्व लोक तिर्यक् लोक की परतर को स्पर्श कर रहे हैं, उन से अधोलोक तिर्यक् लोक के विशेषाधिक क्यों कि ऊर्ध्व लोक की प्रतर से अधोलोक के मध्य की प्रतर बडी है, उन से तिर्छे लोक के असंख्यातगुने. क्षेत्र १८०० योजन का है, ऊर्ध्व लोक में असंख्यातगुने सातराजु कुछ कम क्षेत्र है और उन से नीचे लोक के विशेषाधिक क्यों कि सात राजू कुछ अधिक क्षेत्र है ॥ दशोदिशा में उत्पत्ति आश्रिय पुद्गल सब से थोडे ऊर्ध्व दिशा में है, २ उन से अधोदिशा में विशेषाधिक क्यों कि ऊर्ध्वदिशा से अधोदिशा अधिक है, उन से उत्तर पूर्व के बीच ईशान कोन में और दक्षिण पश्चिम के बीच नैऋत्य कोन में

सूत्र

चाणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं, तेलुक्के उड्ढलोय तिरियलोए अणंतगुणाइं, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहियाइं, उड्ढलोए असंखेज्जगुणाइं, अहोलोए अणंतगुणाइं, तिरियलोए संखेज्जगुणाइं ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं अहोदिसाए, उड्ढदिसाए

अर्थ

पस्सपर तुल्य अधोदिशा से असंख्यात गुने, उस से दक्षिण पूर्व के बीच अग्नि कौन में और उत्तर पश्चिम के बीच वायु कौन में परस्पर तुल्य, ईशान नैऋत्य से विशेषाधिक, उस से पूर्व में असंख्यातगुने, उस से पश्चिम में विशेषाधिक, उस से दक्षिण में विशेषाधिक और उस से उत्तर में विशेषाधिक + क्षेत्र

+ मेरु पर्वत के नीचे मध्य में जो आठ प्रदेश रुचक है, उस से ऊपर लोकान्त तक चार प्रदेश की श्रेणी गई है और नीचे लोक के अन्त तक चार प्रदेश की श्रेणी गई है. उन रुचक से चारों कोन में एकेक रुचक की मुक्तावली के आकार तिरछे लोक के ऊर्ध्व लोक के अधोलोक के अन्त तक चारों विदिशाओं निकली हुई है, उन रुचक से चारों दिशा में प्रथम दो प्रदेश फिर आगे चार प्रदेश फिर छ प्रदेश यों दो २ प्रदेश से वृद्धिवाली लोकान्त तक चारों दिशाओं निकली है, इस से सब से थोडा ऊर्ध्व दिशा का क्षेत्र ऊंचा सात राजु में कुछ कम का है और लम्बाई चौडाई में चार प्रदेश है, उस से अधोदिशा का क्षेत्र विशेषाधिक क्यों कि सात राजु से विशेषाधिक है, उस से एकेक विदिशा का क्षेत्र असंख्यातगुना [illegible] लम्बाई चौडाई में विस्तारवाला है, और उस से एकेक दिशा का क्षेत्र असंख्यातगुना लम्बाई चौडाई बहुत विस्तारवाला है.

मूल

खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला तेलुक्के, उड्ढलोय तिरियलोए अणंतगुणा, अहोलोय तिरिय लोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया.॥दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए, अहोदिसाए विसेसाहिया, उत्तर पुरत्थिमेणं, दाहिणपच्चत्थिमेणय दोवितुल्ला असंखेज्जगुणा, दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेणय दो वितुल्ला विसेसाहिया पुरत्थिमेय असंखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥ खेत्ताणु-

अर्थ

मानेना ॥ ४० ॥ क्षेत्रीवा पुद्गल द्वार-क्षेत्र आश्रिय सब से थोडे पुद्गल त्रीलोकवर्ती क्यों कि जो बहुत बडे स्कन्ध होते हैं वेही तीन लोक का स्पर्शते हैं २ उस से ऊर्ध्व लोक तिर्च्छे लोक के अनंत गुने. क्यों कि अनंत संख्यात प्रदेशी, अनंत असंख्यात प्रदेशी अनंते अनंत प्रदेशी ऊर्ध्व लोक तिर्यक लोक की पर तर को स्पर्श कर रहे हैं. उस से अधोलोक तिर्यक लोक के विशेषाधिक क्यों कि ऊर्ध्व लोक की पतर से अधोलोक के दश की पतर बडा है. उस से तिर्च्छे लोक के असंख्यातगुने, क्षेत्र १८०० योजन का है, ऊर्ध्व लोक में असंख्यातगुने सातराजु कुछ कम क्षेत्र है और उस से नीचे लोक के विशेषाधिक क्यों कि सात राजू कुछ अधिक क्षेत्र है ॥ दशदिशा में उत्पत्ति आश्रिय पुद्गल सब से थोडे ऊर्ध्व दिशा में है, २ उस से अधोदिशा में विशेषाधिक क्यों कि ऊर्ध्वदिशा से अधोदिशा अधिक है, उस से उत्तर पूर्व के बीच ईशान कोन में और दक्षिण पश्चिम के बीच नैऋत्य कोन में

सूत्र

वाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं, तलुआ उड्ढलोय तिरियलोए अणंतगुणाइं, अहालोय तिरियलोए विसेसाहियाइं, उड्ढलोए असंखेज्जगुणाइं, अहोलोए अणंतगुणाइं, तिरियलोए संखेज्जगुणाइं ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं अहोदिसाए, उड्ढदिसाए.

अर्थ

परस्पर तुल्य अधोदिशा मे असंख्यात गुने, उस से दक्षिण पूर्व के बीच अग्नि कोन में और उत्तर पश्चिमके बीच वायु कोन में परस्पर तुल्य, ईशान नैऋत्य से विशेषाधिक, उस से पूर्व में असंख्यातगुने, उस से पश्चिम में विशेषाधिक, उस से दक्षिण में विशेषाधिक और उस से उत्तर में विशेषाधिक + क्षेत्र

+ मेरु पर्वत के नीचे मध्य में मे आठ प्रदेश रुचक है, उस मे ऊपर लोकान्त तक चार प्रदेश रूप श्रेणी गइ है और नीचे लोक के अन्त तक चार प्रदेश की श्रेणी गइ है. उन रुचक से चारों कोन में एकेक रुचक की मुक्तावलीके आकार तिर्यग् लोक के ऊर्ध्व लोक के अधोलोक के अन्ततक चारों विदिशाओं निकली हुइ है, उन रुचक से चारों दिशा में प्रथम दो प्रदेश फिर आगे चार प्रदेश फिर छ प्रदेश यों दो २ प्रदेश से वृद्धिपाती लोकान्ततक चारों दिशाओं निकली है, इस में सब मे थोडा ऊर्ध्व दिशा का क्षेत्र ऊंचा सात राजु में कुछ कम का है और लम्बाइ चोडाइ में चार प्रदेश है, उस मे अधोदिशा का क्षेत्र विशेषाधिक क्यों कि सात राजु से विशेषाधिक है, उस से एकेक विदिशा ... ऊपर नीचे लम्बाइ चोडाइ में विस्तारवाला है, और उस से एकेक दिशा का क्षेत्र असंख्यातगुना

सूत्र

सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा पएसट्ठयाए, परमाणुपोग्गला पएसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए, तेचेव पएसट्ठयाए अणंतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तेचेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तेचेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा॥४७॥एएसिणं भंते! एगपएसोगाढाणं

अर्थ

शार्थपने अनंतगुने, ३ उन से संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने संख्यातगुने, उन से असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने असंख्यातगुने, अब द्रव्यार्थपने और प्रदेशार्थपने भेले—१ सब से थोडे अनंत प्रदेशिक स्कन्ध द्रव्यार्थपने, २ उन से वे ही अनंत प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने अनंतगुने, ३ उन से परमाणु पुद्गल द्रव्यार्थपने और प्रदेशार्थपने अनंतगुने, ४ उन से संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध द्रव्यार्थपने संख्यातगुने, ५ उन से वह संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने संख्यातगुने, क्यों कि एकेक संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध में संख्यात स्कन्ध लगे हुवे, उन से असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध द्रव्यार्थपने असंख्यातगुने वे ही प्रदेशार्थपने असंख्यातगुने ॥४७॥ अब क्षेत्र आश्रिय कहते हैं—अहो भगवन् ! इन एक आ-

सूत्र

याणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं, तेलुक्के उड्ढलोय तिरियलोए अणंतगुणाइं, अहोलोय तिरियलोए विसेसाहियाइं, उड्ढलोए असंखेज्जगुणाइं, अहोलोए अणंतगुणाइं, तिरियलोए संखेज्जगुणाइं ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं अहोदिसाए, उड्ढदिसाए

अर्थ

परस्पर तुल्य अधोदिशा से असंख्यात गुने, उस से दक्षिण पूर्व के बीच अग्नि कोन में और उत्तर पश्चिम के बीच वायु कोन में परस्पर तुल्य, ईशान नैऋत्य से विशेषाधिक, उस से पूर्व में असंख्यातगुने, उस से पश्चिम में विशेषाधिक, उस से दक्षिण में विशेषाधिक और उस से उत्तर में विशेषाधिक + क्षेत्र

+ मेरु पर्वत के बीच मध्य में जो आठ प्रदेश रुचक है, उस से ऊपर लोकान्त तक चार प्रदेश की श्रेणी गई है और नीचे लोक के अन्त तक चार प्रदेश की श्रेणी गई है. उस रुचक से चारों कोन में एकेक ... [illegible] ... विदिशाओं निकली हुई है, उस रुचक से चारों ... [illegible] ... दिशाओं ... [illegible]

सूत्र

सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा पएसट्टयाए, परमाणुपोग्गला पएसट्टयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा पएसट्टयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा पएसट्टयाए असंखेज्जगुणा, दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए, तेचेव पएसट्ठयाए अणतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधादव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तेचेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधादव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तेचेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा॥४७॥एएसिणं भंते! एगपएसोगाढाणं

अर्थ

र्थपने अनंतगुने, ३ उन से संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने संख्यातगुने, उन से असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने असंख्यातगुने, अब द्रव्यार्थपने और प्रदेशार्थपने भेले—१ सब से थोडे अनंत प्रदेशिक स्कन्ध द्रव्यार्थपने, २ उन से वे ही अनंत प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने अनंतगुने, ३ उन से परमाणु पुद्गल द्रव्यार्थपने और प्रदेशार्थपने अनंतगुने, ४ उन से संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध द्रव्यार्थपने संख्यातगुने, ५ उन से यह संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने संख्यातगुने, क्यों कि एकेक संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध में संख्यात स्कन्ध लग हुवे, उन से असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध द्रव्यार्थपने असंख्यातगुने वे ही प्रदेशार्थपने असंख्यातगुने॥४७॥ अब क्षेत्र आश्रित कहते हैं—अहो भगवन्! इन एक आ-

सूत्र

सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा पएसट्ठयाए, परमाणुपोग्गला पएसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए, तेचेव पएसट्ठयाए अणतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तेचेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तेचेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥ ४७ ॥ एएसिणं भंते ! एगपएसोगाढाणं,

अर्थ

शार्थपने अनंतगुने, ३ उन से संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने संख्यातगुने, उन से असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने असंख्यातगुने, अब द्रव्यार्थपने और प्रदेशार्थपने भेले—१ सब से थोडे अनंत प्रदेशिक स्कन्ध द्रव्यार्थपने, २ उन से वे ही अनंत प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने अनंतगुने, ३ उन से परमाणु पुद्गल द्रव्यार्थपने और प्रदेशार्थपने अनंतगुने, ४ उन से संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध द्रव्यार्थपने संख्यातगुने, ५ उन से वह संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध प्रदेशार्थपने संख्यातगुने, क्यों कि एकेक संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध में संख्यात स्कन्ध लगे हुवे, उन से असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध द्रव्यार्थपने असंख्यातगुने वे ही प्रदेशार्थपने असंख्यातगुने ॥ ४७ ॥ अब क्षेत्र आश्रिय कहते हैं—अहो भगवन् ! इन एक आ-

सूत्र

याए संखेज्जगुणा, असंखेज्ज पएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥ दव्व-ट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयपएसट्ठयाए संखेज्जपएसो-गाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तेचेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्ज-पएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तेचेव पएसट्ठयाए असंखेज्ज-गुणा, ॥४८॥ एएसिणं भंते ! एगसमयट्ठिईयाण, संखेज्ज समयट्ठिइयाणं असंखेज्ज समयट्ठिईयाणय पोग्गलाण, दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे२हिंतो

अर्थ

गपएस समोगाढ॥ कालेणेग समइया, भावेणेगगुणावणा ॥ १ ॥ अर्थात एक द्रव्य के स्थान एक परमाणु, एक क्षेत्र के स्थान एक आकाश प्रदेश, एक काल के स्थान एक समय, और भाव के स्थान एक गुन वर्णादिका ग्रहण करना) संख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल प्रदेशार्थपने संख्यातगुने, असंख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल प्रदेशार्थपने असंख्यातगुन, और द्रव्यार्थप्रदेशार्थपने, सब से थोडे एक प्रदेशावगाही पुद्गल द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने, उस से संख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल द्रव्यार्थपने संख्यातगुने, ४ उस से वे ही संख्यात प्रदे-शावगाह पुद्गल प्रदेशार्थपने संख्यातगुना, ५ उस से असंख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल द्रव्यार्थपने असंख्यात गुना, ६ इस से यही असंख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल प्रदेशार्थपने संख्यातगुने, ॥ ४८ ॥ अब कालाश्रिय कहते हैं—अहो भगवन् ! इन एक समय की स्थितिवाले, संख्यात समय की स्थितिवाले असंख्यात

सूत्र

संखेज पएसोगाढाणं, असंखेज पएसोगाढाणय पोग्गलाणं, दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए, दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा,विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज पएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेजगुणा, असंखेज पएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेजगुणा ॥ पएसट्ठयाए, सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए, संखेज पएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठ-

अर्थ

काश प्रदेश अवगाही, २ संख्यात आकाश प्रदेश अवगाही, ३ असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाही द्रव्यार्थपने, प्रदेशार्थपने और द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने कौन २ से थोडे बहुत तुल्य विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे एक प्रदेश अवगाही पुद्गल द्रव्यार्थपने हैं, ऐसा आकाश प्रदेश कोई भी नहीं है कि जो एक प्रदेश अवगाह परिणाम परिणमे पुद्गल अवकाश देने का परिणाम नहीं २ उस से संख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यार्थपने संख्यातगुने, असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यार्थपने असंख्यातगुने, प्रदेशार्थपने सब से थोडे एक प्रदेशावगाढ पुद्गल. (यदि परमाणुओं तथा द्विप्रदेशी त्रिप्रदेशी यावत अनंत प्रदेशार्थ स्कन्ध होते हैं वे प्रदेश से द्रव्यादि द्रव्यार्थपने क्षेत्र में एक ही जानना. ऐसे ही द्विप्रदेशावगाही द्रव्यार्थ एक और प्रदेशार्थ दो प्रदेशी जानना. ऐसे ही यावत असं-ख्यात प्रदेशावगाढ जानना. इस अनुसार से अल्प बहुत जानना. एक गुण—काला परमाणु, संख्येय-

सूत्र

याए संखेज्जगुणा, असंखेज्ज पएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥ दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तेचेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तेचेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ॥४८॥ एएसिणं भंते ! एगसमयट्ठिईयाण, संखेज्ज समयट्ठिइयाणं असंखेज्ज समयट्ठिईयाणय पोग्गलाण, दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे२हिंतो

अर्थ

गपएस मपोगाढ॥ कालणेग ममइया, भावेणगुणावणा ॥ १ ॥ अर्थात् एक द्रव्य के स्थान एक परमाणु, एक क्षेत्र के स्थान एक आकाश प्रदेश, एक काल के स्थान एक समय, और भाव के स्थान एक गुन वर्णादिका ग्रहण करना) संख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल प्रदेशार्थपने संख्यातगुने, असंख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल प्रदेशार्थपने असंख्यातगुन, और द्रव्यार्थप्रदेशार्थपने, सब से थोडे एक प्रदेशावगाही पुद्गल द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपन. उस से संख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल द्रव्यार्थपने संख्यातगुने, ४ उस से वे ही संख्यात प्रदेशावगाह पुद्गल प्रदेशार्थपने संख्यातगुना, ५ उस से असंख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल द्रव्यार्थपने असंख्यात गुना, ६ इस से यही असंख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल प्रदेशार्थपने संख्यातगुने, ॥ ४८ ॥ अब कालाश्रिय कहते हैं—अहो भगवन् ! इन एक समय की स्थितिवाले, संख्यात समय की स्थितिवाले असंख्यात

सूत्र

संखेज्ज पएसोगाढाण, असंखेज्ज पएसोगाढाणय पोग्गलाणं, दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए, दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा,विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्ज पएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्ज पएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥ पएसट्ठयाए, सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए, संखेज्ज पएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठ-

अर्थ

काश प्रदेश अवगाही, २ संख्यात आकाश प्रदेश अवगाही, ३ असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाही द्रव्यार्थपने, प्रदेशार्थपने और द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने कौन २ से थोडे बहुत तुल्य विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे एक प्रदेश अवगाही पुद्गल द्रव्यार्थपने हैं, ऐसा आकाश प्रदेश कोई भी नहीं है कि जो एक प्रदेश अवगाह परिणाम परिणमे पुद्गल अवकाश देने का परिणाम नहीं २ उस से संख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यार्थपने संख्यातगुने, असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यार्थपने असंख्यातगुने, प्रदेशार्थपने सब से थोडे एक प्रदेशावगाढ पुद्गल. (यदि परमाणुओं तथा द्विप्रदेशी त्रिप्रदेशी यावत अनंत प्रदेशी स्कन्ध होते हैं वे प्रदेश से द्रव्यादि द्रव्यार्थपने क्षेत्र से एक ही जानना. ऐसे ही द्विप्रदेशावगाही द्रव्यार्थ एक और प्रदेशार्थ दो प्रदेशी जानना. ऐसे ही यावत् असं-ख्यात प्रदेशावगाढ जानना. इस अनुसार से सर्व बहुत जानना. यह युक्ति—द्रव्येण परमाणु, क्षेत्रेण-

सूत्र

द्विनीया पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तेचेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्ज समय ट्ठिनीया पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तंचेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥ ४९ ॥ एएसिण भंते ! एगगुण कालगाणं, संखेज्जगुणकालगाणं, असंखेज्ज-गुण कालगाण, अणंतगुण कालगाणय पोग्गलाणं, दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए, दव्वट्ठ पएसट्ठयाए, कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! जहा परमाणु पोग्गला तहा भाणियव्वा ॥ एवं संखेज्जगुण कालयाणवि एवं सेसावि वण्ण गंध रसा भाणियव्वा ॥ फासाणं कक्खड मउय गरुय लहुयाणं जहा एगपदे

अर्थ

समय की स्थिति वाले पुद्गल प्रदेशार्थ पने संख्यातगुने, व असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल द्रव्यार्थ पने असंख्यातगुने, वे ही असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल प्रदेशार्थपने असंख्यात गुने ॥ ४९ ॥ अब भाव आश्रिय कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! एक गुन काला पुद्गल संख्यात गुन काला पुद्गल असंख्यातगुन काला पुद्गल, अनंतगुण काला पुद्गल द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने और द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने कौन २ से थोडे ज्यादा अल्प विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! जैसे पुद्गलों का अल्पाबहुत सामान्यपने कहा तैसे ही [illegible] ॥ जैसे वर्ण का तैसे गंधका व रसका कहना. और स्पर्श आश्रित कर्कश कोमल भारी और हल्का

अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगसमयट्ठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जसमयट्ठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्ज-समयट्ठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा. पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगसमय ट्ठितीया पोग्गला पदेसट्ठयाए, संखेज्जसमय ट्ठितीया पोग्गला पदेसट्ठयाए संखेज्ज-गुणा, असंखेज्ज समय ट्ठितीया पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, दव्वट्ठपएसट्ठ-याए सव्वत्थोवा एगसमय ट्ठितीया पोग्गला दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए संखेज्जसमय

अर्थ समय की स्थितिवाले पुद्गलों में द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने तथा द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने कौन से थोडा ज्यादा तुल्य विशेष हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे एक समय की स्थितिवाले पुद्गल द्रव्यार्थपने, २ उस से संख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गल द्रव्यार्थपने संख्यातगुने. ३ असंख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गल द्रव्यार्थपने असंख्यातगुने, प्रदेशार्थपने सब से थोडे एक समय की स्थिति वाले प्रदेशार्थपने, संख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गल प्रदेशार्थपने संख्यातगुने. असंख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गल प्रदेशार्थपने असंख्यातगुने. और द्रव्यार्थप्रदेशार्थपने सब से थोडे एक समय की स्थितिवाले पुद्गल द्रव्यार्थ प्रदेशपने. * संख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल द्रव्यार्थपने संख्यातगुने, उस से वे ही संख्यात

---

* प्रमाणुओं द्विप्रदेशिक त्रिप्रदेशीक यावत् अनंत प्रदेशिक स्कन्ध होता है वह एक समय की स्थिति वाला होवे वह काल में द्रव्यार्थ और प्रदेशार्थपने एक जानना, जिन को दो समय की स्थिति होवे वे द्रव्यार्थपने और प्रदेशार्थपने द्विप्रदेशी जानना. यों यावत् असंख्यात समय की स्थिति वाले जानना.

अणाणं कयरोउ अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगसमयट्ठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जसमयट्ठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जसमयट्ठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगसमयट्ठितीया पोग्गला पदेसट्ठयाए, संखेज्जसमय ट्ठितीया पोग्गला पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्ज समय ट्ठितीया पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगसमय ट्ठितीया पोग्गला दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए संखेज्जसमय

अर्थ

समय की स्थितिवाले पुद्गलों में द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने तथा द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने कौन से थोडा ज्यादा तुल्य विशेष है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे एक समय की स्थितिवाले पुद्गल द्रव्यार्थपने, २ उस से संख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गल द्रव्यार्थपने संख्यातगुने, ३ असंख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गल द्रव्यार्थपने असंख्यातगुने, प्रदेशार्थपने सब से थोडे एक समय की स्थिति वाले प्रदेशार्थपने, संख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गल प्रदेशार्थपने संख्यातगुने, असंख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गल प्रदेशार्थपने असंख्यातगुने. और द्रव्यार्थप्रदेशार्थपने सब से थोडे एक समय की स्थितिवाले पुद्गल द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने. * संख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल द्रव्यार्थपने संख्यातगुने, उस से ये ही संख्यात

* परमाणुओं द्विप्रदेशिक त्रिप्रदेशीक यावत् अनंत प्रदेशिक स्कन्ध होता है वह एक समय की स्थिति वाला होवे वह [illegible] से द्रव्यार्थ और प्रदेशार्थपने एक जानना, जिन की दो समय की स्थिति होवे वे द्रव्यार्थपने और प्रदेशार्थपने द्विप्रदेशी जानना, यों यावत् असंख्यात समय की स्थिति वाले जानना.

जोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा, थलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणीओ, जलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया पुरिसा संखेज्जगुणा, जलयर पंचिदिय तिरिक्ख-जोणिणीओ संखेज्जगुणीओ, वाणमंतरा देवा संखेज्जगुणा, वाणमंतरीओ देवीओ संखिज्जगुणीओ, जोइसिया देवा संखेज्जगुणा, जोइसिणीओ देवीओ संखेज्जगुणीओ, खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया णपुंसगा संखेज्जगुणा, थलयर पंचिदिय तिरिक्ख-जोणिया णपुंसगा संखेज्जगुणा, जलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया णपुंसगा संखे-

अर्थ

ख्यात जितने एक प्रदेश की श्रेणि में होवें उतने हैं, २५ उस से दूसरे ईशान देवलोक के देवता असंख्यात गुने, क्यों कि—अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशी का द्वितीय वर्ग मूल को तृतीय वर्ग मूल से गुनाकार करते जितने प्रदेश की राशी होवे उतने घनीकृत की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश हैं उतने हैं [यह सब असं-ख्यात श्रेणि के आकाश प्रदेश जानना] २६ उन से ईशान देवलोक की देवीयों संख्यातगुनी, क्यों कि देवता से देवांगना बत्तीसगुनी होती है. २७ उस से सौधर्म देवलोक के देवता असंख्यात गुने क्यों कि विमान भी ज्यादा हैं और दक्षिण दिशा में कृष्णपक्षी जीव भी बहुत उत्पन्न होते हैं. २८ उस से सौधर्म देवलोक की देवियों संख्यात गुनी. २९ उस से भवनपति देवता असंख्यात गुने, क्यों

सूत्र

असंखेज्जगुणा, बायर आउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर वाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेय सरीर बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरनिगोया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरपुढवी काइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरवाउकाइयाअपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम तेउकाइया अपज्ज-

अर्थ

क्यों कि एकप्रतर के असंख्यात भागवर्ती अति प्रभूत असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशी प्रमान है. ३७ उन से खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनी की स्त्रीयों संख्यातगुनी है. ३८ उन से वाणव्यन्तर देवता संख्यातगुने क्यों कि एक प्रतर में संख्यात कोडी योजन प्रमान सुचिरूप जितने होवें उतने हैं. ३९ उन से वाणव्यन्तर देवीयों संख्यातगुनी . ४० उस से ज्योतिषी देवता संख्यातगुने क्यों कि एक प्रतर में दो छप्पन अंगुल प्रमान सुचिरूप खण्ड जितने होवे उतने हैं. ४० उन से ज्योतिषी की देवीयों संख्यात गुनी है. ४२ उन से खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक नपुंसक संख्यातगुने [यह गर्भज नपुंसक जानना किन्तु समूर्च्छिम नहीं क्यों कि समूर्च्छिम तो आगे सेतालीसवे बोल में आवेंगे] ४३ उन से थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक नपुंसक संख्यातगुने, ४४ उन से जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक नपुंसक संख्यातगुने, ४५ उन से चौरिन्द्रिय के पर्याप्त संख्यातगुने क्यों कि एक प्रतर में अंगुल के असंख्यात

मूत्र

त्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुम पुढवि काइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम निगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम निगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, अभवसिद्धिया अनंतगुणा, पडिवाइय सम्मत्ता अणंत

अर्थ

असंख्यातगुने हैं) ५९ प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकाय अपर्याप्त असंख्यातगुने, ६० बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने, ६१ बादर पृथ्वीकाय के अपर्याप्त असंख्यातगुने, ६२ बादर अप्काय के अपर्याप्त असंख्यातगुने, ६३ बादर वायुकाय के अपर्याप्त असंख्यातगुने, ६४ सूक्ष्म तेजस्काय के अपर्याप्त असंख्यातगुने, ६५ सूक्ष्म पृथ्वी काय के अपर्याप्त विशेषाधिक, ६६ सूक्ष्म अप्काय के अपर्याप्त विशेषाधिक, ६७ सूक्ष्म वायुकाय के अपर्याप्त विशेषाधिक, ६८ सूक्ष्म तेजस्काय के पर्याप्त संख्यातगुने, ६९ सूक्ष्म पृथ्वीकाय के पर्याप्त विशेषाधिक, ७० सूक्ष्म अप्काय के पर्याप्त विशेषाधिक, ७१ सूक्ष्म वायुकाय के पर्याप्त विशेषाधिक, ७२ सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने, ७३ सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त संख्यात

ज्जगुणा, चउरिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, पत्तेय सरीर बायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर निगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर पुढविकाइया पज्जत्तगा

होवे उतने घनी कृतलोक की एक प्रदेश श्रेणि में जितने आकाश प्रदेश होवे उतने हैं. ३० उस से भवनपति की देवीयों संख्यातगुनी, ३१ उन से रत्न प्रभा नरक के नेरिये असंख्यातगुने, क्यों कि अंगुल मात्र प्रदेश राशी का प्रथम वर्ग को दूसरे वर्ग मूल से गुना करना उस दूसरी वर्ग मूल प्रमान श्रेणियों में जितने आकाश प्रदेश होते हैं उतने हैं ३३ उनसे खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक पुरुष असंख्यातगुने हैं क्यों कि एकेक प्रतर असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश प्रमान हैं. ३४ उस से खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक स्त्रीयों संख्यात गुनी क्यों कि तिर्यंच पुरुष से तिर्यंचनीयों तीन गुनी होती हैं, ३५ उस में स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक पुरुष संख्यात गुने. क्यों कि एक प्रतर असंख्यात भागवर्ती प्रतर असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशी प्रमान है. ३६ उस से स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक स्त्रीयों संख्यात गुनी. ३७ उस से जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक पुरुष संख्यातगुने

मूल

गुणा, सुहुम पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमा विसेसाहिया, भवसिद्धिया विसेसाहिया, निगोया विसेसाहिया, वणस्सइ काइया विसेसाहिया, एगिंदिया विसेसाहिया, तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया, मिच्छदिट्ठी विसेसाहिया, अविरया विसेसाहिया, सकसाइया विसेसाहिया, छउमत्था विसेसाहिया, सजोगी विसेसाहिया, संसारत्था विसे-

अर्थ

पृथ्व्यादि सब सूक्ष्म का समावेश होता है. ८४ सूक्ष्म वनस्पति के पर्याप्त संख्यातगुने, ८५ उन से सूक्ष्म के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस में सर्व सूक्ष्म के अपर्याप्त का समावेश हुवा. ८६ सूक्ष्म विशेषाधिक, इस में पर्याप्तापर्याप्त सब सूक्ष्म का समावेश हुवा. ८७ उन से भव्यसिद्धिक (भव्य) विशेषाधिक, अभव्य छोड बाकी के सब जीवों का इस में समावेश हुवा. ८८ उन से निगोद के जीव विशेषाधिक, क्यों कि निगोद के जीव छोड बाकी सब जीवों असंख्यात लोकाकाश समान हैं. ८९ उन से वनस्पतिकाय विशेषाधिक, निगोद में प्रत्येक वनस्पति के जीव भी मेले हुवे, ९० उन से एकेन्द्रिय विशेषाधिक, इस में पांचों स्थावर मिलगये. ९१ उन से तिर्यंच योनिक विशेषाधिक, इस में एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय सब मिलगये. ९२ उन से मिथ्यात्व दृष्टी विशेषाधिक, इस में चारों गति के मिथ्यात्वी जीवों मिले. ९३ उन से अविरति विशेषाधिक, इस में प्रथम के चार गुणस्थान के जीवों मिले. ९४ उन से सकषायी विशेषाधिक, इस में दशवे गुणस्थान तक के सब जीवों मिले. ९५ उन से छद्मस्थ विशेष-

भाग मात्र शुचिखण्ड जितने होते हैं उतने हैं. ४५ उन से पंचेन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक हैं. यहां देवता नरक मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्रिय गर्भज और समूर्छिम सब के पर्याप्त ग्रहण करना, ४६ उन से बेइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक, ४७ उनसे तेइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक, ४८ चौरिन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक, ४९ पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त असंख्यातगुने क्यों कि एक प्रतर के अंगुल के असंख्यातवे भाग मात्र शुचिखण्ड प्रमाण है. यहां मनुष्य गर्भज, संमूर्छिम और तिर्यंच पंचेन्द्रिय, गर्भज व संमुर्छिम ग्रहण करना. ५० उन से चौरिन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक ५१ उन से तेन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक, ५२ उन से बेन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक, ५३ उन से प्रत्येक शरीर बादर वनस्पति काय के पर्याप्ता असंख्यातगुने विमाग मात्र शुचिखण्ड जितने हैं ५४ उन से बादर निगोदके पर्याप्त असंख्यात गुने, क्योंकि प्रतर अंगुल के असंख्यात भाग मात्र शुचिखण्ड प्रमान है. ५५ उन से बादर पृथ्वी काय के पर्याप्त असंख्यात गुने, अति प्रभुत संख्यात प्रतर गत अंगुल के असंख्यातवे भाग प्रमान शुची खंड प्रमान हैं. ५६ उन से बादर अपकाय के पर्याप्त असंख्यातगुने हैं, घनी कृत लोक के असंख्यातवे भाग वर्ती असंख्यात प्रतर गत आकाश प्रदेश राशी प्रमान हैं. ५७ बादर वायुकाय के पर्याप्त असंख्यातगुने अति प्रभुत संख्यात प्रतर गत अंगुल के असंख्यातवे भाग मात्र शुची खण्ड प्रमान हैं, ५८ उन से बादर तेजस्काय के अपर्याप्त असंख्यातगुने हैं असंख्यात लोकाकाश प्रदेश राशी प्रमान है. (बादर तेजस्काय के अपर्याप्त से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त तक साले बोल अलग २ असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमान हैं. और एकेक से

क्रम	नाम						क्रम	नाम					
१५	सातवे देवलोकके देव असं०	२	४	११	०	१	३३	खेचर तिर्यंचनी संख्यातगुनी	२	५	१३	०	६
१६	पांचवी नरकके नेरीये असं०	२	४	११	०	१	३४	स्थलचर पुरुष तिर्यंच संख्या	२	५	१३	०	६
१७	छठे देवलोक के देव असं०	२	४	११	०	१	३५	स्थलचर तिर्यंचनी संख्या०	२	५	१३	०	६
१८	चोथी नरक के नेरीये असं०	२	४	११	०	१	३६	जलचर पुरुष तिर्यंच संख्या०	२	५	१३	०	६
१९	पांचवे देवलोक के देव असं०	२	४	११	०	१	३७	जलचर तिर्यंचनी संख्या०	२	५	१३	०	६
२०	तीसरी नरक के नेरीये असं०	२	४	११	०	२	३८	वाणव्यन्तर देवता संख्या०	३	४	११	०	४
२१	चौथे देवलोक के देव असं०	२	४	११	०	१	३९	वाणव्यन्तरकी देवी संख्या०	२	४	११	०	४
२२	तीसरे देवलोक के देव असं०	२	४	११	०	१	४०	ज्योतिषी देवता संख्यातगुने	२	४	११	०	१
२३	दूसरी नरक के नेरीये असं०	२	४	११	०	१	४१	ज्योतिषी की देवी संख्यातगुने	२	४	११	०	१
२४	समूर्छिम मनुष्य असंख्य०	१	१	३	४	३	४२	खेचर तिर्यंच नपुंसक सं०	४	५	१३	०	५
२५	दूसरे देवलोक के देव असं०	२	४	११	०	१	४३	स्थलचर तिर्यंच नपुंसक सं०	४	५	१३	०	६
२६	दूसरे देवलोक की देवी सं०	२	४	११	०	१	४४	जलचर तिर्यंच नपुंसक सं०	४	५	१३	०	६
२७	पहिले देवलोक के देव सं०	२	४	११	०	१	४५	चौरेन्द्रिय के पर्याप्त संख्या०	१	१	२	४	३
२८	पहिले देवलोककी देवी सं०	२	४	११	०	१	४६	पंचेन्द्रिय के पर्याप्त विशेषा०	२	१२	१४	१०	६
२९	भवनपति देवता संख्या०	३	४	११	०	४	४७	बेन्द्रिय के पर्याप्त विशेषा०	१	१	२	३	३
३०	भवनपतिकी देवी संख्या०	२	४	११	०	४	४८	तेन्द्रिय के पर्याप्त विशे०	१	१	१	३	३
३१	पहिली नरकके नेरीये असं०	३	४	११	०	१	४९	पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त असं०	२	२	५	०	६
३२	खेचर पुरुष तिर्यंच असं०	२	५	१३	०	६	५०	चौरिन्द्रिय के अपर्याप्त विशे०	१	२	३	६	३

८७	भवसिद्धिक जीव विशेष	१४	१४	१५	१२	६
८८	निगोदीया जीव विशेषाधिक	४	१	३	३	३
८९	वनस्पतिकाय विशेषाधिक	४	१	३	३	४
९०	एकेन्द्रिय जीव विशेषाधिक	४	१	५	३	४
९१	तिर्यंच योनिक विशेषाधिक	१४	५	१३	९	६
९२	मिथ्यात्व दृष्टी विशेषाधिक	१४	१	१३	६	६
९३	अविरती जीव विशेषाधिक	१४	४	१३	९	६
९४	सकषाइ जीव विशेषाधिक	१४	११	१५	१०	६
९५	छद्मस्त जीव विशेषाधिक	१४	१२	१५	१०	६
९६	सयोगी जीव विशेषाधिक	१४	१३	१५	१२	६
९७	संसार जीव विशेषाधिक	१४	१४	१५	१२	६
९८	सर्व जीवों विशेषाधिक	१४	१४	१५	१२	६

इति पण्णवणाए भगवईए बहुवत्तव्वया पयं तइयं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ *

इति सत्तावीसवा द्वार ॥ इति श्री पन्नवणा भगवती का तीसरा अल्पबहुत्व नामक पद संपूर्ण हुवा ॥ ३ ॥

सूत्र

सहस्साइं, उक्कोसेणं सागरोवमं ॥ अपज्जत्तगा रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणंवि अंतो मुहुत्तं ॥ पज्जत्तगा रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतो मुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ सक्करप्पभा पुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोय॰ ! जहण्णेणं एगंसागरोवमं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तग सक्कर-प्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि

अर्थ

जघन्य दशहजार वर्ष उम में अन्तर मुहूर्त कम (यह अन्तर मुहुर्त अपर्याप्त अवस्था का कमी किया है क्यों कि यहां प्रश्न पर्याप्त अवस्थान का है) उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम में अन्तर मुहूर्त कम, यह भी उक्त प्रकार ही जानना ॥ अब सातों नरक की स्थिति का अलग २ विवर्ण करते हैं-अहो भगवन् ! पहिली रत्नप्रभा नामक नरक के नेरीये की कितने काल की स्थिति कही है अर्थात् प्रथम नरक में गया हुवा जीव कितने काल तक रहता है ? अहो गौतम ! जघन्य (कम से कम) दशहजार वर्ष, उत्कृष्ट एक सागरोपम. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के अपर्याप्त नेरीयेकी कितने कालकी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त की स्थिति कही है ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा नरक के पर्याप्त नेरीये की

सूत्र

सहस्साइं, उक्कोसेणं सागरोवमं ॥ अपज्जत्तगा रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तगा रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतो मुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ सक्करप्पभा पुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगंसागरोवमं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तग सक्करप्पभ पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि

अर्थ

जघन्य दशहजार वर्ष उस में अन्तर मुहूर्त कम (यह अन्तर मुहूर्त अपर्याप्त अवस्था का कमी किया है क्यों कि यहां प्रश्न पर्याप्त अवस्थान का है) उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम में अन्तर मुहूर्त कम, यह भी उक्त प्रकार ही जानना ॥ अब सातों नरक की स्थिति का अलग २ विवर्ण करते हैं-अहो भगवन् ! पहिली रत्नप्रभा नामक नरक के नेरीये की कितने काल की स्थिति कही है अर्थात् प्रथम नरक में गया हुवा जीव कितने काल तक रहता है ? अहो गौतम ! जघन्य (कम से कम) दशहजार वर्ष, उत्कृष्ट एक सागरोपम. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के अपर्याप्त नेरीयेकी कितने कालकी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की स्थिति कही है ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा नरक के पर्याप्त नेरीये की

॥ चतुर्थ स्थितिपदम् ॥

नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तग नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास

अर्थ

अब चौथा स्थितिपद कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! नरक के नेरीयों की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दशहजार वर्ष की प्रथम नरक के प्रथम पाथडेकी अपेक्षा, उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की सातवी नारकी की अपेक्षा. अहो भगवन् ! अपर्याप्त नेरीये की कितने कालकी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य भी अन्तरमुहूर्त की स्थिति है, और उत्कृष्ट भी अन्तरमुहूर्त की ही स्थिति है, क्यों कि सर्व स्थान पर पर्याप्त पाये बिना अपर्याप्त अवस्था में इतने ही काल रहता है, इसके बाद पर्याप्त होजाता है. अहो भगवन् ! पर्याप्तकी कितने काल की स्थिति कही है ? अर्थात् जिस नरक के जीवने पूर्ण पर्याप्त बन्धली है वह नरक में कितने काल तक रहता है ? अहो गौतम !

मूल

गोयमाइ अंतोमुहुत्तणाइ ॥ पंकप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तसागरोवमाइं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ॥ अपज्जत्ता पंकप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तगा पंकप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? जहण्णेणं सत्तसाग-

अर्थ

सागरोपम की ॥ वालुक प्रभा नरक के नेरिये की कितने कालकी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य तीन सागरोपम की उत्कृष्ट सात सागरोपम की ॥ वालुक प्रभा के अपर्याप्त नेरिये की कितनी स्थिति ? अहो गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्तकीही ॥ वालुक प्रभा के पर्याप्त नेरिये का प्रश्न ? अहो गौतम ! जघन्य तीन सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट सात सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम ॥ अहो भगवन् ! चौथी पंक प्रभा नरक के नेरिये की कितने कालकी स्थिति कही है ! अहो गौतम ! जघन्य सात सागरोपम की उत्कृष्ट दश सागरोपम की ॥ पंकप्रभा के अपर्याप्त नेरिये की ? जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्तकी है. और पंकप्रभा के पर्याप्त नेरिये की स्थिति ? जघन्य सात सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट दश सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम ॥ अहो भगवन् ! पांचवी धूम्रप्रभा नरक के नेरियेकी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश सागरोपमकी उत्कृष्ट सतरह सागरोपमकी धूम्रप्रभा के अपर्याप्त नेरियेकी जघन्य और

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं॥पज्जत्तग सक्करप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमं अंतो मुहुत्तूणं,उक्कोसेणं तिण्णिसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं॥वालुयप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता गोयमा ! जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तगा वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तग वालुयप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं तिण्णि, साग-

कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष अन्तर मुहूर्त कम, उत्कृष्ट एक सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम यह अंतर्मुहूर्त अपर्याप्त अवस्थाका कम किया जानना. अहो भगवन् ! दूसरी शर्कर प्रभा नरक के नेरिये की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य एक सागरोपम की उत्कृष्ट तीन सागरोपमकी, शर्कर प्रभा के अपर्याप्त नेरीये की स्थिति का प्रश्न ? अहो गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की ॥ शर्कर प्रभा के पर्याप्त नेरीये का प्रश्न ! अहो गौतम ? जघन्य एक सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट तीन सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम ॥ अहो भगवन् !

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तगा तमप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइ ॥ अहे सत्तम पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तग अहेसत्तमा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तग अहेसत्तम पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइ ॥ १ ॥ देवाणं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा !

मुहूर्त कम ॥ अहो भगवन् ! सातवी तमतमप्रभा नरक के नेरीये की कितने कालकी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य बावीस सागरोपम की उत्कृष्ट तेतीस सागरोपमकी ॥ तमतमप्रभा के अपर्याप्त नेरीयेकी जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की है और पर्याप्त नेरीये की जघन्य बावीस सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम अन्तर मुहूर्त कमकी स्थिति कही है ॥१॥ अब समुच्चय देवताकी स्थिति-

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं॥पज्जत्तग सक्करप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमं अंतो मुहुत्तूणं,उक्कोसेणं तिण्णिसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं॥वालुयप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता गोयमा ! जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तगा वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तग वालुयप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं तिण्णि, साग-

कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष अन्तर मुहूर्त कम, उत्कृष्ट एक सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम यह अंतर्मुहूर्त अपर्याप्त अवस्थाका कम किया जानना. अहो भगवन् ! दूसरी शर्कर प्रभा नरक के नेरीये की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य एक सागरोपम की उत्कृष्ट तीन सागरोपमकी, शर्कर प्रभा के अपर्याप्त नेरीये की स्थिति का प्रश्न ? अहो गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की ॥ शर्कर प्रभा के पर्याप्त नेरीये का प्रश्न ! अहो गौतम ? जघन्य एक सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट तीन सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम ॥ अहो भगवन् !

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तगा तमप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ अहे सत्तम पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तग अहेसत्तमा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तग अहेसत्तम पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १ ॥ देवाणं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा !

मुहूर्त कम ॥ अहो भगवन् ! सातवी तमतमप्रभा नरक के नेरीये की कितने कालकी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य बावीस सागरोपम की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपमकी ॥ तमतमप्रभा के अपर्याप्त नेरियेकी जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की है और पर्याप्त नेरिये की जघन्य बावीस सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम अन्तर मुहूर्त कमकी स्थिति कही है ॥१॥अब समुच्चय देवताकी स्थिति-

रोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ धूमप्पभा
पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दससाग-
रोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तग धूमप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते !
केवइयं कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणंवि अंतो-
मुहुत्तं, पज्जत्तगा धूमप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्तर सागरोवमाइं
अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ तमप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरसागरोवमाइं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तग
तमप्पभा पुढवि नेरइयाण भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि

उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की है, और धूम्रप्रभा के पर्याप्त नेरीये की स्थिति जघन्य दश सागरोपम अन्तर
मुहूर्त कम, उत्कृष्ट सतरह सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम ॥ अहो भगवन् ! कहो तमप्रभा नरक के नेरीये
की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य सतरे सागरोपम की, उत्कृष्ट बावीस सागरो-
पम की तमप्रभा के अपर्याप्त नेरीये की जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की स्थिति और तमप्रभा
के पर्याप्त नेरीये की स्थिति जघन्य सतरे सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम, उत्कृष्ट बावीस सागरोपम अन्तर

जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तदेवाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ?गोयमा! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तदेवाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ देवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं पणपण्णपलिओवमाइं ॥ अपज्जत्तग देवीणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तग देवीणं भंते !

का वर्णन करते हैं ! अहो भगवन् ! देवताओं की कितने कालकी स्थिति कही है? अहो गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की. अपर्याप्त देवतों की स्थिति ? अहो गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त देवताओं की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम (भवनपति देव आश्रित) और उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम [सर्वार्थ सिद्ध के देव आश्रित] अब अनुक्रम देवीयों की स्थिति कहते हैं—अहो भगवन् ! देवीयों की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष की [भवनपति व्यन्तर की देवी आश्रित] उत्कृष्ट पंचावन पल्योपम

जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तदेवाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ?गोयमा! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तदेवाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ देवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं पणपण्णपलिओवमाइं ॥ अपज्जत्तग देवीणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तग देवीणं भंते !

अर्थ

का वर्णन करते हैं ! अहो भगवन् ! देवताओं की कितने कालकी स्थिति कही है? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की. अपर्याप्त देवतां की स्थिति ? अहो गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त देवताओं की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम (भवनपति देव आश्रिय) और उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम [सर्वार्थ सिद्ध के देव आश्रिय] अब समुच्चय देवीयों की स्थिति कहते हैं—अहो भगवन् ! देवीयों की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की (भवनपति व्यन्तर की देवी आश्रिय) उत्कृष्ट पंचावन पल्योपम

अमुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयंकालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तग अमुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं-ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ असुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपंच पलिओवमाइं ॥ अपज्जत्तियाणं अमुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ? जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तियाणं अमुरकुमारीणं भंते !

और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त अमुरकुमार देवता की जघन्य दश हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम. उत्कृष्ट कुछ अधिक एक सागरोपम में अंतर्मुहूर्त कम. अहो भगवन् ! अमुरकुमारिका देवीयों की कितने क ल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट साडेचार पल्योपम की. अपर्याप्त अमुरकुमारिका देवीयों की जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त अमुरकुमारिका देवीयों की जघन्य दश हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम. उत्कृष्ट साडेचार पल्योपम में अन्तर्मुहूर्त कम (यहां सामान्यपने अमुरकुमार की स्थिति कही किन्तु सूक्ष्मता इस प्रकार है - दक्षिण

सूत्र

वासिणीणं देवीणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं, अपज्जत्तियाणं भंते ! भवणवासिणीणं देवीणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि अंतोमुहुत्त उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तियाणं भंते! भवणवासिणीणं देवीणं केवतीयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं ॥ अपज्जत्तग

अर्थ

अंतर्मुहूर्त कम, उत्कृष्ट कुछ अधिक एक सागरोपम में अंतर्मुहूर्त कम. अहो भगवन् ! भुवनवासिनी देवीयों की कितने काल की स्थिति कही है ! अहो गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट साडीचार पल्योपम की. अपर्याप्त भुवनवासिनी देवी की जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की है और पर्याप्त भुवनवासिनी देवी की जघन्य दस हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम और उत्कृष्ट साडीचार पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम. अहो भगवन् ! असुरकुमार देवताओं की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट कुछ अधिक एक सागरोपम की. अपर्याप्त असुरकुमार देवता की जघन्य

पलिओवमाइं दसूणाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवम ॥अपज्जत्तियाणं णागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णणवि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं॥पज्जत्तियाणं नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं देसूणं पलिओवम अंतोमुहुत्तूणं ॥सुवण्णकुमाराणं भंते! देवाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं, उक्कोसेणं दोपलिओवमाइं

अर्थ

देवता की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट कुछ कम दो पल्योपम की, अपर्याप्त असुरकुमार देव की जघन्य उत्कृष्ट पल्योपम की और पर्याप्त असुरकुमार देव की जघन्य दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्तकम उत्कृष्ट कुछ कम दो पल्योपम अंतर्मुहूर्तकम. अहो भगवन् ! नाग कुमारिका देवी की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट कुछ कम पल्योपम की. अपर्याप्त असुरकुमारिका देवी की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त नागकुमारिका देवी की जघन्य दश हजार वर्ष अंतर्मुहूर्तकम उत्कृष्ट कुछकम एक पल्योपम में

सूत्र

वेणं ओहिय अपज्जत्त पज्जत्तगुत्तत्तयं देवाणं देवीणय णेयव्वं, जाव थणियकुमाराणं, जहा नागकुमाराणं ॥ २ ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं काल ठिइ पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण बावीसं वाससहस्साइं. अपज्जत्तय पुढविकाइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय पुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

अर्थ

जैसी नागकुमार देवता की और नागकुमारिका देवी यों की कही तैसे ही विद्युतकुमार की यावत् दशवे स्तनित कुमार देवताओं की व देवी यों की कहना॥२॥अब स्थावर की स्थिति का वर्णन करते हैं.॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाय की कितने काल की स्थिति कही है? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की,अपर्याप्त पृथ्वी काय की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त पृथ्वी की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बावीसहजारवर्ष अंतर्मुहूर्त कमकी जानना(अंतर्मुहूर्त के असंख्यात भेद हैं भवाश्रिय जघन्य २५६ उत्कृष्ट १६७७७२१६ आवलिका तक अंतर्मुहूर्त ही कहा जाता है) सूक्ष्म पृथ्वीकाय का प्रश्न ? अहो गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की [illegible] । सूक्ष्म पृथ्वीकाय की भी जघन्य

सूत्र

सत्तवास सहस्साइं, अपज्जत्तय आउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय आउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण सत्तवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ सुहुम आउकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्ताणय जहा सुहुम पुढविकाइयाणं जहा भाणियव्वं ॥ बायर आउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवास सहस्साइं ॥ अपज्जत्त बायर आउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्त बायर आउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ४ ॥ तेउकाइयाणं भंते ! केवइयं कालठिई पण्णत्ता ?

अर्थ

हजार वर्ष की, अपर्याप्त अप्काय की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त अप्काय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट सात हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कमकी. सूक्ष्म अप्कायकी औधिक स्थिति, अपर्याप्तकी और पर्याप्त की जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की जानना. बादर अप्काय की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट सात हजार वर्ष की, बादर अप्काय के अपर्याप्त की जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और बादर अप्काय के पर्याप्त की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट सात हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम की जानना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! तेउकाय की कितने काल की स्थिति कही है ? [illegible]

देसूणाइं ॥ अपज्जत्ताणं सुवण्णकुमाराणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय सुवण्णकुमाराणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण दोपालिओवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ सुवण्णकुमारीणं भंते ! देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं ॥ अपज्जत्तियाणं सुवण्णकुमारीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तियाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ एवं एएणं अभिला-

अर्थ

अन्तर्मुहुर्तकम ॥ अहो भगवन् ! सुवर्ण कुमार देवता की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम जघन्य दशहजार वर्ष की उत्कृष्ट कुछ कम दो पल्योपम की, अपर्याप्त सुवर्ण कुमार की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त सुवर्ण कुमार की जघन्य दशहजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट कुछ कम दो पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम ॥ सुवर्णकुमारि का देवी की पृच्छे, जघन्य दशहजार वर्ष की उत्कृष्ट कुछकम एक पल्योपम की, अपर्याप्त सुवर्ण कुमारिका की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, पर्याप्त सुवर्ण कुमारिका की जघन्य दशहजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट कुछकम एक पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम ॥ यों इस ही अभिलापक करके आगे के औधिक की, अपर्याप्त की और पर्याप्त की

सूत्र

सुहुम पुढविकाइयाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं अपज्जत्तय सुहुम पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्त सुहुम पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं बायर पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ॥ अपज्जत्तय बायर पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्त बायर पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ३ ॥ आउकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

अर्थ

उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय की भी जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की ही होती है. बादर पृथ्वीकाय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की, बादर पृथ्वीकाय के अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की है, और बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम की (सुकुमाल पृथ्वी की १ हजार वर्ष की, शुद्ध पृथ्वी की १२ हजार वर्ष की, निमक की १४ हजार वर्ष की, मनासिला की १६ हजार वर्ष की, कंकरी की १८ हजार वर्ष की और खर पृथ्वी पाषाणादि की २२ हजार वर्ष की स्थिति जानना) ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! अप्काया (पानी) की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट सात

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं ॥ अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तगाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिराइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ सुहुम तेउकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्ताणयं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ बायर तेउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिराइंदियाइं ॥ अपज्जत्त बायर तेउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं, अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥५॥ वाउकाइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ?

अर्थ

जघन्य अंतर्मुहूर्तकी उत्कृष्ट तीन अहोरात्रि [तीन दिन तीनरात] की, अपर्याप्त तेजस्कायकी जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तकी और पर्याप्त तेजस्कायकी जघन्य अंतर्मुहूर्तकी उत्कृष्ट तीन अहोरात्रिमें अंतर्मुहूर्त कमकी ॥ सूक्ष्म तेजस्काय की औधिक, पर्याप्त और अपर्याप्त की जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की ही जानना. ॥ बादर तेजस्काय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन अहो रात्रि की, बादर तेजस्काय के अपर्याप्त की जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और बादर तेजस्काय के पर्याप्त की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन अहोरात्रि में अंतर्मुहूर्त कम की जानना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय की कितनी स्थिति है ? अहो गौतम ! जघन्य

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिवास सहस्साइं, अपज्जत्त वाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्ताणय पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि वास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ सुहुम वाउकाइयाणं ओहियाणं, अपज्जत्ताणं पज्जत्ताणय जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ बायर वाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिवास सहस्साइं ॥ अपज्जत्ता बायर वाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्त बायर वाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ६ ॥ वणस्सइ काइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा !

अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष की, अपर्याप्त वायुकाय की जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की ॥ पर्याप्त वायुकाय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष में अंतर्मुहूर्त कम ॥ सूक्ष्म वायुकाय औधिक अपर्याप्त पर्याप्त की जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की बादर वायुकाय की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष की, बादर वायुकाय के अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त वायुकाय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वनस्पति काय की

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवास सहस्साइं ॥ अपजत्तवणस्सइ काइयाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्त वणस्सइ काइयाणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं॥ सुहुम वणस्सइ काइयाणं ओहियाण अपजत्ताणं पज्जत्ताणय जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ बादर वणस्सइकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवास सहस्साइं ॥ अपजत्त बादर वणस्सइ काइयाणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्त बादर वणस्सइ काइयाणं पुच्छा ?

कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की, अपर्याप्त वनस्पतिकाय की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की, पर्याप्त वनस्पतिकाय की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम की सूक्ष्म वनस्पतिकाय की औधिक अपर्याप्त पर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की, बादर वनस्पतिकाय की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की, अपर्याप्त बादर वनस्पति की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त बादर वनस्पति काय की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम की प्रत्येक वनस्पति की दश हजार वर्ष की स्थिति है किन्तु साधारण की औधिक के अपर्याप्त की और पर्याप्त की अन्तर्मुहूर्त की ही स्थिति होती है. गाथा—तत्थ

सूत्र

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ७ ॥ बेइंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं, अपज्जत्ताबेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्त बेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ८ ॥ तेइंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं एगूणपण्णं राइंदियाइं ॥ अपज्जत्त तेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्त तेइंदियाणं

अर्थ

पृथ्वी बादराणाय समुच्छिमा पज्जत्ताय, समुच्छिम पज्जत्ताय उक्कोसं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं विअजियंति ॥१॥)
॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! बेन्द्रिय की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बारह वर्ष की, अपर्याप्त बेन्द्रिय की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त बेन्द्रिय की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बारह वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! तेन्द्रिय की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट गुनपचास दिन की, अपर्याप्त तेन्द्रिय की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त की, और पर्याप्त तेन्द्रिय की जघन्य अन्तर्मुहूर्त

सूत्र

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवास सहस्साइं ॥ अपज्जत्तावणस्सइ काइयाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्ता वणस्सइ काइयाणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं॥ सुहुम वणस्सइ काइयाणं ओहियाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्ताणय जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ बादर वणस्सइकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवास सहस्साइं ॥ अपज्जत्त बायर वणस्सइ काइयाणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्त बायर वणस्सइ काइयाणं पुच्छा ?

अर्थ

कितनी स्थिति कही है ? अहो॰गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की, अपर्याप्त वनस्पतिकाय की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की, पर्याप्त वनस्पतिकाय की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम की. सूक्ष्म वनस्पतिकाय की औधिक अपर्याप्त पर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की, बादर वनस्पतिकाय की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की, अपर्याप्त बादर वनस्पति की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त बादर वनस्पति काय की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम की [प्रत्येक वनस्पति की दश हजार वर्ष की स्थिति है किन्तु साधारण की औधिक के अपर्याप्त की और पर्याप्त की अन्तर्मुहूर्त की ही स्थिति होती है, गाथा—सव्वे

? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णिय पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ संमुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, अपज्जत्तय संमुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय संमुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडि अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं,अपज्जत्तय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय

अर्थ

तीन पल्योपम में अन्तर्मुहूर्त कम (तीन पल्योपम युगल तिर्यंच आश्रिय जानना) संमूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिककी जघन्य अन्तर्मुहूर्तकी उत्कृष्ट पूर्व कोडी वर्षकी, अपर्याप्त समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की, और पर्याप्त समूर्च्छिम [असंज्ञी] पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व में कोडी वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम की. गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की, अपर्याप्त गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम

पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,उक्कोसेणं एगूणपण्णं राइंदियाइं अंतोमुहु-त्तूणाइं ॥ ९ ॥ चउरिंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा अपज्जत्ता चउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्त चउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १० ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख-जोणियाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ अपज्जत्तग पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं.॥.पज्जत्ताय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं.

अर्थ

की उत्कृष्ट गुनपचास दिन अन्तर्मुहूर्त कम ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! चौरिन्द्रिय की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट छ महीने की, चौरिन्द्रिय के अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और चौरिन्द्रिय के पर्याप्त की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट छ महिने में अन्तर्मुहूर्त कम ॥ १० ॥ अहो भगवन ! पंचिन्द्रिय तिर्यंच योनिक की कितने काल की स्थिति कही है? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की, अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट

सूत्र

समुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी, अपज्जत्तय समुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ! गोयमा जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय समुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा! गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पूव्वकोडी, अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ गब्भवक्कतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ अपज्जत्त गब्भवक्कतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं

अर्थ

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोटि वर्ष की, अपर्याप्त गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोटि वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम की. अहो भगवन् ! चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की, अपर्याप्त चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम

पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं एगूणपण्णं राइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ९ ॥ चउरिंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा अपज्जत्ता चउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्त चउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १० ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख-जोणियाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ अपज्जत्तग पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्ताय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं

अर्थ

की उत्कृष्ट गुनपचास दिन अन्तर्मुहूर्त कम ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! चौरिन्द्रिय की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट छ महीने की, चौरिन्द्रिय के अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और चौरिन्द्रिय के पर्याप्त की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट छ महिने में अन्तर्मुहूर्त कम ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की, अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट

मूल

संमुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं ॥ अपज्जत्तय संमुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय संमुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं, अपज्जत्तग गब्भ-

अर्थ

पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोडी की. अपर्याप्त उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोडी वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम की. संमूर्च्छिम उरपर सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट त्रेपन हजार वर्ष की. अपर्याप्त संमूर्च्छिम उरपर सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की, और पर्याप्त संमूर्च्छिम उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट त्रेपन

तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते! केवइयंकालंठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, अपज्जत्तय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा! गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

॥ अंतर्मुहूर्त कम ॥ जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष की, अपर्याप्त जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष अंतर्मुहूर्त कमकी. सम्मूर्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष की, अपर्याप्त जलचर सम्मूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त जलचर सम्मूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्वकोटी वर्ष अंतर्मुहूर्त कम की. गर्भज जलचर

मूल

? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा॥ संमुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेवण्णवास सहस्साइं ॥ अपज्जत्तय संमुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय संमुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेवण्णवास—सहस्साइं—अंतोमुहुत्तूणा ॥ गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्पथलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, अपज्जत्तग गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्प

अर्थ

जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष अंतर्मुहूर्त कम ॥ भुजपर सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बयालीस हजार वर्ष की ॥ अपर्याप्त संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की, जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बयालीस हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम की ॥ गर्भज भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय की

वक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ उरपरिसप्प-थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ अपज्जत्तय उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तग उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं

हजार वर्ष में अंतर्मुहूर्त कम ॥ गर्भज उरपरि सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व क्रोड़ वर्ष की, अपर्याप्त गर्भज उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त गर्भज उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व क्रोड़ वर्ष में अंतर्मुहूर्त कम भुजपरिसर्प स्थलचर (भुजाओं के बल से चलने वाले) पंचेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व क्रोड़ वर्ष की. अपर्याप्त भुजपरि सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त भुजपरि सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की

सूत्र

पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तग संमुच्छिम भुयपरिसप्पथलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं बायालीसं वास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ गब्भवक्कंतिय भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ अपज्जत्त गब्भवक्कंतिय भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय गब्भवक्कंतिय भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ॥ खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं-अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो ॥ अपज्जत्त खहयर

अर्थ

अंतर्मुहूर्त की, और पर्याप्त खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवे भाग व अंतर्मुहूर्त कम॥ संमूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बहुत्तर हजार वर्ष की, अपर्याप्त संमूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त संमूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बहुत्तर हजार वर्ष में

सूत्र

थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं-पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ॥ भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ अपज्जत्तय भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं॥पज्जत्तय भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा?गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ॥ संमुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बायालीसं वास सहस्साइं ॥ अपज्जत्तग संमुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर

अर्थ

परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त गर्भज भुजपरिसर्प-स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोटी वर्ष अंतर्मुहूर्त कम की ॥ अहो भगवन ! खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग ॥ अपर्याप्त खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट

पंचिदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्तूणं॥ संमुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावत्तरिवास सहस्साइं॥अपज्जत्तय संमुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥पज्जत्तय संमुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावत्तरिवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखिज्जइभागं ॥ अपज्जत्तय गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा? गोयमा जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि

अर्थ

अंतर्मुहूर्त कम ॥ समुच्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवे भाग की ॥ अपर्याप्त गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पल्योपम

पलिओवमं ॥ अपज्जत्त वाणमंतराणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय वाणमंतराणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ वाणमंतरीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ॥ अपज्जत्तियाणं वाणमंतरी देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तियाणं वाणमंतरीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ १३ ॥ जोतिसियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ?

उत्कृष्ट एक पल्योपम की। अपर्याप्त वाणव्यन्तर देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त वाणव्यन्तर देवता की जघन्य दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम और उत्कृष्ट एक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम. वाणव्यन्तरी देवाणी की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट आधे पल्योपम की, अपर्याप्त वाणव्यन्तर देवी की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त वाणव्यन्तर देवी की जघन्य दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट आधा पल्योपम अंतर्मुहूर्त कमकी ॥ १३ ॥ अब ज्योतिषी देवता की

मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ अपज्जत्त गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १२ ॥ वाणमंतराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं

अर्थ

की ॥ (भरतैरावत क्षेत्र में सुषमा सुषम कालआश्रित तीन पल्योपम की पूरी सुषम काल में दो पल्योपमकी, सुषमा दुःखम काल में एक पल्योपम की, दुःखमःसुषमकाल में कोटी पूर्व की, दुःखमकाल में सौ वर्ष से कुछ अधिक और दुःखमा दुःखमकाल में २० वर्षकी ॥ महाविदेह क्षेत्र में कोटी पूर्ववर्षकी, ॥ देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र में पूर्ण तीन पल्योपम की, हरीवास रम्यक वास क्षेत्र में दो पल्योपम की, हेमवय एरणवय क्षेत्र में एक पल्योपम की और अन्तर द्वीप में पल्योपम के असंख्यातवे भाग की उत्कृष्ट स्थिति होती है॥ इन क्षेत्र में रहने वाले चतुष्पद तिर्यंच की भी इतना ही आयुष्य जानना) ॥१२॥ अब वाणव्यन्तर देवकी स्थिति कहते हैं॥ अहो भगवन्! वाणव्यन्तर देवकी कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम! जघन्य दश हजार

पलिओवमं ॥ अपज्जत्त वाणमंतराणं देवाणं पुच्छा ?गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय वाणमंतराणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइ अंतोमुहुत्तूणाइ, उक्कोसेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ वाणमंतरीणं भंते ! देवीण केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेण अद्धपलिओवम ॥ अपज्जत्तियाणं वाणमंतरी देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तियाणं वाणमंतरीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूण ॥ १३ ॥ जोतिसियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ?

उत्कृष्ट एक पल्योपम की अपर्याप्त वाणव्यन्तर देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त की और पर्याप्त वाणव्यन्तर देवता की जघन्य दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम और उत्कृष्ट एक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम. वाणव्यन्तरी देवियों की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट आधे पल्योपम की, अपर्याप्त वाणव्यन्तर देवी की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त वाणव्यन्तर देवी की जघन्य दश हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट आधा पल्योपम अंतर्मुहूर्त कमकी ॥ १३ ॥ अब ज्योतिषी देवता की

सूत्र

गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससय सहस्समब्भहियं ॥ अपज्जत्त जोइसियाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं॥ पज्जत्तय जोइसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो उक्कोसेणं पलिओवमं वास सयसहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं॥ जोइसिणीणं भंते ! देवीणं केवइयं काल ठिइ पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स अट्ठभागो,उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासा वास सहस्समब्भहियं॥अपज्जत्तियाणं जोइसिणीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तियाणं जोइसिणीणं देवीणं पुच्छा ? जहण्णेणं पलिओवमस्स अट्ठ भागो अंतो-

अर्थ

स्थिति कहते हैं—अहो भगवन् ! ज्योतिषी देवता की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य पल्योपम के आठवे भाग उत्कृष्ट एक पल्योपम और एक लाख वर्ष की, अपर्याप्त ज्योतिषी देवता की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त ज्योतिषी देवता की जघन्य पल्योपम के आठवे भाग में अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष में अंतर्मुहूर्त कम. ज्योतिषी देवी की जघन्य पल्योपम के आठवे भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम पचास हजार वर्ष की. अपर्याप्त ज्योतिषी देवी की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त

सूत्र

पलिओवमं ॥ अपज्जत्त वाणमंतराणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तय वाणमंतराणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ वाणमंतरीणं भंते ! देवीण केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेण अद्धपलिओवमं ॥ अपज्जत्तियाणं वाणमंतरी देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तियाणं वाणमंतरीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूण ॥ १३ ॥ जोतिसियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ?

अर्थ

उत्कृष्ट एक पल्योपम की. अपर्याप्त वाणव्यन्तर देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त की और पर्याप्त वाणव्यन्तर देवता की जघन्य दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम और उत्कृष्ट एक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम. वाणव्यन्तरी देवीयों की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट आधे पल्योपम की, अपर्याप्त वाणव्यन्तर देवी की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त वाणव्यन्तर देवी की जघन्य दश हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट आधा पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम की ॥ १३ ॥ अब ज्योतिषी देवता की

गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससय सहस्समब्भाहियं ॥ अपज्जत्त जोइसियाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं॥ पज्जत्तय जोइसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो उक्कोसेणं पलिओवमं वास सयसहस्समब्भाहियं अंतोमुहुत्तूणं॥ जोइसिणीणं भंते ! देवीणं केवइयं काल ठिइ पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स अट्ठभागो,उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासा वास सहस्समब्भाहियं॥अपज्जत्तियाणं जोइसिणीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तियाणं जोइसिणीणं देवीणं पुच्छा ? जहण्णेणं पलिओवमस्स अट्ठ भागो अंतो-

स्थिति कहते हैं–अहो भगवन् ! ज्योतिषी देवता की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य पल्योपम के आठवे भाग उत्कृष्ट एक पल्योपम और एक लाख वर्ष की, अपर्याप्त ज्योतिषी देवता की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त ज्योतिषी देवता की जघन्य पल्योपम के आठवे भाग में अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्षमें अंतर्मुहूर्त कम. ज्योतिषी देवी की जघन्य पल्योपम के आठवे भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम पचास हजार वर्ष की. अपर्याप्त ज्योतिषी देवी की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त

त्तू णं, उक्कोसेण अद्धपलिओवमं पण्णासवाससहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ॥ चंदविमाणेणं देवाणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवम वाससय सहस्स मब्भहियं॥ चंदविमाणे भंते! अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं॥ चंदविमाणेण पज्जत्तग देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं चउभाग पलिओवम अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेण पलिओवम वाससय सहस्स मब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ॥ चंदविमाणेणं देवीणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वास सहस्सेहि अब्भहियं ॥ चंदविमाणेणं अपज्जत्ताणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, ॥ चंद-

की आयु स्थिति जघन्य पल्योपम की आठवे भाग में भी अन्तर्मुहूर्त कम और उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पचास हजार वर्ष में अन्तर्मुहूर्त कम. चंद्र विमानवासी ज्योतिषी देवता की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की. अपर्याप्त चंद्र विमानवासी देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त. और पर्याप्त चंद्र विमानवासी देवता की जघन्य पाव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष में अन्तर्मुहूर्त कम. चंद्र विमानवासी देवीयों की जघन्य पाव पल्योपम की

मुहुत्तूणो, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासवाससहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ॥ चंदविमाणेणं देवाणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवम वाससय सहस्स मब्भहियं॥चंदविमाणे भंते! अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं॥चंदविमाणेणं पज्जत्तग देवाणं पुच्छा? गोयमा!जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेण पलिओवमं वाससय सहस्स मब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ॥ चंदविमाणणं देवीणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वास सहस्सेहि अब्भहियं ॥ चंदविमाणेणं अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त, ॥ चंद-

की और पर्याप्त ज्योतिषी देवी को जघन्य पल्योपम की आठवे भाग में भी अन्तर्मुहूर्त कम और उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पचास हजार वर्ष में अन्तर्मुहूर्त कम. चंद्र विमानवासी ज्योतिषी देवता की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की. अपर्याप्त चंद्र विमानवासी देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त. और पर्याप्त चंद्र विमानवासी देवता की जघन्य पाव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष में अन्तर्मुहूर्त कम. चंद्र विमानवासी देवीयों की जघन्य पाव पल्योपम की

विमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वास सहस्सेहिं अब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ॥ सूरविमाणे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वास सहस्स मब्भहियं॥ सूरविमाणे अपज्जत्तय देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं॥ सूरविमाणे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं चउब्भाग पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्स मब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं॥ सूरविमाणे देवीणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिंवाससएहिमब्भहियं॥ सूरविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि

उत्कृष्ट आधा पल्योपम पचास हजार वर्ष की, अपर्याप्त चंद्र विमानवासी देवीयों की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त चंद्र विमानवासी देवीयों की जघन्य पाव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पचास हजार वर्ष में अंतर्मुहूर्त कम. सूर्य विमानवासी देवता की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक हजार वर्ष की. सूर्य विमानवासी अपर्याप्त देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त देवता की जघन्य पाव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट एक पल्योपम

अंतोमुहुत्तं ॥ सूरविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवम अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिंवाससएहिं अब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ॥ गहविमाणे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं ॥ गहविमाणे अपज्जत्तय देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं गहविमाणे पज्जत्त देवाणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं अंतोमुहुत्तूण, उक्कोसेण पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं॥ गहविमाणे देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवम उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ॥ गहविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि

एक हजार वर्ष में अन्तर्मुहूर्त कम. सूर्य विमानवासी देवीयों की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट आधा पल्योपम पांच सो वर्ष की. सूर्य विमानवासी अपर्याप्त देवीयों की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त सूर्य विमानवासी देवीयों की जघन्य पाव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट आधा पल्योपम पांच सो वर्ष में अन्तर्मुहूर्त कम की. ग्रह विमानवासी देवताओं की जघन्य स्थिति पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम की, अपर्याप्त ग्रह विमानवासी देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की. और पर्याप्त ग्रहविमानवासी देवता की जघन्य पाव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट एक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम. ग्रह-

सूत्र

उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ गहविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ णक्खत्त-विमाणं देवाणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ॥ णक्खत्तविमाणे अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसे-णवि अंतोमुहुत्तं, णक्खत्तविमाणे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! चउभाग पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ णक्खत्तविमाणे देवीणं पुच्छा?गोयमा!जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं उक्कोसेणं साइरेगंचउभागपलिओवमं

अर्थ

विमानवासी देवीयोंकी जघन्य पाव पल्योपमकी, उत्कृष्ट आधापल्योपमकी अपर्याप्त ग्रहविमानवासी देवीयों जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्तकी और पर्याप्त ग्रह विमानवासी देवीयोंकी जघन्य पाव पल्योपमकी अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट आधा पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम. नक्षत्र विमानवासी देवताओं की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट आधा पल्योपम की. नक्षत्र विमानवासी अपर्याप्त देवताओं की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की, नक्षत्र विमान-वासी पर्याप्त देवताओंकी जघन्य पाव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट आधा पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम. नक्षत्र विमानवासी देवीयों की जघन्य पल्योपम के चौथे भाग उत्कृष्ट पल्योपम का चौथा भाग कुछ अधिक.

अंतोमुहुत्तं ॥ सूरविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवम अंतोमुहुत्तूणं,उक्कोसेण अद्धपलिओवमं पंचहियासतएहिं अब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ॥ गहविमाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवम ॥ गहविमाणे अपज्जत्तय देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त गहविमाणे पज्जत्ता देवाणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं अंतोमुहुत्तूण,उक्कोसेण पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं॥ गहविमाणं देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण चउभाग पलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवम ॥ गहविमाणे अपज्जत्तियाण देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि

एक हजार वर्ष में अन्तर्मुहूर्त कम सूर्य विमानवासी देवीयों की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट आधा पल्योपम पांच सो वर्ष की सूर्य विमानवासी अपर्याप्त देवीयों की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त सूर्य विमानवासी देवीयों की जघन्य पाव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट आधा पल्योपम पांच सो वर्ष में अन्तर्मुहूर्त कम की ग्रह विमानवासी देवताओं की जघन्य स्थिति पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम की, अपर्याप्त ग्रह विमानवासी देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की. और पर्याप्त ग्रहविमानवासी देवता की जघन्य पाव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट एक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम. ग्रह-

सूत्र

उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ गहविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ णक्खत्त-विमाणं देवाणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलि ओवमं ॥ णक्खत्तविमाणे अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसे-णवि अंतोमुहुत्तं, णक्खत्तविमाणे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! चउभाग पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ णक्खत्तविमाणे देवीणं पुच्छा?गोयमा!जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं उक्कोसेणं साइरेगंचउभागपलिओवमं

अर्थ

अपर्याप्त ग्रहविमानवासी देवीयों जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त ग्रह विमानवासी देवीयोंकी जघन्य पाव पल्योपमकी अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट आधा पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम. नक्षत्र विमानवासी देवताओं की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट आधा पल्योपम की. नक्षत्र विमानवासी अपर्याप्त देवताओं की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की, नक्षत्र विमान-वासी पर्याप्त देवताओंकी जघन्य पाव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट आधा पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम. नक्षत्र विमानवासी देवीयों की जघन्य पल्योपम के चौथे भाग उत्कृष्ट पल्योपम का चौथा भाग कुछ अधिक.

सूत्र

अपज्जत्तगाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ णक्खत्तविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं साइरेगं चउभाग पलिउवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ ताराविमाणे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं चउभाग पलिओवमं ॥ ताराविमाणे अपज्जत्तग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त ॥ ताराविमाणे पज्जत्तग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेण चउभाग पलिओवम अंतोमुहुत्तूणं ॥ ताराविमाणे देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेण अट्ठभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं साइरेगं

अर्थ

अपर्याप्त नक्षत्र विमानवासी देवियों की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की, और नक्षत्र विमानवासी पर्याप्त देवियों की जघन्य पल्योपम के चौथे भागमें अन्तर्मुहूर्त कम, उत्कृष्ट कुछ अधिक पल्योपम का चौथा भागमें अंतर्मुहूर्त कम. तारा देवताओं की जघन्य पल्योपम का आठवा, उत्कृष्ट पल्योपम का चौथा भाग अपर्याप्त तारा देवताकी जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की, और पर्याप्त तारादेवताकी जघन्य पल्योपमका आठवे भागमें अंतर्मुहूर्त कम, उत्कृष्ट पल्योपमका आठवे भाग मे अंतर्मुहूर्त कम तारा विमानवासी देवीकी जघन्य पल्योपम के आठवे भाग उत्कृष्ट पल्योपम के आठवे भाग कुछ अधिक. अपर्याप्त ताराविमानवासी

सूत्र

जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ॥ अपज्जत्तियाणं वेमाणिणीणं देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १५॥सोहम्मेणं भंते ! कप्पेणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ॥ सोहम्मेकप्पे अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ सोहम्मेकप्पे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ सोहम्मेकप्पे देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं ॥

अर्थ

पचावन पल्योपम की अपर्याप्त वैमानिक देवीयों की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की पर्याप्त वैमानिक देवीकी जघन्य पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम ॥ १५ ॥ सौधर्म देवलोक के देवता की जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट दो सागरोपम, अपर्याप्त देवता की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त देवताकी जघन्य एक पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट दो सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम ॥सौधर्म कल्प वासी देवीयोंकी जघन्य एकपल्योपमकी उत्कृष्ट पचास पल्योपमकी,अपर्याप्त सौधर्म देवलोकवासी देवीयोंकी

सूत्र

अट्ठभाग पलि... मं ॥ताराविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं॥ ताराविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभाग पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं,उक्कोसेणं साइरेगं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥१४ ॥ वेमाणियाणं भंते ! देवाणं कवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं तेत्तिसं सागरोवमाइं ॥ अपज्जत्तय वेमाणियाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, ॥ पज्जत्तग वेमाणियाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवम अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ वेमाणियाणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा

अर्थ

देवीयों की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की, और पर्याप्त ताराविमान वासी देवीयों जघन्य पल्योपम का आठवा भाग अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट कुछ अधिक पल्योपम का आठवा भाग अंतर्मुहूर्त कम ॥ १४ ॥ अब वैमानिक देवताओं की स्थिति कहते हैं. अहो भगवन् ! वैमानिक देवता की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम! जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की,अपर्याप्त वैमानिक देवता की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त वैमानिक देवता की जघन्य एक पल्योपम की अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम ॥ वैमानिक देवीयों की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट

सूत्र

जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेण पणपण्णं पलिओवमाइं ॥ अपज्जत्तियाणं वेमाणिणीणं देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १५ ॥ सोहम्मेणं भंते ! कप्पेणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ॥ सोहम्मेकप्पे अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ सोहम्मेकप्पे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ सोहम्मेकप्पे देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं ॥

अर्थ

पचावन पल्योपम की अपर्याप्त वैमानिक देवीयों की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की पर्याप्त वैमानिक देवीकी जघन्य पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम ॥ १५ ॥ सौधर्म देवलोक के देवता की जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट दो सागरोपम, अपर्याप्त देवता की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त देवता की जघन्य एक पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट दो सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम ॥ सौधर्म कल्प वासी देवीयोंकी जघन्य एकपल्योपमकी उत्कृष्ट पचास पल्योपमकी, अपर्याप्त सौधर्म देवलोकवासी देवीयोंकी

सूत्र

सोहम्मेकप्पे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ सोहम्मेकप्पे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं॥ सोहम्मेकप्पे परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं ॥ सोहम्मेकप्पे अपज्जत्तिआणं परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ सोहम्मेकप्पे पज्जत्तियाणं परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं॥सोहम्मेकप्पे अपज्जत्तियाणं अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा?गोयमा!

अर्थ

जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की, पर्याप्त सुधर्म देवलोकवासी देवियों की जघन्य एक पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम, उत्कृष्ट पचास पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम. सौधर्म कल्प की परिग्रही देवी की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की, अपर्याप्त सौधर्म देवलोकवासी परिग्रही देवी की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की, पर्याप्त सौधर्म देवलोक वासी परिग्रही देवीकी जघन्य एक पल्योपम अन्तरमुहूर्त क. उत्कृष्ट सात पल्योपम अन्तर मुहूर्त ॥ सौधर्म देवलोक वासी अपरिग्रही देवीयोंकी जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट पचास पल्योपम

मूल

जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ॥ अपज्जत्तियाणं वेमाणिणीणं देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पज्जत्तियाणं देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १५ ॥ सोहम्मेणं भंते ! कप्पेणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ॥ सोहम्मकप्पे अपज्जत्तग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ सोहम्मकप्पे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ सोहम्मेकप्पे देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं ॥

अर्थ

पचावन पल्योपम की अपर्याप्त वैमानिक देवीयों की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की पर्याप्त वैमानिक देवीकी जघन्य पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम ॥ १५ ॥ सौधर्म देवलोक के देवता की जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट दो सागरोपम. अपर्याप्त देवता की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त देवताकी जघन्य एक पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट दो सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम ॥ सौधर्म कल्प वासी देवीयोंकी जघन्य एक पल्योपमकी उत्कृष्ट पचास पल्योपमकी, अपर्याप्त सौधर्म देवलोकवासी देवीयोंकी

सूत्र

सोहम्मेकप्पे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ सोहम्मेकप्पे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तुणं, उक्कोसेण पण्णासं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं॥ सोहम्मकप्पे परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं ॥ सोहम्मेकप्पे अपज्जत्तिआणं परिग्गाहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ सोहम्मेकप्पे पज्जत्तियाणं परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेण सत्तपलिओवमाइं। अंतोमुहुत्तूणाइं परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पण्णास पलिओवमाइं॥सोहम्मेकप्पे अपज्जत्तियाणं अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा?गोयमा!

अर्थ

जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की, पर्याप्त सुधर्म देवलोकवासी देवीयों की जघन्य एक पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम, उत्कृष्ट पचास पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम. सौधर्म कल्प की परिग्रही देवी की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की, अपर्याप्त सौधर्मा देवलोकवासी परिग्रही देवी की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की, पर्याप्त सौधर्म देवलोक वासी परिग्रही देवीकी जघन्य एक पल्योपम अन्तरमुहुर्त क उत्कृष्ट सात पल्योपम अन्तर मुहुर्त ॥ सौधर्मा देवलोक वासी अपरिग्रही देवीयोंकी जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट पचास पल्योपम

सूत्र

जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ सोहम्मे पज्जत्तियाणं अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं,उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १६ ॥ ईसाणे कप्पे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगंपलिओवमं, उक्कोसेण साइरेगाइं दो सागरोवमाइं, ईसाणे कप्पे अपज्जत्तय देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ ईसाणे कप्पे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण साइरेग पलिओवमंअंतोमुहुत्तूणं,उक्कोसेण साइरेगाइं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ईसाणे कप्पे देवीणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं

अर्थ

अपर्याप्त सौधर्म देवलोक वासी अपरिगृही देवीयों की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की और पर्याप्त सौधर्म देवलोक वासी अपरिगृही देवीयोंकी जघन्य एक पल्योपम अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट पचास पल्योपम अन्तर मुहूर्त कम ॥१६॥ ईशान देवलोक वासी देवताकी जघन्य कुछ (पल्योपम के असंख्यातवे भाग) अधिक पल्योपम की उत्कृष्ट कुछ(पल्योपम के असंख्यातवे भाग)अधिक दोसागरोपमकी अपर्याप्त ईशान देवलोक के देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की पर्याप्त ईशान देवलोक के देवताकी जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपम में अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट कुछ अधिक दोसागरोपम में अन्तर मुहूर्त कम॥ ईशान देवलोककी देवीकी

सूत्र

साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ॥ ईसाणे कप्पे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ ईसाणे कप्पे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साईरेगं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ईसाणे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं णवपलिओवमाइं. ईसाणे कप्पे अपज्जत्तियाणं परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं॥ईसाण कप्पे पज्जत्तियाणं परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं

अर्थ

जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम. अपर्याप्त ईशान देवलोक के देवीकी जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की. पर्याप्त ईशान देवलोक वासी देवीयों की जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपम अन्तर मुहूर्त, कम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम अन्तर मुहूर्त कम ॥ ईशान देवलोक वासी परिग्रही देवीयोंकी जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपम की उत्कृष्ट नव पल्योपम की, अपर्याप्त ईशान देवलोक वासी परिग्रही देवीयोंकी जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्तकी और पर्याप्त ईशान देवलोक वासी परिग्रहीदेवीयोंकी जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपमें अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट नवपल्योपम में अन्तर मुहूर्त कम॥ईशान देवलोक वासी परिग्रही

सूत्र

पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं नवपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाणं देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ॥ ईसाणकप्पे अपज्जत्तियाणं अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ ईसाणे कप्पे पज्जत्तियाणं अपरिग्गहियाण देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ उक्कोसेण पणपण्णं पलिओवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १७ ॥ सणंकुमार कप्पे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दो सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं ॥ सणंकुमार कप्पे अपज्जत्त देवाणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं॥

अर्थ

देवीयों की जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम की. अपर्याप्त ईशान देवलोक वासीनी अपरिग्रही देवीयों की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की पर्याप्त ईशान देवलोक वासी अपरिग्रही देवीयोंकी जघन्य कुछ अधिक एकपल्योपम अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम में अंतर्मुहूर्त कम॥(इसके आगे देवीयोंकी उत्पत्ति नहीं इसलिये दोनों देवलोक के आगेसे मात्र देवताओंकी स्थिति काही वर्णन करते हैं ॥१७॥ तीसरे सनत्कुमार देवलोकके देवताकी जघन्य स्थिति दो सागरोपमकी उत्कृष्ट सात सागरोपमकी अपर्याप्त सनत्कुमार देवताकी जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त सनत्कुमार देवलोक वासी देवकी

सणंकुमार कप्पे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दोसागरोवमाइं अंतो-मुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १८ ॥ माहिंदकप्पे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं, उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्तसागरोवमाइं ॥ माहिंदकप्पे अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ माहिंदकप्पे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं साइरेगाइं दोसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १९ ॥ बंभदेवलोग कप्पे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तसागरोवमाइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ॥ बंभलोए कप्पे अपज्जत्तग देवाणं

जघन्य दोसागरोपम अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट सात सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम ॥ १८ ॥ चौथे महेन्द्र देवलोक के देवता की जघन्य कुछ अधिक दोसागरोपम उत्कृष्ट कुछ अधिक सात सागरोपम, अपर्याप्त माहेन्द्र देवलोक के देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की, और पर्याप्त माहेन्द्र देवलोक के देवता की जघन्य कुछ अधिक दो सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम, उत्कृष्ट कुछ अधिक सात सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम ॥१९॥ पांचवे ब्रह्मदेवलोक के देवता की जघन्य सात सागरोपम

सूत्र

पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं नवपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ईसणे कप्पे अपरिग्गहियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ॥ ईसाणकप्पे अपज्जत्तियाणं अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ ईसाणे कप्पे पज्जत्तियाणं अपरिग्ग-हियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १७ ॥ सणंकुमारे कप्पे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दो सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं ॥ सणं कुमार कप्पे अपज्जत्त देवाणं पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं॥

अर्थ

देवीयों की जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम की. अपर्याप्त ईशान देवलोक वासी अपरिग्रही देवीयों की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की पर्याप्त ईशान देवलोक वासी अपरिग्रही देवीयों की जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपम अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम में अंतर्मुहूर्त कम॥(इनके आगे देवीयों की उत्पत्ति नहीं इसलिये दोनो देवलोक के भागसे मात्र देवताओंकी स्थिति काही वर्णन करते हैं ॥ १७ ॥ तीसरे सनत्कुमार देवलोकके देवताकी जघन्य स्थिति दोसागरोपमकी उत्कृष्ट सातसागरोपमकी अपर्याप्त सनत्कुमार देवताकी जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त सनत्कुमार देवलोक वासी देवकी

पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं नवपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ईसणे कप्पे अपरिग्गहियाणं देवीण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ॥ ईसाणकप्पे अपज्जत्तियाणं अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ इसाणे कप्पे पज्जत्तियाणं अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥ उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १७ ॥ सणंकुमारे कप्पे देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं दो सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं ॥ सणंकुमारे कप्पे अपज्जत्त देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं॥

देवीयों की जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम की. अपर्याप्त ईशान देवलोक वासीनी अपरिग्रही देवीयों की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की पर्याप्त ईशान देवलोक वासी अपरिग्रही देवीयोंकी जघन्य कुछ अधिक एकपल्योपम अन्तर मुहूर्तकम उत्कृष्ट पचावन पल्योपममें अंतर्मुहूर्तकम॥(इसके आगे देवीयोंकी उत्पत्ति नहीं इसलिये दोनो देवलोक के आगे मात्र देवताओंकी स्थिति काही वर्णन करते हैं ॥१७॥ तीसरे सनत्कुमार देवलोकके देवताकी जघन्य स्थिति दोसागरोपमकी उत्कृष्ट सातसागरोपमकी अपर्याप्त सनत्कुमार देवताकी जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त सनत्कुमार देवलोक वासी देवकी

पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्त ॥ बंभलोए कप्पे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं॥२०॥लंतए कप्प देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं दस सागरोवमाइं उक्कोसेणं चउदस सागरोवमाइं लंतगेकप्पे अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णणवि उक्कोसणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ लंतगकप्पे पज्जत्तग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेण चउदस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ २१ ॥ महासुक्के कप्पे देवाणं पुच्छा?गोयमा! जहण्णेणं चउदस सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ॥महा-

अर्थ

उत्कृष्ट दश सागरोपम, अपर्याप्त ब्रह्मदेवलोक के देवता की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की पर्याप्त ब्रह्मदेव-लोक के देवता की जघन्य सात सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम. उत्कृष्ट दश सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम ॥ २० ॥ छठे लंतक देवलोक के देवता की जघन्य दश सागरोपम उत्कृष्ट चउदह सागरोपम की, अपर्याप्त लंतक देवलोक के देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की, पर्याप्त लंतक देवलोक के देवता की जघन्य दश सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट चउदह सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम ॥ २१ ॥ सातवे महा शुक्र देवलोक के देवता की जघन्य चउदह सागरोपम की उत्कृष्ट सतरह सागरोपम की. अपर्याप्त महाशुक्र देवलोक के

सणंकुमारे कप्पे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दोसागरोवमाइं अंतो-मुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १८ ॥ माहिंदकप्पे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं, उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्तसागरोवमाइं ॥ माहिंदकप्पे अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ माहिंदकप्पे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं साइरेगाइं दोसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ १९ ॥ बंभदेवलोग कप्पे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तसागरोवमाइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ॥ बंभलोए कप्पे अपज्जत्तग देवाणं

जघन्य दोसागरोपम अन्तर मुहूर्त कम उत्कृष्ट सात सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम ॥ ॥ १८ ॥ चौथे महेन्द्र देवलोक के देवता की जघन्य कुछ अधिक दोसागरोपम उत्कृष्ट कुछ अधिक सात सागरोपम. अपर्याप्त महेन्द्र देवलोक के देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की. और पर्याप्त महेन्द्र देवलोक के देवता की जघन्य कुछ अधिक दो सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम. उत्कृष्ट कुछ अधिक सात सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम ॥१९॥ पांचवे ब्रह्मदेवलोक के देवता की जघन्य सात सागरोपम

पुच्छा गोयमा ! जहण्णणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त ॥ बंभलोए कप्पे पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं॥२०॥लंतए कप्पे देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं दस सागरोवमाइं उक्कोसेणं चउदस सागरोवमाइं लंतगकप्पे अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णणवि उक्कोसणवि अंतोमुहुत्तं ॥ लंतगकप्पे पज्जत्तगा देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं चउदस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ २१ ॥ महासुक्के कप्पे देवाणं पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं चउदस सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ॥महा-

उत्कृष्ट दश सागरोपम, अपर्याप्त ब्रह्मदेवलोक के देवता की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की पर्याप्त ब्रह्मदेवलोक के देवता की जघन्य सात सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम. उत्कृष्ट दश सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम ॥ २० ॥ छठे लंतक देवलोक के देवता की जघन्य दश सागरोपम उत्कृष्ट चउदह सागरोपम की, अपर्याप्त लंतक देवलोक के देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की, पर्याप्त लंतक देवलोक के देवता की जघन्य दश सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट चउदह सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम ॥ २१ ॥ सातवे महा शुक्र देवलोक के देवता की जघन्य चउदह सागरोपम की उत्कृष्ट सत्तरह सागरोपम की. अपर्याप्त महाशुक्र देवलोक के

सूत्र

सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ हिट्ठिमहिट्ठिम गेविज्जगे अपज्जत्तग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ हिट्ठिमहिट्ठिम गेविज्जग पज्जत्तग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूण उक्कोसेण तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइ ॥ २८ ॥ हेट्ठिम मज्झिम-गेविज्जग देवाण पुच्छा ? जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइ उक्कोसेणं चउव्वीसं सागरोवमाइं ॥ हेट्ठिममज्झिमगेविज्जग अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेण अंतोमुहुत्त ॥ हेट्ठिम मज्झिम गेविज्जग पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण तेवीसं सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं चोवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइ ॥ २९ ॥ हेट्ठिम उवरिम गेविज्जग देवाणं पुच्छा ? गोयमा !

अर्थ

सागरोपम, अपर्याप्त प्रथम ग्रैवेयक के देवता की जघन्य बावीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट तेवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम ॥ २८ ॥ नीचे की मध्य की दूसरी ग्रैवेयक के देवता की जघन्य तेवीस सागरोपम उत्कृष्ट चौवीस सागरोपम दूसरी ग्रैवेयक के अपर्याप्त देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और दूसरी ग्रैवेयक के पर्याप्त देवता की जघन्य तेवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट चौवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम ॥ २९ ॥ नीचे की ऊपर की तीसरी ग्रैवेयक के देवता की जघन्य चौवीस सागरोपम

सूत्र

अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ३१ ॥ मज्झिम मज्झिम गेविज्जग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण छव्वीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ॥ मज्झिम मज्झिम गेविज्जग अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं॥ मज्झिममज्झिमगेविज्जग पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं छव्वीसं सागरोवमाइं, अंतोमुहुत्तूणाइ. उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ३२ ॥ मज्झिम उवरिम गेविज्जग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइ. उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ॥ मज्झिम उवरिमगेविज्जग अपज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं ॥ मज्झिम

अर्थ

अन्तर्मुहूर्त कम॥३१॥ मध्य के मध्य याने पांचवे ग्रैवेयक के देवता की जघन्य छव्वीस सागरोपम उत्कृष्ट सत्तावीस सागरोपम. पांचवे ग्रैवेयक के अपर्याप्त देवता की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पांचवे ग्रैवेयक के पर्याप्त देवता की जघन्य छव्वीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट सत्तावीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त कम ॥ ३२ ॥ मध्य के ऊपर के छठे ग्रैवेयक के देवता की जघन्य सत्तावीस सागरोपम उत्कृष्ट अठावीस सागरोपम की, छठे ग्रैवेयक के अपर्याप्त देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और छठे

सूत्र

सागरोवमाइं॥ उवरिम मज्झिमगेविज्जग पज्जत्तग देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणंवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ उवरिम मज्झिम गेविज्जग पज्जत्तग देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण एगूणतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ३५ ॥ उवरिम उवरिम गेविज्जग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण तीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेण एकतीसं सागरोवमाइं ॥ उवरिम उवरिम गेविज्जदेवाणं अपज्जत्तगाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्त ॥ उवरिम उवरिम गेविज्जग पज्जत्तग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं,उक्कोसेणं एकतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं॥३६॥

अर्थ

सागरोपमकी उत्कृष्ट तीस सागरोपम की, आठवे ग्रैवेयक के अपर्याप्त देवता की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की और आठवे ग्रैवेयक के पर्याप्त देवता की जघन्य गुनतीस सागरोपम अन्तरमुहूर्त कम उत्कृष्ट तीस सागरोपम अन्तरमुहूर्त कम॥३५॥उपरके नवग्रैवेयक के देवता की जघन्य तीस सागरोपमकी उत्कृष्ट एकतीस सागरोपम की. नवग्रैवेयककी करे अपर्याप्त देवताकी जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त की और नवग्रैवेयक के पर्याप्त देवताकी जघन्य तीस सागरोपम अन्तर मुहूर्त कम की उत्कृष्ट इकतीस सागरोपम अन्तर मुहूर्त ॥३६॥ विजय वैजयंत

सूत्र

द्धग देवाणं भंते ! अपज्जत्तगाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, सव्वट्ठ सिद्धग देवाणं भंते ! पज्जत्तगाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहण्ण मणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई

अर्थ

देवताओंकी कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य भी अन्तर मुहुर्त की और उत्कृष्ट भी अन्तर मुहुर्त की. अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध महाविमना वासी पर्याप्त देवताओंकी कितने कालकी स्थिति कही है? अहो गौतम! अजघन्य मनुत्कृष्ट तेतीस सागरोपम में अन्तर मुहुर्त कम

रत्नप्रभा पृथ्वी १३ पाथडे का अलग २ आयुष्य.

पाथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	सागर	१० हजार वर्ष	१० लाख वर्ष	१० लाख वर्ष	क्रोड पूर्व	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	भाग	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	छेदक	०	०	०	०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
उत्कृष्ट	सागर	१० ह. वर्ष	१० ला वर्ष	क्रोड	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
	भाग	०	०	पूर्व	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
	छेदक	०	०		१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०

सूत्र

... देवाणं भंते ! अपज्जत्तगाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणावि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, सव्वट्ठ सिद्धग देवाणं भंते ! पज्जत्तगाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहण्ण मणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिइं

अर्थ

देवताओंकी कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य भी अन्तर मुहुर्त की और उत्कृष्ट भी अन्तर मुहुर्त की. अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध महाविमान वासी पर्याप्त देवताओंकी कितने कालकी स्थिति कही है? अहो गौतम! अजघन्य मनुत्कृष्ट तेतीस सागरोपम में अन्तर मुहुर्त कम

रत्नप्रभा पृथ्वी १३ पाथडे का अलग २ आयुष्य.

पाथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	सागर	१० हजार वर्ष	९० लाख वर्ष	९० लाख वर्ष	क्रोड पूर्व	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	भाग	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	छेदक	०	०	०	०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
उत्कृष्ट	सागर	९० हजार वर्ष	९० लाख वर्ष	क्रोड पूर्व	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	१
	भाग	०	०		१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
	छेदक	०	०		१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०

शर्कर प्रभा पृथ्वी में ११ पांथडे का आयुष्य.

पांथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
जघन्य	सा०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
	भा०	०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९
	छे०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
उत्कृष्ट	सा०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
	भा०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	०
	छे०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०

वालुप्रभा पृथ्वी के ९ पांथडे का आयुष्य.

पांथडे.		१	२	३	४	५	६	७	८	९
जघन्य	सा०	३	३	३	४	४	५	५	६	६
	भा०	०	४	८	३	७	२	६	१	५
	छे०	०	९	९	९	९	९	९	९	९
उत्कृष्ट	सा०	३	३	४	४	५	५	६	६	७
	भा०	४	८	३	७	२	६	१	५	०
	छे०	९	९	९	९	९	९	२	९	०

पंकप्रभा के ७ पांथडे का आयुष्य.

पांथडा.		१	२	३	४	५	६	७
जघन्य	सा०	७	७	७	८	८	९	९
	भा०	०	३	६	२	५	१	४
	छे०	७	७	७	७	७	७	७
उत्कृष्ट	सा०	७	७	८	८	९	९	१०
	भा०	३	६	२	५	१	४	०
	छे०	७	७	७	७	७	७	७

इग देवाणं भंते ! अपज्जत्तगाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणावि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, सव्वट्ठ सिद्धग देवाणं भंते ! पज्जत्तगाणं केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहण्ण मणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिइं

देवताओंकी कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य भी अन्तर मुहुर्त की और उत्कृष्ट भी अन्तर मुहुर्त की. अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध महाविमना वासी पर्याप्त देवताओंकी कितने कालकी स्थिति कही है? अहो गौतम! अजघन्य मनुत्कृष्ट तेतीस मागरोपम में अन्तर मुहुर्त कम

रत्नप्रभा पृथ्वी १३ पाथडे का अलग २ आयुष्य.

पाथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	सागर	१० हजार वर्ष	१० लाख वर्ष	१० लाख वर्ष	क्रोड पूर्व	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	भाग	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	छेदक	०	०	०	०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
उत्कृष्ट	सागर	१० हजार वर्ष	१० लाख वर्ष	क्रोड पूर्व	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
	भाग	०	०		१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
	छेदक	०	०		१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०

शर्कर प्रभा पृथ्वी में ११ पांथडे का आयुष्य.

पांथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
जघन्य	सा०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
	भा०	०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९
	छे०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
उत्कृष्ट	सा०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
	भा०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	०
	छे०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०

वालुप्रभा पृथ्वी के ९ पांथडे का आयुष्य.

पांथडे.		१	२	३	४	५	६	७	८	९
जघन्य	सा०	३	३	३	४	४	५	५	६	६
	भा०	०	४	८	३	७	२	६	१	५
	छे०	०	९	९	९	९	९	९	९	९
उत्कृष्ट	सा०	३	३	४	४	५	५	६	६	७
	भा०	४	८	३	७	२	६	१	५	०
	छे०	९	९	९	९	९	९	२	९	०

पंकप्रभा के ७ पांथडे का आयुष्य.

पांथडा.		१	२	३	४	५	६	७
जघन्य	सा०	७	७	७	८	८	९	९
	भा०	०	३	६	२	५	१	४
	छे०	७	७	७	७	७	७	७
उत्कृष्ट	सा०	७	७	८	८	९	९	१०
	भा०	३	६	२	५	१	४	०
	छे०	७	७	७	७	७	७	७

धूम्रप्रभा के ५ पाथडे आयुष्य.

	पाथडे	१	२	३	४	५
जघन्य	सा०	१०	११	१२	१४	१५
	भा०	०	२	४	१	३
	छ०	५	५	५	५	०
उत्कृष्ट	सा०	११	१२	१४	१५	१७
	भा०	२	४	१	३	०
	छ०	५	५	५	५	५

तम प्रभा के ३ पा० आयुष्य

	पाथडे	१	२	३
जघन्य	सा०	१७	१८	२०
	भा०	०	२	१
	छ०	३	३	३
उत्कृष्ट	सा०	१८	२०	२२
	भा०	२	१	०
	छ०	३	३	०

समस्तमप्रभा का एकही पाडे का आयुष्य

जघन्य.	उत्कृष्ट.
२२	३३

भुवनपति के देवता देवी की स्थिति का यंत्र.

	दक्षिण के		उत्तर के	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
देव असुर कुमार	१०००० वर्ष	१ सागरो०	१०००० वर्ष अ०	१. सागरो. अ.
देवी असुर कुमारी	१०००० वर्ष	३॥ पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	४॥ पल्यो.
नवनीकाय देवता	१०००० वर्ष	१॥ पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	२ पल्यो.
नवनीकाय देवी	१०००० वर्ष	॥। पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	१. पल्यो.

पृथ्वीकायाका आयुष्य

पृथ्वीकया	जघन्य	उत्कृष्ट
सुन्हा पृथ्वी	अन्तर मु०	१००० वर्ष
सुधा पृथ्वी	अन्तर मु०	१२००० वर्ष
बालु पृथ्वी	अन्तर मु०	१४००० वर्ष
मणशिला पृथ्वी	अन्तर मु०	१६००० वर्ष
शकरा पृथ्वी	अन्तर मु०	१८००० वर्ष
खर पृथ्वी	अन्तर मु०	२२००० वर्ष

तिर्यंच पंचेन्द्रिय का उत्कृष्टायुष्य.

	समूर्छिम	गर्भज
जलचर	क्रोडपूर्व वर्ष	१ क्रोड पूर्व वर्ष
स्थलचर	८४००० वर्ष	३ पल्योपम
खेचर	७२००० वर्ष	१ पल्यका असंख्या- तवे भाग
उरपर	५३००० वर्ष	१ क्रोडपूर्व वर्ष
भुजपर	४२००० वर्ष	१ क्रोडपूर्व वर्ष

२४ तीर्थंकरोंका आयुष्य

१ ऋषभनाथजी	८४ लाख पूर्व
२ अजितनाथजी	७२ लाख पूर्व
३ संभवनाथजी	६० लाख पूर्व
४ अभिनंदनजी	५० लाख पूर्व
५ सुमतिनाथजी	४० लाख पूर्व
६ पद्मप्रभुजी	३० लाख पूर्व
७ सुपार्श्वनाथजी	२० लाख पूर्व
८ चन्द्रप्रभजी	१० लाख पूर्व
९ सुविधिनाथजी	२ लाख पूर्व
१० शीतलनाथजी	१ लाख पूर्व
११ श्रेयांसनाथजी	८४ लाख वर्ष
१२ वासुपूज्यजी	७२ लाख वर्ष
१३ विमलनाथजी	६० लाख वर्ष
१४ अनंतनाथजी	३० लाख वर्ष
१५ धर्मनाथजी	१० लाख वर्ष
१६ शांतिनाथजी	१ लाख वर्ष
१७ कुंथुनाथजी	९५ हजार वर्ष
१८ अरनाथजी	८४ हजार वर्ष
१९ मल्लिनाथजी	५५ हजार वर्ष
२० मुनिसुव्रतजी	३० हजार वर्ष
२१ नमीनाथजी	१० हजार वर्ष
२२ रिष्टनेमीजी	१ हजार वर्ष
२३ पार्श्वनाथजी	१०० वर्ष
२४ वर्द्धमान स्वामीजी	७२ वर्ष

अकर्म भूमि मनुष्य	
देव कुरु	३ पल्योपम
उत्तर कुरु	३ पल्योपम
हरिवास	२ पल्योपम
रम्यक वास	२ पल्योपम
हेमवय	१ पल्योपम
एरण वय	१ पल्योपम
५६ अन्तर्द्वीप	पल्योपम असं. भाग

कर्मभूमी मनुष्य का उत्कृष्ट आयुष्य

अवसर्पणी में		उत्सर्पणी में
पहिला आरा	३ पल्योपम	२० वर्ष
दूसरा आरा	२ पल्योपम	१२० वर्ष
तीसरा आरा	१ पल्योपम	१ क्रोड पूर्व
चौथा आरा	१ क्रोड पूर्व	१ पल्योपम
पांचवा आरा	१२० वर्ष	२ पल्योपम
छट्ठा आरा	२० वर्ष	३ पल्योपम

ज्योतिषी का आयुष्य.

जघन्य	उत्कृष्ट
चंद्रदेव पावपल्य	एक पल्य १ लाख वर्ष
चंद्रदेवी पावपल्य	आधा पल्य ५० हजार वर्ष
सूर्यदेव पावपल्य	१ पल्य १ हजार वर्ष
सूर्यदेवी पावपल्य	आधा पल्य ५०० वर्ष.
ग्रहदेव पावपल्य	एक पल्य
ग्रहदेवी पावपल्य	आधा पल्य
नक्षत्रदेव पावपल्य	आधा पल्य
नक्षत्रदेवी पावपल्य	पावपल्य कुछ अधिक
तारा देव पावपल्य	पावपल्य कुछ अधिक
तारादेवी पल्य का आठवा भाग	पल्य का आठवा भाग कुछ अधिक

१२ चक्रवर्ती का आयुष्य

१	भरत राजा	८४ लाख पूर्व
२	सागर राजा	७२ लाख पूर्व
३	माघव राजा	५ लाख वर्ष
४	सनत्कुमार रा.	३ लाख वर्ष
५	शांति राजा	१ लाख वर्ष
६	कुंथु राजा	९५ हजार वर्ष
७	अर राजा	८४ हजार वर्ष
८	संभूम राजा	६० हजार वर्ष
९	महापद्म राजा	३० हजार वर्ष
१०	हरिषेण राजा	१० हजार वर्ष
११	जयचंद्र राजा	३ हजार वर्ष
१२	ब्रह्मदत्त राजा	७०० वर्ष

९ बलदेव का आयुष्य.

१	अचल	८५ लाख वर्ष
२	विजय	७५ लाख वर्ष
३	भद्र	६५ लाख वर्ष
४	सुप्रभ	५५ लाख वर्ष
५	सुनंद	१७ लाख वर्ष
६	आणंद	८५ हजार व.
७	नंद	६५ हजार व.
८	पद्म (राम)	१५ हजार व.
९	बल भद्र	१२०० वर्ष

९ वासुदेव के आयुष्य.

१	त्रिपुष्ट	८४ लाख वर्ष
२	द्विपृष्ट	७२ लाख वर्ष
३	स्वयंभू	६० लाख वर्ष
४	पुरुषोत्तम	३० लाख वर्ष
५	पुरुष सिं.	१० लाख वर्ष
६	पुरुष पुंड.	६५ हजार व.
७	दत्त	५६ हजार व.
८	लक्ष्मण	१२ हजा व.
९	कृष्ण	१ हजा व.

वासुदेव जितनाही प्रतिवासुदेवकाका आयुष्य होता है

आनत देवके आयुष्य का यंत्र					प्राणत देवका आयुष्य					आरणदेवका आयुष्य.					अच्युत देवका				
प्रतर	१	२	३	४	प्रतर	१	२	३	४	प्रतर	१	२	३	४	प्रतर	१	२	३	४
जघन्य	१८	१८	१८	१८	जघन्य	१९	१९	१९	१९	जघन्य	२०	२०	२०	२०	जघन्य	२१	२१	२१	२१
उत्कृष्ट	१८	१८	१८	१९	उत्कृष्ट	१९	१९	१९	२०	उत्कृष्ट	२०	२०	२०	२१	उत्कृष्ट	२१	२१	२१	२२
भाग	१	२	३	०	भाग	१	२	३	०	भाग	१	२	३	०	भाग	१	२	३	०
उपर	४	४	४	४	उपर	४	४	४	४	उपर	४	४	४	४	उपर	४	४	४	४

पण्णत्ता ॥ इतिपण्णवणाए भगवईए चउत्थं ठिईय पयं सम्मत्तं ॥ ४ ॥

की स्थिति कही है ॥ इति पन्नवणा भगवती का चौथा स्थिति नामक पद समाप्तः ॥ ४ ॥

यह सनत्कुमार देवलोक के देवता का आयुष्यका यंत्र

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
जघन्य	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
उत्कृष्ट	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७
भाग	५	१०	३	८	१	६	११	४	९	२	७	०
छेद	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२

माहेन्द्र देवलोक के देवता का आयुष्य का यंत्र
सर्व स्थान कुछ अधिक जानना.

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
जघन्य	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
उत्कृष्ट	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७
भाग	५	१०	३	८	१	६	११	४	९	२	७	०
छेदक	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२

ब्रह्मदेवलोक का आयुष्य.

प्रतर	१	२	३	४	५	६
जघन्य	७	७	७	७	७	७
उत्कृष्ट	७	८	८	९	९	१०
भाग	३	०	३	०	३	०
छेद	६	६	६	६	६	६

लांतक देवका आयुष्यका यंत्र

प्रतर	१	२	३	४	५
जघन्य	१०	१०	१०	१०	१०
उत्कृष्ट	१०	११	१२	१३	१४
भाग	४	३	२	१	०
छेद	५	५	५	५	५

महाशुक्रदेवका आयुष्य

प्रतर	१	२	३	४
जघ	१४	१४	१४	१४
उत्कृ	१४	१५	१६	१७
भाग	३	२	१	०
छेद	४	४	४	४

सहस्रारदेव का आयुष्य

प्रतर	१	२	३	४
जघ	१७	१७	१७	१७
उत्कृ	१७	१७	१७	१८
भाग	१	२	३	०
छेद	४	४	४	४

सूत्र

कुमाराणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! असुरकुमारे असुर कुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिइए चउट्ठाण-वडिए काल-वण्ण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, एवं नीलवण्ण पज्जवेहिं, लोहियवण्ण पज्जवेहिं-हालिद्दवण्ण पज्जवेहिं, सुक्किल्लवण्ण पज्जवेहिं, सुब्भिगंध पज्जवेहिं, दुब्भिगंध पज्जवेहिं, तित्तरस पज्जवेहिं, कडुयरस पज्जवेहिं, कसायरस पज्जवेहिं, अंबिलरस पज्जवेहिं महुररस पज्जवेहिं कक्खडफास पज्जवेहिं. मउयफास पज्जवेहिं, गरुयफास पज्जवेहिं, लहुयफास पज्जवेहिं, सीयफास पज्जवेहिं, उसिण फास पज्जवेहिं, णिद्धफास पज्जवेहिं, लुक्खफास पज्जवेहिं, आभिणि बोहिय नाण पज्जवेहिं, सुयणाण पज्जवेहिं,

अर्थ

भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि असुर कुमार को अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार, १ असुर कुमार से द्रव्य आश्रिय तुल्य हैं, प्रदेश से तुल्य है, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक (१ असंख्यात भाग हीन, २ संख्यात भाग हीन, ३ संख्यात गुण हीन और ४ असंख्यात गुण हीन) स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक और काला वर्ण पर्याय से छ स्थान हीनाधिक. ऐसे ही नील वर्ण पर्याय, रक्त वर्ण पर्याय, पीत वर्ण पर्याय, शुक्ल वर्ण पर्याय, सुरभिगंध पर्याय, दुरभिगंध पर्याय, तिक्त रस पर्याय, कटुक रस पर्याय, कषाय रस पर्याय, अम्बट रस पर्याय, मधुर रस पर्याय, कर्कश स्पर्श पर्याय, शीत स्पर्श पर्याय, उष्ण स्पर्श पर्याय, स्निग्ध स्पर्श पर्याय व रूक्ष स्पर्श पर्याय. वैसे ही

सूत्र

काइए पुढवी काइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सिय तुल्ले सियअब्भहिए, जइहीणे असंखिज्ज भागहिणेवा, संखिज्जभागहीणेवा, संखिज्जगुणहीणेवा असंखिज्ज गुणहीणेवा, अब्भहिए असंखिज्ज भाग मब्भहिएवा, संखिज्जभाग मब्भहिएवा, संखिज्ज गुणमब्भहिएवा, असंखिज्ज गुणमब्भहिएवा. ठिईए सियहीणे सियतुल्ले सिय मब्भाहिए; जइहीणे असंखिज्ज भागहीणेवा, संखिज्ज भागहिणवा, संखिज्ज गुणहीणवा अह अब्भहिएवा असंखिज्ज भाग मब्भाहिएवा, संखिज्ज भाग मब्भहि-

अर्थ

असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यातगुण अधिक व असंख्यातगुन अधिक, स्थिति आश्रिय स्थान हीन, स्थान तुल्य व स्थान अधिक है. यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन क्यों कि किसी का बावीस हजार वर्ष का संपूर्ण आयुष्य है और किस का एक समय कम बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है, २ संख्यात भाग हीन क्यों कि किसीका पूर्ण बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है और किसीका आवलिका कम बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है. वैसे ही संख्यात गुन हीन किसी का पूर्ण बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है और किसी का दो हजार वर्ष काही आयुष्य है. यों तीन स्थान पाते है परंतु चौथा स्थान नहीं पाता है क्यों कि एकेन्द्रिय में संख्यात वर्ष काही आयुष्य है. २५६ आवलिका का एक भव, ऐसे एक मुहूर्त में ६५५३६ भव होते हैं. यदि अधिक होवे तो असंख्यात भाग अधिक, संख्यात

गोयमा ! एवं वुच्चइ आउकाइयाणं अणंतापज्जवा पण्णत्ता ॥ ५ ॥ तेउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तेउकाइयाणं अणंतापज्जवा ? गोयमा ! तेउकाइयाए तेउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणं वडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध-रस-फास-मइ-अण्णाण-सुयअण्णाण-अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तेउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ ६ ॥ वाउकाइयाणं पज्जवा पुच्छा ?

मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन इन में षट्स्थान हीनाधिक हैं. अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि अप्काया को अनंत पर्यव कहे हैं. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! तेउकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! तेउकाया को अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि तेउकाया को अनंत पर्यव है ? अहो गौतम ! तेउकाया तेउकाया की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक, स्थिति में तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण गंध, रस स्पर्श, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षुदर्शन से षट् स्थान हीनाधिक है. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा है कि तेउकाया को अनंत पर्यव हैं. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाया को कितने पर्यव कहे हैं ?

सूत्र

गोयमा ! एवं वुच्चइ आउकाइयाणं अणंतापज्जवा पण्णत्ता ॥ ५ ॥ तेउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तेउकाइयाणं अणंतापज्जवा ? गोयमा ! तेउकाइयाए तेउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणं वडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध-रस-फास-मइ-अण्णाण-सुयअण्णाण-अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तेउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥६॥ वाउकाइयाणं पज्जवा पुच्छा ?

अर्थ

मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन इन में षट्स्थान हीनाधिक हैं. अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि अप्काया को अनंत पर्यव कहे हैं. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! तेउकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! तेउकाया को अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि तेउकाया को अनंत पर्यव है ? अहो गौतम ! तेउकाया तेउकाया की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक, स्थिति से तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण गंध, रस स्पर्श, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षुदर्शन में षट् स्थान हीनाधिक है. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा है कि तेउकाया को अनंत पर्यव हैं. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाया को कितने पर्यव कहे हैं ?

सूत्र

गोयमा ? वाउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ वाउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! वाउकाइए वाउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाण वडिए, वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं मइअण्णाण सुयअण्णाण अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, सेएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ वाउकाइयाणं अणंतापज्जवा पण्णत्ता ॥ ७ ॥ वणस्सइकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ वणस्सइ काइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! वणस्सइकाइए वण-

अर्थ

अहो गौतम ! वायुकाया के अनंत पर्याय कहे हैं. अहो भगवन् ! वायुकाया को अनंत पर्याय किस तरह कहे हैं ? अहो गौतम ! वायुकाया वायुकाया से द्रव्य आश्रिय तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक और पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन आश्रीय षट्स्थान हीनाधिक है॥७॥अहो भगवन्! वनस्पतिकाया के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! वनस्पतिकाया को अनंत पर्याय कहे हैं. अहो भगवन् ! वनस्पतिकाया को अनंत पर्याय किस तरह कहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! वनस्पतिकाया वनस्पति काया से द्रव्य आश्रीय तुल्य प्रदेश आश्रीय तुल्य, अवगाहना आश्रीय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति

स्सइकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईएतिट्ठाणवडिए, वण्णगंधरसफास मइअण्णाण सुयअण्णाण अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, से एणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ वणस्सइकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ ८ ॥ बेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! बेइंदि ॥ बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे, सियतुल्ले, सिय अब्भहिएवा ॥ जइहीणे असंखिज्जइ भागहीणेवा, संखिज्जइभागहीणेवा

अर्थ

आश्रीय तीन स्थान हीनाधिक, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन आश्रीय षट्स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि वनस्पति काया को अनंत पर्यव कहे हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! बेइन्द्रिय का अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि बेइन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! बेइन्द्रिय बेइन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य हैं प्रदेश से तुल्य हैं, अवगाहना आश्रीय स्यात् हीन स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं. यदि हीन हैं तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन, व असंख्यात गुण हीन हैं,

गोयमा ? वाउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ वाउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! वाउकाइए वाउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाण वडिए, वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं मइअण्णाण सुयअण्णाण अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ वाउकाइयाणं अणंतापज्जवा पण्णत्ता ॥ ७ ॥ वणस्सइकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ वणस्सइ काइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! वणस्सइकाइए वण-

अहो गौतम ! वायुकाया के अनंत पर्याय कहे हैं. अहो भगवन् ! वायुकाया को अनंत पर्याय किस तरह कहे हैं ? अहो गौतम ! वायुकाया वायुकाया से द्रव्य आश्रिय तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक और पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन आश्रीय षट्स्थान हीनाधिक हैं॥७॥अहो भगवन्! वनस्पतिकाया के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! वनस्पतिकाया को अनंत पर्याय कहे हैं. अहो भगवन् ! वनस्पतिकाया को अनंत पर्याय किस तरह कहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! वनस्पतिकाया, वनस्पति काया से द्रव्य आश्रीय तुल्य प्रदेश आश्रीय तुल्य, अवगाहना आश्रीय चार स्थान हीनाधिक; स्थिति

भंते! एवं वुच्चइ मणुस्साणं अणंता पज्जवा प०?गोयमा! मणुस्से मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्ण-गंध-रस - फास आभिणबोहियणाण सुयणाण ओहिणाण मणपज्जवणाण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले, तिहिंअण्णाणेहिं, तिहि दसणेहिय छट्ठाण वडिए, केवल दंसण पज्जवेहिं तुल्ले, सेएणट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चइ मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ ११ ॥ वाणमंतरा उगाहणट्ठयाए ठिइए चउट्ठाण

मनुष्य को अनंत पर्यव हैं? अहो गौतम! मनुष्य मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य हैं, प्रदेश से तुल्य हैं अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक क्योंकी मनुष्य में असंख्यात वर्षका आयुष्य भी है और वर्ण गंध, रस, स्पर्श, आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, तीन अज्ञान, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन और अवधि दर्शन इन आश्रिय छट्टस्थान हीनाधिक हैं, और केवल ज्ञान केवल दर्शन आश्रिय तुल्य हैं क्योंकि सब केवलज्ञान केवलदर्शन सदृश होते हैं उन में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं है. अहो गौतम! इस लिये मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ॥ ११ ॥ वाणव्यंतर का अवगाहना व स्थिति चार स्थान हीनाधिक हैं और वर्णादि आश्रिय छट्ट स्थान हीन

संखिज्जगुणहीणेवा, असंखिज्जगुणहीणेवा. अह अब्भहिए असंखिज्जइ भागमब्भहिएवा, संखिज्जइभाग मब्भहिएवा,संखिज्जगुण मब्भहिएवा,असंखिज्जगुण मब्भहिएवा॥ ठिईए तिट्ठाण वडिए,वण्ण गंध रस फास आभिणिबोहियणाण सुयनाण मइअण्णाण सुयअण्णाण अचक्खुदंसणं पज्जवेहिय छट्ठाणं वडिए,सेएणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ बेइंदियाणं अणंतापज्ज-वा पण्णत्ता॥एवं तेइंदियाणवि, नवरं दो दंसणा, चक्खुदंसणअचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए॥१॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं पज्जवा जहा नेरइयाणं तहा भाणियव्वा ॥१०॥मणुस्साणं भंते! केवइया पज्जवा? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥सेकेणट्ठेणं

अर्थ ♦ वाले अधिक है तो असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यातगुन अधिक व असंख्यातगुण अधिक. स्थिति आश्रित तीन स्थान हीनाधिक, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान, मति अज्ञान श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन के पर्यायों आश्रित षट्स्थान हीनाधिक हैं. अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा गया है कि बेइन्द्रियों को अनंत पर्याय कहे हैं. ऐसेही तेइन्द्रिय का जानना. और चतुरिन्द्रिय का भी ऐसेही कहना परन्तु दर्शन दो जानना. चक्षु दर्शन व अचक्षु दर्शन इन आश्रित षट्स्थान हीना- धिक ॥९॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याय नारकी जैसे कहना ॥१०॥ अहो भगवन्! मनुष्य को कितने पर्याय कहे हैं? अहो गौतम! मनुष्य को अनंत पर्याय कहे हैं? अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि

अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ उक्कोसोगाहणगाणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ उक्को- सोगाहणयाण नेरइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! उक्कोसोगाहणए नेरइए, उक्कोसोगाहणस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले,ठिईए, सियहीणे, सियतुल्ले सिय अब्भहिए ॥ जइहीणे असंखिज्जइ भागहीणेवा, संखिज्जइ भागहीणेवा, अह अब्भहिए असंखिज्ज भागमब्भहिएवा, संखिज्ज भागमब्भहिएवा ॥ वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं तिहिंनाणेहि तिअण्णाणेहिं, तिहिंदंसणेहिं, छट्ठाण वडिए

नारकी की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की होती है. वर्ण,गंध,रस, स्पर्श,तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक है अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहना वाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! उत्कृष्ट ५०० धनुष्य की अवगाहनावाले नेरिये को कितने पर्यव कहे हैं? अहो गौतम! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से उत्कृष्ट अवगा- हनावाले नेरिये को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! उत्कृष्ट अवगाहनावाले नारकी उत्कृष्ट अवगा- हनावाले नारकी से द्रव्य आश्रिय तुल्य हैं, प्रदेश आश्रिय तुल्य हैं, अवगाहना आश्रिय है तुल्य क्यों कि

वड्डिया, वण्णाईहिं छट्ठाण वडिया ॥ जोइसिय वेमाणियावि एवं चेव णवरं ठिईए तिट्ठाण वडिया ॥ १२ ॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णोगाहणए नेरइए जहण्णोगाहणगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाण वडिए॥वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं तिहिंनाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं, तिहिं दंसणेहिं छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाणं नेरइयाणं

अर्थ

जानना. ज्योतिषी वैमानिक का भी वैसे ही कहना परंतु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक क्योंकि मात्र असंख्यात वर्ष की स्थिति है परंतु संख्यात वर्ष की स्थिति नहीं है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी को कितने पर्यव कहे ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले नारकी को अनंत पर्यव कहे ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी जघन्य अवगाहनावाले नारकी की साथ द्रव्य से तुल्य. प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य क्यों कि जघन्य अवगाहना सब की एकसी होती है, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक क्यों कि जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग की अवगाहनावाले

...वा, ... हिएवा, संखेज्ज भागमब्भाहिएवा, संखेज्जगुण मब्भाहिएवा, असंखेज्जगुण मब्भाहिएवा. ठीईए सियहीणे, सियतुल्ले सिय अब्भहीए जइहीणे असंखेज्ज भागहीणेवा. संखेज्जभागहीणेवा असंखेज्जगुणहीणेवा, संखेज्जगुणहीणेवा अह-अब्भहिए असंखेज्जइ भाग अब्भाहिएवा, संखेज्जइ भाग अब्भहिएवा, संखेज्जगुण अब्भहिए, असंखेज्जगुण अब्भहिएवा वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं, तिहिं णाणेहिं, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाण वडिए ॥ सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवंवुच्चइ अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ जहण्णठिईयाणं भंते !

अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि मध्यम अवगाहना वाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं अहो गौतम! मध्यम अवगाहनावाले नारकी मध्यम अवगाहनावाले नारकी की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं. यदि हीन होवे तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असंख्यात गुण हीन हैं. और अधिक होवे तो असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक व असंख्यातगुण अधिक हैं. यों चार स्थान हीनाधिक हैं. स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं.

सूत्र

ठिईएवि, एवं नवरं सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए, जहण्णगुण कालगाणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? सेकेण-ट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए नेरइए जहण्णगुणकालगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिइए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले,

अर्थ

है. अहो गौतम! इसलिये जघन्य स्थितिवाले नारकी को अनंतपर्याय कहे हैं. ऐसेही उत्कृष्ट स्थिति वाले नारकी का जानना वैसेही मध्यम स्थितिवाले नारकीका जानना, परंतु स्थिति आश्रिय चारस्थान हीनाधिक जानना अहो भगवन्! जघन्य कालागुणवाले नारकी को कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य काला गुणवाले नारकी को अनंत पर्याय कहे हैं? अहो गौतम ! जघन्य कालागुणवाले नारकी जघन्य कालागुण वाले नारकी की साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक. स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, काला वर्ण पर्याय आश्रिय तुल्य और शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के पर्याय आश्रिय वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक हैं; इस लिये अहो गौतम ! जघन्य काला गुणवाले [illegible]

सूत्र

नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता. सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णठिइए नेरइए जहण्णणं ठिइए नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिइए तुल्ले, वण्णं गंध रस फास पज्जवेहि तिहिनाणेहि तिहिअन्नाणेहि तिहिंदंसणेहिं छट्ठाण वडिए, सेएणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसठिईएवि, एवं अजहण्णमणुक्कोस-

अर्थ

णव हीन है तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असंख्यात गुण हीन है. पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, व आठ स्पर्श के पर्यव की साथ वैसे ही तीनज्ञान, व तीन दर्शन तीन अज्ञान मे षट् स्थान हीनाधिक हैं. अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा गया है कि मध्यम अवगाहनावाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले नारकी को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य स्थितिवाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले नारकी जघन्य स्थितिवाले नारकी की साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य हैं, प्रदेश आश्रिय तुल्य हैं, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक हैं, स्थिति आश्रिय तुल्य हैं, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव मे वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक

बोहिय नाणी नेरइयए जहण्णाभिबोहिय नाणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,पएसट्ठयाए तुल्ले,ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए,आभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं तुल्ले, सुयनाण पज्जवेहिं, ओहिणाण पज्जवेहिं, तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, अण्णाणनत्थि, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिबोहिय णाणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि,अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि,एवं चेव.नवरं अभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, एवं सुयणाणीवि, ओहिणाणीवि, एवं चेव णवरं जस्सणाणा तस्स

पर्यव की साथ षट्स्थान हीनाधिक, आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ तुल्य, श्रुत ज्ञान अवधि ज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक है. इन में अज्ञान नहीं होने से ग्रहण नहीं कीये हैं. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य आभिनि बोधिक ज्ञान वाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनि बोधिक ज्ञान का जानना. मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञान का भी वैसे ही कहना परंतु आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ षट्स्थान हीनाधिक कहना, ऐसेही श्रुतज्ञान व अवधिज्ञान का कहना. तीन ज्ञान का कहा वैसे ही तीन अज्ञान का कहना परंतु जहां ज्ञान होवे वहां अज्ञान नहीं कहना और

सूत्र

सेएणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णचक्खुदंसणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ एवं उक्कोसचक्खुदंसणीवि, अजहण्णमणुक्कोसचक्खुदंसणीवि, एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं अचक्खुदंसणीवि, ओहिदंसणीवि॥ १३॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते! असुरकुमाराणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहण्णोगाहणए असुरकुमारे जहण्णोगाहणगस्स असुरकुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णादिहिं छट्ठाण वडिए, तिहिं णाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेणं गोयमा!

अर्थ

गया है कि जघन्य चक्षुदर्शनी नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट चक्षुदर्शनी को भी जानना. मध्यम चक्षुदर्शन का वैसेही कहना परंतु चक्षुदर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक कहना. ऐसे ही अचक्षुदर्शन व अवधि दर्शन का कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार को कितने पर्यव कहे हैं? अहो गौतम! अनंत पर्यव कहे हैं? अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार को अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम! जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण गंध रस स्पर्श, तीन ज्ञान तीन अज्ञान व तीन

...नमर्थान ॥ जहण्ण चक्खुदंसणीणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? ...ण, णवरं जस्स अण्णाणा तस्स-
गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ जहण्णचक्खु दंसणीण
नेरइयाणं अणंता पज्जवा प० ? गोयमा! जहण्णचक्खुदंसणीणं णेरइए जहण्णचक्खुदंसणि
णाणस्सणेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिइए
चउट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं तिहिंणाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं छट्ठाणवडिए,
चक्खूदंसण पज्जवेहिंतुल्ले, अचक्खुदंसण पज्जवेहिं ओहिदंसण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए

अर्थ

जहां अज्ञान होवे वहां ज्ञान नहीं कहना. अहो भगवन् ! जघन्य चक्षुदर्शनी नारकी को कितने पर्यव
कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य चक्षु दर्शनी
नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य चक्षुदर्शनी नारकी जघन्य चक्षु दर्शनी नारकीकी
साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चारस्थान
हीनाधिक, वर्ण, गंध रस व स्पर्श से तीन ज्ञान तीन अज्ञान, अचक्षु दर्शन व अवधि दर्शन की साथ
षट् स्थान हीनाधिक जानना. और चक्षुदर्शन की साथ तुल्य कहना. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा,

सूत्र

ठिइए तट्ठाणवडिए, वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, जहण्णोगाहणगाणं पुढवि-काइयाणं अणता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसोगाहणएणवि, अजहण्णमणुक्कोसोगाह-णएवि, एवं चेव, णवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए ॥ जहण्णे ठिईयाणं भंते ? पुढवि-काइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाण पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णट्ठिईए पुढविकाइए जहण्णठिईयस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए

अर्थ

प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठस्पर्श, दो अज्ञान, व अचक्षुदर्शन के पर्यव की साथ षट्स्थान हीनाधिक हैं. इसलिये अहो गौतम! जघन्य अवगाहनावाले पृथ्वी काया को अनंत पर्यव कहे हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहनावाले का जानना. मध्यम अवगाहनावाले पृथ्वी काया का भी वैसे ही जानना. परंतु स्वस्थान आश्रिय चार स्थान हीना-धिक जानना. अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया को अनंत पर्यव किस कारन से कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया की साथ

एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाणं असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ उक्कोसोगा-हणएवि एवं ॥ अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि, एवं चेव, णवरं सट्ठाणे-चउट्ठाणवडिए, एवं जहा नेरइया तहा असुरकुमारा, एवं जाव थणियकुमारा ॥ १४ ॥ जहण्णो-गाहणगाणं भंते ! पुढविकाइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, जहण्णोगाहणगाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए पुढविकाइए जहण्णोगाहणस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले,

तीन दर्शन की पर्याय छट स्थान हीनाधिक, अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अव-गाहना वाले असुर कुमार की अनंत पर्याय कही हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का कहना. मध्यम अवगाहना का भी वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रित चार स्थान हीनाधिक कहना. ऐसे ही शेष सब जैसे नारकी का कहा वैसे ही कहना जैसे असुर कुमार का कहा वैसेही स्तनित कुमार पर्यंत सब का कहना. ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया से द्रव्य से तुल्य

सूत्र

काइया ॥ १५ ॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते ! वेदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाणं वेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए वेइंदिए जहण्णोगाहणगस्स वेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,पएसट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाणं वेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ एवं उक्कोसोगाहणएवि णवरं णाणणत्थी ॥ अजहण्णो मणुक्कोसोगाहणए जहा जहण्णोगाहणए, णवरं सट्ठाणे

अर्थ

दर्शन का जानना. जैसे पृथ्वी कायाका कहा वैसे ही अप्काया यावत् वनस्पतिकाया का जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना में तुल्य, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, दो ज्ञान, दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन के पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट

पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णगुण-कालयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णगुणकालए बेइंदिए जहण्णगुणकालयस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठितीए तिट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं दोहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता; एवं उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि, एवं चेव णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं पंचवण्णा दो गंधा,

दो ज्ञान अधिक कहना. मध्यम स्थितिवाले का उत्कृष्ट स्थितिवाले जैसे कहना परंतु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक जानना. जघन्य गुणकाला बेइंद्रिय की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला बेइंद्रिय को अनंत पर्यव किस कारन से कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला बेइंद्रिय जघन्य गुण काला बेइंद्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य और शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के पर्यव वैसे ही दो ज्ञान दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि

...ठाणवडिए॥ जहण्णठितीयाणं भंते! बेइंदियाणं पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, सेकेणट्ठेणं भंते! बेइंदियाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णठिईए बेइंदिए जहण्णठितियस्स बेइंदियस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पदेसट्टयाए तुल्ले ओगाहणट्टयाए चउट्ठाण वडिए, ठितीएतुल्ले वण्ण गंध रस फास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्ण ठिईयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता. एवं उक्कोसठितीएवि, णवरं दोणाणा अब्भहिया, अजहण्ण मणुक्कोसठिईए जहा उक्कोसठितीए णवरं ठिईए तिट्ठाणवडिए॥ जहण्णगुणकालयाण बेइंदियाणं पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा

अर्थ

जानना परंतु इन में ज्ञान नहीं है. मध्यम अवगाहना का भी जघन्य अवगाहना जैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय चार स्थान हीनाधिक जानना. अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले बेइन्द्रिय की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले बेइन्द्रिय जघन्य स्थितिवाले बेइन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव वैसे ही दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन पर्यव की साथ छः स्थान हीनाधिक जानना. अहो गौतम ! इस लिये जघन्य स्थितिवाले बेइन्द्रियकी अनंत पर्यव कहे हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले बेइन्द्रिय का जानना. परंतु

सूत्र

से तणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं, बेइंदियाणंअणंता पज्जवा पण्णत्ता एवं उक्कोसोभिणिबोहियणाणीवि, अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि एवंचेव, णवरं छट्ठाणवडिए सट्ठाणेणं एवं सुयणाणीवि, मइअण्णाणीवि, सुयअण्णाणीवि, अचक्खुदंसणीवि णवरं जत्थ णाणा तत्थ अण्णाणा णत्थि, जत्थ अण्णाणं तत्थ णाणा णत्थि ॥ जत्थ दसणं तत्थ णाणावि, अणाण्णावि, एवंचेव तेइंदियावि, चउरिंदियाणवि, एवं चेव णवरं चक्खुदसण अब्भहिय, ॥ १६ ॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणि

अर्थ

पर्यव व अचक्षु दर्शन पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना. और आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ तुल्य जानना. अहो गौतम ! इसलिये जघन्य आभिनि बोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञान वाले का जानना. मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञान वाले का भी वैसे परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना. ऐसे ही श्रुतज्ञान का जानना. जैसे आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान का कहा वैसे ही मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान का जानना. अचक्षु दर्शन का भी वैसे ही कहना परन्तु जहां ज्ञान वहां अज्ञान नहीं और अज्ञान होवे वहां ज्ञान नहीं और जहा दर्शन है वहा ज्ञान अज्ञान दोनो ही हैं ऐसा कहना. जैसे बेइन्द्रिय का कहा वैसे ही तेइन्द्रिय का जानना चतुरिन्द्रिय का भी वैसे ही कहना परंतु चक्षुदर्शन अधिक जानना. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् !

सूत्र

पंचरसा, अट्ठफासा आभिणिबोहिया ॥ जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं भंते ! बेइंदियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं बेइंदियाणं अणंतापज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णाभिणिबोहियणाणी बेइंदिए जहण्णाभिणिबोहियणाणिस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाण वडिए, वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाणपज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, अचक्खु दंसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए,

अर्थ

जघन्य गुण काला बेइन्द्रिय को अनंत पर्याय हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट काला व मध्यम गुण काला का जानना परंतु मध्यम गुण काला में स्वस्थान आश्रित षट् स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध पांच रस, व आठ स्पर्श का जानना. अहो भगवन् ! जघन्य आभिनि बोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय को कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय जघन्य आभिनि बोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय के साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रित चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रित चार स्थान हीनाधिक, वर्ण गंध रस व स्पर्श पर्याय से छै श्रुत ज्ञान

सूत्र

से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं, बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता एवं उक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि, अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि एवंचेव, णवरं छट्ठाणवडिए सट्ठाणेणं एवं सुयणाणीवि, मइअण्णाणीवि, सुयअण्णाणीवि, अचक्खुदंसणीवि णवरं जत्थ णाणा तत्थ अण्णाणा णत्थि, जत्थ अण्णाणा तत्थ णाणा णत्थि ॥ जत्थ दसणं तत्थ णाणावि, अण्णाणावि, एवंचेव तेइंदियावि, चउरिंदियाणवि, एवं चेव णवरं चक्खुदसणं अब्भहियं, ॥ १६ ॥ जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणि

अर्थ

पर्यव व अचक्षु दर्शन पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना. और आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ तुल्य जानना. अहो गौतम ! इसलिये जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञान वाले का जानना. मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञान वाले का भी वैसे परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना. ऐसे ही श्रुतज्ञान का जानना. जैसे आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान का कहा वैसे ही मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान का जानना अचक्षु दर्शन का भी वैसे ही कहना. परंतु जहां ज्ञान वहां अज्ञान नहीं और अज्ञान होवे वहां ज्ञान नहीं और जहां दर्शन है वहां ज्ञान अज्ञान दोनों ही हैं ऐसा कहना. जैसे बेइन्द्रिय का कहा वैसे ही तेइन्द्रिय का जानना. चतुरेन्द्रिय का भी वैसे ही कहना परंतु चक्षुदर्शन अधिक जानना. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् !

ण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाणं पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहए पंचिंदिए तिरिक्खजोणियस्सए जहण्णोगाहण-गस्स पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगा-हणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए ॥ वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं दोहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाणं पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसोगाहणएवि,

अर्थ

जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, क्षेत्र से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक जघन्य अवगाहनावाले संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले होने से पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श पर्यव की साथ वैसे ही. दो ज्ञान, दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक, क्यों कि जघन्य अवगाहनावाले तिर्यंच में अवधि ज्ञान व विभंग ज्ञान नहीं होता है और उक्त दोनों

णवरं तिहिंणाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए ॥ जहा उक्कोसो- गाहणए तहा जहण्णमणुक्कोसोगाहणए वि, णवरं ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए ॥ जहण्णठिईयाणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अनंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णठिईए पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णठिईए पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए जहण्णठिईए पंचिंदिय तिरि- क्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए,

सहित और तिर्यंच में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहनावाले तिर्यंच को अनंत पर्याय कहे हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहनावाले तिर्यंच का जानना परंतु तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना. जैसे उत्कृष्ट अवगाहना का कहा वैसे ही मध्यम अवगाहनावाले का जानना. परंतु अवगाहना आश्रित चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रित चार स्थान हीनाधिक, अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय को कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पंचे-

सूत्र

पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुण कालए पंचिदिए तिरिक्खजोणिए जहण्णगुण कालयस्स पंचिदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाएतुल्ले,पएसट्ठयाएतुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ॥ ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिंतुल्ले, अवसेसहि वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिंतिहिं णाणेहिं, तिहिं अण्णाणेहिं, तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, सेतेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ अजहण्णगुणकालगाणं पंचिदिए तिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसगुणकालएवि अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि एवंचेव णवर सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं पचवण्णा, दोगंधा पंचरसा अट्ठफासा भाणि-

अर्थ

जैसे कहना परंतु इस में स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक और तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन कहना अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा है कि जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय को अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य और शेष वर्ण, गंध, रस व स्पर्श, वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट्स्थान

ठिईए तुल्ले, वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं, दोहिं अण्णाणेहिं, दोहिं दंसणेहिं, छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णाठिईयाणं पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं अणंता पज्जवा, एवं उक्कोसठिईएवि, एवं चेव णवरं दो णाणा अब्भहिया, अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवं चेव, णवरं ठिईए चउट्ठाण वडिए, तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा तिण्णि दंसणा ॥ जहण्ण गुणकाल-गाणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं पुच्छा ? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाणं पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं अणंता

अर्थ

न्द्रिय जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श धर्म ही दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ छट्ठ स्थान हीनाधिक जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच अपर्याप्त होते हैं इस से उस में सम्यक्त्वना का अभाव होने से ज्ञान नहीं पाता है. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय को अनंत पर्याय कहे हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय का जानना. परंतु इस में दो ज्ञान अधिक जानना. अर्थात् दो ज्ञान, दो अज्ञान व दर्शन होते हैं. उत्कृष्ट स्थितिवाले युग-लिये होते हैं उन में दो ज्ञान दो अज्ञान निश्चय ही होते हैं. मध्यम स्थिति का उत्कृष्ट स्थितिवाले

मूल

पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुण कालए पंचिंदिए तिरिक्खजोणिए जहण्णगुण कालयस्स पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्टयाएतुल्ले, पएसट्टयाएतुल्ले, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाणवडिए ॥ ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिंतुल्ले, अवसेसहिं वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिंतिहिं णाणेहिं, तिहिं अण्णाणेहिं, तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, सेतेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ अजहण्णगुणकालगाणं पंचिंदिए तिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव उक्कोसगुणकालएवि अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि एवंचेव णवर सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं पंचवण्णा, दोगंधा पंचरसा अट्ठफासा भाणि-

अर्थ

जैसे कहना परन्तु इस में स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक और तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन कहना. अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा है कि जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य और शेष वर्ण, गंध, रस व स्पर्श, वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट्स्थान

सूत्र

यव्वा ॥ जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता. सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणी पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णाभिणिबोहियणाणी पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए जहण्णाभिणिबोहियणाणिस्स पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिइए चउट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ आभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाण पज्जवेहिं, छट्ठाणवडिए, चक्खुदंसण पज्जवेहिं अचक्खुदंसण पज्ज-

अर्थ

हीनाधिक जानना. अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट गुण काला का जानना. मध्यम गुण काला का भी वैसे ही जानना. परंतु स्थान आश्रित षट् स्थान हीनाधिक जानना. ऐसे ही पांचों वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श का जानना. अहो भगवन् ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानवाले को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य अवगाहना आश्रित चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रित चार स्थान हीनाधिक, वर्ण,

सूत्र

णाहयणाणी तहा मइअण्णाणी सुयअण्णाणीय, जहा ओहिणाणी तहा विभंगणाणीय, चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणीय जहा आभिणिबोहियणाणी, ओहिदंसणी जहा ओहिणाणी, जत्थणाणा तत्थ अण्णाणात्थि, ॥ जत्थ दंसणा तत्थणाणात्रि अण्णाणात्रि, अत्थित्ति भाणियव्वं ॥ १७ ॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्टेणं भंते ! एवं वुचइ जहण्णोगाहणगाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए मणूसे जहण्णोगाहणगस्स मणुस्साणं दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए

अर्थ

का कहा वैसे ही मति अज्ञानी व श्रुत अज्ञानी का जानना. अवधिज्ञानी जैसे विभंग ज्ञानी का कहना. चक्षुदर्शनी व अचक्षु दर्शनी का आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना. और अवधि दर्शनी का अवधि ज्ञानी जैसे कहना. परंतु इन में जहां ज्ञान है वहां अज्ञान नहीं है और जहां अज्ञान है वहां ज्ञान नहीं है ॥१७॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से

यव्वा ॥ जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता. सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणी पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णाभिणिबोहियणाणी पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए जहण्णाभिणिबोहियणाणिस्स पंचिं-दिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिइए चउट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ आभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, चक्खुदंसण पज्जवेहिं अचक्खुदंसण पज्ज-

[illegible] जानना. अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय [illegible] ऐसे ही उत्कृष्ट गुण काला का जानना. मध्यम गुण काला का भी वैसे ही जानना. [illegible] स्थान हीनाधिक जानना. ऐसे ही पांचों वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ [illegible] भगवन् ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानवाले को कितने पर्यव कहे हैं ! [illegible] अहो गौतम ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? [illegible] आभिनिबोधिक ज्ञानी की द्रव्य से तुल्य, [illegible] स्थान हीनाधिक, वर्ण,

सूत्र

चोहियणाणी तहा मइअण्णाणी सुयअणाणीय, जहा ओहिणाणी तहा विभंगणाणीय, चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणीय जहा आभिणिबोहियणाणी, ओहिदंसणी जहा ओहिणाणी, जत्थणाणा तत्थ अण्णाणात्थि, ॥ जत्थ दंसणा तत्थणाणात्रि अण्णाणात्रि, अत्थित्ति भाणियव्वं ॥ १७ ॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए मणूसे जहण्णोगाहणगस्स मणुस्साणं दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए

अर्थ

का कहा वैसे ही मति अज्ञानी व श्रुत अज्ञानी का जानना. अवधिज्ञानी जैसे विभंग ज्ञानी का कहना. चक्षुदर्शनी व अचक्षु दर्शनी का आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना. और अवधि दर्शनी का अवधि ज्ञानी जैसे कहना. परंतु इस में जहां ज्ञान है वहां अज्ञान नहीं है और जहां अज्ञान है वहां ज्ञान नहीं है ॥१७॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से

आइल्लेहिं चउहिं णाणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसण पज्जवेहिं तुल्ले ॥ जहण्णाठिईयाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णाठिईयाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णठिईए मणुस्से जहण्णठिइयस्स मणुसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं, दोहिं दंसणेहिं, छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णाठिईयाणं

अर्थ

अवधि दर्शन नहीं होते हैं. मध्यम अवगाहनावाले मनुष्य का भी वैसे ही कहना परंतु अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान व मनःपर्यव ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान, केवल दर्शन की साथ तुल्य. अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के कितने पर्यव हैं? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य स्थितिवाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य जघन्य स्थितिवाले मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य वर्ण, गंध, रस

सूत्र

मणुस्साणं अणंता पज्जवा ॥ १० ॥ एवं उक्कोसठिईएवि, णवरं दोणाणा अब्भहिया, अजहण्णम-णुक्कोसठिईएवि एवं, णवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाणवडिए, आइल्लेहिं चउहिंणाणेहिं छट्ठाण वडिए, केवलणाणपज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले, जहण्णगुण कालयाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालयाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुण

अर्थ

व चारों पर्यव की साथ वैसे ही दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक. अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के अनंत पर्यव हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले मनुष्य का जानना. परंतु दो ज्ञान अधिक कहना, क्यों कि उत्कृष्ट स्थितिवाले युगलिये होते हैं. मध्यम स्थितिवाले का भी वैसे ही कहना परंतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक. केवल दर्शन आश्रिय तुल्य. अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला मनुष्य जघन्य गुण काला मनुष्यकी

आइल्लेहिं चउहिं णाणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसण पज्जवेहिं तुल्ले ॥ जहण्णठिईयाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णठिईए मणुस्से जहण्णठिइयस्स मणुसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं, दोहिं दंसणेहिं, छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाणं

अर्थ

अवधि दर्शन नहीं होते हैं. मध्यम अवगाहनावाले मनुष्य का भी वैसे ही कहना परंतु अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान व मनःपर्यव ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ छः स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान, केवल दर्शन की साथ तुल्य. अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के कितने पर्यव हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य स्थितिवाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य जघन्य स्थितिवाले मनुष्य को द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य वर्ण गंध, रस

सूत्र

मणुस्साणं अणंता पज्जवा ॥ १० ॥ एवं उक्कोसट्ठिइएवि, णवरं दोणाणा अब्भहिया, अजहण्णम-
णुक्कोसट्ठिइएवि एवं, णवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, आइल्लेहिं
चउहिंणाणेहिं छट्ठाण वडिए, केवलणाणपज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं
छट्ठाणवडिए, केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले, जहण्णगुण कालयाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया
पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ
जहण्णगुण कालयाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुण

अर्थ

व इसकी पर्याय की साथ यों ही दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक. अहो गौतम ! इस
लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के अनंत पर्याय हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले
मनुष्य का जानना. परंतु दो ज्ञान अधिक कहना, क्यों कि उत्कृष्ट स्थितिवाले युगलिये होते हैं. मध्यम
स्थितिवाले का भी यों ही कहना परंतु स्थिति आश्रित चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान,
तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक केवल दर्शन आश्रित तुल्य. अहो भगवन्! जघन्य
गुण काला मनुष्य के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं. अहो भगवन् ! किस
कारन से अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला मनुष्य जघन्य गुण काला मनुष्यकी

कालएमणूसे जहण्णगुणकालगमणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए आइल्लेहिं चउहिं णाणेहिं छट्ठाण वडिए, केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसण पज्जवेहिं तुल्ले, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालगमणूसाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ एवं उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्ण मणुक्कोसगुण कालएवि एवंचेव, णवरं सट्ठाणे

साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य, शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के पर्यव वैसे ही पहिले चार ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान केवल दर्शन के पर्यव की साथ तुल्य. अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य गुण काला मनुष्य के अनंत पर्यव हैं ऐसे ही उत्कृष्ट गुण काला मनुष्य का जानना मध्यमगुण काला मनुष्य का भी वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, व आठ स्पर्श का जानना. अहो भगवन् ! जघन्य

सूत्र

मणुस्साणं अणंता पज्जवा प० ॥ एवं उक्कोसठिईएवि, णवरं दोणाणा अन्नाण दोवि, अजहण्णम- णुक्कोसठिईएवि एवं, णवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, आइल्लेहिं चउहिंणाणेहिं छट्ठाण वडिए, केवलणाणपज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले, जहण्णगुण कालयाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालयाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुण

अर्थ

व स्पर्श पर्यव की साथ वैसे ही दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक. अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के अनंत पर्यव हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले मनुष्य का जानना. परंतु दो ज्ञान अधिक कहना, क्यों कि उत्कृष्ट स्थितिवाले युगलिये होते हैं. मध्यम स्थितिवाले का भी वैसे ही कहना परंतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक; केवल दर्शन आश्रिय तुल्य. अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला मनुष्य जघन्य गुण काला मनुष्य की

मूल

कालएमणूसे जहण्णगुणकालगमणूसस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पदेसट्टयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए आइल्लेहिं चउहिं णाणेहिं छट्ठाण वडिए, केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले. तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसण पज्जवेहिं तुल्ले, सेतेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालगमणूसाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥एवं उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्ण मणुक्कोसगुण कालएवि एवंचेव, णवरं सट्ठाणे

अर्थ

साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य, शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के पर्यव वैसे ही पहिले चार ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान केवल दर्शन के पर्यव की साथ तुल्य. अहो गौतम !. इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य गुण काला मनुष्य के अनंत पर्यव हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट गुण काला मनुष्य का जानना. मध्यमगुण काला मनुष्य का भी वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना. ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच, रस, व आठ स्पर्शका जानना. अहो भगवन् ! जघन्य

तिट्ठाणवडिए, जहा आभिणिबोहियणाणी तहा मइअण्णाणी सुयअण्णाणीय भाणियव्वा, जहा ओहिणाणी तहा विभंगणाणीवि भाणियव्वो, चक्खुदंसण अचक्खुदंसणीय जहा आभिणिबोहियणाणी.ओहिदंसणी जहा ओहिणाणी,जत्थणाणातत्थ अण्णाणाणत्थि जत्थ अण्णाणा तत्थ णाणाणत्थि॥ जत्थ दंसणा तत्थणाणावि अण्णाणावि ॥ केवल-णाणीणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ केवलणाणीण भंते! मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता?गोयमा! केवलणाणी मणुस्स केवलणाणिस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,पएस-

होते हैं. अहो भगवन् ! केवल ज्ञानी मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! केवल ज्ञानी मनुष्य केवल ज्ञानी मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक × स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक वर्षों की पूर्व संख्यात वर्ष का ही आयुष्य होता है, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव से षट् स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान व केवल दर्शन के पर्यव की साथ तुल्य केवल

× अपयाप्त अवस्था में केवल ज्ञान नहीं होता है परन्तु केवल समुद्घात वाले संपूर्ण लोक व्यापी केवली के प्रदेश होने से असंख्यात गुनी हीनाधिक होती है.

सूत्र

अजीवपज्जवाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता ? तंजहा धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्सदेसे, धम्मत्थिकायस्सपएसा ॥ अहम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकायस्सदेसे, अहम्मत्थिकायस्स पएसा ॥ आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्सदेसा, आगासत्थिकायस्सपएसा, अद्धासमए ॥ सेत्तं अरूवि अजीवपज्जवा ॥ २० ॥ रूवि अजीव पज्जवाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ते ? गोयमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—खंधा, खंधदेसा खंधपएसा, परमाणुपोग्गला ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा !

अर्थ

अहो गौतम ! अरूपी अजीव पर्यव के दश भेद कहे हैं १ धर्मास्तिकाया का स्कंध सो संपूर्ण विभाग, २ धर्मास्तिकाया का देश सो अर्ध, तृतीयादि विभाग और ३ प्रदेश सो निर्विभागरूप सूक्ष्म खण्ड ऐसे ही ४ अधर्मास्तिकाया का स्कंध ५ अधर्मास्तिकाया का देश और ६ अधर्मास्तिकाया का प्रदेश ७ आकाशास्तिकाया का स्कंध ८ आकाशास्तिकाया का देश और ९ आकाशास्तिकाया का प्रदेश और १० काल यह अरूपी अजीव पर्यव हुए. ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! रूपी अजीव पर्यव के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! रूपी अजीव पर्यव के चार भेद कहे हैं १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश व ४ परमाणु पुद्गल अहो भगवन ! वे क्या संख्यात असंख्यात व अनंत हैं ? अहो गौतम ! संख्यात नहीं

मूल

ट्टयाए तुल्ले. ओगाहणट्टयाए चउट्ठाण वडिए, ठिइए तिट्ठाण वडिए, वण्ण गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, केवलणाण पज्जवेहिं केवल दंसण पज्जवेहिं तुल्ले, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ केवलणाणीणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं केवलदंसणीवि मणुस्से भाणियव्वे ॥ १८ ॥ वाणमंतरा जहा असुरकुमारा ॥ एवं जोइसिया वेमाणिया, णवरं ठिइए तिट्ठाण वडिए भाणियव्वा, सेत्तं जीवपज्जवा ॥ १९ ॥ * ॥ अजीव पज्जवाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-रूवि अजीव पज्जवाय, अरूवि अजीव पज्जवाय ॥ अरूवि

अर्थ

अभाव होने से नहीं ग्रहण कीये हैं. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि केवल ज्ञानी के अनंत पर्यव कहे हैं. जैसे केवल ज्ञानी का कहा वैसे ही केवल दर्शनी का जानना. ॥ १८ ॥ जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही वाणव्यंतर का कहना. ज्योतिषी व वैमानिक का भी वैसे ही कहना परंतु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक जानना. यह जीव पर्यव संपूर्ण हुवा. ॥ १९ ॥ अब अजीव पर्यव का वर्णन करते हैं. अहो भगवन् ! अजीव पर्यव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अजीव पर्यव के दो भेद कहे हैं १ रूपी अजीव पर्यव और २ अरूपी अजीव पर्यव. अहो भगवन् ! अरूपी अजीव पर्यव के कितने भेद कहे हैं ?

ज्ञान सिवा अन्य ज्ञान व केवल दर्शन सिवा अन्य दर्शनों का

सूत्र

अजीवपज्जवाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता ? तंजहा धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्सदेसे, धम्मत्थिकायस्सपएसा ॥ अहम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकायस्सदेसे, अहम्मत्थिकायस्स पएसा ॥ आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्सदेसा, आगासत्थिकायस्सपएसा, अद्धासमए ॥ सेत्तं अरूवि अजीवपज्जवा ॥ २० ॥ रूवि अजीव पज्जवाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ते ? गोयमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—खंधा, खंधदेसा खंधपएसा, परमाणुपोग्गला ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा !

अर्थ

अहो गौतम ! अरूपी अजीव पर्यव के दश भेद कहे हैं १ धर्मास्तिकाया का स्कंध सो संपूर्ण विभाग, २ धर्मास्तिकाया का देश सो अर्ध, तृतीयादि विभाग और ३ प्रदेश सो निर्विभागरूप सूक्ष्म खण्ड ऐसे ही ४ अधर्मास्तिकाया का स्कंध ५ अधर्मास्तिकाया का देश और ६ अधर्मास्तिकाया का प्रदेश ७ आकाशास्तिकाया का स्कंध ८ आकाशास्तिकाया का देश और ९ आकाशास्तिकाया का प्रदेश और १० काल यह अरूपी अजीव पर्यव हुए. ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! रूपी अजीव पर्यव के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! रूपी अजीव पर्यव के चार भेद कहे हैं १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश व ४ परमाणु पुद्गल. अहो भगवन् ! वे क्या संख्यात असंख्यात व अनंत हैं ? अहो गौतम ! संख्यात नहीं

नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तेणं नो संखेज्जा नो असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! अणंता परमाणु पोग्गला, अणंता दुपएसियाखंधा, जाव अणंता दसपएसियाखंधा, अणंता संखिज्ज पएसियाखंधा, अणंता असंखेज्ज पएसियाखंधा, अणंता अणंत पएसियाखंधा, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ तेणं नो संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ॥ २१ ॥ परमाणु पोग्गलाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ परमाणु पोग्गलाणं अणंता पज्जवा ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणु पोग्गलस्स

असंख्यात नहीं परंतु अनंत हैं अहो भगवन् ! किस कारन से रूपी अजीव पर्यव अनंत हैं ? अहो गौतम ! अनंत परमाणु पुद्गल, अनंत द्विप्रदेशिक स्कंध, यावत् अनंत दश प्रदेशिक स्कंध अनंत संख्यात प्रदेशिक स्कंध, अनंत असंख्यात प्रदेशिक स्कंध व अनंत अनंतप्रदेशिक स्कंध हैं. अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि वे संख्यात व असंख्यात नहीं परंतु अनंत रूपी अजीव पर्यव जानना. ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं? अहो भगवन्! किस कारनसे अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल परमाणु [illegible] द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि समान प्रदेशावगाही होने से

सूत्र

पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे, सिय तुल्ले सिय अब्भहिए; जइहीणे पदेसहीणे, अहमब्भहिए पदेस अब्भहिए. ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं उवरिल्लेहिं चउफासेहिय, पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ एवं तिपएसिएवि, णवरं ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए, जइहीणे पएसहीणेवा, दुपएसहीणेवा, अह अब्भहिए पएसमब्भहिएवा, दुपएस मब्भहिएवा, एवं जाव दस पएसिए, णवरं ओगाहणाए पएसपडिवुड्ढीकायव्वा, जाव दस पएसिए, णवरं पएसहीणेत्ति ॥ संखिज्ज पएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं

अर्थ

यदि हीन होवे तो एक प्रदेश हीन होवे और अधिक होवे तो एक प्रदेश अधिक होवे (द्विप्रदेशिक स्कंध एक आकाश प्रदेशावगाही भी होते है और दो प्रदेशावगाही भी होते हैं) स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण गंध रस व चार स्पर्श आश्रिय छट्ठ स्थान हीनाधिक. ऐसे ही तीन प्रदेशिक का कहना परंतु अवगाहना आश्रिय स्यात हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना. यदि हीन होवे तो एक प्रदेश हीन, दो प्रदेश हीन होवे और अधिक होवे तो एक प्रदेश अधिक व दो प्रदेश अधिक होवे. ऐसे ही दश प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना. परंतु जैसे एक २ प्रदेश स्कंध में बढाते जावे, वैसे ही अवगाहना में भी बढाना; यावत् दश प्रदेशिक स्कंध में नव प्रदेश हीन अथवा अधिक जानना, संख्यात प्रदेशिक स्कंध की पृच्छा. अहो गौतम!

नो संखेज्जा, नो, असंखेज्जा, अणंता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तेणं नो संखेज्जा नो असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! अणंता परमाणु पोग्गला, अणंता दुपए सियाखंधा, जाव अणंता दसपएसियाखंधा, अणंता संखिज्ज पएसियाखंधा, अणंता असंखेज्जपएसियाखंधा, अणंता अणंत पएसियाखंधा, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ तेणं नो संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ॥ २१ ॥ परमाणु पोग्गलाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ परमाणु पोग्गलाणं अणंता पज्जवा ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणु पोग्गलस्स

संख्यात नहीं परंतु अनंत हैं अहो भगवन् ! किस कारन से रूपी अजीव पर्यव अनंत हैं ? अहो गौतम ! अनंत परमाणु पुद्गल, अनंत द्विप्रदेशिक स्कंध, यावत् अनंत दश प्रदेशिक स्कंध अनंत संख्यात प्रदेशिक स्कंध, अनंत असंख्यात प्रदेशिक स्कंध व अनंत अनंतप्रदेशिक स्कंध हैं. अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि वे संख्यात व असंख्यात नहीं परंतु अनंत रूपीअजीव पर्यव जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो भगवन्! किस कारनसे अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि समान प्रदेशावगाही होने से

सूत्र

खंधस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाण वडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, ॥ वण्णाइहिं उवरिल्लेहिं चउफासेहिं छट्ठाणवडिए अणंतपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अणंतपदेसिए खंधे अणंतपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पदेसट्टयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइहिं अट्ठफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए ॥ २३ ॥ एगपएसोगाढाणं

अर्थ

द्रव्य से तुल्य प्रदेश से चार स्थान हीनाधिक, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्णादि और चार स्पर्श की साथ पट् स्थान हीनाधिक. अनंत प्रदेशिक स्कंधकी पृच्छा! अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं. अहो भगवन्! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं! अहो गौतम ! अनंत प्रदेशिक स्कंध अनंत प्रदेशिक स्कंध की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश आश्रिय पट् स्थान हीनाधिक, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक क्योंकि आकाश प्रदेश असंख्यात हैं. स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, काल भी असंख्यात हैं. वर्ण, गंध, रस व आठ स्पर्श के पर्यव की साथ पट् स्थान हीनाधिक ॥ २३ ॥ अब क्षेत्र आश्रिय प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! एक प्रदेशावगाही पुद्गल के

सूत्र

वुच्चइ ? गोयमा ! संखिज्जपएसिए संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ल पएसट्ठयाए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे संखिज्जभागहीणेवा संखिज्जइगुणहीणेवा. अह अब्भहिए संखेज्जइभाग मब्भहिएवा संखेज्जइगुण मब्भहिएवा, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ठिइए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइहि उवरिल्लेहि चउफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा! असंखिज्जपएसिए खंधे असंखिज्जपएसियस्स

अर्थ

अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से संख्यात प्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना. यदि हीन होवे तो संख्यात भाग हीन व संख्यात गुण हीन और अधिक होवे तो संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुन अधिक अवगाहना आश्रिय दो स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस व चार स्पर्श आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक असंख्यात प्रदेशिक की पृच्छा? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारनसे अनंत कहे हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेशिक स्कंध असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की साथ

सूत्र

पोग्गले संखिज्ज पएसोगाढस्स पोग्गलस्स. दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाइहिं उवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाण वडिए ॥ असंखिज्ज पएसोगाढाणं पुच्छा ? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! असंखिज्ज पएसोगाढे पोग्गले असंखिज्ज पएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णाईहिं अट्ठफासेहिय छट्ठाणवडिए ॥२४॥ एगसमयठितीयाणं

अर्थ

पर्याय ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल अन्य संख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल की अपेक्षाकर द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने षट् स्थान हीनाधिक हैं, अवगाहना से दो स्थान हीनाधिक है, स्थिति आश्रिय चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ असंख्यात प्रदेशावगाही की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ? एक असंख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल अन्य असंख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल की अपेक्षा कर द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है. स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ २५ ॥ अब काल आश्रिय कहते हैं ॥ अहो

सूत्र

पोग्गलाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए छट्टाण वडिए, ओगाहणट्टयाए तुल्ले, ठिईए चउट्टाण वडिए, वण्णाइउवरिल्लचउफासेहिय, छट्टाण वडिए ॥ एवं दुपएसोगाढेवि, जाव दसपएसोगाढेवि ॥ संखिज्ज पएसोगाढाणं पोग्गलाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! संखिज्ज पएसोगाढे

अर्थ

कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं. अहो भगवन् ! एक प्रदेशावगाही के अनंत पर्याय किस कारन से कहे हैं. ? अहो गौतम ! एक २ प्रदेश अवगाही परमाणु पुद्गल अन्य एक प्रदेश अवगाही परमाणु पुद्गल की अपेक्षा कर द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं क्यों कि अनंत प्रदेश भी एक प्रदेश अवगाही होता है. अवगाहना की अपेक्षा तुल्य हैं क्योंकि दोनों एक प्रदेशावगाही हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं. वर्ण गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं. यह जैसा एक प्रदेश अवगाही पुद्गल का कथन कहा ऐसाही द्विप्रदेशावगाही यावत् दश प्रदेशावगाही का कथन करना संख्यात प्रदेशावगाही का प्रश्न ! अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा कि संख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल के अनंत

सूत्र

एगगुणकालगाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ ? गोयमा ! एग गुण कालेवि पोग्गले एगगुणकालगस्सपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णइं गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ एव जाव दसगुण कालए ॥ संखिज्जगुण कालएवि एवं चेव॥ णवरं सट्ठाणे दुट्ठाण वडिए ॥ एवं असखेज्जगुण कालएवि, णवरं सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए ॥ एवं

अर्थ

पुद्गल पर्याय की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे है, किस लिये अहो भगवन् ! एक गुन काले पुद्गल की अनंत पर्याय कही हैं ? अहो गौतम ! एक गुन काले पुद्गल अन्य एक गुन काला पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतु-स्थान हीनाधिक, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण के पुद्गल की अपेक्षा तुल्य है, अपर शेष चार वर्ण दो गंध पांच रस आठ स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं. जैसा यह एक गुण काले पुद्गलों का कहा तैसा ही दो गुण तीन गुण यावत् दश गुण काले पुद्गलों का कहना. संख्यात गुण काले पुद्गलों का भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष की स्वस्थान काले वर्ण की पर्याय का द्विस्थान हीनाधिक होते हैं क्यों कि संख्यात ही हैं. ऐसे ही असंख्यात गुण काले पुद्गलों का भी कहना

सूत्र

पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा! एगसमयठितीए पोग्गले एगसमयठिईयस्स पोग्गलस्स, दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए॥एवं जाव दस समय ठितीयाणं,संखेज्जसमयठिईयाणं एवंचेव, णवरं ठिईए छट्ठाणवडिए ॥ असंखिज्ज समयठितीयाणं एवंचेव, णवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए ॥२५॥

अर्थ

भगवन् ! एक समय स्थिति वाले पुद्गल के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! एक समय स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक समय स्थिति वाले अन्य एक समय की स्थितिवाले पुद्गल की साथ द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहनाकी अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्ण रस गंध स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ जैसा यह एक समय की स्थिति का कहा वैसाही दश समय की स्थिति तक का कहना. संख्यात समय की स्थिति वालेका भी ऐसा ही कहना. जिस में इतना विशेष संख्यात समय की स्थिति के समय द्विस्थान हीनाधिक कहना. क्योंकि संख्यात समयकी ही स्थिति है. ऐसे ही असंख्यात समयकी स्थितिवालेका भी कहना जिस में इतना विशेष की स्थिति चतुस्थान हीनाधिक हैं क्यों कि असंख्यात काल की स्थिति है ॥ २८ ॥ एक गुनकाले

सूत्र

याए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, सेस वण्ण गंधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, सीतउसिण णिधलुक्ख फासेहिं छट्ठाण वडिए सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाणं दुपएसियाणं खंधाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसोगाहणए वि याणं, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणओणत्थि ॥ २७ ॥ जहण्णोगाहणयाणं भंते ! तिपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा

अर्थ

अहो गौतम ! एक जघन्य अवगाहनावाला द्विप्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा से द्रव्यार्थ पने तुल्य हैं, प्रदेशार्थ पने भी तुल्य हैं, अवगाहना की अपेक्षा भी तुल्य हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं. इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि जघन्य अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्याय हैं. जिस प्रकार जघन्य अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कंध का कहा उस ही प्रकार उत्कृष्ट अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कंध का कहना किन्तु द्विप्रदेशिक स्कंध की अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) अवगाहना नहीं होती है क्योंकि जो द्विप्रदेशिक स्कंध एक आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहा है वह जघन्य अवगाहनावाला कहा जाता है और जो दो आकाश प्रदेश अवगाह कर रहा है वह उत्कृष्ट अवगाहनावाला कहा जाता है. इस के अंतर में कुछ भी नहीं होता है इस लिये मध्यम अवगाहना नहीं होती है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले त्रिप्रदेशिक स्कंध के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं. अहो

सूत्र

अणंतगुण कालएवि, णवरं सट्ठाणे छट्ठाण वडिए ॥ एवं जहा कालए वण्णस्स वत्तव्वया भाणियव्वा, तहा सेसाणवि वण्ण गंध रस फासाणं वत्तव्वया भाणियव्वा, जाव अणंतगुण लुक्खे ॥ २६ ॥ जहण्णोगाहणगाण भंते ! दुपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए दुपएसिएखंधे जहण्णोगाहणगस्स दुपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाएतुल्ले, पएसट्ठ-

अर्थ

जिस में इतना विशेष स्वस्थान काले वर्ण के पर्याय की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक कहना, क्योंकि असंख्यात हैं. ऐसे ही अनंत गुण काले वर्ण की पर्याय का कहना, जिस में इतना अधिक स्वस्थान में पट्स्थान हीनाधिक हैं. यह जिस प्रकार काले वर्ण पुद्गलों की वक्तव्यता कही उस ही प्रकार शेष बाकी रहे चारों वर्ण के पुद्गलों की व्याख्या करनी, और ऐसे ही दो गंध की पांच रस की और आठ स्पर्श की वक्तव्यता कहना यावत् २० या बोल अनंत गुण रूक्ष पुद्गल तक कहना ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाला द्विप्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय हैं ? (परमाणु पुद्गल अत्यन्त सूक्ष्म होने से और सदैव एक ही आकार में रहने से उस की जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना नहीं होती है इसलिये उस का प्रश्न नहीं पूछते द्विप्रदेशिक स्कन्ध का प्रश्न यहां पूछा है) अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ॥ अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक के अनंत पर्याय किस कारन कहे हैं ?

णवरं ओगाहणट्ठयाए सिय हीणेसिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइहीणे, पदेसहीणे, अहअब्भहिए,पदेस अब्भहिए,एवं जाव दसपएसिए णेयव्वं,णवरं अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पएस परिवुड्डी कायव्वा, जाव दसपएसियस्स, सत्तपएसा परिवुड्डिज्जंति ॥२८॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते ! संखिज्ज पदेसियाणं पुच्छा ? गोयमा! अणंता पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए संखिज्जपएसिए जहण्णो-

चतुष्पदेशिक अवगाही और मध्यम दो तथा तीन प्रदेश अवगाही होता है. इसलिये चार प्रदेश अवगाह की अपेक्षा एक प्रदेश हीन और एक प्रदेश अवगाह की अपेक्षा द्विप्रदेश अवगाही एक प्रदेश अधिक कहा जाता है. यों आगे भी सर्व स्थान कहना. ऐसे ही यावत् दश प्रदेश अवगाही पर्यन्त कहना, जिस में इतना विशेष कि अजघन्योत्कृष्ट [मध्यम] अवगाह के सूत्र में अवगाहना की अपेक्षा एकेक प्रदेश की वृद्धि करना यावत् दश प्रदेशिक अजघन्योत्कृष्ट स्कन्ध में सात प्रदेश हीनाधिक कहना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाले संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहना वाला संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य अवगाहना वाला संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा कर द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने द्विस्थान हीनाधिक है

सूत्र

पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा! जहा जहण्णोगाहणए दुपएसिए एवं उक्कोसोगाहणएवि, एवं अजहण्ण मणुक्कोसोगाहणएवि एवंचेव॥जहण्णोगाहणगाणं भंते ! चउपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए दुपएसिएतहा; उक्कोसोगाहणए चउप्पएसिएवि ॥ एवं अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि, चउप्पएसिए

अर्थ

भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा कि त्रिप्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्याय ! अहो गौतम ! जिस प्रकार द्विप्रदेशिक स्कंध का कहा तैसा ही त्रिप्रदेशिक स्कंध का कहना, ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहनावाले त्रिप्रदेशिक स्कन्ध का कहना. और ऐसे ही अजघन्यउत्कृष्ट अवगाहना वाले त्रिप्रदेशिक स्कन्ध का कहना. क्यों कि जघन्य अवगाहना वाला त्रिप्रदेशिक स्कन्ध एक आकाश प्रदेश को अवगाहकर रहता है, मध्यम अवगाहना वाला त्रीप्रदेशिक स्कन्ध दो आकाश प्रदेश अवगाहकर रहता है ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाला चतुप्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसा द्विप्रदेशिक स्कन्ध का कहा तैसा ही चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध का भी कहना, ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना वाले चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध का कहना, और एसे ही अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना. जिस में इतना विशेष-अवगाहना की अपेक्षा-स्यात् हीन है स्यात्-तुल्य है: स्यात् अधिक है. यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है और यदि अधिक है तो एक प्रदेश अधिक है क्यों कि जघन्य एक प्रदेश अवगाही और उत्कृष्ट

सूत्र

पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं उवरिल्लेहिं चउफासेहिय छट्ठाण वडिए एवं ॥ उक्कोसोगाहणएवि ॥ अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि एवं चेव, णवरं सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए ॥ ३० ॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते ! अणंत पएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए अणंतपएसिए खंधे जहण्णोगाहणगस्स अणंतपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए

अर्थ

हना की अपेक्षा तुल्य है स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है. वर्ण गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना. अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक मानना॥३०॥ अहो भगवन्! जघन्य अवगाहनावाले अनंत प्रदेशिक स्कंधकी पृच्छा? अहो गौतम! अनंत पर्याय कहे हैं. किसलिये अहो भगवन ! ऐसा कहा है ? अहो गौतम ! एक जघन्य अवगाहना अनंत प्रदेशिक स्कन्ध अन्य अनंत प्रदेशी स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने षट्स्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध, रस ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान

सूत्र

सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ? गोयमा ! जहण्णठिईए परमाणुपोग्गले जहण्ण ठिईयरस परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिइए तुल्ले, वण्णाईहिं दुफासेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसेठिईएवि ॥ अजहण्ण मणुक्कोसट्ठिइएवि एवंचेव णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए जहण्णठिईयाणं दुपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए दुपएसिए जहण्णठिईयस्स दुपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,

अर्थ

परमाणु पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं. अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले परमाणु पुद्गल के अनंत पर्याय किस कारन से है ? अहो गौतम ! एक जघन्य स्थितिवाला परमाणु पुद्गल अन्य जघन्य स्थितिवाले परमाणु पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने भी तुल्य है, क्योंकि एक प्रदेशी है, अवगाहना की अपेक्षा भी तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा भी तुल्य है, वर्ण, गंध, रस और ऊपर के द्विस्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना. अजघन्य उत्कृष्ट अवगाहना का भी ऐसे ही कहना, परंतु जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान हीनाधिक है. जघन्य स्थिति द्विप्रदेशिक की पृच्छा? अहो गौतम! अनंत पर्याय हैं. किस कारन अहो भगवन्! ऐसा कहा है ? अहो गौतम! एक जघन्य स्थितिवाला द्विप्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य स्थितिवाला द्विप्रदेशिक

सूत्र

तुल्ल, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए ॥
उक्कोसोगाहणएवि एवंचेव, णवरं ठिईए तुल्ले, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगाणं भंते !
अणंतपदेसियाणं पुच्छा? गोयमा ! अणंता से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्को-
सोगाहणए अणंतपएसिए खंधे, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स अणंतपदेसियस्स खंधस्स
दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए,
चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं अट्ठफासेहिय छट्ठाणवडिए ॥ ३१ ॥ जहण्णठिईयाणं
भंते ! परमाणु पोग्गलाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता,

अर्थ

क्योंकि उत्कृष्ट अवगाहना वाला चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध सर्व लोकव्यापी होते हैं वे अचित महास्कन्ध
और केवलि समुद्घात रूप स्कन्ध यह दोनोंही होते हैं. दंड कपाट मंथन अन्तर पूर करते चार समयकी
ही स्थिति होती है ज्यादा नहीं होती है इसलिये स्थिति आश्रिय तुल्य है, अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना वाला
अनंत प्रदेशिक के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस
कारन से एवा कहा ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट [मध्यम] अवगाहनावाला अनंत प्रदेशिक
स्कंध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहनावाले स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान
हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है,
[illegible] की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ॥ ३१ ॥ जघन्य स्थितिवाले

सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ?गोयमा ! जहण्णठिईए परमाणुपोग्गले जहण्ण ठिईयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिइए तुल्ले, वण्णाईहिं दुफासेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसेठिईएवि ॥ अजहण्ण मणुक्कोसट्ठिइएवि एवंचेव णवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए जहण्णठिईयाणं दुपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए दुपएसिए जहण्णठिईयस्स दुपएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,

परमाणु पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं. अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले परमाणु पुद्गल के अनंत पर्याय किस कारन से है ? अहो गौतम ! एक जघन्य स्थितिवाला परमाणु पुद्गल अन्य जघन्य स्थितिवाले परमाणु पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने भी तुल्य है, क्योंकि एक प्रदेशी है, अवगाहना की अपेक्षा भी तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा भी तुल्य है, वर्ण, गंध, रस और ऊपर के द्विस्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना. अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना का भी ऐसे ही कहना, परंतु जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है. जघन्य स्थिति द्विप्रदेशिक की पृच्छा? अहो गौतम! अनंत पर्याय हैं.किस कारन अहो भगवन्! ऐसा कहा है ? अहो गौतम!एक जघन्य स्थितिवाला द्विप्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य स्थितिवाला द्विप्रदेशिक

भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णाठिईए संखिज्ज पएसिए खंधे जहण्णाठिईयस्स संखिज्ज पएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं उवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसठिईएवि, अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवंचेव, णवरं ठिईए चउट्ठाण वडिए, जहण्णाठिईयाण भंते ! असंखिज्ज पएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा

संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य प्रदेशिक संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य प्रदेशार्थ पने द्विस्थान हीनाधिक है. अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है. वर्ण, गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं. ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति वाले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले का भी ऐसा ही कहना जिसमें इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक कहना. जघन्य स्थितिवाले असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं. किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य स्थितिवाला असंख्यात प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य स्थितिवाले असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा, द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने चतुस्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्ण, गंध, रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीना-

? से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए अणंतप-
जहण्णठिईयस्स अणंतपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए
ए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं उवरिल्ल
फासेहिं छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसठिईएवि, अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि. एवं चेव
णवरं ठिईए चउट्ठाण वडिए ॥ ३२ ॥ जहण्णगुणकालयाणं अणंत पएसियाणं पुच्छा ?

जिक है एवं ही उत्कृष्ट स्थितिवाले का कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थितिका भी ऐसा ही कहना; जिस में इतना विशेष स्थिति आश्रित चउट्ठाण हीनाधिक कहना. अहो भगवन्! जघन्य स्थितिवाले अनंत प्रदेशिक स्कंध के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? किस कारन से अहो भगवन् ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थिति के अनंत प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य स्थिति के अनंत प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा से द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्ण, गंध, रस आठ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति का भी कहना, और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति का भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है ॥ ३२ ॥ जघन्य गुण काले वर्ण के अनंत प्रदेश की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं. अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा

गोयमा ! अणंता, से केणट्टेणं? गोयमा! जहण्णठिईए अणंत पएसिए जहण्णठिईयस्स अणंत पएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए,ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए तुल्ले, वण्णादि अट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसठिईएवि ॥ अजहण्ण मणुक्कोसठिईएवि एवंचेव णवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुण कालयाणं परमाणु पोग्गलाणं पुच्छा? गोयमा! अणंता से केणट्ठेण? गोयमा! जहण्णगुण कालए परमाणु पोग्गले जहण्णगुण कालगस्स परमाणु पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, उगाहण-

अर्थ

कहा ? अहो गौतम ! एक जघन्य गुण काला परमाणु पुद्गल अन्य जघन्य गुण काले परमाणु की अपेक्षा से द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण के पर्यव की अपेक्षा तुल्य है, ऊपर शेष चार वर्ण नहीं कहना क्योंकि यहां फक्त काले वर्ण का ही वर्णन है, गंध, रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट गुण काले वर्ण के परमाणु का भी कहना. और अजघन्योत्कृष्ट गुण काला वर्णवाले परमाणु का भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान काले वर्ण की पर्याय आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक है. जघन्य गुण काले द्विप्रदेशिक स्कंध की पृच्छा ?

पएसहीणे अब्भहिए, पएस मब्भहिए, ठिईए चउट्ठाणं वडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णाईहिं उवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि, एवंचेव नवरं छट्ठाणे सट्ठाण वडिए, एवं जाव दसपएसिए, णवरं उगाहणाए पएसपरिवुड्डीकायव्वा ओगाहणा तहेव॥ जहण्णगुण कालगाणं भंते संखिज्ज पएसियाण पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता? से केणट्ठेणं? गोयमा! जहण्ण गुण कालए संखिज्ज पएसिए जहण्णगुण कालगस्स संखिज्ज पएसियस्स दव्वट्ठयाए

अर्थ

नव प्रदेश की वृद्धि करना अहो भगवन्! जघन्य गुनकाले संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम! अनंतपर्याय हैं अहो भगवन्! किस कारन अनंतपर्याय हैं? अहो गौतम! एक जघन्य गुनकाले संख्यात प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य गुनकाले संख्यात प्रदेशिक स्कंध से द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने द्विस्थान हीनाधिक है, अवगाहनाकी अपेक्षा भी द्विस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, कालेवर्ण के पर्याय की अपेक्षा भी तुल्य है, अवर शेष ४ वर्ण गंध रस ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है जैसे ही उत्कृष्ट गुन काले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट [मध्यम] गुन काला का भी इस ही प्रकार कहना जिस में इतना विशेष स्वस्थान काले वर्ण की पर्याय षट् स्थान हीनाधिक कहना. जघन्य गुन काले असंख्यात प्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं, अहो

छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्ण मणुक्कोस गुणकालएवि एवं चेव, णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुणकालगाणं भंते ! अणंतपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए अणंतपएसिए जहण्णगुणकालगस्स अणंतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णाईहिं अट्ठफासपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए ॥ एवं उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि एवं चेव, णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं नील लोहिय हालिद्द सुक्किल्ल, सुब्भिगंध दुब्भिगंध तित्त कडुय कसाय

तुल्य है. प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण की अपेक्षा परस्पर तुल्य है अपर शेष ४ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट गुन काले का भी कहना. अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) गुन कालेका भी ऐसेही कहना. जिसमें इतना विशेष स्वस्थान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक है. जैसे काले वर्ण के पुद्गलों का कथन करा, ऐसे ही हरे लाल पीले श्वेत, इन चारों वर्णों का, सुभिगंध दुभिगंध दोनों गंधों का, तिक्त कटुक कषाय अम्बट व मधुर इन पांचों रस का भी कहना. जिस में इतना विशेष

तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णाईहिं उवरिल्लेहिं चउफासेहिय छट्ठाणवडिए ॥ एवं उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि, एवंचेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाण वडिए॥ जहण्णगुण कालगाणं असंखिज्ज पएसियाणं पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा॥ से केणट्ठेणं? गोयमा! जहण्णगुणकालए असंखिज्ज पएसिए जहण्णगुणकालगस्स असंखिज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णादि उवरिल्ले चउफासेहिय

भगवन् ! किस कारन असंख्यात पर्याय कही है? अहो गौतम! एक जघन्य गुन काला असंख्यात प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य गुन काला असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने चतुस्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण के पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, अपर शेष ४ वर्ण २ गंध ५ रस व ऊपर के ४ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट गुन काले का भी कहना. मध्यमगुन काला अनंत प्रदेशिक की पृच्छा? अहो गौतम! अनंत पर्याय कहे हैं. किस कारन अहो भगवन्! ऐसा कहा? अहो गौतम! एक जघन्य गुन काला अनंत प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य गुन काला अनंत प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थपने

वण्ण-गंध-रस-पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, कक्खडफास पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं सत्तफास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसगुण कक्खडेवि ॥ अजहण्णमणुक्कोस गुणकक्खडफासेवि एवं चेव, णवरं सठाणे छट्ठाणवडिए ॥ एवं मउय गुरुय लहुएवि भाणियव्वा ॥ ३४ ॥ जहण्णगुणसीयाणं भंते ! परमाणु पोग्गलाणं पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णगुणसीए परमाणुपोग्गले जहण्णगुणसीयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले,

अर्थ

अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, ५ वर्ण २ गंध ५ रस अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं, कर्कश स्पर्श की तुल्य अपेक्षा हैं. अवर शेष सात स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट गुण कर्कश स्पर्श अनंत प्रदेशिक स्कंध का कहना और अजघन्योत्कृष्ट [मध्यम] गुण कर्कश स्पर्श का भी ऐसे ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान कर्कश स्पर्श के पर्याय से षट्स्थान हीनाधिक कहना. ऐसे ही कोमल, भारी, और लघु का भी कहना. यह चारों स्पर्श का हुवा ॥ ३४ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य गुन शीत स्पर्श प्रमाणु पुद्गल में कितने पर्याय पाते हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय पाते हैं. किस कारन अनंत पर्याय पाते हैं. ? अहो गौतम ! एक जघन्य गुन प्रमाणु पुद्गल अन्य जघन्य गुन प्रमाणु पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ भी तुल्य है, अव-

सूत्र

सिय अब्भहिए, जइ हीणे पएसहीणे, अह अब्भहिए पएसमब्भहिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्ण गंध रस पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, सीयफासं पज्जवेहिं तुल्ले, ॥ उसिणं णिद्ध लुक्खफास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसगुणसीएवि, अजहण्णमणुक्कोस-गुणसीएवि एवंचेव णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं जाव दसपएसिए, णवरं ओगा-हणट्ठयाए, पएपसपरिवुड्डी कायव्वा,जावदस पएसियस्स नवपएसियस्स पएसावुड्डीज्जति ॥ जहण्णगुणसीयाण संखेज्ज पएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णगुणसीए संखिज्जपएसिए जहण्णगुण

अर्थ

प्रदेश अधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध, रस के पर्यव की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्ण स्निग्ध रूक्ष स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट गुण शीत का भी कहना, और अजघन्योत्कृष्ट शीत का भी ऐसे ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान शीत स्पर्श की पर्याय की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है. जैसा यह द्विप्रदेशिक का कहा ऐसे ही तीन, चार, पांच यावत् दश प्रदेशिक का कहना जिस में इतना विशेष अवगाहना की अपेक्षा एकेक प्रदेश की वृद्धि करना यावत् दश प्रदेश पर्यंत नव प्रदेश अधिक कहना जघन्य गुण शीत संख्यात प्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहा है. किस कारन अनंत पर्याय कहा है ?

...गुणे ॥ उक्कोसगुणसीयएवि... वण्ण-गंध-रसेहिं-छट्ठाणवडिए, सीयफासं एवं उक्कोसगुणसीएवि, अजहण्णमणुक्कोसगुणसीएवि एवं चेव, णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, जहण्णगुणसीयाणं दुपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णगुणसीए दुपएसिए जहण्णगुणसीयस्स दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले,

अर्थ

...गाहना की अपेक्षा भी तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है वर्ण गंध रस की अपेक्षा छ स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्ण स्पर्श नहीं कहना क्यों कि यह प्रतिपक्षी है, स्निग्ध रूक्ष की अपेक्षा छ स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट शीत स्पर्श का भी कहना. और अजघन्यानुत्कृष्ट (मध्यम) शीत स्पर्श का भी ऐसा ही कहना जिसमें इतना अधिक कि स्वस्थान षट्स्थान आश्रय हीनाधिक कहना. जघन्य गुण शीत द्विप्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंतपर्याय कहे हैं. अहो भगवन् ! किसकारन से अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम! एक जघन्यगुण शीत द्विप्रदेशिक अन्य जघन्यगुण शीत द्विप्रदेशिक से द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ तुल्य है अवगाहना की अपेक्षा स्यात् हीन है, स्यात् तुल्य है, स्यात् अधिक है, यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है, अधिक है तो एक

मूल

पज्जवेहिं तुल्ले, उसिणणिद्ध लुक्ख फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए. ॥ एवं उक्कोसगुण सीएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणसीएवि एवं चेव, णवरं सट्ठाणे छट्ठाण वडिए जहण्णगुणसीयाणं अणंत पएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणसीए अणंत पएसिए जहण्णगुण सीतस्स अणंत पएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिइए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं छट्ठाणवडिए, सीयफास पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसाहि

अर्थ

गुन शीत असंख्यात प्रदेशिक से द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ चतुस्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है. वर्ण गंध रस के पर्याय की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्णस्निग्ध रुक्ष स्पर्श के पर्यव की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट गुन शीत का जानना. मध्यमगुन शीत का भी वैसे ही कहना परन्तु स्वस्थान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक. जघन्यगुण शीत अनंत प्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत कहे हैं ? अहो गौतम! जघन्य गुन शीत अन्य जघन्य गुन शीत की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से षट्स्थान हीनाधिक अवगाहना में चार स्थान, स्थिति में चार स्थान हीनाधिक वर्णादि पर्यव में षट्स्थान, शीत की साथ तुल्य अवशेष सात स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है एवंही उत्कृष्ट गुन शीतका भी कहना, अजघन्योत्कृष्ट गुन शीतका भी ऐसाही कहना. जिस में इतना अधिक स्वस्थान शीत के पर्याय कर षट् स्थान हीनाधिक है. जैसे शीत स्पर्श का वर्णन कहा,

सूत्र

अणंत पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा! उक्कोस पएसिए खंधे उक्कोसपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहिं छट्ठाणं वडिए ॥ अजहण्णमणुक्कोस पएसियाणं खंधाणं पुच्छा ? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ? गोयमा! अजहण्णमणुक्कोस पएसिए खंधे अजहण्णमणुक्कोस पएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण

अर्थ

वर्ण गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ उत्कृष्ट (अनंत प्रदेशिक) स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! उत्कृष्ट स्कन्ध के अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक उत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध अन्य उत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ भी तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ अजघन्यो उत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम! अनंत पर्याय हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! अजघन्योत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध के अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक अजघन्य अनुत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध अन्य अजघन्य अनुत्कृष्ट स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की

सूत्र

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स, दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णठिईयाणं भंते ! पोग्गलाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए पोग्गले जहण्णठिईयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं

अर्थ

दोनों होते हैं. इन दोनों की स्थिति दंड कपाट मथन लोक पूर्ण करे तब चार समय की होती है, इसलिये तुल्य कहे हैं. अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) पुद्गल स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं. अहो भगवन् ! अजघन्योत्कृष्ट पुद्गल स्कन्ध की अनंत पर्याय किस कारन कही है ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का स्कन्ध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक होता है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है. जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन जघन्य स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य

सूत्र

अट्ठयाए पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसठिईएवि, अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवंचेव, णवरं ठिईए चउट्ठाण वडिए, जहण्णगुण कालगाणं भंते ! पोग्गलाणं केव-इया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ? गोयमा! जहण्णगुण कालए पोग्गले जहण्णगुणकालगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिय वण्ण गंध रस पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेणं

अर्थ

स्थितिवाला पुद्गल अन्य जघन्य स्थितिवाले पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति वाले का भी कहना. और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले का भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है. अहो भगवन् ! जघन्य गुन काले वर्ण के पुद्गल के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुन काले वर्ण के पुद्गल के अनंत पर्याय है ? किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्यगुण काले वर्णवाला पुद्गल अन्य जघन्य काले गुनवाले पुद्गलकी अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा

गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालयाणं पोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसगुण कालएवि अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि, एवं चेव ॥ णवरं संट्ठाणे छट्ठाण वडिए, एवं जहा कालवण्ण पज्जवाणं वत्तव्वया भणिया तहा सेसाणवि वण्ण गंध रस फासाण वत्तव्वयाभाणियव्वा जाव अजहण्ण मणुक्कोसगुण लुक्खे सट्ठाणे छट्ठाण वडिए, सेत्त रूवि अजीव पज्जवा ॥ सेत्तं अजीव पज्जवा ॥ सेत्तं पज्जवा ॥ इति पण्णवणा भगवईए विसेसपय पंचमं सम्मत्तं ॥ ५ ॥

भी षट्स्थान हीनाधिक है. काले वर्ण के पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, ऊपर शेष वर्ण गंध रस स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है, इस कारन अहो गौतम ! ऐसा कहा जघन्य काले गुन के पुद्गल के अनंत पर्याय ऐसे ही उत्कृष्ट काले गुन के भी असंख्यात पर्याय कहना और अजघन्य उत्कृष्ट काले गुन का भी ऐसे ही कहना विशेष स्वस्थानमें षट् स्थान हीनाधिक कहना. यों जिस प्रकारसे काले वर्ण के पुद्गल की व्यक्तव्यता कही वैसे ही शेष वर्ण गंध रस स्पर्श की व्यक्तव्यता कहना. यावत् अजघन्योत्कृष्ट गुन रूक्ष पुद्गल स्वस्थान षट् स्थान हीनाधिक है. यह रूपी अजीव के पर्याय का अधिकार हुवा. यह अजीव के पर्याय का अधिकार हुवा और यह दो प्रकार के पर्याय का अधिकार समाप्त हुवा. इति भगवती पन्नवना का पर्याय विशेष नामक पांचवा पद समाप्तम् ॥ ५ ॥

* प्रथम विरह पदम्. *

सूत्र

बारस, चउवीसाई, संतरयं, एगसमय, कत्तोय, उवट्टण, परभवियाउयंच, अट्ठेव आगरिसा ॥ १ ॥ निरयगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥ तिरियगईणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारसमुहुत्ता मणुयगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता॥देवगईणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता

अर्थ

अब छठे पद में जीव का उपपातादि सम्बंधी विरह (अंतर) कहते हैं. इस के आठ द्वार हैं जिस के नाम-१. सामान्य से बारे मुहूर्त का उपपात उद्वर्तन का विरह द्वार २. चौबीस मुहूर्तादि विशेष उपपात उद्वर्तन द्वार, ३ उपपात उद्वर्तन का अंतर, ४ एक समय में उपपात उद्वर्तन, ५ कहां से आकर कर उत्पन्न होवे यह आगतद्वार ६ मरकर कहां जावे सो गतद्वार, ७ परभव का आयु कितने प्रकार से बंधे, और ८ आठवा आगरिसा द्वार. प्रथम विरह द्वार सामान्य से कहते हैं. अहो भगवन् ! नरक में कितने काल का विरह होता है ? [एकादि जीव नरक में उत्पन्न हुवे बाद फिर जितने काल बाद दूसरा जीव आकर उत्पन्न होवे उसे विरह कहते हैं] अहो गौतम ! जघन्य से एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त [प्रश्न-प्रथमादि सातों नरक में से किसी भी नरक में चौबीस मुहूर्त से कम विरह नहीं कहा तो यहां १२ मुहूर्त का विरह

सूत्र

गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥ सिद्धिगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा ॥ १ ॥ निरयगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उवट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥ तिरियगईणं भंते ! केवइयं

अर्थ

किस प्रकार कहा ? उत्तर—समुच्चय सातों नरक में कोइ भी जीव उत्पन्न नहीं होवे इस आश्रिय बारह मुहूर्त का विरह कहा है] अहो भगवन् ! तिर्यंचगति का विरह कितने काल का कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का. (यह तिर्यंच गति का विरह अन्य गति से आकर उत्पन्न होवे उस अपेक्षा से कहा है, क्योंकि पांच स्थावर में तो वे ही मरकर समय २ असंख्यात, तथा वनस्पति में अनंत उत्पन्न होते हैं) अहो भगवन् ! मनुष्य गतिका कितना विरह कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त. अहो भगवन् ! देवगति का विरह कितने काल का कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का. अहो भगवन् ! सिद्ध गति का विरह कितने काल का कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ महिने का ॥ १ ॥ अब निकलने आश्रिय विरह कहते हैं अहो भगवन् ! नरक में निकलने आश्रिय कितने काल का विरह कहा है ? [एक जीव नरक का मरे बाद दूसरा जीव मरे उस का जितना अंतर पडे] अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त अहो भगवन् ! तिर्यंच गति में निकलने का कितने

काल विरहिया उवट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥ मणुयगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उवट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता एवं देवगइणवि ॥ १ ॥ २ ॥ रयणप्पभापुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं काल विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥ सक्करप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं सत्तराइंदियाइं ॥ वालुयप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अद्धमासं ॥ पंकप्पभा

काल का विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का. अहो भगवन् ! मनुष्य गति का कितने काल का विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का. अहो भगवन् ! देवता का निकलने आश्रित कितने काल का विरह कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का और सिद्ध तो सादि अपर्यवसित (सादि अनंत) है ते चवते नहीं है. इसलिये उन का चवन आश्रित विरह नहीं होता है. यह प्रथम द्वार ॥ २ ॥ अब चौवीस ही दंडक का प्रश्न २ कहते हैं. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा नरक का उत्पात आश्रित कितने काल का

सूत्र

पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं काल विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं मासं ॥ धूमप्पभापुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं दोमासा ॥ तमप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं काल विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चत्तारिमासा ॥ अहे सत्तमा पुढवि नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥ ३ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं-समयं, उक्कोसेणं चउवीसं

अर्थ

विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का [ऐसे आगे भी प्रश्नोत्तर जानना] शर्कर प्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट सात अहो रात्रि का, वालु प्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट पन्दरह दिन, पंकप्रभा पृथ्वी में जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक महीना का, धूम्रप्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो महीने का, तमप्रभा में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चार महिने का और सातवी तमतमा नरक में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट छ महीने का ॥ ३ ॥ असुरकुमार देवता का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का, जैसा असुर

सूत्र

मुहुत्ता॥णागकुमाराणं भंते!केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा!जहण्णेणं एगसमयं उक्कोसेणं चउवीस मुहुत्ता॥एवं सुवण्णकुमाराणं विज्जुकुमाराणं अग्गिकुमाराणं, दीवकुमाराणं, दिसा कुमाराणं, उदहि कुमाराणं, वाउकुमाराणं, थणियकुमाराणय पत्तेयं २ जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं चउवीसं मुहुत्ता ॥ ४ ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! अणुसमयमविरहियं उववाएणं पण्णत्ता एवं आउकाइयाणंवि, तेउकाइयाणंवि, वाउकाइयाणंवि वणस्सइकाइयाणंवि,अणुसमयम विरहियं उववाएणं प०॥५॥बेइंदियाण भंते! केवइय कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता?गोयमा! जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्ता॥एवं तेइंदियाय

अर्थ

कुमार का कहा ऐसा ही नाग कुमार, सुवर्ण कुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार, वायुकुमार, और स्तनित कुमार इन दशोंही भवनपति देवों को अलग २ जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का विरह जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकायिकादि चारों स्थावर में समय २ असंख्यात उत्पन्न होते हैं और वनस्पति में साधारन आश्रिय समय २ अनंत जीवों उत्पन्न होते हैं. इसलिये अविरहित जानना ॥ ५ ॥ बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय व चौरिन्द्रिय का जघन्य एक समय का उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तका संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रियका भी जघन्य एक समयका उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तका, गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रियका जघन्य

सूत्र

पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं काल विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं मासं ॥ धूमप्पभापुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं दोमासा ॥ तमप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं काल विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चत्तारिमासा ॥ अहे सत्तमा पुढवि नेरइयाण भंते! केवइयं काल विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेण छम्मासा ॥ ३ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउवीसं

अर्थ

विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का [ऐसे आगे भी प्रश्नो-त्तर जानना] शर्करप्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट सात अहो रात्रि का, वालु प्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट पन्दरह दिन, पंकप्रभा पृथ्वी में जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक महीना का, धूमप्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो महीने का, तमप्रभा में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चार महिने का और सातवी तमतमा नरक में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट छ महीने का ॥ ३ ॥ असुरकुमार देवता का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का, ऐसा आगे

मुहुत्ता॥णागकुमाराणं भंते!केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा!जहण्णेणं एकसमयं उक्कोसेणं चउवीस मुहुत्ता॥एवं सुवण्णकुमाराणं विज्जुकुमाराणं अग्गिकुमाराणं, दीवकुमाराणं, दिसा कुमाराणं, उदहि कुमाराणं, वाउकुमाराणं, थणियकुमाराणय पत्तेयं २ जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं चउवीसं मुहुत्ता ॥ ४ ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! अणुसमयमविरहियं उववाएणं पण्णत्ता एवं आउकाइयाणंवि, तेउकाइयाणंवि, वाउकाइयाणंवि वणस्सइकाइयाणंवि,अणुसमयम विरहियं उववाएणं प०॥५॥बेइंदियाण भंते! केवइय कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता?गोयमा! जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्ता॥एवं तेइंदियाय

कुमार का कहा ऐसा ही नाग कुमार, सुवर्ण कुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार, वायुकुमार, और स्तनित कुमार इन दशोंही भवनपति देवों का अलग २ जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का विरह जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकायिकादि चारों स्थावर में समय २ असंख्यात उत्पन्न होते हैं और वनस्पति में साधारन आश्रिय समय २ अनंत जीवों उत्पन्न होते हैं. इसलिये अविरहित जानना ॥ ५ ॥ बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय व चौरिन्द्रिय का जघन्य एक समय का उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त का संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रियका भी जघन्य एक समयका उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त का, गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रियका जघन्य

सूत्र

पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं काल विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं मासं ॥ धूमप्पभापुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं दोमासा ॥ तमप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं काल विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चत्तारिमासा ॥ अहे सत्तमा पुढवि नेरइयाणं भंते! केवइय काल विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥ ३ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं

अर्थ

विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त का [ऐसे आगे भी प्रश्नोत्तर जानना] शर्कर प्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट सात अहो रात्रि का, वालु प्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट पन्दरह दिन, पंकप्रभा पृथ्वी में जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक महीना का, धूम्रप्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो महीने का, तमप्रभा में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चार महिने का और सातवी तमतमा नरक में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट छ महीने का ॥ ३ ॥ असुरकुमार देवता का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का, जैसा असुर

सूत्र

पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं मासं ॥ धूमप्पभापुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं दोमासा ॥ तमप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चत्तारिमासा ॥ अहे सत्तमा पुढवि नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥ २ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउवीसं

अर्थ

विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का [ऐसे आगे भी प्रश्नो- त्तर जानना] शर्कर प्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट सात अहो रात्रि का, वालु प्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट पन्द्रह दिन, पंकप्रभा पृथ्वी में जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक महीना का, धूमप्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो महीने का, तमप्रभा में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चार महिने का और सातवी तमतमा नरक में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट छ महीने का ॥ २ ॥ असुरकुमार देवता का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का, जैसा असुर

सूत्र

[illegible] केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं
[illegible] सुवण्णकुमाराणं विज्जुकुमाराणं अग्गिकुमाराणं,
[illegible] दिसा कुमाराणं, उदहि कुमाराणं, वाउकुमाराणं, थणियकुमाराणय
[illegible] चउव्वीसं मुहुत्ता ॥ ४ ॥ पुढविकाइयाणं
भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! अणुसमयमविरहियं
उववाएणं पण्णत्ता एवं आउकाइयाणंवि, तेउकाइयाणंवि, वाउकाइयाणंवि वणस्स-
इकाइयाणंवि अणुसमयम विरहिय उववाएणं प० ॥५॥ बेइंदियाण भंते! केवइय कालं विर-
हिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं॥एवं तेइंदियाय

अर्थ

[illegible] नाग कुमार, सुवर्ण कुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, दिशाकुमार,
उदधिकुमार वायुकुमार, और स्तनित कुमार इन दशोंही भवनपति देवों का जघन्य एक समय
[illegible] मुहूर्त का विरह जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकायिकादि चारों स्थावर में समय २ असंख्यात
[illegible] होते हैं और वनस्पति में अनंत आश्रिय समय २ अनंत जीवों उत्पन्न होते हैं. इसलिये
[illegible] जानना ॥ ५ ॥ बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय व चौरिन्द्रिय का जघन्य एक समय का उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त का
[illegible] तिर्यंच पंचेन्द्रिय का भी जघन्य एक समय का उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त का, गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय का जघन्य

चउरिंदियाय सम्मुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं भंते! केवइयं काले विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एग समयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥ सम्मुच्छिम मणुस्साणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता। गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं भंते! पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता॥६॥ वाणमंतराणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥ जोइसियाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता, सोहम्मे कप्पे देवाणं भंते? केवइयं कालं विरहिया उववाएणं

सूत्र

अर्थ

एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का, संमूर्च्छिम मनुष्य का जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त का (यद्यपि संमूर्च्छिम मनुष्य का आयुष्य अंतर्मुहूर्त का है तथापि किसी वक्त में ऐसा ही जोग बनता है कि कोई भी संमूर्च्छिम २४ मुहूर्त तक उत्पन्न नहीं होता है) गर्भज मनुष्य का जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त ॥ ६ ॥ वाणव्यन्तर देव का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त, ज्योतिषी देव का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त, सौधर्म ईशान देवलोक का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त, सनत्कुमार देवलोक का जघन्य एक समय उत्कृष्ट नव दिन बीस मुहूर्त का, माहेन्द्र देवलोक का

पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥ ईसाणे कप्पे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता॥सणं कुमार देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं णवराइंदियाइं वीस मुहुत्ताइं ॥ माहिंद देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं बारसराइंदियाइं दस मुहुत्ताइं ॥ बंभलोए देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अद्धतेवीसंराइंदियाइं ॥ लंतग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं पणयालीसं राइंदियाइं ॥ महासुक्कदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असीतिराइंदियाइं ॥सहस्सार देवाणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं राइंदियसतं, आणय देवाणं पुच्छा ? गोयमा !

जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह दिन दश मुहूर्त, ब्रह्मदेवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट साढे बावीस अहोरात्रि लांतक देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट पैंतालीस अहोरात्रि, महाशुक्र देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट अस्सी अहोरात्रि, सहस्रार देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक सो (१००) अहो रात्रि, आनतदेवलोक में और प्राणत देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात महीने आरण और अच्युत देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात वर्ष, ग्रीवेक की नीचे की त्रिक में संख्यात सो वर्ष

मूल

जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं संखिज्जमासा, पाणय देवाणं पुच्छा ? जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं संखिज्जमासा ॥ आरण देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं संखिज्जवासा ॥ अच्चुय देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं संखिज्जवासा ॥ हेट्ठिमगेविज्जदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं संखिज्जाइं वास सयाइं, ॥ मज्झिम गेविज्जग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं संखिज्जाइं वाससहस्साइं उवरिम गेविज्जग देवाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससयसहस्साइं ॥ विजय वेजयंत जयंत अपराजिय देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं

अर्थ

वर्ष, मध्यम ग्रैवेयक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष, ऊपर की ग्रैवेक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात लाख वर्ष, विजय वेजयंत जयंत और अपराजित विमान में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात वर्ष और सर्वार्थ सिद्ध विमान का जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का संख्यातवा भाग का अहो भगवन्! सिद्ध भगवंत सिद्धगति उत्पन्न होवे तो कितने काल का विरह होवे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट छ मास का (यहां संख्यात महीने आवे वहां पूरा नहीं संख्यात सो वर्ष आवे वहां पूरे हजार वर्ष नहीं, जहां संख्यात हजार वर्ष आवे वहां पूरे लाख नहीं. और जहां संख्यात लाख

सूत्र

पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥ ईसाणे कप्पे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता॥सणं कुमार देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं णवराइंदियाइं वीस मुहुत्ताइं ॥ माहिंद देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं बारसराइंदियाइं दस मुहुत्ताइं ॥ बंभलोए देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अद्धतेवीसंराइंदियाइं ॥ लंतग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं पणयालीसं राइंदियाइं ॥ महासुक्कदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असीतिराइंदियाइं ॥सहस्सार देवाणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं राइंदियसतं, आणय देवाणं पुच्छा ? गोयमा !

अर्थ

जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह दिन दश मुहूर्त, ब्रह्मदेवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट साढे बावीस अहोरात्रि लांतक देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट पैंतालीस अहोरात्रि, महाशुक्र देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट असी अहोरात्रि, सहस्रार देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक सो (१००) अहो रात्रि, आनतदेवलोक में और प्राणत देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात महीने आरण और अच्युत देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात वर्ष, ग्रीवेक की नीचे की त्रिक में संख्यात सो वर्ष

सूत्र

नेरइयाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति ॥ तिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरपि उववज्जंति ॥ मणूसाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति? गोयमा! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ देवाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥रेयाणं भंते!किं संतरं उववज्जंतिनिरंतरं उववज्जंति ? गोयमा!संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते!किं संतरं

अर्थ

अब तीसरा अंतर द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! नेरिये अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि निरंतर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [तब ही विरह पडता है] और अंतर रहित निरंतर भी उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक क्या अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [यह प्रश्न तिर्यंच आश्रिय] निरंतर भी उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! मनुष्य अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! देवता अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न

नेरइयाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति ॥ तिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ मणूसाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति? गोयमा! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ देवाण भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥देवाणं भंते!किं संतरं उववज्जंतिनिरंतरं उववज्जंति ? गोयमा!संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते!किं संतरं

अब तीसरा अंतर द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! नेरिये अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि निरंतर उत्पन्न होते हैं ! अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [वह ही विरह पड़ता है] और अंतर रहित निरंतर भी उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक क्या अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ! अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [यह भव तिर्यंच आश्रिय] निरंतर भी उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! मनुष्य अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! देवता अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न

उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति? गोयमा! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ एवं जाव
अहे सत्तमाए संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥ असुरकुमाराणं भंते! देवा किं संतरं
उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ॥
एवं जाव थणियकुमारा संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति पुढवि
काइयाणं भंते! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति? गोयमा! नो संतरं उववज्जंति निरंतरं
उववज्जंति ॥ एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ॥
बेइंदियाणं भंते! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उवव-

होते हैं और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं. अब चौबीस दंडक आश्रिय कहते हैं. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा
नरक के जीव अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित
भी उत्पन्न होते हैं और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं. जैसा रत्नप्रभा नरक का कहा वैसा ही सातोंही
नरक का जानना. अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित
उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं.
ऐसे ही स्तनित कुमार पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! पृथ्वी काया के जीव अंतर सहित उत्पन्न
होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया अंतर सहित उत्पन्न नहीं होते

मूल

णेरइयाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति ॥ तिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरपि उववज्जंति ॥ मणूसाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति? गोयमा! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ देवाण भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरपि उववज्जंति निरंतरपि उववज्जंति॥ देवाणं भंते!किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥ रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते!किं संतरं

अर्थ

अब तीसरा अंतर द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! नेरिये अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि निरंतर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [वत्र ही विरह पड़ता है] और अंतर रहित निरंतर भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक क्या अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [यह यत्न तिर्यंच आश्रिय] निरंतर भी उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! मनुष्य अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! देवता अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न

उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति?गोयमा!संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥एवं जाव
अहे सत्तमाए संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥ असुरकुमाराणं भंते! देवा किं संतरं
उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ॥
एवं जाव थणियकुमारा संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति पुढवि
काइयाणं भंते!किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति?गोयमा!नो संतरं उववज्जंति निरंतरं
उववज्जंति ॥ एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ॥
वेइंदियाणं भंते! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उवव-

अर्थ

होते हैं और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं. अब चौवीस दंडक आश्रिय कहते हैं. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा
नरक के जीव अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित
भी उत्पन्न होते हैं और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं. जैसा रत्नप्रभा नरक का कहा तैसा ही सातोंही
नरक का जानना. अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित
उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं.
ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! पृथ्वी काया के जीव अंतर सहित उत्पन्न
होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया अंतर सहित उत्पन्न नहीं होवे

सूत्र

ज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति ॥ एवं जाव पंचिदिय तिरिक्ख जोणिया संतरंपि उवव-ज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ मणूसाणं भंते! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति? गोयमा!संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ एवं वाणमंतर जोइसिया सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्ध देवाय संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ सिद्धाणं भंते ! किं संतरं सिज्झंति निरंतरं सिज्झंति ? गोयमा ! संतरंपि सिज्झंति निरंतरंपि सिज्झंति ॥ १ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं संतर उव्वट्टंति निरंतरं उव्वट्टंति ? गोयमा ! संतरंपि उव्वट्टंति निरंतरं उव्वट्टंति ॥ एवं जाव जहा उववाओ भणिओ तहा उव्वट्टणावि सिद्धि-

अर्थ

परंतु निरन्तर उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही वनस्पति काया तक कहना. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि निरंतर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अन्तर सहित भी उत्पन्न होते हैं और निरंतर भी उत्पन्न होते हैं, ऐसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक यावत् सर्वार्थ सिद्ध विमान पर्यंत कहना सब . निरंतर दोनों प्रकार उत्पन्न होते हैं ॥ अहो भगवन् ! सिद्ध भगवंत अंतर सहित सिद्ध होते हैं कि निरंतर सिद्ध होते हैं अहो गौतम ! दोनों ही प्रकार सिद्ध होते हैं ॥ १ ॥ अब निकलने आश्रिय कहते हैं. अहो भगवन् ! नरक के जीवों अंतर सहित निकलते हैं कि निरंतर निकलते हैं ? अहो गौतम ! जैसा उत्पन्न होने का कहा वैसा ही उद्वर्तन-निकलने का भी कहना

उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति? गोयमा! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥ असुरकुमाराणं भंते! देवा किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरपि उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ॥ एवं जाव थणियकुमारा संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति पुढवि काइयाणं भंते! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति? गोयमा! नो संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ॥ एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ॥ बेइंदियाणं भंते! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उवव-

होते हैं और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं. अब चौवीस दंडक आश्रिय कहते हैं. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा नरक के जीव अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं. जैसा रत्नप्रभा नरक का कहा वैसा ही सातोंही नरक का जानना. अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! पृथ्वी काया के जीव अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया अंतर सहित उत्पन्न नहीं होवे

समएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! अणुसमयं अविरहियं असंखेज्जा उववज्जंति॥ एवं जाव वाउकाइयाणं॥ वणस्सइकाइयाणं भंते ! एग समएणं केवइया उववज्जंति? गोयमा! सट्ठाणुववायं पडुच्च अणुसमयं अविरहियं अणंता उववज्जंति ॥ परट्ठाणुववायं पडुच्च अणुसमयं अविरहियं असंखेज्जा उववज्जंति ॥ बेइंदियाणं भंते ! केवइया एगसमएणं उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एगोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा ॥ एवं तेइंदिय चउरिंदिय सम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख

पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! वनस्पतिकाया एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! स्वस्थान आश्रिय अर्थात् वनस्पति से मरकर पुनः वनस्पति में उत्पन्न होना उस अपेक्षा समय २ में विरह रहित अनंत उत्पन्न होते हैं और परस्थान आश्रिय असंख्यात उत्पन्न होते हैं क्योंकि वनस्पति छोड अन्य स्थान में असंख्यात ही जीवों हैं. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्यात, असंख्यात, उत्पन्न होते हैं, ऐसे ही तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय, संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय, गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय. संमूर्च्छिम मनुष्य, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, और प्रथम सौधर्म देवलोक से यावत् आठवे सहस्रार देवलोक तक नरक जैसे ही एक समय में

घज्ञा भाणियव्वा जाव वेमाणिया, णवरं जोतिसिय वेमाणिएसु चयणं अभिलावो कायव्वो ॥ ३ ॥ १० ॥ नेरइयाणं भंते ! एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा! जहण्णेणं एगोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा उववज्जंति ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ असुरकुमाराणं भंते ! एग समएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेण एगोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं संखिज्जावा असंखेज्जावा ॥ एवं णागकुमारा जाव थणियकुमारावि भाणियव्वा ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! एग

परंतु सिद्ध भगवंत का उद्वर्तन नहीं कहना. और ज्योतिषी तथा वैमानिक का चवन कहना ॥ इति तीसरा द्वार॥ १०॥ चौथा एकसमय में उत्पन्न होने आश्रिय कहते हैं. अहो भगवन् ! नेरीये एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात जैसा यह समुच्चय नरक का कहा तैसे ही रत्नप्रभा आदि सातों नरक का कहना अहो भगवन् ! असुर कुमार देवता एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात. ऐसे ही नाग कुमार यावत् स्थनित कुमार पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! समय २ में विरह-रहित असंख्यात उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही यावत् वायु काया

सूत्र

समएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! अणुसमयं अविरहियं असंखेज्जा उववज्जंति ॥ एवं जाव वाउक्काइयाणं ॥ वणस्सइकाइयाणं भंते ! एग समएणं केवइया उववज्जंति? गोयमा! सट्ठाणुववायं पडुच्च अणुसमयं अविरहियं अणंता उववज्जंति ॥ परट्ठाणुववायं पडुच्च अणुसमयं अविरहियं असंखेज्जा उववज्जंति ॥ बेइंदियाणं भंते ! केवइया एगसमएणं उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एगोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा ॥ एवं तेइंदिय चउरिंदिय सम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख

अर्थ

पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! वनस्पतिकाया एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! स्वस्थान आश्रिय अर्थात् वनस्पति से मरकर पुनः वनस्पति में उत्पन्न होना उस अपेक्षा समय २ में विरह रहित अनंत उत्पन्न होते हैं और परस्थान आश्रिय असंख्यात उत्पन्न होते हैं क्योंकि वनस्पति छोड अन्य स्थान में असंख्यात ही जीवों हैं. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय, संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय, गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय, संमूर्च्छिम मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी, और प्रथम सौधर्म देवलोक से यावत् आठवे सहस्रार देवलोक तक नरक जैसे ही एक समय में

जोणिया, गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिआ ॥ संमुच्छिममणुस्सा, वाणमंतरा जोइसिया सोहम्मीसाण सणंकुमार माहिंद बंभलोय लंतक महासुक्क सहस्सार कप्पदेवा एते जहा नेरइया ॥ गब्भवक्कंतिय मणुस्साणयपाणय आरण अच्चुय गेविज्जगअणुत्तरो-ववाइयाय एते जहण्णेणं एगोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा उववज्जंति सिद्धाणं भंते ! एगं समएणं केवइया सिज्झंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एगोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं अट्ठसयं ॥ २१ ॥ नेरइयाणं भंते ! एगं समएणं केवइया उवट्टंति? गोयमा! जहण्णेणं एगोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखिज्जावा असंखिज्जावा उवट्टंति, एवं जहा

जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात उत्पन्न होते हैं. और गर्भज मनुष्य आणत प्राणत आरण अच्युत यह चार देवलोक में नव ग्रैवेयक में पांच अनुत्तर विमान में जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्यात ही उत्पन्न होते हैं क्यों कि गर्भज मनुष्य तो संख्यात ही हैं और नवमे देवलोक से पांचवे सर्वार्थ सिद्ध तक मनुष्य ही मरकर जाते हैं, इसलिये एक समय में संख्यात ही उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! सिद्ध एक समय में कितने सिद्ध होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट एक सौ आठ सिद्ध होते हैं ॥ २१ ॥ अब उद्वर्तन कहते हैं. अहो भगवन् ! नरकमें से एक समय में कितने जीवों का उद्वर्तन होता है अर्थात् एक समय में कितने जीवों निकलते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य

सूत्र

उवावओ भणिओ तहा उवट्टणावि सिद्धवज्जा भाणियव्वा ॥ जाव अणुत्तरोववाइया णवरं जोइसिय वेमाणियाणं चयणेणं अभिलावो कायव्वो॥४॥१२॥ नेरइयाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जति ! किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइया णो नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति नो देवेहिंतो उववज्जंति जदि तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, बेइंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो, तेइंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो, चउरिंदिय तिरिक्ख-जोणिएहिंतो पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णो एगिंदिय

अर्थ

एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात. यों जिस प्रकार उत्पात कहा तैसा ही उद्वर्तन का कहना किन्तु सिद्ध का उद्वर्तन नहीं कहना और ज्योतिषी वैमानिक का चवन कहना ॥ इति चौथा द्वार ॥ १२ ॥ अब पांचवा आगत द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! नरक के जीवों कहां से आकर उत्पन्न होते हैं. क्या नरक से उत्पन्न होते हैं तिर्यंच से उत्पन्न होते हैं, मनुष्य से उत्पन्न होते हैं, कि देवता से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नेरीये नरक में उत्पन्न नहीं होते हैं, तैसे ही देव से भी उत्पन्न नहीं होते हैं किन्तु तिर्यंच और मनुष्य से उत्पन्न होते हैं. यदि अहो भगवन् ! नरक के जीवों तिर्यंच में उत्पन्न होते हैं तो क्या एकेन्द्रिय तिर्यंच से उत्पन्न होते हैं, कि बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय तिर्यंच से उत्पन्न होते हैं ?

तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, णो बेइंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो, णोतेइंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो, णो चउरिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, किं जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जदि जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उव-

अर्थ

अहो गौतम ! एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय से तो नेरीये उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु तिर्यंच पंचेन्द्रिय से नेरीये उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! यदि तिर्यंच पंचेन्द्रिय से नेरीये उत्पन्न होते हैं. तो क्या जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं कि स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं कि खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं ? अहो गौतम जलचर स्थलचर खेचर तीनों से ही होते हैं. यदि अहो भगवन् ! जलचर तिर्यंच

सूत्र

ज्जंति? गोयमा! सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तग सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्तग सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तग सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति नो-अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइगब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्त गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिए हिंतो उववज्जंति अपज्जत्त गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिए हिंतो उववज्जंति ? गोयमा !

अर्थ

पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं तो क्या संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं कि गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं? अहो गौतम ! संमूर्च्छिम गर्भज दोनों मेही होते हैं. यदि अहो भगवन् ! संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं. तो क्या पर्याप्त संमूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त संमूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त संमूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से

सूत्र

तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, णो बेइंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो, णोतेइंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो, णो चउरिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति,पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, किं जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जदि जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उव-

अर्थ

अहो गौतम ! एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय से तो नेरीये उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु तिर्यंच पंचेन्द्रिय से नेरीये उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! यदि तिर्यंच पंचेन्द्रिय से नेरीये उत्पन्न होते हैं. तो क्या जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं कि स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं कि खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं ? अहो गौतम जलचर स्थलचर खेचर तीनों से ही होते हैं. यदि अहो भगवन् ! जलचर तिर्यंच

ज्जंति? गोयमा! सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तग सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्तग सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! पज्जत्तग सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति नो-अपज्जत्तग-सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्त गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्त गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा!

पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं तो क्या संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं कि गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं? अहो गौतम! संमूर्च्छिम गर्भज दोनों से होते हैं. यदि अहो भगवन्! संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त संमूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त संमूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! पर्याप्त संमूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से

सूत्र

पज्जत्त गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिदिए हिंतो उववज्जंति णो अपज्जत्तग गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिदिए हिंतो उववज्जंति ॥ जइ थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति ? उववज्जंति किं चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चउप्पय परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति, परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरि- थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति, परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो जोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति उववज्जंति किं संमुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिए हिंतो उववज्जंति? गोयमा ! गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतिय संमुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतिय

अर्थ

उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त समूर्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय जलचर से उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त जलचर तिर्यंच गर्भज से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त गर्भज जलचर से उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि अहो भगवन् !

चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ समुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तग संमुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तग सम्मुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! पज्जत्तग सम्मुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो-अपज्जत्तग सम्मुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जदि गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउय गब्भ-

स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच से उत्पन्न होते हैं तो क्या चतुष्पद स्थलचर से उत्पन्न होवे हैं कि परिसर्प से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम! दोनों में से उत्पन्न होते हैं यदि चतुष्पद स्थलचर होते हैं तो क्या समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर से उत्पन्न होते हैं कि गर्भज चतुष्पद स्थलचर से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! दोनों में से उत्पन्न होते हैं. यदि संमूर्च्छिम चतुष्पद से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त संमूर्च्छिम से होते हैं, कि अपर्याप्त संमूर्च्छिम से होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त से होते हैं परंतु अपर्याप्त से नहीं होते हैं. यदि गर्भज चतुष्पद स्थलचर से उत्पन्न होते हैं तो क्या संख्यात वर्षायुवाले गर्भज चतुष्पद से उत्पन्न होवे हैं

सूत्र

पज्जत्त गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिए हिंतो उववज्जंति णो अपज्जत्तग गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिए हिंतो उववज्जंति ॥ जइ थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति किं चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति ? परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति, परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति किं संमुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिए हिंतो उववज्जंति? गोयमा ! गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतिय संमुच्छिम चप्पय थलचर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति,

अर्थ

उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं, तो क्या पर्याप्त गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय जलचर से उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त जलचर तिर्यंच गर्भज से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त गर्भज जलचर से उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि अहो भगवन् !

उववज्जंति, णो अपज्जत्तग संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति॥ जइ परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, भुजपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति जदि उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संमुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! संमुच्छिमेहिंतोवि गब्भवक्कंतिएहिंतोवि उववज्जंति जइ समुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो

क्या उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं कि भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! दोनों से ही उत्पन्न होते हैं. यदि उरपरि सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होते हैं तो क्या संमुच्छिम उरपरिसर्प से उत्पन्न होते हैं कि गर्भज उरपरिसर्प से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! दोनों से ही उत्पन्न होते हैं. यदि संमुच्छिम उरपरि सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त से होते हैं? अहो गौतम! पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं

पज्जत्तिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति असंखेज्जवासाउय पज्जत्तिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उव-संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तग संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्तग संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! पज्जत्तग संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो

अर्थ कि असंख्यात वर्षायुगर्भज चतुष्पद स्थलचर से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! संख्यात वर्षायुवाले होते हैं परंतु असंख्यात वर्षायुवाले नहीं होते हैं. यदि संख्यात वर्षायु गर्भज चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय नेरीयों पने उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त संख्यात वर्षायु गर्भज स्थलचर पंचेन्द्रिय उत्पन्न होते हैं अपर्याप्त संख्यात वर्षायु गर्भज स्थल पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त से उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि पर्याप्त स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होते हैं. तो

पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति किं संमुच्छिम भुजपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिए हिंतो उववज्जंति गब्भवक्कंतिय भुजपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ संमुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए हिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तयसंमुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिए हिंतो उववज्जंति अपज्जत्तग सम्मुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए हिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ गब्भवक्कंतिय भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति-नो अपज्जत्त-

अर्थ

गौतम ! पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं किन्तु अपर्याप्त से उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि गर्भज भुजपरि सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त से उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनि से उत्पन्न होवे तो क्या संमूर्च्छिम खेचर से उत्पन्न होवे कि गर्भज से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम! दोनों से उत्पन्न होते हैं यदि संमूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक से उत्पन्न होते हैं तो क्या

नेरइयाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जहा ओहिया उववाइया तहा रयणप्पभापुढवि नेरइयावि उववाएव्वा ॥ सक्करप्पभापुढवि नेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहा ओहिया तहेव एएवि उववाएयव्वा, नवरं सम्मुच्छिमेहिंतो पडिसेहो कायव्वो ॥ वालुयप्पभापुढवि नेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहेव वालुयप्पभा पुढवि नेरइयाणं तहेव एएवि णवरं भुयपरिसप्पेहिंतोवि पडिसेहो कायव्वो ॥ पंकप्पभापुढवि नेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहा वालुयप्पभा पुढवि नेरइया णवरं खहयरेहिंतो पडिसेहो कायव्वो ॥ धूमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहा

कहते हैं. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नेरिये कहां से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा ऊपर औधिक-समुच्चय नरकमें उत्पन्न होनेका कथन कहा तैसेही रत्नप्रभा नरकमें भी उत्पन्न होनेका कहना. शर्करप्रभा नरकका भी औधिक जैसाही कहना परंतु इतना विशेष की शर्करप्रभामें संमूर्च्छिम मरकर उत्पन्न नहीं होवे. जैसा शर्करप्रभा पृथ्वीका कहा तैसाही वालुकप्रभा पृथ्वीका जानना परंतु इतना विशेष भुजपरि सर्प मरकर तीसरी नरक में उत्पन्न नहीं होवे. वालुक प्रभा जैसा ही पंक प्रभा में उत्पन्न होने का जानना. परंतु उसमें इतना विशेष कि-खेचर मरकर पंक प्रभा में उत्पन्न नहीं होवे. पंक प्रभा जैसा ही धूम्र प्रभा का कहना

एहिंतो उववज्जंति ॥ जइ खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ सम्मुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, किं संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असंखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो

अर्थ

होते हैं कि अपर्याप्त से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होते हैं तो क्या संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले उत्पन्न होते हैं कि असंख्यात वर्षायु वाले उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! संख्यात वर्षायु से उत्पन्न होते हैं परंतु असंख्यात वर्षायु से उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि संख्यात वर्षायु गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं किन्तु अपर्याप्त से उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि मनुष्य से नरक में उत्पन्न होते हैं तो क्या संमूर्छिम उत्पन्न

... उववज्जंति, अकम्मभूमिग मणुस्सेहिंतो उववज्जंति अंतरदीवग मणुस्सेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! कम्मभूमिएहिंतो उववज्जंति, णोअकम्मभूमिएहिंतो नो अंतरदीवएहिंतो उववज्जंति॥ जइ कम्मभूमिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउय कम्मभूमिएहिंतो उववज्जंति, असंखेज्जवासाउय कम्मभूमिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति॥ जइ संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति नोअपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति। जइ पज्जत्तएहिंतो किं इत्थी-

अर्थ

नहीं होते हैं यदि कर्मभूमि मनुष्य से तमःप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होते हैं तो क्या संख्यात वर्षायु वाले उत्पन्न होते हैं कि असंख्यात वर्षायु वाले उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! संख्यात वर्षायु वाले उत्पन्न होते हैं परंतु असंख्यात वर्षायुवाले उत्पन्न नहीं होते हैं संख्यात वर्षायुवाले मनुष्य उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त मनुष्य उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त मनुष्य उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! पर्याप्त मनुष्य उत्पन्न होते हैं, परंतु अपर्याप्त मनुष्य उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि पर्याप्त संख्यात वर्षायु कर्म भूमी मनुष्य से छठी नरक में उत्पन्न होते हैं तो क्या स्त्री से उत्पन्न होते हैं कि पुरुष से उत्पन्न होते हैं कि नपुंसक से उत्पन्न होते हैं?

सूत्र

पंकप्पभापुढवि नेरइया नवरं चउप्पएहिंतोवि पडिसेहो कायव्वो, तमप्पभा पुढवि नेरइया नवरं थलयरेहिंतोवि पडिसेहो कायव्वो, इमेणं अभिलावेणं। जइ पंचिंदिय तिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्जंति किं जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणि-एहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जलयर पंचिंदिएहिंतो उववज्जंति, नो थलयर पंचि-दिएहिंतो उववज्जंति नो खहयर पंचिंदिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ मणुस्सेहिंतो नेरइयाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जहा धूमप्पभापुढवि नेरइया

अर्थ

परंतु जिस में इतना विशेष चतुष्पद स्थलचर धूम्र प्रभा में उत्पन्न नहीं होवे. अहो भगवन् ! तमप्रभा पृथ्वी में कहां से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! धूम्र प्रभा का कहा तैसा ही कहना परंतु स्थलचर उत्पन्न नहीं होवे. तमप्रभा पृथ्वी का इस प्रकार अभिलापक-यदि पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होवे तो क्या जलचरसे उत्पन्न होवे कि स्थलचर से उत्पन्न होवे कि खेचर से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! मात्र एक जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होते हैं परंतु स्थलचर और खेचर से उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि मनुष्यसे उत्पन्न होतेहैं तो क्या कर्मभूमिसे उत्पन्न होतेहैं कि अकर्म भूमिसे उत्पन्न होतेहैं कि अंतरद्वीप के मनुष्यसे उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कर्म भूमि से उत्पन्न होते हैं परंतु अकर्मभूमि और अंतर द्वीप से उत्पन्न

मूल

हिंतो उववज्जंति मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा! नो नेरइए हिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जति एवं जेहिंतो नेरइयाणं उववाओतेहिंतो असुरकुमाराणंवि भाणियव्वो नवरं असंखेज्ज वासाउय अकम्मभूमिग अंतरदीवगमणुस्स तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ॥ सेसं तंचेव ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ १६ ॥ पुढवि काइयाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव देवेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति

अर्थ

मनुष्य से उत्पन्न होवे कि देवता मे उत्पन्न होवे यों जिस प्रकार नरक का उत्पात कहा तैसा ही असुरकुमार देवता का भी कहना जिस में इतना विशेष असंख्यात वर्षायु कर्म भूमि, अकर्म भूमि और अन्तर्द्वीप के मनुष्य तथा तिर्यंच में से उत्पन्न होवे. शेष अधिकार तैसा ही कहना. यों जैसा असुरकुमार का कहा तैसा ही यावत् स्थनित कुमार पर्यंत कहना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी काया में कहां से आकर उत्पन्न होवे, क्या नरक मे उत्पन्न होवे कि तिर्यंच से उत्पन्न होवे कि मनुष्य से उत्पन्न होवे कि देवता से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! नरक का जीव पृथ्वी काया में उत्पन्न नहीं होवे परंतु तिर्यंच से मनुष्य से, और देवता से मरकर पृथ्वी काया में उत्पन्न होता है. यदि तिर्यंच योनिक से पृथ्वी

हिंतो उववजंति पुरिसेहिंतो उववज्जंति, नपुंसएहिंतो उववज्जंति, गोयमा ! इत्थीहिंतो उववज्जंति, पुरिसेहिंतोवि उववज्जंति नपुंसएहिंतो उववज्जंति॥अहे सत्तमाए पुढवि नेरइयाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति गोयमा ! एवंचेव, नवरं इत्थीहिंतो पडिसेहो कायव्वो ॥ १४ ॥ (एगाहा) अस्सण्णी खलु पढमं. दोचं चसिरीसिवा तइयापक्खी सीहा-जंति चउत्थीए, उरगापुण पंचमिं पुढविं ॥ १ ॥ छट्टिंच इत्थियाओ, मच्छामणुया सत्तमिं पुढविं ॥ एसोपरमुववाओ बोधव्वो णरगं पुढवीणं ॥ २ ॥ १५ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्ख जोणिए

अहो गौतम ! स्त्री पुरुष नपुंसक तीनों से उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! नीचे की सातवी नरक में कहां से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा छठी नरक का कहा तैसा ही सातवी नरक का भी कहना जिस में इतना विशेष स्त्री मरकर सातवी नरक में उत्पन्न नहीं होवे ॥ १४ ॥ अब सातों नरक में जो २ उत्पत्ति है वह कहते हैं. प्रथम नरक में असंज्ञी संमूर्च्छिम, दूसरी में से भुजपरी सर्प, तीसरी में खेचर-पक्षी, चौथी में चतुष्पद-सिंहादि, पांचवी में उरपर सर्प. छठी में स्त्री और सातवी में गर्भज मनुष्य और जलचर, इस प्रकार सातों नरक में उत्पन्न होने का उत्कृष्टपना जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता कहां से उत्पन्न होते हैं. क्या नरक से उत्पन्न होवे तिर्यंच से उत्पन्न होवे

सूत्र

वेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति जाव वेमाणिएहिंतो उववज्जंति गोयमा ! भवणवासीदेवेहिंतोवि उववज्जंति जाव वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ॥ जइ भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति किं असुरकुमारदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणिय कुमार देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! असुरकुमार देवेहिंतोवि उववज्जंति जाव थणिय कुमार देवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ वाणमंतर देवेहिंतो उववज्जंति किं पिसाएहिंतो जाव गंधव्वेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पिसाएहिंतोवि जाव गंधव्वेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइजोइसिय देवेहिंतो उववज्जंति किं चंदविमाण-

अर्थ

पतिसे उत्पन्न होवे तो क्या असुरकुमार से होवे कि यावत् स्तनित कुमार से होवे ? अहो गौतम ! दश ही भवनपति देव से चवकर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं. यदि वाणव्यन्तर देव से उत्पन्न होवे तो क्या पिशाच से उत्पन्न होते हैं यावत् गंधर्व से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! आठ ही जाति के व्यन्तर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं. यदि ज्योतिषी से उत्पन्न होवे तो क्या चंद्रमा से होवे कि सूर्य से होवे कि ग्रह से होवे कि नक्षत्र से होवे कि तारा से होवे ? अहो गौतम ! पांचों प्रकार के ज्योतिषी से पृथ्वी काय में उत्पन्न होते हैं. यदि वैमानिक से उत्पन्न होवे तो क्या कल्पोत्पन्न (बारेदेवलोक) से उत्पन्न कि कल्पातीत ग्रैवेयक अनुत्तर विमान से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! कल्पोतपन्न से उत्पन्न होते हैं

सूत्र

मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, देवेहिंतो उववज्जंति॥ जइ तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति, किं एगिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति, जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एगिंदिए तिरिक्ख जोणिएहिंतोवि जाव पंचिंदिए तिरिक्ख जोणिए हिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ एगिंदिय तिरिक्ख जोणिए हिंतो उववज्जंति किं पुढविकाइएहिंतो जाव वणस्सइकाइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पुढविकाइए हिंतोवि जाव वणस्सइकाइएहिंतोवि ॥ जइ पुढविकाइएहिंतो उववज्जंति किं सुहुम पुढविकाइएहिंतो उववज्जंति बायर पुढवि काइएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ सुहुम

अर्थ

काया में आकर उत्पन्न होवे तो क्या एकेन्द्रिय से उत्पन्न होवे, बेइन्द्रिय से, तेइन्द्रिय से, चौरिन्द्रिय से कि पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! पांचों ही जाति से आकर पृथ्वी काया में उत्पन्न होता है. यदि एकेन्द्रिय से पृथ्वीकाया में आकर उत्पन्न होवे तो क्या पृथ्वीकाया से पृथ्वीकाया में उत्पन्न होवे कि अप्काया से उत्पन्न होवे, कि तेउकाया से उत्पन्न होवे कि वायुकाया से उत्पन्न होवे कि वनस्पतिकाया से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! पांचों काया से मरकर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं. यदि पृथ्वीकाया से पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं तो क्या सूक्ष्म पृथ्वीकाया से उत्पन्न होते हैं कि बादर पृथ्वीकाया से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! दोनों ही से उत्पन्न होते हैं. यदि

थेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति जाव वेमाणिएहिंतो उववज्जंति गोयमा ! भवणवासीदेवेहिंतोवि उववज्जंति जाव वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ॥ जइ भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति किं असुरकुमारदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणिय कुमार देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! असुरकुमार देवेहिंतोवि उववज्जंति जाव थणिय कुमार देवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ वाणमंतर देवेहिंतो उववज्जंति किं पिसाएहिंतो जाव गंधव्वेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पिसाएहिंतोवि जाव गंधव्वेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइजोइसिय देवेहिंतो उववज्जंति किं चंदविमाण-

पतिसे उत्पन्न होवे तो क्या असुरकुमार से होवे कि यावत् स्तनित कुमार से होवे ? अहो गौतम ! दश ही भवनपति देव से चवकर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं. यदि वाणव्यन्तर देव से उत्पन्न होवे तो क्या पिशाच से उत्पन्न होते हैं यावत् गंधर्व से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! आठ ही जाति के व्यन्तर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं. यदि ज्योतिषी से उत्पन्न होवे तो क्या चंद्रमा से होवे कि सूर्य से होवे कि ग्रह से होवे कि नक्षत्र से होवे कि तारा से होवे ? अहो गौतम ! पांचों प्रकार के ज्योतिषी से पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं. यदि वैमानिक से उत्पन्न होवे तो क्या कल्पोत्पन्न (बारेदेवलोक) से उत्पन्न कि कल्पातीत ग्रैवेयक अनुत्तर विमान से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! कल्पोतपन्न से उत्पन्न होते हैं

...विमाण जोइसियदेवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति गोयमा ! चंदविमाण जोइसिय देवेहिंतो कप्पोवगवेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति कप्पातीयग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति किं गोयमा ! कप्पोवग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति नो कप्पातीतग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ? उववज्जंति ॥ जइ कप्पोवग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति किं सोहम्मेहिंतो उववज्जंति जाव अच्चुएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! सोहम्मीसाणेहिंतो उववज्जंति नो सणंकुमारेहिंतो जाव नो अच्चुएहिंतो उववज्जंति ॥ एवं आउकाइयावि, एवं तेउवाउकाइयावि नवरं देववज्जेहिंतो उववज्जंति, वणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया, बेइंदिय तेइंदिय

अर्थ

परंतु कल्पातीत से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि कल्पोत्पन्न से उत्पन्न होते हैं तो क्या सौधर्म देवलोक से उत्पन्न यावत अच्युत देवलोक से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! सौधर्म और ईशान इन दोनों देवलोक से उत्पन्न होते हैं शेष सनत्कुमारादि देवलोक से उत्पन्न नहीं होते हैं. जैसा यह पृथ्वीकाया का कहा तैसाही अपूकाया का भी कहना, वैसे ही तेउकाया का भी कहना, वायुकाया का भी कहना परंतु इतना विशेष कि तेजस्काय और वायुकाया में चारोंही जाति के देवता उत्पन्न नहीं होते हैं. और जैसा पृथ्वीकाया में उत्पन्न होने का कहा वैसा ही वनस्पतिकाया का भी जानना. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरिन्द्रिय को तेउकाया, वायु काया

वेहिंतो उववज्जंति कि भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति जाव वेमाणिएहिंतो उववज्जंति गोयमा ! भवणवासीदेवेहिंतोवि उववज्जंति जाव वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ॥ जइ भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति किं असुरकुमारदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणिय कुमार देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! असुरकुमार देवेहिंतोवि उववज्जंति जाव थणिय कुमार देवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ वाणमंतर देवेहिंतो उववज्जंति किं पिसाएहिंतो जाव गंधव्वेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पिसाएहिंतोवि जाव गंधव्वेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइजोइसिय देवेहिंतो उववज्जंति किं चंदविमाण-

पत्तिमे उत्पन्न होवे तो क्या असुरकुमार से होवे कि यावत् स्तनित कुमार से होवे ? अहो गौतम ! दश ही भवनपति देव से चवकर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं. यदि वाणव्यन्तर देव से उत्पन्न होवे तो क्या पिशाच से उत्पन्न होते हैं यावत् गंधर्व से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! आठ ही जाति के व्यन्तर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं यदि ज्योतिषी से उत्पन्न होवे तो क्या चंद्रमा से होवे कि सूर्य से होवे कि ग्रह से होवे कि नक्षत्र से होवे कि तारा से होवे ? अहो गौतम ! पांचों प्रकार के ज्योतिषी से पृथ्वी काय में उत्पन्न होते हैं. यदि वैमानिक से उत्पन्न होवे तो क्या कल्पोत्पन्न (बारेदेवलोक) से उत्पन्न कि कल्पातीत ग्रैवेयक अनुत्तर विमान से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! कल्पोत्पन्न से उत्पन्न होते हैं

हिंतो जाव अणुत्तरविमाणेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चंदविमाण जोइसिय देवेहिंतो जाव ताराविमाण जोइसियदेवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति किं कप्पोवगवेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति कप्पातीयग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! कप्पोवग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति नो कप्पातीतग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ॥ जइ कप्पोवग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति किं सोहम्मेहिंतो उववज्जंति जाव अच्चुएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! सोहम्मीसाणेहिंतो उववज्जंति नो सणंकुमारेहिंतो जाव नो अच्चुएहिंतो उववज्जंति ॥ एवं आउकाइयावि, एवं तेउवाउकाइयावि नवरं देववज्जेहिंतो उववज्जंति, वणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया, बेइंदिय तेइंदिय

यावत् कल्पातीत से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि कल्पोत्पन्न से उत्पन्न होते हैं तो क्या सौधर्म देवलोक से उत्पन्न यावत् अच्युत देवलोक से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! सौधर्म और ईशान इन दोनों देवलोक से उत्पन्न होते हैं परंतु सनत्कुमारादि देवलोक से उत्पन्न नहीं होते हैं. जैसे यह पृथ्वीकाया का कहा वैसे ही अप्काया का भी कहना, वैसे ही तेउकाया का भी कहना, वायुकाया का भी कहना परंतु इतना विशेष कि तेउकाय और वायुकाया में सब ठिकाने से देवता उत्पन्न नहीं होते हैं. और जैसा पृथ्वीकाया में उत्पन्न होने का कहा वैसा ही वनस्पतिकाया का भी जानना. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरिन्द्रिय को तेउकाया, वायु काया

वेहिंतो उववज्जंति कि भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति जाव वेमाणिएहिंतो उववज्जंति गोयमा ! भवणवासीदेवेहिंतोवि उववज्जंति जाव वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ॥ जइ भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति किं असुरकुमारदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणिय कुमार देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! असुरकुमार देवेहिंतोवि उववज्जंति जाव थणिय कुमार देवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ वाणमंतर देवेहिंतो उववज्जंति किं पिसाएहिंतो जाव गंधव्वेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पिसाएहिंतोवि जाव गंधव्वेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइजोइसिय देवेहिंतो उववज्जंति किं चंदविमाण-

पतिसे उत्पन्न होवे तो क्या असुरकुमार से होवे कि यावत् स्तनित कुमार से होवे ? अहो गौतम ! दशों ही भवनपति देव से चवकर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं. यदि वाणव्यन्तर देव से उत्पन्न होवे तो क्या पिशाच से उत्पन्न होते हैं यावत् गंधर्व से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! आठ ही जाति के व्यन्तर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं यदि ज्योतिषी से उत्पन्न होवे तो क्या चंद्रमा से होवे कि सूर्य से होवे कि ग्रह से होवे कि नक्षत्र से होवे कि तारा से होवे ? अहो गौतम ! पांचों प्रकार के ज्योतिषी से पृथ्वी काय में उत्पन्न होते हैं. यदि वैमानिक से उत्पन्न होवे तो क्या कल्पोत्पन्न (बारेदेवलोक) से उत्पन्न कि कल्पातीत ग्रैवेयक अनुत्तर विमान से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! कल्पोत्पन्न से उत्पन्न होते हैं

सूत्र

हिंतो जाव नागविमाणेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चंदविमाण जोइसिय देवेहिंतो जाव नागविमाण जाइसियदेवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति किं कप्पोवगवेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति कप्पातीयग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! कप्पोवग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति नो कप्पातीतग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ॥ जइ क[illegible]ग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति किं सोहम्मेहिंतो उववज्जंति जाव अच्चुएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! सोहम्मीसाणेहिंतो उववज्जंति नो सणंकुमारहिंतो जाव नो अच्चुएहिंतो उववज्जंति ॥ एवं आउकाइयावि, एवं तेउवाउकाइयावि नवरं देववज्जेहिंतो उववज्जंति, वणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया, बेइंदिय तेइंदिय

अर्थ

परंतु कल्पातीत से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि कल्पोत्पन्न से उत्पन्न होते हैं तो क्या सौधर्म देवलोक से उत्पन्न यावत् अच्युत देवलोक से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! सौधर्म और ईशान इन दोनों देवलोक से उत्पन्न होते हैं शेष सनत्कुमारादि देवलोक से उत्पन्न नहीं होते हैं. जैसा यह पृथ्वीकाया का कहा वैसाही अप्काया का भी कहना, वैसे ही तेउकाया का भी कहना, वायुकाया का भी कहना परंतु इतना विशेष कि तेजस्काय और वायुकाया में चारोंही जाति के देवता उत्पन्न नहीं होते हैं. और जैसा पृथ्वीकाया में उत्पन्न होने का कहा वैसा ही वनस्पतिकाया का भी जानना. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरिन्द्रिय को तेउकाया, वायु काया

वेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति जाव वेमाणिएहिंतो उववज्जंति गोयमा ! भवणवासीदेवेहिंतोवि उववज्जति जाव वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ॥ जइ भवणवासी देवेहिंतो उववज्जंति किं असुरकुमारदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणिय कुमार देवेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! असुरकुमार देवेहिंतोवि उववज्जंति जाव थणिय कुमार देवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ वाणमंतर देवेहिंतो उववज्जंति किं पिसाएहिंतो जाव गंधव्वेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पिसाएहिंतोवि जाव गंधव्वेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ जोइसिय देवेहिंतो उववज्जंति किं चंदविमाण-

पतिसे उत्पन्न होवे तो क्या असुरकुमार से होवे कि यावत् स्तनित कुमार से होवे ? अहो गौतम ! दश ही भवनपति देव से चवकर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं. यदि वाणव्यन्तर देव से उत्पन्न होवे तो क्या पिशाच से उत्पन्न होते हैं यावत् गंधर्व से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! आठ ही जाति के व्यन्तर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं. यदि ज्योतिषी से उत्पन्न होवे तो क्या चंद्रमा से होवे कि सूर्य से होवे कि ग्रह से होवे कि नक्षत्र से होवे कि तारा से होवे ? अहो गौतम ! पांचों प्रकार के ज्योतिषी से पृथ्वी काय में उत्पन्न होते हैं. यदि वैमानिक से उत्पन्न होवे तो क्या कल्पोत्पन्न (बारेदेवलोक) से उत्पन्न कि कल्पातीत ग्रैवेयक अनुत्तर विमान से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! कल्पोतपन्न से उत्पन्न होते हैं

हिंतो जाव सव्वट्ठसिद्धविमाणेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चंदविमाण जोइसिय देवेहिंतो जाव ताराविमाण जोइसियदेवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति किं कप्पोवगवेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति कप्पातीयग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! कप्पोवग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति नो कप्पातीतग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ॥ जइ कप्पोवग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति किं सोहम्मेहिंतो उववज्जंति जाव अच्चुएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! सोहम्मीसाणेहिंतो उववज्जंति नो सणंकुमारेहिंतो जाव नो अच्चुएहिंतो उववज्जंति ॥ एवं आउकाइयावि, एवं तेउवाउकाइयावि नवरं देववज्जेहिंतो उववज्जंति, वणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया, बेइंदिय तेइंदिय

यावत् कल्पातीत से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि कल्पोत्पन्न में उत्पन्न होते हैं तो क्या सौधर्म देवलोक से उत्पन्न यावत् अच्युत देवलोक से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! सौधर्म और ईशान इन दोनों देवलोक से उत्पन्न होते हैं शेष सनत्कुमारादि देवलोक से उत्पन्न नहीं होते हैं. जैसा यह पृथ्वीकाया का कहा वैसा ही अपकाया का भी कहना वैसे ही तेउकाया का भी कहना, वायुकाया का भी कहना परंतु इतना विशेष कि तेउकाय और वायुकाया में देवताओं [illegible] देवता उत्पन्न नहीं होते हैं. और जैसा पृथ्वीकाया में उत्पन्न होने का कहा वैसा ही वनस्पतिकाया का भी जानना बेइंद्रिय, तेइंद्रिय और चौरिन्द्रिय का तेउकाया, वायु काया

चउरिंदिया एते जहा तेउवाउदेववज्जेहिंतो भाणियव्वो ॥ १७ ॥ पंचिंदियतिरिक्ख जोणियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, किं नेरइएहिंतो जाव किं देवेहिंतो उववज्जंति गोयमा ! नेरइएहिंतोवि उववज्जंति, तिरिक्ख जोणिएहिंतोवि उववज्जंति, मणुस्सेहिंतोवि, उववज्जंति, देवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव किं अहे सत्तमावि पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति? गोयमा ! रयणप्पभा पुढवि नेरइएहिंतोवि उववज्जंति जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइएहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदिएहिंतो उवव-

जैसा कहना अर्थात् चारों जाति के देवता बेइंद्रिय, तेइंद्रिय में उत्पन्न नहीं होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कहां से आकर उत्पन्न होवे क्या नरक में उत्पन्न होवे कि तिर्यंच से उत्पन्न होवे कि मनुष्य से उत्पन्न होवे कि देवता से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! चारों गति का जीव तिर्यंच पंचेन्द्रियमें आकर उत्पन्न होते हैं. यदि नरक से उत्पन्न होवे तो क्या रत्न प्रभा नरक से उत्पन्न होवे कि यावत् सातवी नरक से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! रत्न प्रभा से भी उत्पन्न होवे यावत् नीचे की सातवी नरक से भी उत्पन्न होवे. यदि तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होवे तो क्या एकेन्द्रिय से होवे कि यावत्

सूत्र

गोयमा ! नेरइएहिंतोवि जाव देवेहिंतोवि ॥ जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव किं अहे सत्तमा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव तमप्पभापुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति नो अहे सत्तमा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति एवं जेहिंतो पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं उववाओ भणिओ तेहिंतो मणुसाणंवि निरविसेसो भाणियव्वो, नवरं अहे सत्तमा पुढवि नेरइया तेउवाउकाइएहिंतो न उववज्जंति, सव्वदेवेहिंतोवि उववज्जाएयव्वा जाव कप्पातीतग वेमाणियस्स सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतोवि

अर्थ

से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! चारोंगति से आकर मनुष्य में उत्पन्न होते हैं. यदि नरक से आकर उत्पन्न होते हैं तो क्या रत्नप्रभा नरक मे अथवा नीचे की सातवी तमतमप्रभा नरक से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा से यावत् छठी तमप्रभा पृथ्वी तक का मरकर मनुष्य होता है परंतु सातवी नरक का मनुष्य नहीं होता है. यदि तिर्यंच योनिक से मनुष्य होता है तो जैसा तिर्यंच पंचेन्द्रिय में तिर्यंच का उत्पन्न होने का कहा वैसा ही यहां भी कहना परंतु उस में इतना विशेष सातवी नरक तेउकाय और वायुकाय इनका मनुष्य नहीं होता है और कल्पोत्पन्न तथा कल्पातीत यावत्

सूत्र

ज्जंति जाव किं पंचिदिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एगिंदिएहिंतोवि उववज्जंति जाव पंचिदिएहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ एगिंदिएहिंतो उववज्जंति किं पुढविकाइएहिंतो उववज्जंति जाव किं वणस्सइकाइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एवं जहा पुढविकाइयाणं उववाओ भणिओ तहेव एएसिंपि भाणियव्वा, नवरं देवेहिंतो जाव सहस्सार कप्पोववग वेमाणियदेवेहिंतोवि उववज्जंति, नो आणय कप्पोवग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति जाव नो अच्चुयकप्पेहिंतो उववज्जंति ॥ १८ ॥ मणुस्साणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव किं देवेहिंतो उववज्जंति?

अर्थ

पंचेंद्रिय से होवे ? अहो गौतम ! एकेन्द्रिय से भी उत्पन्न होवे यावत् पंचेन्द्रिय से भी उत्पन्न होवे. यदि एकेन्द्रिय से उत्पन्न होवे तो पृथ्वीकाय से उत्पन्न होवे कि यावत् वनस्पतिकाय से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाय से भी उत्पन्न होवे यावत् वनस्पतिकाय से भी उत्पन्न होवे यों जिस प्रकार पृथ्वीकाय में उत्पन्न होने का कहा था वैसा ही इस का भी कहना. जिस में इतना विशेष यहां आठवे सहस्रार देवता उत्पन्न होते हैं परंतु आगे आनत प्राणतादिक देवता उत्पन्न नहीं होते हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य में कहां से आकर उत्पन्न होते हैं क्या नरक से आकर उत्पन्न होते हैं यावत् क्या देवता

सूत्र

गोयमा ! नेरइएहिंतोवि जाव देवेहिंतोवि ॥ जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव किं अहे सत्तमा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव तमप्पभापुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति नो अहे सत्तमा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति एवं जेहिंतो पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं उववाओ भणिओ तेहिंतो मणुस्साणंवि निरवसेसो भाणियव्वो, नवरं अहे सत्तमा पुढवि नेरइया तेउवाउकाइएहिंतो न उववज्जंति, सव्वदेवेहिंतोवि उववज्जाएयव्वा जाव कप्पातीतग वेमाणियस्स सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतोवि

अर्थ

से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! चारोंगति से आकर मनुष्य में उत्पन्न होते हैं. यदि नरक से आकर उत्पन्न होते हैं तो क्या रत्नप्रभा नरक से अथवा नीचे की सातवी तमतमप्रभा नरक से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा से यावत् छठी तमप्रभा पृथ्वी तक का मरकर मनुष्य होता है परंतु सातवी नरक का मनुष्य नहीं होता है. यदि तिर्यंच योनिक से मनुष्य होता है तो जैसा तिर्यंच पंचेन्द्रिय में तिर्यंच का उत्पन्न होने का कहा वैसा ही यहां भी कहना परंतु उस में इतना विशेष सातवी नरक तेउकाय और वायुकाय इनका मनुष्य नहीं होता है और कल्पोत्पन्न तथा कल्पातीत यावत्

सूत्र

उववज्जावियव्वा ॥ १९ ॥ वाणमंतर देवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो जाव किं देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जेहिंतो असुरकुमारा तेहिंतो वाणमंतरावि भाणियव्वा ॥ २० ॥ जोइसिय देवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एवंचेव, णवरं सम्मुच्छिम असंखेज्जवासाउय खहयर पंचिंदिय अंतरदीव मणुस्सवज्जेहिंतो उववज्जावियव्वा ॥ २१ ॥ एवं वेमाणियावि सोहम्मीसाणगा भाणियव्वा, एवं सणंकुमारगावि. णवरं असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमिग वज्जेहिंतो

अर्थ

सर्वार्थसिद्ध तक का मनुष्य में आकर उत्पन्न होता है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! वाणव्यन्तर देवता कहां से आकर उत्पन्न होते हैं क्या नरक से आकर उत्पन्न होते हैं यावत् क्या देवता से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा असुरकुमार देवता का कहा वैसा ही वाणव्यन्तर देवता का कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी देवता कहां से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा वाणव्यन्तर देव का कहा वैसा ही ज्योतिषीदेव का कहना परंतु जिस में इतना विशेष संमूर्च्छिमतिर्यंच, असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और अंतरद्वीप के मनुष्य इतने ज्योतिषी देवता में उत्पन्न नहीं होते हैं ॥ २१ ॥ जैसा ज्योतिषी का कहा वैसा ही वैमानिक का भी सौधर्म और ईशान देवलोक तक कहना, सनत्कुमार देवलोक में इतना विशेष असंख्यात वर्षायुवाले अकर्मभूमि मनुष्य छोडकर शेष सब उत्पन्न

मूल

उववज्जावेयव्वा ॥ १९ ॥ वाणमंतर देवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो जाव किं देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जेहिंतो असुरकुमारा तेहिंतो वाणमंतरावि भाणियव्वा ॥ २० ॥ जोइसिय देवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एवंचेव, णवरं सम्मुच्छिम असंखेज्जवासाउय खहयर पंचिंदिय अंतरदीव मणुस्सवज्जेहिंतो उववज्जावेयव्वा ॥ २१ ॥ एवं वेमाणियावि सोहम्मीसाणगा भाणियव्वा, एवं सणंकुमारगावि. णवरं असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमिग वज्जेहिंतो

अर्थ

सर्वार्थसिद्ध तक का मनुष्य में आकर उत्पन्न होता है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! वाणव्यन्तर देवता कहां से आकर उत्पन्न होते हैं क्या नरक से आकर उत्पन्न होते हैं यावत् क्या देवता से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा असुरकुमार देवता का कहा तैसा ही वाणव्यन्तर देवता का कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी देवता कहां से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा वाणव्यन्तर देव का कहा तैसा ही ज्योतिषीदेव का कहना परंतु जिस में इतना विशेष संमूर्च्छिमतिर्यंच, असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और अंतरद्वीप के मनुष्य इतने ज्योतिषी देवता में उत्पन्न नहीं होते हैं ॥ २१ ॥ जैसा ज्योतिषी का कहा तैसा ही वैमानिक का भी सौधर्म और ईशान देवलोक तक कहना, सनत्कुमार देवलोक में इतना विशेष असंख्यात वर्षायुवाले अकर्मभूमि मनुष्य छोडकर शेष सब उत्पन्न

सूत्र

जत्तएहिंतो उववज्जति ॥ जदि पज्जत्तय संखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सम्मादिट्ठी पज्जत्त संखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति, मिच्छदिट्ठी पज्जत्तय संखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति सम्मामिच्छदिट्ठी पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! सम्मदिट्ठी पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी पज्जत्तगेहिंतोवि उववज्जंति नो स॰ मिच्छदिट्ठी पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ सम्मदिट्ठी पज्जत्त संखेज्जवासाउय

अर्थ

दोनों प्रकार के कर्मभूमि मनुष्य से आकर उत्पन्न होवे परंतु मिश्रदृष्टि उत्पन्न नहीं होवे क्यों कि मिश्रदृष्टि में मृत्यु नहीं है। यदि सम्यक् दृष्टि पर्याप्त संख्यात वर्षायु कर्मभूमि गर्भज मनुष्य से उत्पन्न होवे तो क्या संयति से उत्पन्न होवे कि असंयति से उत्पन्न होवे कि संयतासंयति से उत्पन्न होवे? अहो गौतम! तीनों में से ही आकर उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही बारवे अच्युत देवलोक पर्यंत कहना. ऐसे ही ग्रैवेयक में उपजने का कहना जिस में इतना विशेष असंयति और संयतासंयति उत्पन्न नहीं होते हैं. और जैसे ग्रैवेयक के देवता का कहा वैसा ही अनुत्तर विमान के देवता का कहना परंतु जिस में इतना विशेष मात्र सर्व विरति साधु ही अनुत्तर विमान में उत्पन्न होते हैं. यदि संयति सम्यक् दृष्टि पर्याप्त संख्यात वर्षायु

कम्मभूमिग गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संजय सम्मदिट्ठी पज्जत्तएहिंतो असंजयसम्मदिट्ठी पज्जत्तएहिंतो संजयासंजयसम्मदिट्ठी पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! तिहिंतोवि उववज्जंति ॥ एवं जाव अच्चुओकप्पो, एवं गेविज्जगदेवावि, णवरं संजयासंजयाएते पडिसेहेयव्वा एवं जहेव गेविज्जगदेवा तहेव अणुत्तरोववाइयावि, इमं णाणत्तं संजयाचेव ॥ जइ संजयसम्मदिट्ठी पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, किं पमत्तसंजएहिंतो अपमत्त संजएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! अपमत्तसंजएहिंतो उववज्जंति, नो पमत्तसंजएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ अपमत्त संजएहिंतो उववज्जंति किं इड्डिपत्त अपमत्त संजएहिंतो अणिड्डिपत्त अपमत्त संजएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! दोहिंतोवि उववज्जंति ॥ ५ ॥२२॥ नेरइयाणं भंते ! अणंतरं उवट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति, किं

कर्म भूमि गर्भज मनुष्य से उत्पन्न होते हैं तो क्या प्रमत्त संयति से होते हैं कि अप्रमत्त संयति से होते हैं ? अहो गौतम ! अप्रमत्त संयति होते हैं परंतु प्रमत्त संयति उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि अप्रमत्त संयति से उत्पन्न होते हैं तो ऋद्धिवंत (लब्धिवंत) संयति से आकर उत्पन्न होवे कि ऋद्धि रहित संयति से आकर उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! दोनों ही उत्पन्न होते हैं ॥ इति पंचम द्वार ॥ २२ ॥ अब गति द्वार कहते हैं

सूत्र

गोयमा! बायर पुढविकाइएसु उववज्जंति नो सुहुम पुढविकाइएसु उववज्जंति॥ जइ बायर पुढविकाइएसु उववज्जंति किं पज्जत्तग बायर पुढविकाइएसु उववज्जंति अपज्जत्तग बायर पुढविकाइएसु उववज्जंति ? गोयमा! पज्जत्तएसु उववज्जंति, नो अपज्जत्तएसु उववज्जंति॥ एवं आउ वणस्सईसुवि भाणियव्वं, पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसुय जहा नेरइयाणं उव्वट्टणा, सम्मुच्छिमवज्जा तहा भाणियव्वा॥ एवं जाव थणियकुमारा॥ पुढविकाइयाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टइत्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति ? किं नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति? गोयमा! नो नेरइएसु उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति, मणुस्सेसु उववज्जंति, नो

अर्थ

हैं कि यावत् पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं, परंतु बेन्द्रिय तेन्द्रिय चौरिन्द्रिय में उत्पन्न नहीं होते हैं यदि एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं तो क्या पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं यावत् वनस्पतिकाय एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाय अप्काय और वनस्पतिकाय इन तीनों में उत्पन्न होते हैं, परंतु तेउकाय और वायुकाय इन में उत्पन्न नहीं होते हैं. यदि पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं तो क्या सूक्ष्म पृथ्वी काय में उत्पन्न होते हैं कि बादर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! बादर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं परंतु सूक्ष्म

एसु उववज्जंति किं एगिंदिएसु जाव किं पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? गोयमा ! एगिंदिएसु उववज्जंति, नो बेइंदिएसु उववज्जंति, नो तेइंदिएसु नो चउरिंदिएसु उववज्जंति, पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ॥ जइ एगिंदिएसु उववज्जंति किं पुढविकाइय एगिंदिएसु उववज्जंति जाव किं वणस्सइकाइय एगिंदिएसु उववज्जंति? गोयमा! पुढविकाइय एगिंदिएसु उववज्जंति आउकाइय एगिंदिएसु उववज्जंति, नो तेउकाइय एगिंदिएसु उववज्जंति, नो वाउकाइय एगिंदिएसु उववज्जंति वणस्सइकाइएसु उववज्जंति जइ पुढविकाइएसु उववज्जंति किं सुहुम पुढविकाइएसु उववज्जंति बायर पुढविकाइएसु उववज्जंति ?

अर्थ

उत्पन्न होते हैं. यों जिस प्रकार आगति में उपपात कहा वैसा ही यहां भी उद्वर्तन कहना जिस में इतना विशेष संमूर्च्छिम मरकर नरक में उत्पन्न तो होते हैं परंतु नरक के जीव निकल कर संमूर्च्छिम में उत्पन्न नहीं होते हैं. जैसा यह प्रथम नरक का दंडक कहा ऐसा ही सातों नरक का भी कहदेना जिस में इतना विशेष कि सातवी नरक का निकला मनुष्य में आकर उत्पन्न नहीं होता है. अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नरक और देवता में उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु तिर्यंच और मनुष्य में उत्पन्न होते हैं. यदि तिर्यंच में उत्पन्न होते हैं तो क्या एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते

सूत्र

उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति, जाव किं देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइएसुवि उववज्जंति जाव देवेसुवि उववज्जंति ॥ एवं निरंतरं सव्वेसु ठाणेसु पुच्छा ? गोयमा ! सव्वेसु ठाणेसु उववज्जंति, ण कहिंवि पडिसेहो· कायव्वो जाव सव्वट्ठसिद्ध देवेसु उववज्जंति, अत्थेगइया सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्व दुक्खाणमंतकरंति ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिय सोहम्मीसा- णाय जहा असुरकुमारा, णवरं जोइसियाणं वेमाणियाणय चयंतिति अभिलावो

अर्थ

सहस्रार देवलोक तक उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! मनुष्य मरकर अन्तर रहित कहां उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! नरक तिर्यंच मनुष्य देवता चारों ही गति में उत्पन्न होते हैं. सातों ही नरक में दश ही भवनपति देव में, पांचों ही स्थावर में, तीनों विकलेन्द्रिय में, तिर्यंच, मनुष्य, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, और वैमानिक में यावत् सर्वार्थ सिद्ध पर्यन्त सर्व स्थान में उत्पन्न होते हैं. और कितनेक सर्व कर्म का क्षय कर सिद्ध होते हैं, बुद्ध होते हैं मुक्त होते हैं यावत् सर्व दुःख का अन्त करते हैं. वाणव्यन्तर ज्योतिषी और प्रथम दूसरे देवलोक का जैसा असुरकुमार का कहा वैसा कहना. जिस में इतना विशेष कि ज्योतिषी को चवने का कहना. सनत्कुमार देव का भी असुरकुमार देव जैसा ही कहना परंतु जिस में इतना- विशेष

सूत्र

एवं जहा एएसिचेव उववाओ तहा उव्वट्टणावि देववज्जा भाणि-
देवेसु उववज्जंति ॥ एवं जहा एएसिचेव उववाओ तहा उव्वट्टणावि, णवरं मणु-
यवा ॥ एवं आउवणस्सइ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियावि एवं तेउवाउवि, णवरं मणु-
रसवज्जेसु उववज्जंति ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता
कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति? किं नेरइएसु उववज्जंति जाव किं देवेसु उववज्जंति ?
गोयमा ! नेरइएसुवि उववज्जंति, जाव देवेसुवि उववज्जंति ॥ जइ नेरइएसु उवव-
ज्जंति किं रयणप्पभा पुढवि नेरइएसुवि उववज्जंति जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइएसु

अर्थ

तो क्या पर्याप्त बादर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त बादर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त बादर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त में उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त में उत्पन्न नहीं होते हैं. जैसा पृथ्वीकाया का कहा, तैसा ही अपकाया की और वनस्पतिकाया का भी कहना. यदि तिर्यंच पंचेन्द्रिय से व मनुष्य से आकर उत्पन्न होते हैं तो उन का कथन जैसा नरक का कहा तैसा ही कहना. जैसा यहां असुरकुमार का कहा तैसा ही यावत् स्थनित कुमार तक दशों ही जाति के भवनपति का कहना. अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के जीव अनंतर निकलकर कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया के जीवों नरक में और देवता में उत्पन्न

उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति, जाव किं देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइएसुवि उववज्जंति जाव देवेसुवि उववज्जंति ॥ एवं निरंतरं सव्वेसु ठाणेसु पुच्छा ? गोयमा ! सव्वेसु ठाणेसु उववज्जंति, ण कहिंवि पडिसेहो-कायव्वो जाव सव्वट्ठसिद्ध देवेसु उववज्जंति, अत्थेगइया सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्व दुक्खाणमंतकरंति ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिय सोहम्मीसा-णाय जहा असुरकुमारा, णवरं जोइसियाणं वेमाणियाणय चयंतिति अभिलावो

सहस्रार देवलोक तक उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! मनुष्य मरकर अन्तर रहित कहां उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! नरक तिर्यंच मनुष्य देवता चारों ही गति में उत्पन्न होते हैं. सातों ही नरक में दश ही भवनपति देव में, पांचों ही स्थावर में, तीनों विकलेन्द्रिय में, तिर्यंच, मनुष्य, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, और वैमानिक में यावत् सर्वार्थ सिद्ध पर्यन्त सर्व स्थान में उत्पन्न होते हैं. और कितनेक सर्व कर्म का क्षय कर सिद्ध होते हैं, बुद्ध होते हैं मुक्त होते हैं यावत् सर्व दुःख का अन्त करते हैं. वाणव्यन्तर ज्योतिषी और प्रथम दूसरे देवलोक का जैसा असुरकुमार का कहा वैसा कहना. जिस में इतना विशेष कि ज्योतिषी को चवने का कहना. सनत्कुमार देव-का भी असुरकुमार देव जैसा ही कहना परंतु जिस में इतना विशेष

सूत्र

कायव्वो ॥ सणंकुमार देवाणं पुच्छा? गोयमा ! जहा असुरकुमारा नवरं एगिंदिएसु न उववज्जंति ॥ एवं जाव सहस्सारगदेवा, आणय जाव अणुत्तरोववाइया एवंचेव, णवरं णो तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जंति, मणुस्सेसु पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु उववज्जंति ॥ ६ ॥ २३ ॥ नेरइयाणं भंते ! कइया भागावसेसाउया परभविआउयं पकरेंति ? गोयमा! नियमा छम्मासावसेसाउया परभावियाउयं पकरेंति ॥ एवं असुरकुमारावि जाव थणियकुमारा ॥

अर्थ

एकेन्द्रिय में उत्पन्न नहीं होवे. सनत्कुमार के जैसा ही सहस्रार देवलोक पर्यन्त कहना और आणत प्राणत से लगाकर यावत् सर्वार्थ सिद्ध पर्यन्त ऐसा ही कहना परंतु इतना विशेष की वे तिर्यंच योनि में आकर उत्पन्न नहीं होते हैं. वे तो मनुष्य पर्याप्त संख्यात वर्षायुवाला कर्मभूमि गर्भज मनुष्य में ही उत्पन्न होते हैं. इति छठा द्वार ॥ २३ ॥ परभव आयुष्यबन्ध द्वार. अहो भगवन् ! नरक के जीवों कितने भाग आयु बाकी रहता है तब आगे के भव का आयुष्य का बन्ध करते हैं ? अहो गौतम ! नेरीये नियमा से छ महीने का आयुष्य बाकी रहता है तब आगे के आयुष्य का बंध करते हैं ऐसे ही असुरकुमार से यावत् स्थनित कुमार पर्यन्त जानना. अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के जीव कितने भाग आयुष्य

पुढविकाइयाणं भंते ! कइयाभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा ! पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता ? तंजहा सोवक्कमाउयाय निरुवक्कमाउयाय, तत्थणं जेते निरुवक्कमाउया ते नियमा तिभागावसेसाउयापरभवियाउयं पकरेंति ॥ तत्थणं जेते सोवक्कमाउया तेणं सियं तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सिय-तिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सियतिभागतिभागतिभागावसे साउया परभवियाउयं पकरेंति ॥ आउतेउवाउ वणस्सइकाइयाणं बेइंदिय तेइंदिय

अर्थ

बाकी रहे तब परभवका आयुर्बन्ध करते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया दो प्रकार की कही है उन के नाम—१ सोपक्रमआयुष्यवाली जो उपक्रम से मृत्यु पावे और २ निरुपक्रम जो उपक्रम को प्राप्त न होवे. (स्नेह कर तथा भय कर, २ क्षुधा से, अति आहार से, ३ शस्त्र से, ४ शूलादि वेदना से, ५ कूपादि में पडने से, ६ सर्पादी विष से और ७ अतिश्वासोश्वास से जिन का दीर्घ आयुष्य स्वल्प-काल में पुरा होवे वह सोपक्रमी, और यह उपक्रम नहीं लगते पूर्ण आयुष्य भोगवेवे निरूपक्रमी जानना) इस में जो निरूपक्रमी आयुष्यवाले हैं वे निश्चय से अपने आयुष्य का तीसरा भाग बाकी रहे परभव का आयुष्य का बन्ध करते हैं और जो सोपक्रमी आयुष्यवाले हैं वे कदाचित तीसरे भाग में भी परभवायुर्बन्ध करते हैं; तीनभी-नववे भाग में आयुष्य बाकी रहे परभवायुर्बन्ध करते हैं, कितनेक-

सूत्र

कायत्तो ॥ सणंकुमार देवाणं पुच्छा? गोयमा ! जहा असुरकुमारा नवरं एगिंदिएसु न उववज्जंति ॥ एवं जाव सहस्सारगदेवा, आणय जाव अणुत्तरोववाइया एवंचेव, णवरं णो तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जंति. मणुस्सेसु पज्जत्तग संखेज्ज वासाउय कम्म-भूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु उववज्जंति ॥ ६ ॥ २३ ॥ नेरइयाणं भंते ! कइया भागावसेसाउया परभविआउयं पकरेंति ? गोयमा! नियमा छम्मासा-वसेसाउया परभावियाउयं पकरेंति ॥ एवं असुरकुमारावि जाव थणियकुमारा ॥

अर्थ

एकेन्द्रिय में उत्पन्न नहीं होवे. सनत्कुमार के जैसा ही सहस्रार देवलोक पर्यन्त कहना और आणत प्राणत से लगाकर यावत सर्वार्थ सिद्ध पर्यन्त ऐसा ही कहना परंतु इतना विशेष की वे तिर्यंच योनि में आकर उत्पन्न नहीं होते हैं. वे तो मनुष्य पर्याप्त संख्यात वर्षायुवाला कर्मभूमि गर्भज मनुष्य में ही उत्पन्न होते हैं. इति छठा द्वार ॥ २३ ॥ परभव आयुष्यबन्ध द्वार. अहो भगवन् ! नरक के जीवों कितने भाग आयु बाकी रहता है तब आगे के भव का आयुष्य का बन्ध करते हैं ? अहो गौतम ! नेरीये नियमा से छ महीने का आयुष्य बाकी रहता है तब आगे के आयुष्य का बंध करते हैं ऐसे ही असुरकुमार से यावत् स्थनित कुमार पर्यन्त जानना. अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के जीव कितने भाग आयुष्य

सूत्र

पुढविकाइयाणं भंते ! कइभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा ! पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता ? तंजहा सोवक्कमाउयाय निरुवक्कमाउयाय, तत्थणं जेते निरुवक्कमाउया ते नियमा तिभागावसेसाउयापरभवियाउयं पकरेंति ॥ तत्थणं जेते सोवक्कमाउया तेणं सिय तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सिय-तिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सियतिभागतिभागतिभागावसे साउया परभवियाउयं पकरेंति ॥ आउतेउवाउ वणस्सइकाइयाणं बेइंदिय तेइंदिय

अर्थ

बाकी रहे तब परभवका आयुर्बन्ध करते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया दो प्रकार की कही है उन के नाम—१ सोपक्रमआयुष्यवाली जो उपक्रम से मृत्यु पावे और २ निरुपक्रम जो उपक्रम को प्राप्त न होवे (स्नेह कर तथा भय कर, २ क्षुधा से, अति आहार से, ३ शस्त्र से, ४ शूलादि वेदना से, ५ कूपादि में पडने से, ६ सर्पादी विशेष से और ७ अतिश्वासोश्वास से जिन का दीर्घ आयुष्य स्वल्प-काल में पूरा होवे वह सोपक्रमी, और यह उपक्रम नहीं लगते पूर्ण आयुष्य भोगवेवे निरूपक्रमी जानना) इस में जो निरूपक्रमी आयुष्यवाले हैं वे निश्चय से अपने आयुष्य का तीसरा भाग बाकी रहे परभव का आयुष्य का बन्ध करते हैं और जो सोपक्रमी आयुष्यवाले हैं वे कदाचित तीसरे भाग में भी परभवायुर्बन्ध करते हैं: तीनभी-नवमे भाग में आयुष्य बाकी रहे परभवायुर्बन्ध करते हैं, कितनेक-

चउरिंदियाणवि एवंचेव ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! कइभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा संखिज्ज वासाउयाय असंखेज्जवासा उयाय ॥ तत्थणं जेते असंखेज्जवासाउयातेनियमा छम्मासावसेसाउया परभविआउयं पकरेंति तत्थणं जेते संखिज्जवासाउयाते दुविहा पण्णत्ता तंजहा सोवक्कमाउआय निरुवक्कमाउ आय तत्थणं जेते निरुवक्कमाउआय तेनियमातिभागावसेसाउया परभावियाउयं पकरेंति ॥ तत्थणं जेते सोवक्कमाउया तेणं सियतिभागावसेसाउया परभविआउयं पकरेति, सिय तिभागासिय

तीन-तीन-तीन सत्तावीसवे भाग में आयुष्य का बन्ध करते हैं कितने सत्तावीवी इक्यासी में भाग में, कितनेक इक्यासी श्री २४३ वे भाग में यों यावत् पीछे का अंतर्मुहूर्त आयुष्य बाकी रहे तब भी परभव का आयुष्य बन्ध करते हैं. ऐसे ही अपकाय तेजस्काय वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चौरिंद्रिय, सब का पृथ्वीकाय जैसा ही कहना. अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक परभव का आयुष्य का बन्ध कितना आयुष्य रहे करते हैं ? अहो गौतम ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक दो प्रकार के कहे हैं. उन के नाम. संख्यात वर्षायुवाले और २ असंख्यात वर्षायुवाले; इन में जो असंख्यात वर्षायुवाले हैं वे निश्चय से छ महीने आयुष्य बाकी रहे तब परभव का आयुष्य का बन्ध करते हैं और जो संख्यात वर्षायुवाले हैं वे दो प्रकार के कहे हैं ? सोपक्रमआयुष्यवाले और २ निरुपक्रम आयुष्य

सूत्र

छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तंजहा जाइणामनिहत्ताउए, गइणामनिहत्ताउए ठिईनाम निहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए, पएसणामणिहत्ताउए, अणुभाव णामणिहत्ताउए ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ २५ ॥ जीवाणं भंते ! जाइनामनिहत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं अट्ठहिं ॥ नेरइयाणं भंते ! जाइणामणिहत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं

अर्थ

नामनिद्धतायु (कर्म पुद्गल की अनुभव रचना) २ गति नाम निद्धतायु सो चारों गति में की गति का आयुर्बन्ध, ३ स्थिति नाम-स्थिति बन्ध करे, ४ अवगाहना नाम निद्धतायु अवगाहना (शरीर प्रमाण का) बन्ध करे, ५ प्रदेश नाम निद्धतायु सो कर्म के परमाणुओं का बन्ध करे, और ६ अनुभाग नाम निद्धतायु रस शुभाशुभकर्मों का विपाक का बंध, परभव का आयुर्बन्ध करना इन छ प्रकृति के साथ बन्ध करता है. अब आयुर्बन्ध के आकर्ष कहते हैं. आकर्षायु उसे कहते हैं कि जो यथाविधि प्रयत्न कर कर्म पुद्गल का ग्रहण करना उसे आकर्षायु कहते हैं. [जैसे गाय पानी पीती हुई भय करके वारम्वार ऊंचे मुख को प्रथम शीघ्रता से पानी पीवे फिर धीरे २ पीवे तैसे जीव भी अति तीव्र आयुर्बन्ध के अध्यवसाय कर जात्यादि नाम निद्धतायु का बन्ध करता एक ही अति तीव्र आकर्ष बन्धे, और जो कुछ मंद अध्यवसाय हो तो उसी बन्ध को दो, तीन, चार आकर्ष कर बन्धे, ज्यादा मंद भाव हो तो

तिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सिय तिभागतिभागतिभागा वसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ॥ एवं मणुस्साविं वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा नेरइया ॥ ७ ॥ २४ ॥ कइविहेणं भंते ! आयुबंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे आउबंधे पण्णत्ते तंजहा जाइणामणिहत्ताउए, गइणामणिहत्ताउए, ठिइनामनिहत्ताउए ओगाहणाणामनिहत्ताउए, पएसणामणिहत्ताउए अणुभावणामणिहत्ताउए ॥ नेरइयाणं भंते ! कइविह आउयबंधे पण्णत्ते ? गोयमा!

पाले इस में जो निरूपक्रम आयुष्य वाले हैं वे निश्चय से अपने आयुष्य का तीसरा भाग बाकी रहे तब परभव का आयुष्य का बन्ध करते हैं और जो सोपक्रमी आयुष्य वाले हैं वे स्यात् तीसरे भाग में स्यात् नववे भाग में स्यात सतावीसवे भाग में स्यात इक्यासीये भाग में स्यात् दोसे तेतालीसवे भाग में यावत कितनेक अंतर्मुहूर्त आयुष्य बाकी रहते भी परभव का आयुर्बन्ध करते हैं. जैसे तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कहा तैसे ही मनुष्य का भी जानना और वाणव्यन्तर ज्योतिषि वैमानिक का जैसा नारकी का कहा तैसा कहना अर्थात् छ महीने आयुष्य बाकी रहे तब परभव का आयुर्बन्ध करे. इति सप्तम द्वार ॥ २ ॥ आठवा आयुर्बन्ध द्वार. अहो भगवन् ! कितने प्रकार का आयुर्बन्ध कहा है ? अहो गौतम ! छ प्रकार का आयुबन्ध कहा है उस का नाम १. जाति नाम निद्धत्तायु अर्थात् एकेन्द्रियादि पांचों जाति नामकर्म

सूत्र

छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तंजहा जाइणामनिहत्ताउए, गइणामनिहत्ताउए, ठिईनाम निहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए, पएसणामणिहत्ताउए, अणुभाव णामणिहत्ताउए ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ २५ ॥ जीवाणं भंते ! जाइनामनिहत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं अट्ठहिं ॥ नेरइयाणं भंते ! जाइणामणिहत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं

अर्थ

रूपनिद्धताय (कर्म पुद्गल की अनुक्रम रचना) २ गति नाम निद्धताय सो चारों गति में की गति का आयुर्बन्ध, ३ स्थिति नाम-स्थिति बन्ध करे, ४ अवगाहना नाम निद्धताय अवगाहना (शरीर प्रमान का) बन्ध करे, ५ प्रदेश नाम निद्धताय सो कर्म के परमाणुओं का बन्ध करे, और ६ अनुभाग नाम निद्धताय वह शुभाशुभकर्मों का विपाक का बंध, परभव का आयुर्बन्ध करना इन छ प्रकृति के साथ बन्ध करता है. अब आयुर्बन्ध के आकर्ष कहते हैं. अकर्षायु इसे कहते हैं कि जो यथाविधि प्रयत्न कर कर्म पुद्गल का ग्रहण करना उसे आकर्षायु कहते हैं. [जैसे गाय पानी पीती हुई भय करके बारम्बार ऊर्ध्व मुख कर प्रथम शीघ्रता से पानी पीवे फिर धीरे २ पीवे तैसे जीव भी अति तीव्र आयुर्बन्ध के अध्यवसाय कर जात्यादि नाम निद्धत्तायु का बन्ध करता एक ही अति तीव्र आकर्ष बन्धे, और जो कुछ मंद अध्यवसाय हो तो इसी बन्ध को दो, तीन, चार आकर्ष कर बन्धे, ज्यादा मंद भाव हो तो

पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा, तिहिंवा उक्कोसेणं अट्ठहिं ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ एवं गइनामनिहत्ताउएवि, ठिईनामनिहत्ताउएवि, ओगाहणानाम निहत्ताउएवि, पएसनामनिहत्ताउएवि, अणुभावनामनिहत्ताउएवि ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं जाइनामणिहत्ताउयं जहण्णेणं एक्केणंवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं अट्ठहिं आगरिसेहिं पकरेमाणाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसा-

पांच, छ, सात तथा आठ आकर्ष करे इस से ज्यादा आकर्ष नहीं करे, यहां जात्यादि नाम—कर्म का आयुष्य के साथ बन्ध होते ही आकर्ष होते हैं परंतु बाकी के शेष काल में आकर्ष नहीं होते हैं क्यों कि कितनेक कर्म प्रकृति ध्रुव बन्धवाली है और भी सत्ता में विद्यमान भी होती है उस कर बन्ध काल बहुत भी होता है इस लिये आकर्षनियत नहीं है और आयुष्य कर्म तो एक, दो, तीन यावत् उत्कृष्ट, आठ आकर्ष करके ही बन्धता है. तहां तीव्र अध्यवसाय में आठ आकर्ष करके अन्तर्मुहूर्त काल में बन्ध करे वह निरुपक्रम आयुष्य होता है और उस से कम आकर्ष कर मंद अध्यवसाय से स्वल्प काल में बन्ध होता है वह सोपक्रम आयुष्य होता है] अहो भगवन् ! नरक के जीवों कितने प्रकार आयुर्बन्ध करते हैं ? अहो गौतम ! छ प्रकार आयु बन्ध करते हैं—१. पंचेन्द्रिय जाति नाम निद्धत्तायु, २. नरक गति नाम निद्धत्तायु, ३ स्थिति (आयुष्य) नाम निद्धत्तायु, ४ अवगाहना नाम निद्धत्तायु, ५ प्रदेश नाम निद्धत्तायु

छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तंजहा जाइणामनिहत्ताउए, गइणामनिहत्ताउए ठिईनाम निहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए, पएसणामणिहत्ताउए, अणुभाव णामणिहत्ताउए ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ २५ ॥ जीवाणं भंते ! जाइनामनि- हत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं अट्ठहिं ॥ नेरइयाणं भंते ! जाइणामणिहत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं

…नाम निद्धताय (कर्म पुद्गल की अनुभव रचना) २ गति नाम निद्धताय सो चारों गति में की गति का आयुर्बन्ध, ३ स्थिति नाम-स्थिति बन्ध करे, ४ अवगाहना नाम निद्धताय अवगाहना (शरीर प्रमान का) बन्ध करे, ५ प्रदेश नाम निद्धताय सो कर्म के परमाणुओं का बन्ध करे, और ६ अनुभाग नाम निद्धताय यह शुभाशुभकर्मों का विपाक का बंध, परभव का आयुर्बन्ध करना इन छ प्रकृति के साथ बन्ध करता है. अब आयुर्बन्ध के आकर्ष कहते हैं. आकर्षाय उसे कहते हैं कि जो यथाविधि प्रयत्न कर कर्म पुद्गल का ग्रहण करना उसे आकर्षाय कहते हैं. [जैसे गाय पानी पीती हुई भय करके वारम्वार ऊर्ध्व मुख कर प्रथम शीघ्रता से पानी पीवे फिर धीरे २ पीवे तैसे जीव भी अति तीव्र आयुर्बन्ध के अध्यवसाय कर जात्यादि नाम निद्धताय का बन्ध करता एक ही अति तीव्र आकर्ष बन्धे, और जो कुछ मंद अध्यवसाय हो तो उसी बन्ध को दो, तीन, चार आकर्ष कर बन्धे, ज्यादा मंद भाव हो तो

सूत्र

एगेणं आगरिसेण पगरेमाणा संखिज्जगुणा ॥ एवं एएणं अभिलावेणं जाव अणुभाग-निहत्ताउया ॥ एव एते छप्पि अप्पाबहु दंडगा जीवादिया भाणियव्वा ॥ ८ ॥ इति पण्णवण्णा भगवईए वक्कंतिअपयं छट्ठं सम्मत्तं ॥ ६ ॥

अर्थ

करने वाले संख्यात गुने, उस से चार आकर्ष करने वाले संख्यात गुने, उस से तीन आकर्ष करने वाले संख्यात गुने, उस से दो आकर्ष करनेवाले संख्यात गुने, और, उस से एक आकर्ष करनेवाले संख्यातगुने यों इस ही प्रकार इस ही अभिलाप करके यावत् गति स्थिति अवगाहना प्रदेश अनुभाग सब की अल्पाबहुत्व चौबीस दंडक में कहना ॥ इति आकर्ष द्वार ॥ इति भगवती पन्नवणा का छठा व्युत्क्रांति नामक पद समाप्त ॥ ६ ॥

सूत्र

ढियाया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा जाइणामनिहत्ताउयं अट्ठहिं आगरिसेहिं पकरे-माणा, सत्तहिं आगरिसेहिंय पकरेमाणा संखिज्जगुणा, छहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखिज्जगुणा, पंचहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखिज्जगुणा, चउहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखिज्जगुणा, तिहिं संखिज्जगुणा दोहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखिज्जगुणा,

अर्थ

[कर्म के दल] और ६ अनुभाग नाम निद्धताय (कर्मका रस) जैसा नरकका कहा वैसा ही यावत् वैमानिक पर्यंत चौवीस ही दंडकका जानना. अहो भगवन् ! जीव जाति नाम निद्धतायु कितने आकर्षकर बन्धकरे ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट आठ आकर्ष इस ही प्रकार यावत् वैमानिक पर्यंत चौवीस ही दंडक कहना और जैसा यह जाति नाम निद्धतायु का कहा वैसा ही गति नाम निद्धतायु का भी, ३ स्थिति नाम निद्धतायु का भी, ४ अवगाहना नाम निद्धतायु का भी, ५ प्रदेश नाम निद्धतायु का भी, और ६ अनुभाग नाम निद्धतायु का भी जानना अहो भगवन् ! यह जीव जाति नाम निद्धतायु का जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट आठ आकर्ष करता हुवा कौनसा थोडा व बहुत तुल्य या विशेषाधिक करता है ? अहो गौतम ! सब से थोडे जाति नाम निद्धतायु जानना आठ आकर्ष करता हुवा (शुभितंद अध्यवसाय से), उस से सात आकर्ष करता संख्यातगुने, क्यों कि इस में परिणामों की तिव्रता अधिक है, छ आकर्ष करने वाले संख्यात गुने, उस से पांच आकर्ष

मंतिवा ४ ? गोयमा ! वेमायाए आणमंतिवा ४ ॥ एवं जाव मणुस्सा ॥ वाणमंतरा जहा नागकुमारा ॥ जोइसियाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेणं मुहुत्त पहुत्तस्स उक्कोसेणंवि मुहुत्तपहुत्तस्स आणमंतिवा ४ ॥ वेमाणियाण भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा४ ? गोयमा ! जहण्णेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं आणमंतिवा ४ ॥ सोहम्मग देवाणं भंते ! केवइ कालस्स आणमंति ४ ? गोयमा ! जहण्जेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेणं दोण्हंपक्खाणं आणमंतिवा ४ ॥ ईसाणगदेवाणं भंते ! केवइकालस्स अणमंतिवा ४ ॥ गोयमा ! जहण्णेण साइरेगस्स मुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेणं साइरेगाणं दोण्हं पक्खाणं आणमंतिवा४॥

अर्थ

श्वासोश्वास लेते . . अहो गौतम ! जघन्य सात स्तोक में उत्कृष्ट मुहूर्त पृथक्त्व में [दो मुहूर्त से नव मुहूर्त तक में क्यों कि इन का जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट पल्योपम का ही आयुष्य होता है) जैसा नाग कुमार का कहा वैसा ही यावत् स्थनित कुमार तक का कहना. ऐसे ही आगे भी प्रश्नोत्तर सर्व स्थान

जहां दुःख है वहां श्वासोश्वास की अधिकता है और सुख अधिक है तहां श्वासोश्वास की मन्दता है. इसलिये देवता मे जिन के सागरोपम का आयुष्य होता है उतने पक्ष मे श्वासोश्वास लेते हैं।

॥ सप्तम श्वासोश्वास पदम् ॥

सूत्र

नेरइयाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा ? गोयमा ! सततं संतयामेव आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा ॥ असुर कुमाराणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं साइरेगस्सपक्खस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा ॥ नागकुमाराणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा ४ ॥ गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं उक्कोसेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! केवइकालस्स आण-

अर्थ

अब सातवे पद में जीवों का उश्वास निश्वास का प्रमाण कहते हैं: अहो भगवन् ! नरक के जीवों कितने काल में ऊंच श्वास अंदर के लेते हैं, नीचा श्वास अंदर का लेते हैं, उश्वास (बाहिर) लेते हैं, निश्वास [बाहिर] लेते हैं ? अहो गौतम ! निरन्तर समय मात्र विरह रहित आण प्राण [अंदर का श्वासोश्वास लेते हैं] यावत् बाहिर श्वासोश्वास लेते हैं अहो भगवन् ! असुर कुमार देवता कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य सात स्तोक [सुखी मनुष्य के सात श्वासोश्वास जितने काल में] उत्कृष्ट कुछ अधिक एक पक्ष में ? अहो भगवन् ! नागकुमार देवता कितने काल में आण प्राण

सूत्र

सणंकुमाराणं देवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेणं दोण्हं पक्खाणं उक्कोसेणं सत्तण्हं पक्खाणं आणमंतिवा ४ ॥ माहिंदग देवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगाणं दोण्हं पक्खाणं उक्कोसेणं साइरेगाणं सत्तण्हं पक्खाणं आणमंतिवा ॥ बंभलोय देवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं दसण्हं पक्खाणं आणमंतिवा ॥ लंतग देवाणं भंते ! केवइ कालस्स आणमंतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं चउद्दसण्हं पक्खाणं आणमंतिवा ४ ॥ महासुक्क देवाणं भंते ! केवइ कालस्स आणमंतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेणं चउद्दसण्हं

अर्थ

जानना. अहो भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीवों कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! वेमाया अर्थात् प्रमान रहित श्वासोश्वास लेते हैं. जैसा पृथ्वीकाया का कहा तैसा ही पांचों स्थावर तीनों विकलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य तक कहना. वाणव्यन्तर का जैसा नागकुमार देव का कहा तैसा कहना. अर्थात् जघन्य सात स्तोक में, उत्कृष्ट मुहूर्त पृथक्त्व में. ज्योतिषी जघन्य और उत्कृष्ट मुहूर्त पृथक्त्व में ही श्वासोश्वास लेते हैं* समुच्चय वैमानिक देवता जघन्य मुहूर्त पृथक्त्व में उत्कृष्ट तेतीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं. और विशेष से–१. सौ-

* जघन्य दो की संख्या से लगाकर उत्कृष्ट ९ तक संख्या को पृथक्त्व कहते हैं.

पक्खाणं, उक्कोसेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं आणमंतिवा ४ ॥ सहस्सारग देवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं उक्कोसेणं अट्ठारसण्हं पक्खाणं आणमंतिवा ४ ? ॥ आणय देवाणं भंते ! केवइ कालस्स आणमंतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठारसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं एगूणवीसाए पक्खाणं आणमंतिवा ४ ॥पाणय देवाणं भंते! केवइ कालस्स आणमंतिवा ४? गोयमा ! जहण्णेणं एगूणवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं वीसाए पक्खाणं आणमंतिवा ४ ॥ आरण देवाणं भंते ! केवइय कालस्स आणमंतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेणं वीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं एक्कवीसाए पक्खाणं आणमंतिवा ४॥ अच्चुयदेवाण भंते ! केवइ कालस्स आणमंतिवा ४? गोयमा! जहण्णेणं एक्कवीसाए पक्खाण, उक्कोसेणं बावीसाए पक्खाणं आणमंतिवा ४ ॥ हेट्ठिम हेट्ठिम

धर्म देवलोक के देव जघन्य मुहूर्त पृथक्त्व में उत्कृष्ट दो पक्ष में, २ ईशान देवलोक के देव जघन्य कुछ अधिक मुहूर्त पृथक्त्व में उत्कृष्ट कुछ अधिक दो पक्ष में, सनत्कुमार देवलोक के देव जघन्य दो पक्ष में उत्कृष्ट सात पक्ष में ४ माहेन्द्र देवलोक के देव जघन्य कुछ अधिक दो पक्ष में उत्कृष्ट कुछ अधिक सात पक्ष में, ब्रह्मदेवलोक के देव जघन्य सात पक्ष में उत्कृष्ट दश पक्ष में, ६ लंतक देवलोक के देव जघन्य दश पक्ष में उत्कृष्ट चौदह पक्ष में ७ महाशुक्र देवलोक के देव जघन्य चौदह पक्ष में उत्कृष्ट सतरह पक्ष में

मूल

गेविज्जगदेवाणं भंते! केवइकालस्स आणमंतिवा ४? गोयमा! जहण्णेणं बावीसाए पक्खाणं उक्कोसेणं तेवीसाए पक्खाणं, आणमंतिवा ४॥ हेट्ठिम मज्झिम गेविज्जग देवाणं भंते! केवइ-कालस्स आणमंतिवा ४? गोयमा! जहण्णेणं तेवीसाए पक्खाणं उक्कोसेणं चोवीसाए पक्खाणं आणमंतिवा ४॥ हेट्ठिम उवरिम गेविज्जग देवाणं भंते! केवइकालस्स आणमंतिवा ४? गोयमा ! जहण्णेणं चोवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं पणवीसाए पक्खाणं आणमंतिवा ४ ॥ मज्झिम हेट्ठिम गेविज्जग देवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा ४? गोयमा! जहण्णेणं पणवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं छव्वीसाए पक्खाणं आणमंतिवा ॥ मज्झिम मज्झिम गेविज्जग देवाणं भंते ! केवइ कालस्स आणमंतिवा ४ गोयमा ! जहण्णेणं छव्वीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं सत्तावीसाए पक्खाणं आणमंतिवा ४ ॥ मज्झिम

अर्थ

८ सहस्रार देवलोक के देव जघन्य सतरह पक्ष में उत्कृष्ट अठारा पक्ष में, ९. आणत देवलोक में जघन्य अठारापक्षमें उत्कृष्ट उन्नीस पक्षमें, १० प्राणत देवलोकके देव जघन्य उन्नीस पक्षमें उत्कृष्ट बीस पक्ष, में ११ आरण देवलोक के देव जघन्य बीस पक्षमें उत्कृष्ट इकीस पक्षमें, १२ अच्युत देवलोक के देव जघन्य इकीस पक्ष में उत्कृष्ट बावीस पक्ष में. नीचे के ग्रैवेयक के देव जघन्य बावीस पक्ष में उत्कृष्ट तेवीस पक्ष में, नीचे के बीच के ग्रैवेयक के देव जघन्य तेवीस पक्ष में उत्कृष्ट चौवीस पक्ष में, नीचे के ऊपर के ग्रैवेयक के देव

[illegible] हेट्ठिम उवरिम गेविज्जग देवाणं भंते! केवइकालस्स आणमंति वा ४? ... पक्खाणं उक्कोसेणं चोवीसाए पक्खाणं

गोयमा ! जहण्णेणं चोवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं पणवीसाए पक्खाणं आणमंति वा ४ ॥ मज्झिम हेट्ठिम गेविज्जग देवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा ४? जहण्णेणं पणवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं छव्वीसाए पक्खाणं आणमंति वा ॥ मज्झिम मज्झिम गेविज्जग देवाणं भंते ! केवइ कालस्स आणमंति वा ४? गोयमा! जहण्णेणं छव्वीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं सत्तावीसाए पक्खाणं आणमंति वा ४ ॥ मज्झिम

अर्थ

८ सहस्रार देवलोक के देव जघन्य सतरह पक्ष में उत्कृष्ट अठारह पक्ष में, ९ आणत देवलोक में जघन्य अठारह पक्षमें उत्कृष्ट उन्नीस पक्षमें, १० प्राणत देवलोक के देव जघन्य उन्नीस पक्षमें उत्कृष्ट बीस पक्ष, में ११ आरण देवलोक के देव जघन्य बीस पक्षमें उत्कृष्ट इक्कीस पक्षमें, १२ अच्युत देवलोक के देव जघन्य इक्कीस पक्ष में उत्कृष्ट बावीस पक्ष में. नीचे के ग्रैवेयक के देव जघन्य बावीस पक्ष में उत्कृष्ट तेवीस पक्ष में, नीचे के बीच के ग्रैवेयक के देव जघन्य तेवीस पक्ष में उत्कृष्ट चौवीस पक्ष में, नीचे के ऊपर के ग्रैवेयक के देव

प्रियदर्श	सुदर्श	अमोह	यशोधर	मनिभद्र	विजय	विजयंत	जयंत	अपराजित	सर्वार्थ सिद्ध
२६	२७	२८	२९	३०	३१	३१	३१	३१	३३
२७	२८	२९	३०	३१	३३	३३	३३	३३	३३

सूत्र

विजय वेजयत जयंत अपराजित विमाणेसु देवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा ५ ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कत्तीसाए पक्खाणं उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं आण-मंतिवा ६ ? सव्वट्ठसिद्धग देवाणं भंते ! केवइ कालस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं आण-मंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा ॥ इति पण्णवण्णाए भगवईए ऊसासपयं॥७॥

अर्थ

विजय वेजयंत जयंत और अपराजित इन चार विमान के देवता जघन्य एकतीस पक्ष में उत्कृष्ट तेतीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और सर्वार्थ सिद्ध विमान के देवता अजघन्योत्कृष्ट तेतीस पक्ष में श्वास प्राण श्वासोश्वास लेते हैं. इति प्रज्ञापना भगवती का श्वासोश्वास नामक सातवा पद समाप्त ॥ ७ ॥

मायासण्णा, लोभसण्णा, लोगसण्णा ओघसण्णा ॥ नेरइयाणं भंते ! कइसण्णाओ पण्णत्ताओ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा आहार सण्णा जाव ओघसण्णा. असुरकुमाराणं भंते ! कइसण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा आहारसण्णाओ जाव ओघसण्णा, एवं जाव थणिय कुमाराणं,॥एवं पुढवी काइयाणं जाव वेमाणियावसाणाणं णेयव्वं ॥ नेरइयाणं भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता, भयसण्णोवउत्ता, मेहुणसण्णोवउत्ता परिग्गहसण्णोवउत्ता ? गोयमा! उसण्ण कारणं पडुच्च भयसण्णोवउत्ता, संतइभावं पडुच्च आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गह सण्णोवउत्तावि ॥ एएसिणं भंते ! नेरइयाणं आहार सण्णोवउत्ताणं

वह माया संज्ञा, ८ लोभ मोहनीय के उदय आस्ति से अधिक सचित्तादि परिग्रह की वांछा वह लोभ संज्ञा, ९ मतिज्ञान के क्षयोपशम से जो घट पटादि विचार वह लोक संज्ञा, और १० सम्यक् दर्शन के अववोधकर सामान्यपने घट पटादि का ग्रहण जैसे बच्चा किसी पदार्थ को देखा देखी ग्रहण तो करता है परंतु उसको पिछानता नहीं है तैसे होवे वह ओघसंज्ञा. अहो भगवन् ! नरक के जीवके कितनी संज्ञा होती है? अहो गौतम ! दश ही संज्ञा होती है उन के नाम—१ आहार संज्ञा २ भय संज्ञा ३ मैथुन संज्ञा ४ परिग्रह संज्ञा ५ क्रोध संज्ञा ६ मान संज्ञा ७ माया संज्ञा ८ लोभ संज्ञा ९ लोक संज्ञा और १० ओघ संज्ञा.

* अष्टम संज्ञा पदम्. *

कइणं भंते ! सण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा आहार सण्णा [illegible] मेहुण सण्णा, परिग्गह सण्णा, कोहसण्णा, माणसण्णा,

अब आठवा संज्ञा पद कहते हैं. अहो भगवन् ! कितनी संज्ञा कही है ? अहो गौतम ! दश संज्ञा कही है उन के नाम—१ आहार संज्ञा, २ भय संज्ञा, ३ मैथुन संज्ञा, ४ परिग्रह संज्ञा, ५ क्रोध संज्ञा, ६ मान संज्ञा, ७ माया संज्ञा, ८ लोभ संज्ञा, ९ लोकसंज्ञा और १० ओघसंज्ञा ॥ संज्ञा की व्याख्या वेदनीय और मोहनीय कर्म के उदय कर तथा ज्ञानावरणिय दर्शनावरणिय के क्षयोपशमकर विविध प्रकार की इच्छा का जिस समय में उदय [illegible] कही जाती है. १ क्षुधा वेदनी के उदयकर ग्रास के [illegible] पुद्गलों के ग्रहण [illegible] आहार संज्ञा, २ भयमोहनीय कर्मोदय हुवा मुख शोषादि का उद्भवरूप क्रिया वह भय संज्ञा ३ [illegible] मोहनीय के उदय स्त्री पुरुष नपुंसकादि के सम्बन्ध का चिंतवन वह मैथुन संज्ञा, ४ परिग्रह मोहनीय के उदय सचित अचित मिश्र वस्तु के संग्रह का चिंतवन वह परिग्रह संज्ञा, ५ क्रोधमोहनीय उदय मुख नेत्रादि का लाल होना पंखना वह क्रोध संज्ञा, ६ मान मोहनीय उदय अहंकार कर आत्मोत्कर्ष पना वह मान संज्ञा, ७ माया मोहनीय के उदय परिणामों की [illegible]

मायासण्णा, लोभसण्णा, लोगसण्णा ओघसण्णा ॥ नेरइयाणं भंते ! कइसण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा आहार सण्णा जाव ओघसण्णा. असुरकुमाराणं भंते ! कइसण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा आहारसण्णाओ जाव ओघसण्णा, एवं जाव थणिय कुमाराण,॥एवं पुढवी काइयाणं जाव वेमाणियावसाणाणं णेयव्वं ॥ नेरइयाण भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता, भयसण्णोवउत्ता, मेहुणसण्णोवउत्ता परिग्गहसण्णोवउत्ता ? गोयमा! उसण्ण कारणं पडुच्च भयसण्णोवउत्ता, संतइभावं पडुच्च आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गह सणोवउत्तावि ॥ एएसिणं भंते ! नेरइयाण आहार सण्णोवउत्ताणं

वह माया संज्ञा, ८ लोभ मोहनीय के उदय आस्ति से अधिक सचित्तादि परिग्रह की वांछा वह लोभ संज्ञा, ९ मतिज्ञान के क्षयोपशम से जो घट पटादि विचार वह लोक संज्ञा, और १० सम्यक् दर्शन के अवबोधकर सामान्यपने घट पटादि का ग्रहण जैसे बच्चा किसी पदार्थ को देखा देखी ग्रहण तो करता है परंतु उसको पिछानता नहीं है तैसे होवे वह ओघसंज्ञा. अहो भगवन् ! नरक के जीवके कितनी संज्ञा होती है? अहो गौतम ! दश ही संज्ञा होती है उन के नाम—१. आहार संज्ञा २ भय संज्ञा ३ मैथुन संज्ञा ४ परिग्रह संज्ञा ५ क्रोध संज्ञा ६ मान संज्ञा ७ माया संज्ञा ८ लोभ संज्ञा ९ लोग संज्ञा और १० ओघ संज्ञा.

...वउत्ताणं, मेहुण सण्णोवउत्ताणं, परिग्गह सण्णोवउत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया मेहुणसण्णोवउत्ता, आहारसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा॥ तिरिक्खजोणियाणं भंते! आहार सण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणं कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा! उसण्णं कारणं पडुच्च आहार सण्णोवउत्ता संतइ

अर्थ

अहो भगवन् ! असुर कुमार में कितनी संज्ञा ? अहो गौतम ! दश ही संज्ञा पाती है उन के नाम—आहार संज्ञा यावत् ओघ संज्ञा. जैसा असुर कुमार का कहा वैसा ही नाग कुमार आदि नव ही भुवनपति देव का जानना. ऐसे ही पृथ्वीकायादि पांच स्थावर में भी दश ही संज्ञा जानना. यावत् वैमानिक पर्यन्त चौवीस ही दंडक में दश ही संज्ञा जानना.

इन में से मनुष्यों में तो दश ही संज्ञा व्यक्त प्रगट है और स्थावरों में दश ही संज्ञा अव्यक्त है, जैसे १ वृक्षादि वनस्पति पानी आदि का आहार ग्रहण कर यह आहार संज्ञा, २ लजालु आदि भय लगते ही शरीर को संकोच यह भय संज्ञा, ३ ... प्रगट (मध्य चिन्ह देखिये) मैथुन संज्ञा, ४ पत्रादि ... ... परिग्रह संज्ञा, ५ ... ... यह क्रोध संज्ञा, ६ ... ... यह मान संज्ञा, ७ ... ... यह माया संज्ञा, ८ ... ... यह

सूत्र

भाव पडुच्च आहारसण्णा वउत्तावि जाव परिग्गह सण्णोवउत्तावि ॥ एएसिणं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताण कयरे २ हिंतो विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्ख जोणियाणं परिग्गह सण्णोवउत्ता, मेहुणसण्णोवउत्ता संखिज्जगुणा, भयसण्णोवउत्ता संखिज्जगुणा, आहारसण्णो वउत्ता संखिज्जगुणा ॥ मणुस्साणं भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गह सण्णोवउत्ता ?

अर्थ

अहो भगवन् ! नेरीये क्या आहार संज्ञावाले हैं कि भय संज्ञावाले हैं कि मैथुन संज्ञावाले हैं कि परिग्रह संज्ञावाले हैं ? अहो गौतम ! ऊष्णता कर अर्थात् भही मबलपने करके बाहुलतापने कर तो भय संज्ञावाले बहुत है क्यों कि जहां पर धार्मिक का भयोग्य है वहां घन करके कुंवादि का भय है अन्य स्थान शस्त्रादि का प्रयोग कर भय की बहुलता है और आसिं भाव करके अर्थात् भतर अनुभव की अपेक्षा कर, आहार आदिक चार संज्ञावाले हैं. अहो भगवन् ! इन आहार संज्ञावाले

लाभ संज्ञा, ९. संध्या समया वृक्ष के पत्र सकोच पावे सूर्य चंद्र का उदय हुवे सूर्य विकासी चन्द्र विकासी कमलादि विकसायमान होवे वह लोक संज्ञा, और १० मार्गादि में जाति बेलडी चढकर वृक्षादि को गरहण करे, वह ओघ संज्ञा इस प्रकार स्थावरों में लक्षण कर देखा हा संज्ञा का प्रमान होता है. यों त्रस में व्यक्त और स्थावर में अव्यक्त रूप होनेसे वह संज्ञा कही.

भयसण्णा वउत्ताणं, मेहुण सण्णोवउत्ताणं, परिग्गह सण्णोवउत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया मेहुणसण्णोवउत्ता, आहारसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा॥ तिरिक्खजोणियाणं भंते! आहार सण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणं कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा! उसण्णं कारणं पडुच्च आहार सण्णोवउत्ता संतइ

अर्थ

अहो भगवन् ! असुर कुमार में कितनी संज्ञा ? अहो गौतम ! दश ही संज्ञा पाती है इन के नाम—आहार संज्ञा यावत् औघ संज्ञा. जैसा असुर कुमार का कहा तैसा ही नाग कुमार आदि नव ही भुवनपति देव का जानना. ऐसे ही पृथ्वीकायादि पांच स्थावर में भी दश ही संज्ञा जानना. यावत् वैमानिक पर्यन्त चौवीस ही दंडक में दश ही संज्ञा जानना.

इन में से त्रसजीवों में तो दश ही संज्ञा व्यक्त प्रगट है और स्थावरों में दश ही संज्ञा अव्यक्त है, जैसे १ वृक्षादि वनस्पति पानी आदि का आहार ग्रहण कर वह आहार संज्ञा, २ लजालु आदि भय भीत हो शरीर को संकोचे वह भय संज्ञा, ३ तारुण्यपने मजरी आदि के प्रकार प्रगट (मध्य बिन्द्र देखावे) मैथुन संज्ञा, ४ पत्रादि कर फलादि को गुप्त करे वह परिग्रह संज्ञा, ५ छेदनादि करते कुमलनादि हो वह क्रोध संज्ञा, ६ तारुण्यपन में सुशोभित रहे वह मान संज्ञा, ७ अपने फलादि को पत्रादि से छिपावे वह माया संज्ञा, ८ फल पत्रादि से भार भृत होते भी हराभरा रहे यह

...मणोवउत्ता, संनइभावं पडुच्च अहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गहसण्णोवउत्तावि ॥ एएसिणं भंते ! मणुस्साणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा भयसण्णोवउत्ता आहारसण्णोवउत्ता संखिज्जगुणा,

अर्थ

में भय संज्ञावाले में मैथुन संज्ञावाले में और परिग्रह संज्ञावाले में कौन २ अल्प हैं, बहुत हैं, तुल्य हैं, यावत् अधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे मैथुन संज्ञावाले हैं, क्यों कि नरक में चक्षुइंद्रिय की साधन्यता नहीं है, मात्र मन ही के योग से कुछ इच्छा मात्र मैथुन संज्ञा होती है. उस से आहार संज्ञा-वाले संख्यातगुने क्यों कि वहां इच्छित आहार का अभाव होने से अनंत क्षुधा की प्रबलता से आहार संज्ञा अधिक है, उस से परिग्रह संज्ञा संख्यातगुनी है क्यों कि आहार का तो वहां है ही नहीं किन्तु शरीर स्थानादिक का सम्बन्ध है उस के रक्षण में इच्छा अधिक है, और उस से भयसंज्ञा संख्यातगुनी है क्यों कि सदैव मरणान्त पर्यन्त वे भयभीतही रहते हैं ॥ अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक क्या आहार संज्ञा वाले हैं कि भयसंज्ञा वाले हैं मैथुन संज्ञा वाले हैं कि परिग्रह संज्ञावाले हैं ? अहो गौतम ! बाहुल्य-ताकरके आहार संज्ञा वाले बहुत हैं और विद्यमानभाव करते आहार आदिक चारोंसंज्ञा वाले हैं ? अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक में इन आहार आदिक चारों संज्ञा में से किस संज्ञा वाले अल्प हैं, ज्यादा हैं

परिग्गहसण्णोवउत्ता संखिज्जगुणा, मेहुणसण्णोवउत्ता संखिज्जगुणा ॥ देवाणं भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गह सण्णोवउत्ता ? गोयमा ! उसण्णंकारणं पडुच परिग्गहसण्णोवउत्ता, संतइभाव पडुच आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गह सण्णोवउत्तावि ॥ एएसिणं भंते ! देवाणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणं

अर्थ

तुल्य है व अधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे परिग्रह संज्ञा वाले क्यों कि पशुताकर ममता कम है, उन से मैथुन संज्ञा वाले संख्यात गुने क्यों कि परिग्रह से मैथुन का काल उन के संख्यातगुना है, उन से भयसंज्ञा वाले संख्यातगुने क्योंकि पराधिनताकर भयकी अधिकता है और उससे आहार संज्ञा वाले संख्यात गुने हैं क्यों कि तिर्यंच के क्षुधावेदनीय का उदय की मावल्यता है और इच्छित आहार का सम्बन्ध थोडा है ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य आहार संज्ञा वाले हैं कि यावत् परिग्रह संज्ञा वाले हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य में बाहुल्यता करके मैथुन संज्ञावाले अधिक हैं क्यों कि मनुष्यपने में मोहकी मावल्यता अधिक रहती है, विद्यमान मात्रकर आहार आदि चारों संज्ञावाले हैं ॥ अहो भगवन् ! इन आहार संज्ञा यावत् परिग्रह संज्ञा वाले मनुष्य में कौन २ किस से अल्प हैं ज्यादा है तुल्य है या विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सबसे थोडी भयसंज्ञा है क्यों कि स्वाधिनता की बहुल्य है तथा ज्ञान की भी अधिकता है, २ उन से आहार संज्ञा संख्यातगुनी क्षुधा की मावल्यता है, उन से परिग्रह संज्ञा संख्यात गुनी क्यों कि

मूल

गोयमा! उसण्णंकारणं पडुच्च मेहुणसण्णोवउत्ता, संतइभावं पडुच्च अहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गहसण्णोवउत्तावि ॥ एएसिणं भंते ! मणुस्साणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा भयसण्णोवउत्ता आहारसण्णोवउत्ता संखिज्जगुणा,

अर्थ

में भय संज्ञावाले में मैथुन संज्ञावाले में और परिग्रह संज्ञावाले में कौन २ अल्प है, बहुत है, तुल्य है, वा अधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे मैथुन संज्ञावाले हैं, क्यों कि नरक में चतुइंद्रिय की माप-रूपता नहीं है, मात्र मन ही के योग से कुच्छ इच्छा मात्र मैथुन संज्ञा होती है. उस से आहार संज्ञा-वाले संख्यातगुने क्यों कि यहां इच्छित आहार का अभाव होने से अनंत क्षुधा की मावल्यता से आहार संज्ञा अधिक है, उस से परिग्रह संज्ञा संख्यातगुनी है क्यों कि आहार का तो यहां होही नहीं किन्तु शरीर स्थानादिक का सम्बन्ध है उस के रक्षण में इच्छा अधिक है, और उस से भयसंज्ञा संख्यातगुनी है क्यों कि सदैव मरणान्त पर्यन्त वे भयभीतही रहते हैं ॥ अहो भगवन् ! तिर्यच योनिक क्या आहार संज्ञा वाले हैं कि भयसंज्ञा वाले हैं मैथुन संज्ञा वाले हैं कि परिग्रह संज्ञावाले हैं ? अहो गौतम ! बाहुल्य-ताकरके आहार संज्ञा वाले बहुत हैं और विद्यमानभाव करके आहार आदिक चारोंसंज्ञा वाले हैं ? अहो भगवन् ! तिर्यच योनिक में इन आहार आदिक चारों संज्ञा में से किस संज्ञा वाले अल्प हैं, ज्यादा हैं

ण्णं भंते ! देवाणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणं कयरे २ अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा आहारसण्णोवउत्ता, भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, मेहुणसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा ॥ इति पण्णवण्णाए भगवईए सण्णापयं अट्ठमं सम्मत्तं ॥८॥

कुटुम्ब धन गृहादि पर ममत्व अधिक है, और उस से मैथुन संज्ञा संख्यात गुनी ॥ अहो भगवन् ! देवता आहार संज्ञावाले हैं कि यावत् परिग्रह संज्ञावाले हैं? अहो गौतम! बाहुल्यता करके परिग्रह संज्ञा वाले हैं क्यों कि वहां देवांगना परिवारादि परिग्रह की बाहुल्यता है, सन्तीभाव करके आहार आदिक चारों संज्ञावाले हैं ॥ अहो भगवन् ! देवता में आहार आदि चारों संज्ञा में से कौन २ सी संज्ञा वाले कमी है, ज्यादा है, तुल्य हैं अधिक हैं? अहो गौतम! सब से थोडे आहार संज्ञा वाले क्यों कि यहां क्षुधा वेदनीयका उदयमंद है, इच्छा होते तृप्त होजाते हैं, उस से भयसंज्ञा वाले संख्यात गुने आभोगी देवता आदिको इन्द्रादिका भय अधिक रहता है, उस से मैथुन संज्ञावाले संख्यात गुने क्यों अग्रमहिषी आदिका परिवार भी अधिक है और भोगकाल भी अधिक है और उस से परिग्रह संज्ञा वाले संख्यात गुने ॥ इति पनवणा भगवति का संज्ञा नामक आठवा पद समाप्त ॥ ८ ॥ ० ० ०

॥ नवम योनि पदम् ॥

कइविहाणं भंते ! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता ? तंजहा सीयाजोणी, उसिणाजोणी, सीओसिणा जोणी ॥ १ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं सियाजोणी उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी, उसिणावि जोणी, नो

अब नववा योनि पद कहते हैं. जीव का अनादि सम्बन्धी तेजस कार्माण शरीर जब औदारिक वैक्रेय शरीरपने परिणमता है तब इन शरीर के पुद्गल स्कंध का समुदाय जिस कर मिश्रित होता है उस उत्पत्ति स्थान को योनि कहते हैं. अहो भगवन् ! योनि कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! योनि तीन प्रकार की कही है उन के नाम—१ शीत योनि सो उत्पत्ति स्थान शीतल होवे, २ उष्ण योनि सो उत्पत्ति स्थान उष्ण होवे, और ३ शीतोष्ण योनि सो उत्पत्ति स्थान शीतोष्ण दोनों स्पर्शमय (मिश्र) होवे. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नेरीये क्या शीत योनिये हैं कि उष्ण योनिये हैं कि शीतोष्ण योनि हैं ? अहो गौतम ! नेरीये शीत योनिये भी हैं, उष्ण योनिये भी हैं परंतु शीतोष्ण योनिये नहीं हैं. रत्नप्रभा, शर्कर प्रभा और वालुक प्रभा इन तीनों नारकी के उत्पात क्षेत्र शीत स्पर्श कर परिणमित हैं, और उत्पात स्थान छोड कर अन्य स्थान उष्ण स्पर्श कर परणमित हैं, इस लिये उन शीत योनिक उत्पादक नेरीयों को उष्ण की महा वेदना होती है. चौथी पंक प्रभा नरक में उत्पत्ति स्थान शीत स्वभावमय

कयेर २ अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा आहारसण्णोवउत्ता, भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, मेहुणसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा ॥ इति पण्णवण्णाय भगवईए सण्णापयं अट्ठमं सम्मत्तं ॥८॥

कुटुम्ब धन गृहादि पर ममत्व अधिक है, और उस से मैथुन संज्ञा संख्यात गुनी ॥ अहो भगवन् ! देवता आहार संज्ञावाले हैं कि यावत् परिग्रह संज्ञावाले हैं ? अहो गौतम ! बाहुल्यता करके परिग्रह संज्ञा वाले हैं क्यों कि यहां धन परिवारादि परिग्रह की बाहुल्यता है, सन्तीभाव करके आहार आदिक चारों संज्ञावाले हैं ॥ अहो भगवन् ! देवता में आहार आदि चारों संज्ञा में से कौन २ सी संज्ञा वाले कमी है, ज्यादा है, तुल्य है अधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे आहार संज्ञा वाले क्यों कि यहां क्षुधा वेदनीयका उदयमंद है, इच्छा होते तृप्त होजाते हैं, उस से भयसंज्ञा वाले संख्यात गुने आभोगी देवता आदिको इन्द्रादिका भय अधिक रहता है, उस से मैथुन संज्ञावाले संख्यात गुने क्यों अग्रमहिषी आदिका परिवार भी अधिक है और भोगकाल भी अधिक है और उस से परिग्रह संज्ञा वाले संख्यात गुने ॥ इति पन्नवणा भगवति का संज्ञा नामक आठवा पद समाप्त ॥ ८ ॥ ० ० ०

॥ नवम योनि पदम् ॥

सूत्र

कइविहाणं भंते ! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता ? तंजहा सीयाजोणी,उसिणाजोणी, सीओसिणा जोणी ॥ १॥ नेरइयाणं भंते ! किं सियाजोणी उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी, उसिणावि जोणी, नो

अर्थ

अब नववा योनि पद कहते हैं. जीव का अनादि सम्बन्धी तेजस कार्माण शरीर जब औदारिक वैक्रेय शरीरपने परिणमता है तब इन शरीर के पुद्गल स्कंध का समुदाय जिस कर मिश्रित होता है उस उत्पत्ति स्थान को योनि कहते हैं. अहो भगवन् ! योनि कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! योनि तीन प्रकार की कही है उन के नाम—१ शीत योनि सो उत्पत्ति स्थान शीतल होवे, २ उष्ण योनि सो उत्पत्ति स्थान उष्ण होवे,और ३ शीतोष्ण योनि सो उत्पत्ति स्थान शीतोष्ण दोनों स्पर्शमय (मिश्र) होवे.॥१॥ अहो भगवन् ! नेरीये क्या शीत योनिये हैं कि उष्ण योनिये हैं कि शीतोष्ण योनि हैं ? अहो गौतम ! नेरीये शीत योनिये भी हैं, उष्ण योनिये भी हैं परंतु शीतोष्ण उयोनियें नहीं हैं. रत्नप्रभा, शर्कर प्रभा और वालुक प्रभा इन तीनों नारकी के उत्पात क्षेत्र शीत स्पर्श कर परिणमित हैं, और उत्पात स्थान छोड कर अन्य स्थान उष्ण स्पर्श कर परणमित हैं, इस लिये उन शीत योनिक उत्पादक नेरीयों को उष्ण की महा वेदना होती है. चौथी पंक प्रभा नरक में उत्पत्ति स्थान शीत स्वभावमय

सूत्र

सीओसिणाजोणी ॥२॥ असुरकुमाराणं भंते! किं सीयाजोणी उसिणा जोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! नो सीयाजोणी, नो उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ॥ एवं जाव थणियकुमाराण ॥३॥ पुढविकाइयाणं भंते! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी, उसिणाविजोणी, सीओसिणाविजोणी ॥४॥ एवं आऊ, वाऊ, वणस्सइ, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदियाणंवि पत्तेयं२ भाणियव्वं॥५॥ तेउकाइयाणं भंते ! किं सीयाजोणि, उसिणाजोणि, सीओसिणाजोणी ? गोयमा !

अर्थ

परिणमित बहुत हैं और उष्ण स्वभाव परिणमित थोडे हैं, जहां शीतोत्पत्ति स्थान हैं वहां नेरीये के रहने का उष्ण परिणाम परिणमित क्षेत्र है, और जहां उष्णोत्पत्ति स्थान है वहां नेरीयों का शीत क्षेत्र है, पांचवी धूम्र प्रभा में उत्पत्ति स्थान उष्णस्वभाव परिणमित बहुत हैं और शीत स्वभाव परिणमित थोडे हैं, वेदना उक्त प्रमाण. और छट्ठी तम प्रभा सातवी तमतम प्रभा में उत्पत्ति स्थान उष्ण स्वभाव परिणमित हैं, और नरक के शीत की वेदना है उष्णता से शीत की वेदना अधिक होती है.॥२॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देवता क्या शीत योनिक हैं कि उष्ण योनिक हैं कि शीतोष्ण योनिक हैं ? अहो गौतम ! शीत योनिक और उष्ण योनिक नहीं है परन्तु शीतोष्ण योनिक है क्यों कि देवता में शीतोष्ण की वेदना नहीं है. असुर कुमार के जैसा ही यावत् स्थनित कुमार तक कहना. ॥३॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया क्या शीत योनिक है उष्ण योनिक है कि शीतोष्ण योनिक है ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार की योनिवाले

भंते ! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी, उसिणाविजोणी, सीओसिणाविजोणी ॥ सम्मुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणंवि एवंचेव ॥ गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं सीयाजोणी, उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! नो सियाजोणी नो उसिणाजोणी, सीओसीणाजोणी ॥ ७ ॥ मणुस्साण भंते ! किं सीयाजोणी, उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी उसिणाविजोणी, सीओसिणाविजोणी ॥ सम्मुच्छिम मणुस्साणं भंते ! किं सीताजोणी उसिणाजोणी सीतोसिणाजोणी ? गोयमा ! तिविहाजोणी ॥

है. ॥४॥ ऐसे ही अपकाय वायुकाय वनस्पतिकाय बेइंद्रिय तेइंद्रिय चौरिन्द्रिय का भी अलग२ कहना. सब में तीनों प्रकार की योनि पाती है. ॥५॥ तेउकाय शीत योनिक और शीतोष्ण योनिक नहीं है परंतु उष्ण योनिक है. ॥६॥ अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक क्या शीत योनिक है कि उष्ण योनिक हैं कि शीतोष्ण योनिक है ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार की योनिवाले हैं. संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का ऐसे ही जानना. गर्भजतिर्यंच पंचेन्द्रिय शीत योनिक और उष्णयोनिक नहीं है परंतु शीतोष्ण (मिश्र) योनि-

सूत्र

सीओसिणाजोणी ॥२॥ असुरकुमाराणं भंते ! किं सीयाजोणी उसिणा जोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! नो सीयाजोणी, नो उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ॥ एवं जाव थणियकुमाराणं ॥३॥ पुढविकाइयाणं भंते ! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी, उसिणाविजोणी, सीओसिणाविजोणी ॥४॥ एवं आऊ, वाऊ, वणस्सइ, बेइंदिया, तेइंदिया,चउरिंदियाणंवि पत्तेयं२भाणियव्वं॥५॥ तेउकाइयाणं भंते ! किं सीयाजोणि, उसिणाजोणि, सीओसिणाजोणी ? गोयमा !

अर्थ

परिणमित बहुत है और उष्ण स्पर्शमय परिणमित थोडे हैं, जहां शीतोत्पत्ति स्थान हैं वहां नेरीये के रहने का उष्ण परिणाम परिणमित क्षेत्र है, और जहां उष्णोत्पत्ति स्थान है वहां नेरीयों का शीत क्षेत्र है, पांचवी धूम्र प्रभा में उत्पत्ति स्थान उष्णस्वभाव परिणमित बहुत हैं और शीत स्वभाव परिणमित थोडे हैं, वेदना उक्त प्रमाण, और छठी तम प्रभा सातवी तमतम प्रभा में उत्पत्ति स्थान उष्ण स्वभाव परिणमित हैं, और नरक के शीत की वेदना है. उष्णता से शीत की वेदना अधिक होती है.॥२॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देवता क्या शीत योनिक हैं कि उष्ण योनिक हैं कि शीतोष्ण योनिक हैं ? अहो गौतम ! शीत योनिक और उत्कृष्ट योनिक नहीं है परंतु शीतोष्ण योनिक है क्यों कि देवता में शीतोष्ण की वेदना नहीं है. असुर कुमार के जैसा ही यावत स्थनित कुमार तक कहना.॥३॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया क्या शीत योनिक है उष्ण योनिक है कि शीतोष्ण योनिक है ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार की योनिवाले

नो सीयाजोणी,उसिणाजोणी,णो सीओसिणाजोणी ॥६॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी, उसिणाविजोणी, सीओसिणाविजोणी ॥ सम्मुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणंवि एवंचेव ॥ गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं सीयाजोणी, उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! नो सियाजोणी नो उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ॥ ७ ॥ मणुस्साण भंते ! किं सीयाजोणी, उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी उसिणाविजोणी, सीओसिणाविजोणी ॥ सम्मुच्छिम मणुस्साणं भंते ! किं सीताजोणी उसिणाजोणी सीतोसिणाजोणी ? गोयमा ! तिविहाजोणी ॥

अर्थ

है. ॥४॥ ऐसे ही अपकाय वायुकाय वनस्पतिकाय बेइंद्रिय तेइंद्रिय चौरिन्द्रिय का भी अलग२ करना. सब में तीनों प्रकार की योनि पाती है. ॥५॥ तेऊकाय शीत योनिक और शीतोष्ण योनिक नहीं है परंतु उष्ण योनिक है.॥६॥ अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक क्या शीत योनिक है कि उष्ण योनिक है कि शीतोष्ण योनिक है ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार की योनिवाले हैं. संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का ऐसे ही जानना. गर्भजतिर्यंच पंचेन्द्रिय शीत योनिक और उष्णयोनिक नहीं है परंतु शीतोष्ण (मिश्र) योनिक

मूल

गर्भजवक्रांतिय मणुस्साणं भंते ! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! नो सीयाजोणी नो उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ॥८॥ वाणमंतर देवाणं भंते ! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! नो सीयाजोणी नो उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ॥ जोइसिय वेमाणियाणंवि एवंचेव ॥९॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं सीयाजोणियाणं, उसिणाजोणियाणं, सीओसिणा जोणियाणं, अजोणियाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

अर्थ

है.॥७॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्या शीत योनिक हैं उष्ण योनिक हैं कि शीतोष्ण योनिक हैं ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार के हैं. ऐसे ही संमूर्छिम मनुष्य भी तीनों प्रकार की योनि जानना. और गर्भज मनुष्य शीत योनिक उष्ण योनिक नहीं है परंतु शीतोष्ण (मिश्र) योनिक हैं ॥८॥ वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक देव भी शीत और उष्ण योनिक नहीं परंतु एक शीतोष्ण योनिक है. ॥९॥ अहो भगवन् ! इन शीत योनिक उष्ण योनिक शीतोष्ण योनिक और अयोनिक में. थोडे, बहुत, तुल्य व विशेष कौन २ हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे जीवों शीतोष्ण योनिक, क्यों कि चारों जाति के देवता गर्भज मनुष्य और तिर्यंच तथा कितनेक चार स्थावर तीन विकलेन्द्रिय [illegible] मनुष्य इतने ही योनी है, २ उससे उष्णयोनिक असंख्यातगुने, क्यों कि तेजस्काय तो सर्वथा से अधिक ही है और कितनी नरक और कितनेक चार स्थावर विकलेन्द्रिय

सीया सीओसिणजोणिया, उसिणजोणिया असंखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सीय जोणीया अणंतगुणा॥१०॥कइविहाणं भंते! जोणी पण्णत्ता? गोयमा! तिविहा जोणी पण्णत्ता ? तंजहा सचित्ताजोणी,अचित्ताजोणी,मीसिया जोणी॥११॥नेरइयाणं भंते ! किं सचित्ताजोणी, अचित्ताजोणी, मीसिया जोणी ? गोयमा ! नो सचित्ता जोणी, अचित्ताजोणी,णो मीसियाजोणी॥१२॥असुरकुमाराणं भंते ! किं सचित्ताजोणी अचित्ताजोणी, मिसियाजोणी ? गोयमा ! नो सचित्ताजोणी, अचित्ताजोणी, नो

असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य इस में हैं, ३ उस से अयोनिक अनंत गुने सिद्ध आश्रिय और उस से शीत योनिक अनंतगुने क्यों कि निगोदीये सब शीत योनिक हैं. ॥ और भी योनीका पूछते हैं ॥ अहो भगवन् ! योनि कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! योनि तीन प्रकार की कही है उस के नाम १ सचित योनी, जो जीव के सम्बन्ध सहित होवे २ अचित्त योनि जो जीव के सम्बन्ध रहित होवे, और ३ मिश्र योनि जो जीव अजीव के प्रदेशों की मिश्रता कर होवे॥११॥अहो भगवन्! नरक की क्या सचित्तयोनी है कि अचित्तयोनी है कि मिश्रयोनी हैं ? अहो गौतम ! सचित्त और मिश्रयोनी नहीं हैं परंतु एक अचित्त योनि है; यद्यपि एकेन्द्रिय जीव सर्व लोक व्यापी हैं तथापि योनि स्थान उस सम्बन्धसे रहित है. अहो भगवन् ! असुर कुमार क्या सचित्त योनिक हैं कि अचित्त योनिक हैं कि मिश्र योनिक

सूत्र

मीसियाजोणी, एवं जाव थणियकुमाराणं पुढविकाइयाणं भंते ! किं सचित्ताजोणी, अचित्ताजोणी, मीसियाजोणी ? गोयमा ! सचित्तावि जोणी, अचित्तावि जोणी, मीसियावि जोणी ॥ एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं सम्मुच्छिम मणुस्साणय एवंचेव ॥१२॥ गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणय नो सचित्ताजोणी, नो अचित्ताजोणी, मीसियाजोणी, ॥१३॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥१४॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं सचित्ता

अर्थ

हैं ? अहो गौतम ! सचित्त और मिश्र योनिक नहीं हैं परंतु अचित्त योनिक हैं. ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यंत जानना. अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया क्या सचित्त योनिक है अचित्त योनिक है मिश्र योनिक है ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार की योनि पाती है. क्यों कि सचित्त योनि तो इस प्रकार है कि त्रस स्थावर दोनों के शरीर में पृथ्वीकाया की उत्पत्ति होती है जैसे सीप के जीव बेइन्द्रिय उस के उदर में मोती पृथ्वीकाया उत्पन्न होवे ऐसे ही सर्प के मस्तक की मणि, मनुष्य के मस्तक की मणि, मनुष्य के पेट की पत्थरी, मगर मच्छ के दाढ में तथा मस्तक में मोती, सूअर के दाढ में मणि, गज के मस्तक के मोती. यह सब पृथ्वीकाया जानना. तैसे ही पृथ्वी पर्वत भवन विमानादि सर्व स्थान सचित्त जानना, ऐसे ही पानी से निमक उत्पन्न होवे. ऐसे ही पानी भी पानी में उत्पन्न होवे. नगरादि के मिश्र पानी में

जोणियाणं, अचित्तजोणियाणं मीसिय जोणियाणं अजोणियाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा मीसजोणिया, अचित्तजोणिया असंखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सचित्तजोणिया अणंतगुणा॥१५॥कइविहाणं भंते! जोणी पण्णत्ता? गोयमा! तिविहा जोणी पण्णत्ता? तंजहा संवुडाजोणी, वियडा जोणी, संवुडवियडाजोणी ॥१६॥ नेरइयाणं भंते! किं संवुडाजोणी, वियडाजोणी, संवुडा

भी उत्पन्न होवे. अचित्त योनि सो जैसे अचित्त लोह में तथा कांच से लकडी से, अग्नि की उत्पत्ति होती है, ऐसे ही वायु सचित्त अचित्त मिश्र सर्व स्थान में उत्पन्न होता है वनस्पति भी सचित्त वृक्षादि में उत्पन्न होवे अचित्त गोमयादि में उत्पन्न होवे. ऐसे ही बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय भी संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय संमूर्छिम मनुष्य इन सब की तीनों प्रकारकी योनि होती है. ॥१२॥ गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय और गर्भज मनुष्यकी मिश्रयोनि॥१३॥ और वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक असुरकुमारके जैसेही अचित्त योनि जानना. ॥१४॥ अहो भगवन्! सचित्त योनिक अचित्त योनिक मिश्र योनिक अयोनिक इनमें कौन ज्यादा अल्प अधिक कौन २ है? अहो गौतम! सब से थोडे मिश्रयोनिक क्यों कि गर्भज तिर्यंच और मनुष्य होवे विशेष है २ इस से अचित्त योनिक असंख्यात गुना क्यों कि देवता नारकी तथा कितनी पांचों प्रकार विकलेन्द्रिय असंज्ञी मनुष्य तिर्यंच में पाती है ३ इस से अयोनिक अनंत गुने क्यों कि सिद्ध भगवंत है. और इससे सचित्त योनिक अनंतगुने क्योंकि निगोदीये जीवोंकी सचित्तयोनी है. ॥१५॥ और भी योनि

सूत्र

वेयडाजोणी॥१९॥वाणमंतराजोइसियावेमाणियाणं जहा नेरइयाणं॥२०॥एएसिणं भंते! जीवाणं संवुडा जोणियाणं वियडा जोणियाणं संवुडवियड जोणियाणं अजोणियाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा, बहुयावा, तुल्लावा, विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा संवुडवियडाजोणिया, वियडजोणिया असंखिज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, संवुडाजोणिया अणंतगुणा॥२१॥कइविहाणं भंते! जोणी पण्णत्ता? गोयमा! तिविहा जोणि पण्णत्ता? तंजहा कुम्मुन्नया जोणी, संखावत्ताजोणी, वंसीपत्ताजोणी॥२२॥कुम्मु-

अर्थ

संवृता और संवृता विवृता योनि नहीं है परंतु विवृता योनि है. ऐसे ही तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य की जानना. ॥१८॥ और गर्भज तिर्यंच की तथा गर्भज मनुष्य की संवृता और विवृता योनि नहीं है एक संवृता विवृता योनि है.॥१९॥ वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक देवकी नरक जैसी एक संवृता योनि है. ॥२०॥ अहो भगवन्! इन संवृत, विवृत, संवृतविवृत और अयोनिक में कौन २ कमी ज्यादा तुल्य व विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडा संवृतविवृत योनिवाले हैं, क्योंकि गर्भज तिर्यंच और गर्भज मनुष्य के ही होती है, उस से विवृत योनिक असंख्यात गुने अधिक, क्योंकि विकलेन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यंच व मनुष्य में होती है, उस से अयोनिक (सिद्ध) अनंत गुने और उस से संवृत योनिक अनंत गुने क्यों कि निगोदीये जीवों को यही होती है ॥२१॥ और भी योनी आश्रिय ही

वियडाजोणी ? गोयमा ! संवुडा जोणी, नो वियडाजोणी, नो संवुडावियडाजोणी ॥ एवं जाव वणस्सइ काइयाणं ॥१७॥ बेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा! नो संवुडाजोणी, वियडाजोणी, नो संवुडावियडाजोणी ॥ एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ सम्मुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं सम्मुच्छिम मणुस्साणय एवंचेव ॥ १८ ॥ गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं गब्भवक्कंतिय मणुस्साणय नो संवुडाजोणी, नो वियडाजोणी, संवुडा-

अर्थ

आश्रिय प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! कितने प्रकार की योनि कही है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार की योनी कही है उन के नाम-१ संवृत योनिक जिस का मुख संकुचित होने से उस में जीवोत्पत्ति दृष्टीगत न होवे वह, २ विवृतयोनी मुख खुला होने से जीवोत्पत्ति दृष्टीगत हो जावे वह, और ३ संवृतविवृत योनी जो कुछ जानने में आवे कुछ जानने में नहीं आवे जैसे मनुष्यनी तिर्यचनी का गर्भ पेट बढने से ही जानने में आवे.॥१६॥ अहो भगवन्! नारकी की क्या संवृतयोनी है कि विवृतयोनी है कि संवृतविवृत योनी है? अहो गौतम ! संवृत योनी है परंतु विवृत और संवृत विवृत योनी नहीं है क्यों कि नरकमें उत्पन्न होने के गवाक्ष बिल जैसे स्थान है वहां उत्पन्न होते हैं वे अस्वभाव से भी नीचे पडते हैं तथापय भी खेंचकर निकालते हैं नरक के जैसेही दश भुवनपतिकी और पांचों स्थावरोंका कहना क्योंकि देवताकी देवा और पांचों स्थवरकी उत्पत्ति स्थान प्रत्यक्ष देखता है.॥१७॥ अहो भगवन्! बेइन्द्रिय के किस प्रकारकी योनि है ? अहो गौतम! बेइन्द्रिय के

णयाणंजोणी उत्तमपुरिस माऊयाणं, कुम्मुन्नयाएणं जोणीए, उत्तमपुरिसा गब्भंवक्कमंति तंजहा-अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा ॥ संखावत्ताणं जोणी इत्थिरयणस्स, संखावत्ताएणं जोणीए बहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उवचयंति-नोचेवणं णिप्फज्जंति ॥ वंसीपत्ताणं जोणि पिहुजणस्स, वंसीपत्तियाएणं जोणीए पिहुजणे गब्भवक्कमंति ॥ इति पण्णवणा भगवईए णवम जोणी पयं सम्मत्तं ॥ ९ ॥

अर्थ

पूछते हैं ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की योनि कही है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार की योनि कही है, उन के नाम -१ कुर्मक योनिक जो काछवे की पृष्ठकी जैसी ऊंची होवे, २ शंखावर्तयोनि शंख-जैसे आवृत वाली होवे और वंशीपत्र योनी वह वांस के पत्र समान संपूट मिले हुवे होवे ॥ इस में कुमुदा योनीतों उत्तमपुरुषों की होती है, जिस मे उत्तम पुरुष उत्पन्न होते हैं उन के नाम-१ तीर्थंकर, २ चक्रवर्ती, ३ बल्देव और ४ वासुदेव दूसरी शंखावर्तयोनि चक्रवर्ती महाराजा के स्त्रीरत्न की होती है, उस में अनेक जीवों अनेक पुद्गलों आकर उत्पन्न होते हैं उस में से चववे (मरते) भी है और संचयभी होते हैं, किन्तु योनी में किसी का जन्म नहीं होता है, और वंशीपत्र योनि सामान्य माताओं की होती है उस मे अनेक जीवों उत्पन्न होने भी है और नहीं भी होते हैं॥ इति नववा योनी पद संपूर्णम् ॥९॥

१२ योनिक यन्त्र

योनी	७ नरक	१० भवन	४ स्थावर	१ तेउ	३ विक्ले	ति. पं.	सं. ति.	ग. ति.	मनुष्य	सं. मनु.	ग. मनु.	वाणव्यं.	ज्योतिषी	वैमानिक	अल्पाबहुत्व
१ शीत	हे	०	हे	०	हे	हे	हे	०	हे	हे	०	०	०	०	४ अनंत गुने
२ उष्ण	हे	०	हे	हे	हे	हे	हे	०	हे	हे	०	०	०	०	२ असंख्यातगुने
३ शीतोष्ण	०	हे	हे	०	हे	हे	हे	हे	हे	हे	हे	हे	हे	हे	१ सब से थोडे
४ अयोनी	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३ सिद्ध अनंतगुने
१ सचित्त	०	०	हे	हे	हे	हे	हे	०	हे	हे	०	०	०	०	४ अनंतगुना
२ अचित्त	हे	हे	हे	हे	हे	हे	हे	०	०	०	०	हे	हे	हे	२ असंख्यातगुने
३ मिश्र	०	०	हे	हे	हे	हे	हे	हे	हे	हे	हे	०	०	०	१ सब से थोडे
४ अयोनिका	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३ अनंत गुने
१ संवृत	हे	हे	हे	हे	०	०	०	०	०	०	०	हे	हे	हे	४ अनंत गुने
२ विवृत	०	०	०	०	हे	हे	हे	०	हे	हे	०	०	०	०	२ असंख्यातगु
३ मिश्र	०	०	०	०	०	हे	०	हे	हे	०	हे	०	०	०	१ सबसे थोडे
४ अयोनिका	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३ अनंत गुने

सूत्र

कुम्म ोणी उत्तमपुरिस माऊयाणं, कुम्मुन्नयाएणं जोणीए, उत्तमपुरिसा गब्भंवक्कमंति, तंजहा-अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा ॥ संखावत्ताणं जोणी इत्थिरयणस्स, संखावत्ताएणं जोणीए बहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उवचयंति नोचेवणं णिप्फज्जंति ॥ वंसीपत्ताणं जोणि पिहुजणस्स, वंसीपत्तियाएणं जोणीए पिहुजणे गब्भवक्कमंति ॥ इति पण्णवणा भगवईए णवम जोणी पयं सम्मत्तं ॥ ९ ॥

अर्थ

पूछते हैं ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की योनि कही है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार की योनि कही है, उन के नाम -१ कुर्मक योनिक जो काछवे की पृष्ठ की जैसी ऊंची होवे, २ शंखावर्तयोनि शंख-जैसे आवृत वाली होवे और वंशीपत्र योनी वह बांस के पत्र समान संपूट मिले हुवे होवे ॥ इस में कुमुदा योनितो उत्तमपुरुषों की होती है, तिस से उत्तम पुरुष उत्पन्न होते हैं उन के नाम-१ तीर्थंकर, २ चक्रवर्ती, ३ बलदेव और ४ वासुदेव. दूसरी शंखावर्तयोनि चक्रवर्ती महाराजा के स्त्रीरत्न की होती है, उस में अनेक जीवो अनेक पुद्गलों आकर उत्पन्न होते हैं उस में से चवते (मरते) भी हैं और संचयभी होते हैं, किन्तु योनी में किसी का जन्म नहीं होता है, और वंशीपत्र योनि सामान्य माताओं की होती है उस में अनेक जीवों उत्पन्न होने भी हैं और नहीं भी होते हैं ॥ इति नववा योनी पद संपूर्णम् ॥९॥

॥ दशम चरिम पदम् ॥

सूत्र

कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा रयणप्पभा, सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा, तमतमप्पभा, इसीयपब्भारा ॥ १ ॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभा पुढवि किं चरिमा, अचरिमा, चरिमाइं अचरिमाइं, चरमंतपएसा अचरिमंतपएसा ? गोयमा ! इमाणं रयणप्पभा

अर्थ

अब दशवा चरिम अचरिम पद कहते हैं—अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही है ? अहो गौतम ! आठ पृथ्वी कही है ? उस के नाम—१ रत्नप्रभा, २ शर्कर प्रभा, ३ वालु प्रभा, ४ पंक प्रभा, ५ धूम्रप्रभा, ६ तम प्रभा, ७ तमतम प्रभा और ८ इषत् प्राग्भार ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी द्रव्य से चरम है कि अचरम है [एक वचन] ३ चरिमा है कि अचरिमा है (बहु वचन) ४ क्षेत्र से चरिम प्रदेशी है कि अचरिम प्रदेशी है ? + अहो गौतम ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी चरिम नहीं है तैसे ही अचरिम भी नहीं है (एक वचन) चरिमा भी नहीं है. अचरिमा भी नहीं है (बहु वचन) चरम प्रदेशी भी नहीं है अचरिम प्रदेशी भी नहीं भी क्यों कि यह प्रश्न रत्नप्रभा पृथ्वी का है जो अन्य

+ जैसे मनुष्यों के अन्तिम शरीर को चरिम शरीर कहते हैं ऐसे ही रत्नप्रभा नरक मध्य की अपेक्षा कर अन्तिम व द्रव्य व प्रदेश को चरिम कहे हैं और अन्तिम द्रव्य व प्रदेश की अपेक्षा कर मध्य को अचरिम कहे हैं.

सूत्र

पुढवि नो चरिमा नो अचरिमा नो चरिमाइं नो अचरिमाइं नोचरिमंतपएसा, नो अचरिमंतपएसा,नियमा अचरिमं चरिमा णियमचरिमंतपएसाय, अचरिमंतपएसाय. एवं जाव अहेसत्तमापुढवी, सोहम्मादि जाव अणुत्तर विमाणाणं एवंचेव. ईसिप्पब्भाराएवि,लोगेवि,एवंचेव,एवं अलोगेवि,॥२॥इमीसेणं भंते! रयणप्पभा पुढवीए अचरिम-

अर्थ

रत्नप्रभा पृथ्वी होती तो उस की अपेक्षा कर यह चरिम अचरिम कही जाती कि अमुक रत्नप्रभा पृथ्वी के यह अन्त में है इसलिये चरिम है और अमुक रत्नप्रभा पृथ्वी के मध्य में है इस लिये यह अचरिम है, परंतु अकेली ही रत्नप्रभा पृथ्वी होने से उक्त छही प्रश्नों का यहां निषेध किया है. तब यह कैसा है सो कहते हैं-कि यह रत्नप्रभा पृथ्वी प्रथम आश्रिय अचरिम चरिम है और प्रदेश आश्रिय चरिमान्त प्रदेश, अचरिमान्त प्रदेश मध्य का पृथ्वी का जो खण्ड है उस की अपेक्षा अचरिम है और अन्तिम पृथ्वी का जो खण्ड है उस की अपेक्षा चरिम है और रत्नप्रभा पृथ्वी के अन्त में प्रदेश है वे चरिम प्रदेश हैं और मध्य में प्रदेश वे अचरिम प्रदेश है. जैसा यह रत्नप्रभा पृथ्वी का कहा तैसा ही सातों ही पृथ्वी का कहना, और इस ही प्रकार सौधर्म देवलोक से यावत् अनुत्तर विमान पर्यंत कहना, तैसा ही इषत्प्राग भार पृथ्वी (सिद्ध शिला) का भी कहना और तैसा ही संपूर्ण लोक का तथा अलोक का भी निर्विशेष कहना. इस प्रकार एकेक में चार २ बोल पाते हैं. यों नरक, २६ स्वर्ग, १ सिद्ध शिला, अलोक और लोका लोक; यों सब

सूत्र

अर्थ

॥ दशम चरिम पदम् ॥

कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा रयणप्पभा, सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा, तमतमप्पभा, इसीयपब्भारा ॥ १ ॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभा पुढवि किं चरिमा, अचरिमा, चरिमाइं अचरिमाइं, चरमंतपएसा अचरिमंतपएसा ? गोयमा ! इमाणं रयणप्पभा

अथ दशवा चरिम अचरिम पद कहते हैं—अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही है ? अहो गौतम ! आठ पृथ्वी कही है ? उस के नाम—१ रत्नप्रभा, २ शर्कर प्रभा, ३ वालु प्रभा, ४ पंक प्रभा, ५ धूम्रप्रभा, ६ तम प्रभा, ७ तमतम प्रभा और ८ इषत् प्राग्भार ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी द्रव्य से चरम है कि अचरम है [एक वचन] २ चरिमा है कि अचरिमा हैं (बहु वचन) ४ क्षेत्र से चरिम प्रदेशी है कि अचरिम प्रदेशी है ? + अहो गौतम ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी चरिम नहीं है तैसे ही अचरिम भी नहीं है (एक वचन) चरिमा भी नहीं है. अचरिमा भी नहीं है (बहु वचन) चरम प्रदेशी भी नहीं है अचरिम प्रदेशी भी नहीं भी क्यों कि यह प्रश्न रत्नप्रभा पृथ्वी का है जो अन्य

+ जैसे मोक्षगामी के अन्तिम शरीर को चरिम शरीर कहते हैं ऐसे ही रत्नप्रभा नरक मध्य की अपेक्षा कर अन्तिम के द्रव्य को व प्रदेश को चरिम कहे हैं और अन्तिम द्रव्य व प्रदेश की अपेक्षा कर मध्य को अचरिम कहे हैं.

मूल

अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहियाय ॥ दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवे इमीसे रयणप्पभा पुढवीए दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, चरिमं अचरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं, चरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, अचरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, चरिमंतपएसाय अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ सोहम्मस्स जाव लोगस्सय एवंचेव ॥ १ ॥ अलोगस्सणं भंते ! अचरिमस्सय चरिमाणय चरिमंतपएसाणय अचरिमंतपएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए,

अर्थ

दोनों का या सब रत्नप्रभा के प्रदेशों का समावेश हो गया. अब द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ दोनों सामिल आश्रिय-सब से थोडे इस रत्नप्रभा पृथ्वी का द्रव्यार्थपने एक अचरिम खण्ड, क्यों कि सब पृथ्वी का एक ही बड़ा खण्ड है, २ उस से चरिम खण्ड असंख्यातगुने, क्यों कि चारों तरफ के खण्ड आगये, उस से चरिम और अचरिम खण्ड दोनों विशेषाधिक, उस से चरिमान्त प्रदेश असंख्यातगुने क्यों कि चारों तरफ के चरिम प्रदेश आगये, उस से अचरिम प्रदेश असंख्यातगुने क्यों कि बीच के सब प्रदेश आगये. और इस में चरिमान्त अचरिमान्त प्रदेश विशेषाधिक सब प्रदेशों का समावेश हो गया. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के जैसा ही सातों ही पृथ्वी का सब्वीस ही देवलोकों का सिद्ध शिला का और संपूर्ण लोक का कथन करना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अलोक का अचरिम खण्ड, चरिम खण्ड, चरिमान्त प्रदेश और

सूत्र

अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहियाय ॥ दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवे इमीसे रयणप्पभा पुढवीए दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, चरिमं अचरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं, चरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, अचरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, चरिमंतपएसाय अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ सोहम्मस्स जाव लोगस्सय एवंचेव ॥ २ ॥ अलोगस्सणं भंते ! अचरिमस्सय चरिमाणय चरिमंतपएसाणय अचरिमंतपएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए,

अर्थ

दोनों का या सब रत्नप्रभा के प्रदेशों का समावेश हो गया. अब द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ दोनों सामिल आश्रिय-सब से थोडे इस रत्नप्रभा पृथ्वी का द्रव्यार्थपने एक अचरिम खण्ड, क्यों कि सब पृथ्वी का एक ही बड़ा खण्ड है, २ उस से चरिम खण्ड असंख्यातगुने, क्यों कि चारों तरफ के खण्ड आगये, उस से चरिम और अचरिम खण्ड दोनों विशेषाधिक, उस से चरिमान्त प्रदेश असंख्यातगुने क्यों कि चारों तरफ के अन्तिम प्रदेश आगये, उस से अचरिम प्रदेश असंख्यातगुने क्यों कि बीच के सब प्रदेश आगये. और इस से चरिमान्त अचरिमान्त प्रदेश विशेषाधिक सब प्रदेशों का समावेश हो गया. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के जैसा ही सातों ही पृथ्वी का छव्वीस ही देवलोकों का सिद्ध शिला का और संपूर्ण लोक का कथन करना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! अलोक का अचरिम खण्ड, चरिम खण्ड, चरिमान्त प्रदेश और

दव्वट्ठयपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवे अलोगस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अचरिमचरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं, पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अलोयस्स चरिमंतपएसा, अचरिमंतपएसा अणंतगुणा, चरिमंतपएसाय अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया ॥ दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवे अलोयस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अचरिमंच चरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं, चरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, अचरिमंतपएसा अणंतगुणा, चरिमंतपएसाय अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया ॥ ४ ॥ लोगालोगस्सणं भंते ! अचरिमस्सय चरिमाणय चरिमं-

अचरिमान्त प्रदेश द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने और द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने कौन २ से अल्प हैं ज्यादा हैं तुल्य हैं विशेष हैं? अहो गौतम ! सब से थोडा अलोक का द्रव्यार्थ एक अचरिम खण्ड क्यों कि एकही है २ उस से चरिम खण्ड असंख्यातगुना, ३ उसमें चरिम अचरिम खण्ड विशेषाधिक. अब प्रदेशार्थपने सब से थोडे अलोक के चरिमान्त प्रदेश, उस से अचरिमान्त प्रदेश अनंतगुने, उस से चरिमान्त अचरिमान्त अनंत गुने अब द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने. सब से थोडा अलोक का द्रव्यार्थपने एक अचरिम उस से चरिम खण्ड असंख्यातगुने. इस से अचरिम चरिम प्रदेश दोनों विशेषाधिक, उस से चरिमान्त प्रदेश अनंतगुने क्यों की अलोक अनंत है, उस से चरिमान्त अचरिमान्त दोनों विशेषाधिक ॥ ४ ॥

सूत्र

अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहियाव ॥ दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवे इमीसे रयणप्पभा पुढवीए दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, चरिमं अचरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइ, चरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, अचरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, चरिमंतपएसाय अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ सोहम्मस्स जाव लोगस्सय एवंचेव ॥ २ ॥ अलोगस्सणं भंते ! अचरिमस्सय चरिमाणय चरिमंतपएसाणय अचरिमंतपएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए,

अर्थ

दोनों का या सब रत्नप्रभा के प्रदेशों का समावेश हो गया. अब द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ दोनों सामिल आश्रिय-सब से थोडे इस रत्नप्रभा पृथ्वी का द्रव्यार्थपने एक अचरिम खण्ड, क्यों कि सब पृथ्वी का एक ही बडा खण्ड है, २ उस से चरिम खण्ड असंख्यातगुने, क्यों कि चारों तरफ के खण्ड आगये, उस से चरिम और अचरिम खण्ड दोनों विशेषाधिक, उस से चरिमान्त प्रदेश असंख्यातगुने क्यों कि चारों तरफ के अन्तिम प्रदेश आगये, उस से अचरिम प्रदेश असंख्यातगुने क्यों कि बीच के सब प्रदेश आगये. और इस से चरिमान्त अचरिमान्त प्रदेश विशेषाधिक सब प्रदेशों का समावेश हो गया. इस रत्नप्रभा पृथ्वी के जैसा ही सातों ही पृथ्वी का छव्वीस ही देवलोकों का सिद्ध सिला का और संपूर्ण लोक का कथन करना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! [illegible]

सूत्र

१९उदाहु चरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वएय, २०उदाहु चरिमेय अचरिमेय अव्वत्तव्वयाइं २१उदाहु चरिमेय अचरिमाइंच अव्वत्तव्वएय, २२ उदाहु चरिमेय अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइं, २३ उदाहु चरिमाइं अचरिमेय अव्वत्तव्वएय, २४ उदाहु चरिमाइं अचरिमेय अवत्तव्वयाइं, २५ उदाहु चरिमाइंच अचरिमाइंच अव्वत्तव्वएय, २६ उदाहु चरिमाइंच अचरिमाइंच अव्वत्तव्वयाइंच ॥ एवं ते छव्वीसभंगा ? गोयमा ! परमाणु पोग्गले नो चरिमे नो अचरिमे, नियमा अवत्तव्वए, सेसा भंगापरिसेहेयव्वा।

अर्थ

अव्यक्तव्य.कहना क्या? १७बहुत अचरिम एक अवक्तव्य,कहना क्या ? १८ बहुत,अचरिम अवक्तव्य कहना क्या? तीसरी चौभंगी,यह द्विक संयोगीकी तीन चौभंगी के १२ भांगे हुवे. १९एक चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य. कहना क्या? २० एक चरिम एक अचरिम बहुत अवक्तव्य, कहना क्या? २१ एक चरिम बहुत अचरिम एक अवक्तव्य कहना क्या?२२ एक चरिम बहुत अचरिम बहुत अवक्तव्य,कहना क्या? २३ बहुत चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य कहना क्या? २४बहुत चरिम एक अचरिम बहुत अवक्तव्य कहना क्या? २५बहुत चरिम, बहुत अचरिम एक अवक्तव्य. कहना क्या ? और २६ . बहुत चरिम बहुत अचरिम बहुत अवक्तव्य.कहना क्या इन छव्वीस भांगे में से परमानुपुद्गलमें कितने भांगे पाते हैं? अहो गौतम ! परमानुपुद्गल १. चरिम नहीं है २.अचरिमभी नहीं है क्योंकि मध्य नहीं, इसलिये नियमसे अवक्तव्य है क्योंकि [illegible]

सूत्र

अवत्तव्वयाइं, ७ उदाहु चरिमेयं अचरिमेय, ८ उदाहु चरिमेय अचरिमाइं, ९ उदाहु चरमाइं अचरिमेय, १० उदाहु चरिमाइंच अचरिमाइंच, पढमा चउभंगी ११ उदाहु चरिमेय अवत्तव्वएय, १२ उदाहु चरिमेय अवत्तव्वयाइंच १३ उदाहु चरिमाइंच अवत्तव्वएय, १४ उदाहु चरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच, बितिया चउभंगी १५ उदाहु अचरिमेय अवत्तव्वएय, १६ उदाहु अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १७ उदाहु अचरिमाइं अवत्तव्वएय, १८ उदाहु अचरिमाइंच अव्वत्तव्वयाइं, तइया चउभंगी

भावार्थ

पूरे बिखरे (मिले—अलग होवे) उसे परमाणु पुद्गल कहते हैं. अहो भगवन् ! १परमाणु पुद्गल चरिम है एक संयोगी २ अचरिम है ३ अवक्तव्य है (चरिम भी न कहा जाय, अचरिम भी न कहा जाय ऐसा) अवक्तव्य है तीनों भांगे यह एक वचनी; ४ चरिमा है, ५ अचरिमा है, ६ अवक्तव्या है, (यह तीनों भांगे अनेक वचनी) यह छ भांगे एक संयोगी हुवे. ७ एक चरिम एक अचरिम कहना क्या? ८ एक चरिम बहुत अचरिम कहना क्या ? ९ बहुत चरिम एक अचरिम कहना क्या? १० बहुत चरिम बहुत अचरिम कहना क्या? यह प्रथम चौभंगी ११ एक चरिम एक अव्यक्तव्य, कहना क्या? १२ एक चरिम बहुत अवक्तव्य, कहना क्या? १३ बहुत चरिम एक अवक्तव्य, कहना क्या? १४ बहुत चरिम बहुत अवक्तव्य कहना क्या ? यह दूसरी चौभंगी १५ एक अचरिम एक अव्यक्तव्य, कहना क्या ? १६ अचरिम बहुत

नो चरिमाइं, ५ मो अचरिमाइं ६ नो अवत्तव्वयाइं, ७ नो चरिमेय अचरिमेय, ८ नो चरिमेय, अचरिमाइं, ९ सिय चरिमाइंच अचरिमेय, १० नो चरिमाइंच अचारमाइच, ११ सिय चरिमेय अवत्तव्वएय, सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा ॥ ८ ॥ चउप्पएसिएणं भंते! खंधे पुच्छा? गोयमा! चउप्पएसिए खंधे १ सिय चरिमे, २

अर्थ

होने से स्यात् अवक्तव्य भी है, बहुत वचन की अपेक्षा चरिम नहीं है. बहुत अचरिम भी नहीं बहुत अवक्तव्य भी नहीं. अब द्विसंयोगी भांग कहते हैं—एक चरिम और एक अचरिम भी न होवे क्योंकि तीन हैं, चरिम का एक अचरिम के बहुत यह भी नहीं है, परंतु स्यात् तीनों परमाणुओं तीन प्रदेश अवगाह कर रहे हैं तब दोनों तरफ दो परमाणु रहे वे बहु वचन आश्रिय चरिम है और एक परमाणु बीच में है वह एक वचन आश्रिय अचरिम है, यह १९ वा भांगा पाता है, बहुत चरिम बहुत अचरिम यह भी नहीं पावे परंतु स्यात् एक चरिम एक अवक्तव्य यह भांगा पावे, जब तीनों प्रदेश में का दो परमाणु को दो आकाश प्रदेश, सम श्रेणि से अवगाहवे और एक विषम अवगाहवे °„° तब जो दो सम श्रेणि से रहे हैं वे एकेक की अपेक्षा से चरिम हैं और जो विषम श्रेणि से रहा है वह अवक्तव्य है, यों इग्यारहवा भांगा पाता है. इस प्रकार त्रिप्रदेशिक स्कन्ध में ४ भांगे पाते हैं, बाकी २२ भांगे का निषेध करना ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध में कितने भांगे पाते हैं?

॥ ६ ॥ दुपदेसिएणं भंते! खंधे पुच्छा ? गोयमा ! दुपएसिए खंधे सिय चरिमे, नो अचरिमे, सिय अवत्तव्वए, सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा॥७॥ तिपएसिणं भंते! खंधे पुच्छा? गोयमा ! तिपएसिए खंधे १ सिय चरिमे, २ नो अचरिमे, ३ सिय अवत्तव्वए, ४

द्विप्रदेशिक स्कन्ध में उक्त २६ भांगे के कितने भांग पाते हैं ? अहो गौतम! द्विप्रदेशिक स्कन्ध स्यात् चरिम है. क्यों कि दो आकाश प्रदेश अवगाह कर दो परमाणु रहे हैं. वह पहिले की अपेक्षा दूसरा चरिम और दूसरे की अपेक्षा पहिला चरिम कहा जाता है, अचरिम नहीं है क्यों कि दो परमाणु स्कन्ध के त्रिभाग नहीं होते हैं इस लिये मध्य नहीं है. और ३ कदाचित अवक्तव्य भी है क्यों कि द्विप्रदेशिक स्कन्ध एक ही आकाश प्रदेश अवगाह कर रहा हो तो चरिम अचरिम कुछ भी नहीं कह सके. इसलिये यह २ भांग पाते हैं बाकी २४ भांग का निषेध करना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध में उक्त २६ भांग में के कितने भांग पाते हैं ? अहो गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध स्यात् चरिम है क्यों कि जिस वक्त दो आकाश प्रदेश अवगाह कर सम श्रेणि से रहे, तब द्विप्रदेशिक के जैसे एकेक की अपेक्षा से एकेक चरिम है, तब अचरिम नहीं क्यों कि दो आकाश प्रदेश के अवगाह से मध्य रहित है, और एक आकाश प्रदेश अवगाह कर रहे तब चरिम अचरिम दोनों ही नहीं

सूत्र

१४नो अचरिमाइं अवत्तव्वयाइंच, १५नो अचरिमेय अवत्तव्वएय, १६नो अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १७नो अचरिमाइंच, अवत्तव्वएय, १८नो अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच.

अर्थ

बहुत अचरिम बहुत भी यह भी पाता है क्योंकि जब चारों परमाणु समश्रेणिसे चार आकाशप्रदेश[०।०।०।०] अवगाह कर रहे उस में आदि अन्त के दो प्रदेश अवगाहे वे बहुत चरिम, दो आकाश प्रदेश दो मध्य के परमाणु अवगाहकर रहे वह बहुत अचरिम, ११. स्यात् एक चरिम एक अवक्तव्य यह भी भांगा पाता है. क्यों कि जब चतुष्पदेशिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेश का अवगाहकर रहे उस में दो आकाश प्रदेश तो समश्रेणि अवगाह कर और एक आकाश प्रदेश विषमसमश्रेणि अवगाहकर रहे [०।००।०] इस में जो समश्रेणिसे दो आकाश प्रदेश अवगाहे वे एकेकी की अपेक्षा से चरिम है, और एक विषम श्रेणिसे रहा है वह अवक्तव्य है, १२ स्यात् एक चरिम बहुत अवक्तव्य यह भी भांगापावे. क्यों कि जब चार प्रमाणुओं दो आकाशप्रदेशतो [illegible] समश्रेणिसे अवगाहकर रहे और दो परमाणु विषमश्रेणिसे आकाशप्रदेश अवगाह कर रहे [illegible] इस में दो परमाणु जो समश्रेणि से रहे उनोने दो प्रदेश अवगाहे. इस लिये द्विप्रदेशिक स्कन्ध एक चरिम और दो परमाणुओं विषम श्रेणि से रहे वे अवक्तव्य. १३ चरिम बहुत और अवक्तव्य एक यह भी नहीं पाता है. १४ अचरिम बहुत अवक्तव्य भी बहुत यह भी नहीं पाता

सूत्र

नो अचरिमे, ३ सिय अवत्तव्वए, ४ नो चरिमाइं, ५ नो अचरिमाइं, ६ नो अवत्तव्वयाइं, ७ नो चरिमेय अचरिमेय, ८ नो चरिमेय अचरिमाइंच, ९ सिय चरिमाइं अचरिमेय, १० सिय चरिमाइंच अचरिमाइंच, ११ सिय चरिमेय अवत्तव्वएय, १२ सिय चरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १३ नो चरिमाइंच अवत्तव्वएय,

अर्थ

अहो गौतम ! चतुष्पदेशिक स्कन्ध में सात भांगे पाते हैं, सो कहते हैं—१ जब चतुष्पदेशिक स्कन्ध दो आकाश प्रदेश का अवगाह कर एकेक प्रदेश पर दो २ परमाणु समश्रेणि से रहे तब दो प्रदेशी अवगाह स्कन्ध को चरिम कहना. २ अचरिम नहीं कहना. क्यों कि द्विप्रदेशावगाही है ३ स्यात् अवक्तव्य है क्यों कि जब चारों प्रदेश एक आकाश प्रदेश अवगाह कर रहे तब अवक्तव्य कहे जावे. ४ बहुत वचन से चरिम नहीं,५ बहुत वचन से अचरिम नहीं. ६ बहुत वचन से अवक्तव्य नहीं. ७ एक चरिम और एक अचरिम यह भी द्विसंजोगी सातवा भांगा भी नहीं, ८ एक चरिम और बहुत अचरिम यह आठवा द्विसंजोगी भांगा भी नहीं, ९ स्यात् चरिम बहुत और अचरिम एक यह मिल जावे क्योंकि जब चतुष्पदेशिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेश का अवगाह कर [०॥०८॥०] समश्रेणिपने रहे वे आदि अंत के प्रदेश अवगाहे यह बहुत चरिम और मध्य का एक प्रदेश अवगाहे एक अचरिम. १० स्यात् दशवा भांगा चरिम भी

सूत्र

१४नो अचरिमाइं अवत्तव्वयाइंच, १५नो अचरिमेय अवत्तव्वएय, १६नो अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १७नो अचरिमाइंच,अवत्तव्वएय, १८नो अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच

अर्थ

बहुत अचरिम बहुत भी यह भी पाता है क्यों कि जब चारों परमाणु समश्रेणिसे चार आकाशप्रदेश[०|०|०|०] अवगाह कर रहे उस में आदि अन्त के दो प्रदेश अवगाहे वे बहुत चरिम, दो आकाश प्रदेश दो मध्य के परमाणु अवगाहकर रहे वह बहुत अचरिम, ११ स्यात् एक चरिम एक अवक्तव्य यह भी भांगा पाता है. क्यों कि जब चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेश का अवगाहकर रहे उस में दो आकाश प्रदेश को समश्रेणि अवगाह करे और एक आकाश प्रदेश विषमसमश्रेणि अवगाहकर रहे [०|००|०] इस में जो समश्रेणिसे दो आकाश प्रदेश अवगाहे वे एकेकी की अपेक्षा से चरिम है, और एक विषम श्रेणिसे रहा है वह अवक्तव्य है, १२ स्यात् एक चरिम बहुत अवक्तव्य यह भी भांगापावे. क्यों कि जब चार प्रमाणुओं दो आकाशप्रदेशको [०००] समश्रेणिसे अवगाहकर रहे और दो परमाणु विषमश्रेणिसे आकाशप्रदेश अवगाह कर रहे [०००] इस में दो परमाणु जो समश्रेणि से रहे उनोने दो प्रदेश अवगाहे. इस लिये द्वीप्रदेशिक स्कन्ध एक चरिम और दो परमाणुओं विषम श्रेणि से रहे वे अवक्तव्य. १३ चरिम बहुत और अवक्तव्य एक यह भी नहीं पाता है, १४ अचरिम बहुत अवक्तव्य भी बहुत यह भी नहीं पाता

सूत्र

१९ नो चरिमे य अचरिमे य, अवत्तव्वए य, २० नो चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च, २१ नो चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वए य, २२ नो चरिमे य अचरिमाइं अवत्तव्वयाइं च, २३ सिय चरिमाइं अचरिमे य, अचरिमे य अवत्त-

अर्थ

है, १५ अचरिम एक अवक्तव्य भी एक यह भी नहीं, १६ अचरिम एक अवक्तव्य बहुत यह भी नहीं, १७ अचरिम बहुत अवक्तव्य एक यह भी नहीं, १८ अचरिम, बहुत अवक्तव्य बहुत यह भी नहीं, १९ एक चरिम, एक अचरिम एक अवक्तव्य यह भी नहीं, २० एक चरिम, एक अचरिम बहुत अवक्तव्य यह भी नहीं, २१ चरिम का एक, अचरिम बहुत, अवक्तव्य एक यह भी नहीं, २२ चरिम एक, अचरिम बहुत अवक्तव्य बहुत यह भी नहीं बहुत चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य एक यह भांगा पाता है क्यों कि जब यह चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध आकाश के चार प्रदेश अवगाह कर रहे उस में तीन परमाणु तो तीन आकाश प्रदेश को विषम श्रेणिसे अवगाहकर रहे, एक परमाणु भी विषम श्रेणि में उन से अलग रहे ये तीन परमाणुओं जो समश्रेणि में रहे हैं वे आदि के और अन्त के परमाणु की अपेक्षा बहुत चरिम हैं, और एक मध्य में है वह अचरिम है और एक अलग एक आकाश प्रदेश अवगाह कर रहा है वह अवक्तव्य है. यों पहिला, तीसरा, नववा, दशवा, इग्यारवा, बारवा, और तेवीसवा ऐसे सात भांगे चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध में पाते हैं

वत्तव्वए सेसाभंगा पडिसेहेयव्वा॥ ९ ॥पंचपएसिएणं भंते खंधे पुच्छा?गोयमा!पंचपए सिए खंधे १ सिय चरिमे, २ नो अचरिमे, ३ सिय अवत्तव्वए, ४ णो चरिमाइं, ५ नोअचरिमाइं, ६ नो अवत्तव्वयाइं, ७ सिय चरिमेय अचरिमेय ८

बाकी-२-४-५-६-७-८-११-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२-२४-२५-२६-यह १९ भांग का निषेध करना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! पांच प्रदेशि स्कन्ध में कितने भांग पावे हैं ? अहो गौतम ! ११ भांग पावे हैं यथा-१ स्यात् चरम है. क्यों कि पांच प्रदेश में से दो परमाणु एक आकाश प्रदेश अवगाहकर रहे हैं और तीन एक आकाश प्रदेश अवगाहकर रहे यों पांचो दो आकाश प्रदेश का अवगाहा करने से एकेक की अपेक्षा एकेक चरम है, २ अचरिम नहीं है. ३ स्यात् अव्य क्तव्य है. क्यों कि पांचो एक ही आकाश प्रदेश का अवगाहाकर रहे तब चरम अचरमकी अपेक्षा रहित अवक्तव्य है, ४-६ तीनों बहुत वचनके भांगे भी नहीं पावे हैं,७स्यात एक चरम एक अचरम है. क्यों कि जब चार परमाणु चारों तरफ के आकाश प्रदेश का अवगाहकरे और एक मध्य का प्रदेश का अवगाह करे इस अपेक्षा से चारों अलग २ चारदिशा के चार चरम हुवे और मध्य का अचरम हुवा ऐसे ही खडी श्रेणि से तथा आडी श्रेणि से ग्रहणकरे तो भी होवे हैं, ८ चरम एक अचरिम बहुत भी नहीं पाता है, ९ स्यात् चरम बहुत अचरम एक यह भांगा पाता है क्यों कि जब पांच प्रदेशिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेशमय श्रेणि से अवगाहकर रहे तब में पहिले के दो परमाणु ... प्रदेश - एक

१९. नो चरिमेय अचरिमेय, अवत्तव्वएय, २० नो चरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच, २१ नो चरिमेय अचरिमाइंच अवत्तव्वएय, २२ नो चरिमेय अचरिमाइं अवत्तव्वयाइंच, २३ सिय चरिमाइं अचरिमेय, अचरिमेय अवत्त-

है, १५ अचरिम एक अवक्तव्य भी एक यह भी नहीं, १६ अचरिम एक अवक्तव्य बहुत यह भी नहीं, १७ अचरिम बहुत अवक्तव्य एक यह भी नहीं, १८ अचरिम, बहुत अवक्तव्य बहुत यह भी नहीं, १९ एक चरिम, एक अचरिम एक अवक्तव्य यह भी नहीं, २० एक चरिम, एक अचरिम बहुत अवक्तव्य यह भी नहीं, २१ चरिम एक, अचरिम बहुत, अवक्तव्य एक यह भी नहीं, २२ चरिम एक, अचरिम बहुत अवक्तव्य बहुत यह भी नहीं बहुत चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य एक यह भांगा पाता है क्यों कि जब यह चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध आकाश के चार प्रदेश अवगाह कर रहे उस में तीन परमाणु तो तीन आकाश प्रदेश को विषम श्रेणिसे अवगाहकर रहे, एक परमाणु भी विषम श्रेणि में उन से अलग रहे ये तीन परमाणुओं जो समश्रेणि से रहे हैं वे आदि के और अन्त के परमाणु की अपेक्षा बहुत चरिम हैं, और एक मध्य में है वह अचरिम है और एक अलग एक आकाश प्रदेश अवगाह कर रहा है वह अवक्तव्य है. यों पहिला, तीसरा, नववा, दशवा, इग्यारवा, बारवा, और तेवीसवा ऐसे सात भांगे चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध में पाते हैं

अवत्तव्वएय, २० नो चरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वयाइंय, २१ नो चरिमेय अचरिमाइंय अवत्तव्वएय, २२ नो चरिमेय अचरिमाइंच, अवत्तव्वयाइंच, २३ सिय चरिमाइंच अचरिमेय अवत्तव्वएय २४ सिय चरिमाइंच अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच २५ सियचरिमाइंय अचरिमाइंच अवत्तव्वएय, २६ नो चरिमाइंच अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच

अवगाह कर समश्रेणि में रहे, और एक विषम श्रेणि से रहे इस में चार परमाणु ने दो आकाश प्रदेश अवगाह किया वहां द्विप्रदेशी स्कन्ध वह एक चरिम • और एक परमाणु विषम श्रेणिसे रहा वह अवक्तव्य, १२ स्यात् एक चरिम बहुत अवक्तव्य भी भांगा पाता है क्यों कि जिस वक्त पांच प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदेश अवगाह कर रहे उस में तीन परमाणु तो समश्रेणि से दो आकाश प्रदेश को अवगाह कर रहे और दो विषमश्रेणि से दो आकाश प्रदेश को अवगाह कर रहे उस में समश्रेणिपने रहे वह द्विप्रदेशिक स्कन्ध चरम और तीन विषम श्रेणिसे रहे अलग २ आकाश प्रदेश को अवगाहकर रहे वे बहुत अवक्तव्य, १३ स्यात् बहुत चरम एक अवक्तव्य यह भी भांगा पाता है. क्यों कि जब पांच प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदेश को अवगाहकर रहे उस में दो परमाणु

सूत्र

नो चरिमेय अचरिमाइंच ९ सिय चरिमाइंच अचरिमेय, १० सिय चरिमाइंच अचरिमाइंच, ११ सिय चरिमेय अवत्तव्वएय, १२ सिय चरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १३ सिय चरिमाइंच अवत्तव्वएय, १४ नो चरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच, १५ नो अचरिमेय अवत्तव्वएय, १६ नो अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १७ नो अचरिमाइं अवत्तव्वएय, १८ नो अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच, १९ नो चरिमेय अचरिमेय,

अर्थ

मध्य के प्रदेशपर और दो अंतिम प्रदेशपर रहे इस प्रकार दोनों तरफ के दो दो परमाणु बहुत चरम और मध्य का एक परमाणु अचरम, १० स्यात् चरम बहुत अचरम बहुत क्यों कि जब पांच परमाणु स्कन्ध चार आकाश प्रदेश का अवगाहकर रहे उस में तीन परमाणु तो तीन प्रदेशी अलग २ अवगाहे और दो परमाणु एक २ प्रदेश अवगाहे इस में आदि एक प्रदेशी चरम और अंत के प्रदेश के दो परमाणु भी चरम इसलिये चरम बहुत और मध्यवर्ती दो परमाणु वे अचरिम भी बहुत. ११ स्यात् एक चरिम एक अवक्तव्य भी है क्यों कि जब पांच प्रदेशिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहे इस में दो परमाणु तो दो आकाश प्रदेश का

सूत्र

माइंच अवत्तव्वएय, १४ सिय चरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच १५ नो अचरिमेय अवत्तव्वएय, १६ नो अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १७ नो अचरिमाइंच अवत्तव्वएय, १८ नो अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच, १९ सियचरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वएय २० नो चरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच, २१ नो चरिमेय अचरिमाइंच अवत्तव्व-

अर्थ

प्रदेशवर्ती अचरिम, और विषम श्रेणिमे एकेक प्रदेश अवगाहकर रहे वे अवक्तव्य २४ स्यात् चरिम के बहुत अचरिम को एक और अवक्तव्य बहुत यह भी भांगा है क्यों कि पांच प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदेश का अवगाहकर रहे उसमें तीन परमाणु तीन आकाश प्रदेशपर समश्रेणिपने रहे हैं विषम श्रेणि से रहे [illegible] इस में प्रथम आकाश प्रदेश पर रहे हैं उस में आदि अन्त के दो प्रदेश अन्तवर्ती वे चरिम बहुत, मध्यवर्ती एक प्रदेश यह अचरिम, विषम श्रेणी के दोनों प्रदेशों अवक्तव्य बहुत २५ स्यात् चरिम भी बहुत अचरिम भी बहुत अवक्तव्य एक यह भी भांगा पाता है. क्यों कि पांच प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदेश अवगाहे उस में चार परमाणु तो समश्रेणि से रहे और एक विषम रहा इन चार आकाश प्रदेश पर रहे आदि हुवे तीन है मध्य के दो और विषम श्रेणिमे रहा एकपरमाणु अवक्तव्य और

सूत्र

॥ ५० ॥ छप्पएसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा ? गोयमा ! छप्पएसिएणं खंधे-१ सिय चरिमे, २ नो अचरिमे, ३ सिय अवत्तव्वए ४ नो चरिमाइं ५ नो अचरिमाइं. ६ नो अवत्तव्वयाइं, ७ सिय चरिमेय अचरिमेय, ८ सिय चरिमेय अचरिमाइंच, ९ सिय चरिमाइंच अचरिमेय, १० सिय चरिमाइंच अचरिमाइंच ११ सिय चरिमेय अवत्तव्वएय १२ सिय चरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १३ सियचरि-

अर्थ

आकाशप्रदेश समश्रेणिसे अवगाहकर रहे और दो नीचे के परमाणु भी दो आकाशप्रदेश समश्रेणिसे अवगाहकर रहे एक मध्य की श्रेणि के अन्त में रहे इसमें दो ऊपर के यह चार प्रदेश चरिम है और एक मध्य का अवक्तव्य है. १४ चउदवा १५ पंदरवा, १६ सोलहवा, १७ सतरवा १८ अठारवा १९ उन्नीसवा, २० वीसवा, २१ वा, और २२ वा यह ९ भांगे नहीं पाते हैं, २३ स्यात् बहुत चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य यह भांगापाता है क्योंकि जब पांच प्रदेशिक स्कन्ध चार आकाश प्रदेश अवगाहकर रहे उस में तीन आकाश प्रदेश समश्रेणि से अवगाह प्रथम एक परमाणु मध्य के दो परमाणु विषम श्रेणि से रहे रहे दो प्रदेश तो चरिम है इन तीनआकाश प्रदेश में आदि का और अंतका प्रदेशावगाही बहुत वचन से मध्य

३ सिय अवत्तव्वए, ४ नो चरिमाइं, ५ नो अचरिमाइं, ६ नो अवत्तव्वयाइं, ७ सियचरिमेय अचरिमेय, ८ सियचरिमेय अचरिमाइंच, ९ सियचरिमाइंच अचरिमेय, १० सियचरिमाइंच अचरिमाइंच, ११ सियचरिमेय अवत्तव्वएय, १२ सियचरिमेय अवत्त-

कर रहे उस में एकेक आकाश प्रदेशपर दो दो परमाणु इस में आदि के अंत के दो दो परमाणु चरिम और मध्य के दो परमाणु अचरिम, १० स्यात् चरिम भी बहुत अचरिम भी बहुत यह भी है क्यों कि छ प्रदेशिक स्कन्ध चार आकाश प्रदेश को अवगाहे इस में दो परमाणु प्रथम प्रदेशवर्ती वे चरिम और एक परमाणु अंत प्रदेशवर्ती वह भी चरिम और परमाणु मध्य में वे अचरिम और तीसरे आकाश पर एक परमाणु वह भी अचरिम यों दोनों ही बहुत, ११ स्यात् एक अवक्तव्य यह भी है क्यों कि छ प्रदेशिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेशपर रहे इस में दो परमाणु आदि के प्रदेशपर रहे दो तीसरे आकाश प्रदेशपर विषम श्रेणि से रहे चार परमाणु समश्रेणि से रहे दो प्रदेश अवगाहे अंदर के दो परमाणु का एक स्कन्ध वह एक चरिम और दो विषम श्रेणि से रहे वे एक अवक्तव्य १२ स्यात् एक चरिम

३ सिय अवत्तव्वए, ४ नो चरिमाइं, ५ नो अचरिमाइं, ६ नो अवत्तव्वयाइं, ७ सियचरिमेय अचरिमेय, ८ सियचरिमेय अचरिमाइंच, ९ सियचरिमाइंच अचरिमेय, १० सियचरिमाइंच अचरिमाइंच, ११ सियचरिमेय अवत्तव्वएय, १२ सियचरिमेय अवत्त-

कर रहे उस में एकेक आकाश प्रदेशपर दो दो परमाणु इस में आदि के अंत के दो दो परमाणु चरिम और मध्य के दो परमाणु अचरिम; १० स्यात् चरिम भी बहुत अचरिम भी बहुत यह भी है क्यों कि छ प्रदेशिक स्कन्ध चार आकाश प्रदेश को अवगाहे इस में दो परमाणु प्रथम प्रदेशवर्ती वे चरिम और एक परमाणु अंत प्रदेशावर्ती वह भी चरिम और परमाणु मध्य में वे अचरिम और तीसरे आकाश पर एक परमाणु वह भी अचरिम यों दोनों ही बहुत, ११ स्यात् एक अवक्तव्य यह भी है क्यों कि छ प्रदेशिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेशपर रहे इस में दो परमाणु आदि के प्रदेशपर रहे दो तीसरे आकाश प्रदेशपर विषम श्रेणि से रहे चार परमाणु समश्रेणि से रहे दो प्रदेश अवगाहे अंदर के दो परमाणु का एक स्कन्ध वह एक चरिम और दो विषम श्रेणि से रहे वे एक अवक्तव्य १२ स्यात् एक चरिम

द्वयाइंच १३ सिय चरिमाइंच अवत्तव्वएय, १४ सिय चरिमाइंय अवत्तव्वयाइंच, १५

बहुत अवक्तव्य यह भी है क्योंकि जब छप्रदेशिकस्कन्ध चार आकाश प्रदेश अवगाह कर रहे उस में दो परमाणु मध्य प्रदेशमें दो समश्रेणी और दो विषम श्रेणी इस में चार परमाणु दो आकाश प्रदेश अवगाहे उसमें एक चरिम बीचमें श्रेणिपने दो प्रदेश अवगाहे ये बहुत अवक्तव्य

१३ स्यात् बहुत चरिम एक अवक्तव्य यह भी आकाश प्रदेश अवगाहे उसमें दो परमाणु ऊपर दो प्रदेश की श्रेणिपने, दो परमाणु नीचे समश्रेणिपने, इस में दो प्रदेश अवगाही द्विप्रदेशिक दो आकाश प्रदेश मध्य भाग में विषमश्रेणिपने, स्कन्ध ऊपर के, दो परमाणु का नीचे का स्कन्ध, यह बहुत प्रदेश अवगाही और दो प्रदेश एकेक प्रदेश अवगाही वह अवक्तव्य.

१४ स्यात् चरिम भी बहुत अवक्तव्य भी बहुत यह भी है क्यों कि छ परमाणु का स्कन्ध छ आकाश प्रदेश अवगाहे उस में दो परमाणु ऊपर के आकाश प्रदेश समश्रेणि से अवगाहे दो परमाणु नीचे के दो प्रदेश पर समश्रेणि रहे हैं फिर एक ऊपर की श्रेणि में और एक नीचे की श्रेणि में रहे इस में एक ऊपर का चरिम एक नीचे का चरिम और शेष अवक्तव्य.

१५ पन्द्रहवा, सोलहवा, सतरहवा, अठारहवा भांगा नहीं पाता है, १९ स्यात् चरिम एक, अचरिम एक, अवक्तव्य एक यह पाता है क्यों कि जब छ प्रदेशिक स्कन्ध

नो अचरिमेय अवत्तव्वएय, १६नो अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १७नोअचरिमाइंच अव.त.

छ आकाश प्रदेश अवगाह कर रहे इस परमाणे जानना. बीसवा एकीसवा बावीसवा नहीं पाता है,

२३ स्यात् चरिम बहुत अचरिम एक अवक्तव्य एक यह है क्यों कि छ प्रदेशिक स्कन्ध चार आकाश प्रदेश अवगाहे इस में दो २ परमाणु तो दो आकाश प्रदेशपर समश्रेणि से रहे तीसरे चौथे आकाश प्रदेश पर एकेक परमाणु रहे यह विषम श्रेणिसे इस में प्रथम आकाश प्रदेशपर अवगाहे वे दो परमाणु चरिम बहुत, तीसरे प्रदेश पर रहे यह अचरिम एक, दूसरे आकाश प्रदेश विषम श्रेणि से रहे वे अवक्तव्य,

२४ स्यात् चरिम बहुत अचरिम एक अवक्तव्य बहुत यह भी है क्यों कि छ प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहा उस में तीन आकाश प्रदेश तो विषम श्रेणी से अवगाह आदि के दो आकाश समश्रेणि मे अवगाहे इस में आदि का अन्त का प्रदेश अवगाहे वह चरिम है मध्य का अचरिम, विषम श्रेणि से तीनों रहे वे अवक्तव्य,

२५ स्यात् चरिम बहुत अचरिम भी बहुत और अवक्तव्य एक यह भी भांगा पाता है क्योंकि जब छ प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदेशका अवगाह

व्वयाइंच १३ सिय चरिमाइंच अवत्तव्वएय, १४ सिय चरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच, १५

बहुत अवक्तव्य यह भी है क्योंकि जब छप्रदेशिकस्कन्ध चार आकाश प्रदेश अवगाह कर रहे उस में दो परमाणु मध्य प्रदेशमें दो समश्रेणी और दो विषम श्रेणी इस में चार परमाणु दो आकाश प्रदेश अवगाहे उसमें एक चरिम बीचमें श्रेणिपने दो प्रदेश अवगाहे ये बहुत अवक्तव्य

१३ स्यात् बहुत चरिम एक अवक्तव्य यह भी आकाश प्रदेश अवगाहे उसमें दो परमाणु ऊपर दो प्रदेश की श्रेणिपने, दो परमाणु नीचे समश्रेणिपने, इस में दो प्रदेश अवगाही द्विप्रदेशिक दो आकाश प्रदेश मध्य भाग में विषमश्रेणिपने, स्कन्ध ऊपर के, दो परमाणु का नीचे का स्कन्ध, यह बहुत प्रदेश अवगाही और दो प्रदेश एकेक प्रदेश अवगाही वह अवक्तव्य.

१४ स्यात् चरिम भी बहुत अवक्तव्य भी बहुत यह भी है क्यों कि छ परमाणु का स्कन्ध छ आकाश प्रदेश अवगाहे उस में दो परमाणु ऊपर के आकाश प्रदेश समश्रेणि से अवगाहे दो परमाणु नीचे के दो प्रदेश पर समश्रेणि रहे हैं फिर एक ऊपर की श्रेणि में और एक नीचे की श्रेणि में रहे इस में एक ऊपर का चरिम एक नीचे का चरिम और शेष अवक्तव्य. १५ पन्द्रहवा, सोलहवा, सत्तरहवा, अठारहवा भांगा नहीं पाता है, १९ स्यात् चरिम एक, अचरिम एक अवक्तव्य एक यह पाता है क्यों कि जब छ प्रदेशिक स्कन्ध

सूत्र

अर्थ

अचरिमपद भी पावे, ८ चरिम एक अचरिम बहुतपद भीपावे ९ स्यात् चरिमबहुत अचरिम एक १० स्यात् चरिमभी बहुत अचरिमभी बहुत ११ स्यात् एक चरिम एक अवक्तव्य १२ स्यात् एक चरिम बहुत अवक्तव्य १३ स्यात् चरिमबहुत अवक्तव्य एक १४ स्यात् चरिमभी बहुत अवक्तव्यभी बहुत १५ एकचरिम एक अवक्तव्य, पन्दरवा सोलवा सतरवा अठारवा यह चार भांगे नहीं पाते है १९ चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य बहुत २० स्यात् चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य बहुत यह भी है २१ चरिम एक अचरिम बहुत अवक्तव्य एक

चरिमाइंच अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच ॥ संखेज्ज पएसिए खंधे, असंखेज्जपएसिए अणंतपएसिएय खंधे, जहेव अट्ठपएसिए तहेव पत्तेय २ भाणियव्वा ॥ १३ ॥ (गाहा) परमाणुम्मियतइओ, पढमतइओअ होइ दुपएसे ॥ पढमो तइओ नवमो, एक्कारसमोअ तिपएसे ॥ १ ॥ पढमो तइओनवमो, दसमो, एक्कार बारसमो ॥ भंगा चउप्पएसे, तेवीसइमोय बोधव्वो ॥ २ ॥ पढमोय तइओसत्तम नवम दस एक्कारस बारतेरसमो ॥ तेवीसं चउव्वीसम, पणवीसइमोय पंचमए ॥ ३ ॥ बिचउत्थ

यों १-३-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१९-२०-२१-२२-२३-२४-२५ और २६ सब १८ भांगे पाते हैं बाकी २-४-५-६-१५-१६-१७-१८ यों ८ नहीं पाते हैं. यों जिस प्रकार आठ प्रदेशिक स्कन्ध के आठरे भांग होते हैं, तैसे ही संख्यात प्रदेशिक में असंख्यात प्रदेशिक में और अनंत प्रदेशिक में आठ प्रदेशिक के जैसे ही १८ भांगे पाते हैं, बाकी के आठ भांगे शून्य हैं ॥ १३ ॥ अब उक्त कथन को संक्षेप में कहते हैं—परमाणु पुद्गल में एक तीसरा भांगा पाता है, द्विप्रदेशिक स्कन्ध में प्रथम और तीसरा भांगा पाता है, त्रिप्रदेशिक स्कन्ध में पहिला, तीसरा, नववा, दशवा, इग्यारहवा और बारहवा यों ६ भांग पाते हैं ॥ १ ॥ चार प्रदेशिक स्कन्ध में सात भांगे पाते हैं. छ तो उक्त और तेवीसवा ॥ २ ॥ पांच

१५ मो अपरिमिय अवत्तव्वय, १६ मो अपरिमिय अवत्तव्वयाइं, १७ मो अपरिमियाइं अवत्तव्वय, १८ मो अपरिमियाइं अवत्तव्वयाइं १९ सियपरिमिय अपरिमिय अवत्तव्वय, २० सियपरिमिय अपरिमिय अवत्तव्वयाइं २१ सियपरिमिय अपरिमियाइं अवत्तव्वय, २२ सिय परिमिय अपरिमियाइं अवत्तव्वयाइं, २३ सिय परिमियाइं अपरिमिय अवत्तव्वय, २४ सिय परिमियाइं अपरिमिय अवत्तव्वयाइं, २५ सिय परिमियाइं अपरिमियाइं अवत्तव्वय, २६ सिय

अवत्त. एक. [illegible] २३ परिम बहुत, अपरिमएक. [illegible] अवत्तव्य एक. २४ परिम [illegible] बहुत अपरिम एक [illegible] अवत्तव्य बहुत [illegible]

२५ स्यात् परिम [illegible] २६ स्यात् परिम भी बहुत, अपरिम भी बहुत, और अवत्तव्य भी बहुत, अपरिमबहुत [illegible] बहुत, यह भी भांगा पाता है क्यों कि आठ प्रदेशिक स्कन्धने और अवत्तव्य एक. [illegible] आदि अनन्त आकाशबहुत प्रदेशोंकर अवगाह्या इसलिये बहुत परिमि मण्डल बहुत भाण्डे हैं इसलिये बहुत अपरिम है और दोनु ही दो २ आकाश प्रदेश रहे इसलिये बहुत अवत्तव्य है

सूत्र

अणंता ॥ एवं जाव आयए ॥ परिमंडलेणं भंते ! संठाणे किं संखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसिए, अणंत पएसिए ? गोयमा ! सिय संखेज्जपएसिए, सिय असंखेज्ज पएसिए, सिय अणंत पएसिए ॥ एवं जाव आयए॥ परिमंडलेणं भंते! संठाणे किं संखेज्ज पएसिए असंखेज्ज पएसिए अणंत पएसिए ? गोयमा ! सिय संखेज्ज पए-सिए सिय असंखेज्ज पएसिए सिय अणंत पएसिए एवं जाव आयए परिमंडलेणं भंते! संठाणे संखिज्ज पएसिए संखेज्ज पएसोगाढे, असंखेज्ज पएसोगाढे, अणंत पएसोगाढे ?

अर्थ

के कहे हैं तद्यथा—१ परिमंडल (गोल-चूडी जैसा) २ वर्तुल (गोल-लड्डू जैसा) ३ त्रिकोन-सिंघाडे जैसा, ४ चतुष्कोन-चौकी जैसा, और आयत, लंबी-लकडी जैसा. अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान क्या संख्यात है कि असंख्यात है कि अनंत है ! अहो गौतम ! संख्यात असंख्यात नहीं है परंतु अनंत है. ऐसे यावत् आयत संस्थान पर्यंत अनंत प्रदेशिक का कहना. अब अनंत द्रव्यात्मक है. अब प्रदेश आश्रिय पूछते हैं. अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान क्या संख्यात प्रदेशी है कि असंख्यात प्रदेशी है कि अनंत प्रदेशी है ? अहो गौतम ! कदाचित् संख्यात प्रदेशी है, कदाचित् असंख्यात प्रदेशी है कदाचित् अनंत प्रदेशी भी है. ऐसे ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना. अब अवगाहना आश्रिय पूछते हैं. अहो भगवन् ! संख्यात प्रदेशिक परिमंडल संस्थान क्या संख्यात प्रदेशावगाही है कि असंख्यात प्रदेशावगाही है कि अनंत प्रदेश अवगाही है ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशावगाही है

सूत्र

पंच छट्ठं, पन्नरस सोलंच सत्तरट्ठारं ॥ वीसेकवीस बावीसगं च वज्जेज छट्ठांमे ॥ ४ ॥ त्रिचउत्थं पंचछट्ठं पण्णरससोलंच सत्तरट्ठारं ॥ वावीसइंमविहूणा ॥ सत्तपए संमिखंधमि ॥ ५ ॥ विचउत्थं पंचछट्ठं, पन्नरस सोलंच सत्तरट्ठार ॥ एएवज्जिय भंगा सेसा सेसेसु खंधेसु ॥६ ॥ १४ ॥ कइणं भंते ! संठाणा पण्णत्ता ? गोयमा! पंचसठाणा पण्णत्ता तंजहा परिमंडले, वट्टे, तंसे, चउरंसे, आयतेय ॥ परिमंडलाणं भंते! संठाणा किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता? गोयमा ! णो संखेज्जा,णो असंखेज्जा,

अर्थ

प्रदेशिक में ११ भांगे यथा-१-३-७-९-१०-११-१२-१३-२३-२४-२५ यह पाते हैं ॥ ३ ॥ छ प्रदेशिक स्कन्ध में २-४-५-६-१५-१६-१७-१८-२०-२१-२२ यह इग्यारह छोड कर बाकी १५ भांग पाते हैं ॥४॥ सात प्रदेशिक स्कन्ध में २-४-५-६-१५-१६-१७-१८-२५ यह छोड कर बाकी के सतरे भांगे पाते हैं॥५॥ दूसरा, चौथा पांचवा पन्नरहवा, सोलहवा यह आठ भांगे छोड कर शेष १८ भांगे आठ प्रदेशिक स्कन्ध में पाते हैं ॥ ६ ॥ १४ ॥+ अहो भगवन् ! संस्थान कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच प्रकार

+ असंख्यात प्रदेशात्मक लोक में अनंत प्रदेशिक स्कन्ध किस तरह रहता है ? जिस प्रकार एक कमरे में अनेक दीपक लगाने से उन का प्रकाश अलग २ होने पर भी एकेक में समावेश होता है तैसे ही पुद्गलों का भी परस्पर समावेश होजाता है.

अणाएणुिए असंखेज्ज पएसोगाढे जहा संखेज्ज पएसोगाढे, एवं जाव आयंत ॥ परिमंडलस्सणं भंते ! संठाणस्स संखिज्ज पएसियस्स संखेज्ज पएसोगाढस्स अचरिमस्सय चरिमाणय चरिमंतपएसाणय, अचरिमंत पएसाणय, दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए, दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स संखिज्ज पएसियस्स संखिज्ज पएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं संखेज्जगुणाइं, अचरिमं च चरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं ॥ पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा परिमंडलस्स संठाणस्स संखेज्ज

संख्यात प्रदेशात्मक संख्यात प्रदेशावगाही अचरिम चरिम के प्रदेशिक और अचरिमान्त प्रदेशिक इनमें द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने, तथा द्रव्य प्रदेशार्थपने कौन किस से थोडे हैं ज्यादे हैं तुल्य हैं विशेष हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे परिमंडल संस्थान संख्यात प्रदेशिक संख्यात प्रदेशावगाढ द्रव्यार्थपने एक अचरिम खण्ड, उस से चरिम बहुवचन होने से संख्यात गुने क्यों कि संख्यात प्रदेशिक हैं, उस से अचरिम और चरिम दोनों मिलकर विशेषाधिक. अब प्रदेशार्थपने—सब से थोडे परिमंडल संस्थान संख्यात प्रदेशिक संख्यात प्रदेशावगाढ के चरिम प्रदेश, उस से अचरिमान्त प्रदेश संख्यात गुने, चरिमंत प्रदेश

सूत्र

गोयमा ! संखेज्ज पएसोगाढे, णो असंखेज्ज पएसोगाढे, णो अणंत पएसोगाढ ॥ एवं जाव आयए ॥ परिमंडलेणं भंते ! संठाणे असंखेज्ज पएसिए किं संखेज्ज पएसोगाढे, असंखेज्ज पएसोगाढे, अणंत पएसोगाढे ? गोयमा ! सिय संखेज्ज पएसोगाढे सिय असंखेज्ज पएसोगाढे नो अणंत पएसोगाढे ॥ एवं जाव आयए ॥ परिमंडलेणं भंते संठाणे अणतपएसिए किं संखेज्ज पएसोगाढे, असंखेज्ज पएसोगाढे, अणंत पएसोगाढे ? गोयमा ! सिय संखेज्ज पएसोगाढे, सियं असंखेज्ज पएसोगाढे, णो अणंत पएसोगाढे ॥ एवं जाव आयए ॥ १५ ॥ परिमंडलेणं भंते! संठाणे संखेज्ज

अर्थ

किन्तु असंख्यात और अनंत प्रदेशावगाही नहीं है। ऐसे ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना ॥ अहो भगवन् ! असंख्यात प्रदेशिक परिमंडल संस्थान क्या संख्यात प्रदेश अवगाही है कि असंख्यात प्रदेशावगाही है कि अनंत प्रदेशावगाही है ? अहो गौतम ! कदाचित् संख्यात प्रदेश अवगाही भी है, कदाचित असंख्यात प्रदेशावगाही भी है परंतु अनंत प्रदेशावगाही नहीं है. ऐसे ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! अनंत प्रदेशी परिमंडल संस्थान क्या संख्यात प्रदेशावगाही है कि असंख्यात प्रदेशावगाही है कि अनंत प्रदेशावगाही है ? अहो गौतम ! कदाचित् संख्यात प्रदेश अवगाही भी है कदाचित असंख्यात प्रदेशावगाही भी है परंतु अनंत प्रदेशावगाही नहीं है क्यों कि लोक असंख्यात प्रदेशात्मक ही है ऐसे ही यावत आयत संस्थान पर्यंत कहना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! ...

सूत्र

चरिमाणय चरिमंतपएसाणय अचरिमंतपएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं संखेज्जगुणाइं, अचरिमंच चरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं ॥ पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा परिमंडलस्स संठाणस्स असंखिज्ज पएसियस्स संखेज्ज पएसोगाढस्स चरिमंत पएसा अचरिमंत पएसा संखेज्जगुणा, चरिमंत पएसाय अचरिमंत पएसाय दोवि विसेसाहिया ॥ दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्ज पएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे

अर्थ

चरिम द्रव्य (बहु वचन) चरिमांत प्रदेश द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने तथा द्रव्यार्थप्रदेशार्थपने कौन २ से अल्प बहुत तुल्य विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे परिमंडल संस्थान के असंख्यात प्रदेशिक संख्यात प्रदेशावगाढ के द्रव्यार्थपने एक अचरिम, उस से अनेक चरिम संख्यातगुना, और अचरिम चरिम दोनों विशेषाधिक, प्रदेशार्थपने. सब से थोडे परिमंडल संस्थान असंख्यात प्रदेशिक, संख्यात प्रदेशावगाही चरिमान्त प्रदेश अचरिमांत संख्यातगुने और चरिमान्त प्रदेश अचरिमान्त दोनों विशेषाधिक. द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने. सब से थोडे परिमंडल संस्थान असंख्यात प्रदेशिक संख्यात प्रदेश अवगाही के द्रव्यार्थपने

सूत्र

अचरिमंत पएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! जहा संखेज्ज पएसियस्स संखेज्ज पएसोगाढस्स नवरं संकमेणं अणंतगुणा, एवं जाव आयए ॥ परिमंडलस्सणं भंते ! संठाणस्स अणंत पएसियस्स असंखेज्ज पएसोगाढस्स अचरिमंस्सय चरिमाणय चरिमंत पएसाणय, अचरिमंत पएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! जहा रयणप्पभाए णवरं संकमेणं अणंतगुणा॥एवं जाव आयए॥ २१॥ जीवेणं भंते! गइचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे? गोयमा! सिय अचरिमे सिय अचरिमे एवं निरंतरं जाव विमाणिया ॥ नेरइयाणं भंते !

अर्थ

संख्यात प्रदेशिक संख्यात प्रदेशावगाही का कहा वैसा इस का भी कहना परंतु उस में इतना विशेष अल्पा बहुत में अनंत गुना कहना, ऐसे ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना. अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान अनंत प्रदेशिक असंख्यात प्रदेशावगाही अचरिमादि चारों में कौन २ अल्प ज्यादा तुल्य विशेषाधिक हैं? अहो गौतम ! जैसा रत्नप्रभाका कहा वैसा ही यहां भी कहना परंतु उसमें इतना विशेष संक्रमण के स्थान अनंत गुना कहना. यों यावत् आयत पर्यंत कहना ॥ इति ॥ २१ ॥ अब जीवादि के चरिमाचरिम का पूछते हैं ॥ अहो भगवन् ! जीव गति पर्याय आश्रिय क्या चरिम है अर्थात् उस गति में

सूत्र

निरंतरं जाव वेमाणिया॥ २७ ॥ नेरइएणं भंते ! भावचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते ! भाव चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ॥ २८ ॥ नेरइएणं भंते ! वण्ण चरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते! वण्ण चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एव निरंतरं जाव वेमाणिए ॥ नेरइएणं भंते! गंध चरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते ! गंध चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरि-

अर्थ

दोनों प्रकार के हैं. यों वैमानिक तक करना ॥ २७ ॥ भाव द्वार अहो भगवन् ! नेरिये भाव आश्रिय चरिम है कि अचरिम है ? अहो गौतम ! दोनों प्रकार के हैं. यों यावत् वैमानिक पर्यन्त करना. अहो भगवन् ! बहुत नेरिये भाव (वर्णादि पर्याय) आश्रिय चरिम हैं कि अचरिम हैं ? अहो गौतम ! दोनों प्रकार के हैं यों वैमानिक तक करना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! नेरिये वर्ण आश्रिय चरिम है कि अचरिम है ? अहो गौतम ! चरिम भी है [illegible]

सूत्र

गइचरिमेण ... ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं निरन्तरं जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते ! गइचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ॥ २२ ॥ नेरइएणं भंते ! ठिई चरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं निरन्तरं जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते ! ठिई चरिमेणं किं चरिमा

अर्थ

और नहीं आवे, या अचरिम है अर्थात् पीछा उस में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! कदाचित् चरिम है क्यों कि मुक्त में जाते हैं और कदाचित् अचरिम भी है क्यों कि फिर भी उसगति में आते हैं. यों निरंतर वैमानिक पर्यंत चौवीस ही दंडक का प्रश्नोत्तर कहना. अब बहुत जीवों आश्रिय पूछते हैं-अहो भगवन् ! बहुत जीवों गति के चरिम है कि अचरिम है ? अहो गौतम ! बहुत जीवों चरिम भी है और बहुत जीवों अचरिम भी है. अहो भगवन् ! नरक के जीवों चरिम है कि अचरिम है ? अहो गौतम ! चरिम भी है अचरिम भी है ऐसे ही यावत् वैमानिक पर्यंत कहना ॥२२॥ दूसरा स्थितिद्वार-अहो भगवन् ! नरक के जीवों स्थिति आश्रिय चरिम है कि अचरिम है. अहो गौतम ! कितनेक चरिम है अर्थात् पुनः नरक की स्थिति को प्राप्त नहीं होते हैं. और कितनेक अचरिम भी है अर्थात् पुनः नरक की स्थिति को प्राप्त होते हैं. यों निरंतर वैमानिक पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! बहुत नरक के नेरियों चरिम हैं ...

रस चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिया॥ नेरइयाणं भंते! फास चरिमेणं किं चरिमे अचरिमे? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते ! फास चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ॥ संगहणि गाहा—गइ ठिइ भवेअभासा, आणापाण चरिमय बोधव्वे॥आहार भाव चरिमे,वण्ण गंधरस फासेय ॥ इति पण्णवणाए भगवईए दसम चरिम पय समत्त ॥ १० ॥

स्पर्श आश्रिय चरिम भी है और अचरिम भी हैं. अब इन ११ द्वार के नाम संग्रहणी गाथा कर कहते हैं. १ गतिद्वार, २ स्थितिद्वार, ३ भवद्वार, ४ भाषाद्वार, ५ श्वासोश्वास द्वार, ६ आहारद्वार, ७ भावद्वार, ... रसद्वार, और ११ स्पर्श द्वार. यह चौवीस ही दंडक पर एक जीव आश्रिय ... और आश्रिय, यों ४८ सूत्र कहे हैं. इति दशवे चरिम पद ...

सूत्र

नेरइयाणं भंते ! रस चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिया॥नेरइयाणं भंते! फास चरिमेणंकिं चरिमे अचरिमे? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते ! फास चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ॥ संगहणि गाहा—गइ ठिइ भवेअभासा, आणापाण चरिमय बोधव्वे॥आहार भाव चरिमे,वण्ण गंधरस फासेय॥इति पण्णवणाए भगवईए दसम चरिम पय सम्मत्त ॥ १० ॥ :-:

अर्थ

स्पर्श आश्रिय चरिम भी है और अचरिम भी है. अब इन ११ द्वार के नाम संग्रहणी गाथा कर कहते हैं. १ गतिद्वार, २ स्थितिद्वार, ३ भवद्वार, ४ भाषाद्वार, ५ श्वासोश्वास द्वार, ६ आहारद्वार, ७ भाषाद्वार, ८ वर्णद्वार ९ गंधद्वार, १० रसद्वार, और ११ स्पर्श द्वार. यह चौवीस ही दंडक पर एक जीव आश्रिय और अनेक जीव आश्रिय, यों ४८ सूत्र कहे हैं इति दशमं चरिम पद समाप्त ॥ १० ॥

॥ एकादश भाषा पदम्. ॥

से णूणं भंते! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अह मण्णामिति ओहारिणी भासा, अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमिति ओहारिणी भासा ? हंता गोयमा ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अहमण्णामिति ओहारिणी भासा, अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा,तह मण्णामिति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ॥ १ ॥ ओहारिणीणं भंते! भासा, किं सच्चा मोसा सच्चामोसा, असच्चामोसा?

अब ग्यारहवे पद में भाषा का वर्णन करते हैं. अहो भगवन् ! निश्चय करके मैं मानता हूं कि अवधारणी भाषा है, मैं चिंतवता हूं कि अवधारणी भाषा है, अवबोधार्थभूता अवधारणी भाषा मैं विशेष कर मानता हूं, मैं विशेषकर चिंतवता हूं, तैसे मानता हूं कि अवधारिणी भाषा और चिंतवन करता हूं कि अवधारणी भाषा है ? हां गौतम ! तू मानता है ऐसी अवधारिणी भाषा है. तू चिंतवता है ऐसी अवधारणी भाषा है, विशेष मानता है कि अवधारणी भाषा है, विशेष चिंतवन करता है कि अवधारणी भाषा है, तैसे मानता है कि अवधारणी भाषा है तैसे चिंतवन करता है कि अवधारणी भाषा है ॥ १ ॥ अहो भगवन ! अवबोधभूता अवधारिणी भाषा क्या सत्य है, असत्य है, [illegible]

सियसचा, सियमोसा, सियसचामोसा, सिय असचामोसा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ ओहारिणीणं भासा सिय सचा सिय मोसा सियसचा-मोसा सिय असचामोसा ? गोयमा ! आराहणीसचा, विराहणी मोसा, आराहणी विराहणी सचामोसा, जेणेव आराहणी तेणेव विराहणी, तेणेव अराहणविराहणी असचामोसा णाम सा चउत्थी भासा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुचइ ओहारिणीणं

मृषा (व्यवहार) भाषा है ? अहो गौतम ! अवबोध रूपा अवधारिणी भाषा स्यात् सत्य है, स्यात् असत्य है, स्यात् सत्यमृषा है व स्यात् असत्यमृषा है. अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा है कि अवधारणी भाषा स्यात् सत्य, स्यात् असत्य, स्यात् सत्यमृषा व स्यात् असत्यमृषा है ? अहो गौतम ! सत्य वस्तु का स्थापन करने में सर्वज्ञ पथ की अनुसरती होवे और जिस भाषा से मोक्ष का साधन होसके वह सत्य भाषा है २ जिस भाषा से आरम्भ की, सर्वज्ञ के वचनकी व मोक्ष पथकी विराधना [नाश] होवे वह असत्य भाषा है, ३ इक दोनों विकृत मीश्र होवे अर्थात् कुच्छ आराधना करनेवाली होवे और कुच्छ विराधना करने वाली होवे सो सत्यमृषा, और ४ जो भाषा एकान्त आराधना करनेवाली होवे नहीं वैसे ही एकांत विराधना करनेवाली भी होवे नहीं वह असत्यमृषा कहाती है. इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि अवधारणी

॥ एकादश भाषा पदम्. ॥

सूत्र

से णूणं भंते! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अह मण्णामिति ओहारिणी भासा, अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमिति ओहारिणी भासा ? हंता गोयमा ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अहमण्णामिति ओहारिणी भासा, अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामिति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ॥ १ ॥ ओहारिणीणं भंते! भासा, किं सच्चा मोसा सच्चामोसा, असच्चामोसा?

अर्थ

अब अग्यारहवे पद में भाषा का वर्णन करते हैं. अहो भगवन् ! निश्चय करके मैं मानता हूं कि अवधारणी भाषा है, मैं चितवता हूं कि अवधारणी भाषा है, अवबोधार्थभूता अवधारणी भाषा मैं विशेष कर मानता हूं, मैं विशेषकर चितवता हूं, तैसे मानता हूं कि अवधारिणी भाषा और चितवन करता हूं कि अवधारणी भाषा है ? हां गौतम ! तू मानता है ऐसी अवधारिणी भाषा है. तू चितवता है ऐसी अवधारणी भाषा है, विशेष मानता है कि अवधारणी भाषा है, विशेष चितवन करता है कि अवधारणी भाषा है, तैसे मानता है कि अवधारणी भाषा है तैसे चितवन करता है कि अवधारणी भाषा है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अवबोधभूता अवधारिणी भाषा क्या सत्य है, असत्य है. सत्य मृषा (मीश्र) है या असत्य

कुमारेवा मंदकुमारियावा, जाणति थयमाणे, थुयमाणा अहमेसे थुयामि अहमेसे थुयामिति? गोयमा! णोइणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ॥ १० ॥ अह भंते! मंदकुमारएवा मंदकुमारियावा जाणति आहारं आहारेमाणे अहमेसे आहारं माहारेमि अहमेसे आहार माहारेमिति? गोयमा! णोइणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ॥ ११ ॥ अह भंते! मंदकुमारएवा, मंदकुमारियावा, जाणति अयंमे अम्मापियरो? गोयमा! णोइ-

भूत नहीं है. ॥ ९ ॥ अहो भगवन्! मंदकुमार अर्थात् जिस बच्चे का अभिज्ञान मंद है स्त्यानात्रि क्रिया रहित है वैसे ही मंदकुमारिका स्वयमेव भाषा योग्य पुद्गलों ग्रहण कर बोलता हुवा ऐसे जाने कि मैं बोलता हूं, मैं यह बोलता हूं. अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है. यद्यपि मनः पर्याप्ति से पर्याप्त हैं तथापि उन का मनःकरण अपटु है और उस में श्रुतज्ञान का क्षयोपशम भी मंद है. मात्र संज्ञी पंचेन्द्रिय-अवधि ज्ञानी व जाति स्मरण ज्ञानी जान सके ॥ १० ॥ अहो भगवन्! मंद-कुमार अथवा मंदकुमारिका आहार करते हुवे मैं आहार करता हूं मैं आहार करता हूं ऐसा क्या जानता है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है, अर्थात् नहीं जान सकता है, मात्र अवधि ज्ञानी व जाति-स्मरण ज्ञानवाले संज्ञी जान सकते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन्! मंदकुमार अथवा मंदकुमारिका क्या ऐसा जान सके कि यह मेरे मात पिता हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है, मात्र अवधि ज्ञानी

...भासा, णएसा भासा मोसा ॥ ७ ॥ अह भंते ! जायति इत्थी आणवणी, जायति पुम आणवणी, जायति णपुंसग आणवणी पण्णवणीणं एसाभासा णएसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जायति इत्थी आणवणी, जयाति पुंम आणवणी, जायति णपुंसग आणवणी, पण्णवणीणं एसा भासा णएसा मोसाभासा ॥८॥ अह भंते ! जातीति इत्थी पण्णवणी, जातीति पुमपण्णवणी, जातीति णपुंसग पण्णवणीणं एसा भासा णएसाभासा मोसा? हंता गोयमा! जातीति इत्थी पण्णवणी जातिति पुमपण्णवणी जातीति नपुंसग पण्णवणीणं एसा भासा णएसा भासा मोसा ॥ ९ ॥ अह भंते !

अर्थ ...पुरुष व नपुंसक ज्ञान प्रतिपादिका भाषा मृषा भाषा नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जाति में स्त्री जाननेवाली, जाति में पुरुष जाननेवाली, जाति में नपुंसक जाननेवाली, प्रज्ञापनी भाषा क्या मृषा नहीं है? अहो गौतम ! जाति से स्त्री जानने वाली, पुरुष जाति जाननेवाली व नपुंसक जाति जाननेवाली भाषा मृषा नहीं है. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! स्त्री जाति के लक्षण बताने वाली, पुरुष जाति के लक्षण बतानेवाली व नपुंसक जाति के लक्षण बतानेवाली भाषा मृषा भाषा नहीं है ? अहो गौतम ! स्त्री जाति के लक्षण बताने वाली, पुरुष जाति के लक्षण बताने वाली व नपुंसक जाति के लक्षण बताने वाली भाषा

प्पगारा सव्वासा पुमवऊ ? गोयमा ! मणुस्से माहिसे आसे हत्थी सीहे वग्घे वगे दीविए अच्छे तरच्छे परस्सरे रासभे सियाले बिराले सुणए कोलसुणए कोक्कंतिए ससए चित्तए चिल्ललए जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वासा पुमवऊ ॥१८॥ कंसं, कंसोय, परिमंडल, सेले, थूभ, जालं, थालं, तारं, रूवं, अत्थिपव्वं, कुंडं, पउमं, दुद्धं, दहिं, णवणीय, आसण, सयणं, भवणं, विमाणं, छत्तं, चामरं, भिंगारं, अंगणं, णिरंगणं, आभरणं, रयणं, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वं तं णपुंसगवऊ ? हंता गोयमा ! कंसं जाव रयणं जेयावण्णे तहप्पगारा तं सव्वं णपुंसगवऊ ॥१९॥ अह भंते ! पुढवीति इत्थिवऊ, आउत्तिपुमवऊ, धण्णेत्ति णपुंसगवऊ, पण्णवणीणं एसा भासा, ण एसा भासा

है ! अहो गौतम ! मनुष्य वगैरह सब पुरुष वचन में होते हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! कांस्य, कांस्यपात्र, परिमंडल, शैल, स्तूप, जाल, थाल, तार, रूप, अस्थिपर्व, कुंड, पद्म, दुग्ध, दधि, नवनीत, (मक्खन) आसन, शयन, भवन, विमान, छत्र, चमर, भृंगार, अंगन, निरंगन, आभरण, रत्न, और भी इस प्रकार के सब क्या नपुंसक वचन में हैं ? अहो गौतम ! कांस्य यावत् रत्न वगैरह सब नपुंसक वचन में है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! [illegible], अप् पुरुष वचन और धन नपुंसक वचन स्वरूपवाली भाषा

सूत्र

भासा सियसचा सियमोसा सिय सचामोसा सिय असचामोसा॥२॥ अहणं भंते ! गाऊ, मिया, पसु,पक्खी पण्णवणीणं एसा भासा, णएसा भासा मोसा? हंता गोयमा! गाऊ, मिया, पसु,पक्खी पण्णवणीणं एसाभासापण्णवणी णएसा भासा मोसा॥३॥अह भंते ! जाय इत्थिवऊ, जाव पुमवउ, जाव णपुंसगवऊ, पण्णवणीणं एसा भासा ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जाय इत्थिवाऊ, जाय पुमवऊ, जाव णपुंसगवऊ पण्णवणीणं एसा भासा, णएसा भासा मोसा ॥ अहं भंते ! जायइत्थी आणवणी, जाय पुम आणमणी, जाय णपुंसग आणमणी पण्णवणीणं एसाभासा णएसा भासा

अर्थ

भाषा स्यात् सत्य है स्यात् असत्य है, स्यात् सत्य मृषा है, और स्यात् असत्य मृषा है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! गाय मृग, पशु (बकरा) और पक्षी का अर्थ बताने वाली भाषा है तो क्या यह मृषा भाषा नहीं है ? अहो गौतम ! गाय मृग पशु व पक्षी का अर्थ बताने वाली भाषा है यह मृषा भाषा नहीं है. क्यों कि गाय वगैरह से संपूर्ण गोजाति का ज्ञान होता है इस में तीनों लिंगों का समावेश होता है. इस तरह यथावस्थित अर्थ कहनेसे प्रज्ञापनी भाषा कहाती है.॥३॥अहो भगवन्! जो स्त्री वचन प्रतिपादिका जैसे गंगा, पुरुष वचन प्रतिपादिका जैसे घटादि और नपुंसक वचन प्रतिपादिका जैसे कुण्डादि; यह भाषा क्या मृषा नहीं है ? अहो गौतम ! स्त्री वचन प्रतिपादिका, पुरुष वचन प्रतिपादिका व नपुंसक

सण्णिणो ॥ अहभंते ? उट्टे गोणे खरे घोडए अए एलए जाणाति अयंमे अम्मा पियरो ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ॥ अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणाति अयं अंतराउले ? गोयमा ! जाव णण्णत्थ सण्णिणो ॥ अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणाति अयंमे भट्टिदारए ? गोयमा ! जाव णण्णत्थ सण्णिणो ॥ १५ ॥ अह भंते ! मणुस्सं महिसे आसं हत्थी सीहे वग्घे वगे दीविए अच्छे तरच्छे परस्सरे सियाले विराले सुणए कोलए सूयरे कोक्कंतीए ससए चित्तए चित्तलए

अर्थ

प्रकार का भाषण करता हूं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है, परंतु संज्ञी सबल बुद्धिवाला जान सकता है. अहो भगवन् ! ऊंट बैल यावत् एलक क्या जान सकते हैं कि यह मेरे मात पिता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है मात्र संज्ञी सबल बुद्धिवाला जान सकता है. अहो भगवन् ! ऊंट यावत् एलक क्या जान सकता है कि यह मेरे स्वामिका गृह है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है परंतु संज्ञी जान सकता है अहो भगवन् ! ऊंट यावत् एलक क्या जानसके कि यह मेरे स्वामी हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है मात्र संज्ञी जानसकता है ॥१५॥ अहो भगवन् ! मनुष्य, भैंसा, अश्व, हाथी सिंह, व्याघ्र, वरगडा, चित्ता, रीछ, तरछ, ममर, गेंडा, शृगाल, बिडाल, श्वान, कोला, सूअर कोकती खरगोश, चित्ते, चिल्लक, और भी इस प्रकार के शब्दों को क्या एक वचन कहना ? हां गौतम ! उन

पण्णवणी आराहणीणं एसा भासा, णएसा भासा मोसा॥२२॥इथेवं भंते!इत्थीवयणंवा, पुमवयणंवा, णपुंसगवयणंवा वयमाणे पण्णवणीणं, एसाभासा, णएसा भासा मोसा ? हंता गोयमा! इत्थिवयणंवा, पुमवयणंवा, णपुंसगवयणंवा वयमाणे पण्णवणीणं एसभासा, णएसा भासा मोसा॥२३॥भासाणं भंते! किमादिया, किं पहवा, किं संठिया, किं पज्जवसिया? गोयमा! भासाणं जीवादिया, सरीरप्पभवा, वज्जसंठिया, लोगंतपज्जवसिया पण्णत्ता ॥ भासा कओपवभवति, कतिहिं समएहिं भासंती भासं, भासा कतिप्पगारा, कतिवा भासा,

बक्तव्यता यह मृषा भाषा नहीं है॥२२॥ अहो भगवन् ! इसतरह स्त्री वचन, पुरुष वचन व नपुंसकवचन बोलते प्रज्ञापनी यह भाषा है. क्या यह भाषा मृषा नहीं है ! अहो गौतम ! स्त्री वचन, पुरुष वचन व नपुंसक वचन कहते प्रज्ञापनी यह भाषा है परंतु मृषा भाषा नहीं है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! भाषा की आदि क्या है, कहां से उत्पत्ति स्थान है, भाषा का संस्थान क्या है, और पर्यवसान कहां है ? अहो गौतम ! भाषा की आदि जीव में है, शरीर से उत्पन्न हुई है, वज्र का संस्थान है, और लोकांत में पर्यवसान है ॥ भाषा कहां से उत्पन्न होती है, कितने समय में भाषा बोली जाती है, कितने प्रकार की भाषा है, और कितनी भाषा अनुमत है ? अहो गौतम ! भाषा शरीर से प्रगट होती है, दो समय में भाषा के पुद्गल बोलते हुए भाषा रूप परिणमते हैं, चार प्रकार की भाषा कही है जिन के नाम—सत्य भाषा,

...आओ॥१॥ सरीरप्पभवा भासा, दोहिंय समएहिं भासइभासं भासा चउ पगारा,-
दोन्निय भासा अणुमयाओ॥२॥२४॥ कतिविहाणं भंते! भासा पण्णत्ता?गोयमा! दुविहा
भासा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तियाय अपज्जत्तियाय ॥ पज्जत्तियाणं भंते! भासा कतिविहा
पण्णत्ता ?गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा सच्चाय, मोसाय॥२५॥ सच्चाणं भंते! भासा
पज्जत्तिया कतिविहा पण्णत्ता?गोयमा!दसविहा पण्णत्ता तंजहा-१ जणवयसच्चा,२समय

भाषा, सत्यमृषा भाषा और असत्यमृषा. भाषा उक्त चार प्रकार की भाषा में से मात्र सत्य भाषा व
व्यवहार भाषा ऐसी दो भाषा की अनुमति दी है ॥२४॥ अहो भगवन् ! भाषा के कितने भेद कहे हैं ?
अहो गौतम!भाषा के दो भेद कहे हैं, पर्याप्तिक सो पूर्ण और अपर्याप्तिक सो अपूर्ण, अहो भगवन्!पर्याप्तिक
भाषा के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम! पर्याप्तिक भाषा के दो भेद कहे हैं-१. सत्य और २ मृषा॥२५॥
अहो भगवन् ! पर्याप्तिक सत्य-भाषा के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! दश भेद कहे हैं—१ जन-
पद सत्य, जो भाषा जिस देश में जिस प्रकार बोलाती होवे जैसे - पिता, माता, भाइ वगैरह,
२ समय सत्य-बहुत मनुष्यों जो बोलते होवे सो जैसे पंक से उत्पन्न हुवा सो पंकज, अन्य मेंडकादि
पंक से उत्पन्न होते हैं परंतु उस पंकज नहीं कहते हैं और कमल को ही पंकज कहते हैं, ३ स्थापना सत्य
बहुत जन मिल किसी वस्तु की स्थापना करे जैसे तोला, शेर, पावशेर आदि ४ नाम सत्य जिसका जो नाम

सूत्र

सचा ३ ठवणासचा, ४ नामसचा, ५ रूवसचा, ६ पडुचसचा, ७ ववहारसचा, ८ भावसचा, ९ जोगसचा, १० ओवमासचा ॥ गाहा ॥ जणवय सम्मुट्ठियठवणा णामेरूवे पडुचसचेय ॥ ववहार भावजोगे, दसमे ओवम्म सचेय ॥ १ ॥ २५ ॥ मोसाणं भंते ! भासा पज्जत्तिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता

अर्थ

रखे उस नामके चाहे गुनों उसमें होवे या न होवे, जैसे अंधे को नैनसुख ५ रूपसत्य-जिस प्रकार जिसका व्यवहार देखने में आवे और उस में वे गुन नहीं भी पावे तो भी वह कहना सत्य है जैसे भ्रष्टाचारी को साधु, स्त्री रूप में पुरुष, ६ प्रत्यय सत्य-एक की अपेक्षा अन्य को छोटा बडा कहे जैसे पिता पुत्र कनिष्टा अनामिका से छोटी है वगैरा ७ व्यवहार सत्य-लोक बोले वैसा बोले जैसे जैसे इन्धन जलने को चूल्हा जलना कहना ८ भाव सत्य-जो प्रत्यक्ष में जैसा देखने में आवे वैसा बोले जैसे तोता हरा, हंस श्वेत, यद्यपि इन में पांच ही रंग पाते हैं परंतु प्रत्यक्ष में मात्र हरा रंग दीखता है. ९ जोग सत्य जैसा जिस की योग्यता होवे वैसा बोले जैसे अमुक राजा के लाख घोडे हैं कमी ज्यादा होवे अथवा मनुष्य सहित होवे तो भी लाख घोडे ही कहाते हैं. और १० उपमा सत्य-किसी को किसी की उपमादेवे उस के स्वरूपका कथन करे जैसे चन्द्राननी, मृगलोचनी वगैरह स्त्री को उपमादेवे यों दश प्रकार की पर्याप्त सत्य भाषा कही ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! पर्याप्त मृषा भाषा के कितने भेद कहे हैं ? अहो

सूत्र

पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता तंजहा-१ उप्पण्णमिस्सिया, २ विगतमिस्सिया, ३ उप्पण्णविगतमिस्सिया, ४ जीव मिस्सिया, ५ अजीव मिस्सिया, ६ जीवाजीव मिस्सिया, ७ अणंत मिस्सिया, ८ परित्तमिस्सिया, ९ अद्धामिस्सिया १० अद्धद्धामिस्सिया ॥ ॥ २७ ॥ असच्चामोसाणं भंते ! भासा अपज्जत्तिया कइविहा पण्णत्ता? गोयमा! दुवालसविहा पण्णत्ता तंजहा(गाहा) १ आमंतणी, २ आणमणी, ३ जायणी, ४ तह पुच्छणी, ५ पण्णवणी ॥ ६ पच्चक्खाणीभासा, ७ भासा इच्छाणु-

अर्थ

मीश्र-उक्त दोनों भाषा साथ बोले, ४ जीव मीश्र-बहुत जीवों का ढग देखकर कहे यह सब जीवों हैं उसमें कोई मरे भी होवे ५ अजीव मीश्र-कलेवरों का ढगला देखकर यह सब अजीव है ऐसा कहे, ६ जीवाजीव मीश्र-उक्त दोनों सामिल बोले, ७ अनंत मीश्र-प्रत्येक को अनंत कहे ८ परित मीश्र अनंत को प्रत्येक कहे. ९ अद्धा मीश्र-थोडे दिन हुवे होवे उस बहुत कहे, और १० अद्धद्धा मीश्र-जैसे अर्ध प्रहर रात्रि आई उसे थोडी रही कहे, ॥२७॥ अहो भगवन्! असत्य मृषा के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! असत्य मृषा(व्यवहार) के बारह भेद कहे हैं. १ आमंत्रणी किसी को बोलाना जैसे हे देवदत्त, २ आज्ञापनी- किस को आदेश करना जैसे-अमुक करो, ३ याचनी-याचना करना जैसे अमुक देवो, ४ पुच्छनी—सो किसी को पूछना, यह कैसे है ! ५ प्रज्ञापनी- जीव भाव की प्ररूपणा करनी, ६ प्रत्याख्यानी—किसी कार्य का नियम अंगीकार करना, ७ इच्छानुलोम—अन्य कहे वैसा आप भी कहे, ८ अनाभिग्रही—अर्थ नहीं

तंजहा—१ कोहणिस्सिया, २ माणणिस्सिया, ३ मायाणिस्सिया, ४ लोभणिस्सिया, ५ पेज्जणिस्सिया, ६ दोसणिस्सिया, ७ हासणिस्सिया, ८ भयणिस्सिया, ९ अहक्खाइयाणिस्सिया, १० उवघायणिस्सिया ॥ गाहा ॥ कोहेमाणे माया लोभे, पेज्ज तहेव दोसेय ॥ हास भए अक्खाइय, उवघाइय णिस्सिया दसमा ॥ २ ॥ २५ ॥ अपज्जत्तियाणं भंते ! भासा कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा सच्चामोसाय, असच्चामोसाय ॥ सच्चामोसाणं भंते ! भासा अपज्जत्तिया कतिविहा

गौतम ! मृषा भाषा के दश भेद कहे हैं. १ क्रोध की नेश्राय से मृषा बोले, २ मान की नेश्राय से मृषा बोले, ३ माया की नेश्राय से मृषा बोले, ४ लोभ की नेश्राय से मृषा बोले, ५ राग की नेश्राय से मृषा बोले, ६ द्वेष की नेश्राय से मृषा बोले, ७ हास्यकी निश्राय से मृषा बोले, ८ भय की नेश्रायसे मृषा बोले, ९ आख्याय—कल्पित ग्रन्थादि की नेश्राय से मृषा बोले और १० उपघात की नेश्राय से अर्थात् किसी का घात होवे वैसी भाषा बोले ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! अपर्याप्त भाषा के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अपर्याप्त भाषा के दो भेद कहे हैं १ सत्य मृषा सो मीश्र और २ असत्य मृषा सो व्यवहार. इस में से सत्य मृषा भाषा के दश भेद कहे हैं १ उत्पन्न मीश्र—जैसे आज गांव में दश का जन्म हुवा है इस में कमी ज्यादा भी होवे, २ विगत मीश्र-इस नगर में दश मृत्यु हुवा, ३ उत्पन्न विगत

सूत्र

जेते असेलेसीपडिवण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा एगिंदियाय, अणेगेंदियाय॥तत्थणं जेते एगिंदिया तेणं अभासगा, तत्थणं जेते अणेगेंदिया ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं अभासगा, तत्थणं जेते पज्जत्तगा तेणं भासगा॥से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जीवा भासगावि अभासगावि ॥२९॥ णेरइयाणं भंते! किं भासगा अभासगा? गोयमा! नेरइया भासगावि अभासगावि॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ णेरइया भासगावि अभासगावि ? गोयमा! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं अभासगा, तत्थणं जेते पज्जत्तगा

अर्थ

उन के दो भेद एकेन्द्रिय और अनेक इन्द्रिय वाले. उन में जो एकेन्द्रिय है वह अभापक हैं. और अनेक इन्द्रिय वाले हैं उन के दो भेद-१ पर्याप्त और २ अपर्याप्त उन में से जो अपर्याप्त हैं व अभापक हैं और पर्याप्त हैं वे भापक हैं. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा कि जीव भापक भी हैं और अभापक भी हैं. ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! नेरिये क्या भापक हैं या अभापक हैं ? अहो गौतम ! नेरिये भापक भी हैं और अभापक भी हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नेरिये भापक भी हैं और अभापक भी हैं ? अहो गौतम ! नेरिये के दो भेद कहे हैं-१ पर्याप्त और २ अपर्याप्त उस में जो अपर्याप्त हैं. वे अभापक

॥१२॥ णेरइयाणं भंते! किं सच्चं भासं भासंति जाव किं असच्चामोसं भासं भासंति? गोयमा! सव्वंपि भासं भासंति जाव असच्चामोसंपि भासं भासंति ॥ एवं असुरकुमारा जाव थणियकुमारा ॥ बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया णोसच्चं, णो मोसं, णोसच्चामोसं भासं भासंति असच्चामोसं भासं भासंति ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते! किं सच्चं भासं भासंति जाव किं असच्चामोसं भासं भासंति? गोयमा! पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया णो सच्चं भासं भासंति, णो मोसं भासं भासंति, णो सच्चामोसं भासं भासंति, एगं असच्चामोसं भासं भासंति ॥ णण्णत्थ सिक्खापुव्वगं उत्तरगुणं

अर्थ

बोलते यावत् क्या असत्य मृषा भाषा बोलते हैं? अहो गौतम! चार ही सत्य भाषा भी बोलते हैं यावत् असत्य मृषा भाषा भी बोलते हैं. ऐसे ही असुर कुमार यावत् स्थनित कुमार पर्यंत जानना. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय सत्य, मृषा व सत्य मृषा ऐसी तीन भाषा नहीं बोलते हैं. परन्तु एक असत्य मृषा (व्यवहार) बोलते हैं. अहो भगवन्! तिर्यंच पंचेन्द्रिय क्या सत्य भाषा बोलते हैं यावत् क्या असत्य मृषा भाषा बोलते हैं? अहो गौतम! असत्य मृषा भाषा बोलते हैं शेष तीन भाषा नहीं बोलते हैं. परंतु विशेषता इतनी कि इस भव में शिक्षा लेकर शुक पक्षी आदि और ...

...णिहूण गोयमा ! एवं एवं वुच्चइ णेरइया भासगावि अभासगावि एवं एगिंदिय वज्जाणं निरंतरं भाणियव्वं ॥ ३० ॥ कतिणं भंते ! भास जाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि भासजाया पण्णत्ता तंजहा सच्चमेगं भासजायं, बितियं मोसं, तइयं सच्चामोसं, चउत्थं असच्चामोसं ॥ ३१ ॥ जीवाणं भंते ! किं सच्चं भासं भासंति, मोसं भासं भासंति, सच्चामोसं भासं भासंति असच्चामोसं भासं भासंति ? गोयमा ! जीवा सच्चंपि भासं भासंति, मोसंपि भासं भासंति, सच्चामोसंपि भासं भासंति, असच्चामोसंपि भासं भासंति ॥ ३२ ॥

है और पर्याप्त हैं वे भाषक हैं. अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा है कि नारकी भाषक और अभाषक दोनों हैं ऐसे ही एकेन्द्रिय छोडकर सब दंडक में कहना ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! भाषा की जाति कितनी कही है ? अहो गौतम ! भाषा की चार जाति कही है. १ सत्य भाषा जाति २ मृषा भाषा जाति ३ सत्य मृषा भाषा जाति और ४ असत्य मृषा भाषा जाति ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या सत्य भाषा बोलते हैं, असत्य भाषा बोलते हैं, सत्य मृषा भाषा बोलते हैं या असत्य मृषा भाषा बोलते हैं ? अहो गौतम ! जीव सत्य भाषा भी बोलते हैं, मृषा भाषा भी बोलते हैं, सत्य मृषा भाषा बोलते हैं और असत्य मृषा भाषा बोलते हैं. ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! नारकी क्या सत्य भाषा

सूत्र

गिण्हंति, दुपदेसियाइं गिण्हंति, जाव अणंतपएसियाइं गिण्हंति ? गोयमा ! णो एग-पएसीयाइं गिण्हइ, णो दुपएसियाइं गिण्हइ, जाव णो असंखेज्ज पएसियाइं गिण्हइ, अणंत पएसियाइं गिण्हइ ॥ जाइं खेत्तओ गिण्हइ, ताइं किं एगपएसोगाढाइं गिण्हइ दुपएसोगाढाइं गिण्हइ, जाव असंखेज्जपएसोगाढाइं गिण्हइ ? गोयमा! णो एगपएसो-गाढाइं गिण्हइ जाव णो संखिज्ज पएसोगाढाइं गिण्हइ, असंखिज्जपएसोगाढाइं गिण्हइ ॥ कालओ गिण्हइ ताइं किं एगसमय ठितियाइं गिण्हंति, दुसमय ठितियाइंवि गिण्हइ जाव असंखेज्ज समय ठितियाइं गिण्हइ ? गोयमा एगसमय ठितियाइंवि गिण्हइ

अर्थ

करते हैं और भाव से भी ग्रहण करते हैं जब द्रव्य से ग्रहण करते हैं तब क्या एक प्रदेशी द्रव्य ग्रहण करते है कि द्विप्रदेशिक ग्रहण करते हैं यावत् अनंत प्रदेशिक द्रव्य ग्रहण करते हैं? अहो गौतम! एक प्रदेशिक ग्रहण नहीं करते हैं, द्विप्रदेशिक ग्रहण नहीं करते हैं यावत् असंख्यात प्रदेशिक ग्रहण नहीं करते हैं परंतु अनंत प्रदेशिक ग्रहण करते हैं, जब क्षेत्र से ग्रहण करे तब क्या एक प्रदेशावगाढ ग्रहण करते हैं कि-यावत् असंख्यात प्रदेशावगाढ ग्रहण करते हैं? अहो गौतम ! एक प्रदेशावगाढ यावत् संख्यात प्रदेशावगाढ ग्रहण करते नहीं हैं परंतु असंख्यात प्रदेशावगाढ ग्रहण करते हैं, जब काल से ग्रहण करे, तब क्या एक समय की स्थितिवाला

सूत्र

सच्चिया पडुच्च सच्चपि भासं भासंति, मोसंपि भास भासंति, सच्चामोसंपि भासं भासंति, असच्चामोसंपि भासं भासंति ॥ मणुस्सा जाव वेमाणिया एते जहा जीवा तहा भाणियव्या ॥ ३३ ॥ जीवाण भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गेण्हंति किं ठियाइं गिण्हंति, अठियाइं गिण्हंति ? गोयमा ! ठियाइं गिण्हंत णो अठियाइं गिण्हंति ॥ जाइं भंते ! ठियाइं गिण्हंति ताइं किं दव्वाओ गिण्हंति, खेत्तओ गिण्हंति, कालओ गिण्हंति, भावओ गिण्हंति ? गोयमा ! दव्वओवि गिण्हंति, खेत्तओवि गिण्हंति, कालओवि गिण्हंति, भावओवि गिण्हंति ॥ जाइं भंते ! दव्वओ गिण्हंति ताइं किं एगपदेसियाइं

अर्थ

आराधनादि ज्ञान से अवग्रह होने से सत्यादि (वैक्रियशरीरवाले जीव दंडक की तरह) चारों प्रकार की भाषा बोलते हैं. मनुष्य से वैमानिक पर्यंत समुच्चय जीव जैसे चारों प्रकार की भाषा बोलते हैं. ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! जीव जो द्रव्य भाषापने ग्रहण करते हैं वह क्या स्थिर ग्रहण करते हैं या अस्थिर ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! स्थिर ग्रहण करते हैं परंतु अस्थिर नहीं ग्रहण करते हैं. जब स्थिर ग्रहण करते हैं तब क्या द्रव्य से ग्रहण करते हैं, क्षेत्र से ग्रहण करते हैं, काल से ग्रहण करते हैं या भाव से ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य से भी ग्रहण करते हैं, क्षेत्र से भी ग्रहण करते हैं

गुण कालाइं गिण्हंति जाव अणंतगुण कालाइं गिण्हंति ? गोयमा ! एगगुणकालाइं गिण्हंति जाव अणंतगुण कालाइवि गिण्हंति ॥ एवं जाव सुक्किलाइं ॥ ३५ ॥ जाइं भंते ! भावाओ गंधमंताइं गिण्हंति किं एगगंधाइं गिण्हंति, दोगंधाइं गिण्हंति, ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च एगगंधाइवि गिण्हंति, दोगंधावि गिण्हंति ॥ सव्वगहणं पडुच्च णियमा दोगंधाइंगिण्हंति ॥ जइणं भंते ! गंधतोसुब्भिगंधाइं गिण्हंति ताइं किं एगगुण सुब्भिगंधाइं गिण्हंति जाव अणंतगुण सुब्भिगंधाइं गिण्हंति ? गोयमा ! एगगुण सुब्भिगंधाइवि गिण्हंति जाव अणंतगुण सुब्भिगंधाइवि गिण्हंति॥ एवं दुब्भि-

काला ग्रहण करते हैं. ? अहो गौतम ! एक गुन काला वर्ण वाला भी ग्रहण करते हैं यावत् अनंत अनंत गुन काला भी ग्रहण करते हैं ऐसे ही शुक्ल वर्ण पर्यंत कहना. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! जब भाव से गंधवाले ग्रहण करते हैं सो क्या एक गंधवाले ग्रहण करते हैं या दो गंधवाले ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! ग्रहण द्रव्य आश्रिय एक गंधवाले ग्रहण करते हैं व दो गंधवाले भी ग्रहण करते हैं. और सब ग्रहण आश्रिय सुरभिगंध व दुरभिगंध ऐसे दोनों गंधवाले ग्रहण करते हैं. अहो भगवन् ! जब गंध से सुरभिगंधवाले ग्रहण करे तब क्या एकगुण सुरभिगंधवाले ग्रहण करे यावत् अनंतगुण सुरभिगंधवाले ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! एक गुण सुरभिगंधवाले ग्रहण करते हैं यावत् अनंतगुन सुरभिगंधवाले भी ग्रहण

... गिण्हइ जाव असंखज्जसमय ठिइयाइं. गिण्हइ ॥ जाइं भावओ गिण्हइताइं किं वणमंताइं गिण्हइ, गंधमंताइं गिण्हइ, रसमंताइं गिण्हइ, फासमंताइं गिण्हइ ? गोयमा ! वण्णमंताइंवि गिण्हइ जाव फासमंताइवि गिण्हइ॥ ३४ ॥ जाइं भावओ वण्णमंताइ गिण्हइं ताइं किं एगवण्णमंताइ गिण्हइ जाव पंचवण्णमंताइ गिण्हइ ? गोयमा ! गहणदव्वाइ पडुच्च एगवण्णाइवि गिण्हइ जाव पंचवण्णाइंवि गिण्हति, सव्वगहण पडुच्च णियमा पंचवण्णाइं गिण्हति तंजहा-कालाइं, णीलाइं, लोहियाइं, हालिद्दाइं, सुक्किलाइं ॥ जइणं तेवण्णओ कालवण्णाइं गिण्हति किं एग-

अर्थ

ग्रहण करे यावत् असंख्यात समय की स्थिति वाला ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! एक समय की स्थिति वाला यावत् असंख्यात समयकी स्थितिवाला ग्रहण करते हैं. भाव से ग्रहण करे तो क्या वर्ण वाले, गंधवाले रसवाले या स्पर्श वाले ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! वर्ण गंध, रस व स्पर्श वाले ग्रहण करते हैं.॥ ३४ ॥ अहो भगवन्! जब भाव से वर्ण वाले पुद्गल ग्रहण करे तब क्या एक वर्ण वाले ग्रहण करे या पांच वर्ण वाले द्रव्य ग्रहण करे ? अहो गौतम ! ग्रहण द्रव्य आश्रिय. अर्थात् जिस द्रव्य को ग्रहण करने में योग्यता है उस आश्रिय एक वर्ण वाले भी ग्रहण करते हैं यावत् पांचों वर्ण वाले भी ग्रहण करते हैं और सर्व ग्रहण आश्रिय-निश्चय से काला, नीला, रक्त, पीत व शुक्ल ऐसे पांचो वर्ण वाले ग्रहण करते हैं. जो काला वर्ण वाले ग्रहण करते हैं वे क्या एक गुण काला ग्रहण करते हैं यावत् अनंत गुन

गहणदव्वाइं पडुच णो एगफासाइं गिण्हंति दुफासाइं गिण्हंति जाव चउफासाइंपि गिण्हंति; णो पंचफासाइं गिण्हंति जाव णो अट्ठफासाइंपि गिण्हंति॥सव्वगहणं पडुच णियमा चउफासाइं गिण्हंति तंजहा सीतफासाइं गिण्हंति, उसिणफासाइं गिण्हंति, णिद्धफासाइं गिण्हंति, लुक्खफासाइं गिण्हंति ॥ जाइं फासओ सीतफासाइं गिण्हंति ताइं किं एगगुण सीत फासाइं गिण्हंति जाव अणंतगुण सीत फासाइं गिण्हंति ? गोयमा ! एगगुण सीत फासाइंपि गिण्हंति जाव अणंतगुण सीतफासाइंपि गिण्हंति ॥ एवं उसिण, णिद्ध, लुक्खाइं जाव अणंतगुणाइंपि गिण्हंति ॥ ३८ ॥ जाइं भंते ! एगगुण कालाइं जाव

स्पर्शवाले यावत् चार स्पर्शवाले ग्रहण करे परंतु पांच यावत् आठ स्पर्शवाले ग्रहण करे नहीं. सर्व ग्रहण आश्रिय नियमा चार स्पर्शवाले ग्रहण करे क्योंकि भाषा के पुद्गल चार स्पर्शवाले हैं जिन के नाम. शीत स्पर्शवाले उष्ण स्पर्शवाले, स्निग्ध स्पर्शवाले और रूक्ष स्पर्शवाले. अहो भगवन् ! जब शीत स्पर्शवाले ग्रहण करते हैं तो क्या एक गुन शीत स्पर्शवाले ग्रहण करते हैं यावत् अनंत गुन शीत स्पर्शवाले ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! एक गुन शीत स्पर्शवाले भी ग्रहण करते हैं यावत् अनंत गुन शीत स्पर्शवाले भी ग्रहण करते हैं. ऐसे ही उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष पुद्गलों अनंत गुणवाले ग्रहण करते हैं॥३८॥ अहो भगवन्! जब एक गुन काले

[illegible] गिण्हंति ॥ ३६ ॥ जाइं भावओ रसमंताइं गिण्हंति ताइं किं एगरसाइं गिण्हंति जाव किं पंचरसाइं गिण्हंति? गोयमा! गहणदव्वाइंपडुच्च एगरसाइंवि गिण्हंति जाव पंचरसाइंवि गिण्हंति, सव्वगहणं पडुच्च णियमा पंचरसाइं गिण्हंति ॥ जाइं रसओ तित्तरसाइं गिण्हंति, ताइं किं एगगुणतित्तरसाइं गिण्हंति जाव अणंतगुणतित्तरसाइं गिण्हंति ? गोयमा ! एगगुणतित्ताइंवि गिण्हंति जाव अणंतगुण तित्ताइंवि गिण्हंति ॥ एवं जाव महुररसो ॥ ३७ ॥ जाइं भावतो फास-मंताइं गिण्हंति ताइं किं एगफासाइं गिण्हंति जाव अट्ठफासाइं गिण्हंति ? गोयमा!

[illegible] ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् ! जब भाव से रसवाले ग्रहण करते हैं तो [illegible] ग्रहण करते हैं या पांच रसवाले ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम! ग्रहण द्रव्य आश्रित एक रसवाले ग्रहण करे यावत् पांच रसवाले भी ग्रहण करे और सब ग्रहण आश्रित नियमा पांच रसवाले ग्रहण करे. अहो भगवन् ! [illegible] तिक्त रसवाले ग्रहण करे तो क्या एक गुण तिक्त रसवाले ग्रहण करे कि यावत् अनंतगुन तिक्त रसवाले ग्रहण करे? अहो गौतम! एक गुन तिक्त रसवाले भी ग्रहण करे यावत् अनंत गुन तिक्त रसवाले भी ग्रहण करे. [illegible] मधुर रस पर्यंत कहना ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! जब भाव से स्पर्शवाले पुद्गल ग्रहण करे तब क्या एक स्पर्शवाले ग्रहण करे यावत् आठ स्पर्शवाले ग्रहण करे ! अहो गौतम ! ग्रहण द्रव्य आश्रित एक

सूत्र

गहणदव्वाइं पडुच्च णो एगफासाइं गिण्हति दुफासाइं गिण्हति जाव चउफासाइंपि गिण्हंति; णोपंचफासाइं गिण्हति जाव णोअट्ठफासाइंपि गिण्हति॥सव्वगहणं पडुच्च णियमा चउफासाइं गिण्हति तंजहा सीतफासाइं गिण्हति, उसिणफासाइं गिण्हंति, णिद्धफासाइं गिण्हंति, लुक्खफासाइं गिण्हति ॥ जाइं फासओ सीतफासाइं गिण्हंति ताइं किं एगगुण सीत फासाइं गिण्हति जाव अणंतगुण सीत फासाइं गिण्हंति ? गोयमा ! एगगुण सीत फासाइंपिगिण्हति जाव अणंतगुण सीतफासाइंपि गिण्हति ॥ एवं उसिण, णिद्ध, लुक्खाइं जाव अणंतगुणाइंपि गिण्हति ॥ ३८ ॥ जाइं भंते ! एगगुण कालाइं जाव

भावार्थ

स्पर्शवाले यावत् चार स्पर्शवाले ग्रहण करे परंतु पांच यावत् आठ स्पर्शवाले ग्रहण करे नहीं. सर्व ग्रहण आश्रिय नियमा चार स्पर्शवाले ग्रहण करे क्योंकि भाषा के पुद्गल चार स्पर्शवाले हैं जिन के नाम. शीत स्पर्शवाले उष्ण स्पर्शवाले, स्निग्ध स्पर्शवाले और रूक्ष स्पर्शवाले. अहो भगवन् ! जब शीत स्पर्शवाले ग्रहण करते हैं तो क्या एक गुन शीत स्पर्शवाले ग्रहण करते हैं यावत् अनंत गुन शीत स्पर्शवाले ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! एक गुन शीत स्पर्शवाले भी ग्रहण करते हैं यावत् अनंत गुन शीत स्पर्शवाले भी ग्रहण करते हैं. ऐसे ही उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष पुद्गलों अनंत गुणवाले ग्रहण करते हैं॥३८॥ अहो भगवन्! जब एक गुन काले

सूत्र

अणंतगुण लुक्खाइं दव्वाइं गिण्हंति ताइंकिं पुट्ठाइं गिण्हंति अपुट्ठाइं गिण्हंति ? गोयमा ! पुट्ठाइं गिण्हंति णो अपुट्ठाइं गिण्हंति ॥ जाइं भंते! पुट्ठाइं गिण्हंति ताइंकिं ओगाढाइं गिण्हंति अणोगाढाइं गिण्हंति ? गोयमा ! ओगाढाइं गिण्हंति णो अणोगाढाइं गिण्हंति ॥ जाइं भंते ! ओगाढाइं गिण्हंति ताइं किं अणंतरोगाढाइं गिण्हंति परंपरोगाढाइं गिण्हंति ? गोयमा ! अणंतरोगाढाइं गिण्हंति, णो परंपरोगाढाइं गिण्हंति ? जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं गिण्हंति, ताइं किं अणूइं गिण्हंति, बादराइं गिण्हंति ? गोयमा ! अणूइंपि गिण्हंति बादराइंपि गिण्हंति ॥

अर्थ

यावत् अनंत गुन रूक्ष द्रव्य ग्रहण करते हैं वे क्या स्पर्शे हुवे ग्रहण करते हैं या बिना स्पर्शे हुवे ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शे हुवे ग्रहण करते हैं परंतु बिना स्पर्शे हुवे नहीं ग्रहण करते हैं. अहो भगवन्! जब स्पर्शे हुवे ग्रहण करते हैं तब क्या अवगाहकर ग्रहण करते हैं बिना अवगाहकर ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम! अवगाहकर ग्रहण करते हैं परंतु बिना अवगाहे नहीं ग्रहण करते हैं. अहो भगवन्! जब अवगाहकर ग्रहण करते हैं तब क्या अंतर रहित पुद्गल ग्रहण करते हैं या परंपरा अवगाहित ग्रहण करते हैं? अहो गौतम! अनंतर अवगाहित ग्रहण करते हैं परंतु परंपरा अवगाहित नहीं ग्रहण करते हैं. जब अनंतर अवगाहित ग्रहण करते हैं तब क्या सूक्ष्म ग्रहण करते हैं या बादर ग्रहण करते हैं? अहो गौतम! सूक्ष्म ग्रहण करते हैं और बादर भी

जाइ भंते! अणूइपि गिण्हंति बादराइंपि गिण्हंति ताइ किं उड्ढं गिण्हंति अहे गिण्हंति तिरियं गिण्हंति ? गोयमा ! उड्ढंपि गिण्हंति अहेविगिण्हंति, तिरियंपि गिण्हंति ॥ जाइ भंते ! उड्ढंपि गिण्हंति अहेविगिण्हांति तिरियंपि गिण्हंति ताइकिं आदिं गिण्हंति मज्झे गिण्हति पज्जवसाणे गिण्हाति ? गोयमा ! आदिंपि गिण्हंति, मज्झेपि गिण्हंति, पज्जवसाणेवि गिण्हंति ॥ जाइं भंते ! आदिगिण्हंति मज्झेविगिण्हांति पज्जवएसाणेवि गिण्हंति, ताइकिं सविसए गिण्हंति,अविसए गिण्हंति ? गोयमा ! सविसए गिण्हति णो अविसए गिण्हंति ॥ जाइ भते ! सविसए गिण्हंति

ग्रहण करते है. अहो भगवन् ! जब सूक्ष्म व बादर ग्रहण करते हैं तब क्या ऊर्ध्व, व अधो दिशा के ग्रहण करते है या तिर्यक् दिशा के ग्रहण करते है ? अहो गौतम ! ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक यों तीनों दिशा के ग्रहण करते हैं जब ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक दिशा के ग्रहण करते हैं, तब क्या आदि में ग्रहण करते हैं, मध्य में ग्रहण करते हैं या पर्यवमान (अंत) में ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! आदि मध्य व पर्यव सान में (अंत) में यों तीनों दिशा के ग्रहण करते हैं. अहो भगवन् ! जब आदि मध्य व पर्यवमान में ग्रहण करते हैं तब विषय सहित ग्रहण करते हैं या विषय रहित ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! विषय सहित ग्रहण करते हैं परंतु विषय रहित नहीं ग्रहण करते हैं. जब विषय सहित ग्रहण करते हैं तब अनुपूर्व से ग्रहण करते हैं या अनानुपूर्वी से ग्रहण [illegible]

ताइं किं आणुपुव्विं गिण्हंति अणाणुपुव्विं गिण्हंति ? गोयमा ! आणुपुव्विं गिण्हंति णो अणाणुपुव्विं गिण्हंति ॥ जाइं भंते ! आणुपुव्विं गिण्हंति ताइं किं तिदिसिं गिण्हंति जाव छद्दिसिं गिण्हंति? गोयमा! णियमा छद्दिसिं गिण्हंति,॥(गाहा) पुट्ठो,गाढ, अणंतर अणु य महं चादिय उड्ढमहे, आदि, विसयाणुपुव्विं, णियमातह छद्दिसिंचेव ॥ १ ॥ २८ ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गिण्हंति ताइं किं संतरं गिण्हंति णिरंतरं गिण्हंति ? गोयमा ! संतरंपि गिण्हंति निरंतरंपि गिण्हंति ॥ संतरं गिण्हमाणे जहण्णेणं एगसमयं उक्कोसेणं असंखेज्जसमयं, अंतरं कट्टु गिण्हंति ॥

अनुपूर्वी से ग्रहण करते हैं परंतु अनानुपूर्वी से नहीं ग्रहण करते हैं. अहो भगवन् ! जब अनानुपूर्वी से ग्रहण करते हैं तब क्या तीन दिशि से ग्रहण करते हैं या छ दिशि से ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! नियमा छ दिशा के पुद्गल ग्रहण करते हैं क्यों कि भाषक जीवों लोक की मध्य में हैं. इस तरह स्पर्शीत [illegible], अवगाहित, अनन्तर, सूक्ष्म व बादर, ऊर्ध्व, अधो, आदि, विषय, पूर्व और नियमा छ दिशा के पुद्गल भाषक जीव ग्रहण करते हैं ॥२८॥ अहो भगवन् ! जीव जो द्रव्य भाषापने ग्रहण करते हैं वे क्या अंतर सहित ग्रहण करते हैं या निरंतर ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी ग्रहण करते हैं. और निरंतर भी ग्रहण करते हैं अंतर सहित ग्रहण करते जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात समय,

सूत्र

णिरंतरं गिण्हमाणे जहण्णेणं दोसमए उक्कोसेणं असंखिज्जसमए अणुसमय अविरहिय णिरंतरं गिण्हंति ॥ ३९ ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं, णिसिरंति, ताइं किं संतरं णिसरंति णिरंतरं णिसरंति? गोयमा ! संतरणिसरंति णो णिरंतरं णिसरंति ॥ संतरणिसिरमाणे एगेणं समएणं गिण्हंति एगेणं समएणं, णिसिरंति एवं गहण णिसिरणो वाएणं जहण्णेणं दुसमय उक्कोसेणं असंखिज्ज समइयं, अंतोमुहुत्तगगहण णिसरण उवचायं करेंति ॥ ४० ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताइं गहियाइं निसरंति ताइं किं भिण्णाइं णिसरंति अभिण्णाइं णिसरंति ? गोयमा ! भिण्णाइंपि

अर्थ

अंतर रहित ग्रहण करते जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात समय. अनुपूर्वि समय, विरह रहित निरंतर ग्रहण करते हैं ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! भाषापने ग्रहण कीये हुवे पुद्गल को जो जीव नीकालते हैं वे क्या अंतर सहित नीकालते है या निरंतर नीकालते है ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी नीकालते हैं और निरंतर भी नीकालते हैं. अंतर सहित नीकालते एक समय में ग्रहण करते एक समय में जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात समय तथा अंतर्मुहूर्त में भी ग्रहण करना नीकालने का भी उपाय करते है ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! जीव जो भाषापने ग्रहण कीये पुद्गलों नीकालते हैं वे क्या भेदाये हुए नीकालते या अभिन्न नहीं भेदाये हुवे नीकालते हैं ? अहो गौतम ! भेदाये हुवे भी नीकालते

मूत्र

ताइंकिं आणुपुव्वि गिण्हंति अणाणुपुव्वि गिण्हंति ? गोयमा ! आणपुव्वि गिण्हंति णो अणाणुपुव्वि गिण्हंति ॥ जाइ भंते ! आणुपुव्वि गिण्हंति ताइ किं तिदिसिं गिण्हंति जाव छदिसिं गिण्हंति? गोयमा! णियमा छदिसिं गिण्हंति,॥(गाहा) पुट्ठो, गाढ, अणंतर, अणु य तह, बादरेय उड्ढमहे, आदि, विसयाणुपुव्वि, णियमातह छदिसिंचेव ॥ १ ॥ ३८ ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गिण्हंति ताइं किं संतरं गिण्हंति णिरंतरं गिण्हंति ? गोयमा ! संतरंपि गिण्हंति निरंतरंपि गिण्हंति ॥ संतरं गिण्हमाणे जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं असंखेज्जंसमयं, अंतरं कट्टु गिण्हंति ॥

अर्थ

अनुपूर्वी से ग्रहण करते हैं परंतु अनानुपूर्वी से नहीं ग्रहण करते हैं. अहो भगवन् ! जब अनानुपूर्वी से ग्रहण करते हैं तब क्या तीन दिशि से ग्रहण करते हैं या छ दिशि से ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! नियमा छ दिशि के पुद्गल ग्रहण करते हैं. क्यों कि भाषक जीवों लोक की मध्य में हैं. इस तरह स्पर्शीत ??, अवगाहित, अनंतर, सूक्ष्म व बादर, ऊर्ध्व, अधो, आदि, विषय, पूर्व और नियमा छ दिशा के पुद्गलों भाषक जीव ग्रहण करते हैं ॥३८॥ अहो भगवन् ! जीव जो द्रव्य भाषापने ग्रहण करते हैं वे क्या अंतर सहित ग्रहण करते हैं या निरंतर ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी ग्रहण करते हैं. और निरंतर भी ग्रहण करते हैं अंतर सहित ग्रहण करते जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात समय,

सूत्र

णिरंतरं गिण्हमाणे जहण्णेणं दोसमए उक्कोसेणं असंखेज्जसमए अणुसमय अविरहिय णिरंतरं गिण्हंति ॥ ३९ ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं, णिसिरंति, ताइं किं संतरं णिसरंति णिरंतरं णिसरंति? गोयमा ! संतरणिसरति णो णिरंतरं णिसरंति ॥ संतरणिसिरमाणे एगेणं समएणं गिण्हंति एगेणं समएणं, तेणं गहण-णिसिरणो वाएणं जहण्णेण दुसमय उक्कोसेणं असंखेज्ज समइयं, अंतोमुहुत्तगगहण-णिसरण उवत्रायं करेंति ॥ ४० ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताइं गहियाइं णिसरंति ताइं किं भिण्णाइं णिसरंति अभिण्णाइं णिसरंति ? गोयमा ! भिण्णाइंवि

अर्थ

अंतर रहित ग्रहण करते जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात समय. अनुपूर्वि समय. विरह रहित निरंतर ग्रहण करते हैं ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! भाषापने ग्रहण कीये हुवे पुद्गल को जो जीव नीकालते हैं वे क्या अंतर सहित नीकालते हैं या निरंतर नीकालते है ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी नीकालते हैं और निरंतर भी नीकालते हैं. अंतर सहित नीकालने एक समय में ग्रहण करना एक समय में जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात समय. तथा अंतर्मुहूर्त में भी ग्रहण करना नीकालने का भी उपाय करते हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! जीव जो भाषापने ग्रहण कीये पुद्गलों नीकालते हैं वे क्या भेदाये हुए नीकालते या अभिन्न नहीं भेदाये हुवे नीकालते हैं ? अहो गौतम ! भेदाये हुवे भी नीकालते

णिरंतरं गिण्हमाणे जहण्णेणं दोसमए उक्कोसेणं असंखिज्जसमए अणुसमय अविरहिय णिरंतरं गिण्हंति ॥ ३९ ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइ, णिसिरंति, ताइं किं संतर णिसरंति णिरंतरं णिसरंति? गोयमा ! संतरणिसरति णो णिरंतरं णिसरंति ॥ संतरणिसिरमाणे एगेणं समएणं गिण्हंति एगेण समएणं, तेणं गहण-णिसिरणो वाएणं जहण्णेण दुसमय उक्कोसेणं असंखेज्ज समइयं, अंतोमुहुत्तगगहण णिसरण उवायं करेंति ॥ ४० ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताइं गहियाइं निसरंति ताइं किं भिण्णाइं णिसरति अभिण्णाइं णिसरंति ? गोयमा ! भिण्णाइंवि

अर्थ

अंतर रहित ग्रहण करते जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात समय. अनुपूर्वि समय. विरह रहित निरंतर ग्रहण करते है ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! भाषापने ग्रहण कीये हुवे पुद्गल को जो जीव नीकालते हैं वे क्या अंतर सहित नीकालते हैं या निरंतर नीकालते है ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी नीकालते हैं और निरंतर भी नीकालते हैं. अंतर सहित नीकालने एक समय में ग्रहण करना एक समय यों जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात समय तथा अंतर्मुहूर्त में भी ग्रहण करना नीकालने का भी उपाय करते हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! जीव जो भाषापने ग्रहण कीये पुद्गलों नीकालते हैं वे क्या भेदाये हुए नीकालते या अभिन्न नहीं भेदाये हुवे नीकालते हैं ? अहो गौतम ! भेदाये हुवे भी नीकालते

सूत्र

णिरंतरं गिण्हमाणे जहण्णेणं दोसमए उक्कोसेणं असंखेज्जसमए अणुसमय अविरहिय णिरंतरं गिण्हंति ॥ ३९ ॥ जीवेणं भंते ! जाइ दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं, णिसिरंति, ताइं किं संतरं णिसरंति णिरंतरं णिसरंति? गोयमा ! संतरंणिसरंति णो णिरंतरं णिसरंति ॥ संतरंणिसिरमाणे एगेणं समएणं गिण्हंति एगेणं समएणं, णिसिरंति एएणं गहण-णिसिरणो वाएणं जहण्णेणं दुसमय उक्कोसेणं असंखेज्ज समइयं, अंतोमुहुत्तगगहण णिसरण उवयायं करेंति ॥ ४० ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताइं गहियाइं णिसरंति ताइं किं भिण्णाइं णिसरंति अभिण्णाइं णिसरंति ? गोयमा ! भिण्णाइंपि

अर्थ

अंतर रहित ग्रहण करते जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात समय. अनुपूर्वि समय. विरह रहित निरंतर ग्रहण करते हैं ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! भाषापने ग्रहण कीये हुवे पुद्गल को सो जीव नीकालते हैं वे क्या अंतर सहित नीकालते हैं या निरंतर नीकालते है ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी नीकालते हैं और निरंतर भी नीकालते हैं. अंतर सहित नीकालते एक समय में ग्रहण करते एक समय में जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात समय. तथा अंतर्मुहूर्त में भी ग्रहण करना नीकालने का भी उपाय करते हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! जीव जो भाषापने ग्रहण कीये पुद्गलों नीकालते हैं वे क्या भेदाये हुए नीकाले या अभिन्न नहीं भेदाये हुवे नीकालते हैं ? अहो गौतम ! भेदाये हुवे भी नीकालते

भेदे ॥ सेकिंतं पयराभेदे ? पयराभेदे जण्णं वंसाणवा, वत्ताणवा, णलाणवा कंदलीथंभाणवा, अब्भपडलाणवा, पयरएणं भेदे भवंति सेतं पयाभेदे ॥ सेकिंतं चूण्णिया भेदे? चूण्णियाभेदे! जण्णं तिल चूण्णियाणवा, मुग्गचुण्णाणवा, मास चुण्णाणवा, पिप्पली चुण्णाणवा, मरिय चुण्णाणवा, सिंगबेर चुण्णाणवा, चुण्णियाए भेदे भवति सेतं चुण्णियाभेदे ॥ सेकिंतं अणुतडियाभेदे? अणुतडियाभेदे जण्णं अगडाणवा, तलागाणवा, नदीणवा, दहाणवा, वावीणवा, पुक्खरणीणवा, दीहियाणवा, गुंजालिया वा, सराणवा, सरपंतियाणवा, सरसरपंतियाणवा, अणुतडियाभेदे भवंति ॥

अर्थ

रत्न का खण्ड, सुवर्ण का खण्ड, यों खण्ड के भेद हुए. प्रतर भेद के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! बांस के प्रतर, लता के प्रतर, केली के प्रतर, अबरक [भोडल] के प्रतर, यों प्रतर के भेद हुवे, चूर्णिका भेदके कितने भेद हैं? अहो गौतम! तिलका चूर्ण, मुंगका चूर्ण, उडिदका चूर्ण, पिपलका चूर्ण, मिरचीका चूर्ण, अदरकका चूर्ण, यों चूर्णके भेद हुए. अनुतडित के कितने भेद हैं अहो? गौतम! अनुतडित कि जो कूआ, तलाव, नदी, द्रह, बावडी, पुष्करणी, दीर्घिका, गुंजालिका, सरोवर, सरोवर की पंक्ति, यों अनुतडित के भेद कहे हैं. उत्कारिका के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! मुंगकी फली, मंडुककी फली, तिलकी फली, उडिद की

सूत्र

णिसरंति, णो सच्चामोस भासत्ताए णिसरंति णो असच्चामोस भासत्ताए णिसरंति ॥ एवं एगिंदिय विगलिंदिय वज्जो दंडओ जाव वेमाणिया ॥ एवं पुहुत्तेणवि ॥ ४७ ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं मोसभासत्ताए गिण्हंति ताइं किं सच्चभासत्ताए णिसरंति मोसभासत्ताए णिसरंति, सच्चामोसभासत्ताएं णिसरंति, असच्चा मोस भासत्ताए णिसरंति ? गोयमा! नो सच्चाभासत्ताए णिसरंति, मोसभासत्ताएं णिसरंति, णो सच्चामोसभासत्ताए णिसरंति, णो असच्चा मोसभासत्ताए णिसरंति॥ एवं सच्चामोसभासत्ताएवि, असच्चामोसभासत्ताएवि, एवं चेव णवरं असच्चामोस भासत्ताए विगलिंदिया तहेव पुच्छिज्जंति जाएचेव गिण्हंति ताए चेव णिसरंति॥ एवं एतेणगमेणं एगत्त

अर्थ

नहीं नीकालते हैं. यों एकेन्द्रिय व विकलेन्द्रिय वर्जकर सब दंडक कहना. जैसे एकआश्रिय कहा वैसेही अनेक आश्रिय जानना॥४७॥ अहो भगवन्! जीव जो द्रव्य मृषा भाषापने ग्रहणकरे वे क्या सत्य भाषापने नीकाले, मृषा भाषापने नीकाले, सत्य मृषा भाषापने नीकाले या असत्य मृषा भाषापने नीकाले? अहो गौतम! सत्य भाषापने नीकाले नहीं परंतु मृषा भाषापने नीकाले सत्य मृषा व असत्य मृषा भाषापने भी नीकाले नहीं ऐसे ही सत्य मृषा व असत्य मृषा भाषा का जानना. परंतु असत्य मृषा भाषा में विकलेन्द्रिय की पृच्छा करना.

मोसाभासाणवि एवंचेव णवरं असच्चामोसाभासाए विगलिंदिया पुच्छिज्जंति ॥ जीवेणं भंते! जाइं दव्वाइं असच्चामोसाभासत्ताए गिण्हति, ताइं किं ठियाइं गिण्हंति, अठियाइं गिण्हंति? गोयमा! जहा ओहियदंडतो एवं एतेएणं पुहुत्तेणं दसदंडगा भाणियव्वा॥१६॥जीवेणं भंते! जाइं दव्वाइं सच्चभासत्ताए गिण्हंति ताइं किं सच्चभासत्ताए णिसरंति,मोस भासत्ताए णिसिरंति,सच्चामोस भासत्ताए निसरइ, असच्चामोस भासत्ताए णिसरंति? गोयमा! सच्चभासत्ताए निसरंति, णो मोसभासत्ताए

विकलेन्द्रिय की पृच्छा नहीं करना क्यों कि वे मात्र व्यवहार भाषा बोलते हैं. जैसे सत्य भाषा का कहा वैसे ही मृषा, व सत्य मृषा का जानना. असत्य मृषा का वैसे ही कहना, परंतु विकलेन्द्रिय भी यहां पर ग्रहण करना. इस अभिलाप से विकलेन्द्रिय छोडकर जो द्रव्य असत्य मृषा भाषापने ग्रहण करते हैं वे क्या स्थित ग्रहण करते हैं या अस्थित ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! जैसे औधिक दंडक का कहा. वैसेही एक जीव आश्रिय अनेक जीव आश्रिय के दश दंडक जानना॥४८॥ अहो भगवन्! जीव जो द्रव्य सत्य भाषापने ग्रहण करते हैं व क्या सत्य भाषापने नीकालते हैं, या मृषा भाषापने नीकालते हैं, या सत्य मृषा भाषा पने नीकालते हैं या असत्यमृषा भाषा पने नीकालते हैं ? अहो गौतम ! जीव जो द्रव्य सत्य भाषा पने ग्रहण करते हैं वे सत्य भाषा पनेही नीकालते हैं परंतु मृषा सत्यमृषा, व असत्य मृषा भाषा पने

अणागयवयणे,पच्चक्खवयणे,परोक्खवयणे॥ ४९॥एच्चेयं भंते!एगवयणंवा जाव परोक्खवयणंवा वदमाणे पण्णवणीणं एसाभासा णएसा भासा मोसा? हंता गोयमा ! इच्चेयं एगवयणंवा जाव परोक्खवयणंवा वयमाणे पण्णवणीणं,एसाभासा, णएसा भासा मोसा॥५०॥कतिणं भंते!भासजाया पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारिभासजाया पण्णत्ता तंजहा सच्चमेगं भासज्जायं, वीयमोसं भासज्जायं, तइय सच्चामोसं भासज्जायं,चउत्थं असच्चामोसं भासज्जायं॥५१॥ इच्चेयाइं भंते! चत्तारिभास जायाइं भासमाणे किं आराहए विराहए? गोयमा!

(वर्तमान काल का) वचन जैसे-श्री सीमंधर स्वामी है, १४ अनागत (भविष्य काल) का वचन-जैसे पद्मनाभ स्वामी तीर्थंकर होंगे,१५प्रत्यक्ष वचन-जो दृष्टि सामने होवे, और१६परोक्ष वचन बिना देखाती वस्तु का कहना ॥ ४९ ॥ अहो भगवन्! इसतरह एक वचन बोलता हुवा यावत् परोक्ष वचन बोलता हुवा प्रज्ञापनी भाषा होवे क्या यह भाषा मृषा नहीं है? अहो गौतम! एक वचन यावत् परोक्ष वचन बोलता हुवा यह प्रज्ञापनी भाषा है परंतु मृषा भाषा नहीं है॥५०॥ अहो भगवन्!भाषाकी कितनी जाति कही है? अहो गौतम!भाषाकी चार जाति कही है. १सत्य भाषा, २ मृषा भाषा ३सत्य मृषा (मिश्र) और ४ असत्य मृषा व्यवहार, भाषा ॥५१॥ अहो भगवन्! इनचार प्रकार की भाषा बोलनेवाला क्या आराधक होता है या विराधक होता है? अहो

इग्यारवे भाषा पद के १७ द्वार पांच स्थावर वर्जकर १९ दंडक और समुच्चय जीवपर.

१ स्पर्श द्वार	जीव के प्रदेशों भाषा के पुद्गल स्पर्श कर ग्रहे बिना स्पर्शे नहीं.
२ अवगाह द्वार	जिस आकाश प्रदेशको जीव के प्रदेश अवगाहे वे ही भाषा के पुद्गल अवगाहे.
३ अनंतर परम्पर अवगाढ	अन्तर रहित जीव प्रदेश से लगे हुवे भाषा के पुद्गलों हैं.
४ सूक्ष्म बादर द्वार	जीव भाषापने सूक्ष्म बादर दोनों प्रकार के पुद्गलों ग्रहण करे.
५ ऊर्ध्वदिशा द्वार	ऊर्ध्वदिशा में रहे भाषक आत्मा तीनों दिशा के पुद्गल ग्रहण करे.
६ अधोदिशा द्वार	नीची दिशा में रहे भाषक आत्मा तीनों दिशा के पुद्गल ग्रहण करे.
७ तिर्छीदिशा द्वार	तिर्छी दिशा में भाषा बोलता तीनों दिशा के पुद्गल ग्रहण करे.
८ आदि द्वार	जीव भाषा बोलता शरीर के आदि पुद्गल ग्रहण करे.
९ मध्य द्वार	जीव भाषा बोलता शरीर के मध्य के पुद्गल ग्रहण करे.
१० अंतिम द्वार	जीव भाषा बोलता शरीर के अन्त के पुद्गल ग्रहण करे.
११ स्वपरविषय द्वार	भाषा बोलता अपनी शक्ति से पुद्गल ग्रहण करे, अशक्ति से नहीं.
१२ अनुपूर्वी अनानुपूर्वी द्वार	शरीर लगत पुद्गल अनुक्रम से ग्रहण करे बीच में छोडकर नहीं.
१३ दिशा द्वार	भाषा बोलता हुवा नियमा छ ही दिशा के पुद्गल ग्रहण करे.

इच्चेयाइं चत्तारि भासज्जायाइं आउत्तभासमाणे आराहए णो विराहए तेणंपरं असंजय अविरय अपडिहय अपच्चक्खायपावकम्मे, सच्चंवा भासं भासओ, मोसंवा, सच्चा-मोसंवा, असच्चामोसंवा भासं भासओ नो आराहए विराहए॥ ५२ ॥ एतेसिणं भंते! जीवाणं सच्चभासगाणं, मोसभासगाणं, सच्चामोसभासगाणं, असच्चामोस भासगाणं अभासगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा सच्च भासगा सच्चमोस भासगा असंखेज्जगुणा, मोस भासगा असंखेज्जगुणा, असच्चामोस भासगा असंखेज्जगुणा, अभासगा अणंतगुणा ॥ इति पण्णवणाए भगवईए

गौतम! इन चार प्रकार की भाषा में से उपयोग रखकर यथोक्त बोलनेवाला आराधक होता है; परंतु विराधक नहीं होता है. इस से अन्यथा प्रकार से बोलता हुवा असंयति अविरति व प्रत्याख्यान से पाप-कर्म का नाश नहीं करनेवाला है. वह फीर चाहे सत्य भाषा बोले, मृषा बोले, सत्य मृषा बोले या असत्य मृषा बोले वह आराधक नहीं परंतु विराधक होता है॥ ५२ ॥ अहो भगवन्! सत्य भाषक, मृषा भाषक, सत्य मृषा भाषक व असत्य मृषा भाषक व अभाषक में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? अहो गौतम! सब से थोडे जीव सत्य भाषक, सत्य मृषा भाषक जीव असंख्यातगुने, मृषा भाषक जीव असंख्यातगुने, इससे असत्य मृषा भाषक असंख्यातगुने

इग्यारवे भाषा पद के १७ द्वार पांच स्थावर वर्जकर १९ दंडक और समुच्चय जीवपर.

द्वार	
१ स्पर्श द्वार	जीव के प्रदेशों भाषा के पुद्गल स्पर्श कर ग्रहे बिना स्पर्श नहीं.
२ अवगाह द्वार	जिस आकाश प्रदेशको जीव के प्रदेश अवगाहे वे ही भाषा के पुद्गल अवगाहे.
३ अनन्तर परम्पर अवगाह	अन्तर रहित जीव प्रदेश से लगे हुवे भाषा के पुद्गलों है.
४ सूक्ष्म बादर द्वार	जीव भाषापने सूक्ष्म बादर दोनों प्रकार के पुद्गलों ग्रहण करे.
५ ऊर्ध्वदिशा द्वार	ऊर्ध्वदिशा में रहे भाषक आत्मा तीनों दिशा के पुद्गल ग्रहण करे.
६ अधोदिशा द्वार	नीची दिशा में रहे भाषक आत्मा तीनों दिशा के पुद्गल ग्रहण करे.
७ तिर्च्छीदिशा द्वार	तिर्च्छी दिशा में भाषा बोलता तीनों दिशा के पुद्गल ग्रहण करे.
८ आदि द्वार	जीव भाषा बोलता शरीर के आदि पुद्गल ग्रहण करे.
९ मध्य द्वार	जीव भाषा बोलता शरीर के मध्य के पुद्गल ग्रहण करे.
१० अंतिम द्वार	जीव भाषा बोलता शरीर के अन्त के पुद्गल ग्रहण करे.
११ स्वविषय द्वार	भाषा बोलता अपनी शक्ति से पुद्गल ग्रहण करे, अशक्ति से नहीं.
१२ अनुपूर्वी अनानुपूर्वी द्वार	शरीर लगते पुद्गल अनुक्रम से ग्रहण करे बीच में छोडकर नहीं.
१३ दिशा द्वार	भाषा बोलता हुवा नियमा छ ही दिशा के पुद्गल ग्रहण करे.

* द्वादश शरीर पदम्. *

सूत्र

कतिणं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता तंजहा ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए ॥ १ ॥ णेरइयाण भंते! कइ सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा! तओ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा-वेउव्विए; तेयए, कम्मए॥ एवं असुरकुमारणवि जाव थणियकुमाराणंवि ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! कति सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा !

अर्थ

अब बारह वा शरीर पद कहते हैं. अहो भगवन् ! शरीर कितने कहे हैं ! अहो गौतम ! शरीर पांच कहे हैं जिन के नाम—१ उदारिक-उदार प्रधान तीर्थंकर चक्रवर्ती बलदेव, वासुदेव, केवली, साधु, श्रावक खेचरों आदि उदार पुरुषों को धारन करने योग्य मुक्ति प्राप्ति के हेतुभूत उसे उदारिक शरीर कहते हैं २ वैक्रेय—एक रूप के दो तीन ऐसे अनेक अच्छे बूरे रूप होवे अथवा विशिष्ट क्रिया वाला सो वैक्रेय शरीर. ३ आहारक शरीर साधु को होवे, चवदह पूर्व के पाठक, जीवादि सूक्ष्म विचारोंका निर्णय करने के लिये केवली पास भेजे वह आहारक शरीर. ४ तेजस अग्निभूत है. तथा प्रकार के ग्रहण कीये आहार के पुद्गलों को पाचन करने वाला तथा तेजो लेश्या प्रगट करने के कारनभूत तेजस शरीर है और ५ कार्माण शरीर आठ कर्म के समुदय रूप सब शरीरोंकी उत्पत्ति के कारणभूत वह कार्माण शरीर है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! नारकी को तीन शरीर कहे

सूत्र

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेलगाय, मुक्केलगाय ॥ तत्थणं जे ते बद्धेलगा तेणं असंखेज्जा,असंखेज्जाहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ खेत्तओ असंखेज्ज लोगा ॥ तत्थणं जे ते मुक्केलगा तेणं अणंता, अणंताहि उसप्पिणि ओवसप्पिणीहि अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणतलोगा, दव्वओ अभवसिद्धिएहिंतो अणंत गुणा सिद्धाण अणंत भागो॥ केवतियाणं भंते ! वेउव्वियसरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा!

अर्थ

भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! उदारिक शरीर के दो भेद कहे हैं—बद्धेलग सो धारन कीया हुवा और मुक्केलग सो धारन कर छोड दीया हुवा उस में बद्धेलग शरीर द्रव्य से असंख्यात हैं. क्यों कि मनुष्य तिर्यंच को ही उदारिक बद्धेलक शरीर है वे असंख्यात हैं. यद्यपि निगोद में जीवों अनंत हैं तथापि शरीर अनंत नहीं है परंतु असंख्यात हैं; एक २ शरीर में अनंत जीवों होते हैं काल से-असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी के जितने समय होते हैं उस के एकेक समय में एकेक उदारिक शरीरका अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल व्यतीत हो जावे इतने हैं. क्षेत्र से—असंख्यात लोक भरा जावे उतने हैं मुक्केलक शरीर द्रव्य से अनंत हैं काल से समय २ में एकेक अपहरन करते अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे उतने हैं क्षेत्र से अनंत लोक प्रमाण हैं. अनंत लोक के आकाश प्रदेशपर एकेक मुक्केलक उदारिक शरीर रखने अनंत लोक के जितने आकाश प्रदेश हैं उतने आकाश प्रदेश की राशि जितने शरीर होजाते हैं.

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बंद्धेलगाय, मुक्केल्लगाय ॥ तत्थणं जे ते बंद्धेलगा तेणं असंखेज्जा,असंखेज्जाहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ खेत्तओ असंखेज्ज लोगा ॥ तत्थणं जे ते मुक्केल्लगा तेण अणंता, अणंताहिं उसप्पिणि ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणंतलोगा, दव्वओ अभवसिद्धिएहिंतो अणंत गुणा सिद्धाणं अणंत भागो॥ केवतियाण भंते ! वेउव्वियसरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा!

भेद कहे हैं ' अहो गौतम ' उदारिक शरीर के दो भेद कहे हैं—बंद्धेलग सो धारन कीया हुवा और मुक्केलग सो धारन कर छोड दीया हुवा उस में बद्धेलग शरीर द्रव्य से असंख्यात हैं. क्यों कि मनुष्य तिर्यंच को ही उदारिक बद्धेलक शरीर है वे असंख्यात हैं. यद्यपि निगोद में जीवों अनंत हैं तथापि शरीर अनंत नहीं है परंतु असंख्यात हैं; एक २ शरीर में अनंत जीवों होते हैं काल से-असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी के जितने समय होते हैं उन के एकेक समय में एकेक उदारिक शरीरका अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल व्यतीत हो जावे इतने हैं. क्षेत्र से—असंख्यात लोक भरा जावे इतने हैं. मुक्केलक शरीर द्रव्य से अनंत हैं काल से समय २ में एकेक अपहरन करते अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे इतने हैं. क्षेत्र से अनंत लोक प्रमाण हैं. अनंत लोक के आकाश प्रदेश पर एकेक मुक्केलक उदारिक शरीर रखते अनंत लोक के जितने आकाश प्रदेश हैं उतने आकाश प्रदेश की राशि जितने शरीर होजाते हैं

सूत्र दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बद्धेल्लगाय, मुक्केल्लगाय; तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उसप्पिणि अवसप्पिणीहिं अवहीरंते,कालओ खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ, पयरस्स असंखेज्जइ भागो, तत्थणं जेते मुक्केल्लगा तेणं अणंता अणंताहिं

अर्थ और भी द्रव्य से मान कहते हैं—अभव्य से अनंतगुने और सिद्ध के अनंत वे भाग में हैं. ✱ अब वैक्रेय शरीर का कहते हैं अहो भगवन् ! वैक्रेय शरीर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! वैक्रेय शरीर के दो भेद कहे हैं १ बद्धेल्लक और २ मुक्केल्लक उस में बद्धेल्लक द्रव्य से असंख्यात हैं काल से एकेक समय में एक शरीर का अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होवे, क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि प्रमान हैं उस श्रेणि के जितने आकाश प्रदेश हैं उतने प्रमान में वैक्रेय शरीर के बद्धेल्लक हैं. अब

✱ यहां शिष्य प्रश्न करता है कि पडवाइ सम्यक् दृष्टि भी अभव्य से अनन्तगुने हैं और सिद्ध के अनन्त वे भाग में है तो क्या पडवाइ सम्यक् दृष्टि की राशि से स्यात् अल्प, स्यात् तुल्य या स्यात् अधिक भी होवे ? और भी मुक्त शरीर अनन्त है तो अनन्त शरीर दीखने में नहीं आते हैं तो क्या अनन्त खण्ड होकर परमाणु के भाव से परिणमते हैं ? प्रथम पक्ष में शरीर का अनन्त काल रहना नहीं है और दूसरा पक्ष ग्रहण करे तो खण्ड २ ग्रहण करने से कोई जीव ने उदारिक शरीर के पुद्गल हो अनेक पक्ष परिणमाकर छोडे नहीं है. इसलिये यहां सब पुद्गलास्ति काय से भी पुद्गल हैं वे तो सब जीवों से अनन्त गुने हैं. यह वचन किस तरह समझना ? उत्तर-भगवंतने जो कहा है वह निर्दोष है. एक दोनों पक्ष को हम अंगीकार नहीं करसकते हैं. ... ऐसा कहते हैं कि जीव रहित औदारिक शरीर

भागूणा ॥ तत्थणं जेते मुक्केल्लगा तेणं अणंता अणंताहिं ओसप्पिणी उसप्पिणीहि अवहीरंति, कालतो खेत्ततो अणंता लोगा, दव्वओ सव्वजीवे हिंतो अणंतगुणा, सव्व जीव वग्गस्स अणंतभागो ॥ केइविहाणेणं भंते! कम्मग सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्किल्लगाय, एवं जहा तेयग सरीरा तहा कम्मग सरीराति भाणियव्वा ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते! केवतिया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-बद्धेल्लगाय मुक्किल्लगाय, तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं

है इस में सिद्ध राशि जितने तेजस शरीर सब जीवों से कम हो गये. और मुक्केलक द्रव्य से अनंत हैं काल से एक समय में एक२ अपहरन करते अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे उतने हैं, क्षेत्र से अनंत लोक प्रमाण हैं, सब जीवों से अनंतगुने हैं और सब जीवों के वर्ग से अनंतवे भाग में हैं. अहो भगवन्! कार्माण शरीर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कार्माण शरीर के दो भेद कहे हैं—१. बद्धेलक और २मुक्केलक यों जैसे तेजस शरीरका कथन कीया वैसेही सब कार्माण का कहना. यह पांचों शरीर की समुच्चय वक्तव्यता हुई ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने उदारिक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार के उदारिक शरीर कहे हैं. १. बद्धेलक और २ मुक्केलक. उस में से बद्धेलक शरीर नरक में नहीं है

सेणं असंखेज्जा असंखिज्जाहिं, उसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्ज भागो, तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुल पढमवग्गमूलं वितीय वग्गमूल पडुप्पण्णं अहवणं, अंगुल वितीय वग्गमूल घणप्प-

प्रदेश की भारी श्रेणि के जितने आकाश प्रदेश की राशि यह प्रथम वर्ग मूल, उस को दूसरे वर्ग मूल की साथ गिनने में जितनी श्रेणी होवे उतनी श्रेणी की विषम शूचि होवे इतनी श्रेणी अंगुल प्रमान क्षेत्रमें जानना यहां ऐसा भी कोई कहते हैं कि अंगुल प्रमाण क्षेत्र जाडपने जानना. यह असत्य कल्पना से २५६ प्रदेश की श्रेणी, इस का प्रथम वर्ग मूल १६ का हुवा. दूसरा वर्ग मूल ४ का. यों दोनों का गुनाकार ६४ होवे अर्थात ६४ प्रदेश का एक घन और एक नरक का एक बद्धेलक शरीर, यों दूसरा शरीर यों जितने विष्कंभ शूचि अंगुल आकाश प्रदेश के ६४ प्रदेश के घन इतने सातों नरक के बद्धेलक वैक्रय शरीर है अथवा दूसरा प्रकार-अंगुलप्रमान जो प्रतर क्षेत्रमें असंख्यात श्रेणिका दूसरा वर्ग मूल पूर्वोक्त चार की संख्या, वे चार रूप उस के घन ६४ रूप उतनी श्रेणी यहां ग्रहण करना. यों रूप करके दूसरा भेद होता है. यहां परंपरा से दो प्रकार के भेद हैं परंतु परमार्थ से एक ही होता है. यों स्वकल्पनासे ६४ प्रदेश रूप एक श्रेणि का सद्भाव होवे, यों असंख्यात चौसठ २ प्रदेशों की श्रेणि होवे. यों प्रदेश श्रेणि की जो राशि होवे उतने नारकी को बद्धेलक वैक्रेय शरीर होते हैं. अर्थात् अंगुल प्रमान जाडा-

ओरालिया णत्थि, तत्थणं,जेते मुक्किल्लगा तेणं अणंता, ... वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ?
तहा भाणियव्वा ॥ ४ ॥ णेरइयाणं भंते ! केवतिया वेउव्विय सरीरा ... तत्थणं जे ते बद्धेल्लगा
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्किल्लगाय ॥ तत्थणं जे ते बद्धेल्लगा

क्यों कि वे वैक्रेय शरीर धारन करनेवाले हैं, और मुक्केल्लक अनंत हैं क्यों कि नेरियोंने गतकाल में अनंत संसार का परिभ्रमण कर अनंत उदारिक शरीर धारन कर छोड दीये हैं. इस का कथन समुचय जीव आश्रिय उदारिक का कहा वैसे ही कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को वैक्रेय शरीर कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! नारकी को वैक्रेय शरीर दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा-१ बद्धेल्लक और २ मुक्केल्लक. उस में बद्धेल्लक असंख्यात हैं क्यों कि प्रत्येक नरक में असंख्यात नेरियों हैं. काल से-एक २ समय में एक का अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे, क्षेत्र से-असंख्यात श्रेणि के जितने आकाश प्रदेश हैं उतने बद्धेल्लक वैक्रेय शरीरवाले नेरिये हैं. अब यहां पर विवरण करते हैं. प्रतर के असंख्यातवे भाग में असंख्यात श्रेणियां हैं, उस के जितने आकाश प्रदेश हैं उतने नारकी के बद्धेल्लक वैक्रेय शरीर हैं यहां पर प्रतर के असंख्यातवे भाग में असंख्यात योजन की क्रोडी भी होवे तो यहां असंख्यात योजन की क्रोडी में जितने आकाश प्रदेश होवे वह अंगुल प्रमाण असंख्यात प्रदेश की श्रेणि है उस का क्षेत्र घनकृत लोक सात राजु प्रमाण लम्बा, चौडा व ... होता है. वह यहां असंख्यात

कुमाराणं भंते ! केवइया वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय, मुक्केल्लगाय, तत्थणं जे ते बद्धेलगा तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति,कालतो खेत्तता असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जति भागो तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जई भागो ॥ तत्थणं जे ते मुक्केल्लगा तेणं जहा ओरालियस्स मुक्केल्लगा तहा भाणियव्वा ॥ आहारग सरीरा जहा

दो वैक्रेय शरीर कहे हैं. जिन के नाम—१ बद्धेलक और २ मुक्केलक. उस में जो बद्धेलक हैं वे असंख्यात हैं क्यों कि असुर कुमार देव असंख्यात हैं काल आश्रिय समय २ में एकेक हरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे और क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि प्रतर के जितने आकाश प्रदेश होवे उस प्रमाण में हैं. नरक से इस में इतनी विशेषता है कि उस श्रेणि के प्रमाण में जितने विष्कम्भपने शुचि उस विस्तारपने अंगुल मात्र क्षेत्र के प्रदेश की राशि संबंधि प्रथम वर्ग मूल असंख्यातवे भाग मात्र है अर्थात् जो अंगुल मात्र प्रदेश की राशि में असत् कल्पना से २५६ प्रमाण हैं उसे प्रथम वर्ग मूल १६ की संख्या लक्षण उस का असंख्यातवा भाग के जितने आकाश प्रदेश की श्रेणि है उस श्रेणि के जितने आकाश की शुचि असंख्यात भाग कम है. इस लिये नरक से असंख्यातवे भाग असुर कुमार हैं. रत्नप्रभा के नेरिये से असुर कुमार अधिक है परंतु सातों नरक के नेरिये से असंख्यातवे भाग है.

माण मेत्ताओ सेढीतो. तत्थणं जेते मुक्केल्लगा तेणं जहा उरालियस्स .. मुक्केल्लगा तहा भाणियव्वा ॥ ५ ॥ णेरइयाणं भंते ! केवतिया आहारग सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा वद्धेलगाय मुक्केल्लगाय एवं जहा ओरालिय वद्धेलगा मुक्केलगाय भाणिया तहेव आहारगावि भाणियव्वा ॥ तेयाकम्माइं जहा एतिसिंचेव वेउव्वियाइं दोवियाइं ॥६॥ असुरकुमाराणं भंते! केवतिया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता? गोयमा! जहा णेरइयाणं ओरालियसरीरा भाणिया तहेव एतेसिंपि भाणियव्वं ॥ असुर

आकाश के प्रदेश हैं उस की दश कल्पना से ६४ प्रदेश की श्रेणि गिनना यों गिनते २ असंख्यात श्रेणि की राशि होवे. मुक्केलक शरीर का नारकी के उदारिक शरीर जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने आहारक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! नारकी को दो प्रकार के आहारक शरीर कहे हैं तद्यथा-१ बद्धेलक और २ मुक्केलक. यों जिस प्रकार औदारिक शरीर का कहा वैसेही कहना. क्योंकि चउदह पूर्वधारी पडवाइ होकर नरक में जाते हैं. और तेजस कार्माण का वैक्रेय शरीर जैसे कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार को कितने औदारिक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे नेरिये के उदारिक शरीर की व्याख्या कही वैसे ही असुर कुमार के उदारिक शरीर की व्याख्या कहना. अहो भगवन् ! असुर कुमार को कितने वैक्रेय शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार को

कुमाराणं भंते ! केवइया वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय, मुक्केल्लगाय, तत्थणं जे ते बद्धेलगा तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति,कालतो खेत्तो असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जति भागो तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जइ भागो ॥ तत्थणं जे ते मुक्केलगा तेणं जहा ओरालियस्स मुक्केलगा तहा भाणियव्वा ॥ आहारग सरीरा जहा

दो वैक्रेय शरीर कहे हैं. जिन के नाम—१ बद्धेलक और २ मुक्केलक. उस में जो बद्धेलक हैं वे असंख्यात हैं क्यों कि असुर कुमार देव असंख्यात हैं काल आश्रिय समय २ में एकेक हरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे और क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि प्रतर के जितने आकाश प्रदेश होवे इस प्रमाण में हैं नरक से इस में इतनी विशेषता है कि उस श्रेणि के प्रमाण में जितने विष्कम्पपने सुचि उस विस्तारपने अंगुल मात्र क्षेत्र के प्रदेश की राशि संबंधि प्रथम वर्ग मूल असंख्यातवे भाग मात्र है अर्थात् जो अंगुल मात्र प्रदेश की राशि में असत् कल्पना से २५६ प्रमाण हैं उसे प्रथम वर्ग मूल १६ की संख्या लक्षण उस का असंख्यातवा भाग के जितने आकाश प्रदेश की श्रेणि है उस श्रेणि के जितने आकाश की शुचि असंख्यात भाग कम है. इस लिये नरक से असंख्यातवे भाग असुर कुमार हैं. रत्नप्रभा के नेरिये से असुर कुमार अधिक हैं परंतु सातों नरक के नेरिये से असंख्यातवे भाग ही हैं

सूत्र

एतेसिंचेव ओरालिया तहेव दुविहा भाणियव्वा ॥ तेया कम्मग सरीरगा दुविहावि, जहा एतेसिंचेव वेउव्विय ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ ७ ॥ पुढवि काइयाणं भंते! केवतिया ओरालिया सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्ल-गाय मुक्केल्लगाय, तत्थणं जेते बद्धेल्लगा, तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति,कालतो खेत्ततो असंखेज्जालोगा, तत्थणं जेते मुक्केल्लगा तेणं अणंता. अणंताहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति, कालओ, खेत्तओअणंतालोगा,

अर्थ

अर्थात् ... प्रदेश की एक श्रेणि और असुर कुमार का एक बद्धेलक शरीर यों करते २ सुचि अंगुल प्रमाण क्षेत्र खाली होवे इतने हैं जो मुक्केलक हैं उस की व्याख्या उदारिक मुक्केलक जैसे कहना. दोनों प्रकार के आहारक शरीर का उदारिक जैसे कहना. तेजस कार्माण का वैक्रेय जैसे कहना. जैसे असुर कुमार का कथन किया वैसे ही स्थनित कुमार पर्यंत दशों भवनपति का कथन करना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के कितने उदारिक शरीर कहे हैं? अहो गौतम! दो प्रकारके उदारिक शरीर कहे हैं. १ बद्धेलक और २ मुक्केलक. उस में जो बद्धेलक हैं वे असंख्यात हैं, समय २ में एक अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे, क्षेत्र से असंख्यात लोक प्रमाण हैं, जो मुक्केलक हैं वे अनंत हैं. अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे,क्षेत्रसे अनंत लोक के आकाश प्रदेशकी राशि प्रमाण हैं

कुमाराणं भंते ! केवइया वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय, मुक्केल्लगाय, तत्थणं जेते बद्धेलगा तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति, कालतो खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जति भागो तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जई भागो ॥ तत्थणं जे ते मुक्केल्लगा तेणं जहा ओरालियस्स मुक्केल्लगा तहा भाणियव्वा ॥ आहारग सरीरा जहा

दो वैक्रेय शरीर कहे है. जिन के नाम—१ बद्धेलक और २ मुक्केलक. उस में जो बद्धेलक है वे असंख्यात है क्यों कि असुर कुमार देव असंख्यात हैं काल आश्रिय समय २ में एकेक हरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे और क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि प्रतर के जितने आकाश प्रदेश होवे इस प्रमाण में हैं. नरक से इस में इतनी विशेषता है कि उस श्रेणि के प्रमाण में जितने विष्कम्भपने शुचि उस विस्तारपने अंगुल मात्र क्षेत्र के प्रदेश की राशि संबंधि प्रथम वर्ग मूल असंख्यातवे भाग मात्र है अर्थात् जो अंगुल मात्र प्रदेश की राशि में असत् कल्पना से २५६ प्रमाण है उसे प्रथम वर्ग मूल १६ की संख्या लक्षण उस का असंख्यातवा भाग के जितने आकाश प्रदेश की श्रेणि है उस श्रेणि के जितने आकाश की शुचि असंख्यात भाग कम है. इस लिये नरक से असंख्यातवे भाग असुर कुमार हैं. रत्नप्रभा के नेरिये से असुर कुमार अधिक हैं परंतु सातों नरक के नेरिये से असंख्यातवे भाग ही हैं

सूत्र

एतेसिंचेव ओरालिया तहेव दुविहा भाणियव्वा ॥ तेया कम्मग सरीरगा दुविहावि, जहा एतेसिंचव वेउव्विय ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ ७ ॥ पुढवि काइयाणं भंते! केवतिया ओरालिया सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय, तत्थणं जेते बद्धेल्लगा, तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहि अवहीरंति, कालतो खेत्तो असंखेज्जालोगा, तत्थणं जेते मुक्केल्लगा तेणं अणंता, अणंताहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहि अवहीरंति, कालओ, खेत्तोअणंतालोगा,

अर्थ

अर्थात् २५६ प्रदेश की एक श्रेणि और असुर कुमार का एक बद्धेलक शरीर यों करते २ शुचि अंगुल प्रमाण क्षेत्र खाली होवे इतने हैं. जो मुक्केलक हैं उस की व्याख्या उदारिक मुक्केलक जैसे कहना. दोनों प्रकार के आहारक शरीर का उदारिक जैसे कहना. तेजस कार्माण का वैक्रेय जैसे कहना. जैसे असुर कुमार का कथन किया वैसे ही स्थनित कुमार पर्यंत दशों भवनपति का कथन करना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के कितने उदारिक शरीर कहे हैं? अहो गौतम! दो प्रकारके उदारिक शरीर कहे हैं. १ बद्धेलक और २ मुक्केलक. उस में जो बद्धेलक हैं वे असंख्यात हैं, समय २ में एक अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे, क्षेत्र से असंख्यात लोक प्रमाण हैं, जो मुक्केलक हैं वे अनंत हैं. अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे, क्षेत्रसे अनंत लोक के आकाश प्रदेशकी राशि प्रमाण हैं

सूत्र

एतेसिंचेव ओरालिया तहेव दुविहा भाणियव्वा ॥ तेया कम्मग सरीरगा दुविहावि, जहा एतेसिंचेव वेउव्विय ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ ७ ॥ पुढवि काइयाणं भंते! केवतिया ओरालिया सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय, तत्थणं जेते बद्धेल्लगा, तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहि अवहीरंति,कालतो खेत्तो असंखेज्जालोगा, तत्थणं जेते मुक्केल्लगा तेणं अणंता, अणंताहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहि अवहीरंति, कालओ, खेत्तोअणंतालोगा,

अर्थ

अर्थात् २५६ प्रदेश की एक श्रेणि और असुर कुमार का एक बंधेलक शरीर यों करते २ शुचि अंगुल प्रमाण क्षेत्र खाली होवे इतने हैं. जो मुक्केलक हैं उस की व्याख्या उदारिक मुक्केलक जैसे कहना. दोनों प्रकार के आहारक शरीर का उदारिक जैसे कहना. तेजस कार्माण का वैक्रेय जैसे कहना. जैसे असुर कुमार का कथन कीया वैसे ही स्थनित कुमार पर्यंत दशों भवनपति का कथन करना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के कितने उदारिक शरीर कहे हैं? अहो गौतम! दो प्रकारके उदारिक शरीर कहे हैं. १ बंधेलक और २ मुक्केलक. उस में जो बंधेलक हैं वे असंख्यात हैं, समय २ में एक अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे, क्षेत्र से असंख्यात लोक प्रमाण हैं, जो मुक्केलक हैं वे अनंत हैं. अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे,क्षेत्रसे अनंत लोक के आकाश प्रदेश की राशिप्रमाण हैं

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेलगाय मुक्केलगाय तत्थणं जेते बद्धेलगा तेणं असंखेज्जा समए समएणं अवहीरमाणे २ पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति, नो चेवणं अवहारिया सिया, मुक्केलगा जहा पुढविकाइयाणं ॥ आहारयतेया कम्मगा जहा पुढविकाइयाणं तहा भाणियव्वा ॥ वणप्फइ काइयाणं जहा पुढविकाइयाणं णवरं तेयाकम्मगा जहा ओहिया, तेया कम्मगा ॥ ८ ॥ बेइंदियाणं भंते ! केवइया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेलगाय मुक्केलगाय, तत्थणं जे ते बद्धेलगा तेणं असं-

अर्थ

इस में जो बद्धेलक हैं वे असंख्यात हैं, समय २ में एक २ अपहरन करते पल्योप के असंख्यातवे भाग जितने होवे. यद्यपि वायुकाया असंख्यात लोकाकाश प्रमान हैं तद्यपि सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त और अपर्याप्त इन चार भेद में से मात्र पर्याप्त बादर वायुकाया में ही वैक्रेय शरीर पाता है अन्य में नहीं पाता है. और मुक्केलक का पृथ्वीकाया का कहा वैसे ही कहना. वनस्पतिकाया के बद्धेलक मुक्केलक ऐसे दोनों शरीरों का पृथ्वीकाया का कहा वैसे कहना. परंतु तेजस व कार्माण का जैसा औधिक सूत्र में कहा वैसा कहना. अर्थात् जितने जीव हैं उतनेही बद्धेलक शरीर हैं और मुक्केलक अनंतगुने हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय के कितने उदारिक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार के उदारिक शरीर कहे हैं, जिनके

अंगुल पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जइ भागो, मुक्केलगा तहेव ॥१०॥ मणुस्साणं भंते ! केवइया ओरालिय सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय; तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा. जहण्णपदे संखेज्जा, संखेज्जाओ कोडाकोडीओ,एगूणतीसाइट्ठाणाइति जमलपयस्स उवरिं चउजमल पयस्सहेट्ठा, अहवणं छट्ठोवग्गो पंचमवग्ग पडुप्पणो अहवणं छण्णो ट्ठाणगदायिरासी,

असंख्यात है काल से असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी के समय प्रमान है, क्षेत्र से प्रतर के असंख्यात भाग में असंख्यात श्रेणी है उन की राशि तुल्य है. मुक्केलक वैसे ही कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य को कितने उदारिक शरीर कहे हैं? अहो गौतम! दो प्रकार के उदारिक शरीर कहे हैं जिनके नाम बद्धेलक और मुक्केलक उन में जो बद्धेलक हैं वे स्यात् संख्यात है. स्यात् असंख्यात है. क्योंकि गर्भज मनुष्य के प्रचार प्रस्रवणादि चउदह स्थान में सम्मूर्छिम जीवों की उत्पत्ति होती है. उस आश्रिय असंख्यात कहे हैं वे कदाचित होते हैं और कदाचित नहीं भी होते हैं क्यों कि उन की अंतर्मुहूर्त की स्थिति कही है. और उन का विरह काल चौविस मुहूर्त का है. इस से स्यात शब्द का प्रयोग कीया है. और भी गर्भज मनुष्य सदैव संख्यात नहीं रहते हैं. इस से उदारिक शरीर के बद्धेलक भी स्यात संख्यात है, संख्यात कोडा कोडी मनुष्य हैं. उन तीस गुनतीस स्थानक जिस में आठ २ स्थान को जमल पद कहते हैं ऐसे

वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय, तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं असंखेज्जा समए २ अवहीरमाणाइं असंखिज्जेणं कालेणं अवहीरंति नो चेवणं अवहिआसिया, तत्थणं जे ते मुक्केल्लगा तेणं जहा ओरालिया ओहिया

अर्थात् अर्ध करने से जब उस राशि के अंत में मतिपूर्ण एक रूप बचे खंडित होवे नहीं वह राशि गुनतीस अंक की है जैसे प्रथम वर्ग चार का उस के दो छेद होवे जैसे चार के आधे दो और दो का आधा एक ऐसे ही उक्त प्रकार आगे भी कहे हुवे रूपों में भी भावना करना. ऐसे ही दूसरे वर्ग में आठ छेदांक होवे. छठे वर्ग में चौसठ छेदांक होवे और पांचवा वर्ग छठे वर्ग साथ गुना है इसलिये पांचवा वर्ग का छेदांक छठे वर्ग में समावेश हुवा, इस से छठा वर्ग का छेदांक नहीं है. पांचवे वर्ग के ३२ छेदांक और छठे वर्ग के ६४ छेदांक मीलकर ९६ छेदांक होवे. इतने गर्भज मनुष्य के बद्धेल्लक शरीर हैं. अब उत्कृष्ट पद कहते हैं. मनुष्य के उदारिक शरीर बद्धेल्लक असंख्यात हैं काल से प्र० २ समय में एक नीकालते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे, क्षेत्र से अंगुल प्रमाण क्षेत्र की श्रेणि में जितने आकाश प्रदेश होवे उस का प्रथम वर्ग मूल २५६ और तीसरा वर्ग मूल प्रथम वर्ग की राशि साथ गुने सब १०२४ प्रदेश की राशि होवे उतने प्रमाण का जो क्षेत्र का खण्ड (१०२४ प्रदेश का खण्ड) है उस में एक मनुष्य का शरीर एक समुच्चय. इस प्रकार अपहरन करते २ उस श्रेणि में से यथोक्त प्रमाण

मूल

पलिभागो पयरस्स मुक्केल्लगा जहा ओहिया ॥ ओरालिया तेया कम्मगा जहा एएसिणंचेव वेउव्विया ॥ १२ ॥ जोइसियाणं एव चेव, णवरं तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई बिछप्पन्नंगुलसयवग्ग पलिभागो पयरस्स ॥ १३ ॥ वेमाणियाणं पुच्छा ?

भावार्थ

वर्ग को यहां एकेक व्यंतर का शरीर रखे यों करते सात राजु का प्रतर पूरा होवे, इतने संख्यात योजन के टुकडे का जो वर्ग उस रूप प्रति भाग अंश रूप उस विभाग से एक २ व्यंतर का अपहरन करते संपूर्ण प्रतर खाली होजावे; इस प्रकार नारकी से व्यंतर असंख्यातगुने हैं. और तिर्यंच पंचेन्द्रिय से व्यंतर असंख्यातगुने कमी हैं क्यों कि पूर्वोक्त तिर्यंच की विष्कम्भ शूचि असंख्यात गुने हीन जानना. मुक्केलक का उदारिक शरीर जैसे कहना. आहारक शरीर का कथन असुरकुमार जैसे करना. तेजस व कार्माण शरीर का जैसे वैक्रिय शरीर का कहा वैसे ही कहना ॥ १२ ॥ ज्योतिषी का भी वैसे ही कहना, परंतु इतना विशेष कि असंख्यात योजन की विष्कम्भ शूचि पूर्वोक्त विस्तार प्रमाने जानना. व्यंतर की विष्कम्भ शूचि से ज्योतिषी की विष्कम्भ शूचि संख्यातगुनी अधिक है. और यहां २५६ के वर्ग रूप प्रतिभाग अर्थात् सात राजु प्रतर का एकेक अंश जानना. यथोक्त २५६ अंगुल प्रमान एक अंश और एक ज्योतिषी यों अपहरते सात राजु का एक प्रतर पूरा होवे. अथवा २५६ अंगुल के एकेक अंश में एकेक ज्योतिषी की स्थापना करते पूरा प्रतर सात राजु का पूरा होवे. जितने सात राजु प्रतर

सूत्र

मुक्केलया ॥ आहारग सरीरा जहा ओहिया ॥ तेया कम्मगा जहा एएसिंचेव ओरा- लिया ॥ ११ ॥ वाणमंतराणं जहा नेरइयाणं, ओरालिया आहारगाय वेउव्विय सरीरगाणि जहा नेरइयाणं णवरं तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई संखेज्ज जोयणसतवग्ग

अर्थ

१.०२४ प्रदेश का क्षेत्र खण्ड बाकी रहे यदि के एक एक मनुष्य का शरीर होवे तो उस श्रेणि का खण्ड पूरा होवे परंतु यह एक शरीर नहीं है. क्यों कि सर्वोत्कृष्ट एक स्थान गर्भज मनुष्य संमूर्छिम मनुष्य इतनेही हैं, अधिक नहीं है. मुक्केलक शरीर का औधिक उदारिक शरीर जैसे जानना. अहो भगवन् ! मनुष्य के वैक्रेय शरीर कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! दो कहे हैं. १. बद्धेलक और २ मुक्केलक. इस में जो बद्धेलक हैं वे संख्यात हैं क्यों की सम्मूर्छिम मनुष्य को वैक्रेय शरीर नहीं है. उन का एकेक समय में एकेक अपहरन करे तो संख्यात काल में अपहरन होवे, वैक्रेय शरीर का मुक्केलक उदारिक जैसे कहना. आहारिक के बद्धेलक व मुक्केलक शरीर समुच्चय जैसे जानना. तेजस कार्माण के बद्धेलक मुक्केलक मनुष्य के उदारिक शरीर का कहा वैसे ही कहना ॥ ११ ॥ वाणव्यंतर को नारकी जैसे कहना. उदारिक व आहारिक के बद्धेलक नहीं है. परंतु नरक से व्यंतर के शरीर असंख्यातगुने अधिक हैं, इस में विषय शुचि से विशेषत्व कहते हैं असंख्यात श्रेणीवाला सात राजु का जो प्रतर है उस का असंख्यातवा भाग उस श्रेणिका विस्तार संख्यात योजन के सैकडे का

॥ त्रयोदश परिणाम पदम् ॥

कतिविहेणं भंते ! परिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते तंजहा जीव परिणामेय, अजीव परिणामेय ॥ १ ॥ जीव परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते तंजहा-१ गति परिणामे, २ इंदिय परिणामे ३ कसाय परिणामे, ४ लेस्सापरिणामे, जोग परिणामे, ६ उवओग परिणामे, ७ णाण-परिणामे, ८ दंसण परिणामे, ९ चरित्त परिणामे, १० वेदपरिणामे ॥ २ ॥ गति-

अब तेरहवा परिणाम पद कहते हैं जो गत काल में परिणमे, वर्तमान काल में परिणमते हैं और आनागत काल में परिणमेंगे उस परिणाम कहते हैं. अहो भगवन् ! परिणाम कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो गौतम ! परिणाम दो प्रकार के कहे हैं. जिन के नाम—१ जीव परिणाम और २ अजीव परिणाम ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जीव परिणाम के दश भेद कहे हैं उन के नाम—१ गति परिणाम, २ इंद्रिय परिणाम, ३ कषाय परिणाम, ४ लेश्या परिणाम, ५ योग परिणाम, ६ उपयोग परिणाम, ७ ज्ञान परिणाम, ८ दर्शन परिणाम, ९ चारित्र परिणाम और १० वेद परिणाम ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! गति परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! गति

॥ त्रयोदश परिणाम पदम् ॥

कतिविहेणं भंते ! परिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते तंजहा जीव परिणामेय, अजीव परिणामेय ॥ १ ॥ जीव परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते तंजहा-१ गति परिणामे, २ इंदिय परिणामे ३ कसाय परिणामे, ४ लेस्सापरिणामे, जोग परिणामे, ६ उवओग परिणामे, ७ णाण-परिणामे, ८ दंसण परिणामे, ९ चरित्त परिणामे, १० वेदपरिणामे ॥ २ ॥ गति-

अब तेरहवा परिणाम पद कहते हैं. जो गत काल में परिणमे, वर्तमान काल में परिणमते हैं और आगामिक काल में परिणमेंगे इसे परिणाम कहते हैं. अहो भगवन् ! परिणाम कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो गौतम ! परिणाम दो प्रकार के कहे हैं. जिन के नाम—१ जीव परिणाम और २ अजीव परिणाम ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जीव परिणाम के दस भेद कहे हैं. उन के नाम—१ गति परिणाम, २ इन्द्रिय परिणाम, ३ कषाय परिणाम, ४ लेश्या परिणाम, ५ योग परिणाम, ६ उपयोग परिणाम, ७ ज्ञान परिणाम, ८ दर्शन परिणाम, ९ चारित्र परिणाम और १० वेद परिणाम ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! गति परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! गति

सूत्र

परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते—तंजहा. नेरइय-गति परिणामे, तिरिक्ख जोणिय गति परिणामे, मणुयगति परिणामे, देवगति परिणामे, ॥ ३ ॥ इंदिय परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा सोतिंदिय परिणामे, चक्खिंदिय परिणामे, घाणिंदिय परिणामे, जिब्भिंदिय परिणामे, फासिंदिय परिणामे, ॥ ४ ॥ कसाय परिणामेणं, भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा कोह कसाय परिणामे जाव लोभ कसाय परिणामे ॥ ५ ॥ लेस्सा परिणामेणं भंते ! कतिविहे

भावार्थ

परिणाम के चार भेद कहे हैं. उन के नाम—१ नरक गति परिणाम २ तिर्यंच गति परिणाम ३ मनुष्य गति परिणाम और ४ देव गति परिणाम ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इंद्रिय परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! इंद्रिय परिणाम के पांच भेद कहे हैं—१ श्रोत्रेन्द्रिय परिणाम २ चक्षुइन्द्रिय परिणाम ३ घ्राणेन्द्रिय परिणाम ४ जिव्हेन्द्रिय परिणाम और ५ स्पर्शेन्द्रिय परिणाम ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! कषाय परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कषाय परिणाम के चार भेद कहे हैं—१ क्रोध कषाय परिणाम, २ मान कषाय परिणाम ३ माया कषाय परिणाम और ४ लोभ कषाय परिणाम ॥ ५ ॥ अहो

सूत्र

पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते तंजहा किण्हलेसा परिणामे, नीललेसा परिणामे, काउलेसा परिणामे, तेउलेसा परिणामे, पम्हलेसा परिणामे, सुक्कलेसा परिणामे ॥ ६ ॥ जोग परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा मणजोग परिणामे, वइजोग परिणामे, कायजोग परिणामे, ॥ ७ ॥ उवओग परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा सागारोवओग परिणामे, अणागारोवओग परिणामेय ॥ ८ ॥ णाण परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा आभिणिबोहियणाण परिणामे

अर्थ

भगवन् ! लेश्या परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! लेश्या परिणाम के छ भेद कहे हैं, जिन के नाम—१ कृष्ण लेश्या परिणाम, २ नील लेश्या परिणाम, ३ कापुत लेश्या परिणाम, ४ तेजो लेश्या परिणाम, ५ पद्म लेश्या परिणाम और ६ शुक्ल लेश्या परिणाम ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जोग परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जोग परिणाम के तीन भेद कहे हैं—१ मन योग परिणाम २ वचन योग परिणाम और ३ काया योग परिणाम ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! उपयोग परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! उपयोग परिणाम के दो भेद कहे हैं—साकारोपयोग परिणाम और अनाकारोपयोग परिणाम ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञान परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! ज्ञान परिणाम

सूत्र

परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते—तंजहा ...... गति परिणामे, तिरिक्ख जोणिय गति परिणामे, मणुयगति परिणामे, देवगति परिणामे, ॥ ३ ॥ इंदिय परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा सोतिंदिय परिणामे, चक्खिंदिय परिणामे, घाणंदिय परिणामे, जिब्भिंदिय परिणामे, फासिंदिय परिणामे, ॥ ४ ॥ कसाय परिणामेणं, भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा कोह कसाय परिणामे जाव लोभ कसाय परिणामे ॥ ५ ॥ लेस्सा परिणामेणं भंते ! कतिविहे ......

अर्थ

परिणाम के चार भेद कहे हैं. उन के नाम—१ नरक गति परिणाम २ तिर्यंच गति परिणाम ३ मनुष्य गति परिणाम और ४ देव गति परिणाम ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इंद्रिय परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! इंद्रिय परिणाम के पांच भेद कहे हैं—१ श्रोत्रेन्द्रिय परिणाम २ चक्षुइन्द्रिय परिणाम ३ घ्राणेन्द्रिय परिणाम ४ जिव्हेन्द्रिय परिणाम और ५ स्पर्शेन्द्रिय परिणाम ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! कषाय परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कषाय परिणाम के चार भेद कहे हैं—१ क्रोध कषाय परिणाम, २ मान कषाय परिणाम ३ माया कषाय परिणाम और ४ लोभ कषाय परिणाम ॥ ५ ॥ अहो

...सकसाइय चरित्त परिणामे, अहक्खाय चरित्त परिणामे ॥ ११ ॥ वेदपरिणा-मेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा-इत्थीवेद परिणामे पुरिसवेद परिणामे णपुंसगवेद परिणामे ॥ १२ ॥ णेरइया-गति परिणामेणं निरय गतिया, इंदिय परिणामेणं पंचिंदिया, कसाय परिणामेणं-कोह कसाईवि जाव लोभ कसाईवि; लेस्सा परिणामेणं कण्हलेसावि नीललेसावि काउलेसावि ॥ जोगपरिणामेणं-मणजोग परिणामेवि, वइजोग परिणामेवि कायजोग परिणामेवि, । उवओगपरिणामेणं-सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि । णाणपरिणामेणं-आभिणिबोहियणाणीवि, सुयणाणीवि, ओहिणा-

...चारित्र और ५ यथाख्यात चारित्र ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! वेद परिणाम के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! वेद परिणाम के तीन भेद कहे हैं—१ स्त्री वेद परिणाम २ पुरुषवेद परिणाम और ३ नपुंसक वेद परिणाम ॥ १२ ॥ अब चौवीस दंडक पर परिणामों के भेद उतारते हैं. नारकी व आश्रय—गति परिणाम में नरक गतिवाले, इन्द्रिय परिणाम में पांचों इन्द्रियवाले, कषाय परिणाम में क्रोध कषाय यावत् लोभ कषाय यों चारों कषायवाले, लेश्या परिणाम से कृष्ण लेश्यावाले नील लेश्यावाले व कापोत लेश्यावाले, योग परिणाम से मन योग परिणाम, वचन योग परिणाम व काया योग परिणाम यों तीनों योगवाले, उपयोग परिणाम में साकार व अनाकार यों दोनों उपयोगवाले, ज्ञान परिणाम से आभिनिबोधिक ज्ञान,

सुयणाण परिणामे ओहिणाण परिणामे, मणपज्जवणाण परिणामे, केवलणाण परिणामे ॥ अण्णाण परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा मइअण्णाण परिणामे, सुय अण्णाण परिणामे, विभंगणाण परिणामे ॥ ९ ॥ दंसण परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा सम्मदंसण परिणामे, मिच्छा दंसण परिणामे, सम्मामिच्छादंसण परिणामे ॥ १० ॥ चरित्त परिणामेणं भंते कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा सामाइय चरित्त परिणामे, छेदोवट्ठावणिय चरित्त परिणामे, परिहारविसुद्धि चरित्त परिणामे,

अर्थ

के पांच भेद कहे हैं—१ आभिनिबोधिक ज्ञान परिणाम २ श्रुत ज्ञान परिणाम ३ अवधि ज्ञान परिणाम ४ मनःपर्यव ज्ञान परिणाम और ५ केवल ज्ञान परिणाम. अहो भगवन् ! अज्ञान परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अज्ञान परिणाम के तीन भेद कहे हैं—१ मति अज्ञान परिणाम २ श्रुत अज्ञान परिणाम और विभंग ज्ञान परिणाम ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! दर्शन परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! दर्शन परिणाम के तीन भेद कहे हैं—१ सम्यक् दर्शन परिणाम २ मिथ्या दर्शन परिणाम और ३ मिश्र दर्शन परिणाम ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! चारित्र परिणाम के कितने भेद ? अहो गौतम ! चारित्र परिणाम के पांच भेद कहे हैं—१ सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्ध

सहुम संपराइय चरित्त परिणामे, अहक्खाय चरित्त परिणामे ॥ ११ ॥ वेदपरिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा-इत्थीवेद परिणामे पुरिसवेद परिणामे, णपुंसगवेद परिणामे॥ १२॥ णेरइया-गति परिणामेणं निरय गतिया, इदिय परिणामेणं पंचिंदिया, कसाय परिणामेणं-कोह कसाईवि जाव लोभ कसाईवि; लेस्सा परिणामेणं कण्ह लेसावि नीललेसावि काउलेसावि ॥ जोगपरिणामेणं-मणजोग परिणामेवि, वइजोग परिणामेवि कायजोग परिणामेवि, । उवओगपरिणामेणं-सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि । णाणपरिणामेणं-अभिणिबोहियणाणीवि, सुयणाणीवि, ओहिणा-

अर्थ

चारित्र, सूक्ष्म संपराय चारित्र और ५ यथाख्यात चारित्र ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! वेद परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! वेद परिणाम के तीन भेद कहे हैं—१ स्त्री वेद परिणाम २ पुरुषवेद परिणाम और ३ नपुंसक वेद परिणाम ॥ १२ ॥ अब चौवीस दंडक पर परिणामों के भेद उतारते हैं. नारकी के जीवों—गति परिणाम से नरक गतिवाले, इन्द्रिय परिणाम से पांचों इन्द्रियवाले, कषाय परिणाम से क्रोध कषाय यावत् लोभ कषाय यों चारों कषायवाले, लेश्या परिणाम से कृष्ण लेश्यावाले, नील लेश्यावाले व कापोत लेश्यावाले, योग परिणाम से मन योग परिणाम, वचन योग परिणाम व काया योग परिणाम यों तीनों योगवाले, उपयोग परिणाम से साकार बहुत अनाकार बहुत दोनों उपयोगवाले, ज्ञान परिणाम से आभिनिबोधिक ज्ञान,

णीवि । अण्णाण परिणामेणं मइअण्णाणीवि, सुय अण्णाणीवि, विभंगणाणीवि, दंसण परिणामेणं सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि सम्मामिच्छा दिट्ठीवि । चरित्त परिणामेणं नो चरित्ता नो चरित्ताचरित्ता, अचरित्ता ॥ वेदपरिणामेणं नो इत्थीवेदगा नो पुरिस वेदगा, णपुंसग वेदगा ॥ १३ ॥ असुरकुमारा एवंचेव, णवरं देवगतिया, कण्हलेस्सावि जाव तेउलेस्सावि । वेदपरिणामेणं इत्थिवेदगावि, पुरिस वेदगावि, नो णपुंसगवेदगा ॥ सेसं तंचेव ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ १४ ॥ पुढवि काइया गति परिणामेणं तिरिय गतिया, इंदिय परिणामेणं एगिंदिया सेसं जहा णेरइया ॥

श्रुत ज्ञान व अवधि ज्ञानवाले, और अज्ञान से मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व विभंगज्ञानपरिणाम वाले, दर्शन परिणाम से सम्यक् दृष्टि भी, मिथ्यादृष्टि भी, मिश्रदृष्टि भी, यों तीनों दर्शनवाले, चारित्र परिणाम से पांचों चारित्र रहित अव्रती हैं, और वेद परिणाम से मात्र एक नपुंसक वेदवाले हैं ॥ १३ ॥ असुर कुमार का नारकी जैसे ही कहना, परंतु विशेषता यह है कि इन में गति से देव गतिवाले, लेश्या से कृष्ण लेशी यावत् तेजो लेशी, और वेद परिणाम से स्त्री वेद व पुरुष वेद है परंतु नपुंसक वेद नहीं है. जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही स्तनित कुमार पर्यंत दशों जाति के भवनवासि देवों का जानना ॥ १४ ॥ पृथ्वी काया गति परिणाम से तिर्यंच गति, इन्द्रिय परिणाम से एकेन्द्रिय, लेश्या परिणाम से कृष्ण लेशी यावत् तेजो लेशी योग परिणाम से

मूल

सुहुम संपराइय चरित्त परिणामे, अहक्खाय चरित्त परिणामे ॥ ११ ॥ वेदपरिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा-इत्थीवेद परिणामे पुरिसवेद परिणामे, णपुंसगवेद परिणामे॥ १२॥ णेरइया-गति परिणामेणं निरय गतिया, इंदिय परिणामेणं पंचिंदिया, कसाय परिणामेणं-कोह कसाईवि जाव लोभ कसाईवि; लेस्सा परिणामेणं कण्ह लेसावि नील्लेसावि काउलेसावि॥ जोगपरिणामेणं-मणजोग परिणामेवि, वइजोग परिणामेवि कायजोग परिणामेवि, । उवओगपरिणामेणं-सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि । णाणपरिणामेणं-अभिणिबोहियणाणीवि, सुयणाणीवि, ओहिणा-

अर्थ

चारित्र, सूक्ष्म संपराय चारित्र और ५ यथाख्यात चारित्र ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! वेद परिणाम के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! वेद परिणाम के तीन भेद कहे हैं—१ स्त्री वेद परिणाम २ पुरुषवेद परिणाम और ३ नपुंसक वेद परिणाम ॥ १२ ॥ अब चौवीस दंडक पर परिणामों के भेद उतारते हैं. नारकी के जीवों—गति परिणाम में नरक गतिवाले, इन्द्रिय परिणाम में पांचों इन्द्रियवाले, कषाय परिणाम में क्रोध कषाय यावत् लोभ कषाय यों चारों कषायवाले, लेश्या परिणाम से कृष्ण लेश्यावाले, नील लेश्यावाले व कापोत लेश्यावाले, योग परिणाम से मन योग परिणाम, वचन योग परिणाम व काया योग परिणाम यों तीनों योगवाले, उपयोग परिणाम में साकार अहुत अनाकार बहुत दोनों उपयोगवाले, ज्ञान परिणाम से आभिनिबोधिक ज्ञान,

सूत्र

णीवि । अण्णाण परिणामेणं मइअण्णाणीवि, सुय अण्णाणीवि, विभंगणाणीवि, दंसण परिणामेणं सम्मादिट्ठीवि मिच्छादिट्ठिवि सम्मामिच्छा दिट्ठीवि । चरित्त परिणामेणं नो चरित्ता नो चरित्ताचारित्ता, अचरित्ता ॥ वेदपरिणामेणं नो इत्थीवेदगा नो पुरिस वेदगा, णपुंसग वेदगा ॥ १३ ॥ असुरकुमारा एवंचेव, णवरं देवगतिया, कण्हलेस्सावि जाव तेउलेसावि । वेदपरिणामेणं इत्थिवेदगावि, पुरिस वेदगावि, नो नपुंसगवेदगा ॥ सेसं तंचेव ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ १४ ॥ पुढवि काइया गति परिणामेणं तिरिय गतिया, इंदिय परिणामेणं एगिंदिया सेसं जहा णेरइया ॥

अर्थ

श्रुत ज्ञान व अवधि ज्ञानवाले, और अज्ञान मे मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व विभंगज्ञानपरिणामवाले, दर्शन परिणाम मे सम्यक् दृष्टिभी, मिथ्यादृष्टि भी, मिश्रदृष्टि भी, यो तीनों दर्शनवाले, चारित्र परिणाम से पांचों चारित्र रहित अचारित्री हैं, और वेद परिणाम से मात्र एक नपुंसक वेदवाले हैं ॥ १३ ॥ असुर कुमार का नारकी जैसे ही कहना. परंतु विशेषता यह है कि इस में गति मे देव गतिवाले, लेश्या से कृष्ण लेशी यावत् तेजो लेशी, और वेद परिणाम से स्त्री वेद व पुरुष वेद हैं परंतु नपुंसक वेद नहीं है. जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही स्थनित कुमार पर्यंत दशो जाति के भवनपति देवों का जानना ॥ १४ ॥ पृथ्वी काया गति परिणाम से तिर्यंच गति, इन्द्रिय परिणाम से एकेंद्रिय एक स्पर्शेन्द्रिय, लेश्या परिणाम से कृष्ण लेशी यावत् तेजो लेशी योग परिणाम से

णवरं लेसा परिणामेणं तेउलेसावि, जोग परिणामेणं कायजोगी, णाणपरिणामो णत्थि, अण्णाण परिणामेणं मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी, दंसण परिणामेणं मिच्छादिट्ठी, सेसं तंचेव ॥ एवं आउ वणस्सइ काइयावि ॥ तेउ वाउवि एवं चेव णवरं लेसापरिणामेणं जहा णेरइयाणं ॥ १५ ॥ बेइंदिया-गतिपरिणामेणं तिरियगतिया, इंदियपरिणामेणं बेइंदिया, सेसं जहा णेरइयाणं, णवरं जोग परिणामेणं-वइजोगी काय जोगी, णाण परिणामेणं आभिणिबोहिय णाणीवि सुयणाणीवि । अण्णाण परिणामेणं मईअण्णाणिवि सुय अण्णाणिवि, णो विभंगणाणी ॥ दंसण परिणामेणं-सम्मद्दिट्ठी,

काया योगी, ज्ञान नहीं है. अज्ञान परिणाम से मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान परिणाम, और दर्शन परिणाम से एक मिथ्यादृष्टि शेष सब नारकी जैसे जानना. अप्काया व वनस्पति काया का पृथ्वी काया जैसे कहना. वैसे ही तेउ, वायु का जानना परंतु लेश्या परिणाम में नारकी जैसे तीन लेश्याओं कहना ॥१८॥ बेइन्द्रिय-गति परिणाम में तिर्यंच गतिवाले, इन्द्रिय परिणाम से बेइन्द्रिय, योग परिणाम में वचन योगी व काया योगी, ज्ञान परिणाम में आभिनिबोधिक ज्ञानी व श्रुत ज्ञानी, अज्ञान परिणाम में मति अज्ञानी व श्रुत अज्ञानी, दर्शन परिणाम में समदृष्टि और मिथ्यादृष्टि, शेष सब नारकी जैसे कहना. जैसे बेइन्द्रिय का

णीवि । अण्णाण परिणामेणं मइअण्णाणिवि, सुय अण्णाणीवि, विभंगणाणीवि, दंसण परिणामेणं सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठिवि सम्मामिच्छा दिट्ठीवि । चरित्त परिणामेणं नो चरित्ता नो चरित्ताचरित्ता, अचरित्ता ॥ वेदपरिणामेणं नो इत्थीवेदगा नो पुरिस वेदगा, णपुंसग वेदगा ॥ १३ ॥ असुरकुमारा एवंचेव, णवरं देवगतिया, कण्हलेस्सावि जाव तेउलेसावि । वेदपरिणामेणं इत्थिवेदगावि, पुरिस वेदगावि, नो नपुंसगवेदगा ॥ सेसं तंचेव ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ १४ ॥ पुढवि काइया गति परिणामेणं तिरिय गतिया, इंदिय परिणामेणं एगिंदिया सेसं जहा णरइया ॥

श्रुत ज्ञान व अवधि ज्ञानवाले, और अज्ञान मे मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व विभंगज्ञानपरिणाम वाले, दर्शन परिणाम से सम्यग् दृष्टिभी, मिथ्यादृष्टि भी, मिश्रदृष्टि भी, यों तीनों दर्शनवाले, चारित्र परिणाम से पांचों चारित्र रहित अचारित्री हैं, और वेद परिणाम मे मात्र एक नपुंसक वेदवाले हैं ॥ १३ ॥ असुर कुमार का नारकी जैसे ही कहना. परंतु विशेषता यह है कि इस में गति से देव गतिवाले, लेश्या से कृष्ण लेशी यावत् तेजो लेशी, और वेद परिणाम से स्त्री वेद व पुरुष वेद हैं परंतु नपुंसक वेद नहीं है. जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही स्थनित कुमार पर्यंत दशों जाति के भवनपति देवों का जानना ॥ १४ ॥ पृथ्वी काया गति परिणाम से तिर्यंच गति, इन्द्रिय परिणाम से एकेन्द्रिय एक स्पर्शेन्द्रिय, लेश्या परिणाम से कृष्ण लेशी यावत् तेजो लेशी योग परिणाम से

मणजोगीवि जाव अजोगीवि, उवओग परिणामेणं जहा णेरइया, णाणपरिणामेणं अभिणिबोहिय णाणीवि सुयणाणीवि जाव केवलणाणीवि, अण्णाण परिणामेणं तिण्णिवि अण्णाणा दंसण परिणामेणं तिण्णिवि दंसणा, चारित्त परिणामेणं चरित्तावि अचरित्तावि, चरित्ता चरित्तावि । वेद परिणामेणं इत्थीवेदगावि, पुरिस वेदगावि, नपुंसगवेदगावि, अवेदगावि, ॥ १८ ॥ वाणमंतरा गतिपरिणामेणं देवगतिया, जहा असुरकुमारा ॥ एव जोइसियावि णवरं लेस्सा परिणामेणं तेउलेस्सा ॥ वेमाणियावि एवं चेव णवरं लेस्सा परिणामेणं तेउलेस्सावि पम्ह लेस्सावि, सुक्कलेस्सावि ॥ सेत्तं जीव परिणामे ॥ १९ ॥ अजीव परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा !

परिणाम से दोनो उपयोगवाले, ज्ञान परिणाम से पांचों ज्ञानवाले, अज्ञान परिणाम से तीनो अज्ञानवाले, दर्शन परिणाम से तीनो दर्शनवाले, चारित्र परिणाम से पांचों चारित्रवाले, अचारित्री भी और चारित्राचारित्री भी है; वेद परिणाम से तीनो वेदवाले हैं और अवेदी भी हैं ॥ १८ ॥ वाणव्यंतर का असुरकुमार जैसे कहना. ऐसे ही ज्योतिषी का जानना परंतु लेश्या परिणाम से तेजो लेश्यावाले. वैमानिक का भी ऐसे ही कहना. परंतु लेश्या परिणाम से तेजो, पद्म व शुक्ल लेश्यावाले जानना. यह जीव परिणाम हुवा ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! अजीव परिणाम के कितने भेद कहे है ? अहो गौतम ! अजीव

सूत्र

णिद्धस्स लुक्खेणं उवेइबंधो, जहन्न वज्जोविसमो समोवा,॥२॥गतिपरिणामेणं ॥ भंते! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा. फुसमाण गति परिणामेय अफुसमाण गति परिणामेय॥ अहवा दीहगइ परिणामेय रहस्सगइ परिणामेय॥ संठाण परिणामेणं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा परिमंडल संठाण परिणामेय, जाव आयत संठाण परिणामेय ॥ भेदपरिणामेणं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा खंडाभेद परिणामे जाव उक्कारिया भेद परिणामे॥वण्ण

अर्थ

होने से बंध होता है तथा विषम मात्रा पर [illegible]णु होने से बंध होता है अर्थात् एक परमाणु द्विगुन स्निग्ध होवे और दूसरा तीन गुन स्निग्ध होवे तब बंध होवे, वैसे ही रूक्ष में भी विषम मात्रा होवे तो बंध होता है. स्निग्ध व रूक्ष का भी जघन्य गुनवाले का बंध नहीं होता है परंतु एक द्विगुन स्निग्ध और त्रिगुन रूक्ष तथा तीन गुन स्निग्ध एक दो गुन रूक्ष वैसे ही एक तीन गुन दूसरा द्विगुन यों समविषम साथ भी बंध पडे यह बंध परिणाम कहा. अहो भगवन् ! गति परिणाम के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम ! गति परिणाम के दो भेद कहे हैं—स्पर्श गति परिणाम जैसे नावा पानी को स्पर्श कर चलती है और २ अस्पर्श गति परिणाम जैसे पक्षी पक्षीका स्पर्श कीये विना आकाश में उडे. अहो भगवन् ! संस्थान के

णिद्धस्स लुक्खेणं उवेइबंधो, जहन्न वज्जोविसमो समोवा,॥२॥गतिपरिणामेणं ॥ भंते! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा. फुसमाण गति परिणामेय अफुसमाण गति परिणामेय॥ अहवा दीहगइ परिणामेय रहस्सगइ परिणामेय॥ संठाण परिणामेणं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा परिमंडल संठाण परिणामेय, जाव आयत संठाण परिणामेय ॥ भेदपरिणामेणं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा खंडाभेद परिणामे जाव उक्कारिया भेद परिणामे॥वण्ण

होने से बंध होता है. तथा विषम मात्रा परमाणु होने से बंध होता है अर्थात् एक परमाणु द्विगुन स्निग्ध होवे और दूसरा तीन गुन स्निग्ध होवे तब बंध होवे, वैसे ही रूक्ष में भी विषम मात्रा होवे तो बंध होता है. स्निग्ध व रूक्ष का भी जघन्य गुनवाले का बंध नहीं होता है परंतु एक द्विगुन स्निग्ध और त्रिगुन रूक्ष तथा तीन गुन स्निग्ध एक दो गुन रूक्ष वैसे ही एक तीन गुन दूसरा द्विगुन यों समविषम साथ भी बंध पडे यह बंध परिणाम कहा. अहो भगवन् ! गति परिणाम के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम ! गति परिणाम के दो भेद कहे हैं—स्पर्श गति परिणाम जैसे नावा पानी को स्पर्श कर चलती है और २ अस्पर्श गति परिणाम. जैसे पक्षी पृथ्वीका स्पर्श कीये बिना आकाश में उडे. अहो भगवन् ! संस्थान के

सूत्र

परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—कालवण्ण परिणामे जाव सुक्किल्लवण्ण परिणामे ॥ गंध परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा—सुब्भिगंध परिणामे, दुब्भिगंध परिणामेय ॥ रसपरिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा तित्तरस परिणामे, जाव महुररसपरिणामे ॥ फासपरिणामेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा! अट्ठविहे पण्णत्ते तंजहा-कक्खड फास परिणामे जाव लुक्ख फास परिणामे.

अर्थ

कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! संस्थान के पांच भेद कहे हैं—१ परिमंडल संस्थान, २ वृत्त संस्थान ३ त्र्यंस संस्थान, ४ चौरंस संस्थान और ५ आयत संस्थान. अहो भगवन् ! भेद परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! भेद परिणाम के पांच भेद कहे हैं—१ खण्डा भेद, २ प्रतर भेद ३ चूर्णिका भेद ४ अनुतडिक भेद और ५ उत्कारिका भेद. इस का स्वरूप ग्यारहवें पद में कहा है. अहो भगवन् ! वर्ण परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम! वर्ण परिणाम के पांच भेद कहे हैं कृष्ण वर्ण परिणाम यावत शुक्ल वर्ण परिणाम. अहो भगवन ! गंध परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! गंध परिणाम के दो भेद कहे हैं. १ सुरभिगंध परिणाम व दुरभिगंध परिणाम. अहो भगवन्! रस परिणामके कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! पांच भेद कहे हैं—तिक्त रस परिणाम यावत् मधुर रस परिणाम. अहो भगवन ! स्पर्श

जीवपरिणाम के ५० बोल चौवीस दंडक पर उतारने का यंत्र.

२४ दंडक	नर.	१०भु.	पृथ्वी	पानी	तेऊ	वाऊ	वनस्प	बेंद्रि	तेंद्रि	चौरिं.	पंचे.	मनु.	वाण	ज्यो	वैमा
४ गति	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
६ इन्द्रिय	५	५	१	१	१	१	१	२	३	४	५	५	५	५	५
५ कषाय	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	४	४	४
७ लेश्या	३	४	४	४	३	३	४	३	३	३	६	७	४	१	३
४ जोग	३	३	१	१	१	१	१	२	२	२	३	४	३	३	३
२ उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
८ ज्ञान	६	६	२	२	२	२	२	४	४	४	६	८	६	६	६
४ दर्शन	३	३	१	१	१	१	१	१	१	२	३	४	३	३	३
७ चारित्र	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	७	१	१	१
४ वेद	१	२	१	१	१	१	१	१	१	१	३	४	२	२	२
सब ५०	२९	३१	१८	१८	१७	१७	१८	२१	२२	२४	३५	४७	३१	२८	३०

॥ चतुर्दश कषाय पदम्. ॥

कतिणं भंते ! कसाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता तंजहा-कोह कसाय, माण कसाय, माया कसाय, लोभ कसाय ॥ १ ॥ नेरइयाणं भंते ! कइ कसाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता तंजहा-कोह कसाय जाव लोभ कसाय ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ कतिपतिट्ठिएणं भंते ! कोहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउपइट्ठिए कोहे पण्णत्ते तंजहा-आयपतिट्ठिए, परपतिट्ठिए, तदुभय पतिट्ठिए, अपइट्ठिए ॥ एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं दंडओ ॥ एवं माणेणं दंडओ॥

अथ चउदहवा कषाय पद कहते हैं. अहो भगवन् ! कषायों कितनी कही है ? अहो गौतम ! कषायों चार कही है. १ क्रोध कषाय, २ मान कषाय, ३ माया कषाय, और ४ लोभ कषाय ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितनी कषायों कही है ? अहो गौतम ! नारकी को चार कषायों कही है-क्रोध कषाय यावत् लोभ कषाय. ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना. अहो भगवन् ! क्रोध कितने स्थान प्रतिष्ठित है ? अहो गौतम ! क्रोध चार स्थान प्रतिष्ठित है. १ आत्म प्रतिष्ठित, २ पर प्रतिष्ठित, ३ उभय (दोनों) में प्रतिष्ठित और ४ अप्रतिष्ठित. ऐसे ही नारकी यावत् वैमानिक पर्यंत क्रोध चारों स्थानों में प्रतिष्ठ जानना. जैसे क्रोध का कहा वैसे ही

सूत्र

अगुरु लहुयपरिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥ सद्द-परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा सुब्भिसद्द परिणामेय, दुब्भिसद्द परिणामेय ॥ एवं अजीव परिणामे ॥ इति पण्णवणाए भगवईए परिणामपयं तेरसमं सम्मत्तं ॥ १३ ॥ * * *

भावार्थ

परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! स्पर्श परिणाम के आठ भेद कहे हैं. कर्कश स्पर्श परिणाम यावत् रूक्ष स्पर्श परिणाम. अहो भगवन् ! अगुरु लघु परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! एक ही भेद कहा है क्योंकि वैक्रियादि शरीर के पुद्गल भाषा के पुद्गल तथा अमूर्तिक द्रव्य आकाशादि अगुरुलघु परिणामी हैं. अहो भगवन् ! शब्द परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! शब्द परिणाम के दो भेद कहे हैं शुभ शब्द परिणाम और अशुभ शब्द परिणाम. यों अजीव परिणाम के भेद संपूर्ण हुए. यह पन्नवणा पद का तेरहवा परिणाम पद संपूर्ण हुवा ॥ १३ ॥

सूत्र

एवं मायाए दंडओ ॥ एवं लोभेणं दंडओ ॥२॥ कतिविहेणं भंते! ठाणेहिं कोहुप्पत्ती भवति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती भवंति तंजहा-खित्तं पडुच्च, वत्थु पडुच्च, सरीर पडुच्च, उवहिं पडुच्च ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ एवं माणेणवि, ॥ एवं मायाएवि ॥ एवं लोभेणंवि॥एवं एतेवि चतारि दंडगा ॥३॥ कतिविहेणं भंते ! कोहे पण्णत्ते? गोयमा! चउव्विहे कोहे पण्णत्ते तंजहा-अणंताणु बंधीकोहे,अपच्चक्खाणवरणे कोहे, पच्चक्खाणवरणे कोहे, संजलणे कोहे ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥

अर्थ

मान, माया व लोभ का कहना॥२॥अहो भगवन्! कितने स्थान से क्रोध की उत्पत्ति होती है ? अहो गौतम! चार स्थान से क्रोध की उत्पत्ति होती है—१. क्षेत्र प्रत्ययिक अर्थात् खुल्ली भूमि क्षेत्रादि से, २ वस्तु प्रत्ययिक अर्थात् ढकी भूमि घरादिक के प्रयोग से, ३ शरीर प्रत्ययिक अर्थात् शरीर के प्रयोग से और ४ उपधि प्रत्ययिक भंडोपकरन वस्त्र भूषणादिक के प्रयोग से; यों चारों प्रकार के क्रोध की उत्पत्ति नारकी आदि चौवीस ही दंडक में पाती है. ऐसे ही चारों प्रकार से मान की उत्पत्ति चौवीस ही दंडक में होती है. ऐसे ही चारों प्रकार की माया की उत्पत्ति चौवीस ही दंडक में होती है, और ऐसे ही चारों प्रकार के लोभ की उत्पत्ति चौवीस ही दंडक में होती है. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्रोध के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! क्रोध के चार भेद कहे हैं-१. अनंतानुबंधी, २ अप्रत्याख्यानी, ३ प्रत्याख्यानी

कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ जीवाणं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अठकम्मपगडीओ उवचिणंति? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं उवचिणंति तंजहा–कोहेणं जाव लोभेणं ॥ एवं णेरइया जाव वेमाणिया ॥ एवं उवचिणिस्संति ॥ ७ ॥ जीवाणं भंते! कइठाणेहिं अठकम्मपगडीओ बंधिसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अठकम्मपगडीओ बंधिसु, तंजहा–कोहेणं जाव लोभेणं ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ बंधिसु ॥ बंधंति ॥ बंधिस्संति ॥ उदीरिंसु ॥ उदीरेंति॥

नरकादि चौवीस दंडक के जीवोंने कर्म पुद्गल उपचीने हैं. अहो भगवन् ! जीव कितने प्रकार से आठों ही कर्म प्रकृतियों उपचिनता है ? अहो गौतम! क्रोध, मान, माया व लोभ. ऐसे चार कारन से उपचिनता है. यों नरकादि चौवीस ही दंडक के जीवों चारों प्रकार से आठों कर्मों उपचिनते हैं. अहो भगवन् ! जीव कितने कारन से आठों कर्मों उपचिनेगा ? अहो गौतम ! चार कारन से उपचिनेगा, १ क्रोध, २ मान, ३ माया और ४ लोभ ऐसे ही नरकादि चौवीस ही दंडक के जीवों कर्म उपचिनेंगे. यहां पर भी उक्त प्रकार से १०० शब्द हुए ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जीवने कितने कारन से आठ कर्म प्रकृतियों का बंध बांधा ? अहो गौतम ! क्रोध, मान, माया व लोभ ऐसे चार कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का बंध कीया. अहो भगवन् ! जीव कितने कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का बंध करता है ? अहो गौतम ! उक्त आठों कारन से. अहो भगवन ! जीव कितने कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का बंध करेगा ? अहो गौतम ! उक्त चारों कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का बंध करेगा. इस तरह यहां पर भी १००

कतिहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणंति ? गोयमा! चउहिं ठाणेहिं उवचिणंति तंजहा कोहेणं, माणेणं,मायाए,लोभेणं॥एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं॥जीवाणं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिस्संति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिस्संति, तंजहा—कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ ६ ॥ जीवाणं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ उव-चिणिंसु ? गोयमा ! चउहिंठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ उवचिणिंस्संति, तंजहा

क्रोध, मान माया, व लोभ यों चार प्रकार से जीवने आठों कर्म प्रकृतियों का संचय कीया अहो भगवन् ! जीव कितने प्रकार से आठों कर्म प्रकृतियों का संचय करता है ? अहो गौतम ! क्रोध, मान, माया व लोभ. यों चार प्रकार से आठों कर्म प्रकृति का संचय करता है. अहो भगवन् ! जीव कितने प्रकार से आठों कर्म प्रकृतियों का संचय करेगा ? अहो गौतम ! क्रोध, मान, माया व लोभ यों चारों प्रकार से आठों कर्म प्रकृतियों का संचय करेगा. यह तीनों काल आश्रित १२ बोल कर्म संचय करने के समुच्चय जीव व चौवीस दंडक में पाते हैं. यों १२+२८=३०० बोल हुए ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जीवने कितने स्थान से आठों कर्म प्रकृतियों को उपचाते हैं ? अर्थात् एकत्रित कीये हैं ? अहो गौतम ! चार कारन से जिन के नाम—क्रोध, मान, माया व लोभ. यों

* पंचदश इंद्रिय पदम्. *

संठाण, बाहल्लं, पोहत्तं, कतिपदेसओगाढे ॥ अप्पाबहु, पुट्ठ, पविट्ठविसय, परिमाण अणगार, आहारा ॥ १ ॥ अद्दाय, असीयमणी, दुद्ध, पाणे, तेल्ल, फाणिय वसाय ॥ कंबल, थूणा, थिग्गल्ल, दीवे, दहि, लोग, अलोगेय ॥ २ ॥ १ ॥ कतिणं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचिंदिया पण्णत्ता तंजहा—सोतिंदिए, चक्खिंदिए, घाणिंदिए, जिब्भिंदिए फासिंदिए ॥ २ ॥ सोतिंदिएणं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?

अर्थ

अब पंदरहवा इन्द्रिय पद कहते हैं. प्रथम इसके द्वारोंके नाम कहते हैं.-१ संस्थान द्वार, २ जाडपन द्वार ३ चौडापना द्वार, ४ प्रदेश द्वार, ५ अवगाहना द्वार, ६ प्रदेशोंकी अल्पा बहुत्व, ७ प्रदेश स्पर्शद्वार ८ प्रविष्टद्वार, ९ विषयद्वार, १० साधु आश्रिय प्रश्नोत्तर द्वार, ११ आहार द्वार, १२ आरीसा [काच] आश्रि प्रश्नोत्तर द्वार १३ खड्ग आश्रिय प्रश्नोत्तर १४ मणि आश्री प्रश्नोत्तर १५ दुग्ध आश्री प्रश्नोत्तर १६ पानी आश्री प्रश्नोत्तर १७ तेल का प्रश्न १८ गुडका प्रश्न १९ चरबीका प्रश्न २० कंबल का प्रश्न २१ स्तंभका प्रश्न २२ थेगलेका प्रश्नोत्तर २३ दीपकके प्रश्नोत्तर २४ समुद्रके प्रश्नोत्तर २५ लोकके प्रश्नोत्तर और २५ अलोकके प्रश्नोत्तर ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रियों कितनी कही है ? अहो गौतम ! इन्द्रियों पांच कही हैं—१ श्रोत्रेन्द्रिय २ चक्षुइन्द्रिय ३ घ्राणेन्द्रिय ४ जिव्हेन्द्रिय और ५ स्पर्शेन्द्रिय * ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय का क्या

* यहां इन्द्रियों दो प्रकार की कहीं द्रव्येन्द्रिय और भावेन्द्रिय. इस में से द्रव्येन्द्रिय के दो प्रकार भेद निवृत्ति

सोतिंदिएण भंते ! केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जति भागे बाहल्लेणं पण्णत्ते, एवं जाव फासिंदिए ॥४॥ सोतिंदिएणं भंते ! केवतियं पोहत्तेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जइ भागे पोहत्तेणं पण्णत्ते ॥ एवं चक्खिंदिएवि ॥ घाणिंदिएवि ॥ जिब्भिंदिएणं पुच्छा ? गोयमा! अंगुल पुहत्तेणं पण्णत्ते ॥ फासिंदिएणं पुच्छा ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्तेणं पण्णत्ते ॥ ५ ॥ सोतिंदिएणं भंते ! कइपदेसिए पण्णत्ते, गोयमा ! अणंत पदेसिए पण्णत्ते, एवं जाव फासिंदिए ॥ ६ ॥ सोतिंदिएणं भंते ! कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते? गोयमा ! असंखेज्ज पदेसोगाढे पण्णत्ते ॥ एवं जाव

है ? अहो गौतम ! अंगुल के असंख्यातवे भाग. ऐसे ही पांचों इन्द्रियों का जाडपना जानना. यह जाडपना इन्द्रियों के अंदर विषय ग्रहने की शक्तिरूप प्रदेशों का है. ॥ ४ ॥ अब चौडापना का द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय कितनी चौडी कही है ? अहो गौतम ! अंगुल के असंख्यातवे भाग श्रोत्रेन्द्रिय चौडी है, ऐसे ही चक्षुरिन्द्रिय व घ्राणेन्द्रिय का जानना. जिव्हेन्द्रिय प्रत्येक अंगुलकी चौडी जानना. और स्पर्शेन्द्रिय की चौडाई अपने २ शरीर प्रमान जानना. ॥ ५ ॥ चौथा प्रदेश द्वार—अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय के कितने प्रदेश कहे हैं ? अहो गौतम ! श्रोत्रेन्द्रिय के अनंत प्रदेश कहे हैं ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय पर्यंत कहना. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय कितने प्रदेश अवगाहकर रही है ? अहो गौतम !

सूत्र

गोयमा! कलंबुया पुप्फ संठाण संठिए पण्णत्ते॥चार्क्खिदिएणं भंते! किं संठिए पण्णत्ते? गोयमा! मसूरा चंदसंठाण संठिए पण्णत्ते। घाणिंदिएणं पुच्छा? गोयमा! अइमुत्तगचंद संठाण संठिए पण्णत्ते, जिब्भिदिएणं पुच्छा? गोयमा! खुरप्प संठाण संठिए पण्णत्ते, फासिंदिएण पुच्छा? गोयमा! णाणा संठाण संठिए पण्णत्ते ॥ ३ ॥

अर्थ

संस्थान कहा है? अहो गौतम! श्रोत्रेन्द्रिय का संस्थान कदम्ब वृक्ष के पुष्प समान है. ? अहो भगवन्! चक्षुइन्द्रिय का क्या संस्थान है? अहो गौतम! मसूर की दाल अथवा अर्ध चंद्रमा के संस्थान है. अहो भगवन्! घ्राणेन्द्रिय का क्या संस्थान है? अहो गौतम! घ्राणेन्द्रिय का अतिमुक्तक पुष्प वाला है. अहो भगवन्! जिव्हेन्द्रिय का क्या संस्थान है? अहो गौतम! जिव्हेन्द्रिय का क्षुरप का संस्थान है. अहो भगवन्! स्पर्शेन्द्रिय का क्या संस्थान है? अहो गौतम! स्पर्शेन्द्रिय के संस्थान अनेक प्रकार के हैं ॥ ३ ॥ अब जाडपना द्वार-अहो भगवन्! श्रोत्रेन्द्रिय कितनी जाडी

और उपकरन. निर्वृत्ति के दो भेद आभ्यन्तर निर्वृत्ति सो उत्सेध अंगुल के असंख्यातवे भाग प्रमान शुद्ध आत्मप्रदेश नयनादि इन्द्रिय, आकाररूप होकर रहे सो बाह्य निर्वृत्ति, और आत्म प्रदेशों नाम कर्मोदय इन्द्रिय के परिणमे पुद्गल वह आभ्यन्तर निर्वृत्ति उपकारिक उपकरन के दो भेद आभ्यंतर उपकरन सो आंखों में कृष्णशुक्लादि मंडल और बाह्य उपकरन सो भौपन पलकादि. भावेन्द्रिय के दो भेद लब्धि सो ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से इन्द्रियों से प्राप्त हुई शक्ति और उपयोग लब्धि के सामर्थ्य से इन्द्रिय उसके विषय में काम में आवे सो

कक्खडगरुयगुणा,सोइंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा,घाणिंदियस्स कक्खडगरुय-गुणा अणंतगुणा, जिब्भिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, फासिंदियस्स कक्खड गरुयगुणा अणंतगुणा ॥ मउयलहुय गुणाणं सव्वत्थोवा फासिंदियस्स मउयलहुयगुणा, जिब्भिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, घाणिंदियस्स मउयलहु-यगुणा अणंतगुणा, सोइंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, चक्खिंदियस्स मउय लहुय गुणा अणंत गुणा ॥ कक्खड गरुयगुणाणं मउयलहुयगुणाणय सव्वत्थोवा चक्खिंदियस्स कक्खड गरुयगुणा, सोइंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा,

अर्थ

अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे चक्षु इन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन, २ इस से श्रोत्रेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन अनंतगुने, ३ इस से घ्राणेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन अनंतगुने उस से जिव्हेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन अनंतगुने और ५ उस से स्पर्शेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन अनंतगुने. मृदु लघु गुन की अल्पाबहुत्व—१ सब से थोडे स्पर्शेन्द्रिय के मृदु लघु गुन, २ उस से जिव्हेन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंतगुने. ३ उस से घ्राणेन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंत गुने ४ उस से श्रोत्रेन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंतगुने और ५ उस से चक्षु इन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंतगुने. कर्कश गुरु और मृदु लघु की साथ

फासिंदिए ॥ ७॥ एतेसिणं भंते ! सोइंदिए चक्खुइंदिए घाणिंदिए जिब्भिंदिए फासिंदियाणं ओगाहणट्ठयाए पदेसट्ठयाए ओगाहण पदेसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे चक्खिदिए उगाहणट्ठयाए, सोइंदिय ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, घाणिंदिय ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, जिब्भिंदिय ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए असंखेज्जगुणे ॥ पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा चक्खिदिए पदेसट्ठयाए, सोइंदिए, पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणं, घाणिंदिए

अर्थ श्रोत्रेन्द्रिय असंख्यात प्रदेश अवगाहकर रही है. ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय पर्यंत कहना. ॥ ७ ॥ छठा अल्पाबहुत्व द्वार कहते हैं. अहो भगवन् ! इन श्रोत्रेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना से और प्रदेशों की अवगाहना में कौन किस से अल्प, बहुत, तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से छोटी १ चक्षुइन्द्रिय की अवगाहना, २ इस से श्रोत्रेन्द्रिय की अवगाहना संख्यात गुनी, ३ इस से घ्राणेन्द्रिय की अवगाहना संख्यात गुनी, ४ उस से जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना संख्यात गुनी और ५ उस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना असंख्यात गुनी. अब प्रदेश आश्रि कहते हैं—सब से छोटी चक्षुइन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय २ उस से श्रोत्रेन्द्रिय, की अवगाहना प्रदेश आश्रि

मूल

गोयमा ! अणंत पदेसिए पण्णत्ते ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! फासिदिए कतिपदे सोगाढे पण्णत्ते ? गोयमा ! संखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते ॥एतेसिणं भंते! पुढविकाइयाणं फासिदियस्स ओगाहणट्ठयाए पदेसट्ठयाए कयरे२हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा पुढविकाइयाणं फासिदिए ओगाहणट्ठयाए तहचेव, पदसट्ठयाए अणतगुणे ॥ पुढवि काइयाणं भंते! फासिंदियस्स केवइया कक्खड गुरुयगुणा पण्णत्ता? गोयमा ! अणंता. एवं मउय लहुय गुणावि एतेसिणं भंते ! पुढवीकाइयाणं फासिंदियस्स कक्खड गुरुय गुणाणं मउय लहुय गुणाणं कयरे २ हिंतो अप्पवा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

अर्थ

गौतम ! शरीर प्रमाण जाडी चौडाइ रे पृथ्वीकाया की कही अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया की स्पर्शेन्द्रिय को कितने प्रदेश कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत प्रदेश कहे. अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया की स्पर्शेन्द्रियने कितने प्रदेश अवगाहे है ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेश अवगाहकर रही है. अहो भगवन ! पृथ्वीकाया के अवगाहना ४ प्रदेश में कौन किस से अल्पबहुत्व यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे पृथ्वीकाया की स्पर्शेन्द्रिय अवगाहना आश्रिय उस से प्रदेश आश्रिय वही अनंत गुने अहो भगवन ! पृथ्वीकाया के कितने कर्कश गुरु गुन कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत कर्कश गुरु गुन कहे हैं अहो भगवन ! कितने मृदु लघु गुन कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत मृदु लघु गुन कहे हैं.

णिज्जे मणं समचउरंस संठाण संठिए पण्णत्ते, जेते उत्तर वेउव्विए सेणं णाणा संठाण संठिए, सेसं तंचेव ॥ एवं जाव थणिय कुमाराणं॥१३॥पुढविकाइयाणं भंते! कइ इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! एगे फासिंदिए पण्णत्ते, पुढविकाइयाणं भंते ! फासिंदिए किं संठाण संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! मसूरचंद संठाण संठिए पण्णत्ते ॥ पुढवीकाइयाणं भंते ! फासिंदिए केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं बाहल्लेणं पण्णत्ते॥पुढविकाइयाणं भंते! फासिंदिए केवतियं पोहत्तेणं पण्णत्ते? गोयमा! सरीरप्पमाणमेत्तणं पण्णत्ते ॥ पुढवि काइयाणं भंते ! फासिंदिए कतिपदेसिए पण्णत्ते ?

कुमारकी स्पर्शेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं-१ भवधारणीय शरीरका और २ उत्तर वैक्रेय शरीरका. उन में जो भवधारणीय है. उसका समचतुस्र संस्थान है और जो उत्तर वैक्रेय बनाते हैं. उसका अनेक प्रकारका संस्थान है ऐसे ही कहना यों स्थनित कुमार पर्यंत कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी काया को कितनी इन्द्रियां कही हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया को एक स्पर्शेन्द्रिय कही है. अहो भगवन् ! पृथ्वी-काया की स्पर्शेन्द्रिय का क्या संस्थान है ? अहो गौतम ! मसूर की दाल अथवा अर्ध चंद्र का संस्थान है अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया की जाडपना कितना कहा ? अहो गौतम ! अंगुलका असंख्यातवा भाग का पृथ्वीकाया के शरीरका जाडपना कहा है अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया की चौडाइ कितनी कही ? अहो

सूत्र

पण्णत्ते, इमं त्तिसमो-एतेसिणं भंते! बेइंदियाणं जिब्भिंदिय फासिंदियाणं ओगाहणट्ठयाए पएसट्ठयाए, ओगाहणपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे बेइंदियाण जिब्भिंदिए ओगाहणट्ठयाए, फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए असंखेज्जगुणे. पएसट्ठयाए सव्वत्थोवे बेइंदियाणं जिब्भिंदिए पएसट्ठयाए, फासिंदिए पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा. ओगाहणा पएसट्ठयाए सव्वत्थोवे बेइंदियस्स जिब्भिंदिए ओगाहणट्ठयाए फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए असंखेज्जगुणे । फासिंदियस्स ओगाहणट्ठयाए हिंतो जिब्भिंदिए पएसट्ठयाए अणंतगुणे, फासिंदिएयस्स पएसट्ठयाए असंखेगुणे॥ बेइंदियाणं

अर्थ

परंतु स्पर्शेन्द्रिय का इद भस्थान जानना अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय की इन जिव्हेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना, प्रदेश और अवगाहना प्रदेश में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से छोटी बेइन्द्रिय की जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना, इस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना असंख्यात गुनी प्रदेश आश्रिय सब से छोटी जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना उस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना असंख्यात गुनी अवगाहना प्रदेश आश्रिय सब से छोटी जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना उस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना असंख्यात गुनी उस से जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय अनंत गुनी और उस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय असंख्यात गुनी. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय की जिव्हेन्द्रिय को

गुणा ॥ एवं आउक्काइयाणवि जाव वणस्सइ काइयाणं, णवरं संठाणे इमो विसेसो दट्ठव्वो, आउकाइयाणं थिबुगबिंदु संठाण संठिए, तेऊकाइयाणं सुईकालाव संठाण संठिए, वाउकाइयाणं पडागा संठाण संठिए, वणस्सइ काइयाणं णाणा संठाण संठिए ॥ १४ ॥ बेइंदियाणं भंते ! कइ इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दोइंदिया पण्णत्ता तंजहा जिब्भिंदिए, फासिंदिए, दोण्हवि इंदियाणं संठाणं बाहुल्लं पोहत्तं पदेसओगाहणाय जहा ओहियाणं भणिया तहा भाणियव्वा, णवरं फासिंदिए हुंड संठाण संठिए

अहो भगवन् इन पृथ्वी काया की स्पर्शेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन मृदु लघु गुन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे पृथ्वी काया की स्पर्शेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन उस से मृदु लघु गुन अनंत गुने ऐसे ही अप्काया यावत् वनस्पतिकाया का जानना. परंतु अप्काया का संस्थान पानी के बुदबुद का, तेउकाया का संस्थान सूचिकलाप (सूई की भारी) वायु का संस्थान ध्वजा पताका और वनस्पति काया का संस्थान विविध प्रकार का. ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ? बेइन्द्रिय को कितनी इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! बेइन्द्रिय को दो इन्द्रियों कही है १ जिव्हेन्द्रिय और २ स्पर्शेन्द्रिय. दोनों इन्द्रियों का संस्थान जाडपन, पोहोपना, प्रदेश व अवगाहना औधिक जैसे जानना.

इंदिय परियुट्ठाकापचा । तेइंदियाणं घाणिंदिए थोवे, चउरिंदियाणं चक्खिंदिए थोवे, सेसं तंचेव ॥ १५ ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं मणुस्साणय जहा णेरइयाणं, णवरं फासिंदिए छव्विह संठाण संठिए पण्णत्ते तंजहा समचउरंसे, णिग्गोह परिमंडले, सादि, खुज्जे, वामणे, हुंडे ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥ १६ ॥ पुट्ठाइं भंते ! सद्दाइं सुणेइ अपुट्ठाइं सद्दाइं सुणेइ ? गोयमा ! पुट्ठाइं सद्दाइं सुणेति णो अपुट्ठाइं सद्दाइं सुणेति ॥ पुट्ठाइं भंते ! रूवाइं पासइ, अपुट्ठाइं रूवाइं पासइ? गोयमा! णो पुट्ठाइं रूवाइं पासइ अपुट्ठाइं रूवाइं पासइ ॥ पुट्ठाइं भंते ! गंधाइं अग्घाति

इन्द्रिय शेष सब वैसे ही ॥ १५ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य का नारकी जैसे कहना परंतु संस्थान छ प्रकार के कहना. जिन के नाम-समचतुस्र, न्यग्रोध परिमंडल, वामन, कुब्ज और हुंडक. वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे कहना. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या स्पर्श हुवे शब्द सुनते हैं या बिना स्पर्श हुए शब्द सुनते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शे हुए शब्द सुनते हैं परंतु बिना स्पर्शे हुए शब्द नहीं सुनते हैं अहो भगवन् ! जीव क्या स्पर्शा हुवा रूप देखते हैं, या बिना स्पर्शा हुवे रूप देखते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शा हुवा रूप नहीं देखता है परंतु बिना स्पर्शा हुवा रूप देखता है.

जिब्भिंदियस्स केवइया कक्खड गरुयगुणा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, एवं फासिंदियस्सवि एवं मउयलहुयगुणावि ॥ एएसिणं भंते ! बेइंदियाणं जिब्भिंदिय फासिंदियाणं कक्खडगरुयगुणाणं, मउयलहुयगुणाणं, कक्खड गरुयगुण मउयलहुयगुणाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदियाणं जिब्भिंदियस्स कक्खड गरुयगुणा, फासिंदियस्स कक्खड गरुयगुणा अणंतगुणा ॥ फासिंदियस्स कक्खड गरुयगुणेहिंतो तस्सचेव मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, जिब्भिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा ॥ एवं जाव चउरिंदियाणं, णवरं

कितने कर्कश गुरु हैं ? अहो गौतम ! अनंत कहे. ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय का जानना और ऐसे ही मृदु लघु का भी कहना. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय की जिव्हेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय के कर्कशगुरु, मृदुलघु व कर्कश गुरु [illegible] कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे बेइन्द्रिय की [illegible] गुन, इस से स्पर्शेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन अनंतगुने. इस से जिव्हेन्द्रिय के मृदु [illegible] अनंतगुने [illegible] से स्पर्शेन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंतगुने. ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यन्त कहना [illegible] इन्द्रिय बढाना, तेइन्द्रिय में सब से थोडे घ्राणेन्द्रिय और चतुरेन्द्रिय में चक्षु

आरिहुणं पंगालेपुट्ठे पविट्ठाइं सद्दाइं सुणेति ॥ चक्खिदियस्सणं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागो, उक्कोसेणं साइरेगाओ जोयणसयसहस्साओ आरहुणं पोग्गले अपुट्ठे अपविट्ठाइं रूवाइं पासइ ॥ घाणिदियस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागो, उक्कोसेणं नवहिं जोयणेहिं आरहुणं पुग्गल पुट्ठे पविट्ठाइं गधाइं अग्घाइ ॥ एवं जिब्भिंदियस्सवि फासिंदियस्सवि. ॥ १९ ॥ अणगारस्सण भंते ! भावियप्पणो, मारणंतिय समुग्घाएणं

सना जाता है अहो भगवन् चक्षुइन्द्रिय का कितना विषय कहा? अहो गौतम! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट कुछ अधिक एक लाख योजन का परंतु मार्ग में किसी प्रकार की व्याघात नहीं होना चाहिये जब मनुष्य या देवता एक लाख योजन का ... करते हैं तब खडे रहे हुवे पांव को तथा नीचे खड्डे आदि को देखते हैं. वैसे ही ... मनुष्यों २१३४ ५२७ योजन दूर रहे हुवे सूर्य को देखते हैं. अहो भगवन् ! घ्राणेन्द्रिय का कितना विषय कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट नव योजन तक के गंध के अविच्छिन्न स्पर्श हुवे व प्रविष्ट किये हुए पुद्गलों सूंघ सकते हैं. ऐसे ही जिव्हेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रिय का ... योजन का विषय जानना ॥ १९ ॥ साधु आश्रिय प्रश्न

गुरुयत्तंवा लहुयत्तंवा जाणति पासति ? गोयमा ! देवेवियणं अत्थेगतिए जेणं तेसिंणिज्जरा पोग्गलाणं णोकिंचि आणत्तंवा णाणत्तंवा उम्मत्तंवा तुच्छत्तंवा गरुयत्तंवा लहुयत्तंवा जाणति पासति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति, छउमत्थेणं मणुस्से तेसिं णिज्जरा पोग्गलाणं णोकिंचिं आणंत्तंवा णाणंत्तंवा उम्मत्तंवा तुच्छत्तंवा गरुयत्तंवा लहुयत्तंवा जाणति पासति, एवं सुहुमाणं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगंपियणं ते ओग्गाहित्ताणं चिट्ठति ॥ णेरइयाणं भंते ! ते णिज्जरा पोग्गला जाणंति पासंति आहारंति उदाहु णजाणंति णजाणंति णपासंति णआहारेंति ? गोयमा ! णेरइयाणं

नहीं देख सकते हैं। अहो गौतम! ऐसे कितनेक देवता भी हैं वे भी उक्त निर्जराके पुद्गलोंको किंचिन्मात्र अन्तर भेद से, वर्णादि से, हीनता से, गुरुता से, व लघुता से नहीं जान सकते हैं वैसे देख सकते हैं. अहो आयुष्मन् श्रमणों ! वैसे सूक्ष्म पुद्गलों हैं तथापि सब लोक को स्पर्श कर रहे हैं. अहो भगवन् ! नारकी क्या उन निर्जरा पुद्गलों को जानते हैं देखते हैं या आहार करते हैं. अथवा नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं या नहीं आहार करते हैं ? अहो गौतम ! नेरिये उक्त निर्जरा पुद्गलों को नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं परंतु आहार करते हैं + जैसे नारकी का कथन कीया वैसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्यंत कहना. अहो भग-

+ जब वे निर्जरा पुद्गलों लोक व्यापी होते हैं तब रोम आहार की साथ परिणमते हैं.

उववज्ञाय अणुवउत्ताया, तत्थणं जे ते अणुवउत्ताय तेणं णजाणंति णपासंति आहारेंति, तत्थणं जे ते उवउत्ता तेण जाणंति पासंति आहारेंति. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति अत्थेगतिया णजाणंति णपासंति आहारेंति, अत्थेगतिया जाणंति पासंति आहारेंति ॥ वाणमंतर जोइसिया जहा णेरइया ॥ वेमाणियाणं भंते! णिज्जरा पोग्गले किं जाणंति पासंति आहारेंति उदाहु पुच्छा? गोयमा ! जहा मणुस्सा णवरं वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-माईमिच्छादिट्ठी उववण्णगाय, अमाई सम्मदिट्ठी उववण्णगाय, तत्थणं जे ते माईमिच्छादिट्ठी उववण्णगाय तेण णजाणंति णपासंति आहारेंति, तत्थणं

उस के उपयोग [illegible] है वे उन पुद्गलों को नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं परंतु आहार करते हैं और जो उपयोग [illegible] जानते हैं, देखते हैं व आहार करते हैं इस [illegible] से अहो भगवन् ! अहो गौतम ! ऐसा कहा कि कितनेक नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं परंतु आहार करते हैं और कितनेक जानते हैं देखते हैं व आहार करते हैं वाणव्यंतर ज्योतिषी का नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! वैमानिक उन निर्जरा पुद्गलों को क्या जानते हैं, देखते हैं आहार करते हैं अथवा नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं व नहीं आहार करते हैं ? अहो गौतम ! जैसे मनुष्य का कहा वैसे ही कहना परंतु वैमानिक के दो भेद १ मायी मिथ्या दृष्टि उत्पन्न और अमायी समदृष्टि उत्पन्न, इन में जो मायी मिथ्या दृष्टि उत्पन्न हैं वे

सूत्र

आहारेति ॥ २० ॥ अद्दायं पेहमाणे मणुस्से किं अद्दायं पेहति अत्ताणं पेहति पलिभागं पेहति ? गोयमा ! णो अद्दायं पेहति णो अत्ताणं पेहति पलिभागं पेहति, एवं एतेणं अभिलावेण असि मणि, दुद्धं, पाणं, तेल्लं, फाणियं, रसं, वसं, ॥ २१ ॥ कंबल साडएणं भंते ! आवेढिय परिवेढिए समाणे जावतियं उवासंतरं फुसित्ताणं चिट्ठति विरल्लएवियणं समाणे तावइयचेव उवासंतरं फुसित्ताणं चिट्ठइ ? हंता गोयमा ! कंबल साडएणं आवेढिय परिवेढिए समाणे जावतियं तंचेव चिट्ठति॥२२॥थूणाणं भंते!

अर्थ

करते हैं. ॥ २० ॥ आरिसा का प्रश्नोत्तर—अहो भगवन् ! आरिसा-काच को देखता हुवा क्या आरिसा देखता है, आत्मा देखता है या शरीर विभाग देखता है ? अहो गौतम ! मनुष्य आरिसे में देखता हुवा आरिसा नहीं देखता है. वैसे ही आत्मा भी नहीं देखता है परंतु शरीर विभाग देखता है जैसे काच में देखने का प्रश्नोत्तर कहा वैसेही तरवार में, दुधमें, पानी, में तेल में, पतले गुड में, किसी प्रकार के रस में व चरबी में अपने शरीर का प्रतिबिम्ब देखता है उसका भी प्रश्नोत्तर कहना ॥ २१ ॥ अहो भगवन्! घडी कीयाहुवा लपेटा हुवा कम्बलपट जितने आकाश प्रदेश अवगाहता है उतने आकाश प्रदेश विस्तृत कीयाहुवा फैलाया हुवा कम्बलपट क्या अवगाहता है ? अहो गौतम ! जितने आकाश प्रदेश घडी कीया हुवा कम्बल पट अवगाहता है उतने ही आकाश प्रदेश विस्तृत कीया हुवा कम्बलपट अवगाहता है. ॥ २२ ॥ अहो

सूत्र

जाव तसकाएणं फुडे, अद्धासमएणं फुडे ? हंता गोयमा ! धम्मत्थिकाएणं फुडे णो धम्मत्थिकायस्स देसेणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, एवं अधम्मत्थि काएणवि, नो आगासत्थिकाएणं फुडे, आगासत्थि कायस्स देसेणं फुडे, आगासत्थि कायस्स पएसेहिं फुडे, जाव वणस्सइ काएणं फुडे, एवं तसकाएणं सियफुडे, सियणोफुडे, अद्धासमएण देसफुडे देसेणोफुडे ॥ २४ ॥ जम्बूद्दीवेणं भंते ! दीवे

अर्थ

धर्मास्ति काया के प्रदेश को भी स्पर्श कर रहा है, क्यों कि सब धर्मास्तिकाया के प्रदेशों में व्याप्त होकर रहा है जैसे धर्मास्तिकाया का कहा वैसे ही अधर्मास्तिकाया का जानना. आकाशास्तिकाया से नहीं स्पर्शा हुवा है क्यों की लोक लोक का आकाश संपूर्ण कहा जाता है. आकाशास्ति काया के देश को व प्रदेश को स्पर्श कर रहा है ऐसे ही यावत् वनस्पति काया से स्पर्श कर रहा है त्रसकाया को स्यात स्पर्शा है, और स्यात नहीं स्पर्शा है क्यों की त्रसकाया संपूर्ण लोक को कदाचित् स्पर्श कर रहती है और कदाचित् स्पर्श कर नहीं भी रहती है केवली समद्घात करते केवली के आत्म प्रदेश संपूर्ण लोक में व्याप्त होजाते हैं इस अपेक्षा काल से लोकाकाश एक देश से स्पर्श कर रहा है और एक देश से स्पर्श कर नहीं रहा है क्यों की व्यवहार काल मात्र अढाइ द्वीप में ही होता है. ॥ २४ ॥ अहो भगवन् !

सूत्र

जाव तसकाएणं फुडे, अद्धासमएणं फुडे ? हंता गोयमा ! धम्मत्थिकाएणं फुडे ; णो धम्मत्थिकायस्स देसेणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, एवं अधम्मत्थि काएणवि, नो आगासत्थिकाएणं फुडे, आगासत्थि कायस्स देसेणं फुडे, आगासत्थि कायस्स पएसेहिं फुडे, जाव वणस्सइ काएणं फुडे, एवं तसकाएणं सियफुडे सियणोफुडे, अद्धासमएणं देसफुडे देसेणोफुडे ॥ २४ ॥ जंबूदीवेणं भंते ! दीवे

अर्थ

धर्मास्ति काया के प्रदेश को भी स्पर्श कर रहा है, क्यों कि सब धर्मास्तिकाया के प्रदेशों में व्यापक होकर रहा है. जैसे धर्मास्तिकाया का कहा वैसे ही अधर्मास्तिकाया का जानना. आकाशास्तिकाया से नहीं स्पर्शा हुवा है क्यों की लोका लोक का आकाश संपूर्ण कहा जाता है. आकाशास्ति काया के देश को व प्रदेश को स्पर्श कर रहा है. ऐसे ही यावत् वनस्पति काया से स्पर्श कर रहा है त्रसकाया को स्यात् स्पर्शा है, और स्यात् नहीं स्पर्शा है क्यों की त्रसकाया संपूर्ण लोक को कदाचित् स्पर्श कर रहती है और कदाचित् स्पर्श कर नहीं भी रहती है. केवली समुद्घात करते वक्त्त्री के आत्म प्रदेश संपूर्ण लोक में व्याप्त होजाते हैं इस आश्रिय. काल को लोकाकाश एक देश में स्पर्श कर रहा है और एक देश से स्पर्श कर नहीं रहा है क्यों की व्यवहार काल मात्र अढाइ द्वीप में ही होता है ॥ २४ ॥ अहो, भगवन् !

१ जंबुद्वीप १००००० योः	१९ अरुणद्वीप २६२१४४००००
२ लवण समुद्र २००००० यो०	२० अरुणोदधी ५२४२८८०००००
३ धातकी खण्डद्वीप ४०००००	२१ वायुद्वीप १०४८५७६०००००
४ कालोदधी समुद्र ८०००००	२२ वायुदधी २०९७१५२०००००
५ पुष्कर द्वीप १६०००००	२३ कुंडलद्वीप ४१९४३०४०००००
६ पुष्कर समुद्र ३२०००००	२४ कुंडलोदधी ८३८८६०८०००००
७ वारुणी द्वीप ६४०००००	२५ शंखद्वीप १६७७७२१६०००००
८ वारुणोदधी १२८०००००	२६ शंखोदधी ३३५५४४३२०००००
९ क्षीरद्वीप २५६०००००	२७ रुचकद्वीप ६७१०८८६४०००००
१० क्षीर समुद्र ५१२०००००	२८ रुचक स. १३४२१७७२८०००००
११ घृत द्वीप १०२४००००००	२९ भुजंगद्वीप २६८४३५४५६०००००
१२ घृतोदधी २०४८००००००	३० भुजंगस. ५३६८७०९१२०००००
१३ इक्षुद्वीप ४०९६००००००	३१ कुशद्वीप १०७३७४१८२४०००००
१४ इक्षोदधी ८१९२००००००	३२ कुशोदधी २१४७४८३६४८०००००
१५ नंदीश्वरद्वीप १६३८४००००००	३३ क्रौंचद्वीप ४२९४९६७२९६०००००
१६ नंदी. समुद्र ३२७६८००००००	३४ क्रौंचोदधी ८५८९९३४५९२०००००
१७ अरुणद्वीप ६५५३६००००००	३५ हारद्वीप १७१७९८६९१८४०००००
१८ अरुणोदधी १३१०७२००००००	३६ हारोदधी ३४३५९७३८३६८०००००

द्वीपसमुद्रों का प्रमान.

३७ हारवर द्वीप ६८७१९४७६७३६०००००

३८ हारवरो दधी १३७४३८९५३४७२००००००

३९ हारवर भास द्वीप २७४८७७९०६९४४००००००

४० हारवर भासोदधी ५४९७५५८१३८८८००००००

यह ४० द्वीप समुद्रों के नाम कहे. ऐसे असंख्यात द्वीप समुद्र एक को घेरे हुवे और विस्तार में एकेक से दुगुने हैं.

बाहिर पुक्खरद्धे भणिए तहा जाव सयंभूरमणे समुद्दे जाव अद्धासमएणं नो फुडे ॥ २५ ॥ लोगेणं भंते ! किण्णाफुडे कतिहिंवा काएहिंवा जहा आगासत्थिगिक्षे ॥ २६ ॥ अलोएणं भंते ! किण्णाफुडे कतिहिंवा काएहि पुच्छा ? गोयमा ! णो धम्मत्थिकाएणं फुडे जाव णो अगासत्थिकाएणं फुडे जाव आगासत्थिकायस्स देसेणं फुडे अगासत्थि कायस्स पदेसेहिं फुडे णो पुढवि काएणं फुडे जाव णो अद्धासमएणं फुडे, एगे अजीव दव्वदेसेणं अगुरुलहुए अणंतेहिं अगुरुलघुगुणेहिं संजुत्ते, सव्वागासे अणंत

नामसे असंख्यात द्वीप समुद्रों हैं. यों यावत् अंतिम स्वयंभू रमण समुद्र है इनका सब अधिकार बाहिर के पुष्करार्ध द्वीप का कहा वैसे ही कहना. यावत् सब धर्मास्तिकाया अधर्मास्तिकाय व आकाशास्ति काया के देश व प्रदेश से स्पर्शित है परंतु काल स्पर्शित नहीं है. ॥२५॥ अहो भगवन् ! लोक किस को स्पर्श कर रहा है व कितनी काय को स्पर्श कर रहा है ? अहो गौतम ! जैसे आकाशास्ति काया का कहा वैसे ही कहना. ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! अलोक किस को स्पर्श कर रहा ? और कितनी काया की साथ स्पर्श हुवा है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय से यावत् आकाशास्ति काया से स्पर्शा हुवा नहीं हैं फक्तएक आकाशास्तिकाया के देश व प्रदेश से स्पर्शाया हुवा है. वैसे ही पृथ्वीकाया से यावत् काल से भी स्पर्शाया हुवा नहीं है. मात्र एक अजीव के देश से स्पर्शित है. यह अगुरु लघु अनंत द्रव्यात्मक है. अगुरुलघु गुण संयुक्त है. एक

[illegible] दीवसमुद्दा इमाहिं गाहाहिं अणुगंतव्वा तंजहा-जंबूद्दीवे लवणं, धायइ, कालोदए,
पुक्खरे, वरुणे॥ खीर, घय, इक्खोय, णंदिय, अरुण, रुणवर, वाउ, कुंडले, संखे,
रुयग॥१॥कुस, कुंच, आभरण, वत्थ, गंध, उप्पल, तिलय पउम, पुढवि, णिहि,
रयणं, वासहर, दह, णदीओ, विजया वक्खार, कप्पिंदा॥२॥कुरु, मंदिर, आवासा,
कूडा, णक्खत्त, चंद, सूराय, देव, नाग, जक्खे, भूए, सयंभूरमणेय॥३॥ एवं जहा

१ धातकी खण्ड २ कालोदधि समुद्र, ३ पुष्कर द्वीप ४ पुष्कर समुद्र ५ वरुण द्वीप ६ वरुण समुद्र ७ क्षीर द्वीप [illegible] घृत द्वीप [illegible] घृत समुद्र १३ इक्षुद्वीप १४ इक्षु समुद्र १५ नंदीश्वर द्वीप [illegible] नंदीश्वर समुद्र १७ अरुण द्वीप [illegible] अरुणवर समुद्र १९ रुण द्वीप २० रुण समुद्र २१ वायु द्वीप २२ वायु समुद्र [illegible] कुंडल समुद्र २५ शंख द्वीप २६ शंख समुद्र २७ रुचक द्वीप २८ रुचक समुद्र २९ भुजग द्वीप ३० भुजग समुद्र ३१ कुश द्वीप ३२ कुश समुद्र ३३ ऐसे ही आगे आभरण के नाम के [illegible] हारवर समुद्र, हारवरावभास द्वीप, हारवरावभास समुद्र, ऐसे ही अर्ध हार के नाम के तीन, रत्नावली के तीन, कनकावली के तीन, [illegible] के तीन, कस्तूरी, उत्पलादि कमल, तिलक, पद्म, पृथ्वी, नव-निधान, चौदह रत्न, चुल्लहिमवन्तादि [illegible] के नाम के, पद्मादि द्रह के नाम से, गङ्गादि नदी के नाम के, माल्यवंत वक्षस्कार के, [illegible] इन्द्र के, मेरुपर्वत के भरतादि क्षेत्र के नाम से कूट के नाम से, नक्षत्र के नाम से चंद्र के नाम से, सूर्य के नाम से, देव के नाम से, नाग के नाम से, यक्ष के

पण्णत्ते तंजहा सोइंदिए उवचए-जाव फासिंदिए उवचए, एवं जाव वेमाणियाणं णवरं जस्स जइ इंदिया तस्स तइविहोचेव इंदिय उवचओ भाणियव्वो॥ २॥ कतिविहेणं भंते! इंदिया णिव्वत्तणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इंदिय णिव्वत्तणा पण्णत्ता तंजहा सोइंदिय णिव्वत्तणा जाव फासिंदिय णिव्वत्तणा॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं जस्स जइ इंदिया अत्थि तस्स तयंविहा निव्वत्तणा भाणियव्वा ॥ ३॥ सोइंदिय णिव्वत्तणाणं कइसमया पण्णत्ता ? गोयमा! असंखेज्जा समया अंतोमुहुत्तिया पण्णत्ता ॥ एवं जाव फासिंदिय णिव्वत्तणा ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाण ॥ ४ ॥ कतिविहाणं.

अहो भगवन् नारकी को कितने इन्द्रिय उपचय कहे हैं? अहो गौतम! नारकी को पांच इन्द्रिय उपचय कहे हैं श्रोत्रेन्द्रिय, उपचय यावत् स्पर्शेन्द्रिय, उपचय ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जिनकी जितनी इन्द्रियों होवे उनको उतने इन्द्रिय उपचय कहना ॥२॥ अहो भगवन् ! इन्द्रिय निर्वतना कितने प्रकार कही ? अहो गौतम ! पांच प्रकार की इन्द्रिय निर्वतना कही. श्रोत्रेन्द्रिय निर्वर्तना यावत् स्पर्शेन्द्रिय. निर्वर्तना नारकी से वैमानिक पर्यंत वैसे ही कहना परंतु जिनको जितनी इन्द्रियों होवे उनको उतनी कहना ॥३॥ काल द्वार-अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय निर्वर्तना के कितने समय कहे हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात समय वाला अंतर्मुहूर्त कहा है. एसे ही स्पर्शेन्द्रिय पर्यंत कहना. ऐसे ही नारकी यावत् वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन्! कितनी

सूत्र

पण्णत्ते तंजहा सोइंदिए उवचए जाव फासिंदिए उवचए, एवं जाव वेमाणियाणं णवरं जस्स जइ इंदिया तस्स तइविहोचेव इंदिय उवचओ भाणियव्वो॥२॥कतिविहेणं भंते! इंदिया णिव्वत्तणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इंदिय णिव्वत्तणा पण्णत्ता तंजहा सोइंदिय णिव्वत्तणा जाव फासिंदिय णिव्वत्तणा॥एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं,णवरं जस्स जइ इंदिया अत्थि तस्स तयंविहा निव्वत्तणा भाणियव्वा ॥३॥ सोइंदिय णिव्वत्तणाण कइसमया पण्णत्ता ? गोयमा! असंखेज्जा समया अंतोमुहुत्तिया पण्णत्ता ॥ एवं जाव फासिंदिय णिव्वत्तणा ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाण ॥ ४ ॥ कतिविहाणं

अर्थ

अहो भगवन् नारकी को कितने इन्द्रिय उपचय कहे हैं? अहो गौतम! नारकी को पांच इन्द्रिय उपचय कहे हैं श्रोत्रेन्द्रिय उपचय यावत् स्पर्शेन्द्रिय उपचय ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जिनको जितनी इन्द्रियों हो उनको उतने इन्द्रिय उपचय कहना ॥२॥ अहो भगवन् ! इन्द्रिय निर्वतना कितने प्रकार कही ? अहो गौतम ! पांच प्रकार की इन्द्रिय निर्वतना कही. श्रोत्रेन्द्रिय निर्वतना यावत् स्पर्शेन्द्रिय निर्वतना नारकी से वैमानिक पर्यंत वैसे ही कहना परंतु जिनको जितनी इन्द्रियों होवे उनको उतनी कहना ॥३॥ काल द्वार-अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय निर्वतना के कितने समय कहे हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात समय वाला अंतर्मुहूर्त कहा है. ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय पर्यंत कहना. ऐसे ही नारकी यावत् वैमानिक पर्यंत जानना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! कितनी